ANANTA SATSANG · BILINGUAL SCRIPTURE LIBRARY

Keli-kuñja

केलि कुञ्ज

Twenty-nine contemplative līlās of Śrī Rādhā and Śrī Kṛṣṇa, with devotional supplements

Śrī Rādhā Bābā

Original text with a fresh English translation

About this edition

> A sequence of contemplative līlās centered on the Divine Couple in the bowers of Vraja, followed by Viśeṣa Darśana and the Madhupaka collection of Braj devotional songs with prose explanations.

Source edition: Complete archived facsimile, 351 numbered pages in 370 scan leaves; edition and year unstated.
Gita Vatika, Gorakhpur

Contents

1 निवेदन, मूल योजना, लीला-मालिका एवं पद-तालिका
Editorial Note, Original Plan, Līlā Garland, and Index of Songs

2 जागरण लीला
The Awakening Līlā

3 स्नान लीला
The Bathing Līlā

4 असीमानुराग लीला
The Līlā of Boundless Love

5 भावावेश लीला
The Līlā of Ecstatic Absorption

6 जलकेलि लीला
The Water-Sport Līlā

7 वेणीग्रथन लीला
The Līlā of Braiding the Hair

8 फलभोजन लीला
The Fruit Feast Līlā

9 शुक-सारी विवाद लीला
The Parrot and Myna Debate Līlā

10 अक्षक्रीड़ा लीला
The Dice-Play Līlā

11 सूर्य-पूजन लीला
The Worship of the Sun

12 आवनी लीला
The Evening Homecoming Līlā

13 गोदोहन लीला
The Cow-Milking Līlā

14 प्रेमाप्लावन लीला
The Flood of Love Līlā

15 निश्चानुरञ्जन लीला
The Līlā of Guileless Affection

16 रासनृत्य लीला
The Rāsa Dance Līlā

17 श्रृङ्गार लीला
The Adornment Līlā

18 आँखमिचौनी लीला
The Blindman's Buff Līlā

19 तत्सुखिया लीला
The Līlā of Joy in the Beloved's Happiness

20 मान लीला
The Līlā of Loving Sulk

21 मिलनोत्कण्ठा लीला
The Līlā of Longing for Union

22 प्रतीक्षा लीला
The Līlā of Awaiting

23 विनोद लीला
The Playful Amusement Līlā

24 वंशी-गोपन लीला
The Līlā of Hiding the Flute

25 पाद-संवाहन लीला
The Līlā of Massaging the Feet

26 वेणु-निनाद लीला
The Sounding of the Flute Līlā

27 झूलन लीला
The Swing Līlā

28 नौका-विहार लीला
The Boat Excursion Līlā

29 दीपावली लीला
The Dīpāvalī Līlā

30 योगिनी लीला
The Yoginī Līlā

31 विशेष ज्ञातव्य
A Special Note

32 मधुपर्क
Madhuparka: Fifty-five Braj Songs with Explanations

CHAPTER 1

निवेदन, मूल योजना, लीला-मालिका एवं पद-तालिका

Editorial Note, Original Plan, Līlā Garland, and Index of Songs

Source scan pages 1–15

ORIGINAL

केलि-कुञ्ज

ENGLISH TRANSLATION

The Bower of Divine Play (*Keli-kuñja*).

ORIGINAL

Sanskrit invocation

।। विजयेतां श्रीप्रियाप्रियतमौ ।।

ENGLISH TRANSLATION

May Śrī Priyā and Her most beloved Lord be ever victorious.

ORIGINAL

निवेदन

इस संग्रहमें संकलित लीलाएँ एक परमरसिक संतका कृपा-प्रसाद हैं। किन्हीं महासिद्ध संतके अनुरोधपर व्रजभावके एक भावुक भक्तके लिये इन रसिक संतने स्वानुभूत लीलाओंको लिपिबद्ध किया था।

सत्त्व-रज-तमकी छायासे विरहित निर्ग्रन्थ संतके मानसपटलपर ही दिव्य वृन्दावन अवतरित हुआ करता है। भोगकी स्पृहासे, यहाँतक कि मोक्षकी कामनासे शून्य संतके त्रिगुणातीत महाशुद्ध सत्त्वमय मानसकी ही परिणति हो जाती है दिव्य वृन्दावनके रूपमें, जो बन जाता है लीलाधाम अद्भुत-से-अद्भुत, उत्तम-से-उत्तम, मधुर-से-मधुर भगवल्लीलाओंका।

महाभावमयी श्रीराधा एवं परमरसस्वरूप श्रीकृष्णकी जो-जो, जैसी-जैसी लीलाएँ संतकी उस मानस-लीलाभूमिपर आविर्भूत होती हैं, इन परम गहन, परम पवित्र एवं परम सरस लीलाओंकी ओर वाणीसे भी संकेत कर पाना सम्भव नहीं होता। वास्तविकता भी यही है कि स्वानुभूत गहन लीलाओंकी वह रहस्यमयता वाणीका विषय है भी नहीं। यह रहस्यमयता वाणीसे सदा ही परे रही है और भविष्यमें सदा रहेगी भी।

परंतु लीलाओंके ऐसे अंश, जो वाणीद्वारा व्यक्त किये जा सकते थे, वे भी सम्पूर्ण रूपसे लिपिबद्ध नहीं हो पाये। महासिद्ध संतके अनुरोधपर जिनके लिये ये लीलाएँ लिखी गयी थीं, उनके मानसके स्तरको देखकर ही वर्णनपर अंकुश लगाये हुए शब्दाभिव्यक्तिको सीमाके भीतर रखना पड़ा था। अतः श्रीराधाकृष्णकी परम रसमय लोकोत्तर लीलाओंके जो-जो दृश्य दृष्टिपथपर आये अथवा जो-जो संवाद श्रुतिपथपर आये, उन सबका पर्याप्त अंश इन रसिक संतने लिपिबद्ध किया ही नहीं। वस्तुतः वैसे-वैसे गम्भीर रहस्यमय अंशके पठन-श्रवणके हम अधिकारी ही कहाँ हैं? जिन्होंने भजनाभ्याससे धोकर अपनी दृष्टिको मलरहित, सत्त्वसम्पन्न तथा स्नेहपरिषिक्त नहीं बना लिया है, ऐसे व्यक्तियोंके द्वारा निज-निज दृष्टिदोषके कारण यह सम्भव हो नहीं है कि वे इन दिव्य लीलाओंकी निर्दोषता, निर्मलता, अनिन्द्यता और अलौकिकताकी परिधिका स्पर्श भी कर सकें। यही हेतु है कि उन लीलाओंकी दिव्यता-पवित्रताको अक्षुण्ण बनाये रखनेके लिये बहुत-से हृदयस्पर्शी प्रसंग अवर्णित ही रह गये।

कुछ प्रसंग तो इस प्रकार अभिव्यक्त होनेसे रह गये और कुछ लीलाओंकी अभिव्यक्ति चाह करके भी हो नहीं पायी। मूलतः योजना थी अड़तीस (३८) लीलाओंके लेखनकी। लीला-लेखनकी मूल योजना सम्पूर्ण रूपसे आगे दी जा रही है। इन अड़तीस लीलाओंमेंसे केवल उनतीस (२९) लीलाएँ ही लिखी जा सकीं, जो इस संग्रहमें संकलित हैं।

इन रसिक संतने लीला-चिन्तनकी दृष्टिसे कहीं-कहीं कुछ सांकेतिक निर्देश भी दिये हैं कि किस लीलाका चिन्तन किस तिथिको किस समय करना चाहिये। ये सांकेतिक निर्देश भी आगे लिखे जा रहे हैं, जिससे लीला-चिन्तनमें सहायता मिल सके।

ENGLISH TRANSLATION

Editorial Note

The līlās gathered in this volume are the gift of grace bestowed by a saint of the highest relish. At the request of a greatly perfected saint, this rasika saint committed to writing the līlās he had personally experienced for the sake of a sensitive devotee steeped in the mood of Vraja.

Divine Vṛndāvana descends only upon the inner screen of an unfettered saint whose heart is untouched by the shadows of sattva, rajas, and tamas. A saint empty of every thirst for enjoyment - even of desire for liberation - possesses an utterly pure, luminous mind beyond the three guṇas. That very mind becomes transformed into divine Vṛndāvana, the playground of the Lord's deeds, each more wondrous, excellent, and sweet than the last.

Whatever līlās of Śrī Rādhā, the embodiment of mahābhāva, and Śrī Kṛṣṇa, the very form of supreme rasa, appear upon that sacred inner ground of the saint's contemplation are so profound, pure, and full of relish that speech cannot adequately point toward them. Indeed, the mystery of such directly experienced līlās is not an object of speech at all. It has always remained beyond words and will remain so forever.

Even those portions that could have been expressed in words were not written down in full. Because the līlās were composed, at a perfected saint's request, for one particular aspirant, the author had to restrain the description and keep the verbal expression within bounds suited to that aspirant's inner capacity. Thus this rasika saint did not record a sufficient portion of all the scenes of Śrī Rādhā-Kṛṣṇa's supremely nectarean, transcendent līlās that came before his sight, nor of all the conversations that reached his hearing. In truth, how could we claim qualification to read or hear those deeply mysterious portions? Unless people have washed their vision through sustained bhajana, freed it of impurity, filled it with luminous purity, and bathed it in affection, the defects of their own sight prevent them from touching even the outer boundary of these divine līlās' faultlessness, purity, irreproachability, and supernatural character. For this reason many moving episodes remained undescribed, so that the līlās' divinity and holiness might remain inviolate.

Some episodes therefore remained unexpressed, while certain līlās could not be expressed even when expression was desired. The original plan was to write thirty-eight līlās. That full plan is given below. Of those thirty-eight, only twenty-nine could be written, and these are the ones collected in this volume.

From the standpoint of līlā contemplation, the rasika saint also gave occasional indications of the lunar date and time at which a particular līlā should be contemplated. Those directions are reproduced below to assist the practice of līlā-cintana.

ORIGINAL

मूल योजना तथा लिखित लीलाओंका विवरण

प्रथम दिवसका ध्यान

1. श्रीललिताजीके निकुञ्जमें श्रीप्रिया-प्रियतमकी जागरण लीला। लीला-शीर्षक - **जागरण लीला**; लीला-क्रमाङ्क - १; पृष्ठ-संख्या - १।
2. श्रीप्रिया-प्रियतमका अपने-अपने घर आकर शय्यापर सो जाना।
3. श्रीराधारानीका शय्यासे उठकर अपने महलमें सखियोंद्वारा उबटन, स्नान; ललिताका राधारानीको चित्राका स्वप्न सुनाना। लीला-शीर्षक - **स्नान लीला**; लीला-क्रमाङ्क - २; पृष्ठ-संख्या - १०।
4. श्रीप्रियाका सखियोंद्वारा शृङ्गार, तुलसी-पूजन एवं नन्दभवनकी ओर प्रस्थान।
5. नन्दभवनमें प्रियतम श्यामसुन्दरके लिये श्रीप्रियाका भोजन बनाना; श्यामसुन्दरका भोजन; श्रीप्रिया एवं सखियोंका श्यामसुन्दरके अधरामृत-सिक्त प्रसादका सेवन; गोचारणके लिये श्यामसुन्दरका वन पधारना; श्रीप्रियाका अपने भवन लौटना।
6. श्रीप्रियाकी वन-गमन लीला। लीला-शीर्षक - **अधीमानुराग लीला**; लीला-क्रमाङ्क - ३; पृष्ठ-संख्या - २६।
7. श्रीललिता-कुञ्जमें मिलन लीला। लीला-शीर्षक - **भावावेश लीला**; लीला-क्रमाङ्क - ४; पृष्ठ-संख्या - ४०।
8. श्रीप्रियाको श्रीश्यामसुन्दरका पंख उड़ाना सिखाना।
9. मधुपान लीला एवं निकुञ्जमें विश्राम।
10. श्रीराधाकुण्डमें जल-विहार लीला। लीला-शीर्षक - **जलक्रीड़ा लीला**। चिन्तन-निर्देश - एक-एक लीला पढ़नेके बाद यह लीला प्रतिपदा, तृतीया, पञ्चमी, सप्तमी, नवमी, एकादशी, त्रयोदशी, अमावस्या एवं पूर्णिमा तिथियोंको दोपहरके समय पढ़नी चाहिये।
11. निकुञ्जमें श्रीप्रियाका श्रीश्यामसुन्दरके द्वारा शृङ्गार। लीला-शीर्षक - **वेणुगूँजन लीला**; लीला-क्रमाङ्क - ६; पृष्ठ-संख्या - ६१।
12. फल-भोजन लीला। लीला-शीर्षक - **फल-भोजन लीला**; लीला-क्रमाङ्क - ७; पृष्ठ-संख्या - ६६।
13. श्रीप्रिया एवं सखियोंका प्रसाद-सेवन, श्रीश्यामसुन्दरकी कूपड़ तथा शुक-सारी विवाद लीला। लीला-शीर्षक - **शुक-सारी विवाद लीला**; लीला-क्रमाङ्क - ८; पृष्ठ-संख्या - ७०।
14. अक्ष-क्रीड़ा लीला। लीला-शीर्षक - **अक्ष-क्रीड़ा लीला**; लीला-क्रमाङ्क - ९; पृष्ठ-संख्या - ८४।
15. सूर्य-पूजन लीला। लीला-शीर्षक - **सूर्य-पूजन लीला**; लीला-क्रमाङ्क - १०; पृष्ठ-संख्या - १०६।
16. श्रीप्रियाका वनसे लौटना, प्रियतम श्यामसुन्दरके लिये मिष्ठान्न बनाना, स्नान, शृङ्गार एवं प्यारेके वनसे लौटनेकी राह देखना।
17. आवनी लीला। लीला-शीर्षक - **आवनी लीला**; लीला-क्रमाङ्क - ११; पृष्ठ-संख्या - १२२। चिन्तन-निर्देश - यह लीला प्रतिदिन संध्याके समय पढ़नी चाहिये।
18. श्रीश्यामसुन्दरका मैया यशोदाद्वारा स्नान, सखाओंके साथ कलेवा।

19. श्रीश्यामसुन्दरकी गोदोहन लीला। लीला-शीर्षक - **गोदोहन लीला**; लीला-क्रमाङ्क - १२; पृष्ठ-संख्या - १२७।
20. श्रीप्रियाका अभिसार।
21. श्रीयमुना-तटपर श्रीप्रियाके द्वारा श्रीश्यामसुन्दरकी प्रतीक्षा, मञ्जरीका श्रीप्रियाको कथा सुनाना। लीला-शीर्षक - **प्रेमाच्छादन लीला**; लीला-क्रमाङ्क - १३; पृष्ठ-संख्या - १३४।
22. वन-विहार लीला। लीला-शीर्षक - **निशानुरक्षण लीला**; लीला-क्रमाङ्क - १४; पृष्ठ-संख्या - १४५। चिन्तन-निर्देश - यह लीला द्वितीया, पञ्चमी, अष्टमी, एकादशी एवं चतुर्दशी तिथियोंको सोनेके पहले रातमें पढ़नी चाहिये।
23. श्रीयमुना-जलमें कमल-वन-विहार लीला।
24. श्रीयमुना-पुलिनपर रासलीला एवं निकुञ्जमें विश्राम। लीला-शीर्षक - **रास-नृत्य लीला**; लीला-क्रमाङ्क - १५; पृष्ठ-संख्या - १५६। चिन्तन-निर्देश - यह लीला तृतीया, षष्ठी, सप्तमी, द्वादशी एवं पूर्णिमा तिथियोंको सोनेसे पहले रातमें पढ़नी चाहिये।

द्वितीय दिवसका ध्यान

1. श्रीविशाखा-कुञ्जमें श्रीश्यामसुन्दरके द्वारा श्रीप्रियाका शृङ्गार। लीला-शीर्षक - **शृङ्गार लीला**; लीला-क्रमाङ्क - १६; पृष्ठ-संख्या - १७८। चिन्तन-निर्देश - यह लीला द्वितीया एवं दशमी तिथियोंको दोपहरके समय पढ़नी चाहिये।

तृतीय दिवसका ध्यान

1. श्रीचित्राजीके कुञ्जमें आँखमिचौनी लीला। लीला-शीर्षक - **आँखमिचौनी लीला**; लीला-क्रमाङ्क - १७; पृष्ठ-संख्या - १८३। चिन्तन-निर्देश - यह लीला तृतीया एवं षष्ठी तिथियोंको सोनेके पहले पढ़नी चाहिये।
2. श्रीयमुना-पुलिनपर श्रीप्रियाके द्वारा श्रीश्यामसुन्दरको अपने हृदयकी बात; श्रीप्रियाका भावावेशमें अपने हृदय खोलकर सुनाना। लीला-शीर्षक - **मान लीला**; लीला-क्रमाङ्क - १८; पृष्ठ-संख्या - २००। चिन्तन-निर्देश - यह लीला प्रतिपदा, अष्टमी, दशमी एवं योगमयी तिथियोंको सोनेसे पहले पढ़नी चाहिये।

चतुर्थ दिवसका ध्यान

1. श्रीइन्दुलेखाजीके कुञ्जमें मान लीला। लीला-शीर्षक - **मान लीला**; लीला-क्रमाङ्क - १९; पृष्ठ-संख्या - २१३। चिन्तन-निर्देश - यह लीला चतुर्थी एवं द्वादशी तिथियोंको दोपहरके समय पढ़नी चाहिये।

पञ्चम दिवसका ध्यान

1. श्रीचम्पकलताजीके कुञ्जमें चित्र-नृत्य लीला। लीला-क्रमाङ्क - २०; पृष्ठ-संख्या - २२३। चिन्तन-निर्देश - यह लीला पञ्चमी एवं त्रयोदशी तिथियोंको दोपहरके समय पढ़नी चाहिये।

षष्ठ दिवसका ध्यान

1. श्रीरङ्गदेवीजीके कुञ्जमें श्रीश्यामसुन्दरकी प्रतीक्षामें बैठी हुई श्रीप्रियाकी विचित्र दशा। लीला-शीर्षक - **प्रतीक्षा लीला**; लीला-क्रमाङ्क - २१; पृष्ठ-संख्या - २३५। चिन्तन-निर्देश - यह लीला षष्ठी एवं चतुर्दशी तिथियोंको दोपहरके समय पढ़नी चाहिये।

सप्तम दिवसका ध्यान

1. श्रीतुङ्गविद्याजीके कुञ्जमें मधुमङ्गलकी विनोद लीला। लीला-शीर्षक - **विनोद लीला**; लीला-क्रमाङ्क - २२; पृष्ठ-संख्या - २४२। चिन्तन-निर्देश - यह लीला सप्तमी एवं पूर्णिमा तिथियोंको दोपहरके समय पढ़नी चाहिये।

अष्टम दिवसका ध्यान

1. श्रीसुदेवीजीके कुञ्जमें वंशी-गोपन लीला। लीला-शीर्षक - **वंशी-गोपन लीला**; लीला-क्रमाङ्क - २३; पृष्ठ-संख्या - २५५।

नवम दिवसका ध्यान

दशम दिवसका ध्यान

एकादश दिवसका ध्यान

द्वादश दिवसका ध्यान

त्रयोदश दिवसका ध्यान

चतुर्दश दिवसका ध्यान

1. श्रीरङ्गदेवीजीके कुञ्जमें श्रीप्रियाके द्वारा श्रीश्यामसुन्दरकी प्रतीक्षा। लीला-शीर्षक - **पद-संकलन लीला**; लीला-क्रमाङ्क - २४; पृष्ठ-संख्या - २६६। चिन्तन-निर्देश - इसे पढ़ लेना चाहिये; अथवा प्रतिदिन ही एवं चतुर्दशीके दिन समय निकालकर तीन-तीन लीलाएँ पढ़नी चाहिये।
2. श्रीरङ्गदेवीजीके कुञ्जमें वंशी-ध्वनिका चमत्कार; अपनी प्रियाकी इच्छा पूर्ण करते हुए श्रीश्यामसुन्दरका वंशी बजाना; वंशी-ध्वनिसे कुण्डके जलका अत्यधिक बढ़ जाना; उस बढ़े हुए जलमें सखी-मण्डलीसहित श्रीप्रिया-प्रियतमका निमग्न हो जाना। लीला-शीर्षक - **वेणु-निनाद लीला**; लीला-क्रमाङ्क - २५; पृष्ठ-संख्या - २७४।

अमावस्या दिवसका ध्यान

1. श्रीतुङ्गविद्याजीके कुञ्जमें हिण्डोला-झूलन लीला। लीला-शीर्षक - **झूलन लीला**; लीला-क्रमाङ्क - २६; पृष्ठ-संख्या - २८२।

अन्य लीलाएँ

1. वर्षामें श्रीराधाकुण्डकी नौका-विहार लीला। लीला-शीर्षक - **नौका-विहार लीला**; लीला-क्रमाङ्क - २७; पृष्ठ-संख्या - २९५। चिन्तन-निर्देश - यह लीला द्वितीया, चतुर्थी, षष्ठी, अष्टमी, दशमी, द्वादशी एवं चतुर्दशी तिथियोंको दोपहरके समय पढ़नी चाहिये। यदि सम्भव हो तो एक-एक लीला पढ़ लेनेके बाद इस नौका-विहार लीलाको भी पढ़ लेना चाहिये।
2. दीपावली लीला। लीला-शीर्षक - **दीपावली लीला**; लीला-क्रमाङ्क - २८; पृष्ठ-संख्या - २९२।
3. योगिनी लीला। लीला-शीर्षक - **योगिनी लीला**; लीला-क्रमाङ्क - २९; पृष्ठ-संख्या - ३०२।

इन लीलाओंके साथ इन्हीं रसिक संतद्वारा संकलित पचपन पदोंको भी 'मधुपक' शीर्षकके अन्तर्गत अर्थसहित प्रकाशित किया जा रहा है, जो लीला-चिन्तनमें बड़े सहायक सिद्ध हो सकते हैं। इस सारी सामग्रीको प्रकाशित करते समय प्रयास यही रहा है कि कहीं कोई त्रुटि न रह जाये; इसपर भी भूल हो जाना स्वाभाविक है। इस प्रकारकी सभी न्यूनताओंके लिये विनम्र क्षमा-याचना है।

ENGLISH TRANSLATION

The Original Plan and Details of the Līlās That Were Written

Meditation for the First Day

1. The awakening līlā of Śrī Priyā and Her beloved in Lalitā's bower. Title: **The Awakening Līlā**; sequence 1; page 1.
2. Priyā and Her beloved return to their respective homes and lie down to sleep.
3. Śrī Rādhārāṇī rises from bed; in Her palace the sakhīs anoint and bathe Her; Lalitā tells Rādhārāṇī of Citrā's dream. Title: **The Bathing Līlā**; sequence 2; page 10.
4. The sakhīs adorn Priyā; She worships Tulasī and sets out for Nanda's house.
5. At Nanda's house Priyā cooks for Her beloved Śyāmasundara; He eats; Priyā and the sakhīs honor the remnants moistened by the nectar of His lips; Śyāmasundara leaves for the forest to graze the cows; Priyā returns home.
6. Priyā's journey to the forest. Title: **The Līlā of Ardent Love**; sequence 3; page 26.
7. Their meeting in Lalitā's bower. Title: **The Līlā of Absorption in Emotion**; sequence 4; page 40.
8. Śyāmasundara teaches Priyā how to fly a feather toy.
9. The līlā of drinking honey and resting in the bower.
10. Water play in Śrī Rādhākuṇḍa. Title: **The Water-Sport Līlā**. After reading each līlā, this one should be read at midday on the lunar dates of pratipadā, tṛtīyā, pañcamī, saptamī, navamī, ekādaśī, trayodaśī, amāvasyā, and pūrṇimā.
11. Śyāmasundara adorns Priyā in the bower. Title: **The Murmuring-Flute Līlā**; sequence 6; page 61.
12. The fruit-meal līlā. Title: **The Fruit-Meal Līlā**; sequence 7; page 66.
13. Priyā and the sakhīs honor the remnants; there follow Śyāmasundara's teasing and the dispute between the parrots Śuka and Sārī. Title: **The Śuka-Sārī Debate Līlā**; sequence 8; page 70.
14. The dice-play līlā. Title: **The Dice-Play Līlā**; sequence 9; page 84.
15. The worship of the Sun. Title: **The Sun-Worship Līlā**; sequence 10; page 106.
16. Priyā returns from the forest, prepares sweets for Her beloved Śyāmasundara, bathes and dresses, and watches the road for His return from the forest.
17. The arrival līlā. Title: **The Arrival Līlā**; sequence 11; page 122. It should be read every evening.
18. Mother Yaśodā bathes Śyāmasundara, who then takes a light meal with His friends.
19. Śyāmasundara milks the cows. Title: **The Cow-Milking Līlā**; sequence 12; page 127.
20. Priyā goes out for Her secret meeting.

21. Priyā waits for Śyāmasundara on the Yamunā's bank, and a mañjarī tells Priyā a story. Title: **The Veiling-of-Love Līlā**; sequence 13; page 134.
22. The forest excursion. Title: **The Night-Watch Līlā**; sequence 14; page 145. It should be read at night before sleeping on dvitīyā, pañcamī, aṣṭamī, ekādaśī, and caturdaśī.
23. Sport amid the lotus groves in the Yamunā's waters.
24. The rāsa-līlā on the Yamunā's sandy bank and rest in the bower. Title: **The Rāsa-Dance Līlā**; sequence 15; page 156. It should be read at night before sleeping on tṛtīyā, ṣaṣṭhī, saptamī, dvādaśī, and pūrṇimā.

Meditation for the Second Day

25. In Viśākhā's bower, Śyāmasundara adorns Priyā. Title: **The Adornment Līlā**; sequence 16; page 178. It should be read at midday on dvitīyā and daśamī.

Meditation for the Third Day

26. Blindman's buff in Citrā's bower. Title: **The Blindman's-Buff Līlā**; sequence 17; page 183. It should be read before sleeping on tṛtīyā and ṣaṣṭhī.
27. On the Yamunā's bank Priyā opens Her heart to Śyāmasundara in a surge of sacred emotion. Title: **The Līlā of Loving Sulkiness**; sequence 18; page 200. It should be read before sleeping on pratipadā, aṣṭamī, daśamī, and the specified yogamayi dates.

Meditation for the Fourth Day

28. The māna-līlā in Indulekhā's bower. Title: **The Līlā of Loving Sulkiness**; sequence 19; page 213. It should be read at midday on caturthī and dvādaśī.

Meditation for the Fifth Day

29. A picture-dance līlā in Campakalatā's bower; sequence 20; page 223. It should be read at midday on pañcamī and trayodaśī.

Meditation for the Sixth Day

30. Priyā's extraordinary condition as She sits in Raṅgadevī's bower awaiting Śyāmasundara. Title: **The Waiting Līlā**; sequence 21; page 235. It should be read at midday on ṣaṣṭhī and caturdaśī.

Meditation for the Seventh Day

31. Madhumaṅgala's playful amusement in Tuṅgavidyā's bower. Title: **The Amusement Līlā**; sequence 22; page 242. It should be read at midday on saptamī and pūrṇimā.

Meditation for the Eighth Day

32. The hiding of the flute in Sudevī's bower. Title: **The Hidden-Flute Līlā**; sequence 23; page 255.

Meditations for the Ninth through Fourteenth Days

33. Priyā awaits Śyāmasundara in Raṅgadevī's bower. Title: **The Collected-Songs Līlā**; sequence 24; page 266. It may be read as given; alternatively, one should set aside time each day, and especially on caturdaśī, to read three līlās at a sitting.
34. The wonder of the flute's sound in Raṅgadevī's bower: to fulfill His beloved's wish, Śyāmasundara plays the flute; its sound makes the water of the lake rise greatly, and Priyā and Her beloved become immersed in the swelling water together with the circle of sakhīs. Title: **The Flute-Resonance Līlā**; sequence 25; page 274.

Meditation for the New-Moon Day

35. Swinging in Tuṅgavidyā's bower. Title: **The Swing Līlā**; sequence 26; page 282.

Other Līlās

36. Boating upon Śrī Rādhākuṇḍa in the rainy season. Title: **The Boat-Pastime Līlā**; sequence 27; page 295. It should be read at midday on dvitīyā, caturthī, ṣaṣṭhī, aṣṭamī, daśamī, dvādaśī, and caturdaśī. If possible, it should also be read after each individual līlā.
37. The Dīpāvalī līlā. Title: **The Dīpāvalī Līlā**; sequence 28; page 292.
38. The yoginī līlā. Title: **The Yoginī Līlā**; sequence 29; page 302.

Together with these līlās, fifty-five songs collected by the same rasika saint are being published with their meanings under the title *Madhupaka*. They can prove greatly helpful in līlā contemplation. Every effort has been made to publish all this material without error, yet mistakes are naturally possible. We humbly ask forgiveness for every such deficiency.

ORIGINAL

लीला मालिका

1. जागरण लीला - १
2. स्नान लीला - १०
3. अधीमानुराग लीला - २६
4. भावावेश लीला - ४०
5. जलकेलि लीला - ५१
6. वेणुगूँजन लीला - ६१
7. फलभोजन लीला - ६६
8. शुक-सारी विवाद लीला - ७०
9. अक्षक्रीड़ा लीला - ८४
10. सूर्यपूजन लीला - १०६
11. आवनी लीला - १२२
12. गोदोहन लीला - १२७
13. प्रेमाच्छादन लीला - १३४
14. निशानुरक्षण लीला - १४५
15. रास-नृत्य लीला - १५६
16. शृङ्गार लीला - १७८
17. आँखमिचौनी लीला - १८३
18. मान लीला - २१३
19. चित्रनृत्य लीला - २२३
20. विनोद लीला - २३४
21. प्रतीक्षा लीला - २४२
22. निशीथ लीला - २५५
23. वंशीगोपन लीला - २६६
24. पद-संकलन लीला - २७४
25. वेणुनिनाद लीला - २८२
26. झूलन लीला - २९५
27. नौका-विहार लीला - ३०२
28. दीपावली लीला
29. योगिनी लीला
30. विशेष ज्ञापन
31. मधुपक

मधुपकके पद

1. जय राधा जय सब सुख राधा
2. प्रात समय नव कुञ्ज द्वार हूँ
3. परी बलि कौन अनोखी बान
4. मङ्गल आरति हरख उतारी
5. कुञ्ज द्वार ललना ब्रज लालने
6. भूमक सारी हो तन गोरे
7. लटकत आवत कुञ्ज भवन तें
8. जयति श्री राधिके सकल सुख साधिके
9. नवल ब्रजराज को लाल ठाढ़े सखी
10. सुमिरो नट नागर बर सुन्दर गोपाल लाल
11. आज इन दोउन पै बलि जैये
12. आज सिंगार निरखि स्यामा को
13. सारी सिंगारी है सोनजुही
14. सोनजुही की बनी पगिया
15. आजु राधिका भोरहीं जसुमति घर आई
16. महरि कह्यो री लाडिली किन मथन सिखायो
17. प्रगटी प्रीति न रही छपाई
18. या घर प्यारी आवति रहियो
19. हरि सों धेनु दुहावति प्यारी
20. बँधु दुहत अति ही रति बाढ़ी
21. सिर दोहनी चली ले प्यारी
22. खेलन के मिस कुँवरि राधिका
23. जसुमति राधा कुँवरि सँवारति
24. मैं हरि की मुरली बन गई
25. बनी राधा गिरिधर की जोरी
26. सघन कुञ्ज की छाँह मनोहर
27. बैठे हरि राधा संग कुञ्ज भवन अपने रंग
28. इक टक रही नारि निहार
29. देखन देत न बैरिन पलक
30. तेरी मोह की मरोरन तें ललित त्रिभंगी भये
31. जैसे तेरे नूपुर न बाजहीं
32. चलो क्यों न देखें री खरे दोऊ
33. राधिका आज आनन्द में डोले
34. कदम वन बीथिन करत विहार

35. पासा खेलत हैं पिय प्यारी
36. आज तेरी फनी अधिक छवि मनमोहनगरी
37. भाग्यवान वृषभानु सुता सी
38. राधा मोहन करत विहार
39. अञ्चवन करत लाडिली लाल
40. बीरी सरस सखी रुचि दीनी
41. प्यारी पियहि सिखावति बीना
42. आज गोपाल रास रस खेलत
43. रास मण्डल रच्यो रसिक हरि राधिका
44. राधिका सम नागरी नवीन को प्रवीण सती
45. बेसर कौन की अति नोखी
46. तुव मुख कमल नै प्रफुलित मेरे
47. मुख चन्द चकोर ये नैना
48. राधा प्यारी तुम्हीं लगत हों में कैसो
49. प्रीतम तुम मेरे दृगन बसत हो
50. आज बने सखि नन्दकुमार
51. खञ्जन नैन रूप रस माते
52. अब पौढ़न को समय भयो
53. विहारिनि भलकलदेती हो
54. चाँपत चरण मोहन लाल
55. धनि धनि लाडिली के करत

ENGLISH TRANSLATION

Garland of Līlās

1. The Awakening Līlā - 1
2. The Bathing Līlā - 10
3. The Līlā of Ardent Love - 26
4. The Līlā of Absorption in Emotion - 40
5. The Water-Sport Līlā - 51
6. The Murmuring-Flute Līlā - 61
7. The Fruit-Meal Līlā - 66
8. The Debate of Śuka and Sārī - 70
9. The Dice-Play Līlā - 84
10. The Sun-Worship Līlā - 106
11. The Arrival Līlā - 122
12. The Cow-Milking Līlā - 127
13. The Veiling-of-Love Līlā - 134
14. The Night-Watch Līlā - 145
15. The Rāsa-Dance Līlā - 156
16. The Adornment Līlā - 178
17. The Blindman's-Buff Līlā - 183
18. The Māna Līlā - 213
19. The Picture-Dance Līlā - 223
20. The Amusement Līlā - 234
21. The Waiting Līlā - 242
22. The Midnight Līlā - 255
23. The Hidden-Flute Līlā - 266
24. The Collection-of-Songs Līlā - 274
25. The Flute-Resonance Līlā - 282
26. The Swing Līlā - 295
27. The Boat-Pastime Līlā - 302
28. The Dīpāvalī Līlā
29. The Yoginī Līlā
30. Special Notice
31. *Madhupaka*

Songs in *Madhupaka*

1. Victory to Rādhā, Rādhā who is the source of every joy.
2. At dawn I stand at the gate of the new bower.
3. I offer myself: what an extraordinary manner She possesses!

4. With joy they perform the auspicious ārati.
5. At the bower gate stands the maiden with Vraja's beloved boy.
6. Her fair body gleams beneath the star-spangled veil.
7. Swaying as She comes from the bower palace.
8. Victory to Śrī Rādhikā, fulfiller of every joy.
9. Friend, the young son of Vraja's king stands there.
10. Remember the graceful dancer, the clever and beautiful Gopāla.
11. Today I offer myself to these two.
12. Behold Śyāma's adornment today.
13. The jasmine maiden is fully adorned.
14. Her turban is fashioned of jasmine blossoms.
15. At early dawn today Rādhikā came to Yaśomatī's house.
16. Mother said, "Dear girl, who taught You to churn?"
17. Love revealed itself and could no longer remain concealed.
18. Beloved, keep coming to this house.
19. The beloved makes Hari milk the cow.
20. As the beloved milked, love increased exceedingly.
21. Beloved, carry the milk-pail upon Your head and come.
22. Princess Rādhikā comes on the pretext of play.
23. Yaśomatī adorns Princess Rādhā.
24. I have become Hari's flute.
25. Rādhā has become Giridhara's partner.
26. The dense bower's shade is enchanting.
27. Hari and Rādhā sit together in Their own delight in the bower palace.
28. The maiden remained gazing without blinking.
29. The enemy eyelids will not let me see.
30. Bent by the wrenching power of Your love, He has become gracefully threefold-curving.
31. As though Your anklets did not ring.
32. Friend, why should we not go see the two standing there?
33. Rādhikā sways today in bliss.
34. They wander along the pathways of the kadamba grove.
35. The beloved pair play dice.
36. Today Your serpent-like braid possesses still greater enchanting beauty.
37. None is as fortunate as Vṛṣabhānu's daughter.
38. Rādhā and Mohana enjoy Their loving play.
39. The darling girl and Her beloved perform the ritual sipping of water.
40. The sakhī lovingly offered a flavorful betel roll.
41. The beloved teaches Her lover to play the vīṇā.
42. Today Gopāla revels in the nectar of the rāsa dance.
43. Rasika Hari and Rādhikā have formed the circle of rāsa.
44. What newly youthful heroine is as accomplished as Rādhikā?

45. Whose nose ornament is so utterly singular?
46. My lotus face blossoms before Yours.
47. Your face is the moon and these eyes are cakora birds.
48. Beloved Rādhā, what do I seem to You?
49. Beloved, You dwell within my eyes.
50. Friend, how beautifully Nandakumāra is adorned today.
51. His wagtail-bird eyes are intoxicated by the nectar of beauty.
52. Now the time for reclining has come.
53. O playful beloved, You are delightfully restless.
54. Mohanalāla presses Her feet.
55. Blessed, blessed is what He does for the darling girl.

ORIGINAL Braj Bhāṣā, Sanskrit, and Hindi song incipits

पद तालिका

1. लटकत आवत कुञ्ज भवन तें
2. आजु गई हुती कुञ्ज कौं
3. कोई एक साँवरी री इत है आयी
4. एरी आज काल्ह सब लोक लाज त्याग दोउ
5. हौं बलि जाऊँ नागरि स्याम
6. मेरी दूती कहा कोऊ जाने
7. रीझि रोझि रहसि रहसि हँसि हँसि उठे
8. पहिले तो देखो आय मानिनी की सोभा ठाठ
9. कोटि जीव बंधु वारौं, हाँसी सुधाकंद वारौं
10. कर प्रणामपरं कदापि तवेदृशं न करोमि
11. राधिका कंठ को ध्यान धरे कर
12. छाजत सब भूषण मन भावते, नेक बन तें बेगे आव हो
13. त्वमसि मम भूषणं त्वमसि मम जीवनम्
14. रहसि संविद हृच्छयोदयम्
15. सो मोरे नैनन में नन्दलाल
16. ऐसी पिय कान न दीजे हो
17. चाला वही देस प्रीतम, पारवाँ चाला कही देस
18. नव-कुञ्ज-चंद वृषभानु-कुल-कौमुदी
19. सखी हौं स्याम रंग रेंगी
20. प्यारी तेरे नैननि को व्यौहार
21. अब रूप के रंग रेंगी सजनी
22. चख कोर चकोर बनाय मन
23. दस्यौ मोर मुकुट नटवर रूप
24. देखो देखो री नागर नट
25. तू है सखी बड़भाग भरी
26. कैसे जाऊँ री धीर! घट भरिये नीर
27. बस्यो मेरे नैनन में कोऊ चंद
28. राधा प्यारी बात सुनो इक मेरी
29. जयति नव नागरी कृष्ण सुख सागरी सकल गुन आगरी दीनत भोरी
30. मैं बहुत रिझा भले ही
31. मो मन गिरिधर छवि पे अटको

32. प्राप्त श्याम की चोट बुरी री
33. बड़ि बस बकि बकि कुँवरि राधिका
34. बाँयुरो रे कौन सुलान मारी
35. स्याम रूप में तेज अधर-रस अञ्जलि मिलाऊँ
36. सखी निकुञ्ज बाम ठकुरानी
37. कोई दिलबर की इधर खबर दे रे
38. मोहन मुखारविन्द पर मनमथ कोटिक बारौं री माई
39. रे मन मति फिरि फिरि बहि जाये
40. स्यामल मो मन रूप सो जोखन
41. पूछत नागरि नागर बात
42. अधरं मधुरं वदनं मधुरम्
43. पिय हौंहि ले चलबे दो में राख
44. भोजन मुखी हो नहीं
45. तुव मुख चंद चकोर मेरे नयना

ENGLISH TRANSLATION

Index of Songs

1. Swaying as She comes from the bower palace.
2. Today She had gone to the bower.
3. A certain dark-complexioned maiden has come this way.
4. Friend, today and tomorrow, let the two of us abandon all worldly shame.
5. I offer myself to clever Śyāma.
6. Who can know the message carried by my go-between?
7. Delighted, sulking, secretly smiling, She rose laughing.
8. First behold the proud beloved arriving in the full splendour of Her bearing.
9. I would offer millions of lives; I would offer the moon of nectar that is Her smile.
10. Having bowed deeply, never again shall I act toward You in such a way.
11. Place your meditation upon Rādhikā's neck.
12. Every ornament shines delightfully; come quickly from the forest.
13. You are my adornment; You are my very life.
14. In secret intimacy, awareness awakens within the heart.
15. Nandalāla dwells within my eyes.
16. Beloved, do not give ear to such words.
17. Let us go to that land, beloved; beyond this shore, let us go to that other land.
18. Moon of the new bower, moonlight of Vṛṣabhānu's lineage.
19. Friend, I am dyed in Śyāma's colour.
20. Beloved, what dealings are these of Your eyes?
21. Friend, now I am dyed in the colour of that beauty.
22. Make the corners of the eyes into cakora birds.
23. Show me the peacock-crowned Lord, the supreme dancer.
24. Look, friend, behold the clever dancer!
25. Friend, you are greatly fortunate.
26. How shall I go, dear friend, to fill the water pot?
27. A certain moon has settled within my eyes.
28. Beloved Rādhā, hear this one plea of mine.
29. Victory to the ever-new, clever heroine, the ocean of Kṛṣṇa's joy, the mine of every virtue, humble and innocent.
30. I have been deeply delighted indeed.
31. My heart has become fixed upon Giridhara's beauty.
32. The blow received from Śyāma was terribly painful.
33. Princess Rādhikā, speaking and speaking, became utterly helpless.
34. O mad one, who has struck you with that dart?

35. Let me gather in my cupped hands the brilliance of Śyāma's form and the nectar of His lips.
36. The leftward, contrary mistress of the secluded bower.
37. Someone bring me news of the beloved from that side.
38. Mother, I would offer millions of Love-gods to Mohana's lotus face.
39. O mind, do not be swept away again and again.
40. My heart weighs itself against Śyāma's beauty.
41. The clever heroine questions her clever beloved.
42. His lips are sweet; His face is sweet.
43. Keep the two of us together; let me take my beloved along.
44. I have no appetite for food.
45. Your face is the moon, and my eyes are cakora birds.

CHAPTER 2

जागरण लीला

The Awakening Līlā

Source scan pages 16–24

ORIGINAL

Sanskrit invocation

॥ विजयेतां श्रीप्रियाप्रियतमौ ॥

ENGLISH TRANSLATION

May Śrī Priyā and Her Beloved be ever victorious.

ORIGINAL

Braj Bhāṣā verse

लटकत आवत कुंज भवन तें।

दुरि दुरि परत राधिका ऊपर जागत सिथिल गवन तें॥

चौंक परत कबहुँ मारग बिच चलत सुगंध पवन तें।

भर उसाँस राधा बियोग भय सकुचें दिवस रवन तें॥

आलस मिस न्यारे न होत हैं नेकहुँ प्यारी तन तें।

'रसिक' टरौ जिन दसा स्याम की कबहूँ मेरे मन तें॥

ENGLISH TRANSLATION

Swaying, He comes from the bower-house;

His waking steps are languid, and again and again He falls upon Rādhikā.

At times He starts upon the path when the fragrant breeze begins to move;

Rādhā heaves deep sighs, shrinking from the fear of separation through all the day and night.

Under the pretext of drowsiness He will not part, even a little, from His darling's body.

O Rasika, may this condition of Śyāma never depart from my heart.

ORIGINAL

विश्राम-निकुञ्जमें श्रीप्रिया-प्रियतम अत्यन्त सुन्दर शय्यापर सटे हुए हैं। विश्राम-निकुञ्जकी सजावट अत्यन्त मनोहर है। मणियोंका हलका धीमा नीला प्रकाश फैल रहा है। खिड़कियोंपर पीले मखमलके पर्दे लगे हुए हैं, जो यमुना-पुलिनपर प्रवाहित होते हुए मन्द समीरके झोंकोंसे थोड़े-थोड़े हिल रहे हैं। समस्त निकुञ्ज दिव्यतम सुगन्धिसे भरा है।

ENGLISH TRANSLATION

In the Repose Bower, Śrī Priyā and Her Beloved lie close together upon an exquisitely beautiful bed. The bower's adornment is supremely enchanting. A soft, faint blue radiance from the jewels spreads throughout it. Yellow velvet curtains hang at the windows and stir ever so slightly in the gentle breeze flowing over the sandy bank of the Yamunā. The entire bower is filled with a most divine fragrance.

ORIGINAL

निकुञ्जके पूर्व एवं दक्षिणके कोनेमें सुन्दर मणिजटित सोनेकी चौकी है, जिसपर स्वच्छ जलसे भरी हुई दो सुन्दर झारियाँ रखी हुई हैं। कुछ सुन्दर-सुन्दर गिलास रखे हैं। इसी चौकीके बगलमें एक और भी चौकी है, जिसपर चौड़े मुँहके सोनेके दो गमले (प्रक्षालन-पात्र) हैं। निकुञ्जके पश्चिम एवं दक्षिणके कोनेमें भी अत्यन्त सुन्दर चौकी है, जिसपर तरह-तरहके शृङ्गारके सामान रखे हैं। उसीकी बगलमें एक अन्य चौकीपर बहुत बड़ा दर्पण रखा हुआ है।

ENGLISH TRANSLATION

In the bower's southeastern corner stands a beautiful jewel-studded golden table. Upon it are two lovely ewers filled with pure water, together with several fine drinking glasses. Beside this table is another, bearing two wide-mouthed golden basins for washing. In the southwestern corner of the bower there is another exceptionally beautiful table holding all manner of articles for adornment. Next to it, upon yet another table, rests a very large mirror.

ORIGINAL

निकुञ्जकी समस्त दीवालोंपर पीले रंगकी मखमली चादर इस ढंगसे लगा दी गयी है मानो पीले मखमली वस्त्रोंका ही निकुञ्ज बना हुआ हो। उस वस्त्रपर अत्यन्त सुन्दर ढंगसे श्रीप्रिया-प्रियतमकी निशाकालीन विहार-लीलाके सुन्दर चित्र इस ढंगसे बने हुए हैं कि जिन्हें देखते ही ऐसा प्रतीत होता है मानो ये चित्र नहीं, सजीव मूर्ति हों। निकुञ्जके पूर्वी हिस्सेमें सोनेका पिंजरा है, जिसमें श्रीराधारानीकी प्रिय सारी (मैना) बैठी है।

ENGLISH TRANSLATION

Yellow velvet cloth has been draped across every wall so artfully that the bower seems to have been fashioned entirely from yellow velvet. Upon the cloth are exquisite paintings of the nighttime pleasure-pastimes of Śrī Priyā and Her Beloved. They are rendered so beautifully that, on seeing them, one feels they are not paintings at all but living forms. In the eastern part of the bower stands a golden cage in which Śrī Rādhārānī's beloved female mynah, Sārī, is perched.

ORIGINAL

ऊषाकाल उपस्थित हो गया है। वृन्दा हाथमें सोनेका एक पिंजरा लिये हुए निकुञ्जके दरवाजेके पास बहुत धीरे-धीरे आकर खड़ी हो जाती हैं। मञ्जरियाँ पहलेसे ही उठकर अपनी-अपनी शय्यापर बैठी हैं। वृन्दा इशारेसे धीरे-धीरे उन्हींसे कुछ पूछती हैं। मञ्जरियाँ इशारेसे ही उन्हें मन्द मुस्कानके साथ जवाब देती हैं। वृन्दा निकुञ्जके पूर्वकी तरफ चली जाती हैं तथा जहाँपर भीतर सारी पिंजरेमें बैठी थी, उसी जगह खिड़कीके छिद्रसे भीतर दृष्टि डालकर सारीको कुछ इशारा करती हैं। सारी भी इशारेमें आँख घुमाती है। वृन्दाके हाथमें जो पिंजरा था, उसमें एक तोता एवं एक सारी बैठी थी। वृन्दा उस पिंजरेके दरवाजेको खोल देती हैं। सारी एवं तोता धीरेसे उड़कर उस खिड़कीकी राहसे भीतर चले जाते हैं तथा जिस पिंजरेमें राधारानीकी प्रिय सारिका बैठी थी, उसपर जाकर बैठ जाते हैं।

ENGLISH TRANSLATION

Dawn has arrived. Carrying a golden cage in her hand, Vṛndā comes very softly and stands near the bower door. The mañjarīs have already risen and are seated upon their own beds. With restrained gestures Vṛndā asks them something; they answer only with signs and gentle smiles. Vṛndā then moves to the eastern side of the bower. At the point where Sārī sits in her cage inside, Vṛndā peers through an opening in the window and signals to her. Sārī responds by turning her eyes. The cage in Vṛndā's hand contains a parrot and another female mynah. Vṛndā opens its door. The mynah and parrot quietly fly through the window into the bower and alight upon the cage of Rādhārānī's beloved Sārikā.

ORIGINAL

निकुञ्ज-महलके चारों ओर सघन कदम्ब-वृक्षावली लगी हुई है। उसपर तरह-तरहके पक्षी बैठे हैं, पर सभी बिलकुल शान्त हैं। सभी एकटक तथा कान लगाकर वृन्दाके इशारेकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। वृन्दा सारी और तोतेको भीतर भेजकर पासके कदम्बके वृक्षपर बैठे हुए एक कुक्कुट पक्षीसे कुछ इशारा करती हैं। उनके ऐसा इशारा करते ही वह कुक्कुट जोरसे बोल उठता है। उसके बोलते ही समस्त पक्षी यह जान जाते हैं कि श्रीवृन्दादेवीका आदेश हो गया है और अब हमलोग मधुर स्वरमें गान करते हुए श्रीप्रिया-प्रियतमकी निद्रा भङ्ग करें। अतः धीरे-धीरे समस्त वन पक्षियोंके मधुर कलरवसे गुञ्जरित होने लग जाता है।

ENGLISH TRANSLATION

A dense array of kadamba trees surrounds the bower-palace. Many kinds of birds are perched upon them, yet every bird is perfectly still. All watch intently and listen for Vṛndā's signal. After sending the mynah and parrot inside, Vṛndā signals to a rooster perched on a nearby kadamba tree. At once the rooster cries loudly. From his call, all the birds understand that Śrī Vṛndādevī has given the command: now they are to sing in sweet voices and gently break the Divine Couple's sleep. Gradually the whole forest begins to resound with the melodious chorus of the birds.

ORIGINAL

इधर वृन्दादेवीके हाथसे उड़कर सारी एवं तोता जैसे ही भीतर पहुँचकर रानीकी सारीके पिंजरेपर बैठते हैं, वैसे ही रानीकी सारी अत्यन्त मधुर स्वरमें बोल उठती है - आओ बहिन! बिराजो! मेरे जीवनसर्वस्व प्रिया-प्रियतमकी अनुपम रूप-सुधाका पान कर नयनोंको कृतार्थ करो! अहा! किंचित् दृष्टि डालकर देखो तो सही, आज ये दोनों कितने सुन्दर दीख रहे हैं। मेरी प्यारी रानी, मेरे प्यारे श्यामसुन्दर - दोनोंकी रूप-सुधाका मैं सारी रात निर्निमेष नयनोंसे पान करती रहती हूँ, पर आँखें तृप्त नहीं होतीं। बहिन! ये आँखें तृप्त हो भी नहीं सकतीं। इस असीम रूप-सागरकी एक बूँद भी तो मेरी दो आँखोंमें नहीं समा पाती, फिर तृप्त हों तो कैसे?

ENGLISH TRANSLATION

As soon as the mynah and parrot fly from Vṛndādevī's hand, enter the bower, and perch upon the cage of the Queen's mynah, that bird begins to speak in an exceedingly sweet voice: "Come, sister! Be seated! Drink the incomparable nectar of the beauty of Priyā and Her Beloved, the whole treasure of my life, and make your eyes blessed. Ah, cast but a little glance and see how beautiful these Two appear today! All night long, with unblinking eyes, I drink the nectar of the beauty of my darling Queen and my beloved Śyāmasundara, yet my eyes are never satisfied. Sister, how could these eyes ever be satisfied? Not even a single drop from this boundless ocean of beauty can fit within my two eyes. How, then, could they attain fulfillment?"

ORIGINAL

सारीकी यह आवाज श्रीप्रिया-प्रियतमके कानोंमें भी जा पहुँचती है। उनकी निद्रा टूट जाती है, परन्तु वे एक-दूसरेको हृदयसे लगाये हुए उसी तरह लेटे रहते हैं। कोई भी आँखें नहीं खोलता। पर दोनोंके शरीर किंचित् हिल जानेके कारण सारी समझ जाती है कि दोनों ही जग गये हैं। इसी समय वृन्दाकी सारी कहने लगती है - बहिन! तुम्हारे सौभाग्यकी सीमा नहीं है। अहा! सचमुच इन दोनों मुख-चन्द्रोंपर आँखें पड़ते ही उनसे आँखें चिपट जाती हैं, फिर हटना चाहती नहीं। बहिन! मैं अभी बाहरसे उड़कर आयी हूँ। मैंने देखा कि पश्चिम गगनमें चन्द्र तेजीसे बढ़ते जा रहे थे। मुझे ऐसा प्रतीत हुआ, बहिन, मानो चन्द्रदेव श्रीप्रिया-प्रियतमके मुख-चन्द्रकी शोभा देखकर अतिशय लज्जाके कारण अपना मुँह छिपानेके लिये शीघ्रतासे भागे जा रहे हैं।

ENGLISH TRANSLATION

Sārī's voice reaches the ears of Śrī Priyā and Her Beloved. Their sleep breaks, yet They remain just as They were, clasped to one another's hearts. Neither opens Their eyes. Their bodies move slightly, however, and Sārī understands that both have awakened. At that moment Vṛndā's mynah begins: "Sister, there is no limit to your good fortune! Ah, truly, as soon as one's eyes fall upon these two moonlike faces, they cling there and no longer wish to turn away. Sister, I have just flown in from outside. I saw the moon moving swiftly through the western sky. It seemed to me that the moon-god, ashamed beyond measure after beholding the loveliness of Priyā and Her Beloved's moonlike faces, was fleeing with all haste to hide his own."

ORIGINAL

सारीकी इस बातको सुनकर श्रीप्रिया-प्रियतम समझ जाते हैं कि चन्द्रमा अस्त होने जा रहे हैं और प्रभात होनेवाला है। पर दोनोंके ही हृदय प्यारसे इतने भरे हैं, दोनों एक-दूसरेसे ऐसे मिले हुए हैं मानो उन्होंने एक-दूसरेसे कभी अलग न होनेकी प्रतिज्ञा कर ली हो।

ENGLISH TRANSLATION

Hearing the mynah's words, Śrī Priyā and Her Beloved understand that the moon is about to set and dawn is near. Yet Their hearts are so filled with love, and They are joined so closely, that it seems They have vowed never to part from one another.

> ORIGINAL
>
> अब तोता बोल उठता है - सारी! तू बता, मेरे प्यारे श्यामसुन्दर रातमें सुखकी नींद सोये हैं न? इस वनके चकवा-चकवियोंके आनन्द-कलरवसे मेरे प्यारे श्यामसुन्दरकी नींद तो नहीं टूट गयी है? मैं देखकर आया हूँ कि चकवा-चकवी पुलिनपर बैठे शोर मचा रहे हैं। सारी रात ये आनन्दमें भरकर शोर मचाते रहे हैं। अब पूर्वमुख बैठकर वे प्रिया-प्रियतमकी गुणावली गाते हुए अस्तोन्मुख चन्द्रमासे बातें कर रहे थे।

ENGLISH TRANSLATION

Now the parrot speaks: "Sārī, tell me, did my beloved Śyāmasundara sleep peacefully through the night? Surely the joyous cries of the cakravāka birds in this forest did not disturb His sleep? I have just seen those birds sitting upon the riverbank and calling out. All night they have cried aloud, filled with delight. Now, seated facing the east, they were speaking with the setting moon while singing the virtues of Priyā and Her Beloved."

ORIGINAL

चकवी कहती थी - चन्द्रदेव! जाओ, सुखसे जाओ, फिर आना, मैं तुझे गाली नहीं दूँगी। इस वनमें मेरी प्यारी राधारानी एवं मेरे प्यारे श्यामसुन्दरका राज्य है। यह राज्य अनन्त कालतक रहेगा एवं अनन्त कालतक ही यहाँके सभी नियम पलटे रहेंगे। चन्द्र! ऐसा सुना है कि तुम्हारे दर्शन होते ही प्यारे चकवेसे चकवी अलग हो जाया करती है; पर मैं तो कभी भी अलग नहीं हुई। देखो चन्द्रदेव! मेरी आँखोंमें, पता नहीं, क्या हो गया है कि मुझे चकवेमें, तुममें, यमुनाकी प्रत्येक तरङ्गमें प्यारे श्यामसुन्दरकी ही झाँकी दीख पड़ती है। मुझे कभी-कभी भ्रम हो जाता है कि उज्ज्वल गगनमें तुम्हारा प्रकाश नहीं, मेरे प्यारे श्यामसुन्दरके ही मुख-चन्द्रका प्रकाश है; इसलिये मैं उड़कर उधर ही दौड़ने लग जाती हूँ। पर चकवा भी साथ-साथ उड़ने लग जाता है। वह मुझसे आगे बढ़ जाता है। मैं देखती हूँ - अहा! श्यामसुन्दर इस चकवेके अन्तरालमें भी छिपे हैं; अतः विचारमें पड़कर फिर मैं आकाशसे नीचे उतर आती हूँ और सोचती हूँ - ना, मुझे भ्रम हो गया था; मेरी आँखोंमें ही प्यारे श्यामसुन्दरकी छवि बस गयी है। बहुत सोचती रही कि ऐसा क्यों हो गया है? फिर कुछ-कुछ समझ पायी कि हम सभी वनवासियोंपर रानीकी छाया पड़ती है, रानीकी दृष्टि पड़ती है। रानीकी दृष्टिमें, रानीके अणु-अणुमें श्यामसुन्दर भरे हैं, इसलिये हम सभी वनवासियोंकी भी यही दशा हो गयी है। अतः चन्द्रदेव! रानीपर बलिहार जाती हुई तुमसे प्रार्थना कर रही हूँ कि शीघ्रसे शीघ्र पूर्व गगनमें लौट आना। तुम्हारे जानेपर मेरी प्यारी रानी मेरे प्यारे श्यामसुन्दरके साथ मिलेंगी। देर मत करना, भैया! हम वनवासी रानीकी इस अनन्त करुणाके चिर ऋणी हैं। रानीकी छाया पड़कर ही हम इस अनन्त असीम सौभाग्यकी अधिकारिणी बनी हैं। मैं भला रानीकी क्या सेवा कर सकती हूँ? हाँ, तुमसे हृदय खोलकर प्रार्थना कर सकती हूँ। मेरी ओरसे शङ्का मत करना कि चकवी हमें गाली देगी। शीघ्रसे शीघ्र पूर्व गगनमें उदित होना। मैं हृदयसे तुम्हारा स्वागत करूँगी।

ENGLISH TRANSLATION

The female cakravāka was saying: "Moon-god, go now, go happily, and then return. I shall not revile you. This forest is the kingdom of my darling Rādhārāṇī and my beloved Śyāmasundara. Their reign will last for all eternity, and for all eternity every ordinary rule will remain reversed here. O Moon, I have heard that when you appear, the female cakravāka is separated from her beloved mate; yet I have never once been parted from mine. Look, Moon-god, I do not know what has happened to my eyes: in my mate, in you, and in every wave of the Yamunā, I see only a vision of beloved Śyāmasundara. Sometimes I become confused and think that the light in the shining sky is not yours at all, but the radiance of my beloved Śyāmasundara's moonlike face. Then I take wing and hurry toward it. But my mate flies beside me and goes ahead. I look and exclaim, 'Ah! Śyāmasundara is hidden within this cakravāka too!' Perplexed, I descend again from the sky and think, 'No, I was mistaken; it is within my own eyes that beloved Śyāmasundara's image has taken up residence.' For a long time I wondered why this had happened. Then I began to understand: the Queen's shadow falls upon all of us who dwell in the forest; Her glance falls upon us. Śyāmasundara fills Her vision and every particle of Her being, and therefore all of us forest-dwellers have come to share this same condition. O Moon-god, surrendering myself to the Queen, I beg you to return to the eastern sky as quickly as you can. When you depart, my darling Queen will unite with my beloved Śyāmasundara. Do not delay, brother! We forest-dwellers are forever indebted to the Queen's boundless compassion. Only because Her shadow has fallen upon us have we become entitled to this immeasurable, limitless good fortune. What service could I possibly offer the Queen? This much I can do: I can open my heart and plead with you. Do not fear on my account that the cakravāka will curse you. Rise in the eastern sky again as swiftly as possible. I shall welcome you with all my heart."

ORIGINAL

तोता बोलता ही जा रहा था - सारी! चकवेने भी ठीक इसी प्रकारकी प्रार्थना चन्द्रसे की। मैं सुनकर यहाँ आया हूँ। इसलिये चित्तमें आया कि इस आनन्द-कलरवसे मेरे प्यारे श्यामसुन्दरकी नींदमें तो कहीं बाधा नहीं आयी?

ENGLISH TRANSLATION

The parrot continues: "Sārī, the male cakravāka offered the moon precisely the same prayer. Having heard it, I came here. Thus the thought arose in my heart: perhaps this joyous chorus has disturbed the sleep of my beloved Śyāmasundara?"

ORIGINAL

तोतेकी बात सुनकर श्रीप्रिया-प्रियतमके मुखारविन्दपर मुस्कान छा जाती है। तोता एवं दोनों सारी इस मुस्कानको देख लेते हैं।

ENGLISH TRANSLATION

At the parrot's words, a smile spreads across the lotus faces of Śrī Priyā and Her Beloved. The parrot and both mynahs catch sight of it.

ORIGINAL

रानीकी सारी बोलती है - अहा! देख तोता! मेरी रानीके मुखपर मन्द मुस्कानकी शोभा देख! इस मुस्कानको देखनेके लिये समस्त वनवासी आँखें फाड़े प्रतीक्षा कर रहे हैं।

ENGLISH TRANSLATION

The Queen's mynah says, "Ah, look, Parrot! See the beauty of that gentle smile upon my Queen's face! Every forest-dweller waits wide-eyed for the sight of this smile."

ORIGINAL

सारीकी बात सुनकर श्यामसुन्दरकी आँखें एक बार खुल जाती हैं। सारी फिर कहती है - तोता! प्यारे श्यामसुन्दरके मुखारविन्दकी ओर देख! इन आलसभरे नयनोंकी ओर देख! बिखरी हुई अलकावलीकी ओर देख! ताम्बूल-रञ्जित अधरोंकी ओर देख!

ENGLISH TRANSLATION

Hearing the mynah's words, Śyāmasundara opens His eyes for a moment. Sārī continues, "Parrot, look toward beloved Śyāmasundara's lotus face! Look at those eyes heavy with languor! Look at His scattered curls! Look at His lips stained red with betel!"

ORIGINAL

अपनी प्यारी सारीकी बात सुनकर रानी भी मुस्कुराती हुई एक बार आँखें खोलकर देखती हैं। दोनों सारिकाएँ एवं तोता देख लेते हैं। अतः तीनों ही एक साथ बोल उठते हैं - "जय हो वृन्दावनेश्वरीकी! जय हो वृन्दावनेश्वरकी!!"

तोता कहता है - "व्रजजीवन घनश्यामकी जय!"

दोनों सारी कहती हैं - "घनश्याम-अभिरामिणी राधारानीकी जय!"

तोता कहता है - "वृन्दावन-चन्द्र श्यामसुन्दरकी जय!"

सारिकाएँ कहती हैं - "वृन्दावन-चन्द्रिका श्यामारानीकी जय!"

तोता कहता है - "विश्वविमोहन नन्दनन्दनकी जय!"

सारिकाएँ कहती हैं - "नन्दनन्दन-विमोहिनी राधारानीकी जय!"

ENGLISH TRANSLATION

Hearing Her beloved Sārī, the Queen too smiles and opens Her eyes for a moment. Both mynahs and the parrot see Her. All three call out together, "Victory to the Queen of Vṛndāvana! Victory to the Lord of Vṛndāvana!"

The parrot cries, "Victory to dark-hued Śyāma, the very life of Vraja!"

The two mynahs reply, "Victory to Rādhārānī, the Enchantress of dark-hued Śyāma!"

The parrot cries, "Victory to Śyāmasundara, the moon of Vṛndāvana!"

The mynahs reply, "Victory to Śyāmārānī, the moonlight of Vṛndāvana!"

The parrot cries, "Victory to Nandanandana, Enchanter of the universe!"

The mynahs reply, "Victory to Rādhārānī, She who enchants Nandanandana!"

ORIGINAL

इस जय-जयकारसे रानी एवं श्यामसुन्दरके मुखारविन्दपर जोरसे हँसी आने लगती है, पर वे उसे रोकते हैं। सखियाँ उधर खिड़कीके छिद्रोंसे दृष्टि डाल-डालकर श्रीप्रिया-प्रियतमकी शोभा निहार-निहारकर आनन्दमें डूब रही हैं।

ENGLISH TRANSLATION

At these acclamations, laughter rises strongly upon the lotus faces of the Queen and Śyāmasundara, but They restrain it. Meanwhile the sakhīs repeatedly peer through openings in the window and, gazing upon the beauty of Śrī Priyā and Her Beloved, drown in bliss.

> ORIGINAL
>
> फिर सारी कहती है - मेरी प्यारी रानी! मेरे प्यारे श्यामसुन्दर!! चन्द्रदेवकी किरणें मलिन हो गयी हैं। तारिका-पंक्ति भी आकाशमें विलीन होती जा रही है। पूर्व गगनमें अरुणिमाकी झलक दीख पड़ने लग गयी है। अतः मेरे जीवनसर्वस्व! उठो, हम वनवासी तुम्हें आँखें भरकर देखें।

ENGLISH TRANSLATION

Then Sārī says, "My darling Queen! My beloved Śyāmasundara! The rays of the moon-god have grown pale. The rows of stars are fading into the sky, and a trace of crimson has begun to appear in the east. Therefore, O whole treasure of my life, rise and let us forest-dwellers feast our eyes upon You."

> ORIGINAL
>
> श्रीश्यामसुन्दर एवं प्रिया, दोनों ही सारीकी सब बात सुन रहे हैं, पर उनमें एक-दूसरेके आनन्दको भङ्ग करनेका साहस नहीं हो रहा है। अतः दोनों उसी प्रकार एक-दूसरेसे लिपटे हुए मन्द-मन्द मुस्कुराते सोये हुए हैं।

ENGLISH TRANSLATION

Śrī Śyāmasundara and Priyā hear every word the mynah speaks, yet neither can bring Themself to disturb the other's delight. Thus They remain lying there, entwined with one another and smiling softly.

> ORIGINAL
>
> वृन्दाकी सारी कहती है - बहिन सारिके! देख, यह प्रभात होना हमें अच्छा नहीं लगता। यह मेरे प्राणाधार प्रिया-प्रियतमको प्रतिदिन अलग कर देता है। तू कोई उपाय जानती है कि जिससे प्रभात हो ही नहीं?

ENGLISH TRANSLATION

Vṛndā's mynah says, "Sister Sārikā, look! We do not like this coming of dawn. Every day it parts Priyā and Her Beloved, the very support of my life. Do you know some means by which dawn might never come at all?"

ORIGINAL

रानीकी सारी कहती है - बहिन! उपाय क्यों नहीं है; पर रानीकी आज्ञाके बिना मैं किसीको यह उपाय बतला नहीं सकती। देख, यह प्रभात हमें भी बड़ा अखरता है। मेरी रानीके प्राणोंको तो व्याकुल कर देता है। फिर भी रानी इसका प्रतिदिन स्वागत ही करती हैं।

ENGLISH TRANSLATION

The Queen's mynah replies, "Sister, of course there is a way. But without the Queen's permission I cannot reveal it to anyone. Look, dawn pains us greatly too. It leaves my Queen's very life-breaths distraught. Even so, every day the Queen welcomes it."

ORIGINAL

सारीकी बात सुनकर रानी कुछ लज्जित-सी होकर श्रीश्यामसुन्दरके बाहुपाशमें अपना सिर छिपा लेती हैं। इसी समय मन्द समीरका झोंका लगनेसे खिड़कीका पर्दा जोरसे हिल जाता है। उसी समय श्यामसुन्दरकी आँखें खुल जाती हैं। श्यामसुन्दर देखते हैं कि सचमुच प्रभात हो गया है। इसलिये अत्यन्त प्यारभरी दृष्टिसे श्रीप्रियाके मुखारविन्दको देखते हुए धीरेसे कहते हैं - "प्रिये! प्रभात हो गया है।"

ENGLISH TRANSLATION

At Sārī's words, the Queen grows a little bashful and hides Her head within Śrī Śyāmasundara's encircling arms. Just then a gust of gentle wind makes the window curtain sway vigorously, and Śyāmasundara opens His eyes. He sees that dawn has indeed arrived. Gazing upon Śrī Priyā's lotus face with a look overflowing with love, He softly says, "Beloved, dawn has come."

ORIGINAL

श्यामसुन्दरकी बात सुनकर श्रीप्रियाका मुख दुःखमिश्रित गम्भीरताकी मुद्रा धारण कर लेता है। वे धीरे-धीरे उठकर शय्यापर बैठ जाती हैं। उनके उठते ही श्यामसुन्दर भी उठकर शय्यापर बैठ जाते हैं। दोनोंके ही मुखारविन्दपर अलकावलियाँ बिखरी हुई हैं। दोनोंके नयनोंमें प्रेम एवं आलस्य भरा हुआ है। श्रीश्यामसुन्दर अपने दोनों हाथोंसे एक बारमें ही अपने मुखारविन्दसे अलकावलीको हटा लेते हैं तथा बायें हाथकी मुट्ठी बाँधकर उसी मुट्ठीपर श्रीप्रियाकी ठोड़ीको टिकाकर दाहिने हाथसे श्रीप्रियाकी अलकावलीको ठीक करने लगते हैं। श्रीप्रियाका मुख इस समय पश्चिमकी ओर है तथा श्यामसुन्दरका मुख पूर्वकी ओर। श्रीप्रिया अपने दोनों हाथोंसे अपने अङ्गोंके वस्त्रोंको ठीक कर रही हैं।

ENGLISH TRANSLATION

On hearing Śyāmasundara's words, Śrī Priyā's face assumes a grave expression tinged with sorrow. Slowly She rises and sits upon the bed, and Śyāmasundara sits up as soon as She does. Curls lie scattered across both lotus faces; love and drowsiness fill both pairs of eyes. With both hands Śrī Śyāmasundara sweeps the curls from His own face in a single motion. He then closes His left hand into a fist, rests Śrī Priyā's chin upon it, and uses His right hand to arrange Her locks. Śrī Priyā's face is turned toward the west and Śyāmasundara's toward the east. With both hands, Śrī Priyā straightens the garments upon Her limbs.

ORIGINAL

इसी समय दासियोंकी, मञ्जरियोंकी एवं सखियोंकी टोली हँसती हुई, मुस्कुराती हुई किवाड़ोंको धक्का दे देती हैं। किवाड़ खुल जाते हैं तथा ललिता सबसे आगे मुस्कुराती हुई भीतर प्रवेश करती हैं। उनके पीछे बगलमें सभी सखियाँ चल रही हैं। ललिता तेजीसे चलकर शय्याके पास पहुँच जाती हैं। सखियोंको आयी देखकर श्रीप्रिया लज्जित-सी होकर जल्दीसे शय्यासे उठती हैं, पर ललिता उनके हाथोंको पकड़कर, जहाँ वे बैठी थीं, वहीं बैठा देती हैं। रूपमञ्जरी आकरके शय्यापर पड़ा हुआ रानीका मोतियोंका हार उठा लेती है तथा उसे अपने अञ्चलमें बाँधकर गाँठ लगाती है। गुणमञ्जरी शय्याके पास पड़ी हुई पीकदानीको उठाकर सिरसे लगाती तथा मुस्कुराती हुई उसे बगलमें लिये हुए खड़ी रहती है।

ENGLISH TRANSLATION

At that moment the company of maidservants, mañjarīs, and sakhīs laugh and smile as they push open the doors. Lalitā enters first, smiling, with all the sakhīs coming close behind her. She walks swiftly to the bed. Seeing the sakhīs arrive, Śrī Priyā rises quickly and shyly, but Lalitā takes Her hands and seats Her again exactly where She had been sitting. Rūpamañjarī comes forward, picks up the Queen's pearl necklace lying upon the bed, ties it into the end of her veil, and knots it securely. Guṇamañjarī lifts the spittoon lying beside the bed, touches it reverently to her head, and stands smiling with it tucked at her side.

ORIGINAL

ललिता-विशाखा आदि सखियाँ रानीसे अत्यन्त प्रेमका विनोद प्रारम्भ करती हैं। रानी आलस्यभरी आँखोंसे ताकती हुई बीच-बीचमें ललिताके मुँहको अपने हाथसे बन्द कर देती हैं। श्यामसुन्दर बीच-बीचमें मुस्कुराकर श्रीप्रियाके कन्धोंको पकड़कर हिला देते हैं तथा ललिताके बहुत विनोद करनेपर रानीके कानमें कुछ धीरेसे कह देते हैं। रानी सुनकर मुस्कुराने लगती हैं। ललिता भी मुस्कुरा देती हैं; पर फिर लज्जित-सी होकर चुप रह जाती हैं।

ENGLISH TRANSLATION

Lalitā, Viśākhā, and the other sakhīs begin to tease the Queen with the deepest affection. Gazing through languid eyes, the Queen now and then covers Lalitā's mouth with Her hand. From time to time Śyāmasundara smiles, takes Śrī Priyā by the shoulders, and gently shakes Her. When Lalitā's teasing becomes especially lively, He whispers something into the Queen's ear. The Queen smiles on hearing it. Lalitā smiles too, but then grows bashful and falls silent.

ORIGINAL

लवङ्गमञ्जरी हाथमें जलकी झारी लिये हुए खड़ी है। विमलामञ्जरीके हाथमें कुल्ला करनेका चौड़े मुँहका गमला (प्रक्षालन-पात्र) है। श्रीप्रिया-प्रियतम उसी गमलेमें बारी-बारीसे हाथ एवं आँखें धोते हैं। फिर कुल्ला करते हैं। चित्रा शीतल जलसे भरा हुआ अत्यन्त सुन्दर गिलास रानीके हाथमें पकड़ा देती हैं। रानी गिलासको श्यामसुन्दरके होठोंसे लगा देती हैं। श्यामसुन्दर श्रीप्रियाके मुखपर दृष्टि जमाये हुए धीरे-धीरे आधा गिलास जल पी लेते हैं। फिर गिलासको पकड़कर श्यामसुन्दर श्रीप्रियाके होठोंसे लगा देते हैं। श्रीप्रिया शर्मायी-सी होकर पीना नहीं चाहतीं; पर श्यामसुन्दर बायें हाथसे प्रियाका दाहिना कन्धा पकड़कर दबा देते हैं एवं गिलासको प्यारभरी जबर्दस्तीसे प्रियाके होठोंके पास रखे रहते हैं। आँखोंसे प्रेम झर रहा है। आखिर श्रीप्रिया भी कुछ घूँट शीतल जल धीरे-धीरे पी लेती हैं। फिर सखियाँ दोनोंका श्रृङ्गार करती हैं।

ENGLISH TRANSLATION

Lavaṅgamañjarī stands holding a water ewer. Vimalāmañjarī carries a wide-mouthed basin for rinsing. Taking turns over that basin, Śrī Priyā and Her Beloved wash Their hands and eyes and then rinse Their mouths. Citrā places a beautiful glass filled with cool water into the Queen's hand. The Queen holds it to Śyāmasundara's lips. Fixing His gaze upon Śrī Priyā's face, He slowly drinks half the glass. Śyāmasundara then takes it and places it against Śrī Priyā's lips. Bashful, She does not wish to drink, but with His left hand He grasps and presses His Beloved's right shoulder and, with loving insistence, keeps the glass at Her lips. Love pours from Their eyes. At last Śrī Priyā too slowly drinks a few sips of the cool water. The sakhīs then adorn Them both.

ORIGINAL

वृन्दादेवी निर्निमेष नयनोंसे श्रीप्रिया-प्रियतमकी झाँकीकी शोभा निहार रही हैं। वृन्दाकी दासियोंने खिड़कीके पर्दोंको उठा दिया है। शीतल-मन्द-सुगन्ध पवन खिड़कीकी राहसे प्रवाहित होता हुआ श्रीप्रिया-प्रियतमके अङ्गोंको स्पर्श करके कृतार्थ हो रहा है।

ENGLISH TRANSLATION

With unblinking eyes Vṛndādevī beholds the splendor of Śrī Priyā and Her Beloved. Vṛndā's maidservants have raised the window curtains. A cool, gentle, fragrant breeze flows in through the window and finds fulfillment by touching the limbs of the Divine Couple.

ORIGINAL

सूर्योदयमें तो अभी भी कुछ विलम्ब है। वनश्रेणीपर ऊषाकालीन सौन्दर्य छाया हुआ है। निकुञ्जके इधर-उधर हरिण-हरिणी चौकड़ी भर रहे हैं। कदम्बपर बैठी हुई कोयलें कुहू-कुहूकी मधुर तान अलाप रही हैं। मालती-जूही आदि नाना प्रकारके पुष्प-वृक्षोंकी पंक्तियाँ निकुञ्जके चारों ओर लगी हुई हैं। सबमें फूल खिले हुए हैं। उनपर भ्रमर गुञ्जार कर रहे हैं।

ENGLISH TRANSLATION

There is still some time before sunrise. The beauty of dawn has spread over the forest groves. Here and there around the bower, stags and does leap in graceful bounds. Cuckoos perched upon the kadamba trees sing their sweet "kuhū, kuhū" refrain. Rows of mālatī, jūhī, and many other flowering plants encircle the bower. Blossoms have opened upon them all, and bees hum over the flowers.

ORIGINAL

अब वृन्दाकी भाव-समाधि टूटती-सी है। वे कहती हैं - "प्यारे श्यामसुन्दर! मेरी वनवासिनी बहिनोंने वनको तुम्हारे लिये ही आज अद्भुत साजसे सजाया है। अपनी दृष्टि डालकर उनकी प्यारभरी सेवा स्वीकार करो!"

ENGLISH TRANSLATION

Now Vṛndā seems to emerge from her absorption in divine feeling. She says, "Beloved Śyāmasundara! Today my forest-dwelling sisters have adorned the woodland in wondrous array solely for You. Bestow Your glance upon it and accept their love-filled service."

ORIGINAL

वृन्दाकी बात सुनकर सभी सखियोंमें आनन्द छा जाता है। सखियोंमें कोई श्यामसुन्दरकी शय्यापर, कोई नीचे बैठी हुई थीं तथा कुछ घेरे हुए खड़ी थीं। उन सबके बीचमें प्रिया-प्रियतमकी अनिर्वचनीय शोभा समस्त निकुञ्जको आनन्दसे प्लावित कर रही थी।

ENGLISH TRANSLATION

At Vṛndā's words, joy spreads through all the sakhīs. Some had been seated upon Śyāmasundara's bed, others upon the floor, while still others stood encircling Them. Amid them all, the indescribable beauty of Priyā and Her Beloved flooded the entire bower with bliss.

ORIGINAL

वृन्दाकी प्रार्थना सुनकर दुपट्टा सँभालते हुए श्यामसुन्दर एवं चम्पई रंगकी साड़ी सँभालती हुई श्रीप्रिया उठ पड़ती हैं। सखी-मण्डलीके सहित दोनों ही निकुञ्जके बरामदेमें आकर खड़े हो जाते हैं। पुष्पोंसे लदी हुई सघन लताएँ बरामदेको चारों ओरसे घेरकर शोभा पा रही हैं। रानी एवं श्यामसुन्दर उसी बरामदेसे होते हुए निकुञ्जके बाहरी सहनमें आकर खड़े हो जाते हैं।

ENGLISH TRANSLATION

Hearing Vṛndā's prayer, Śyāmasundara rises while arranging His scarf, and Śrī Priyā rises while gathering Her campaka-yellow sari. Together with the circle of sakhīs, They come and stand upon the bower's veranda. Dense creepers laden with blossoms surround the veranda on every side and lend it beauty. Passing through the veranda, the Queen and Śyāmasundara emerge into the bower's outer courtyard and stand there.

ORIGINAL

मन्द समीरके झोंकोंसे हिलती हुई लताएँ मानो प्रिया-प्रियतमसे प्रार्थना कर रही हों - "मेरे जीवनाधार! रातभर तुम्हें हृदयमें छिपाये रही हूँ। क्या अब जा रहे हो? ना, ना, मत जाओ!"

ENGLISH TRANSLATION

Stirred by gusts of gentle wind, the creepers seem to plead with Priyā and Her Beloved: "O support of my life! All night I kept You hidden within my heart. Are You leaving now? No, no, do not go!"

ORIGINAL

आगे सहनमें बड़ी-बड़ी क्यारियोंमें सुन्दर-सुन्दर गुलाबकी बेलें फैली हुई हैं, जिनपर बड़े-बड़े गुलाब खिले हुए हैं। श्रीप्रिया-प्रियतम उन्हीं गुलाबोंके बीचसे होकर बढ़ रहे हैं। अभी भी श्यामसुन्दरके शरीरपर आलस्यके चिह्न बने हुए हैं। वे रह-रहकर श्रीप्रियाकी ओर झुक जाते हैं तथा अत्यन्त प्यारसे श्रीप्रियाके कन्धेको दबाकर उनके मुखारविन्दकी ओर देखने लग जाते हैं। कभी-कभी चौंके हुएसे इधर-उधर देखने लग जाते हैं। श्रीप्रियाजी उस समय घबरायी-सी मुद्रामें उधर ही देखने लग जाती हैं।

ENGLISH TRANSLATION

Ahead in the courtyard, beautiful rose-vines spread across large flowerbeds, bearing great blooming roses. Śrī Priyā and Her Beloved proceed between them. Signs of languor still remain upon Śyāmasundara's body. Again and again He leans toward Śrī Priyā, lovingly presses Her shoulder, and gazes into Her lotus face. At times He looks suddenly from side to side as though startled; then Śrī Priyā too turns anxiously in the same direction.

ORIGINAL

श्रीप्रिया-प्रियतम अब एक-दूसरेके गलेमें बाँह डाल देते हैं तथा कुछ क्षण एक-दूसरेके मुखारविन्दको अतृप्त नयनोंसे देखते रहते हैं। फिर वियोगकी बात स्मरण करके दोनों ही एक बार अतिशय गम्भीर श्वास लेते हैं। दोनोंके मुखपर उदासी छा जाती है। कुछ क्षणोंके लिये सखियाँ भी अतिशय गम्भीर हो जाती हैं।

ENGLISH TRANSLATION

Śrī Priyā and Her Beloved now place Their arms around one another's necks and for a few moments gaze upon each other's lotus faces with eyes that cannot be satisfied. Then, remembering the separation to come, They both draw a single, profoundly heavy breath. Sadness spreads over Their faces, and for a few moments the sakhīs too become deeply solemn.

ORIGINAL

ललिता इसी समय दोनोंको प्रसन्न करनेके उद्देश्यसे रानीसे कहती हैं - "री! याद है कि भूल गयी? आज प्रतिदिनकी अपेक्षा सूर्य-पूजाके लिये शीघ्र ही वन जाना है। तीन दिनकी सूर्य-पूजाका व्रत आज ही प्रारम्भ करना है, पर तू तो बिलकुल चींटीकी चाल चल रही है!"

ENGLISH TRANSLATION

At that moment, wishing to cheer Them, Lalitā says to the Queen, "Girl! Do you remember, or have you forgotten? Today you must go to the forest for the worship of the Sun earlier than usual. The three-day vow of Sun worship begins today, yet you are walking no faster than an ant!"

ORIGINAL

ललिताकी इस बातको सुनकर रानी एवं श्यामसुन्दर दोनों ही शीघ्र पुनर्मिलनकी कल्पनासे आनन्दमें भर जाते हैं। दोनोंके मुखपर उल्लास छा जाता है। सखियाँ भी उल्लसित हो जाती हैं। श्यामसुन्दर अतिशय कृतज्ञताभरी दृष्टिसे ललिताकी ओर ताकने लगते हैं एवं कुछ शीघ्र गतिसे बढ़ने लग जाते हैं।

ENGLISH TRANSLATION

At Lalitā's words, the Queen and Śyāmasundara are both filled with delight at the thought that They will soon meet again. Joy illuminates Their faces, and the sakhīs rejoice as well. Śyāmasundara looks toward Lalitā with a gaze brimming with gratitude and begins to walk a little faster.

ORIGINAL

मन्द समीरका स्पर्श पाकर यद्यपि श्यामसुन्दर एवं रानीमें आलस्य बिलकुल नहीं रह गया है, पर दोनों ही चतुराईसे आलस्यका बहाना लेकर बीच-बीचमें अँगड़ाई लेते समय इतनी ललकसे एक-दूसरेके साथ सट जाते हैं मानो एक-दूसरेमें सर्वथा मिल जाना चाहते हैं।

ENGLISH TRANSLATION

Although the touch of the gentle breeze has dispelled every trace of drowsiness from Śyāmasundara and the Queen, They cleverly continue to feign languor. From time to time, while stretching, They press against each other with such ardor that They appear to long to merge entirely into one another.

ORIGINAL

गुलाबकी क्यारियोंसे होते हुए सखी-मण्डलीके सहित श्रीप्रिया-प्रियतम कदली-वनमें प्रवेश करते हैं। इसके बाद तरह-तरहके अत्यन्त सुगन्धित पुष्पोंकी क्यारियोंमेंसे होते हुए विश्राम-कुञ्जके फाटकपर पहुँच जाते हैं। फाटकसे कुछ ही कदम हटकर यमुनाका निर्मल प्रवाह प्रवाहित हो रहा है। श्रीप्रिया-प्रियतम फाटकसे निकलकर सड़कके किनारे एक सुन्दर वटवृक्षके नीचे खड़े होकर यमुनाकी शोभा निहारने लग जाते हैं।

ENGLISH TRANSLATION

Passing through the rose beds with the circle of sakhīs, Śrī Priyā and Her Beloved enter the plantain grove. Then, making Their way among beds of many kinds of intensely fragrant flowers, They reach the gate of the Repose Bower. Only a few steps beyond the gate flows the Yamunā's clear current. Leaving through the gate, Śrī Priyā and Her Beloved stand beneath a beautiful banyan tree beside the road and begin to behold the splendor of the Yamunā.

CHAPTER 3

स्नान लीला

The Bathing Līlā

Source scan pages 25–40

ORIGINAL

Sanskrit invocation and Hindi prose

॥ विजयेतां श्रीप्रियाप्रियतमौ ॥

स्नान लीला

निकुञ्जसे लौटकर श्रीप्रिया अपने महलके कमरेमें सुन्दर पलंगपर लेटी हुई हैं। श्रीप्रियाका सिर दक्षिणकी तरफ है एवं पैर उत्तरकी ओर। आँखें बन्द हैं। हल्की नीली चादरसे श्रीप्रियाको गर्दनके नीचेके अङ्ग ढके हुए हैं। देखनेसे प्रतीत हो रहा है कि श्रीप्रियाजी सो रही हैं; पर वस्तुतः प्रिया जगी हुई हैं। एक मञ्जरी श्रीप्रियाके तलुएके पास पलंगपर बैठी है। मञ्जरीके पैर नीचेकी ओर लटक रहे हैं, मञ्जरीकी दृष्टि श्रीप्रियाजीकी ओर लगी हुई है।

ENGLISH TRANSLATION

May Śrī Priyā and Her Beloved be victorious!

The Bathing Līlā

Having returned from the secluded grove, Śrī Priyā is lying upon a beautiful bed in a chamber of Her palace. Her head is toward the south and Her feet toward the north. Her eyes are closed, and a light-blue sheet covers Her body below the neck. She appears to be asleep, but in truth Priyā is awake. A mañjarī sits on the bed near the soles of Her feet, her own feet dangling over the side and her gaze fixed upon Śrī Priyājī.

ORIGINAL Hindi prose

मञ्जरियाँ एवं सखियाँ विभिन्न कार्योंमें व्यस्त हैं। कोई उबटन तैयार कर रही है, कोई चन्दन घिस रही है, कोई झारियोंमें जल भर रही है, कोई छोटी-छोटी कटोरियोंमें विभिन्न तेल-फुलेल डाल रही है, कोई दन्तमञ्जन निकालकर छोटी-सी कटोरीमें रख रही है, कोई श्रीप्रियाके पहननेके वस्त्रोंको निकाल-निकालकर सजा रही है, कोई स्नान करने जा रही है और कोई स्नान करके लौट रही है तथा इस प्रक्रियामें रानीके महलसे लेकर यमुनाके घाटतक आने-जानेका ताँता लग रहा है। कोई सुन्दर चमचम करती हुई अलगनीपर कपड़े फैला रही है, कोई अपने केशोंमें कंघी कर रही है, कोई शीघ्रतासे केशोंको गूँथ रही है, कोई आँखोंमें अञ्जन लगा रही है। कुछ मञ्जरियाँ बिलोये हुए दूधमेंसे अभी-अभी निकले मक्खनको सुन्दर-सुन्दर बड़े-बड़े बर्तनोंमें सजा रही हैं, कोई दूधके बर्तनोंको चूल्हेपर गर्म करनेके लिये चढ़ा रही है, कोई भिन्न-भिन्न चीजोंको यथास्थान सजा-सजाकर रख रही है। दो-तीन मञ्जरियाँ प्रियाके पहननेके लिये पुष्पमाला शीघ्रतासे तैयार करनेमें लगी हैं, कोई प्रियाके तुलसी-पूजनकी सामग्री इकट्ठी कर रही है। इस तरह सम्पूर्ण महलमें चहल-पहल-सी है। अवश्य ही सारे कार्य अतिशय शान्तिके साथ हो रहे हैं। सभी इस चेष्टामें हैं कि शब्द न हो, नहीं तो यदि प्रियाकी आँखें कदाचित् लगी भी हों तो खुल जायेंगी।

ENGLISH TRANSLATION

The mañjarīs and sakhīs are busy with many tasks. One prepares fragrant bathing paste, another grinds sandalwood, another fills ewers with water, and another places different oils and perfumes in tiny bowls. One takes out tooth powder and sets it in a small cup; another lays out Śrī Priyā's garments. Some are going to bathe while others return, making a continuous procession between the Queen's palace and the bank of the Yamunā. One spreads clothes upon a gleaming line, another combs her hair, another quickly braids hers, and another applies collyrium to her eyes. Some mañjarīs arrange freshly churned butter in handsome large vessels; one sets pots of milk upon the hearth to warm, while others put every article neatly in its proper place. Two or three swiftly fashion flower garlands for Priyā to wear, and another gathers the articles for Her worship of Tulasī. Thus the whole palace is astir, though every task is performed with the utmost quiet. All take care to make no sound, lest Priyā's eyes, if sleep has perhaps touched them, should open.

ORIGINAL Hindi prose

बीच-बीचमें कुछ छन-छन शब्द एवं सखियों-मञ्जरियोंके कङ्कण-करधनीके झन-झन शब्द सुन पड़ते हैं। नूपुरका रुनझुन-रुनझुन शब्द भी रह-रहकर सुन पड़ता है। सखियोंको-मञ्जरियोंको स्वयं अपना ही रुनझुन-रुनझुन शब्द भ्रममें डालने लगता है कि कहीं प्यारे श्यामसुन्दर तो नहीं आ रहे हैं।

ENGLISH TRANSLATION

Now and then comes a faint chiming, the soft jingle of the sakhīs' and mañjarīs' bracelets and waist-bells. At intervals the tinkling of anklets is also heard. The very sound of their own ornaments makes them wonder for a moment whether beloved Śyāmasundara might be approaching.

ORIGINAL Hindi prose

श्रीप्रिया जिस कमरेमें लेट रही हैं, उसी कमरेमें उत्तरके हिस्सेमें खड़ी होकर ललिता शीघ्रतासे अपना श्रृङ्गार कर रही हैं। एक मञ्जरी चाहती है कि मैं सहायता करूँ, पर मुस्कुराती हुई वे गोरे-से हाथके इशारेसे कहती हैं—तू ठहर जा! मैं शीघ्र ही अपना श्रृङ्गार स्वयं कर ले रही हूँ।

शीघ्रतासे ललिता अपने हाथोंसे अपने केशोंको गूँथ लेती हैं तथा सिरपर अञ्चल डाल लेती हैं। मञ्जरी पासमें एक परात लिये खड़ी है। ललिता उसमेंसे किसी भी वस्तुको नहीं लेतीं। हाँ, केवल पिसी हुई कस्तूरीकी छोटी कटोरीमें अपने दाहिने हाथकी अनामिका अँगुली डाल देती हैं तथा अपने ललाटपर सुन्दर गोल बिन्दी लगा लेती हैं। बिन्दी लगाकर मुस्कुरा पड़ती हैं। फिर उसी अँगुलीसे उस मञ्जरीके ललाटपर भी वैसी ही बिन्दी बना देती हैं। ललिता उसी मञ्जरीके कानमें कुछ धीरेसे कहती हैं। मञ्जरी परातको वहीं दीवालके सहारे एक किनारे रखकर शीघ्रतासे कमरेके बाहर चली जाती है तथा ललिता, जिस पलंगपर रानी लेटी हुई हैं, उसके पास जा पहुँचती हैं।

ENGLISH TRANSLATION

In the northern part of the chamber where Śrī Priyā lies, Lalitā stands and quickly completes her own adornment. A mañjarī wishes to assist, but Lalitā smiles and gestures with her hand: "Wait there! I shall finish dressing myself in just a moment."

She swiftly braids her hair with her own hands and draws the end of her veil over her head. A mañjarī stands nearby holding a tray. Lalitā takes none of its articles; she merely dips the ring finger of her right hand into a little bowl of ground musk and places a lovely round mark upon her forehead. Smiling after applying it, she makes an identical mark upon the mañjarī's forehead with the same finger. Lalitā whispers something in her ear. The mañjarī sets the tray against the wall and promptly leaves the chamber, while Lalitā goes to the bed on which the Queen is lying.

ORIGINAL Hindi prose

ललिता धीरेसे रानीके कन्धेके पास बैठ जाती हैं तथा उनके मुखारविन्दकी ओर देखने लग जाती हैं। कुछ क्षण देखती रहकर अतिशय प्यारसे रानीके ललाटको सहलाने लगती हैं। रानी आँखें खोल देती हैं। ललिता अतिशय प्यारसे रानीके मुँहके पास झुक जाती हैं तथा धीरेसे कहती हैं—नींद आयी थी कि नहीं, ठीक-ठीक बता!

रानीके मुखपर गम्भीर मुस्कान छा जाती है। वे कुछ नहीं बोलतीं, केवल एक क्षणके लिये पुनः आँखें मूँद लेती हैं। फिर आँखें खोलकर ललिताके बायें कन्धेका अपने दाहिने हाथसे पकड़ लेती हैं। ललिता फिर पूछती हैं—क्यों! नहीं बतावेगी?

रानी कुछ गम्भीरताकी मुद्रामें कहती हैं—नींद नहीं आती तो क्या करूँ?

ENGLISH TRANSLATION

Lalitā quietly sits beside the Queen's shoulder and gazes at Her lotus face. After looking for a few moments, she tenderly strokes the Queen's forehead. The Queen opens Her eyes. Bending close to Her face with deep affection, Lalitā asks softly, "Did sleep come or not? Tell me truly."

A grave smile spreads across the Queen's face. She says nothing, but closes Her eyes again for a moment. Then, opening them, She grasps Lalitā's left shoulder with Her right hand. Lalitā asks again, "Well? Will You not tell me?"

With a solemn expression, the Queen replies, "What am I to do when sleep will not come?"

ORIGINAL Hindi prose

रानीकी बात सुनकर ललिताकी आँखें प्रेमसे भर जाती हैं, पर अपनी इस दशाको छिपाती हुई वे कहती हैं—सूर्योदय हो गया है। कुछ ही क्षणमें बड़ाई या धनिष्ठा शीघ्र आ पहुँचेगी। तू तैयार हो जा।

यह सुनते ही रानी शीघ्रतासे कपड़ा समेटती हुई तथा बायें हाथसे ललिताके कन्धेका सहारा लेकर उठकर पलंगपर बैठ जाती हैं। उठकर बैठते ही श्यामसुन्दरकी वह मोहिनी सूरत आँखोंके सामने नाचने लगती है मानो सचमुच श्यामसुन्दर प्रत्यक्ष खड़े हों। कलसे रानीकी दशा विचित्र-सी हो गयी है। वे श्यामसुन्दरके प्रति रह-रहकर जोरसे सम्बोधन करने लग जाती हैं। ललिता कई प्रकारकी युक्तियाँ रच-रचकर रानीकी यह दशा बड़ी कठिनाईसे रानीके गुरुजनोंसे छिपाती रही हैं। अवश्य ही बीच-बीचमें रानीको यह होश भी आ जाता है कि मैं अनाप-शनाप बक जाती हूँ तथा उस समय ललिताकी कठिनता-दिक्कतें समझकर ललितासे चिपटकर रोने लग जाती हैं; पर फिर भूल जाती हैं। ललिता प्रातःकालसे ही सावधान हैं कि श्यामसुन्दरके पास हम-सब जबतक नहीं पहुँच जायँ, तबतक जिस-किस प्रकारसे भी यह बावली राधा शान्त बनी रहे; इसलिये ही रानीके पलंगपर बैठते ही ललिता शीघ्रतासे उठ खड़ी होती हैं तथा धीरेसे रानीके हाथको पकड़कर कहती हैं—तू हाथ-मुँह धोती रह और मैं तुझे एक बड़ा सुन्दर समाचार सुनाऊँगी।

ENGLISH TRANSLATION

At the Queen's words Lalitā's eyes fill with love, but concealing her emotion she says, "The sun has risen. In only a little while Baḍāī or Dhaniṣṭhā will arrive. Make Yourself ready."

At once the Queen gathers the sheet around Herself and, supporting Herself with Her left hand upon Lalitā's shoulder, sits up on the bed. The instant She rises, Śyāmasundara's enchanting form begins to dance before Her eyes, as though He truly stood there in person. Since yesterday the Queen's condition has become extraordinary. Again and again She calls aloud to Śyāmasundara. Through many ingenious devices Lalitā has managed, with great difficulty, to hide Her condition from Her elders. At moments the Queen regains enough awareness to realize that She has been speaking wildly; then, understanding the troubles this causes Lalitā, She clings to her and weeps. But soon She forgets once more. Since daybreak Lalitā has remained vigilant, determined somehow to keep this love-maddened Rādhā calm until they all reach Śyāmasundara. Therefore, as soon as the Queen sits up, Lalitā rises quickly, gently takes Her hand, and says, "Wash Your hands and face, and meanwhile I shall tell You some wonderful news."

ORIGINAL Hindi prose

रानीका मन उत्कण्ठासे भर जाता है तथा चित्तवृत्ति बँट जाती है। यद्यपि श्यामसुन्दरकी ध्यान-छवि उन्हें दीख रही है, पर ललिताकी बात सुननेकी लालसाने उन्हें तल्लीन होने नहीं दिया। रानी चटपट उठ खड़ी होती हैं। शीघ्रतासे चलकर हाथ-मुँह धोनेके लिये वे सुन्दर सजी हुई एक चौकीके पास जा पहुँचती हैं। उत्तरकी ओर मुँह करके उस पाटेपर बैठ जाती हैं। एक मञ्जरी हाथोंपर जल देने लग जाती है। श्रीप्रिया हाथोंको धोकर कुल्ला करती हैं। फिर लाल रंगका अतिशय सुगन्धित मञ्जन अपने दाँतोंपर लगाती हैं। श्रीप्रियाके निज मुखसे ही इतनी दिव्य एवं इतनी मनोहर सुगन्धि निकल रही है कि मञ्जनकी सुगन्धि उसके सामने फीकी पड़ गयी। पुनः कुल्ला करके श्रीप्रिया सुवर्ण-तारकी चमकती हुई चिपटी-पतली जीभीसे जीभ साफ करने चलती हैं; पर उसे हाथमें लेकर चुपचाप बैठ जाती हैं मानो बिलकुल यह बात भूल गयी हों कि मैं मुँह साफ करने बैठी थी।

ललिता कुछ मुस्कुराती हुई रानीके पास आकर खड़ी हो जाती हैं तथा झुककर रानीके हाथको हिलाकर कहती हैं—तो अब सुनाने जा रही हूँ। तू ध्यानसे सुनना भला!

रानी कुछ अकचकायी-सी होकर कहती हैं—हाँ, हाँ, मैं तो भूल ही गयी थी, सुना!—यह कहकर रानी शीघ्रतासे जीभ साफ करके कुल्ला कर लेती हैं तथा अपने अञ्चलसे हाथ पोंछती हुई कहती हैं—अब बता, क्या समाचार बताना चाहती है?

ENGLISH TRANSLATION

The Queen's mind fills with eager curiosity, and the current of Her attention divides. Although Śyāmasundara's meditated form remains visible to Her, the desire to hear Lalitā prevents Her from becoming fully absorbed in it. She springs to Her feet and quickly reaches a beautifully arranged stool for washing. Sitting upon it facing north, She lets a mañjarī pour water over Her hands. Śrī Priyā washes, rinses Her mouth, and applies intensely fragrant red tooth powder to Her teeth. Yet so divine and captivating is the fragrance arising naturally from Her own mouth that the scent of the powder pales before it. After rinsing again, She is about to clean Her tongue with a flat, slender scraper that gleams with golden wire, but sits silently holding it, as though She has entirely forgotten why She came to cleanse Her mouth.

Smiling, Lalitā approaches, bends down, and gently shakes the Queen's hand. "Now I am going to tell You. Listen carefully!"

The Queen starts slightly and says, "Yes, yes,I had completely forgotten. Tell me!" She quickly cleans Her tongue, rinses, wipes Her hands upon Her veil, and asks, "Now tell me,what news did you wish to give?"

ORIGINAL Hindi prose

ललिता रानीका हाथ पकड़कर उठा लेती हैं और पकड़े हुए उत्तर-पश्चिमकी ओर कुछ दूर ले जाती हैं, जहाँ एक अतिशय सुन्दर लम्बी चौकी है। चौकीपर गद्दा है तथा गद्देपर उजले रंगकी झालरदार सुन्दर रेशमी चादर बिछी है। रानीको व्यग्र ललिता उसीपर बैठा देती हैं। रानी उत्तरकी ओर मुँह करके बैठ जाती हैं तथा अपने दोनों पैर फैला देती हैं। ललिता राधारानीके शरीरसे कञ्चुकी उतार देती हैं तथा चारों ओरसे सखियाँ एवं मञ्जरियाँ यथास्थान बैठकर रानीके शरीरमें उबटन एवं तेल लगाने लगती हैं। विशाखा रानीके केशोंका बन्धन खोलकर उसकी प्रत्येक सुन्दर लटमें तेल लगा रही हैं। ललिता रानीकी ओर मुँह किये हुए बैठी हैं तथा बहुत धीमे स्वरमें कहना प्रारम्भ करती हैं। आवाज इतनी धीमी है कि पासमें बैठी मञ्जरियोंको भी ध्यान देनेसे सुनायी पड़ रहा है।

ललिता बोलीं—रात चित्राने एक स्वप्न देखा है। बड़ा ही विचित्र स्वप्न है। उसे सुनकर तू खूब हँसेगी।

रानीकी उत्कण्ठा बढ़ जाती है। वे बड़ी सरलतासे भोली बालिकाकी तरह ललिताके मुखकी ओर झुक पड़ती हैं एवं कहती हैं—शीघ्र सुना, कैसा स्वप्न था?

ENGLISH TRANSLATION

Taking the Queen by the hand, Lalitā raises Her and leads Her a little way toward the northwest, where there is a long and exceedingly beautiful couch. A mattress rests upon it, covered by a lovely light-colored silk sheet edged with a fringe. Lalitā, still impatient, seats the Queen there. Facing north, the Queen stretches out both legs. Lalitā removes Rādhārānī's bodice, while the sakhīs and mañjarīs take their appointed places around Her and begin applying scented paste and oil to Her body. Viśākhā loosens the Queen's hair and oils each lovely lock. Lalitā sits facing Her and begins to speak in a very low voice,so low that even the mañjarīs nearby must listen intently to hear.

Lalitā says, "Last night Citrā had a dream. It was truly extraordinary; when You hear it, You will laugh heartily."

The Queen's eagerness increases. With the simplicity of an innocent child, She leans toward Lalitā's face and says, "Tell me quickly,what was the dream?"

ORIGINAL Hindi prose

ललिता कहती हैं—चित्राने मुझसे कहा कि बहिन! ठीक प्रातःकालके समय मैं स्वप्न देखने लगी। देखा कि मैं किसी सर्वथा अपरिचित देशमें आ गयी हूँ। अवश्य ही वह देश यमुनाके किनारेपर ही बसा है। मैं सोचने लगी कि यहाँ मुझे कौन लाया? प्यारे श्यामसुन्दर कहाँ हैं? सखियाँ कहाँ हैं?—सोचते-सोचते मैं अधीर हो उठी। पास ही यमुना प्रवाहित हो रही थी। मैं वहाँसे चलकर उसके किनारे जा पहुँची। आश्चर्य तो यह था कि वहाँ सुन्दर-सुन्दर महल थे, रमणीय उद्यान थे; पर मुझे कोई भी मनुष्य नहीं दीखता था। मैं इसी उधेड़-बुनमें पड़ी विकल होकर सोचने लगी कि किससे पूछूँ? मुझे यहाँ कौन लाया है? ऐसा कौन है, जो मुझे प्यारे श्यामसुन्दरका पता बता सके?

ENGLISH TRANSLATION

Lalitā says, "Citrā told me: 'Sister, just before dawn I began to dream. I saw that I had arrived in a land entirely unknown to me. It certainly lay upon the bank of the Yamunā. I wondered, "Who brought me here? Where is beloved Śyāmasundara? Where are the sakhīs?" As I kept thinking, I grew frantic. The Yamunā flowed nearby, so I walked to her bank. The wonder was that beautiful palaces and charming gardens stood there, yet not a single person could be seen. Distraught and perplexed, I thought, "Whom can I ask? Who brought me here? Who can tell me where beloved Śyāmasundara is?"'"

ORIGINAL Hindi prose

इसी समय मनमें आया कि पृथ्वी तो व्यापक तत्त्व है। यदि यह बोलती होती तो बता सकती थी कि मेरे प्रियतम कहाँ हैं? हाँ, जल भी बता सकता है; क्योंकि सुना है, यह भी सर्वत्र है; पर यह भी नहीं बोलता। हाय! मेरे प्यारे श्यामसुन्दर! तुम्हारा पता कहाँ पाऊँ? अच्छा ठीक! ठीक!! तेज-तत्त्व अतिशय निर्मल है। यह अवश्य ही यहीं रहकर मेरे प्यारे श्यामसुन्दरको देख रहा होगा; पर हाय रे दुर्भाग्य! यह भी बोलना नहीं जानता। तो क्या मैं यों ही तड़प-तड़पकर मर जाऊँगी? प्यारे श्यामसुन्दरके पास मेरा सन्देश भी नहीं पहुँचेगा?

इसी समय पत्तेके खड़-खड़ करनेकी आवाज मेरे कानमें आयी। मैं सोचने लगी कि निश्चय ही मेरे प्यारे श्यामसुन्दर मुझे ढूँढ़ते हुए आ पहुँचे हैं। उत्कण्ठावश उधर देखने लगी, पर कोई नहीं दीखा। फिर विचारने लगी कि कोई तो नहीं आया; पर जिसने यह खड़खड़ाहट मेरे कानोंमें पहुँचा दी, वह भी तो नहीं दीखता। अरे! यह खड़खड़ाहट मेरे कानोंमें जैसे आ पहुँची, ऐसे ही मेरा सन्देश भी तो प्यारे श्यामसुन्दरके कानोंमें पहुँच सकता है। अवश्य-अवश्य पहुँच सकता है। किसने यह आवाज मेरे पास पहुँचायी? पवनने! बस, बस, पवन बोल नहीं सकता; पर इसने करुणावश इशारा कर दिया कि मैं मूक सेवा कर सकता हूँ, तुम्हारा सन्देश प्रियतमके पास पहुँचा सकता हूँ। तो यही सही। पर ना, यह तो उचित नहीं। क्या पता, प्यारे श्यामसुन्दरने मुझे अलग रखना चाहा हो, इसीलिये मुझे कहीं दूर भेज दिया हो। फिर मेरा सन्देश पाकर तो वे निश्चय ही व्याकुल हो जायेंगे; मुझे बुला ही लेंगे या स्वयं पवनके साथ उड़कर मेरे पास आ जायेंगे। ना, ना, यह मैं नहीं सह सकती कि अपने सुखके लिये उनके सुखमें बाधा हो। पर... आह! यह निर्णय कैसे हो कि वास्तवमें मैं क्यों अलग हुई? यदि मैं प्यारे श्यामसुन्दरके हृदयकी इच्छा जान जाती, यदि मैं जान पाती कि वे मेरे लिये व्याकुल हैं तो पवनके द्वारा सन्देश भेज देती।

ENGLISH TRANSLATION

“Then it occurred to me that earth is an all-pervading element. If she could speak, she might tell me where my Beloved was. Water too could tell me, for I had heard that it also pervades everywhere,but water does not speak either. Alas, my beloved Śyāmasundara! Where shall I discover You? Ah, yes! The element of fire is exceedingly pure. Surely, remaining here, it must be seeing my beloved Śyāmasundara. But what misfortune,it too does not know how to speak! Must I simply pine away and die? Will not even my message reach beloved Śyāmasundara?

“At that moment the rustling of a leaf reached my ears. I thought, ‘Surely my beloved Śyāmasundara has arrived while searching for me!’ Eagerly I looked in that direction, but no one appeared. Then I reflected, ‘No one has come, yet the one who carried this rustling to my ears is also unseen. Ah! Just as this sound reached my ears, my message can reach beloved Śyāmasundara’s ears in the same way. It certainly can! Who brought this sound to me? The wind! Yes,the wind cannot speak, but out of compassion it has signaled that it can render silent service and carry my message to my Beloved. Then let it be so. But no,that would not be right. Perhaps beloved Śyāmasundara wished to keep me apart and therefore sent me somewhere far away. If He receives my message, He will surely become distressed; He will summon me, or fly here Himself upon the wind. No, I cannot allow His happiness to be disturbed for the sake of mine. But, ah! How am I to decide why I have truly been separated? If only I knew the wish within beloved Śyāmasundara’s heart,if I knew that He pined for me,then I would send a message by the wind.’”

ORIGINAL Hindi prose

“अहा! एक उपाय तो है। यह आकाश शब्दात्मक है। यह बोल सकता है, सर्वत्र है भी। ठीक! ठीक!! अरे आकाश! बता, मेरे प्यारे श्यामसुन्दर कहाँ हैं? मेरी सखियाँ कहाँ हैं?”—इस प्रकार बार-बार मैं स्वप्नमें ही पुकारने लगी—“अरे आकाश! मेरे प्यारे श्यामसुन्दर कहाँ हैं? जल्दी बता!”

कुछ ही क्षण बाद देखती हूँ कि यमुनाके घाटपर पाँच देवता प्रकट हुए। वे पाँचों मेरे पास आये। दूरसे ही पाँचोंने सिर टेककर मुझे प्रणाम किया। मैं सकुचा गयी। मेरी-जैसी साधारण गोप-बालिकाको ये देवता प्रणाम क्यों कर रहे हैं? मैं कुछ बोली नहीं। इसी समय उनमेंसे एकने कहा—देवि! हम पाँचों तत्त्व (पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश) के अधिष्ठातृ देवता आपके सम्मुख उपस्थित हैं। आप आज्ञा करें, आपकी कौन-सी सेवा करके हम अपना जीवन कृतार्थ करें।

उनकी बात सुनकर मैं और भी शर्मा गयी; पर प्यारे श्यामसुन्दरका सन्देश पानेकी उत्कण्ठासे मैंने हाथ जोड़कर कहा—देवताओं! मैं प्यारे श्यामसुन्दरके विषयमें जानना चाहती हूँ कि वे इस समय कहाँ हैं? मैं उनकी दासी हूँ।

मेरी बात सुनकर मुझे ऐसा अनुमान हुआ कि पाँचों ही उदास हो गये। कुछ क्षणतक वे सभी चुप रहे। मैं कुछ घबराकर बोली—क्यों, आप जानते हों तो बता देनेकी कृपा करें।

देवताओंने कहा—देवि! आपको यह सेवा हमारी सामर्थ्यके बाहर है। श्यामसुन्दरके विषयमें हमलोग कुछ भी नहीं जानते। आपने हम पाँचोंका सङ्कल्प किया, इसी कारण हम पाँचोंमें यह योग्यता आ गयी कि हम सब आपके प्रत्यक्ष दर्शनके अधिकारी हुए; नहीं तो आप-जैसी बड़भागिनी गोपसुन्दरियोंकी छायाके दर्शन भी हमलोगोंके लिये असम्भव हैं।

ENGLISH TRANSLATION

“Ah! There is one means. Space is constituted of sound; it can speak, and it too is everywhere. Yes! O space, tell me,where is my beloved Śyāmasundara? Where are my sakhīs?” Again and again within the dream I cried, “O space! Where is my beloved Śyāmasundara? Tell me quickly!”

“A few moments later I saw five deities appear upon the Yamunā’s landing. They came toward me and, while still at a distance, all five bowed their heads in obeisance. I felt embarrassed. Why should deities bow to an ordinary cowherd girl like me? I said nothing. Then one of them spoke: ‘O Goddess, we are the presiding deities of the five elements,earth, water, fire, air, and space,and stand before You. Please command us. What service may we perform to make our lives blessed?’

“Hearing them, I became still more shy. Yet, eager for news of beloved Śyāmasundara, I folded my hands and said, ‘O deities, I wish to know where beloved Śyāmasundara is at this moment. I am His maidservant.’

“I sensed that all five became sad at my words. They remained silent for a few moments. Growing uneasy, I said, ‘If you know, please be gracious and tell me.’

“The deities replied, ‘O Goddess, this service lies beyond our power. We know nothing of Śyāmasundara. Because You called the five of us to mind, we became qualified to behold You directly. Otherwise, even a glimpse of the shadow of greatly blessed cowherd beauties such as You is impossible for us.’”

ORIGINAL Hindi prose

उन देवताओंकी बात सुनकर मैं विचारमें पड़ गयी। कुछ देर बाद बोली—देव! आपलोग जायँ। मुझे और किसी प्रकारकी सेवा नहीं चाहिये।

देवताओंने कुछ सोचकर कहा—देवि! एक उपाय हो सकता है।

मैं—क्या उपाय है?

देवता—यदि आप अपने चरणोंकी धूलि हमें प्रदान करें तो हम पाँचों उस पवित्रतम धूलिको अपनी आँखोंमें आँज लें, फिर हमलोग देख सकते हैं कि प्यारे श्यामसुन्दर कहाँ हैं?

देवताओंकी बात सुनकर मैं तो विस्मयमें पड़ गयी और बोली—आपलोग तो बहुत आश्चर्यकी बात कह रहे हैं। भला, मैं तो प्यारे श्यामसुन्दरको नहीं देख रही हूँ और मेरी धूलि आँखोंमें आँजनेपर आप प्यारे श्यामसुन्दरको देखने लगेंगे? यह तो अजब-सी बात है।

देवताओंने घुटने टेक दिये और बोले—हाँ, देवि! सर्वथा सही बात है।

अब मैं कुछ विचारमें पड़ गयी। अन्यमनस्का-सी होकर जहाँ खड़ी थी, वहाँसे कुछ दूर हटकर खड़ी हो गयी। मैंने देखा कि पाँचों देवता, जहाँ मैं पहले खड़ी थी, वहाँ लोटने लगे तथा वहाँकी धूलि उठा-उठाकर अपनी आँखोंमें मलने लगे। मैं जोरसे बोल उठी—कृष्ण! कृष्ण!! क्या कर रहे हैं? आपलोग पागल तो नहीं हो गये हैं, जो इस प्रकार धूलिमें लोट रहे हैं?

कुछ देरके बाद देवता खड़े होकर बोलने लगे—जय हो देवि! तुम्हारी जय हो!! प्यारे श्यामसुन्दर यहाँ आने ही वाले हैं। अब हमलोगोंको आज्ञा हो।—यह कहते-कहते वे पाँचों अन्तर्धान हो गये।

ENGLISH TRANSLATION

"Hearing this, I fell into thought. After a while I said, 'O deities, you may go. I require no other service.'

"After considering, they said, 'O Goddess, one means may be possible.'

"'What means?' I asked.

"They replied, 'If You bestow upon us the dust of Your feet, the five of us may apply that most sacred dust to our eyes. Then we shall be able to see where beloved Śyāmasundara is.'

"I was astonished and said, 'You speak of something extraordinary. I myself cannot see beloved Śyāmasundara, yet by applying my dust to your eyes you will begin to see Him? How strange!'

"The deities knelt and said, 'Yes, O Goddess. It is entirely true.'

"I became thoughtful and, distracted, stepped away from the place where I had been standing. Then I saw all five deities rolling upon that very spot and gathering its dust to rub into their eyes. I cried aloud, 'Kṛṣṇa! Kṛṣṇa! What are you doing? Have you all gone mad, rolling in the dust like this?'

"After a little while they stood and proclaimed, 'Victory to You, O Goddess! All victory to You! Beloved Śyāmasundara is just about to arrive. Kindly permit us to depart.' As they spoke, all five vanished."

ORIGINAL Hindi prose

फिर मैं देखती हूँ कि मन्द-मन्द मुस्कुराते हुए प्यारे श्यामसुन्दर चले आ रहे हैं। मैं शीघ्रतासे उनकी ओर बढ़ गयी। उनके हाथोंको पकड़कर बोली—मैं यहाँ कैसे आ गयी? तुम कहाँ चले गये थे?

श्यामसुन्दरने मुस्कुराते हुए कहा—...; यह कहते-कहते ललिता हठात् चुप हो गयीं।

ललिता चित्राके स्वप्नकी बात सुना रही थीं तथा रानी अतिशय शान्त मुद्रामें सुनती जा रही थीं। तभी एक मञ्जरीने ललिताको कुछ इशारा किया, इससे ललिता चुप हो गयीं। इसी समय एक मञ्जरी पूर्व एवं दक्षिणके कोनेकी तरफसे आती है तथा ललिताको दूरसे ही पुकारकर कहती है—ललिता रानी! तुम्हें माँ बुला रही हैं।

मञ्जरीकी बात सुनकर ललिता चित्राके कानमें धीरेसे कहती हैं—शेष तू सुना दे, मैं जा रही हूँ।—यह कहती हुई वे पूर्व एवं दक्षिणके कोनेकी तरफ चली जाती हैं तथा उसी मञ्जरीके पीछे दक्षिणकी तरफ दालानकी ओर बढ़ती हुई आँखोंसे ओझल हो जाती हैं।

अब चित्रा स्वप्नका शेष अंश स्वयं सुनाती हैं।

ENGLISH TRANSLATION

“Then I saw beloved Śyāmasundara approaching with a gentle smile. I hurried toward Him, grasped His hands, and asked, ‘How did I come here? Where had You gone?’

“Śyāmasundara smiled and said…” At this point Lalitā abruptly fell silent.

Lalitā had been recounting Citrā’s dream while the Queen listened with extraordinary calm. A mañjarī now gave Lalitā a signal, and she stopped speaking. Just then another mañjarī came from the southeastern corner and called from a distance, “Queen Lalitā! Mother is calling you.”

Hearing this, Lalitā whispered into Citrā’s ear, “You tell the rest; I am going.” She walked toward the southeastern corner and, following that mañjarī southward toward the veranda, disappeared from sight.

Citrā now narrates the remainder of her dream herself.

ORIGINAL Hindi prose

चित्रा बोली—हाँ, तब श्यामसुन्दर आये और मैंने उनसे पूछा कि मैं यहाँ कैसे आ गयी? तुम कहाँ चले गये थे?

प्यारे श्यामसुन्दरने मुस्कुराकर कहा—मैं तो देवीकी पूजा करने गया था।

मैं—किस देवीकी पूजा?

श्यामसुन्दर—भगवती त्रिपुरसुन्दरीकी।

मैं—क्यों?

श्यामसुन्दर—यों ही।

मैं—नहीं, ठीक बताओ। पूजा करने क्यों गये थे?

श्यामसुन्दर—भगवतीसे शक्ति माँगने गया था।

मैं—किसलिये?

श्यामसुन्दर—तू जानकर क्या करेगी?

मैं श्यामसुन्दरसे इस बार चिढ़ी-सी होकर बोली—ठीक है, जाओ! मत बताओ!!—यह कहती हुई मैं वहीं मुँह फेरकर बैठ गयी।

प्यारे श्यामसुन्दर हँसने लगे। फिर कुछ क्षणके बाद बोले—अच्छा, देख! बता देता हूँ; पर तू किसीसे बताना मत।—यह कहकर प्यारे श्यामसुन्दर मेरे सामने चले आये एवं बैठ गये।

मैंने टेढ़ी चितवनसे प्यारेकी ओर देखा; पर देखते ही मेरी रुखाई दूर हो गयी और मैं हँस पड़ी। प्यारे श्यामसुन्दर भी पुनः हँसने लगे। मैं प्यारेके कन्धेपर हाथ रखकर बोली—बताओ!

ENGLISH TRANSLATION

Citrā said, "Yes,Śyāmasundara came, and I asked Him, 'How did I arrive here? Where had You gone?'

"Beloved Śyāmasundara smiled. 'I went to worship the Goddess.'

"'Which Goddess?'

"'The blessed Tripurasundarī.'

"'Why?'

"'For no particular reason.'

"'No,tell me properly. Why did You go to worship Her?'

"'I went to ask the Goddess for power.'

"'What for?'

"'What will you do by knowing?'

"This time I grew annoyed with Śyāmasundara and said, 'Very well, go! Do not tell me!' Turning my face away, I sat down where I was.

"Beloved Śyāmasundara laughed. After a moment He said, 'All right, listen. I shall tell you, but do not repeat it to anyone.' He came and sat before me.

"I cast a crooked glance at my Beloved, but the instant I saw Him my displeasure vanished and I laughed. Beloved Śyāmasundara laughed again as well. Placing my hand upon His shoulder, I said, 'Tell me.'"

ORIGINAL Hindi prose

श्यामसुन्दरने कहा—चित्रे! जिस समय मैं प्रियाको देखता हूँ, उस समय नेत्र स्थिर हो जाते हैं। कल तुम सब मेरे आनेके पहले प्रियाको माला पहना रही थीं। मैं छिपकर देख रहा था और सोचने लगा कि ओह! मेरी प्रियाके अङ्ग कितने सुकोमल हैं। हाय, पुष्पोंके भारको प्रिया किस प्रकार सहती होंगी! पुष्पोंकी पँखुड़ी प्रियाके कोमल हृदयको बींधती तो नहीं होगी!—यह सोचते-सोचते मेरी आँखें बन्द हो गयीं। अब तो विचारोंका ताँता लग गया—आह! अञ्जन मेरी प्रियाकी आँखोंको अवश्य खटकता होगा। हाय! हाय!! आभूषण तो बड़े ही कठोर हैं। ये मेरी प्रियाके अङ्गमें गड़ जाते होंगे। यह साड़ी भी बहुत खुरदरी है, प्रियाके अङ्गमें निश्चय ही चुभती होगी। ओह! प्रिया तो मेरे कारण अपने आपको भूल गयी हैं, पर मुझसे यह सहा नहीं जाता। नहीं, नहीं, मैं मना कर दूँगा कि मेरी हृदयेश्वरि! तू मालाएँ मत पहन; अञ्जन लगाना छोड़ दे; आभूषण मत धारण कर। फिर मेरी प्रिया कभी भी इन्हें पहनेगी नहीं —मैं ठीक जानता हूँ, उसके हृदयको जानता हूँ। वह पुष्पमाला मेरे लिये पहनती है, आभूषणसे अपने आपको मेरे लिये ही सजाती है, अञ्जन आँखोंमें मेरे लिये ही आँजती है। उसका सारा साज-शृङ्गार इसीलिये है कि मैं चाहता हूँ कि मेरी प्रिया अपने अङ्गोंको सजाये। आह! वह तो मेरे प्रेममें विवेक खो बैठी है और सोचती है कि अञ्जन, आभूषण, मालाएँ उसे सुन्दर बना देंगी और प्यारे श्यामसुन्दर उसे देखकर और भी प्रसन्न होंगे; पर सच्ची बात कुछ और ही है।

ENGLISH TRANSLATION

“Śyāmasundara said, ‘Citre! Whenever I look upon Priyā, My eyes become motionless. Yesterday, before I arrived, all of you were placing a garland upon Her. I watched in secret and thought, “Oh, how tender are My Priyā’s limbs! How can She bear the weight of flowers? Might their petals be piercing Her delicate heart?” As I thought this, My eyes closed, and an unbroken stream of worries began: “Ah! The collyrium must surely irritate My Priyā’s eyes. Alas, ornaments are so hard; they must press painfully into Her limbs. Even this sari is very coarse,it must prick Her body. Priyā has forgotten Herself for My sake, but I cannot bear it. No, I shall forbid Her: O queen of My heart, do not wear garlands, cease applying collyrium, do not put on ornaments.” Then My Priyā would never wear them again. I know this well; I know Her heart. She wears a flower garland for Me, adorns Herself with jewels only for Me, and applies collyrium to Her eyes only for Me. All Her dress and ornament exist because I desire My Priyā to adorn Her limbs. Ah, in love for Me She has lost all discrimination and imagines that collyrium, jewels, and garlands make Her beautiful and that beloved Śyāmasundara will be still more pleased to see Her. But the truth is altogether different.’”

ORIGINAL Hindi prose

“अञ्जन प्रियाकी आँखोंको सुन्दर नहीं बनाता, बल्कि प्रियाकी आँखोंमें पड़कर वह अञ्जन सुन्दर बन जाता है; आभूषणोंसे प्रियाके शरीरकी सुन्दरता नहीं बढ़ती, बल्कि प्रियाके अङ्गोंसे जुड़कर ये आभूषण अनन्त गुना सुन्दर बन जाते हैं; पुष्पमालासे प्रियाके वक्षःस्थलकी शोभा नहीं बढ़ती, बल्कि प्रियाके सुन्दर वक्षःस्थलपर झूलकर पुष्पमालाकी शोभा अनन्त-असीम हो जाती है। मैं प्रियाको इन्हें इसीलिये धारण करने देता हूँ कि इनका सृजन सफल हो जाय, प्रियाके अङ्गका स्पर्श पाकर ये कृतार्थ हो जायँ, निहाल हो जायँ; पर अब सहा नहीं जाता! बस, बस, बहुत हो गया। आज मना कर दूँगा कि मेरी प्राणेश्वरि! तू शृङ्गार करना छोड़ दे। इतनी ही बातसे सब ठीक हो जायेगा। पर साड़ीका क्या करूँ? हाय! मेरी प्रिया तो मेरे इशारे मात्रसे साड़ीको फेंक देगी। उसे लोक, वेद, कुल, धर्म, देह, लज्जा आदि किसीकी भी रत्ती मात्र परवाह ही नहीं है। वह जानती है केवल एक बात; उसे केवल इतनी स्मृति है कि प्यारे श्यामसुन्दरके सुखके लिये सब-कुछ हँसते हुए स्वाहा कर देना। इसलिये उसके मनमें तो इस विचारकी छाया भी नहीं पहुँचेगी कि मैं निर्वस्त्र रहकर कैसे जीवन बिताऊँगी। वह तो तत्क्षण मेरी इच्छाके साँचेमें ढल जायेगी; पर लोग तो उसे बावली-विक्षिप्त समझने लगेंगे। उसे घरमें बन्द कर देंगे तथा वह मेरे विरहमें तड़प-तड़पकर प्राण दे देगी। ओह! कठिन उलझन है, इसे कैसे सुलझाऊँ?”

“चित्रे! मैं कल दिन-रात यही सोचता रहा। फिर भगवतीकी कृपाका स्मरण करने लगा। प्रातःकाल कुञ्जसे लौटते ही भगवतीके मन्दिरमें गया। देवीके चरणोंमें प्रणाम करके प्रार्थना करने लगा। देवीने प्रसन्न होकर कहा—प्यारे श्यामसुन्दर! बोलो, क्या चाहते हो?

“मैंने कहा—देवि! यह बताओ, समस्त विश्वमें सबसे सुकोमल वस्तु क्या है?

“देवीने हँसकर कहा—सच्ची बात बता दूँ?

“मैंने कहा—हाँ, देवि! सर्वथा सच्ची बात बताओ।

“देवी—प्यारे श्यामसुन्दर! सबसे सुकोमल तुम्हारी प्रिया एवं तुम हो। तुम दोनोंसे अधिक सुकोमल वस्तु न पहले कभी थी, न है और न होगी।”

ENGLISH TRANSLATION

"'Collyrium does not make Priyā's eyes beautiful; rather, by entering Her eyes, the collyrium itself becomes beautiful. Ornaments do not increase the beauty of Priyā's body; joined to Her limbs, those ornaments become infinitely more beautiful. A flower garland does not enhance the splendor of Her breast; by swaying upon that lovely breast, the garland's own beauty becomes boundless and infinite. I allow Priyā to wear these things only so that their creation may be fulfilled and, receiving the touch of Her limbs, they may become blessed. But now I can bear it no longer. Enough,far too much! Today I shall tell the mistress of My life to abandon adornment. That alone will set everything right. Yet what shall I do about Her sari? Alas! At the slightest gesture from Me, Priyā will cast it away. She does not care in the least for society, scripture, family, dharma, body, modesty, or anything else. She knows only one thing: to offer everything joyfully into the fire for beloved Śyāmasundara's happiness. It would never even occur to Her to wonder how She could live unclothed. She would instantly mold Herself to My desire, but people would think Her mad and deranged. They would lock Her inside the house, and in separation from Me She would pine away and die. Oh, what a terrible dilemma! How shall I resolve it?'

"'Citre, throughout yesterday and last night I thought of nothing else. Then I remembered the grace of the Goddess. At dawn, as soon as I returned from the grove, I went to Her temple. Bowing at Her feet, I prayed. The Goddess was pleased and said, "Beloved Śyāmasundara, tell Me,what do You desire?"

"'I asked, "O Goddess, tell Me: what is the most delicate thing in the entire universe?"

"'The Goddess laughed. "Shall I tell You the truth?"

"'I replied, "Yes, O Goddess,tell Me the absolute truth."

"'She said, "Beloved Śyāmasundara, You and Your Priyā are the most delicate of all. Nothing more delicate than the two of You ever existed, exists now, or ever shall exist."'"

ORIGINAL Hindi prose

“चित्रे! मैं देवीकी बात सुनकर कुछ आश्चर्यमें पड़ गया। सोचने लगा कि मेरी प्रियाकी सुकोमलतमता तो प्रत्यक्ष है; पर मैं सुकोमलतमकी गणनामें कैसे आ गया? मुझे तो यह भान नहीं होता; पर देवी तो झूठ नहीं कहेंगी। इनके वचन त्रिकाल सत्य हैं। भले ही मुझे अनुभव न हो कि मैं सुकोमलतम हूँ; पर जब देवी कहती हैं तो फिर एक काम करूँ। अब देवीसे एक भिक्षा माँग लूँ।”

“मुझे सोचते देखकर देवीने पुनः हँसकर कहा—हाँ, प्यारे श्यामसुन्दर! जो चाहिये, वह मुझे निःसङ्कोच बता दो; मैं अवश्य दूँगी।”

“देवीकी बात सुनकर मैं प्रसन्न हो गया और बोला—देवि! तुम अन्तर्यामी बात जानती हो, इसलिये तुमसे निःसङ्कोच एक भिक्षा माँग रहा हूँ। तुम कृपा करके मुझमें ऐसी सामर्थ्य दे दो कि मैं जहाँ चाहूँ, वहीं समा जाऊँ। मुझमें ऐसी शक्ति आ जाय कि मेरी प्रिया जिस अञ्जनसे अपनी आँखें आँजती हैं, उस अञ्जनमें समा जाऊँ। प्रिया जिस कुङ्कुमसे तिलक लगाती हैं, उस कुङ्कुममें समा जाऊँ। जिस मृगमदसे प्रिया अपने वक्षःस्थलका श्रृङ्गार करती हैं, उस मृगमदमें समा जाऊँ। सखियाँ जो अङ्गराग मेरी प्रियाके शरीरपर लगाती हैं, उस अङ्गरागमें समा जाऊँ। मेरी प्रियाके कपोलपर जिस चन्दन-पङ्कसे चित्र बनता है, उस चन्दन-पङ्कमें समा जाऊँ। प्रियाके चरणोंमें जिस महावर (आलता) का रंग लगता है, उस रंगमें समा जाऊँ। प्रिया जिन आभूषणोंको धारण करती हैं, उन आभूषणोंमें समा जाऊँ। प्रिया जो साड़ी पहनती हैं, जो कञ्चुकी बाँधती हैं, उसके अणु-अणुमें समा जाऊँ। प्रिया जिस ताम्बूलके बीड़ेको अपने मुखमें रखें, उस ताम्बूल-पत्रमें, उसके चूनेमें, उसकी सुपारीके कण-कणमें मैं समा जा सकूँ। जिन फूलोंसे प्रियाकी माल्य बनती है, जिन फूलोंको प्रिया अपनी वेणीमें खोसती हैं, उन फूलोंमें समा जाऊँ। प्रिया जिस दर्पणमें अपना मुख देखती हैं, उस दर्पणमें; जिस रूमालसे मुख पोंछती हैं, उस रूमालमें; जिस पीकदानमें पीक फेंकती हैं, उस पीकदानीके अणु-अणुमें मैं समा जाऊँ।”

ENGLISH TRANSLATION

"'Citre, hearing the Goddess, I was somewhat astonished. I thought, "My Priyā's supreme delicacy is plainly evident, but how have I been counted among the most delicate? I do not experience this Myself. Yet the Goddess cannot lie; Her words are true in all three times. Though I do not feel that I am supremely delicate, if the Goddess says so, I shall do one thing,I shall ask a boon of Her."

"'Seeing Me think, the Goddess laughed again. "Yes, beloved Śyāmasundara, tell Me without hesitation whatever You desire. I shall certainly grant it."

"'Delighted, I said, "O Goddess, You know what dwells within every heart, so I ask one boon without reserve. Graciously give Me such power that I may enter and pervade whatever I desire. Let Me enter the collyrium with which My Priyā lines Her eyes, the kuṅkuma with which She makes the mark upon Her brow, and the musk with which She adorns Her breast. Let Me enter the fragrant pigment the sakhīs apply to Her body and the sandal paste from which designs are drawn upon Her cheeks. Let Me enter the crimson dye placed upon Her feet and every ornament She wears. Let Me enter every atom of Her sari and bodice. When Priyā places a roll of betel in Her mouth, let Me enter its leaf, its lime, and every particle of its areca nut. Let Me enter the flowers from which Her garlands are made and those She tucks into Her braid; the mirror in which She sees Her face; the handkerchief with which She wipes Her mouth; and every atom of the vessel into which She casts the remnants of betel.""

ORIGINAL Hindi prose

“जिस पलंगपर, जिस सोफेपर, जिस चादरपर, जिस तकियेपर प्रिया विश्राम करती हैं, उसके अणु-अणुमें समा जाऊँ। जिस जलसे, जिस जलपात्रसे मेरी प्रिया स्नान करती हैं, उस जलमें, उस पात्रमें मैं समा जाऊँ। मेरी प्रिया भोजन करनेके लिये जिस आसनपर बैठती हैं, उनके लिये जिस परातमें भोजन परोसा जाता है और परातमें जो-जो भोज्य-पदार्थ हैं, उस आसन, उस परात एवं उस भोज्य-पदार्थके अणु-अणुमें मैं प्रवेश कर जा सकूँ। जिस गिलाससे प्रिया जल पीती हैं और जिस जलका पान करती हैं, उस गिलास एवं उस जलके अणु-अणुमें समा जाऊँ। जिस पंखेसे सखियाँ प्रियाको हवा करती हैं, उस पंखे तथा हवाके अणु-अणुमें मैं प्रवेश कर जाऊँ। जिस आकाशमें प्रियाके अङ्ग हिलते हैं, उस आकाशके अणु-अणुमें मैं समा जाऊँ। जिस पृथ्वीतलसे प्रियाके चरणोंका स्पर्श होता है, उस पृथ्वीके कण-कणमें समा जाऊँ। घरकी ओर अथवा वनकी ओर चलती हुई प्रिया जिस पथपर पैर रखती हैं, उस पथकी धूलिके कण-कणमें मैं समा जाऊँ। देवि! अधिक कहाँतक गिनाऊँ, मैं जिस-जिस वस्तुमें चाहूँ, उसीके अणु-अणुमें समा जाऊँ, ऐसी शक्ति मुझे देनेकी कृपा करो।”

“देवि! मेरा हृदय कलसे अत्यन्त दुःखी था। अपनी प्रियाके सुकोमल अङ्गोंको कष्ट पहुँचते देखकर मेरा मन अतिशय उद्विग्न हो गया। रातभर सोचता रहा कि किसी प्रकारसे सबसे सुकोमलतम वस्तुको प्राप्त करूँ तथा देवीकी कृपासे उस वस्तुमें यह शक्ति उत्पन्न करवा लूँ कि मेरी प्रियाकी समस्त वस्तुओंमें वह प्रवेश कर जा सके। यह इसलिये कि जिस समय प्रियाके अङ्गको कठोर वस्तु स्पर्श करे, उस समय वह उस आघातको अपने हृदयपर सहकर मेरी प्रियाकी रक्षा करे। तुमने सबसे सुकोमल वस्तु मुझे बतलाया, अतः मेरे अन्दर ही वह शक्ति उत्पन्न कर दो।”

ENGLISH TRANSLATION

“‘Let Me enter every atom of the bed, couch, sheet, and pillow upon which Priyā rests. Let Me enter the water in which She bathes and the vessel from which it is poured. Let Me enter every atom of the seat upon which She dines, the tray upon which Her meal is served, and each article of food upon it. Let Me enter every atom of the glass from which She drinks and the water She consumes. Let Me enter the fan with which the sakhīs cool Her and every particle of the moving air. Let Me enter every atom of the space through which Priyā’s limbs move. Let Me enter every grain of earth touched by Her feet, and every particle of dust upon the path where She steps while walking toward home or the forest. O Goddess, how much more can I enumerate? Kindly grant Me the power to enter every atom of whatever thing I desire.’

“‘O Goddess, since yesterday My heart has been deeply sorrowful. Seeing My Priyā’s tender limbs suffer has left My mind terribly distressed. All night I pondered how I might obtain the most delicate thing of all and, through Your grace, imbue it with the power to enter everything belonging to My Priyā. Then whenever any hard object touched Her limbs, that tender thing could receive the blow upon its own heart and protect Her. You have said that I am the most delicate; therefore create this power within Me.’”

ORIGINAL

Hindi prose

चित्राने इतना कहा ही था कि ललिता पुनः वहाँ आकर बैठ जाती हैं। कुछ क्षण चित्रा चुप रहती हैं, पर रानी इतनी उत्कण्ठित हो गयी हैं कि तीन बार कह चुकीं—हाँ, हाँ, फिर क्या बात हुई, बता!

चित्रा बोलती हैं—प्यारे श्यामसुन्दरकी यह बात सुनकर मैं चटपट बोल उठी कि तुम्हारी बात सुनकर देवीने क्या कहा?

श्यामसुन्दर अतिशय प्रसन्नताकी मुद्रामें बोले—मेरी प्यारी चित्रे! देवीने अतिशय कृपा करके कह दिया —"एवमस्तु"।

श्यामसुन्दरकी यह बात सुनकर मेरा हृदय बड़े जोरसे उछलने लगा। मेरा कण्ठ भर आया और बड़ी कठिनतासे मैं पूछ बैठी—सच बताओ, विनोद तो नहीं कर रहे हो? देवीने "एवमस्तु" कह दिया?

श्यामसुन्दरने बड़ी दृढ़ता एवं सरलताके साथ कहा—हाँ चित्रे! मैं सच कह रहा हूँ, देवीने मुझे ऐसी शक्ति दे दी!

ENGLISH TRANSLATION

Just as Citrā reached this point, Lalitā returned and sat down beside them. Citrā remained silent for a few moments, but the Queen had grown so eager that She asked three times, "Yes, yes,what happened then? Tell me!"

Citrā continued, "Hearing beloved Śyāmasundara say this, I quickly asked, 'What did the Goddess say after hearing Your request?'

"With an expression of immense delight, Śyāmasundara answered, 'My dear Citre, the Goddess was exceedingly gracious and said, "So be it."'

"At these words my heart leapt violently. My throat choked with emotion, and with great difficulty I asked, 'Tell me truly,You are not joking? The Goddess really said, "So be it"?'

"With complete firmness and simplicity Śyāmasundara replied, 'Yes, Citre. I speak the truth. The Goddess has given Me that power!'"

ORIGINAL

Hindi prose

श्यामसुन्दरकी इस बातसे अब मैं आनन्दमें इतनी अधीर हो उठी कि मेरा सारा शरीर थर-थर काँपने लगा। मन-ही-मन सोच रही थी कि मौका पाकर प्यारे श्यामसुन्दरसे मैं एक बात कहूँगी—प्यारे! मैं भी तुमसे एक वस्तु माँग रही हूँ। मैं जानती हूँ कि तुम मेरी सखी राधाके साथ ही हम सबोंको भी प्राणोंसे अधिक प्यार करते हो। तुम्हारा हृदय अतिशय कोमल है ही। कदाचित् हम सबके प्रति भी तुम्हारा कोमल हृदय इसी भावसे भावित हो जाय और इसी प्रकार तुम हमारे आभूषण, अङ्गराग आदिमें समा जाओ तो फिर एक बातकी दया करना। हमें इशारा कर देना, जिससे हम-सब उन आभूषण आदिकों सावधानीसे धीरे-धीरे धारण करें एवं निकालें। तुम्हारी बात सुनकर मनमें एक भय हो गया है। सखी राधाकी तो सारी सँभाल हम-सब कर लेंगी, पर यदि तुम कहीं हमारी पुष्पमालामें, हमारे अञ्जनमें, हमारे दर्पणमें आ बैठे और अनजानमें हम-सबने फेंक-फाँक की तो तुम्हें कितनी चोट लगेगी? और फिर "तुम्हें चोट पहुँची है"—यह बात कभी हमारे जाननेमें आयी तो हम सबका हृदय ही फट जायेगा। इसलिये जब कभी भी ऐसा करना तो बता देना!

मैं मन-ही-मन सोच रही थी और प्यारे श्यामसुन्दर मेरी ओर एकटक देख रहे थे। उन्हें इस प्रकार देखते हुए देखकर मैं हँसने लगी और बोली—क्या देख रहे हो? अब तुम्हें देखकर स्वस्थ हुई हूँ, नहीं तो घबराकर प्राण निकले-से जा रहे थे।—यह कहकर मैंने पाँच देवताओंकी बात प्यारे श्यामसुन्दरको सुनायी। फिर प्यारे श्यामसुन्दर हँसने लगे। मैं बोली—सचमुच यह बताओ, यह कौन-सा देश है? मैं यहाँ कैसे आ गयी? मेरी प्यारी सखी राधा कहाँ है? हठात् तुम यहाँ कैसे आ गये? तुम्हें यहाँ मेरे होनेकी खबर कैसे लग गयी?

ENGLISH TRANSLATION

"His words made me so restless with joy that my whole body began to tremble. Inwardly I thought, 'When I have the chance, I shall ask beloved Śyāmasundara for one thing: Beloved, I know that along with my friend Rādhā, You love all of us more than life itself. Your heart is exceedingly tender. If Your gentle heart should ever become moved in the same way toward us and You enter our ornaments, fragrant pigments, and other articles, then please grant us one mercy: give us a sign, so that we may put on and remove those things very slowly and carefully. Hearing You has awakened fear in my heart. We shall all care for our friend Rādhā, but if You should sit within our flower garlands, collyrium, or mirrors and, not knowing, we carelessly tossed them aside, how badly You might be hurt! If we ever learned that You had been injured, our hearts would burst. So whenever You do such a thing, please tell us!'

"While I thought this, beloved Śyāmasundara stared steadily at me. Seeing Him gaze so, I laughed and asked, 'What are You looking at? Now that I see You I have recovered; before, I was so frightened that my life seemed about to leave me.' Then I told Him about the five deities, and beloved Śyāmasundara laughed. I said, 'Now truly tell me,what country is this? How did I come here? Where is my dear friend Rādhā? How did You suddenly arrive? How did You learn that I was here?'"

ORIGINAL

Hindi prose

मैं यह कह ही रही थी कि श्यामसुन्दरने हँसकर मुझे हृदयसे लगा लिया; हृदयसे लगाते ही मेरी आँखें खुल गयीं। मैं देखती हूँ कि प्रभात होने जा रहा है। मैं तो आश्चर्यमें डूब गयी और सोचने लगी कि विचित्र स्वप्न देख रही थी। मैंने मन-ही-मन भगवती त्रिपुरसुन्दरीको नमस्कार किया और उनसे प्रार्थना करने लगी—देवि! मैं जानती नहीं, इस स्वप्नका क्या फल होगा? मेरा कुछ भी हो, पर मेरे प्यारे श्यामसुन्दरका अनन्त मङ्गल हो।

इसी विचारमें मैं पड़ी हुई थी कि बहिन ललिता उठकर मेरे पास आ गयी। उनको मैंने स्वप्न सुना दिया। वे हँसने लगीं और बोलीं—बड़ा ही शुभ स्वप्न है; स्नान करते समय सखीको सुनाऊँगी।

ENGLISH TRANSLATION

“I had scarcely finished speaking when Śyāmasundara laughed and drew me to His heart. The moment He embraced me, my eyes opened. I saw that dawn was approaching. Astonished, I thought, ‘What a remarkable dream!’ Inwardly I bowed to the blessed Tripurasundarī and prayed, ‘O Goddess, I do not know what fruit this dream will bear. Whatever may happen to me, may my beloved Śyāmasundara enjoy infinite auspiciousness.’

“While I still lay absorbed in this thought, sister Lalitā arose and came to me. I told her the dream. She laughed and said, ‘It is a most auspicious dream. I shall tell it to our friend while she bathes.’”

ORIGINAL

Hindi prose

चित्राके स्वप्नको रानी चुपचाप गम्भीर बैठी सुन रही थीं। स्वप्न सुनकर एक बार वे भी जोरसे हँस पड़ती हैं, पर तुरन्त ही अकचकाकर इधर-उधर देखने लगती हैं। बात यह हुई कि रानीका प्रेम बढ़कर ज्ञान-शक्तिको ढक देता है। रानी यह तथ्य तत्क्षण भूल जाती हैं कि चित्राने यह सब स्वप्नकी बात कही है। वे समझती हैं कि प्यारे श्यामसुन्दरने सचमुच देवीसे यह वर माँगा है। “वे मुझे प्राणोंसे बढ़कर प्यार करते हैं, मुझे सर्वथा अपने हृदयमें छिपाकर रखनेकी युक्ति उन्होंने की है”—यह भावना आते ही रानीको अणु-अणुमें श्यामसुन्दर दीखने लगते हैं; इसलिये ही रानी अकचकाकर इधर-उधर देखने लगती हैं। सामने रसोई-घरका दालान है। रानीको श्यामसुन्दर वहाँ खड़े दीखते हैं।

इधर इसी बीचमें उबटनका कार्य समाप्त हो चुका है। ललिता रानीका हाथ पकड़कर उन्हें स्नान-वेदीकी ओर चलनेके लिये कहती हैं। रानी अञ्चल सँभालती हुई उठ पड़ती हैं, पर सीधे रसोई-घरकी ओर दौड़ पड़ती हैं। रानीने इतनी जोरसे झटका दिया कि ललिताके हाथसे रानीका हाथ छूट गया और रानी उधर दौड़ पड़ीं। परन्तु ललिता बड़ी शीघ्रतासे पीछे दौड़कर पुनः रानीको पकड़ लेती हैं तथा कुछ रूठी हुई मुद्रा बनाकर कड़ी आवाजमें कहती हैं—जा, अब मैं तुम्हें कोई बात नहीं सुनाऊँगी; तू इस प्रकार स्वप्नकी बात सत्य मानकर बावली हो जाती है। इधर तेरी यह दशा है कि तूने स्नानतक नहीं किया है! और वह देख, धनिष्ठा आ गयी; मैया (यशोदा) तुम्हारी बाट देख रही हैं।

ENGLISH TRANSLATION

The Queen had listened to Citrā's dream in grave silence. At its end She too laughs aloud, but immediately starts and looks all around. Her love has swelled until it veils Her faculty of knowing, and She instantly forgets that Citrā was describing a dream. She believes that beloved Śyāmasundara truly asked the Goddess for this boon. "He loves me more than His life; He has contrived a way to hide me wholly within His heart." As soon as this feeling arises, the Queen sees Śyāmasundara in every atom and looks about in startled wonder. The kitchen veranda lies before Her; there She sees Śyāmasundara standing.

Meanwhile, the application of bathing paste has been completed. Taking the Queen's hand, Lalitā asks Her to proceed to the bathing platform. The Queen rises while gathering Her veil, but suddenly runs straight toward the kitchen. She pulls so sharply that Her hand slips from Lalitā's grasp. Lalitā swiftly runs after Her, catches Her again, assumes a slightly offended expression, and says sternly, "Go then! I shall never tell You anything again. You take a dream as truth and become utterly mad. You have not even bathed,and look, Dhaniṣṭhā has arrived. Mother Yaśodā is waiting for You."

ORIGINAL Hindi prose

ललिताकी आवाजसे रानीका भाव-प्रवाह बहुत-कुछ शिथिल हो जाता है। वे स्वप्नसे जागी हुईकी तरह ललिताका कण्ठ पकड़कर धीरे-धीरे रोने लग जाती हैं तथा कहती हैं—मैं तुम्हें बहुत तंग करती हूँ; पर मेरी प्यारी ललिते! मैं क्या करूँ, मैं होशमें नहीं रहती।

ललिताने देखा कि दवा काम कर गयी है। अब मेरे खीझनेके भयसे यह थोड़ी देर शान्त रह जायेगी। अतः प्यारकी मुद्रामें कहती हैं—देख बहिन! अब बहुत देर हो गयी है। अब जल्दीसे स्नान कर ले।

रानी चटपट स्नान-वेदीकी ओर चल पड़ती हैं तथा एक अबोध बालिकाकी तरह चौकीपर बैठकर कहती हैं—जल्दीसे जल डाल दे।

रानीकी यह मधुर सरल कण्ठ-ध्वनि सभी सखियोंके हृदयमें गूँज जाती है। सभीकी आँखें प्रेमसे भर जाती हैं। इन्दुलेखा जलसे भरे कलशको उठाकर रानीके सिरपर डालती हैं। विशाखा हाथोंसे रानीके केशोंको बिखेरती जा रही हैं। जलकी मोटी धारा रानीके सिरपरसे होकर पीठ-कन्धेपर गिर रही है। रानीके सुन्दरतम काले-काले केश जलके वेगसे पीठपर नाच रहे हैं। अब दोनों तरफसे रानीके कन्धोंपर रङ्गदेवी एवं सुदेवी दो झारियोंसे जल डालने लगती हैं। विशाखा पीठ, वक्षःस्थल एवं हाथ-पैर आदिपर अपने हाथ फेरती हुई रानीके शरीरको मल रही हैं। जलकी सुवाससे एवं रानीके अङ्गोंकी दिव्य सुगन्धिसे समस्त आँगन अत्यधिक सुवासित हो उठता है। विशाखा जैसे-जैसे रानीके शरीरको मल रही हैं, वैसे-वैसे प्रतीत होता है मानो कोई अतिशय सुगन्धित अङ्गद्रव्यको घिस रहा हो और घिसनेके फलस्वरूप उससे अधिकाधिक सुगन्धि निकल रही हो।

ENGLISH TRANSLATION

Lalitā's voice greatly checks the Queen's rushing tide of emotion. Like one awakening from a dream, She clasps Lalitā around the neck and slowly begins to weep. "I trouble you so much," She says, "but my dear Lalite, what can I do? I do not remain conscious of Myself."

Lalitā sees that the medicine has worked: fear of her displeasure will keep the Queen calm for a little while. With affection she says, "Look, sister, it has grown very late. Bathe quickly now."

The Queen promptly goes to the bathing platform. Sitting upon the stool like an innocent little girl, She says, "Pour the water quickly."

That sweet, guileless voice echoes in every sakhī's heart, and all their eyes fill with love. Indulekhā lifts a pitcher brimming with water and pours it over the Queen's head, while Viśākhā loosens Her hair with her hands. A thick stream runs from the Queen's head down Her back and shoulders; driven by the water, Her supremely beautiful black tresses dance upon Her back. From either side, Raṅgadevī and Sudevī pour water over Her shoulders from two ewers. Viśākhā passes her hands over the Queen's back, breast, arms, legs, and other limbs, gently rubbing Her body. The water's fragrance and the divine scent of the Queen's limbs fill the entire courtyard with perfume. As Viśākhā massages Her, it seems as though someone were grinding an exquisitely fragrant cosmetic, releasing ever more perfume with every stroke.

ORIGINAL Hindi prose

इस प्रकार खूब अच्छी तरह स्नान कराकर रानीके अङ्गोंको विशाखा चम्पई रंगकी साड़ीसे लपेटकर गीले वस्त्रको अलग कर देती हैं। उसी चम्पई वस्त्रसे सिरके केशोंको भी पोंछती हैं तथा अन्यान्य अङ्गोंको भी। रानी उस वेदीसे उठकर दो-तीन हाथ पश्चिमकी ओर अलग हटकर खड़ी हो जाती हैं। फिर तुङ्गविद्या बड़ी ही सुन्दर नीली साड़ी रानीको अब पहनाने लगती हैं तथा चम्पई रंगवाली साड़ीको विशाखा उतारती जाती हैं। उसके उतर जानेपर विशाखा ठीकसे नीली साड़ीकी गाँठ लगा देती हैं एवं तुङ्गविद्या ऊपर अञ्चल ठीक कर देती हैं। रानी पश्चिमकी तरफ चलकर श्रृङ्गार-भवनमें जा पहुँचती हैं। वहाँ बड़ी सुन्दर सजी हुई नीले मखमलकी गद्दी लगी हुई एक चौकी है, जो डेढ़ हाथ ऊँची है। उस चौकीपर रानी पूर्वकी ओर मुख करके बैठ जाती हैं।

ENGLISH TRANSLATION

When the Queen has been thoroughly bathed, Viśākhā wraps Her limbs in a champak-yellow sari and removes the wet garment. With that same yellow cloth she dries the Queen's hair and the rest of Her body. The Queen rises from the bathing platform and stands a few cubits away to the west. Tuṅgavidyā begins dressing Her in a very beautiful blue sari while Viśākhā gradually draws away the yellow one. Viśākhā fastens the blue sari securely over Her lower body, and Tuṅgavidyā arranges its upper veil. The Queen walks westward into the adornment chamber. There stands a beautifully prepared couch, a cubit and a half high, fitted with a cushion of blue velvet. The Queen sits upon it facing east.

CHAPTER 4

असीमानुराग लीला

The Līlā of Boundless Love

Source scan pages 41–54

ORIGINAL

Sanskrit invocation

॥ विजयेतां श्रीप्रियाप्रियतमौ ॥

ENGLISH TRANSLATION

May Śrī Priyā and Her most beloved Lord be ever victorious.

ORIGINAL

असीमानुराग लीला

पुष्पचयन करनेके लिये श्रीप्रिया वनमें पधार रही हैं। आगे-आगे रूपमञ्जरी है। उनके हाथमें एक डलिया है, जिसमें भीतरके हिस्सेमें केलेके पीले-पीले पत्ते बिछाये हुए हैं। श्रीप्रियाकी बाँयी ओर ललिता हैं, दाहिनी ओर विशाखा। चित्रा आदि सखियाँ कोई आगे, कोई पीछे चल रही हैं। यमुनाके किनारे-किनारे जो पगडंडी दक्षिणकी तरफ गयी है, उसीपर वे सब चल रही हैं। पगडंडीके पूर्वके हिस्सेमें मेंहदीकी झाड़ियोंकी कतार लग रही है तथा पश्चिमकी ओर तटके किनारे-किनारे, पर तटसे कुछ हटकर वन्य-पुष्पोंकी झाड़ियाँ हैं।

ENGLISH TRANSLATION

The Līlā of Boundless Love

Śrī Priyā is proceeding into the forest to gather flowers. Rūpamañjarī walks at the very front. In her hand is a basket whose inner surface has been lined with bright yellow banana leaves. Lalitā is on Śrī Priyā's left and Viśākhā on Her right. Citrā and the other sakhīs walk sometimes ahead and sometimes behind. They all follow the footpath that runs southward along the bank of the Yamunā. A row of henna bushes borders its eastern side, while on the west, a little removed from the water's edge, grow thickets of wildflowers.

ORIGINAL

श्रीप्रिया रह-रहकर पीछेकी ओर ताक लेती हैं। यमुनाके निर्मल प्रवाहमें किनारे-किनारे लाल-नीले-उजले कमल खिल रहे हैं। हंस एवं अन्यान्य जल-जातीय पक्षी ऊपरसे उड़कर आते हैं तथा पानीपर छपसे कूद जाते हैं। पानी उनके पंख-संचारित वायुसे तथा वेगपूर्वक कूदनेसे हिलोरें खाने लग जाता है, जिससे इन विकसित कमल वेगसे हिलने लग जाते हैं। श्रीप्रिया कभी हिलते हुए कमलोंकी ओर भी दृष्टि डाल लेती हैं।

पगडंडीपर चलती हुई श्रीप्रिया वहाँ आ पहुँचती हैं, जहाँ पगडंडी राजमार्गको पार करती है। वहाँ पहुँचकर श्रीप्रिया कुछ ठिठक जाती हैं तथा पश्चिमकी तरफ ताकने लग जाती हैं। इसी समय पूर्वकी तरफसे एक ग्वालिन दौड़ती हुई आती है। ग्वालिनके सिरके बाल बिखरे हुए हैं, मुख लाल-लाल हो रहा है, आँखें बिलकुल चढ़ी हुई हैं, मानो मद पीकर मतवाली-सी हो रही हो। ग्वालिन आकर रानीसे चिपट जाती है और उसकी आँखोंसे आँसुओंकी धारा बहने लगती है। रानीकी भी आँखें भर आती हैं। रानी अतिशय प्यार भरे स्वरमें पूछती हैं, “क्यों, बोल!” रानी उसको जोरसे हृदयसे चिपका लेती हैं। ग्वालिन सिर उठाती है और देखती है कि यहाँ कौन-कौन हैं। फिर कुछ देरतक पगली-सी खिलखिलाकर हँसती रहती है। फिर कुछ क्षण चुप रहकर हठात् अतिशय मधुर स्वरमें गाती है:

काहे मारे नयना बान साँवरो!

ENGLISH TRANSLATION

Again and again Śrī Priyā glances behind Her. Red, blue, and white lotuses bloom along the banks in the Yamunā's limpid current. Swans and other waterbirds fly down from above and splash into the water. The wind stirred by their wings and the force of their plunges set the water rolling in waves, making the open lotuses sway swiftly. From time to time Śrī Priyā also casts Her gaze upon those moving flowers.

Walking along the path, She reaches the place where it crosses the royal road. There She pauses and begins to look west. Just then a cowherd girl comes running from the east. Her hair is dishevelled, her face flushed crimson, and her eyes lifted and wild, as though she were intoxicated. She comes and clings to Rādhā, while streams of tears flow from her eyes. Rādhā's eyes also fill. In a voice overflowing with affection She asks, “What is it? Speak!” and presses the girl firmly to Her heart. The cowherd girl raises her head and looks to see who is present. For a while she laughs like one bereft of reason. Then, after falling silent for a few moments, she suddenly sings in an exceedingly sweet voice:

Why does the Dark One shoot the arrows of His eyes at me?

ORIGINAL

एक कड़ी गाकर ही, बस, उसीको बार-बार बावलीकी तरह दुहराती हुई, ताली पीटती हुई पश्चिम एवं दक्षिणकी ओरके सघन वनमें जा घुसती है। रानी जोरसे बोल उठती हैं, “रूप! रूप!! उसे सँभाल।” रानीकी आज्ञासे रूपमञ्जरी उसके पीछे दौड़ जाती है तथा वृक्षोंकी ओटमें हो जानेसे दोनोंका ही दीखना बंद हो जाता है।

रानी अब किनारा छोड़कर पगडंडीकी राहसे सघन वनमें प्रवेश करती हैं; पर वे मन-ही-मन गुनगुनाती जा रही हैं, “काहे मारे नयना बान साँवरो!” रानीका हृदय ज्यों-ज्यों उस कड़ीकी आवृत्ति करता है, त्यों-त्यों ठीक सदृशरूप झाँकी उन्हें अपने पूर्व-पश्चिम-उत्तर-दक्षिण, चारों ओर दीखने लगती है। रानी देखती हैं कि प्यारे श्यामसुन्दर कदम्बकी छायामें खड़े हुए वंशीमें फूँक भर रहे हैं। मुखपर मन्द-मन्द मुस्कान है तथा अतिशय प्यारभरी तिरछी चितवनसे मेरी ओर देख रहे हैं। रानीका हृदय अब बेकाबू-सा होने लगता है। मनकी गुनगुनाहट होठोंसे बाहर निकल पड़ती है। रानी बड़ी सुरीली तानसे वनको एक क्षणके लिये निनादित कर देती हैं। सुरीली तानसे सारा वन गुञ्जित हो रहा है, “काहे मारे नयना बान साँवरो!”

रानीकी आवाज सुनकर ललिता रानीके मुखारविन्दके सामने चली जाती हैं। रानी बड़ी उतावलीसे कहती हैं, “ललिते! इधर देख! जामुनके पत्ते-पत्तेमें वे खड़े हैं।”

ललिता जामुनकी ओर दृष्टि डालती हैं तथा रानीसे कहती हैं, “देख! तू अभी घरके पास है। थोड़ी सावधानीसे चल।”

ललिताकी बात सुनकर रानीके मुखपर कुछ घबराहट-सी आ जाती है। वे सँभल जाती हैं तथा जल्दीसे पैर बढ़ाकर चलती हुई मञ्जरियोंसे लदे हुए एक आम्रवृक्षकी जड़के पास पहुँचकर उससे तीन-चार हाथ पूर्वकी ओर, दक्षिणकी तरफ मुँह करके बैठ जाती हैं।

ENGLISH TRANSLATION

Having sung only that single line, she repeats it again and again like a madwoman, clapping her hands as she plunges into the dense forest toward the southwest. Rādhā calls aloud, “Rūpa! Rūpa! Take care of her.” At Her command Rūpamañjarī runs after the girl, and soon the trees hide them both from sight.

Rādhā now leaves the riverbank and enters the thick forest by the footpath, inwardly humming, “Why does the Dark One shoot the arrows of His eyes at me?” The more Her heart repeats that line, the more the same vision appears all around Her, east, west, north, and south. She sees beloved Śyāmasundara standing in the shade of a kadamba, breathing music into His flute. A gentle smile rests upon His face, and He looks toward Her with an oblique glance brimming with love. Rādhā's heart begins to escape all restraint. What She had hummed within spills from Her lips, and for a moment Her exquisitely melodious strain makes the whole forest resound: “Why does the Dark One shoot the arrows of His eyes at me?”

Hearing Her voice, Lalitā steps in front of Her lotus face. In great agitation Rādhā says, “Lalite! Look here! He is standing in every leaf of the jambu tree.”

Lalitā looks toward the tree and tells Her, “See, you are still close to home. Walk with a little care.”

A trace of alarm comes over Rādhā's face. She steadies Herself, quickens Her steps, and reaches a mango tree heavy with blossoms. Three or four cubits east of its trunk, She sits facing south.

ORIGINAL

आम्रकी मञ्जरियोंपर मधुमक्खियोंकी भीड़ भन-भन करती हुई उड़ रही है। भौंरे भी गुनगुनाते हुए मँडरा रहे हैं। आम्रकी डालीपर कोयलकी तरहकी, पर कोयलसे बड़े आकारकी एक चिड़िया बैठी है। मधुर स्वरमें धीमे-धीमे बोल रही है। चिड़ियाके पंख लाल एवं हलके काले रंगके हैं एवं आँखें बिलकुल लाल रंगकी हैं। वह अपनी लाल पुतलियोंको कोरोंमें नचाती हुई रानीकी ओर देखने लगती है। रानी भी दृष्टि उठाकर उसकी ओर देखती हैं। पहली दृष्टिमें तो वह चिड़िया छायासी दीखती है; पर फिर तुरंत दूसरे क्षण रानीको उसकी आँखोंकी पुतलियोंमें, उसके पंखके प्रत्येक भागमें तिरछी चितवन किये हुए श्यामसुन्दरकी झाँकी दीखती है। उनका हृदय फिर तेजीसे आवृत्ति करता है, “काहे मारे नयना बान साँवरो!”

इस बार उस चिड़ियाकी कण्ठध्वनि भी रानीको यही गाती हुई प्रतीत होती है, “काहे मारे नयना बान साँवरो!” रानीका हृदय इतना अधिक भावोंसे भर जाता है कि वे फिर एक बार बड़े ही मधुर स्वरमें जोरसे गाने लगती हैं, “काहे मारे नयना बान साँवरो!”

यह गाते-गाते रानी उठ पड़ती हैं तथा आम्रवृक्षकी एक डाली झुकाकर उसमेंसे दो-एक मञ्जरियाँ तोड़ती हैं। तोड़ते-तोड़ते पुनः आम्र-मञ्जरीके स्थानपर उन्हें श्यामसुन्दरकी झाँकी होने लगती है। आम्र-मञ्जरी हाथसे गिर पड़ती है। ललिता उसे उठाकर उनके दाहिने हाथकी डलियामें रख देती हैं।

रानी बैठ जाती हैं तथा दोनों कानोंपर अपना हाथ रखकर ऐसी मुद्रा बनाती हैं, मानो बड़े ध्यानसे कुछ सुन रही हों। फिर बड़ी तेजीसे आगे दक्षिणकी ओरके तमालवृक्षपर दृष्टि जमाकर कहती हैं, “ललिते! वह सुन, वे मेरा नाम लेकर मुझे बुला रहे हैं। आह! कितनी मधुर कण्ठध्वनि है!”

ललिता अब उत्सुकताभरी दृष्टिसे रानीकी ओर देखती हैं। कुछ क्षण देखते रहकर फिर धीरेसे कहती हैं, “पर मैं तो कुछ भी सुन नहीं रही हूँ। देख, पहलेकी तरह आज भी भ्रम हो गया है। श्यामसुन्दर तो चम्पा-काननमें मिलनेका इशारा कर चुके हैं। वे वहीं होंगे।”

ENGLISH TRANSLATION

Crowds of honeybees buzz over the mango blossoms, and black bees hum as they circle them. On a branch sits a bird resembling a cuckoo but larger, calling softly in a sweet voice. Its wings are red and pale black, and its eyes are entirely crimson. Rolling its red pupils toward the corners, it looks at Rādhā. She raises Her gaze to it. At first it appears merely as a shadowy bird, but in the very next instant She beholds Śyāmasundara in the pupils of its eyes and in every part of its wings, casting His sidelong glance upon Her. Her heart again rapidly repeats, “Why does the Dark One shoot the arrows of His eyes at me?”

Now even the bird's call seems to Rādhā to be singing that same refrain. Her heart becomes so laden with emotion that once again She sings it aloud in an exceedingly sweet voice.

Still singing, She rises, bends down a branch of the mango tree, and plucks one or two blossoms. As She gathers them, the blossoms once more turn into a vision of Śyāmasundara. They fall from Her hand, and Lalitā picks them up and puts them into the basket at Her right.

Rādhā sits down and covers both ears with Her hands, assuming the posture of one listening with profound attention. Then, fixing Her gaze intently upon a tamāla tree farther south, She says, “Lalite! Listen! He is calling me by name. Ah, how sweet His voice is!”

Lalitā looks at Her with eager concern. After watching for a few moments, she says softly, “But I hear nothing at all. See, just as before, you have fallen into an illusion today. Śyāmasundara has already signalled that He will meet us in the campā grove. He must be there.”

ORIGINAL

रानी बड़ी तेजीसे दक्षिणकी ओर दौड़ पड़ती हैं तथा उसी तमालके पास जाकर खड़ी हो जाती हैं एवं अतिशय प्यारसे बोलने लगती हैं, मानो सामने श्यामसुन्दर खड़े हों और वे उनसे बातें कर रही हों। श्रीप्रिया कहती हैं, “प्यारे श्यामसुन्दर! ललिता विश्वास नहीं करती। तुम एक बार जोरसे हँस दो।”

रानी ऐसा अनुभव करती हैं कि प्यारे श्यामसुन्दर मेरे कहनेसे जोरसे हँस रहे हैं। उनकी प्रसन्नताकी कोई सीमा नहीं रहती। वे बड़ी प्रसन्न मुद्रामें ललितासे कहती हैं, “देख ललिते! अब बोल, तू भ्रम बता रही थी न?”

ललिता कुछ आश्चर्यभरी मुद्रामें कहती हैं, “पता नहीं बहिन! तुझे क्या हो गया है? सच, श्यामसुन्दर यहाँ नहीं हैं। तू स्वयं हँसती है और मान बैठती है कि प्यारे श्यामसुन्दर हँस रहे हैं।”

ललिताकी बात सुनकर रानी कुछ दुःखी-सी हो जाती हैं तथा तमालसे जाकर चिपट जाती हैं और करुणामिश्रित स्वरमें कहती हैं, “प्रियतम! क्या कहूँ, यह ललिता विश्वास नहीं करती। इसे कैसे समझाऊँ?”

एक-दो क्षणके बाद श्रीप्रिया ऐसी मुद्रा बनाती हैं मानो श्यामसुन्दर उनके कानमें कुछ कह रहे हैं और वे अतिशय ध्यानसे सुन रही हों। कुछ देरतक उस मुद्रामें रहकर श्रीप्रिया मन्द-मन्द मुसकराने लगती हैं, फिर बड़े उल्लाससे कहती हैं, “ललिते! प्यारे श्यामसुन्दरने उपाय बता दिया है। देख, मैं अभी-अभी तुझे विश्वास कराये देती हूँ।”

ललिता बीचमें ही बोल उठती हैं, “क्या उपाय बताया है?”

ललिताकी बात सुनकर रानी कुछ झेंप-सी जाती हैं। कुछ देर ठहरकर कहती हैं, “रूप कहाँ गयी है? आह! वह अभीतक वापस नहीं आयी?”

रानी यह कह ही रही थीं कि रूपमञ्जरी उसी ग्वालिनका हाथ पकड़े हुए वहाँ आ जाती है। रूपमञ्जरीको देखकर रानी प्रसन्न होकर कहती हैं, “री! इधर आ।”

ENGLISH TRANSLATION

Rādhā runs swiftly south and stops beside that very tamāla. She begins speaking with immense affection, as though Śyāmasundara stood before Her and were conversing with Her. “Beloved Śyāmasundara,” She says, “Lalitā does not believe me. Laugh aloud just once.”

Rādhā experiences Him laughing aloud at Her request. Her delight knows no bound. Beaming, She says to Lalitā, “Look, Lalite! Now tell me, were you not calling it an illusion?”

With an air of astonishment Lalitā replies, “I do not know, sister, what has happened to you. Truly, Śyāmasundara is not here. You laugh yourself and then believe that beloved Śyāmasundara is laughing.”

Saddened by Lalitā's words, Rādhā goes and embraces the tamāla. In a voice mingled with sorrow She says, “Beloved, what can I say? This Lalitā will not believe. How shall I make her understand?”

After a moment or two, Śrī Priyā assumes the expression of one to whose ear Śyāmasundara is whispering, and She listens with complete attention. Remaining so for a while, She begins to smile gently and then exclaims with great delight, “Lalite! Beloved Śyāmasundara has told me the means. See, I shall make you believe this very moment.”

Lalitā interrupts, “What means has He told you?”

Rādhā grows a little abashed. After pausing, She says, “Where has Rūpa gone? Ah, has she still not returned?”

Even as She speaks, Rūpamañjarī arrives holding the cowherd girl's hand. Delighted to see her, Rādhā calls, “Girl, come here.”

ORIGINAL

रानीकी आज्ञा सुनते ही रूपमञ्जरी पासमें आकर खड़ी हो जाती है। रानी उसे हृदयसे लगाकर कहती हैं, "रूप! उधर देख। देखकर बता, क्या वहाँ प्रियतम श्यामसुन्दर खड़े नहीं हैं?" रानी रूपमञ्जरीको अँगुलीसे उसी तमालकी ओर देखनेका संकेत कर रही हैं। वह उधर ही ताकने लगती है। दृष्टि उधर फिरते ही रूपमञ्जरीको ठीक वहाँ श्यामसुन्दर दिखायी पड़ते हैं। वह प्रेममें डूबने लगती है। उसकी दशा देखकर ललिता कुछ आश्चर्यमें पूछती हैं, "रूप! तू इस तरह एकाएक विह्वल क्यों हो गयी?"

रूपमञ्जरी कहती है, "आह! ललिता रानी! उधर देखो! प्यारे श्यामसुन्दर कितनी प्रेमभरी दृष्टिसे मेरी ओर ताक रहे हैं।"

रूपमञ्जरीकी बात सुनकर ललिताके आश्चर्यका ठिकाना नहीं रहता। उनका गला भर आता है और वे अतिशय उतावलेपनकी मुद्रामें कहती हैं, "मेरी प्यारी रूप! मुझे नहीं दीख रहे हैं।"

रानी ललिताकी बात सुनकर खिलखिलाकर हँस देती हैं तथा कहती हैं, "ललिते! अब बता, मैं तो तुम्हारी दृष्टिमें बावली हूँ, पर रूप तो बावली नहीं। उसे क्यों श्यामसुन्दर दीख रहे हैं?"

ललिता अतिशय प्यारसे रूपमञ्जरीके पास जाकर उससे शीघ्रतासे कहती हैं, "रूप! क्या सचमुच श्यामसुन्दर यहाँ खड़े हैं?"

रूपमञ्जरी कहती है, "हाँ, ललिता रानी! वह देखो, वे मुसकराकर तुम्हारी ओर देख रहे हैं।"

रूपमञ्जरीकी बात सुनकर ललिता अतिशय आश्चर्यभरी मुद्रामें बहुत शीघ्रतासे उससे कहती हैं, "रूप! मुझे फिर क्यों नहीं दीखते?" रूपमञ्जरी प्रेममें अधिकाधिक अधीर होती जा रही है। ललिता उसे जाकर पकड़ लेती हैं। रूपमञ्जरी ललिताके सहारेसे धीरे-धीरे उनके चरणोंमें बैठ जाती है। ललिता कुछ क्षणतक कुछ सोचती रहती हैं। फिर कहती हैं, "अच्छा रूप! तू श्यामसुन्दरसे पूछ तो सही, तुम्हें क्यों दीख रहे हैं?"

ENGLISH TRANSLATION

At Rādhā's command, Rūpamañjarī comes and stands near. Rādhā embraces her and says, “Rūpa, look there. Tell me, is my beloved Śyāmasundara not standing there?” With Her finger She indicates the very tamāla. The instant Rūpamañjarī turns her gaze toward it, Śyāmasundara appears to her in that exact place. She begins to drown in love. Seeing her condition, Lalitā asks in astonishment, “Rūpa, why have you suddenly become so overwhelmed?”

Rūpamañjarī replies, “Ah, Lalitā Rānī! Look there! With what a loving gaze beloved Śyāmasundara is looking at me.”

Lalitā's amazement knows no limit. Her throat fills and, with intense urgency, she says, “My dear Rūpa, I cannot see Him.”

Rādhā laughs brightly. “Lalite! Now tell me. In your eyes I may be mad, but Rūpa is not. Why then can she see Śyāmasundara?”

Lalitā approaches Rūpamañjarī with great affection and quickly asks, “Rūpa, is Śyāmasundara truly standing here?”

“Yes, Lalitā Rānī. Look, He is smiling and looking toward you.”

In profound astonishment Lalitā immediately asks, “Rūpa, then why can I not see Him?” Rūpamañjarī grows ever more unsteady with love. Lalitā goes and supports her, and leaning upon Lalitā she slowly sinks down at her feet. Lalitā remains thoughtful for a few moments, then says, “Very well, Rūpa. Ask Śyāmasundara why He is visible to you.”

ORIGINAL

रूपमञ्जरी उस तमालके वृक्षकी ओर कुछ देरतक देखकर कहती है, “ललिता रानी! प्यारे श्यामसुन्दर कहते हैं...” रूपमञ्जरीका कण्ठ भर जाता है। कहते-कहते वाणी रुक जाती है। ललिता बड़े प्यारसे पूछती हैं, “हाँ, हाँ, क्या कहते हैं? बोल!”

रूपमञ्जरी कुछ सँभलकर कहती है, “प्यारे श्यामसुन्दरने कहा कि अभी-अभी तुम्हें मेरी प्यारी राधाने अपने हृदयसे लगाया था, इसीलिये तुम मुझे देख रही हो।”

रानी रूपमञ्जरीकी बात सुनकर खिलखिलाकर हँस पड़ती हैं। पर ललिताकी मुद्रा कुछ ऐसी अस्त-व्यस्त-सी है कि उन्हें देखकर ऐसा प्रतीत होता है मानो वे किसी बातपर गम्भीरतासे विचार कर रही हों। अब रूपमञ्जरी रानीके पास जाकर खड़ी हो जाती है। रानी कुछ गम्भीरताके स्वरमें ललितासे पूछती हैं, “क्यों! अब विश्वास हुआ? मुझे बावली बता रही थी न?”

ललिता अतिशय व्याकुलता-मिश्रित स्वरमें कहती हैं, “रूप! अच्छा, एक बार श्यामसुन्दरसे पूछ, फिर वे मुझे क्यों ठग रहे हैं? मैं तो उन्हें नहीं देख पा रही हूँ। ऐसा क्यों है?”

रूपमञ्जरी कुछ देर पुनः तमालकी ओर देखकर कहती है, “ललिता रानी! आह! वह देखो, तुम्हारे बिलकुल दाहिने कंधेके पास खड़े होकर वे कह रहे हैं कि रूप, यदि ललिता आदिको ठगूँ नहीं, तब तो फिर यहाँ बावलियोंका समुदाय इकट्ठा हो जाये। मेरी प्यारी राधा बावली है ही, ललिता भी बावली हो जाये, फिर मेरी प्राणेश्वरी राधाको कौन सँभाले?”

ललितासे कहते-कहते रूपमञ्जरी प्रेममें मूर्छित-सी होने लगती है। ललिताका भी चेहरा प्रेमावेशकी अतिशयताके कारण बिलकुल लाल-सा हो जाता है। उनका मन भावोंके समुद्रमें डूबने-उतराने लगता है। वे कुछ बोलना चाहती थीं कि इसी समय रानी बिलकुल बावली-सी होकर बड़ी तेजीसे दक्षिणकी ओर दौड़ने लग जाती हैं।

ENGLISH TRANSLATION

Rūpamañjarī looks toward the tamāla for some time and says, “Lalitā Rānī, beloved Śyāmasundara says...” Her throat fills and her voice fails before she can finish. With deep affection Lalitā urges, “Yes, yes, what does He say? Speak!”

Regaining herself a little, Rūpamañjarī says, “Beloved Śyāmasundara says, ‘Only a moment ago my darling Rādhā pressed you to Her heart. That is why you can see Me.’”

Hearing this, Rādhā bursts into delighted laughter. Lalitā, however, appears so disordered that she seems to be pondering something with great seriousness. Rūpamañjarī now goes and stands beside Rādhā. In a somewhat grave voice Rādhā asks Lalitā, “Well, do you believe now? You were calling me mad, were you not?”

In a voice laden with anguish Lalitā says, “Rūpa, ask Śyāmasundara once why He is deceiving me. I cannot see Him. Why is that?”

Rūpamañjarī again looks toward the tamāla, then says, “Lalitā Rānī, ah, look! Standing right beside your right shoulder He says, ‘Rūpa, if I do not deceive Lalitā and the others, a whole gathering of madwomen will assemble here. My beloved Rādhā is already mad. If Lalitā also becomes mad, who will care for my sovereign of life, Rādhā?’”

While speaking to Lalitā, Rūpamañjarī begins to swoon with love. Lalitā's face too becomes utterly flushed under the force of loving ecstasy, and her mind sinks and rises in an ocean of feeling. She is about to speak when Rādhā, like one completely maddened, suddenly races southward.

ORIGINAL

ओढ़नी शरीरसे नीचे गिर जाती है तथा आँचल भी सिरसे अब गिरा तब गिरा होने लग जाता है। रानी तेज स्वरमें बोलती जा रही हैं, “देखो! अभी पकड़ लेती हूँ। मैं भी दौड़ना जानती हूँ।”

रानीकी यह दशा देखकर ललिताका भाव बदल जाता है। वे रानीको सँभालनेके लिये तेजीसे उधर ही दौड़ती हैं तथा जाकर उन्हें पकड़ लेती हैं। रानी बड़ी तेजीसे दौड़ रही थीं, इसलिये उनका सारा शरीर पसीनेसे लथपथ हो रहा था। ललिताके पकड़ते ही वे बोलीं, “छोड़, छोड़! नहीं तो वे बहुत आगे निकल जायेंगे।”

रानी बड़ी फुर्तीसे छुड़ानेकी चेष्टा करती हैं, पर छुड़ा नहीं पातीं। इसलिये लाचार होकर करुणाभरी दृष्टिसे ललिताकी ओर देखने लग जाती हैं। रानी ऐसा अनुभव कर रही हैं कि श्यामसुन्दर पगडंडीपर दक्षिणकी ओर दौड़ते हुए जा रहे हैं; उन्हींको पकड़नेके लिये मैं भी दौड़ रही हूँ। अब जब ललिताने पकड़ लिया तथा उनसे छूटा नहीं गया तो जोरसे बोल पड़ीं, “प्यारे! ठहर जाओ!” रानीके ऐसा कहते ही उन्हें अनुभव होने लगता है कि श्यामसुन्दर करीब डेढ़-दो गज दक्षिणकी तरफ हटकर उन्हींकी ओर मुँह किये हुए खड़े हैं। रानीको कुछ हर्ष हो जाता है कि वे खड़े हो गये। वे फिर ललितासे कहती हैं, “वह देख, आह! मेरे प्राणेश्वर मेरी बात मानकर मुझे थकी देखकर खड़े हो गये हैं।”

ललिता उधर देखती हैं, पर पीछे पुष्पोंसे लदी हुई झाड़ियोंके सिवा और कुछ भी नहीं देख पातीं। हठात् रानी देखती हैं कि वहाँ श्यामसुन्दर नहीं हैं। यह अनुभव होते ही प्राणोंकी व्याकुलता-मिश्रित एक चीख मारकर रानी माथेको दोनों हाथोंसे पकड़कर बैठ जाती हैं। ललिता कुछ विचारमें पड़ जाती हैं तथा उपाय सोचने लग जाती हैं कि किसी प्रकार इस बावली सखीको यह बता दूँ कि श्यामसुन्दर तुम्हारी प्रतीक्षामें मेरे कुञ्जमें बैठे हैं। इसीके लिये वे विशाखाको कुछ इशारा करती हैं। रानी सिर नीचा किये हुए बिलकुल निश्चेष्ट-सी बैठी हैं। विशाखा धीरेसे रानीके कंधेको हिलाकर कहती हैं, “बावली! यहाँ पत्थरकी मूर्ति बनी बैठी है और प्यारे श्यामसुन्दर चम्पा-काननमें तेरी बाट देख रहे हैं।”

ENGLISH TRANSLATION

Her wrap falls from Her body, and the end of Her veil is on the verge of slipping from Her head. As She runs She calls aloud, “Look! I shall catch Him now. I know how to run too.”

Seeing Her condition, Lalitā's mood changes at once. She runs swiftly after Rādhā to protect Her and catches hold of Her. Rādhā had been running so hard that Her whole body is drenched in perspiration. The instant Lalitā catches Her, She cries, “Let me go, let me go! Otherwise He will get far ahead.”

Rādhā struggles vigorously to free Herself, but cannot. Helpless, She turns a piteous gaze upon Lalitā. She experiences Śyāmasundara running south along the path and believes that She too is running to catch Him. Unable to escape Lalitā's hold, She calls loudly, “Beloved, stop!” At once She experiences Śyāmasundara standing about one and a half or two yards to the south, facing Her. Rejoicing that He has stopped, She says to Lalitā, “Look there! Ah, my Lord of life has honored my words. Seeing me exhausted, He has stopped.”

Lalitā looks, but sees nothing behind them except flowering bushes. Suddenly Rādhā no longer sees Śyāmasundara there. With a cry born of the anguish of Her very life, She clasps Her forehead in both hands and sinks down. Lalitā reflects and devises a way to tell this maddened friend that Śyāmasundara is waiting in her bower. She signals to Viśākhā. Rādhā sits with head lowered, almost lifeless. Gently shaking Her shoulder, Viśākhā says, “Mad girl! You sit here like a stone image while beloved Śyāmasundara waits for you in the campā grove.”

ORIGINAL

रानी धीरे-धीरे विशाखाकी ओर देखने लग जाती हैं तथा कुछ क्षणके बाद पूछती हैं, “री, क्या सचमुच मुझे भ्रम हो गया था? रे प्यारे श्यामसुन्दर वहाँ नहीं हैं?”

विशाखा बड़ी तेजीसे कहती हैं, “हाँ बहिन! तुझे भ्रम हो गया है।” विशाखाकी बात सुनकर रानी कुछ गम्भीर-सी होकर खड़ी हो जाती हैं तथा चुपचाप शान्त भावसे धीरे-धीरे पगडंडीपर दक्षिण दिशाकी ओर चलने लगती हैं।

ललिता चाहती हैं कि यह बावली सखी आखिर किसी प्रकार उलझी हुई रास्ता चलती रहे, तब तो जल्दी पहुँचना सम्भव है। नहीं तो पता नहीं, कुञ्जतक पहुँचते-पहुँचते फिर किस भावावेशमें जा पहुँचे। और नहीं तो कम-से-कम गिरिवर-स्रोततक तो शान्तिसे चली चले, फिर भय नहीं। इसी विचारसे ललिता रानीसे कहती हैं, “हाँ, तुमने स्वप्न सुनानेकी बात कही थी, अब सुना।”

श्रीललिताकी बात सुनकर मानो सोकर जगी हों, इस मुद्रामें पूछती हैं, “कैसा स्वप्न?”

ललिता कहती हैं, “क्यों, भूल गयी? तुमने कहा था कि ठीक उषाकालके समय मैं आज अतिशय सुन्दर स्वप्न देख रही थी।”

रानीके मुखपर यह बात सुनकर प्रसन्नता छा जाती है। वे कहती हैं, “हाँ, कहा था। सचमुच ललिते! बड़ा सुन्दर स्वप्न था।” ललिता बड़ी उत्सुकताकी मुद्रामें कहती हैं, “फिर जरूर सुना।”

रानी कुछ बोलना चाहती हैं, पर रुक जाती हैं। फिर मुसकराकर कहती हैं, “देख! प्यारेके हृदयसे लगी हुई मैं आनन्दमें व्यस्त हो रही थी। नींद आज रातमें एक क्षणके लिये भी आयी ही नहीं। पर प्रभात होनेके अन्तिम क्षण पहले आँखें लग गयीं। मैं देखती हूँ कि संध्याका समय है। मैं गौरी-पूजन करनेके लिये केलि-सरोवरवाले घाटपर स्नान करने आयी हूँ। आकाशमें बादल छाये हुए हैं। घाटपर पैर रखा ही था कि प्यारे श्यामसुन्दर उत्तर-पूर्वके कोनेकी एक झाड़ीके पास खड़े दीख पड़े। प्यारे एकटक मुझे एवं मैं प्यारेको एकटक देख रही थी।”

ENGLISH TRANSLATION

Rādhā slowly turns toward Viśākhā and after a few moments asks, “Girl, was I truly deluded? Is beloved Śyāmasundara not there?”

Viśākhā answers quickly, “Yes, sister, you were deluded.” Hearing this, Rādhā grows grave, rises, and quietly begins walking south along the path with a calm bearing.

Lalitā wishes to keep her maddened friend somehow occupied while they walk, for only then can they arrive quickly. Otherwise, who knows into what ecstasy She may fall before reaching the bower? If nothing else, let Her at least walk peacefully as far as the Girivara stream, after which there will be no danger. With this in mind Lalitā says, “You had said that you would tell me your dream. Tell it now.”

As though awakening from sleep, Śrī Priyā asks, “What dream?”

“Have you forgotten? You said that at the time of dawn today you were seeing a most beautiful dream.”

Delight spreads over Rādhā's face. “Yes, I did say so. Truly, Lalite, it was a beautiful dream.” Lalitā eagerly urges Her to recount it.

Rādhā starts to speak, pauses, and then smiles. “Look, pressed to my beloved's heart, I had remained absorbed in bliss. Not for a moment had sleep come to me during the night, but just before the final moment preceding dawn, my eyes closed. I saw that it was evening. I had come to the bathing place at Keli-sarovara to bathe before worshipping Gaurī. Clouds covered the sky. No sooner had I set foot upon the landing than I saw beloved Śyāmasundara standing beside a bush in the northeastern corner. My beloved gazed fixedly at me, and I gazed fixedly at Him.”

ORIGINAL

“उसी समय बड़े जोरकी आँधी चली। चारों ओर अन्धकार छा गया। बिजली जोरसे रह-रहकर चमक जाती थी। बिजलीके प्रकाशमें मैंने देखा, वे मुझे अपने पास आनेके लिये हाथोंसे इशारा कर रहे हैं। मैं बावली-सी होकर दौड़ पड़ी। पानीकी बूँदें टप-टप करती हुई मेरी साड़ीपर गिर रही थीं। ललिते! अनुभव करने लगी कि साड़ी बिलकुल भीग गयी है। मैं उसी भीगी साड़ीको लपेटती हुई प्यारे श्यामसुन्दरकी ओर तेजीसे बढ़ने लगी; पर पैर उठते नहीं थे। हृदय चाहता था, दौड़कर प्रियतमके पास जा पहुँचूँ, पर दौड़ पाती नहीं थी। मन व्याकुल होने लग गया। उसी समय देखती हूँ कि वे स्वयं मेरे पास आ गये हैं। उनकी आँखोंसे प्रेम झर रहा था। आते ही वे प्यारसे बोले, ‘प्रिये! तू बिलकुल भीग गयी है। आ, उस आम्र-निकुञ्जमें चले चलें। वर्षाका वेग थोड़ा थमनेपर चली जाना।’

“ललिते! प्रियतमकी बात सुनकर मेरा हृदय बिलकुल भर आया। आँखें भी भर आयीं, मानो हृदय पानी बनकर प्रियतमकी ओर बहने लग गया। फिर प्यारे श्यामसुन्दरने अतिशय प्यारसे मुझे उठाया। मेरे पैर मात्र जमीनपर थे, बाकी शरीरका सम्पूर्ण भार प्यारे श्यामसुन्दरके ऊपर देकर चल पड़ी। सघन आम्रके वृक्षोंका निकुञ्ज पासमें ही था। उसकी आड़में हम दोनों जा छिपे। वायुका वेग वहाँ अत्यन्त धीमा था। वहाँ प्यारे श्यामसुन्दरने अपने प्यारभरे हाथोंसे मेरी कमरके ऊपरके गीले वस्त्रोंको उतार दिया। मेरे उन अङ्गोंको अपने पीताम्बरसे ढक दिया। फिर कमरके नीचे भी पीताम्बर बाँधकर मेरी गीली चुनरीको अपने हाथोंमें लेकर निचोड़ने लग गये। आह, ललिते! जिस समय प्यारे श्यामसुन्दर इसे निचोड़ रहे थे, पानीकी धारा उनके पैरोंपर गिर रही थी। उस समय मेरा हृदय असीम अनुरागसे अधिकाधिक भरता जा रहा था।”

रानी स्वप्नकी बात ललितासे कहती जा रही थीं तथा प्रेमसे उनका हृदय भरता जा रहा था। रानीकी बात सुनकर ललिता बीचमें ही बोल उठती हैं, “बावली! क्या भूल गयी? अनन्तचतुर्दशीके दिन ठीक यही घटना घटी थी। तूने ही तो मुझसे कहा था।”

ENGLISH TRANSLATION

“Just then a violent wind arose. Darkness spread in every direction, and lightning flashed again and again. By its light I saw Him beckoning me with His hands. Like one maddened, I ran. Raindrops fell heavily upon my sari. Lalite, I felt it become completely drenched. Wrapping that wet sari around me, I hurried toward beloved Śyāmasundara, but my feet would not lift. My heart longed to run and reach my beloved, yet I could not. My mind grew desperate. Just then I saw that He Himself had come to me. Love poured from His eyes. The moment He arrived, He said tenderly, ‘Beloved, you are soaked through. Come, let us go into that mango bower. You may leave when the force of the rain has diminished.’

“Lalite, hearing my beloved's words, my heart overflowed. My eyes too filled, as though my heart had become water and begun flowing toward Him. Beloved Śyāmasundara then lifted me with immense tenderness. Only my feet remained upon the earth, while I placed the entire weight of my body upon Him as we walked. Nearby was a bower of densely growing mango trees, and we hid within its shelter. The force of the wind was very slight there. With His loving hands, beloved Śyāmasundara removed my wet garments above the waist and covered those limbs with His yellow cloth. Then He wrapped another portion of His yellow garment below my waist, took my wet scarf in His hands, and began to wring it out. Ah, Lalite! As beloved Śyāmasundara wrung it, streams of water fell upon His feet. At that moment my heart became ever more filled with boundless love.”

As Rādhā recounts the dream to Lalitā, Her heart fills with love. Lalitā interrupts, “Mad girl, have you forgotten? This very event occurred on Ananta-caturdaśī. You yourself told me.”

ORIGINAL

अब ललिताकी बात सुनकर रानी कुछ चौंक-सी जाती हैं। रानीका सुन्दर मुखारविन्द कुछ ऐसी मुद्रा धारण कर लेता है, मानो वे कुछ याद कर रही हों। कुछ क्षण चुप खड़ी रहकर बोल उठती हैं, “हाँ, री! ठीक है। सचमुच अब याद आया। देख, सम्भवतः आज बिलकुल सोयी ही नहीं, प्यारेके हृदयमें मुँह छिपाये लेटी हुई थी। अनन्त-पूजाके दिन तुमने कौस्तुभमणिके ध्यानका वर्णन करते हुए यह कहा था कि भगवान् अनन्तके हृदयपर कौस्तुभ रहता है। तू तो कौस्तुभका वर्णन करने लग गयी, पर मेरा मन प्यारे श्यामसुन्दरके विशाल वक्षःस्थलकी शोभाके ध्यानमें इतना तल्लीन हो गया था कि मैं तुम्हारी बात फिर आगे सुन नहीं सकी। मैं सोचने लगी कि आह! प्यारे श्यामसुन्दर जिस समय मेरे गलेमें बाँह डालकर हृदयसे लगाते हैं, उस समय मेरा सिर उनके वक्षःस्थलपर जा टिकता है। ऐसा करके मेरे प्यारे आनन्दमें विभोर हो जाते हैं; पर मेरा कठोर सिर कहीं प्यारेके वक्षःस्थलपर चोट तो नहीं लगा देता है?

“प्यारेके वक्षःस्थलमें सिर छिपाये हठात् इसी भावसे पुनः भावित हो गयी थी। मैं ऐसा सोच ही रही थी कि प्यारेने मुझे जोरसे अपने भुजपाशमें दबा दिया। अपने हृदयकी उमंगसे प्यारेने मेरे मस्तिष्कको भर दिया। पूजाके बाद उस दिन संध्या-स्नानका दृश्य सामने नाचने लग गया। मैं उस चिन्तनमें बिलकुल विभोर हो गयी थी। बिलकुल उसी तरह अनुभव करने लग गयी थी। सारीके बोलनेपर मेरी आँखें खुलीं। मैंने सोचा कि स्वप्न देखा है। सचमुच मुझे भ्रम हो गया था।”

रानी यह कहते-कहते रुक जाती हैं तथा कान देकर कुछ सुनने लग जाती हैं। कुछ क्षण रुककर फिर कहती हैं, “अरे! सुन तो सही। मेरा नाम लेकर वे पुकार रहे हैं क्या?”

ENGLISH TRANSLATION

Lalitā's words startle Rādhā. Her beautiful lotus face assumes the expression of one trying to remember. After standing silently for a few moments, She says, “Yes, girl, that is right. Now I truly remember. Look, perhaps today I did not sleep at all. I was lying with my face hidden against my beloved's heart. On the day of Ananta worship, while describing meditation upon the Kaustubha jewel, you said that the Kaustubha rests upon Lord Ananta's heart. You continued describing the jewel, but my mind became so absorbed in contemplating the beauty of beloved Śyāmasundara's broad chest that I could hear no more of what you said. I began to think: Ah, when beloved Śyāmasundara encircles my neck with His arm and draws me to His heart, my head comes to rest upon His chest. My beloved becomes immersed in joy, but could my hard head be hurting His chest?

“As I lay with my head hidden against my beloved's chest, I suddenly became absorbed in that very feeling again. While I was thinking this, He pressed me tightly within the circle of His arms. With the ardor of His own heart, my beloved filled my mind. Then the scene of the evening bath on that day after the worship began to dance before me. I became wholly absorbed in its contemplation and began to experience everything just as before. When Sārī called, my eyes opened. I thought I had seen a dream. Truly, I had become confused.”

As Rādhā speaks, She suddenly stops and listens. After a few moments She says, “Oh, listen carefully. Is He calling me by name?”

ORIGINAL book note and Sanskrit citation

अद्भुत प्रेममें पगी हुई व्रज-सुन्दरियोंका हृदय तो श्याम-प्रेमसे वस्तुतः इतना पूर्ण रहता है कि मानवी जगतकी बुद्धि उस सरस हृदयकी रूपरेखाकी कल्पना भी नहीं कर सकती। भागवतमें ऐसा वर्णन मिलता है, व्रज-सुन्दरियाँ अपने वक्षःस्थलपर श्यामसुन्दरके चरणकमलोंको डरती हुई रखती हैं कि कहीं मेरा कठोर हृदय प्यारेके कोमल चरणोंको चोट नहीं लगा देगा।

यत्ते सुजातचरणाम्बुरुहं स्तनेषु भीताः शनैः प्रिय दधीमहि।

—श्रीमद्भागवत १०.३१.१९

ENGLISH TRANSLATION

The hearts of the beautiful women of Vraja, steeped in wondrous love, are in truth so completely filled with love for Śyāma that the intellect of the human world cannot even imagine the contours of those nectarean hearts. The Bhāgavata describes how the women of Vraja fearfully place Śyāmasundara's lotus feet upon their breasts, anxious that their own hard hearts might hurt their beloved's tender feet:

“Beloved, fearing for Your fine lotus feet, we place them gently upon our breasts.”

Śrīmad-Bhāgavata 10.31.19

ORIGINAL

Braj Bhāṣā song

आजु गई हुती कुंजन माँ, बरसें उत बूँद घने घन घोरत।

‘देव’ कहें हरि भीजत देखि, अचानक आय गए चित चोरत।।

गाँठि भर तट ओट कुंजोंके, लपेटि परी सो कटी पट छोरत।

चौगुनो रंग बढ़्यो चित में, चुनरी के चुचात लता के निचोरत।।

ENGLISH TRANSLATION

Today I had gone among the bowers when drops poured from dense and lowering clouds.

Deva says: Seeing Hari drenched, the thief of my heart suddenly came near.

At the sheltered bank of the bowers I gathered it in a knot, wrapping the loosened end around my waist.

Love in my heart increased fourfold as He wrung the dripping scarf beneath the vines.

ORIGINAL

रानीकी मधुर कण्ठध्वनि वनको गुञ्जित करने लग जाती है। ललितादि कुछ निश्चिन्त-सी हो गयी हैं; क्योंकि वे अब घोषसे दूर एवं सघन वन-श्रेणीको पीछे छोड़कर अपने कुञ्जोंकी सीमामें आ गयी हैं। रानी बार-बार उस अन्तिम चरणको दुहराती हैं, “चुनरीके चुचात लताके निचोरत।”

इसी समय रानीको दीखता है कि रङ्गदेवी एवं चम्पकलताके कुञ्जके बीचकी जो सड़क गिरिवर-स्रोतको पार करती है, उसी सड़कके ऊपर पुलके पास प्यारे श्यामसुन्दर खड़े हैं। रानी बड़ी तेजीसे उन्हें पकड़नेके लिये उधर दौड़ पड़ती हैं। साथमें कहती जा रही हैं, “वह देख, वह देख, फिर आ गये, वहाँ खड़े हैं।”

रानीके पीछे सभी सखियाँ दौड़ने लग जाती हैं। रानी वहाँ पहुँचकर शीघ्रतासे पुल पार कर जाती हैं, पर वहाँ पहुँचते ही श्यामसुन्दर दीखने बंद हो जाते हैं। रानी बड़ी आकुलता एवं आश्चर्यभरी दृष्टिसे इधर-उधर देखने लगती हैं। सोच रही हैं कि कहीं इसी जगह छिप गये हैं। एक बार चम्पकलताके कुञ्जकी चहारदीवारीपर हाथ रखकर देखती हैं कि इधर गये होंगे। फिर रङ्गदेवीके कुञ्जकी चहारदीवारीके पास आकर देखती हैं कि शायद उस कुञ्जमें जाकर छिपे हों। फिर पुलके पास स्रोतकी सीढ़ियोंपर जाकर देखती हैं कि पुलके भीतर तो नहीं छिप गये हैं। वहाँसे लौटकर निराश-सी होकर उत्तरकी तरफ सीधे सड़कपर देखती हैं। इसी समय श्यामसुन्दर उन्हें वहाँसे उत्तर सड़कपर राधाकुण्डके पास खड़े दीख पड़ते हैं। रानीके आनन्दकी सीमा नहीं। वे बड़ी तेजीसे उधर ही दौड़ती हैं तथा कहती जा रही हैं, “वाहजी, वाह! बलिहार है, इतनी फुर्तीसे वहाँ जा पहुँचे।”

रानी यह कहती हुई दौड़ती चली जा रही हैं और कुछ ही क्षणमें विद्युत्-गतिसे वहाँ पहुँच जाती हैं; पर वहाँ पहुँचते ही फिर श्यामसुन्दर नहीं दीखते।

ENGLISH TRANSLATION

Rādhā's sweet voice sets the forest ringing. Lalitā and the others become somewhat reassured, for they are now far from the cowherd settlement, have left the dense woodland behind, and have entered the bounds of their own bowers. Again and again Rādhā repeats the final line: "As He wrung the dripping scarf beneath the vines."

At that moment She sees beloved Śyāmasundara standing near the bridge on the road between the bowers of Raṅgadevī and Campakalatā, where the road crosses the Girivara stream. She races there to catch Him, saying, "Look there, look there! He has come again. He is standing there."

All the sakhīs run after Her. Rādhā quickly crosses the bridge, but the moment She arrives Śyāmasundara disappears. With an anxious, astonished gaze She searches all around, thinking He must be hiding nearby. She first places Her hands upon the enclosing wall of Campakalatā's bower, thinking He may have gone that way. Then She searches beside the wall of Raṅgadevī's bower, wondering whether He has hidden inside it. Next She descends the steps of the stream beside the bridge to see whether He is concealed beneath it. Returning disappointed, She looks straight north along the road. There She suddenly sees Śyāmasundara standing near Rādhākuṇḍa. Her joy has no limit. She runs swiftly toward Him, calling, "Bravo, bravo! I surrender myself to such agility. How quickly You reached there!"

Speaking thus, She races on and within moments arrives with the speed of lightning. Yet the instant She reaches the place, Śyāmasundara is again nowhere to be seen.

ORIGINAL

रानी इधर-उधर देखती हैं। फिर श्यामसुन्दर राधाकुण्ड एवं कृष्णकुण्डके बीचके हिस्सेके पुलके नीचे खड़े दीखते हैं। रानी इस बार बैठ जाती हैं तथा रूठनेकी मुद्रामें होकर कहती हैं, “जा, अब मैं तुम्हें नहीं देखूँगी। तुम मुझे छोड़कर भागते चले जा रहे हो।”

रानी कुछ क्षण आँखें मूँदे रखकर फिर उधर ही देखने लग जाती हैं। इस बार श्यामसुन्दरकी बाँकी झाँकी, मनमोहिनी चितवन उन्हें बेखुद बना देती है। वे फिर दौड़ पड़ती हैं। कुण्डकी पूर्वी सीमाके पास पहुँचते-पहुँचते उनका पैर लड़खड़ा जाता है। रानी बिलकुल विक्षिप्तकी-सी दशामें गिरती हुई-सी धम्मसे जमीनपर गिर पड़ती हैं, वहीं घासपर मूर्छित हो जाती हैं। ललिता आदि दौड़ती हुई आती हैं। देखती हैं, रानीके मुँहसे उजला फेन निकल रहा है। देखते ही सबका चेहरा सूख जाता है। ललिता उन्हें चटसे गोदमें उठा लेती हैं, अपने अञ्चलसे मुख पोंछती हैं; पर रानीको होश नहीं आ रहा है।

वृन्दा इसी समय वहाँ इन्दुलेखाके कुञ्जसे निकलकर चली आती हैं। सबमें गम्भीरता छा जाती है। अब मधुमती विशाखाकी आज्ञासे मधुर कण्ठसे गाना प्रारम्भ करती है। संगीत प्रारम्भ होते ही रानीकी दशा सुधरती-सी दीखती है। अतः मधुमती और भी उत्कण्ठासे गाने लगती है:

ENGLISH TRANSLATION

Rādhā looks here and there. Then She sees Śyāmasundara standing beneath the bridge in the section between Rādhākuṇḍa and Kṛṣṇakuṇḍa. This time She sits down and says with a sulking air, “Go! Now I shall not look at You. You keep running away and leaving me behind.”

She closes Her eyes for a few moments, then looks there again. Now Śyāmasundara's graceful form and heart-stealing glance make Her lose all self-awareness. Once more She runs. As She nears the eastern boundary of the kuṇḍa, Her foot falters. In a state like utter madness, She collapses heavily upon the ground and lies unconscious on the grass. Lalitā and the others come running. Seeing white foam emerging from Rādhā's mouth, every face turns pale. Lalitā instantly lifts Her into her lap and wipes Her face with the end of her garment, but Rādhā does not regain consciousness.

At that very moment Vṛndā comes out from Indulekhā's bower. A grave silence falls over everyone. At Viśākhā's command, Madhumatī begins to sing in a sweet voice. As soon as the music starts, Rādhā's condition appears to improve, so Madhumatī sings with still greater yearning:

ORIGINAL

Braj Bhāṣā song

कोई एक साँवरी री इत है आवे जाई।

ज्यों-ज्यों नयनन देखिये री! त्यों-त्यों मन ललचाई।।

बदन मदन मन मोहना ऊपर घुँघर केस।

मोहन मूरति माधुरी निरखत मनोहर वेष।।

श्याम बरन हियो बेधियो लोचन मद छके नैन।

रूप ठगौरी मोहि ठगी री! बिन देखे नहिं चैन।।

धीर हरन बड़रो भुजा री! मद गजराजको चाल।

उर देखे मन जाहिं हो रहिये, वनमाल।।

समुझाये समुझत नहीं, रही छकि मन रह्यो खोय।

'रामराय' प्रभु सों रमी कहि भगवान सखि सोय।।

ENGLISH TRANSLATION

Some dark-complexioned maiden keeps passing to and fro this way.

The more my eyes behold her, friend, the more my heart longs for her.

Her face enchants even Madana's heart, and curling locks fall above it.

As I gaze upon that captivating form's sweetness, how lovely is her attire.

Her dark complexion has pierced my heart; her wine-brimming eyes are intoxicated.

The enchantress of beauty has cheated me, friend. Without seeing her I have no peace.

Her great arms steal away composure, and her gait is that of a proud elephant.

The heart that beholds her goes away with her. Such is that forest-garlanded one.

Though I counsel my mind, it will not understand. It remains spellbound and lost.

Rāmarāya says: "O friend, she who is united with that Lord is herself Bhagavān."

ORIGINAL

गीत समाप्त होते ही सज्ञाना छा जाता है। रानी आँखें खोल देती हैं। उनके चेहरेपर अतिशय गम्भीरता छायी हुई है। वे धीरे-धीरे उठ बैठती हैं। फिर ललिताका सहारा लेकर खड़ी हो जाती हैं। ललिता रानीको पकड़े हुए अपने कुञ्जकी ओर बढ़ने लगती हैं। राधाकुण्डकी पूर्वी सड़कको पार करके कुञ्जमें प्रवेश करती हैं तथा सीधे उत्तरकी ओर चलती हुई चम्पा-काननमें आ पहुँचती हैं। एक सखी कुछ इशारा करती है। रानी पूर्वकी ओर देखने लग जाती हैं। उधरसे वृन्दाकी एक दासी आती है। ललिताके कानमें कुछ धीरेसे कहती है। रानी उस दासीसे अतिशय प्रेमकी मुद्रामें इशारेसे ही कुछ पूछती हैं। दासी ललिताकी ओर इशारा कर देती है। ललिता कुछ क्षण कुछ सोचती हैं, फिर चम्पा-काननमें आगेकी ओर सबके साथ बढ़ने लग जाती हैं। फिर उत्तर एवं पश्चिमके कोनेकी ओर मुड़ जाती हैं। थोड़ी देरमें ही चम्पा-काननकी सीमाके पास पहुँच जाती हैं। फिर कुछ रुककर पुनः सीधे उत्तरकी ओर बढ़ने लगती हैं तथा शरीफेके वनमें प्रवेश करती हैं। कुछ देरके बाद एक सुन्दर शहतूतका वृक्ष दीखने लगता है। ललिता प्रश्नभरी दृष्टिसे, अभी कुछ देर पहले वृन्दाकी जो दासी आयी थी, उसकी ओर देखती हैं। दासी सिर हिलाती है। ललिता रानीकी बाँह पकड़े उसी वृक्षके पास जा पहुँचती हैं तथा खड़ी हो जाती हैं।

ENGLISH TRANSLATION

The moment the song ends, awareness returns. Rādhā opens Her eyes, Her face covered in profound gravity. Slowly She sits up, then rises with Lalitā's support. Holding Her, Lalitā begins toward her own bower. They cross the road east of Rādhākuṇḍa, enter the bower lands, proceed directly north, and reach the campā grove.

One sakhī gives a signal, and Rādhā looks east. A maidservant of Vṛndā approaches from that direction and whispers something into Lalitā's ear. With a gesture filled with affection, Rādhā asks the maidservant something without words. The maid points toward Lalitā. After thinking for a few moments, Lalitā leads everyone onward through the campā grove and then turns toward its northwestern corner. Before long they reach its boundary. Pausing briefly, they again proceed due north and enter the grove of custard-apple trees. After some time a beautiful mulberry tree comes into view. Lalitā looks questioningly at the maidservant who had just come from Vṛndā. The maid nods. Holding Rādhā's arm, Lalitā leads Her to that very tree, and there they stand.

CHAPTER 5

भावावेश लीला

The Līlā of Ecstatic Absorption

Source scan pages 55–66

ORIGINAL

Sanskrit invocation

॥ विजयेतां श्रीप्रियाप्रियतमौ ॥

ENGLISH TRANSLATION

May Śrī Priyā and Her Beloved be ever victorious.

ORIGINAL

श्रीललिताके कुञ्जमें राधारानी शहतूतके वृक्षकी छायामें विराजमान हैं। शहतूतका वृक्ष अत्यन्त हरा-भरा है, उसमें हरे-हरे एवं लाल-लाल शहतूतके फल लगे हैं। उसकी जड़के पास अत्यन्त सुन्दर नीले रंगकी मखमली कालीन बिछी हुई है। उसपर श्रीप्रिया बैठी हैं। कालीनपर मखमली मसनद है। श्रीप्रिया उसीपर आधी लेटी हुई अवस्थामें बैठी हैं। श्रीप्रियाका मुख पूर्वकी ओर है।

ENGLISH TRANSLATION

In Śrī Lalitā's bower, Rādhārānī is seated beneath the shade of a mulberry tree. The tree is exceedingly verdant and laden with green and red mulberries. Near its roots lies a beautiful blue velvet carpet. Śrī Priyā sits upon it, half reclining against a velvet bolster, Her face turned eastward.

ORIGINAL

मसनदके उत्तरकी तरफ एक सुन्दर छोटी तिपाई, जो मसनदसे थोड़ी कम ऊँची है, पड़ी है। उसी तिपाईपर रखकर चित्रारानी पश्चिम एवं दक्षिणकी ओर मुख किये हुए एक चित्र बना रही हैं। श्रीप्रिया उसी चित्रपर दृष्टि डाले हुए देख रही हैं।

ENGLISH TRANSLATION

To the north of the bolster stands a lovely small table, a little lower than the bolster itself. Facing southwest, Citrārānī has placed a sheet upon it and is making a painting. Śrī Priyā watches with Her gaze fixed upon the picture.

ORIGINAL

चित्रा कूँची लेकर बड़ी चतुराईसे, पर बहुत शीघ्रतासे चित्रमें रंग भर रही हैं। अब प्रिया मसनदपर अपने बायें हाथकी कोहनीको ऊँचा उठाकर तथा उसी हाथकी हथेलीपर अपने बायें कपोलको रखकर पैर फैलाकर लेट जाती हैं तथा बड़ी गम्भीरतासे चित्रको देखने लगती हैं। चित्राङ्कन प्रायः समाप्त हो चला है। श्रीप्रिया उसे देखकर अतिशय आश्चर्यमें भर जाती हैं, पर बिलकुल चुप हैं। चित्रा कभी कुछ जोरसे, कभी धीरे-धीरे हँसती जा रही हैं तथा चित्रमें रंग भरनेका काम शीघ्रतासे समाप्त कर रही हैं।

ENGLISH TRANSLATION

With brush in hand, Citrā colors the painting with great skill and speed. Priyā raises Her left elbow upon the bolster, rests Her left cheek in that palm, stretches out Her legs, and reclines while studying the picture gravely. The work is nearly complete. Śrī Priyā is astonished by what She sees but remains perfectly silent. Citrā, laughing now aloud and now softly, rapidly finishes applying the colors.

ORIGINAL

श्रीप्रियाके पीछे पीठके पास विशाखा बैठी हैं तथा ललिता मसनदसे कुछ दूरपर हटकर पूर्वकी ओर मुख किये रूपमञ्जरीसे बहुत गम्भीरतासे कुछ बातें कर रही हैं। ललिता कभी-कभी पीछे रानीकी ओर देखकर मुस्कुरा देती हैं तथा फिर मञ्जरीसे बातें करने लग जाती हैं। रूपमञ्जरी पैरोंके पास बैठी हुई धीरे-धीरे श्रीप्रियाके पैरोंको दबा रही हैं एवं मुस्कुरा-मुस्कुराकर उधर ही देखती जा रही हैं, जिधर चित्र बन रहा है।

ENGLISH TRANSLATION

Viśākhā sits behind Śrī Priyā near Her back. Some distance from the bolster, Lalitā faces east and speaks very earnestly with Rūpamañjarī. Now and then Lalitā glances back at the Queen and smiles, then resumes her conversation. Seated at Śrī Priyā's feet, Rūpamañjarī gently massages them while smiling repeatedly toward the place where the picture is being made.

ORIGINAL

चित्रमें रंग भरना समाप्त हो जाता है। चित्रके तीन भाग हैं। चित्र सुनहला है। चित्रवाले पन्नेके नीचेवाले आधे हिस्सेमें एक चित्र है तथा ऊपरवाले आधे हिस्सेको दो बराबर भागोंमें बाँटकर दो चित्र बनाये गये हैं। इस प्रकार एक ही पन्नेपर तीन चित्र हैं। पहले चित्रमें यह दिखलाया गया है कि यमुनाका सुन्दर किनारा है। घाटपर श्रीप्रिया गगरी भर रही हैं। कुछ दूरपर घाटके ऊपर श्रीश्यामसुन्दर कदम्बकी एक टहनीको झुकाकर उससे फूल तोड़ रहे हैं। श्रीप्रिया कनखीसे उन्हें देख रही हैं। दूसरे चित्रमें यह अङ्कित हुआ है कि उसी घाटके पास ही एक कुञ्ज है। उसके दरवाजेपर श्रीप्रिया भौंहें टेढ़ी किये हुए खड़ी हैं। आँखोंसे तो प्रेम झर रहा है, पर ऊपर-क्रोधका ढंग मुखपर बनाये हुए खड़ी हैं। श्रीश्यामसुन्दर प्रियाके चरणोंमें झुके हुए हाथोंसे उनके चरणोंको छू रहे हैं। तीसरे चित्रमें यह दिखलाया गया है कि श्रीप्रियाका बायाँ हाथ श्यामसुन्दरके दाहिने हाथमें है तथा एक-दूसरेको निर्निमेष नेत्रोंसे देख रहे हैं। श्रीप्रियाकी गगरी वहीं टेढ़ी होकर पड़ी है। उससे जल गिर रहा है तथा दूरपर श्यामसुन्दरकी गायें कुञ्जके वनमें दूर चली गयी हैं।

ENGLISH TRANSLATION

The coloring is finished. The golden-hued sheet contains three scenes: one occupies its lower half, while the upper half is divided equally between two more. In the first, a beautiful bank of the Yamunā is shown. Śrī Priyā fills Her water pot at the landing, while some distance above it Śrī Śyāmasundara bends a kadamba branch and plucks flowers. Śrī Priyā watches Him from the corner of Her eye. In the second, a bower stands beside that same landing. Śrī Priyā waits at its door with arched brows. Love pours from Her eyes, though Her face bears the appearance of anger. Bowed at Her feet, Śrī Śyāmasundara touches them with His hands. In the third, Śrī Priyā's left hand rests in Śyāmasundara's right, and They gaze at each other without blinking. Her pot lies tilted nearby, spilling water, while Śyāmasundara's cows have wandered far into the bower-forest.

ORIGINAL

Braj Bhāṣā verse, Rasakhāna

ऐरी आज काल्ह सब लोक लाज त्याग देइ,
सीखे हैं सबै विधि सनेह सरसाइबो।
यह 'रसखान' दिन दुई में बात फैलि जैहै,
कहाँ लौं सयानी चंद हाथन छिपाइबो॥

आज हों निहार्यौ बीर! निपट कलिंदी तीर,
दोउन को दोउन सों मुख मुसकाइबो।
दोउ परे पैयाँ, दोउ लेत हैं बलैयाँ,
उन्हें भूल गयो गैया इन्हें गागर उठाइबो॥

ENGLISH TRANSLATION

Friend, nowadays everyone has cast worldly shame aside
and learned every art of steeping love in sweetness.
Rasakhāna says: within a day or two this matter will spread abroad;
how long can a clever girl conceal the moon with her hands?

Today, friend, I saw them upon the very bank of the Kālindī,
each smiling face to face with the other.
Both fell at each other's feet; both cherished the other with fond gestures.
He forgot to gather His cows, and She to lift Her water pot.

ORIGINAL

राधारानी पदको पूरा पढ़कर चित्राके हाथसे चित्र छीन लेती हैं तथा प्यारसे चित्राके कपोलपर एक हलकी चपत लगाकर कहती हैं, "चण्ड कहींकी! तू यह कैसे जान गयी? मैंने तो तुझसे कुछ भी नहीं कहा था।"

चित्रा हँसती हुई कहती हैं, "मुझे तो कुछ मालूम ही नहीं है। मुझे तो आज ललिताने कहा था कि बहिन! मुझको तो आज समय नहीं मिलेगा, तू आज श्यामसुन्दरके आनेके पहले-पहले ऐसे तीन चित्र बना देना। मैं प्रातःकालसे ही इसमें लगी थी।"

ENGLISH TRANSLATION

After reading the entire verse, Rādhārānī snatches the painting from Citrā's hand, gives her cheek a light, affectionate tap, and says, "You audacious girl! How did you discover this? I told you nothing at all."

Laughing, Citrā replies, "I know nothing about it. Lalitā told me today, 'Sister, I shall have no time. Before Śyāmasundara arrives, make three pictures like these.' I have been working on them since morning."

ORIGINAL

रानी चित्रको लेकर बड़ी प्यारभरी दृष्टिसे उसे देखने लग जाती हैं। फिर आँखें मूँदकर कुछ सोचने लग जाती हैं। चित्रा इनके हाथसे चित्रको ले लेना चाहती हैं, इसलिये धीरेसे उसे खींचती हैं। पर रानीकी आँखें खुल जाती हैं। वे कहती हैं, "वाह, वाह! तू भी आजकल मुझे ठगना सीख गयी है।"

चित्रा हँसने लगती हैं तथा कहती हैं, "नहीं, देखनेके लिये ले रही थी कि इसमें कहीं कोई भूल तो नहीं रह गयी है।"

ENGLISH TRANSLATION

The Queen holds the painting and gazes upon it with eyes full of love. Then She closes Her eyes and begins to reflect. Citrā gently pulls at it, intending to take it back, but the Queen opens Her eyes and says, "Well, well! You too have learned to deceive Me these days."

Citrā laughs and answers, "No, I was only taking it to see whether any mistake had been left in it."

ORIGINAL

श्रीप्रिया चित्राकी बात सुनकर मुस्कुराती हुई पुनः आँखें बन्द कर लेती हैं। आँखें बन्द रखकर उसी पदको धीरे-धीरे गुनगुनाने लग जाती हैं। शहतूत-वृक्षके चारों ओर शरीफेका वन है। सुन्दर-सुन्दर, बड़े-बड़े शरीफेके वृक्ष लगे हैं, जिनमें पके हुए फल लटक रहे हैं। कई फलोंपर तोते बैठे हुए चोंचसे उनमें छेद बना रहे हैं। शरीफेकी सघन वृक्षावलीसे वह शहतूतका स्थान इतना घिरा हुआ है कि बाहरकी कोई भी चीज किसी तरफसे बिलकुल नहीं दीखती।

ENGLISH TRANSLATION

Smiling at Citrā's reply, Śrī Priyā again closes Her eyes and softly hums the same verse. A grove of custard-apple trees surrounds the mulberry. Their great, handsome branches bear ripe hanging fruit, and parrots perch upon many of them, piercing the fruit with their beaks. The dense grove encloses the place so completely that nothing outside can be seen in any direction.

ORIGINAL

श्रीप्रिया कुछ देर बाद आँखें खोलकर इधर-उधर देखती हैं। फिर दृष्टि ऊपर उठाकर नीले गगनकी ओर देखने लग जाती हैं। नीले गगनकी नीलिमाकी ओर ध्यान जाते ही श्रीप्रियाको आकाशमें श्यामसुन्दरकी छवि दीखने लग जाती है। श्रीप्रिया देखती हैं कि एक श्यामसुन्दर ठीक ऊपर खड़े हैं, फिर कुछ दूरपर दूसरे श्यामसुन्दर खड़े हैं, फिर तीसरे, फिर चौथे श्यामसुन्दर। समूचे गगनमें ही श्रीप्रियाको श्यामसुन्दर-ही-श्यामसुन्दर दीखने लग जाते हैं। श्रीप्रिया बोल उठती हैं, "एक, दो, पाँच, दस, बीस, पचास, हजार, लाख, करोड़, असंख्य! वाह, प्रियतम! वाह, तुम्हें अच्छी ठिठोली सूझी है।"

ENGLISH TRANSLATION

After a while Śrī Priyā opens Her eyes, looks about, and then raises Her gaze to the blue sky. The moment Her attention rests upon its blue expanse, Śyāmasundara's form appears there. One Śyāmasundara stands directly overhead, another a little farther away, then a third and a fourth, until the whole sky is filled with Śyāmasundaras alone. She exclaims, "One, two, five, ten, twenty, fifty, a thousand, a hundred thousand, ten million, beyond number! Bravo, Beloved! What a fine prank You have devised!"

ORIGINAL

प्रियाकी बात सुनकर सखियाँ प्रेममें डूब जाती हैं; पर ललिता श्रीप्रियाकी बात सुनकर उनके पास चली आती हैं तथा जोरसे हँसकर कहती हैं, "एक श्यामसुन्दरके कारण तो मैं तुम्हें सँभालते-सँभालते परेशान हो गयी हूँ; अब असंख्य श्यामसुन्दर आये हैं, तब तो मेरी क्या दशा होगी? पता नहीं!"

ललिताकी बात सुनकर रानी कुछ लज्जा-सी जाती हैं तथा कुछ सँभलकर, गम्भीर होकर चुपचाप बैठ जाती हैं। इसी समय दबे पाँव श्यामसुन्दर दक्षिणकी ओरसे आकर शरीफेके वृक्षकी ओटमें खड़े हो जाते हैं। श्रीप्रियाकी दृष्टि उनपर नहीं पड़ती, सखियाँ भी उन्हें नहीं देखतीं, पर श्यामसुन्दर सबको अच्छी तरह देख रहे हैं।

ENGLISH TRANSLATION

Hearing Priyā, the sakhīs drown in love. Lalitā comes close, laughs aloud, and says, "One Śyāmasundara already leaves me exhausted from trying to manage You. Now that countless Śyāmasundaras have arrived, who knows what will become of me!"

The Queen grows a little shy. Regaining some composure, She becomes grave and sits silently. Just then Śyāmasundara approaches softly from the south and hides behind a custard-apple tree. Neither Śrī Priyā nor the sakhīs see Him, but He sees them all clearly.

ORIGINAL

श्रीप्रिया ललितासे कहती हैं, "ललिते! तू जानती है, आसमान नीला क्यों है?"

ललिता मुस्कुराकर कहती हैं, "ना, मैं तो नहीं जानती।"

रानी कुछ चिढ़ी-सी होकर चुप हो जाती हैं; पर कुछ देर बाद कहती हैं, "देख, श्यामसुन्दर अभीतक नहीं आये। कल मुझे पतंग उड़ाना सिखा देनेके लिये कह गये थे। आसमानको देखकर श्यामसुन्दरकी बात याद आ गयी।"

ENGLISH TRANSLATION

Śrī Priyā asks Lalitā, "Lalite, do you know why the sky is blue?"

Lalitā smiles. "No, I do not know."

The Queen grows a little vexed and falls silent, but after a while says, "Look, Śyāmasundara has still not come. Yesterday He promised to teach Me how to fly a kite. Seeing the sky reminded Me of Him."

ORIGINAL

रानीकी बात सुनकर ललिता मुस्कुराकर फिर गम्भीर बन जाती हैं। श्यामसुन्दर धीरेसे अपनी चादरको हवामें उड़ा देते हैं। पीताम्बर एक बार हवामें उड़कर फिर शरीफेकी डालियोंपर गिर जाता है। सखियोंकी दृष्टि उधर ही चली जाती है; पर प्रिया उसे नहीं देख पातीं।

श्रीप्रिया कुछ देर बाद कहती हैं, "री! वह चित्र कहाँ गया?" चित्र श्रीप्रियाके हाथमें ही था; पर श्रीप्रियाका प्रेमपूर्ण मस्तिष्क अब ठीक-ठीक काम नहीं कर रहा है, इसलिये अपने हाथमें रखे हुए चित्रको भी श्रीप्रिया भूल जाती हैं। ललिता बड़ी तेजीसे कहती हैं, "वह देखो, चित्राने उस शरीफेके वृक्षमें उसे छिपा दिया है।" उसी समय ललिता उसी वृक्षकी ओर इशारा कर देती हैं जिसके पीछे श्यामसुन्दर खड़े थे।

ENGLISH TRANSLATION

Lalitā smiles at the Queen's words, then becomes serious again. Śyāmasundara gently casts His shawl into the air. The yellow cloth flies once upon the wind and falls across the custard-apple branches. The sakhīs look that way, but Priyā does not see it.

After a while Śrī Priyā asks, "Girl, where did that picture go?" It is still in Her own hand, but Her love-filled mind no longer works ordinarily, and She forgets the very picture She holds. Lalitā quickly replies, "Look there! Citrā has hidden it in that custard-apple tree," pointing toward the tree behind which Śyāmasundara stands.

ORIGINAL

श्रीप्रिया उधर ताकने लग जाती हैं; पर उनकी आँखोंमें तो श्यामसुन्दर भर गये थे। प्रत्येक वृक्षकी जगह, प्रत्येक लताकी जगह श्यामसुन्दर-ही-श्यामसुन्दर दीख रहे थे। अतः प्रिया सोचती हैं कि मेरा मस्तिष्क तो ठीक है नहीं; मैं श्यामसुन्दरके सिवा कुछ भी नहीं देख पा रही हूँ। चित्रकी बात याद आ गयी थी, पूछ बैठी; पर अब इन सबके कहनेके अनुसार उधर नहीं जाती हूँ तो ये सब हँसेंगी। अतः श्रीप्रिया यन्त्रकी तरह, आधी बावली-सी होकर, जिधर ललिताने इशारा किया था, उधर ही बढ़ने लग जाती हैं। चित्र उनके हाथसे मसनदपर गिर जाता है।

ENGLISH TRANSLATION

Śrī Priyā looks that way, but Her eyes are filled with Śyāmasundara. In place of every tree and every vine, She sees only Him. She thinks, "My mind is not right; I can see nothing but Śyāmasundara. The picture came to mind and I asked about it. Yet if I do not go where they tell Me, they will all laugh." Half mechanically and half like one beside Herself, She moves toward Lalitā's gesture. The painting falls from Her hand upon the bolster.

ORIGINAL

श्रीप्रिया आगे दक्षिणकी ओर बढ़कर ठिठकी-सी होकर खड़ी रह जाती हैं और सोचती हैं कि मुझे क्या हो गया है? श्यामसुन्दर तो एक हैं, फिर इतने श्यामसुन्दर कहाँसे आ गये? मेरे प्रियतम मुझसे कोई खेल खेल रहे हैं या मेरी आँखोंमें ही कोई दोष हो गया है? यही सोचती हुई श्रीप्रिया इधर-उधर देखने लगती हैं, पर दाहिने-बायें-सामने उन्हें बिलकुल प्रियतम श्यामसुन्दर दीख पड़ते हैं। रानी सोचती हैं, "अच्छा, एक काम करूँ। मैं जाँच लेती हूँ, बात क्या है।"

जाँच करनेकी दृष्टिसे श्रीप्रिया एक प्यारभरी हलकी चपत बायीं ओर लगाने चलती हैं, पर हाथ आकाशमें तैरने लग जाता है। श्रीप्रिया कुछ गम्भीर-सी हो जाती हैं। वे निश्चय करती हैं कि ना, मेरी आँखोंमें ही कोई दोष है। यदि श्यामसुन्दर होते तो उनसे मेरा हाथ टकरा जाता।

ENGLISH TRANSLATION

Moving south, Śrī Priyā stops suddenly and wonders, "What has happened to Me? There is only one Śyāmasundara. Where have so many come from? Is My Beloved playing some game with Me, or has something gone wrong with My eyes?" She looks right, left, and ahead, but sees Her Beloved everywhere. "Very well," She thinks, "I shall test what is happening."

To make the test, She reaches leftward to give a light, loving tap, but Her hand passes through empty air. Growing grave, She decides, "No, the fault lies in My eyes. If Śyāmasundara were there, My hand would have touched Him."

ORIGINAL

ऐसा सोचकर प्रिया निःशङ्क दक्षिणकी तरफ उसी झाड़ीकी ओर बढ़ने लगती हैं, जिसके पीछे श्यामसुन्दर छिपे हुए हैं। श्रीप्रिया जैसे आगे बढ़ती हैं, वैसे ही उन्हें दाहिने-बायें, आगे-पीछे सैकड़ों-हजारों श्यामसुन्दर चलते दीखते हैं। अब प्रियाजीने मनमें यह निश्चय कर लिया है कि मेरी आँखोंमें यह कोई रोग है। इसलिये वे उस झाड़ीमें छिपे हुए श्यामसुन्दरको भी, असली श्यामसुन्दरको भी नकली समझती हैं।

श्रीप्रिया उस झाड़ीके पास पहुँच जाती हैं। श्रीश्यामसुन्दर श्रीप्रियाकी यह प्रेम-दशा देखकर स्वयं प्रेममें विभोर होने लग जाते हैं तथा इनका सारा शरीर काँपने लगता है। वे चाहते हैं कि श्रीप्रियाको हृदयसे लगा लें, पर हाथ-पैर सब-के-सब बिलकुल जड़-से हो जाते हैं। अतः श्रीप्रियाके बिलकुल पास आ जानेपर भी असली श्यामसुन्दर चुपचाप खड़े हैं।

ENGLISH TRANSLATION

Thinking thus, Priyā fearlessly approaches the shrub behind which Śyāmasundara is hidden. As She advances, She sees hundreds and thousands of Śyāmasundaras walking to Her right and left, before and behind. Convinced that Her eyes are diseased, She takes even the real Śyāmasundara concealed there to be another illusion.

When She reaches the shrub, Śrī Śyāmasundara beholds Her state of love and becomes overwhelmed by love Himself. His whole body trembles. He longs to clasp Her to His heart, but every limb grows inert. Though Śrī Priyā has come very near, the true Śyāmasundara remains motionless and silent.

ORIGINAL

श्रीश्यामसुन्दरने पीताम्बरको शरीफेकी एक टहनीपर रख दिया था। इसलिये कमरसे ऊपरका हिस्सा बिलकुल खुला है। सिरपर मोर-मुकुट है और हाथमें मुरली है। अब प्रियाकी दृष्टि उनपर पड़ती है। अबतक श्रीप्रियाके मस्तिष्कमें बिलकुल वही यमुना-तटवाली झाँकी भरी हुई थी। दुपट्टा ओढ़े हुए लाखों श्यामसुन्दर उन्हें दीख रहे थे। पर जब वस्तुतः श्यामसुन्दरके पास पहुँची तो देखती हैं कि एक श्यामसुन्दरके कन्धेपर दुपट्टा नहीं है। दुपट्टा शरीफेकी टहनियोंपर है तथा श्यामसुन्दरकी छवि जड़-पुतलीकी तरह दीख पड़ रही है।

ENGLISH TRANSLATION

Śrī Śyāmasundara had laid His yellow shawl upon a custard-apple branch, leaving His body bare above the waist. A peacock-feather crown rests upon His head and a flute in His hand. Priyā now sees Him. Until this moment Her mind had been filled with the scene at the Yamunā, and She saw countless Śyāmasundaras draped in shawls. Here, however, one Śyāmasundara has no shawl upon His shoulder; it hangs among the branches, while He appears as still as a wooden image.

ORIGINAL

श्रीप्रिया सोचती हैं, "यह क्या बात है? अबतक तो मेरी आँखें प्रियतमके कन्धेपर दुपट्टा देख रही थीं, पर यह सामनेकी छवि तो कुछ और ही निराली है। आह! मेरे श्यामसुन्दर कितने सुन्दर हैं! आह! दुपट्टेसे रहित श्रीअङ्गको मैं आज ही देख पायी हूँ।" प्रिया सोचती हैं कि यह भी मेरी आँखोंका ही दोष है, पर चित्त अवश उस छविपर जाकर टिक गया है। प्रिया फिर सोचती हैं कि इस दुपट्टेके भीतर ही शायद वह चित्र चित्राने छिपाया होगा। यही दुपट्टा है तथा मैं जो श्यामसुन्दरको देख रही हूँ, वह तो मेरी आँखोंका ही दोष है। पहलेकी तरह ही एक दूसरी झाँकी अब मुझे दीख रही है। यह सब सोचकर श्रीप्रिया दुपट्टेकी ओर झुकती हैं।

ENGLISH TRANSLATION

Śrī Priyā thinks, "What is this? Until now My eyes saw a shawl upon My Beloved's shoulder, but this form before Me is uniquely different. Ah, how beautiful My Śyāmasundara is! Only today have I beheld His divine body without its shawl." She attributes this too to Her faulty vision, yet Her helpless heart fixes itself upon that form. Then She reasons that Citrā must have hidden the painting inside the shawl. The shawl is real, while the Śyāmasundara She sees is only another defect of Her eyes. Thinking so, She bends toward the cloth.

ORIGINAL

दुपट्टेका एक छोर श्यामसुन्दरके हाथमें था और दूसरा शरीफेकी टहनीपर। श्रीप्रिया उसी छोरके पास हाथ बढ़ाती हैं, जिस छोरके पास श्यामसुन्दरका हाथ था। दोनोंके हाथ मिल जाते हैं। मिलते ही दोनों प्रेममें इतने अधीर हो जाते हैं कि एक-दूसरेकी तरफ गिरकर मूर्च्छित होने लग जाते हैं। सखियाँ दौड़ पड़ती हैं; पर सखियोंके पहुँचनेके पहले ही एक-दूसरेके हृदयसे लगकर मूर्च्छित हो जाते हैं। भाग्यसे शरीफेकी एक मोटी डाल पीछे आ जाती है, नहीं तो दोनों धड़से जमीनपर ही गिर पड़ते। सखियाँ जल्दीसे पहुँचकर दोनोंको पकड़ लेती हैं।

ENGLISH TRANSLATION

One end of the shawl is in Śyāmasundara's hand and the other upon the branch. Śrī Priyā reaches toward the end beside His hand, and Their hands meet. At that touch both become so overwhelmed with love that They fall toward one another and lose consciousness. The sakhīs rush forward, but before they arrive the Two have fainted against each other's hearts. By good fortune a thick custard-apple branch supports Them from behind; otherwise They would have fallen heavily to the ground. The sakhīs quickly reach Them and hold Them up.

ORIGINAL

ललिता श्यामसुन्दरको पकड़कर कुछ धीरेसे हिलाती हैं। श्यामसुन्दर आँखें खोल देते हैं तथा कमरसे रूमाल निकालकर श्रीप्रियाके मुखपर पंखा झलने लग जाते हैं; पर श्रीप्रियाकी मूर्च्छा अत्यन्त गहरी हो गयी है, इसलिये उनकी आँखें नहीं खुलतीं। श्यामसुन्दर श्रीप्रियाको उठाकर गोदमें लेकर धीरेसे बैठ जाते हैं। सखियाँ चारों ओरसे अतिशय उत्कण्ठाके साथ देख रही हैं कि आज तो दोनोंका ही ढङ्ग विचित्र है। श्यामसुन्दरका मुख पश्चिमकी ओर है। श्रीप्रिया उनकी गोदमें सिर रखकर गहरी मूर्च्छामें पड़ी हुई हैं। श्यामसुन्दर एकटक श्रीप्रियाके मुखकी ओर देख रहे हैं। कुछ देर बीतनेपर भी जब प्रियाकी आँखें नहीं खुलतीं तो श्यामसुन्दर कुछ भर्रायी हुई आवाजमें ललितासे धीरेसे पूछते हैं, "मेरे आनेके पहले क्या बातें हो रही थीं?"

ENGLISH TRANSLATION

Lalitā takes hold of Śyāmasundara and gently shakes Him. He opens His eyes, draws a handkerchief from His waist, and begins fanning Śrī Priyā's face. Her swoon is so deep, however, that Her eyes do not open. Śyāmasundara lifts Her into His lap and slowly sits. The sakhīs watch from all sides with intense eagerness, for today the condition of both is extraordinary. Facing west, Śyāmasundara gazes steadily at Śrī Priyā's face as She lies deeply unconscious with Her head in His lap. When Her eyes still do not open, He softly asks Lalitā in a choked voice, "What were you discussing before I arrived?"

ORIGINAL

श्यामसुन्दरके सामने ललिता वही चित्र, जो शहतूतकी जड़के पास पड़ा था, मँगवाकर रख देती हैं तथा शुरूसे अन्ततक किस प्रकार चित्र बताया जा रहा था, सभी घटना श्यामसुन्दरको सुना देती हैं। श्रीश्यामसुन्दर चित्र देखते हैं। देखकर वे भी पुनः काँप जाते हैं। उनका शरीर भी पसीनेसे भर जाता है। ललिता उनके हाथसे चित्र ले लेती हैं।

ENGLISH TRANSLATION

Lalitā has the painting brought from beside the mulberry roots and places it before Śyāmasundara. From beginning to end she tells Him everything about how the picture had been presented. He looks at it and again begins to tremble, His body covered with perspiration. Lalitā takes the painting from His hand.

ORIGINAL

इधर मूर्च्छाकी अवस्थामें श्रीप्रिया ऐसा अनुभव कर रही हैं कि मैं यमुना-तटपर हूँ। श्यामसुन्दर बाँसुरी बजाते हुए, आगे गायोंको लिये उधर ही आ रहे हैं। मैं उन्हें एकटक देख रही हूँ। वे भी मुझे देख रहे हैं। मैं अकेली हूँ, प्रियतम श्यामसुन्दर भी अकेले हैं। मुझे देखकर वे मेरे पास दौड़ आये हैं तथा मुझे हृदयसे लगाकर प्यार करने लग गये हैं। फिर हम दोनों निकुञ्जकी ओर चल रहे हैं। निकुञ्जमें पहुँचकर मैं पुष्पशय्यापर प्यारे श्यामसुन्दरकी गोदमें लेटी हुई हूँ। श्यामसुन्दर अपने हाथोंसे मेरी अलकावलीको सहलाते हुए मुझसे बातें कर रहे हैं। मैं जवाब दे रही हूँ। श्रीप्रिया इसी भावावेशकी दशामें अब जोरसे बोल उठती हैं, "क्यों, तुम्हें स्वीकार है?"

ENGLISH TRANSLATION

Within Her swoon, Śrī Priyā experiences Herself upon the Yamunā's bank. Śyāmasundara approaches playing His flute and leading the cows. They gaze at one another. Each is alone. Seeing Her, He runs to Her, clasps Her to His heart, and caresses Her. Together They walk to the bower, where She reclines upon a flower bed in His lap while He strokes Her curls and speaks with Her. She answers Him. In this absorption Śrī Priyā suddenly says aloud, "Well, do You accept?"

ORIGINAL

सखियाँ श्रीप्रियाकी यह बात सुनकर कुछ भी नहीं समझ पातीं; पर श्यामसुन्दर समझ जाते हैं। श्यामसुन्दरको उस दिनकी श्रीप्रियाकी प्यारभरी चर्चा याद हो जाती है। वे प्रेममें डूब जाते हैं, पर तुरन्त ही सँभलकर श्रीप्रियाको बड़ी चतुराईसे धीरेसे जवाब देना शुरु करते हैं। श्रीप्रिया मूर्च्छाकी अवस्थामें यही अनुभव कर रही हैं कि मैं यमुनाके तटके निकुञ्जमें ही पुष्पशय्यापर पड़ी हुई प्यारे श्यामसुन्दरसे बातें कर रही हूँ। श्रीप्रियाने भावावेशमें जब यह कहा कि क्यों, स्वीकार है, तो कुछ देरतक तो वहाँ सन्नाटा छाया रहा। प्रिया फिर बोलीं, "क्यों, बोलते नहीं, स्वीकार है या नहीं?"

ENGLISH TRANSLATION

The sakhīs cannot understand Her words, but Śyāmasundara does. He remembers the loving conversation He had with Her that day and is swept into love. Quickly composing Himself, He begins to answer Her softly and skillfully. In Her swoon Śrī Priyā believes She is speaking with Him upon a flower bed in the bower beside the Yamunā. After She asks whether He accepts, silence lingers. Priyā asks again, "Why do You not speak? Do You accept or not?"

ORIGINAL

श्यामसुन्दर कहते हैं, "प्रिये! स्वीकार करना हमारे वशकी बात नहीं है।"

श्रीराधारानी, "फिर इस तरह कैसे निभेगा?"

श्यामसुन्दर, "प्रिये! मैं क्या करूँ? मेरे हृदयको तुमने चारों ओरसे छा लिया है। अब तो यह असम्भव है।"

रानी, "मेरे जीवनधन! फिर मैं तो अभागिनी तुम्हारे सुखमें काँटा बननेके लिये ही आयी।"

श्यामसुन्दर, "प्रिये! तुम्हें देखकर मेरा हृदय शीतल हो जाता है। तू यदि अपनेको काँटा मानती है तो फिर जगतमें भला कौन-सी वस्तु हमें सुख देगी?"

रानी, "मेरे प्राणेश्वर! मैं आपके हृदयको देखती हूँ, पर..."

श्यामसुन्दर, "हाँ, बोल, फिर इस प्रकारकी प्रार्थना करके मुझे क्यों रुलाती हो?"

रानी, "इसीलिये नाथ! कि मैं मेरे कारणसे होनेवाली आपकी बदनामी नहीं सह सकती।"

श्यामसुन्दर, "पर प्रिये! यह बदनामी तेरे-हमारे जीवनकी धाराको थोड़े पलट सकेगी?"

ENGLISH TRANSLATION

Śyāmasundara says, "Beloved, acceptance is no longer within My power."

Śrī Rādhārānī asks, "Then how can matters continue like this?"

Śyāmasundara replies, "Beloved, what can I do? You have surrounded My heart on every side. That is now impossible."

The Queen says, "Treasure of My life, then I, unfortunate as I am, have come only to be a thorn in Your happiness."

Śyāmasundara answers, "Beloved, seeing You cools My heart. If You regard Yourself as a thorn, what in the world could ever give Me happiness?"

The Queen says, "Lord of My life, I see Your heart, but..."

Śyāmasundara urges, "Yes, speak. Why do You make Me weep by offering such a plea?"

The Queen replies, "Because, my Lord, I cannot bear the disgrace that comes upon You because of Me."

Śyāmasundara says, "But Beloved, can that disgrace alter the current of Our lives?"

ORIGINAL

रानी, "देखो, मेरे नाथ! हठ नहीं करो; सचमुच कहती हूँ, तुम मुझे भूल जाओ। मेरे कारण ही तुम बदनाम हो रहे हो। मैं तुम्हारे विरहमें जल-जलकर मर जाऊँगी, पर तुमसे मिलकर तुम्हें बदनाम नहीं करूँगी। मेरे जीवनाधार! तुम्हें न देखकर मेरा हृदय फटने लगता है; पर मैं इसे रोककर रखूँगी, अनन्त कालतक इसे तुम्हारे लिये बचाकर रखे रहूँगी।"

श्यामसुन्दर, "पर प्रिये! तुम्हें देखे बिना मैं जीवित नहीं रह सकता।"

ENGLISH TRANSLATION

The Queen says, "Look, my Lord, do not be stubborn. I truly tell You: forget Me. Because of Me alone You are being defamed. I shall burn and die in separation from You, but I shall not meet You and bring You disgrace. Support of My life, when I do not see You My heart begins to burst, yet I shall restrain it and preserve it for You through eternity."

Śyāmasundara replies, "But Beloved, I cannot live without seeing You."

ORIGINAL

रानी श्यामसुन्दरकी बात सुनकर बिलकुल गम्भीर हो जाती हैं, रोने लग जाती हैं। श्यामसुन्दर रूमालसे आँखें पोंछकर कहते हैं, "प्रिये! तू मेरी चिन्ता बिलकुल मत कर। मैं अपनी अवस्था सब ठीक कर लूँगा। प्रिये! सब सह लूँगा; पर तुम्हें भूल जाऊँ, तुमसे मिलने न आऊँ, यह तो असम्भव, असम्भव है।"

रानी, "फिर कम-से-कम एक काम करो। कम-से-कम बहिन चन्द्रावलीको मेरे लिये कष्ट न पहुँचाओ।"

श्यामसुन्दर, "मेरी प्राणेश्वरी! मैं तुम्हारे हृदयको जानता हूँ। मेरे हृदयकी रानी! तू दिन-रात मेरे सुखकी ही चिन्ता करती है। चन्द्रावली ही नहीं, चन्द्रावलीके सहित मैं अपने-आपको तुम्हारे हाथ बेच चुका हूँ। तू जैसा करेगी, वैसा ही कर लूँगा।"

ENGLISH TRANSLATION

The Queen becomes utterly grave and begins to weep. Wiping His eyes with a handkerchief, Śyāmasundara says, "Beloved, do not worry about Me. I shall set My condition right. I can endure everything, but to forget You and cease coming to meet You is impossible, utterly impossible."

The Queen says, "Then at least do one thing: do not cause sister Candrāvalī pain for My sake."

Śyāmasundara replies, "Queen of My life, I know Your heart. Queen of My own heart, day and night You think only of My happiness. Not Candrāvalī alone: together with Candrāvalī I have sold My very self into Your hands. Whatever You decide, I shall do."

ORIGINAL

श्रीप्रियाके मुखपर प्रसन्नता छा जाती है। श्रीप्रिया कहती हैं, "एक बात और है। आज रूप मन्दिरानीकी दशा देख आयी है। मैया बहुत जोरसे रो रही थीं कि हाय! मेरे लल्लाको क्या हो गया है? न खाता है, न पीता है। आँखें भर-भर आती हैं। चित्त उड़ा हुआ-सा रहता है। मैं पूछती हूँ कुछ, जवाब देता है कुछ..."

श्यामसुन्दर श्रीप्रियाकी बात सुनकर मुस्कुराने लगते हैं तथा फिर चतुराईसे कहते हैं, "तो फिर?"

रानी, "मेरे प्राणेश्वर! रूपकी बात सुनकर मैं समझ गयी हूँ कि तेरी यह दशा मेरे कारण ही हुई है। इसलिये कहती हूँ कि इस प्रकार खाना-पीना छोड़ दोगे तो मुझे कितना कष्ट होगा! ऐसा मत करो, नाथ!"

ENGLISH TRANSLATION

Joy spreads across Śrī Priyā's face. She says, "There is one more matter. Today Rūpa went and saw Mother Queen's condition. Mother was weeping bitterly: 'Alas, what has happened to my darling? He neither eats nor drinks. His eyes repeatedly fill with tears. His mind seems to wander. I ask one thing and He answers another...'"

Śyāmasundara smiles and artfully asks, "And then?"

The Queen says, "Lord of My life, from Rūpa's words I understood that this condition of Yours is because of Me. How much pain You will cause Me if You give up eating and drinking in this way! Do not do it, my Lord."

ORIGINAL

श्यामसुन्दर, "प्रिये! क्या मैं जानकर ऐसा करता हूँ? देख, मैं खान बैठता हूँ, उस समय थाली मुझे आँखोंसे नहीं दीखती। थालीकी जगह तू दीखती है। सोनेके लिये मैया मुझे कोमल शय्यापर प्यारसे लिटा देती है, पर मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि तू रो-रोकर, मेरा नाम ले-लेकर मुझे बुला रही है। तेरी मधुर आवाज सुनते ही मेरी आँखोंमें आँसू भर आते हैं। मैं पागलकी तरह हो जाता हूँ। तू ही बता, मैं आखिर करूँ तो क्या करूँ?"

रानी, "मेरे नाथ! पर तुम्हारे नहीं खानेसे मैया भी नहीं खातीं। ना, ना, कुछ धीरज धरकर खा लिया करो।"

श्यामसुन्दर, "अच्छा, मैं तो, मान लो, आजसे दृढ़ कर लूँगा कि तुम्हारी बात मान लूँ, पर तू क्या करती है, तू भी सोच।"

ENGLISH TRANSLATION

Śyāmasundara says, "Beloved, do I do this knowingly? When I sit to eat, I cannot see the plate before My eyes; I see You in its place. Mother lovingly lays Me upon a soft bed to sleep, but it seems that You are weeping, calling My name again and again, and summoning Me. The moment I hear Your sweet voice, tears fill My eyes and I become like a madman. Tell Me, what am I to do?"

The Queen replies, "My Lord, when You do not eat, Mother does not eat either. No, no. Take courage and eat something."

Śyāmasundara says, "Very well, suppose I resolve from today to obey You. But consider what You Yourself do."

ORIGINAL

रानी कुछ शर्मायी-सी होकर कहती हैं, "क्यों, मैं क्या करती हूँ?"

श्यामसुन्दर, "वाह, तू समझती है कि मुझे कुछ मालूम ही नहीं है। ललिताने आज तेरा दशा मुझे बता दी है। उसने जो-जो तुम्हारी दशाका वर्णन किया, उसे सुनकर मैं चकित रह गया। ललिता बोली कि प्यारे श्यामसुन्दर! तुमसे मिलकर मेरी सखी राधाकी क्या दशा हुई है, सुनो! उसके आँखोंसे निरन्तर आँसुओंकी धारा बहती रहती है। यह ज्ञान खो बैठी है कि मैं कहाँ हूँ, किस जगह हूँ। बड़ी मुश्किलसे मैं धीरज बँधाकर बिछौनेसे उठाती हूँ तो लड़खड़ाकर गिर पड़ती है। फिर उठाती हूँ, मुश्किलसे उठकर आगे बढ़ती है। जाना चाहिये स्नान करने, जाती है रसोईघरकी ओर। पकड़कर लाती हूँ। दोपहरके समय ही दीपक जलाकर कहने लगती है कि साँझ हो गयी। तू मुझे नये कपड़े पहना दे। मैं प्यारे श्यामसुन्दरसे मिलने जाऊँगी। तनिक भी हमलोग हटें कि यह धूपमें इधर-उधर दौड़ने लगती है। दिन-रात हमलोगोंको पहरा रखना पड़ता है कि कहीं दीवालसे टकरा न जाये, यमुनामें जाकर कूद न पड़े। मैं समझाती हूँ, पर एक नहीं सुनती। लोकलज्जाका भय दिखलाती हूँ तो खिलखिलाकर हँस देती है और कहती है कि सबको गठरी बाँधकर यमुनामें डुबा चुकी हूँ। लोक-वेद सब बह गये। अब तो प्यारे श्यामसुन्दरके साथ जो होना होगा, हो जायेगा।"

ENGLISH TRANSLATION

The Queen grows bashful. "Why, what do I do?"

Śyāmasundara answers, "Indeed! You think I know nothing. Today Lalitā told Me of Your condition. I was astonished by everything she described. She said, 'Beloved Śyāmasundara, hear what has become of my friend Rādhā since meeting You. Streams of tears flow constantly from Her eyes. She has lost awareness of where She is. With great difficulty I console Her and raise Her from bed, only for Her to stagger and fall. I lift Her again; She barely rises and walks. She ought to go bathe but walks toward the kitchen, and I must bring Her back. At midday She lights a lamp and says evening has come: Dress Me in fresh clothes; I shall go meet beloved Śyāmasundara. If we withdraw for even a moment, She runs about beneath the burning sun. Day and night we must guard Her lest She strike a wall or leap into the Yamunā. She heeds none of My counsel. When I warn Her about worldly shame, She laughs and says, I have tied it all into a bundle and drowned it in the Yamunā. World and scripture have been swept away. Now whatever is to happen with beloved Śyāmasundara may happen.'"

ORIGINAL

श्यामसुन्दरकी बात सुनकर रानी कुछ शर्मायी-सी जाती हैं। रानी कुछ बोलना चाहती हैं, पर श्यामसुन्दर चाहते हैं कि आगेकी बात मेरी प्यारी राधा किसीको न बता दें। बात यह हुई थी कि ठीक इसी तरहका प्रश्नोत्तर निकुञ्जमें बैठकर श्रीप्रिया-प्रियतमके बीचमें कुछ दिन पहले हुआ था। यमुना-तटपर मिलन होनेका चित्र देखकर श्रीप्रिया उसी भावसे आविष्ट हो गयी थीं तथा निकुञ्जमें श्यामसुन्दरके साथ उसी प्रेममयी लीलाको अनुभव कर रही थीं। उन्हें यह बिलकुल पता नहीं था कि मैं भावावेशमें ललिताके कुञ्जमें शरीफेके पेड़के नीचे प्यारेकी गोदमें लेटी हुई बक रही हूँ। श्यामसुन्दरको सब बातें याद थीं ही, अतः प्रियाके उत्तरमें उस दिन उन्होंने जैसे-जैसे जो कहा था, आज भी वे उसे चतुराईसे कहते चले गये। पर जब उन्होंने देखा कि यदि मैं रोकूँगा नहीं तो आगेकी बात भी यह कह देंगी, इसलिये श्रीप्रियाके भावावेशको तोड़नेके लिये श्यामसुन्दर जोरसे कह उठते हैं, "देख! सामने ललिता है, इससे पूछ ले, इसने वे बातें मुझसे कही हैं या नहीं।"

ENGLISH TRANSLATION

At Śyāmasundara's words the Queen grows shy and wishes to answer, but He does not want His beloved Rādhā to reveal what follows. A few days earlier, precisely this exchange had taken place between the Divine Couple in a bower. Seeing the painting of Their meeting beside the Yamunā, Śrī Priyā had become absorbed in that same mood and was reliving that loving līlā with Śyāmasundara. She had no awareness that, in ecstatic absorption, She was lying in Her Beloved's lap beneath a custard-apple tree in Lalitā's bower and speaking aloud. Śyāmasundara remembered the whole earlier conversation and cleverly repeated His former answers. Seeing that She would reveal the rest unless stopped, He breaks Her absorption by exclaiming, "Look! Lalitā is standing before You. Ask her whether she told Me those things."

ORIGINAL

इस बार यह सुनकर रानी चौंक पड़ती हैं। वह तो समझ रही थीं कि मैं अकेले प्यारे श्यामसुन्दरके साथ हूँ; ललिताके सामने होनेकी बात सुनकर वे घबराकर आँखें खोल देती हैं। आँखें खोलते ही देखती हैं कि ललिता मुस्कुरा रही हैं। प्यारे श्यामसुन्दर भी मुस्कुरा रहे हैं। रानी कुछ देरतक तो समझ ही नहीं पातीं कि क्या बात है; पर धीरे-धीरे सब बातें याद आनेसे वे समझ जाती हैं कि मैं भावावेशमें उस दिनके मिलनकी बात कह गयी हूँ। ललिताने रानीसे सब बातें पूछी थीं, पर रानीने प्रेमसे टाल दिया था कि आज नहीं बताऊँगी, कल बता दूँगी। पर ललिताने अतिशय उत्कण्ठाके कारण रानीके हृदयकी बात जान लेनी चाही। इसीलिये उसने यह चित्र बनवाया था। ललिताका उपाय सफल हो गया था; इसलिये वह जोरसे हँस रही थी। रानी जल्दीसे श्यामसुन्दरकी गोदसे उठ जाती हैं। श्यामसुन्दर भी हँसते हुए उठ जाते हैं।

ENGLISH TRANSLATION

The Queen starts at this. She had believed Herself alone with beloved Śyāmasundara. Hearing that Lalitā stands before Her, She opens Her eyes in alarm and sees Lalitā smiling, with Śyāmasundara smiling too. For a while She cannot understand; then memory returns and She realizes that, absorbed in divine feeling, She has spoken of that earlier meeting. Lalitā had questioned Her about it, but the Queen lovingly deferred: "Not today; I shall tell you tomorrow." In intense eagerness to know Her heart, Lalitā therefore commissioned the painting. Her stratagem has succeeded, and she laughs aloud. The Queen quickly rises from Śyāmasundara's lap, and He rises laughing as well.

ORIGINAL

रानीको शर्माती देखकर बात बदलनेके लिये श्यामसुन्दर कहते हैं, "प्रिये! पतंग दौड़ाना सिखानेकी बात मैंने कल कही थी। चल, मैं तुझे सिखा दूँ।" फिर श्यामसुन्दर श्रीप्रियाका हाथ पकड़े हुए वहीं शहतूतके पेड़की जड़के पास पहुँचकर कालीनपर प्रियाके साथ बैठ जाते हैं। सखियाँ सेवामें लग जाती हैं। मधुमती वीणापर गाने लग जाती है:

ENGLISH TRANSLATION

Seeing the Queen's embarrassment, Śyāmasundara changes the subject. "Beloved, yesterday I promised to teach You how to fly a kite. Come, I shall teach You." Holding Śrī Priyā's hand, He returns with Her to the carpet at the roots of the mulberry tree and sits beside Her. The sakhīs begin their service, and Madhumatī sings to the accompaniment of the vīṇā:

ORIGINAL

Braj Bhāṣā song

हौं बलि जाऊँ नागरी-श्याम।
ऐसे ही रंग करौ निसि-वासर, वृन्दाविपिन कुटी अभिराम॥
हास विलास सुरत रस सींचन, पशुपति-दग्ध जिवावत काम।
(जै श्री) हित हरिवंश लोल लोचन अलि, करहु न सफल सकल सुखधाम॥

ENGLISH TRANSLATION

I offer myself to Nāgarī and Śyāma.
May You sport in just this way, night and day, within the delightful bowers of Vṛndā's forest.
Through laughter, play, and the pouring of love's nectar, You revive desire once burned by Paśupati.
Hit Harivaṁśa says: O restless bee of the eyes, do not fail to drink from this complete abode of every joy.

CHAPTER 6

जलकेलि लीला

The Water-Sport Līlā

Source scan pages 67–75

ORIGINAL

Sanskrit invocation and Hindi prose

॥ विजयेतां श्रीप्रियाप्रियतमौ ॥

जलकेलि लीला

निकुञ्जसे निकलकर सखियों एवं श्रीराधारानीके सहित श्रीकृष्ण राधाकुण्डके घाटपर स्नान करनेके उद्देश्यसे आये हैं तथा चमचम करते हुए संगमरमरके घाटपर खड़े हैं। श्रीप्रियाजी पश्चिमकी ओर मुँह किये मन्द-मन्द मुस्कुरा रही हैं तथा श्रीकृष्ण पूर्वकी ओर मुख किये मुस्कुरा रहे हैं। रूपमञ्जरी श्रीप्रियाजीके मस्तकसे मणियोंका चूड़ा उतार लेती है। श्रीकृष्णका मुकुट उतारने ललिता जाती हैं, पर श्रीकृष्ण पीछे हट जाते हैं तथा कहते हैं—धूर्ते! चल, हट, मैं मुकुट सहित ही नहाऊँगा!

ललिता चाहती हैं कि किसी प्रकार मुकुट छीन लें; पर श्रीकृष्ण उसे बायें हाथसे पकड़ लेते हैं। इसी बीचमें गुणमञ्जरी श्रीप्रियाजीके गलेमेंसे मणियों एवं मोतियोंका हार निकालकर और एक पीले रूमालमें बाँधकर पास ही पड़ी हुई सोनेकी परातमें रख देती है।

ENGLISH TRANSLATION

May Śrī Priyā and Her Beloved be victorious!

The Water-Sport Līlā

Leaving the secluded grove, Śrī Kṛṣṇa comes with Śrī Rādhārānī and the sakhīs to bathe at the landing of Rādhākuṇḍa. They stand upon its gleaming marble steps. Śrī Priyājī faces west and smiles gently, while Śrī Kṛṣṇa faces east, smiling back. Rūpamañjarī removes the jeweled crest from Śrī Priyājī's head. Lalitā approaches to take off Śrī Kṛṣṇa's crown, but He steps away and says, "You rogue! Go away. I shall bathe with My crown on!"

Lalitā tries somehow to snatch it, but Śrī Kṛṣṇa holds her off with His left hand. Meanwhile, Guṇamañjarī removes Śrī Priyājī's necklace of jewels and pearls, wraps it in a yellow handkerchief, and places it in a golden tray nearby.

ORIGINAL Hindi prose

श्रीप्रियाजीकी आँखोंसे प्रेम झर रहा है। वे इशारेसे श्रीकृष्णको कहती हैं—सावधान रहना, ललिता मुकुट छीननेके लिये पीछेसे टूट पड़ेगी।

बात यह थी कि श्रीकृष्ण बायें हाथसे मुकुट पकड़े हुए श्रीप्रियाजीके शरीरकी शोभा देखने लग गये थे और ललिता यह सोच रही थीं कि राधाका चूड़ा उतार दिया है तो फिर श्यामसुन्दरका मुकुट उतार लेंगे, तभी पानीमें उतरेंगे।

श्रीराधाके इशारेसे कृष्ण झटपट पीछेकी ओर मुड़कर ललिताका चूड़ा छीन लेते हैं तथा पानीमें धड़ामसे घाटसे पाँच हाथ दूर कूद पड़ते हैं। उनके पानीमें कूदते ही ललिता पीछेसे धड़ामसे कूद पड़ती हैं तथा जाकर अपना चूड़ा पकड़ लेती हैं। श्रीकृष्णने तबतक चूड़ेको पानीमें डुबा दिया था, जिससे उसपरसे मोतीकी तरह पानीकी बूँदें झर रही थीं। जब ललिताने चूड़ा पकड़ लिया, तब उसके लिये छीना-झपटी होने लग गयी।

श्रीकृष्ण कहते—मैं तो नहीं छोड़ता।

ललिता कहती—मैं लेकर छोड़ूँगी।

ENGLISH TRANSLATION

Love streams from Śrī Priyājī's eyes. With a gesture She warns Śrī Kṛṣṇa, "Be careful. Lalitā will spring upon You from behind to seize the crown."

Śrī Kṛṣṇa has been holding His crown with His left hand while becoming absorbed in the beauty of Śrī Priyājī's body. Lalitā, meanwhile, thinks that since Rādhā's crest has been removed, Śyāmasundara's crown must also come off before they enter the water.

Alerted by Śrī Rādhā's signal, Kṛṣṇa whirls around, snatches Lalitā's crest, and leaps from the landing with a great splash, landing five cubits out in the water. Lalitā immediately plunges in after Him and catches hold of her crest. By then Śrī Kṛṣṇa has dipped it in the water, and droplets fall from it like pearls. When Lalitā grasps it, a lively tug-of-war begins.

Śrī Kṛṣṇa says, "I shall not let go."

Lalitā replies, "I shall not let go until I have taken it."

ORIGINAL Hindi prose

श्रीकृष्ण छातीभर पानीमें उत्तरकी तरफ मुख किये हुए खड़े हैं एवं ललिता उनके सामने दक्षिणकी ओर मुख किये हुए इससे थोड़े कम पानीमें खड़ी हैं। श्रीराधा मन्द-मन्द मुस्कुराती हुई एक, दो, तीन सीढ़ियोंपर पैर रखती हुई धीरे-धीरे पानीमें उतर आती हैं तथा ललिताकी बायीं ओर जाकर खड़ी हो जाती हैं। ललिताके कन्धेको अपने दाहिने हाथसे पकड़कर और श्रीकृष्णकी ठोड़ीको अपने बायें हाथसे छूकर कहती हैं—लो! मैं फैसला किये देती हूँ। ललिता भी मान लेगी, तुम भी मान लो।

श्रीकृष्ण कहते हैं—क्या फैसला? बताओ पहले, तब पीछे चूड़ा छोड़ूँगा!

श्रीराधाने कहा—चूड़ा मेरे हाथमें दे दो।

श्रीकृष्ण—तू ललिताको तो नहीं देगी न?

श्रीराधा—नहीं दूँगी।

श्रीकृष्ण चूड़ा श्रीराधाके हाथमें दे देते हैं। गुणमञ्जरी श्रीराधाके पीछे-पीछे आयी थी। श्रीराधाने उससे कुछ इशारेसे कहा। वह छुप-छुप करती हुई पानीको हाथोंसे चीरती हुई घाटके ऊपर चढ़ जाती है तथा श्रीराधाका चूड़ा उठाकर पानीमें ले आती है। श्रीराधा अपने चूड़ेको अपने सिरपर रख लेती हैं तथा कहती हैं—ललिताका कहना था कि मैंने चूड़ा उतार दिया तो मुकुट श्यामसुन्दर उतार दें! अब मैंने चूड़ा पहन लिया। अब दोनोंका बराबर दाँव है! किंतु तुमने जो ललिताका चूड़ा छीन लिया है, उसका यह दण्ड है कि तुम अपने हाथोंसे ललिताको चूड़ा पहना दो तथा उसके हाथमें अपनी वंशी दे दो। आज दिनभर वंशी उसके पास रहेगी।

श्रीकृष्ण एक बार तो झिझके, पर फिर सोचा कि अभी तो स्नान करना है। अभी वंशी दे दूँ। फिर पानीसे निकलनेके बाद किसी उपायसे ले लूँगा। अभी तो यशोदा है नहीं। श्रीकृष्ण यह सोचकर मुस्कुराते हुए चूड़ा ललिताके सिरपर बाँधने लग गये। चूड़ा बाँधकर वंशीसे ललिताकी ठोड़ीको छूकर कहा—यह लो।

ललिता वंशी लेकर अपनी दासी रत्नमञ्जरीको दे देती हैं। रत्नमञ्जरी उसे कञ्चुकीमें रख लेती है।

ENGLISH TRANSLATION

Śrī Kṛṣṇa stands chest-deep in the water facing north. Lalitā stands before Him facing south, where the water is slightly shallower. Smiling softly, Śrī Rādhā steps down the first, second, and third steps, slowly enters the water, and stands on Lalitā's left. She places Her right hand upon Lalitā's shoulder, touches Śrī Kṛṣṇa's chin with Her left, and says, "Very well, I shall settle this. Lalitā will accept My decision, and so will You."

Śrī Kṛṣṇa says, "What decision? Tell Me first. Then I shall release the crest."

Śrī Rādhā says, "Give it into My hand."

Śrī Kṛṣṇa asks, "You will not give it to Lalitā, will You?"

Śrī Rādhā replies, "I will not."

Śrī Kṛṣṇa places the crest in Śrī Rādhā's hand. Guṇamañjarī has followed close behind Her. Śrī Rādhā signals to her, and she splashes through the water, climbs the steps, fetches Śrī Rādhā's crest, and brings it back. Śrī Rādhā puts Her crest upon Her head and says, "Lalitā argued that because I had removed My crest, Śyāmasundara should remove His crown. Now I have put My crest back on, so the contest is even. But because You seized Lalitā's crest, Your punishment is to place it upon her head with Your own hands and give her Your flute. She will keep it for the entire day."

Śrī Kṛṣṇa hesitates, then thinks, "We still have to bathe. I shall give up the flute for now and recover it by some means after we leave the water. Yaśodā is not here." Smiling at this thought, He ties the crest upon Lalitā's head. Then He touches her chin with the flute and says, "Here, take it."

Lalitā accepts the flute and gives it to her maidservant Ratnamañjarī, who tucks it into her bodice.

ORIGINAL Hindi prose

अब श्रीकृष्ण पानीका एक चुल्लू लेकर ललिताके मुँहपर झोंक देते हैं तथा एक मन्त्र पढ़ते हैं, जिसका यह भाव है कि हे देवि! आजका जो स्नान-यज्ञ है, वह सफल हो, इसके लिये मैं आपकी प्रार्थना करता हुआ आपका अभिषेक कर रहा हूँ।

ललिता दोनों हाथोंसे चुल्लू भरकर चाहती हैं कि श्रीकृष्णके मुखपर दे मारूँ कि उसी समय हंस-हंसिनीका एक जोड़ा ऊपरसे उड़ता हुआ आता है तथा ललिता, श्रीराधा एवं श्रीकृष्णके बीचमें कूद पड़ता है। हंसिनी अपना सिर श्रीराधाकी ओर कर देती है एवं हंस श्रीकृष्णकी ओर, मानो वे आकर उन्हें प्रणाम कर रहे हों। श्रीकृष्ण दोनों हाथोंसे हंसको पकड़कर अपनी बायीं ओर रखकर दाहिने हाथसे पानी लेकर हंसके सिरपर डालने लगते हैं तथा श्रीराधा उसी तरह हंसिनीको रखकर उसके सिरपर पानी डालती हैं।

ललिता इसी बीचमें श्रीराधाके पीछेसे जाकर उनको धक्का दे देती हैं, जिससे राधारानीका पैर जमीनपरसे हट जाता है तथा वे धक्का लगनेके कारण श्रीकृष्णकी ओर बढ़ जाती हैं। श्रीकृष्ण हंसकी पीठपरसे अपना हाथ उठाकर राधारानीको सँभाल लेते हैं। ललिता घाटकी ओर मुँह करके भागने लगती हैं, पर श्रीकृष्ण बायें हाथसे राधारानीको सँभाले रखकर ललिताको पकड़नेके लिये हाथ बढ़ाते हैं तथा उसकी वेणी श्रीकृष्णके हाथमें आ जाती है। ललिता हँसने लग जाती हैं। श्रीकृष्ण भी हँसने लगते हैं तथा कहते हैं—सीधे मनसे अब यहाँ, जो-जो कहूँ, वैसे कर! नहीं तो पानीमें, मैं देखता हूँ, हारकर तू रोती है या मैं रोता हूँ।

ललिता मुस्कुराकर वेणी छुड़ाकर फिर दक्षिणकी ओर मुँह करके खड़ी हो जाती हैं तथा आँखें तरेरकर श्रीराधासे कहती हैं—लो! तुम दोनों मिलकर मुझे तंग करना चाहते हो। क्यों, ठीक है न?

ENGLISH TRANSLATION

Śrī Kṛṣṇa scoops up a palmful of water and casts it upon Lalitā's face. He recites a mantra whose meaning is: "O Goddess, praying that today's sacrificial rite of bathing may succeed, I perform Your ceremonial ablution."

Lalitā fills both hands with water and is about to fling it into Śrī Kṛṣṇa's face when a pair of swans flies down and lands between Lalitā, Śrī Rādhā, and Śrī Kṛṣṇa. The female turns her head toward Śrī Rādhā and the male toward Śrī Kṛṣṇa, as though they have come to offer obeisance. Śrī Kṛṣṇa catches the male swan with both hands, places it on His left, and pours water over its head with His right hand. Śrī Rādhā similarly holds the female and pours water upon her head.

Meanwhile, Lalitā slips behind Śrī Rādhā and gives Her a push. Rādhārānī loses Her footing and lurches toward Śrī Kṛṣṇa. Lifting His hand from the swan's back, He catches and steadies Her. Lalitā turns toward the landing and begins to flee, but while supporting Rādhārānī with His left hand, Śrī Kṛṣṇa reaches for Lalitā and catches her braid. Lalitā laughs, and Śrī Kṛṣṇa laughs as well. He says, "Now behave honestly and do exactly as I say. Otherwise, we shall see in the water whether you cry in defeat or I do."

Smiling, Lalitā frees her braid, again stands facing south, and glares playfully at Śrī Rādhā. "There! The two of You have joined forces to torment me. Is that not so?"

ORIGINAL Hindi prose

राधारानी मुस्कुराती हैं तथा श्रीकृष्णसे कहती हैं—अच्छा, अब दल बाँट लो, कौन-कौन, किस-किस तरफ, कैसे खड़ा हो?

श्रीकृष्ण कहते हैं—अच्छा, ठीक है। मैं यहाँ खड़ा होता हूँ तथा तुम यहाँ खड़ी रहो और कलकी तरह आज जलमें नृत्य होगा।

श्रीकृष्ण पश्चिमकी ओर मुँह करके खड़े हो जाते हैं। श्रीराधाके दोनों हाथोंको पकड़कर अपने सामने खड़ा कर लेते हैं, जिससे श्रीराधाका मुँह पूर्वकी ओर हो जाता है। सखियाँ आठ गोल बनाकर चारों ओरसे गोलाकार कमलके दलकी तरह घेरकर खड़ी हो जाती हैं। उसी समय घाटपर पानीमें अपना आधा पैर रखकर मधुमती वीणाके तारोंको झनझन करती हुई बजाती है तथा विमलामञ्जरी मृदङ्ग बजाती है और उसी सुरमें नृत्य प्रारम्भ होता है। केदारा रागमें वीणा बजती है तथा पानीके अन्दर ही अपने पैरोंको उसी तालसे उठाती-गिराती हुई सखियाँ, राधा एवं श्यामसुन्दर नृत्य करते हैं। सखियाँ अपने दोनों हाथोंसे भी भाव बता रही हैं; पर श्रीकृष्ण एवं श्रीराधा, दोनों अपने दोनों हाथोंको पकड़े हुए ही भाव बता रहे हैं तथा सखियोंकी मण्डली और श्रीकृष्ण एवं श्रीराधा घूम रहे हैं। बहुत देरतक यह नृत्य चलता रहता है। नृत्य करते-करते हठात् जितनी सखियाँ थीं, उतने श्रीकृष्ण बन गये। अब प्रत्येक सखी यह अनुभव कर रही है कि श्रीकृष्ण मेरे पास, मेरे बगलमें, मेरा हाथ पकड़कर नृत्य कर रहे हैं। इसके पश्चात् नृत्यकी गति धीरे-धीरे मन्द होकर, सब एक साथ ही, मधुमतीकी वीणा बन्द होते ही खड़े हो जाते हैं। उस समय श्रीकृष्णका मुँह उत्तरकी ओर तथा प्रियाजीका मुँह दक्षिणकी ओर है।

ENGLISH TRANSLATION

Rādhārānī smiles and says to Śrī Kṛṣṇa, “Now divide us into parties. Who will stand on which side, and how?”

Śrī Kṛṣṇa replies, “Very well. I shall stand here and You remain there. Today, as yesterday, we shall dance in the water.”

Śrī Kṛṣṇa stands facing west. Taking both of Śrī Rādhā’s hands, He places Her before Him so that She faces east. The sakhīs form eight circles around them, enclosing them like the rounded petals of a lotus. At that moment Madhumatī stands with one foot partly in the water and makes the strings of her vīṇā ring, while Vimalāmañjarī plays the mṛdaṅga. The dance begins to their melody. The vīṇā sounds in Kedāra rāga, and the sakhīs, Rādhā, and Śyāmasundara dance within the water, raising and lowering their feet to the rhythm. The sakhīs express the song’s moods with both hands. Śrī Kṛṣṇa and Śrī Rādhā keep both hands joined and express the moods together while they and the circles of sakhīs revolve. The dance continues for a long time. Suddenly, as they dance, Śrī Kṛṣṇa becomes as many forms as there are sakhīs. Each sakhī now experiences Him beside her, holding her hand and dancing with her. The dance gradually slows, and the instant Madhumatī’s vīṇā falls silent, everyone comes to rest together. Śrī Kṛṣṇa now faces north and Priyājī faces south.

ORIGINAL Hindi prose

अब तैरनेकी होड़ लगती है कि कौन, कितना अधिक तैर सकता है। पासमें ही हंसके आकारकी तीन-चार नौकाएँ खड़ी हैं। उनमें चार-चार सखियाँ सवार हो जाती हैं। नावमें एक बड़ी परातमें फूलोंसे निर्मित बहुत-सी गेंदें हैं तथा नावमें चमचम करती हुई चार इस तरफ और चार उस तरफ सोनेकी कड़ियाँ लगी हुई हैं। एक नाव स्वयं चलती है। श्रीकृष्ण नावके पास पहुँचते ही बायें हाथसे कड़ी पकड़कर दाहिने हाथसे अपनी कमरमें कञ्चुकीकी भाँति हुई चादर बाँध लेते हैं। उनके कड़ी पकड़ते ही सखियाँ नाव खींचने लग जाती हैं। नावका मुँह दक्षिणकी ओर होते ही श्रीराधा श्रीकृष्णके बगलवाली कड़ी बायें हाथसे पकड़ लेती हैं तथा दाहिने हाथसे अपने अञ्चलको उसी प्रकार कसती हुई चली जा रही हैं। रानीके नीचेका अङ्ग पानीके भीतर है। श्रीराधाके उसी प्रकार ललिता एवं विशाखा एक-एक कड़ी पकड़ लेती हैं। इस प्रकार पहली नावके वहाँसे हटते ही दूसरी नाव आ जाती है तथा उसी प्रकार चार सखियोंके द्वारा चार कड़ियोंके पकड़ लिये जानेपर नाव दक्षिणकी ओर चलती है।

इसी प्रकार चार नावोंमें, जो हंसके आकारकी किंतु कुछ उथली-उथली हैं, श्रीकृष्णके सहित सोलह व्यक्ति कड़ी पकड़कर नावके साथ तैर रहे हैं। जब नाव कुण्डके बीचमें पहुँचती है, सभी चक्कर काटकर श्रीकृष्णकी नाव तो कुण्डके पश्चिम एवं उत्तरके कोनेपर खड़ी होती है एवं बाकी नावें भी तीनों कोनोंपर खड़ी हो जाती हैं। चारोंमें आमने-सामनेका भाव है।

अब वह सखी, जो नाव खे रही थी, परातमेंसे लेकर एक-एक गेंद सबको पकड़ा देती है। अब एक हाथसे कड़ी पकड़े हुए तथा दूसरे हाथमें गेंद लेकर सभी पैरोंसे तैर रही हैं। गेंदका खेल आरम्भ होता है। इस प्रकार बहुत देरतक आपसमें फूलोंकी बनी हुई गेंदोंको फेंकते और पकड़ते हैं।

ENGLISH TRANSLATION

They now hold a swimming contest to see who can swim farthest. Nearby stand nine or ten swan-shaped boats. Four sakhīs board each one. In every boat a large tray holds many balls made of flowers, and eight gleaming golden rings are fixed along its sides, four on either side. One boat begins moving by itself. When Śrī Kṛṣṇa reaches it, He grips a ring with His left hand and uses His right to tighten the cloth around His waist like a bodice. As soon as He takes hold, the sakhīs begin drawing the boat. When its prow turns south, Śrī Rādhā grasps the ring beside Śrī Kṛṣṇa with Her left hand and tightens Her veil in the same way with Her right. The lower part of Her body remains beneath the water. Lalitā and Viśākhā likewise take one ring each. When the first boat moves away, a second comes forward. Four more sakhīs grasp its four rings and swim southward with it.

Thus, alongside four shallow swan-shaped boats, sixteen swimmers including Śrī Kṛṣṇa hold the rings and swim. When the boats reach the middle of the kuṇḍa, they circle around. Śrī Kṛṣṇa's boat takes its place at the northwestern corner, while the remaining three stand at the other corners, all facing one another.

The sakhī piloting each boat takes balls from its tray and gives one to every swimmer. Holding a ring with one hand and a ball in the other, they tread the water with their feet. The ball game begins, and for a long time they throw and catch the flower-balls among themselves.

ORIGINAL Hindi prose

गेंदका खेल समाप्त होनेपर श्रीकृष्ण जिस नावपर हैं, वह ठीक उत्तरकी ओर मुँह करके चल पड़ती है। उसके पीछे-पीछे वे तीनों नावें भी चल पड़ती हैं। राधाकुण्डमें लाल, उजले, नीले एवं सफेद—चारों प्रकारके कमल खिले हुए हैं। उनके बहुत-से चौड़े-चौड़े पत्ते पानीपर फैले हुए हैं। नावें उन्हें बचा-बचाकर कभी पूर्व, कभी पश्चिम, कभी उत्तरकी ओर मुड़ती हुई चल रही हैं तथा उसी प्रकार कड़ी पकड़े हुए श्रीकृष्ण एवं सखियाँ पानीमें बढ़ती हुई चल रही हैं। कमलके पास पहुँचते ही इस प्रकार हवाके झोंकेसे कमल हिलने लगते हैं, मानो वे कह रहे हों कि हमें तोड़कर अपने हाथमें रख लो। श्रीकृष्ण कभी श्रीराधा किसी कमलको छू देते हैं, किसी एक-दोको तोड़कर नावमें रख लेते हैं, कभी उनके पास पहुँचकर अपने दाहिने हाथसे उनपर झटके दे देते हैं। कमलोंपर भौंरोंकी भीड़ गुन-गुनाती हुई उड़ रही है।

श्रीप्रियाजी एक कमलके पास पहुँचकर दाहिने हाथसे उसपर छींटा देती हैं। इसी समय एक भौंरा उड़कर आता है तथा श्रीप्रियाजीके कपोलपर बैठना चाहता है। श्रीप्रियाजी बार-बार उसे उड़ाना चाहती हैं। जब वह नहीं उड़ता, तब श्रीकृष्णकी कमरमें खोंसे हुए पीताम्बरका जो छोर पानीके ऊपर तैर रहा था, उसीको उठाकर उससे अपना मुँह ढक लेती हैं। श्रीकृष्ण हँसने लगते हैं। ओढ़े हुएमें श्रीप्रियाजी देखती हैं कि भौंरा चला गया या नहीं। पीताम्बरके भीतरसे श्रीराधारानीकी शोभा झक-झक चमक करती हुई दीख पड़ रही है तथा श्रीकृष्ण उसे ही देख रहे हैं। श्रीप्रियाजीने हँसकर एक कमल तोड़ लिया तथा श्रीकृष्णके मुखके सामने करके बोलीं—इधर मत देखो!

श्यामसुन्दर कहते हैं—अच्छी बात है।

श्रीकृष्ण अपना मुँह उत्तरकी तरफ कर लेते हैं। उस समय नाव उत्तरकी ओर मन्द गतिसे बह रही थी। श्रीकृष्णके मुँह इधर करते ही श्रीप्रियाजी व्याकुल हो जाती हैं तथा दाहिने हाथसे उनका कन्धा हिलाती हुई कहती हैं—श्यामसुन्दर! इधर देखो, वहाँ हंस किस प्रकार पंख फुलाये हुए नाच रहा है!

श्रीकृष्ण श्रीप्रियाजीकी चतुराई समझ जाते हैं तथा हँसते हुए उधर ही ताकने लग जाते हैं। अब श्रीकृष्णका मुँह श्रीप्रियाजीको ठीकसे दीखने लग जाता है।

ENGLISH TRANSLATION

When the ball game ends, Śrī Kṛṣṇa's boat turns due north and sets out, with the other three following. Red, pale, blue, and white lotuses bloom throughout Rādhākuṇḍa, and their broad leaves spread across the water. Avoiding them, the boats turn now east, now west, and now north. Śrī Kṛṣṇa and the sakhīs move through the water beside them, still holding the rings. As they approach, gusts of wind make the lotuses sway as though pleading, "Pluck us and hold us in Your hands." Sometimes Śrī Kṛṣṇa or Śrī Rādhā touches a lotus; sometimes They pluck one or two and place them in the boat; and sometimes They reach out with Their right hands to set the flowers bobbing. Swarms of bees fly humming above the lotuses.

Reaching one lotus, Śrī Priyājī splashes it with Her right hand. Just then a bee flies up and tries to settle upon Her cheek. She repeatedly attempts to drive it away, but it will not leave. She therefore lifts the end of the yellow cloth tucked at Śrī Kṛṣṇa's waist, which has been floating upon the water, and covers Her face with it. Śrī Kṛṣṇa laughs. From beneath the cloth Priyājī peeks to see whether the bee has gone. Rādhārānī's beauty shines brilliantly through the yellow fabric, and Śrī Kṛṣṇa gazes only at Her. Laughing, She plucks a lotus, holds it before His face, and says, "Do not look this way!"

Śyāmasundara replies, "Very well."

He turns His face north. The boat is then drifting slowly in that direction. As soon as He turns away, Śrī Priyājī grows restless, shakes His shoulder with Her right hand, and says, "Śyāmasundara, look over here! See how that swan is dancing with its feathers spread!"

Śrī Kṛṣṇa understands Her cleverness and smilingly looks where She points. His face again becomes fully visible to Śrī Priyājī.

ORIGINAL

Hindi prose

नाव घाटसे करीब दस हाथोंकी दूरीपर आकर रुक जाती है। छातीभर पानीमें श्रीकृष्ण एवं श्रीप्रियाजी तथा और सखियाँ उतर-उतरकर खड़ी हो जाती हैं। अब छपा-छप! श्रीकृष्णका हाथ पकड़कर श्रीप्रियाजी कहती हैं—पहले मैं।

श्रीकृष्ण कहते हैं—बहुत ठीक।

श्रीप्रियाजी श्रीकृष्णके हाथको पकड़कर पानीमें डुबा देती हैं। श्रीप्रियाजीके अत्यन्त सुन्दर केश एवं मुख पानीके ऊपर तैरने लगते हैं। कुछ क्षणतक पानीमें सिर रखकर हँसती हुई श्रीप्रियाजी इसे बाहर निकाल लेती हैं। भीगे हुए केश आँखोंपर आ जाते हैं। श्रीकृष्ण अत्यन्त प्यारसे केशोंको ठीक करके मुखपरसे किनारे कर देते हैं। अब श्रीकृष्ण डुबकी लगाते हैं। श्रीकृष्णकी अट्टहासयुक्त पानीपरसे उठती हुई छवि अत्यन्त प्यारी लगती है। श्रीकृष्ण भी हँसते हुए सिर बाहर निकाल लेते हैं तथा निकालकर इस प्रकार झटका देते हैं, जिससे मोतीकी तरह पानीकी बूँदें चारों ओर फैल जाती हैं। इस समय विचित्रता यह है कि सभी सखियोंको ऐसा अनुभव हो रहा है कि श्रीकृष्ण हमारे हाथ पकड़े नहा रहे हैं तथा हमारे भीगे हुए केशोंको अपने प्यारभरे हाथोंसे ठीक कर दे रहे हैं।

ENGLISH TRANSLATION

The boat stops about ten cubits from the landing. Śrī Kṛṣṇa, Śrī Priyājī, and the sakhīs climb down and stand chest-deep in the water. The splashing begins. Holding Śrī Kṛṣṇa's hand, Śrī Priyājī says, "I shall go first."

Śrī Kṛṣṇa replies, "Very well."

Keeping hold of His hand, Śrī Priyājī submerges Herself. Her exquisite hair and face float upon the surface. After keeping Her head in the water for a few moments, She laughs and raises it again. Her wet hair falls over Her eyes, and Śrī Kṛṣṇa lovingly sets the locks in order and moves them away from Her face. Śrī Kṛṣṇa now dives. His laughing form as it rises from the water is irresistibly lovely. He lifts His head, laughing, and gives it such a shake that pearl-like droplets scatter in every direction. The wonder is that every sakhī feels Śrī Kṛṣṇa bathing while holding her own hand and tenderly arranging her wet hair with His loving hands.

ORIGINAL

Hindi prose

इस प्रकार बारी-बारीसे डुबकी लगाते हुए जब कुछ देर हो जाती है, तब घाटपर खड़ी हुई रूपमञ्जरी श्रीकृष्णको कुछ इशारा करती है। श्रीकृष्ण "बहुत ठीक" कहकर श्रीप्रियाजीके बायें हाथको पकड़े हुए घाटपर आ जाते हैं तथा पश्चिमकी ओर मुँह किये बैठ जाते हैं। श्रीकृष्णके पैर पानीमें हैं तथा कमरसे ऊपरका हिस्सा घाटकी सूखी हुई सीढ़ीपर। सखियाँ सुन्दर-सुन्दर कटोरियोंमें तरह-तरहके उबटनका सामान लाती हैं तथा कोई श्रीकृष्णके हाथोंमें, कोई पैरोंमें, कोई मुँहमें, कोई पीठमें उबटन लगाती हैं। श्रीराधारानी अत्यन्त चमचम करते हुए एक छोटे-से तौलियेको ले लेती हैं तथा श्रीकृष्णके सिरको उसीसे पोंछती हैं। पासमें ही खड़ी हुई गुणमञ्जरीके हाथमें सोनेकी छोटी कटोरी है, जिसमें अत्यन्त सुगन्धित तेल है। रानी अपनी हथेलीके बीचमें गड्ढा-सा बनाकर उस गड्ढेमें कटोरीसे तेल डाल लेती हैं तथा मन्द-मन्द मुस्कुराती हुई उसे श्यामसुन्दरके सिरपर धीरेसे डालकर फिर दोनों हाथोंसे उसे दबाने लगती हैं। फिर घुँघराली लटोंको लेकर उसमें तेल मलने लगती हैं।

श्रीकृष्णकी छवि घाटपर एवं पानीमें मणियोंमें प्रतिबिम्बित हो रही है। श्रीराधाकी दृष्टि नीचे घाटमें प्रतिबिम्बित परछाईपर पड़ती है। वे देखती हैं कि श्रीकृष्णकी छातीपर हमारा पैर है। इसे देखकर वे एक बार तो चौंक-सी जाती हैं। फिर हँसने लगती हैं। श्रीकृष्ण भी मुस्कुराने लगते हैं। उबटन समाप्त होते ही श्रीकृष्ण पानीमें छपाकसे कूद पड़ते हैं।

ENGLISH TRANSLATION

After they have taken turns diving for some time, Rūpamañjarī, standing upon the landing, signals to Śrī Kṛṣṇa. Saying, "Very well," He takes Śrī Priyājī's left hand, comes to the landing, and sits facing west. His legs remain in the water while His body above the waist rests upon a dry step. The sakhīs bring beautiful bowls containing various bathing pastes. One applies paste to His hands, another to His feet, another to His face, and another to His back. Śrī Rādhārāṇī takes a small, gleaming towel and dries His head. Guṇamañjarī stands nearby holding a little golden bowl of intensely fragrant oil. The Queen cups Her palm, pours oil from the bowl into its hollow, and with a gentle smile slowly pours it upon Śyāmasundara's head. She massages it with both hands, working it into His curling locks.

Śrī Kṛṣṇa's form is reflected upon the landing, in the water, and in the jewels. Śrī Rādhā looks down and sees the reflected image upon the steps. In it, Her foot appears to rest upon Śrī Kṛṣṇa's chest. She starts for a moment, then laughs. Śrī Kṛṣṇa also smiles. As soon as the application of paste is complete, He leaps into the water with a splash.

ORIGINAL

Hindi prose

अब श्रीप्रियाजीके अङ्गोंमें सखियाँ उबटन लगाती हैं। श्रीकृष्ण पानीमें तैरते हैं तथा तिरछी चितवनसे श्रीप्रियाजीके मधुर मुखकी शोभा निहारते जाते हैं। श्रीप्रियाजीके अङ्गोंमें उबटन लग लेनेके बाद श्रीप्रियाजी स्वयं उठकर सखियोंके सिरमें तेल डालने लगती हैं। इसी समय श्रीकृष्ण दौड़कर आते हैं तथा घाटपर खड़े हो जाते हैं। वे श्रीराधारानीके सुगन्धित तेलकी कटोरी लेकर उसे ललिताके सिरपर उड़ेल देते हैं। तेल ज्यादा था, वह ललिताके ललाटसे होकर बहने लग जाता है। ललिता श्रीकृष्णका हाथ पकड़ लेती हैं। श्रीकृष्ण कहते हैं—देखो! तुमने सिर हिला दिया, इसीसे कटोरी हमारे हाथसे हिल गयी। तुमने तेल गिराया है। इसमें अपराध हमारा नहीं है।

फिर श्रीकृष्ण अपना दाहिना हाथ छुड़ा लेते हैं। इसके बाद वे घाटपर गिरे हुए तेलको हाथसे पोंछकर अपने मुँहपर थोड़ा लगाते हैं और कहते हैं—ज्यादा है, क्या करूँ? अच्छा, लो, थोड़ा तुम ले लो।

श्रीकृष्ण इतना कहकर हाथमें लगा हुआ तेल श्रीराधाके सिरपर पोंछ देते हैं। श्रीराधा कहती हैं—बस, बस, चालाकी रहने दो।

श्रीराधा श्रीकृष्णका दाहिना हाथ पकड़ लेती हैं, पर श्रीकृष्ण पीछेकी ओर पानीमें राधा एवं ललिताका हाथ पकड़े हुए ही कूद पड़ते हैं। कुछ देरतक पानीमें खड़े रहकर एक-दूसरेपर हाथोंसे जल उलीचते हैं। फिर घाटपर आ बैठ जाते हैं।

ENGLISH TRANSLATION

The sakhīs now apply bathing paste to Śrī Priyājī's limbs. Śrī Kṛṣṇa swims in the water, admiring the beauty of Her sweet face with sidelong glances. When the paste has been applied, Śrī Priyājī rises and begins pouring oil upon the sakhīs' heads. Just then Śrī Kṛṣṇa runs up and stands upon the landing. Seizing Rādhārāṇī's bowl of fragrant oil, He empties it over Lalitā's head. There is so much oil that it streams down her forehead. Lalitā catches His hand.

Śrī Kṛṣṇa says, "Look, you moved your head, and that made the bowl shake in My hand. You spilled the oil. I have committed no offense."

He frees His right hand, wipes up some oil that has fallen upon the landing, smears a little upon His face, and says, "There is too much. What shall I do? Here, you take some."

With this, He wipes the oil from His hand onto Śrī Rādhā's head. She says, "Enough, enough. Stop Your cleverness."

Śrī Rādhā grasps His right hand, but still holding both Her hand and Lalitā's, Śrī Kṛṣṇa leaps backward into the water. For some time they stand splashing water upon one another with their hands, then return and sit upon the landing.

ORIGINAL Hindi prose

गेंदके खेलमें सोलह घड़ा जल डालनेका दाँव श्रीकृष्ण हार चुके थे तथा बारह घड़ेसे श्रीप्रियाजी हार चुकी थीं। अतः दोनोंको पास-पास बिठाकर सखियाँ उनपर कलसेसे जल डालने लगीं। सोलह घड़ोंसे दो घड़े अधिक डाल देनेके कारण श्रीकृष्ण विशाखासे लड़ पड़े—तुमने अठारह क्यों डाले? दाँव तो सोलहका ही था। अब दोके बदलेमें मैं आठ घड़े तुमपर डालूँगा।

विशाखाने कहा—मैंने तो एक डाला है, एक ललिताने डाला है। इसलिये चार घड़े उसपर एवं चार घड़े मुझपर। मैं अकेले क्यों सहूँगी?

ललिताने कहा—मुझसे तो राधाने कह दिया कि अभी एक और बाकी है। यह गिन रही थी। मैंने तो इसकी बातमें आकर तुमपर एक घड़ा ज्यादा डाल दिया। इसलिये तीन घड़े इसपर डालो और एक मुझपर।

विशाखाने कहा—बस, बस, ठीक है, मैंने भी जो तुमपर एक घड़ा अधिक डाला है, वह भी इसी राधाके इशारेसे ही डाला है। इसीने कहा कि गर्मी है, क्या हर्ज है, एक और डाल दे। इसलिये मेरे ऊपरके तीन घड़े भी इसीपर डालो।

ENGLISH TRANSLATION

In the ball game Śrī Kṛṣṇa had lost a wager requiring sixteen pitchers of water, while Śrī Priyājī had lost one requiring twelve. The sakhīs therefore seat Them side by side and begin pouring water over Them from pitchers. When Viśākhā pours two more than Śrī Kṛṣṇa's allotted sixteen, He quarrels with her. "Why did you pour eighteen? The wager was only sixteen. In return for those two, I shall pour eight pitchers over you."

Viśākhā replies, "I poured only one; Lalitā poured the other. So pour four over her and four over me. Why should I bear all eight alone?"

Lalitā says, "Rādhā told me that one was still owing. She was counting. I took Her word and poured one extra over You. Therefore, pour three over Her and one over me."

Viśākhā says, "Enough, very well. The extra pitcher I poured over You was also at Rādhā's signal. She said, 'It is hot, what harm is there? Pour one more.' Therefore, pour upon Her the three that were meant for me as well."

ORIGINAL Hindi prose

श्रीप्रियाजी मुस्कराती हुई बैठ गयीं तथा श्रीकृष्ण कुण्डसे कलसेको भर-भरकर डालने लगे। खेलके नियमके अनुसार श्रीप्रियाजी दोनोंकी अञ्जलि बाँधे बैठी थीं। इस बार ललिता एवं विशाखा भी बैठीं। श्रीकृष्णने जब पहला घड़ा सिरपर डाला तो इस ढङ्गसे डाला कि श्रीप्रियाजीका अञ्चल खिसककर पीठपर आ गया। पहले तो ललिता एवं विशाखा जल डाल रही थीं, जिससे अञ्चल ठीक प्रकारसे यथास्थान ही रहा। वे धीरे-धीरे डाल रही थीं। पर इस बार श्रीकृष्णने तेजीसे डाला। श्रीप्रियाजीने अपना हाथ उठा लिया तथा अञ्चल सँभालने लगीं।

श्रीकृष्णने कहा—देखो! इसने तो नियम तोड़ दिये हैं!

श्रीराधाने कहा—तुम ठीकसे जल नहीं डालते। तुम स्वयं बेईमानी करते हो तो मैं क्यों छोड़ दूँ?

आखिर बहुत देरतक इस प्रकार तरह-तरहके प्रेम-विनोदके पश्चात् घाटपर श्रीराधा एवं श्रीकृष्ण खड़े हो जाते हैं। सखियाँ सूखे अङ्गोछेसे उनका शरीर पोंछकर श्रीकृष्णको पीताम्बर एवं श्रीराधारानीको हरी साड़ी पहनाती हैं। कपड़े पहनकर वे लोग एक-दूसरेको देखते हैं। इसी बीचमें कुछ सखियाँ भी जल्दी-जल्दी कपड़े पहन लेती हैं, कुछ पहन रही हैं, कुछ गीले कपड़ोंको जल्दी-जल्दी धो रही हैं। इस प्रकार जल्दीसे काम समाप्तकर सखियोंकी मण्डलीके साथ श्रीराधा-कृष्ण उत्तरकी तरफ मुँह करके ललिताके कुञ्जकी ओर बढ़ते हैं।

ENGLISH TRANSLATION

Śrī Priyājī smilingly sits down, and Śrī Kṛṣṇa fills pitcher after pitcher from the kuṇḍa and pours them over Her. According to the rule of the game, Priyājī sits with both hands joined and restrained. This time Lalitā and Viśākhā sit beside Her. Śrī Kṛṣṇa pours the first pitcher over Priyājī's head in such a way that Her veil slips down onto Her back. Earlier Lalitā and Viśākhā had poured slowly, so the veil remained properly in place. Śrī Kṛṣṇa, however, pours forcefully. Priyājī raises Her hand and begins adjusting Her veil.

Śrī Kṛṣṇa says, "Look! She has broken the rules!"

Śrī Rādhā replies, "You do not pour the water properly. If You Yourself cheat, why should I submit?"

At last, after many varieties of loving play have continued for a long time, Śrī Rādhā and Śrī Kṛṣṇa stand upon the landing. The sakhīs dry Their bodies with towels, dress Śrī Kṛṣṇa in His yellow garment, and clothe Śrī Rādhārānī in a green sari. Once dressed, They look at one another. Meanwhile, some sakhīs hurriedly put on their clothes, some are still dressing, and others rapidly wash the wet garments. Thus they quickly finish every task. With the circle of sakhīs, Śrī Rādhā and Kṛṣṇa turn north and proceed toward Lalitā's grove.

CHAPTER 7

वेणीग्रथन लीला

The Līlā of Braiding the Hair

Source scan pages 76–83

ORIGINAL

Sanskrit invocation

॥ विजयेतां श्रीप्रियाप्रियतमौ ॥

ENGLISH TRANSLATION

May Śrī Priyā and Her Beloved be ever victorious.

ORIGINAL

Braj Bhāṣā song, Rāga Kedāra

राग केदारा

बेनी गूँथि कहा कोऊ जानें, मेरी सौं तेरी सौं।
बिच-बिच फूल सेत-पीत-राते, को करि सके री सौं॥
बैठे रसिक सँवारत बारनि, कोमल कर ककही सौं।
श्रीहरिदासके स्वामी स्यामा नख-सिख लौं बनाई, दें काजर नख ही सौं॥

ENGLISH TRANSLATION

Rāga Kedāra

Who could know how to braid such hair? By my life and yours!
Who could rival the white, yellow, and red flowers woven through it?
The Rasika sits arranging Her tresses with hands softer than anything that can be named.
The Lord of Śrī Haridāsa adorns Śyāmā from nail to crown and applies collyrium with His very fingernail.

ORIGINAL

निकुञ्जमें पूर्वकी ओर मुख किये श्रीश्यामसुन्दर पीले रंगकी मखमली गद्दीसे जड़े हुए पलङ्गपर बैठे हैं। श्रीश्यामसुन्दरके पैर नीचे लटक रहे हैं। उनके सामने श्रीप्रिया पश्चिमकी ओर मुख किये हुए खड़ी हैं। श्रीप्रियाका बायाँ हाथ श्यामसुन्दरके दाहिने कन्धेपर है और उनके दाहिने हाथमें पीले रंगकी अत्यन्त चमकती हुई किसी तैजस धातुकी कंघी है। श्यामसुन्दर अपने बायें हाथसे उनके दाहिने हाथको पकड़े हुए हैं। श्रीप्रिया मन्द-मन्द मुस्कुराती हुई उस हाथको छुड़ानेकी चेष्टा कर रही हैं। श्यामसुन्दर तिरछी चितवनसे ताकते हुए एवं मन्द-मन्द मुस्कुराते हुए अपना सिर हिलाकर यह प्रकट कर रहे हैं, "ना, नहीं छोड़ता।"

ENGLISH TRANSLATION

In the bower, Śrī Śyāmasundara sits facing east upon a bed fitted with yellow velvet cushions, His feet hanging over its side. Śrī Priyā stands before Him facing west. Her left hand rests upon His right shoulder, while Her right holds a brilliant yellow comb fashioned from some lustrous metal. With His left hand Śyāmasundara grips Her right. Smiling gently, She tries to free it, while He gazes sidelong, smiles, shakes His head, and declares, "No, I shall not release it."

ORIGINAL

सखियाँ खड़ी-खड़ी लीला देख रही हैं। श्रीप्रियाके वदनकी शोभा निहारते हुए श्यामसुन्दर कहते हैं, "तो न सही! जैसे प्रतिदिन होता था, वैसे ही होने दे।"

बात यह है कि प्रतिदिन मध्याह्न-स्नानके बाद श्रीप्रिया-प्रियतमको पास-पास बिठाकर सखियाँ दोनोंका शृङ्गार करती थीं; पर आज श्रीप्रियाने रतिमञ्जरीके हाथसे कंघी ले ली तथा प्यारे श्यामसुन्दरका केश सँवारनेके लिये उठ खड़ी हुईं। श्यामसुन्दरने कहा, "अच्छी बात है; पर फिर बदलेमें मैं तेरे केश सँवारूँ। यदि यह शर्त मञ्जूर है तो भले ही केश सँवारने दूँगा, नहीं तो नहीं।"

ENGLISH TRANSLATION

The sakhīs stand watching the līlā. Gazing upon Śrī Priyā's beautiful face, Śyāmasundara says, "Very well, then do not. Let matters proceed as they do every day."

Each day after the midday bath, the sakhīs seat the Divine Couple side by side and adorn Them. Today, however, Śrī Priyā took the comb from Ratimañjarī and rose to arrange Her beloved Śyāmasundara's hair. He said, "Very well, but afterward I shall arrange Yours in return. If You accept that condition, I shall let You comb Mine; otherwise not."

ORIGINAL

श्रीप्रियाने मुस्कुराते हुए सिर हिलाकर संकेत कर दिया, "ना, यह स्वीकार नहीं है।" अस्वीकृतिका संकेत देनेके बाद भी श्रीप्रिया कंघी लेकर प्यारे श्यामसुन्दरके केश सँवारनेको बढ़ीं। श्यामसुन्दरने उनका हाथ पकड़ लिया। श्रीप्रियाने हाथ छुड़ाना चाहा, किन्तु श्यामसुन्दरने नहीं छोड़ा। श्यामसुन्दरने कहा, "तू शर्त मञ्जूर कर ले तो हाथ छोड़ देता हूँ।" श्रीप्रियाने मुस्कुराकर फिर कह दिया, "नहीं।" इसीपर श्यामसुन्दरने कहा था कि तो न सही, जैसे प्रतिदिन होता था, वैसे ही होने दे।

ENGLISH TRANSLATION

Smiling, Śrī Priyā shook Her head to signify, "No, I do not accept." Even after refusing, She advanced with the comb to arrange Her beloved's hair. Śyāmasundara caught Her hand. She tried to free it, but He would not let go. "Accept the condition and I shall release Your hand," He said. Again She smiled and answered, "No." Thus He had replied, "Very well, then do not. Let matters proceed as they do every day."

ORIGINAL

श्यामसुन्दरकी यह बात सुनकर श्रीप्रिया कुछ असमञ्जसमें पड़ जाती हैं। हृदयका प्यार तरङ्गित होकर जिस-किस प्रकारसे भी श्यामसुन्दरके स्पर्शके लिये प्रियाको व्याकुल कर रहा है; पर साथ ही लज्जा अपनी सखियोंके बीचमें प्रियतमके द्वारा अपने केश सँवारे जाना स्वीकार नहीं करने दे रही थी। श्रीप्रिया मुस्कुराती हुई कुछ क्षण सोचती रहती हैं। फिर कहती हैं, "देखो! स्त्रियोंकी वेणी स्त्रियाँ ही ठीक गूँथ सकती हैं।"

श्रीप्रियाकी बात सुनकर श्यामसुन्दर बड़ी गम्भीरतासे बोल उठते हैं, "तू एक बार देख ले, फिर स्वयं समझ जायेगी कि कैसा गूँथता हूँ।"

ENGLISH TRANSLATION

Śrī Priyā is caught in a dilemma. The surging love within Her makes Her long for Śyāmasundara's touch by any means, yet modesty will not permit Her to accept His arranging Her hair before the sakhīs. Smiling, She reflects and says, "Look, only women can braid a woman's hair properly."

With great seriousness Śyāmasundara replies, "Just watch Me once. Then You will understand for Yourself how well I braid it."

ORIGINAL

श्यामसुन्दरकी इस बातको सुनकर श्रीप्रिया और भी फँस जाती हैं। मुस्कुराती हुई सोचती रहती हैं। फिर हाथ छुड़ाकर अलग खड़ी होकर हँसने लग जाती हैं। इस समय श्रीप्रियाका मुख ठीक उत्तरकी ओर है। श्रीप्रिया अपनी दृष्टि प्यारे श्यामसुन्दरके मुखारविन्दपर जमाये रखकर पीछेकी ओर हटने लगती हैं तथा निकुञ्जके दक्षिणकी ओरकी खिड़कीके पास जाकर खड़ी हो जाती हैं। श्रीप्रियाके अङ्गोंको लताओंकी झाड़ियोंपरसे मध्याह्न सूर्यकी रश्मियाँ पड़ने लगती हैं तथा उनके वदनकी शोभा झलमल करती हुई दीख रही है।

ENGLISH TRANSLATION

His words entangle Śrī Priyā still further. Smiling thoughtfully, She frees Her hand, steps away, and begins to laugh. Facing due north, She keeps Her gaze fixed upon Her beloved's lotus face as She retreats to a window on the southern side of the bower. Rays of the midday sun filter through the leafy vines onto Her limbs, making Her radiant face shimmer.

ORIGINAL

निकुञ्जकी खिड़कीपर गिलोय-लताकी तरहकी एक लता इस ढङ्गसे फैली हुई है कि खिड़कीपर स्वाभाविक जाल बन गया है। श्रीप्रिया अपने बायें हाथको ऊपर उठाकर वल्लीके उस जालको पकड़ लेती हैं तथा दाहिने हाथसे दीवालकी एक बेलको पकड़ लेती हैं और तिरछी चितवनसे श्यामसुन्दरकी ओर देखने लग जाती हैं।

श्रीप्रिया जाते समय कंघी श्यामसुन्दरकी जाँघके पास पलङ्गपर ही छोड़ गयी थीं। श्यामसुन्दर उस कंघीको उठा लेते हैं तथा उसे अपने दाहिने हाथमें लेकर अतिशय मधुर कण्ठसे कहते हैं, "प्रिये! एक बार परीक्षाके लिये ही देख ले।"

ENGLISH TRANSLATION

A creeper resembling guḍūcī spreads over the window, forming a natural lattice. Śrī Priyā raises Her left hand to hold it and grasps another vine against the wall with Her right, then looks sidelong toward Śyāmasundara.

When She moved away, She left the comb upon the bed beside His thigh. Taking it in His right hand, He says in an exceedingly sweet voice, "Beloved, test Me just once and see."

ORIGINAL

प्रियाके हृदयका प्रेम-सागर उफनने लगता है। उसकी तरङ्ग रोम-रोमसे प्रस्वेदके रूपमें बाहर आने लगती है। श्रीप्रिया सोचती हैं, "मेरे प्रियतमको मेरे केश सँवारनेसे सुख है तो फिर मैं सङ्कोच क्यों कर रही हूँ? आह! मेरे इस अङ्गके अणु-अणुपर तो प्यारे श्यामसुन्दरका ही अधिकार है।" श्रीप्रियाके हृदयके भाव आँखोंमें आ जाते हैं। पुतलियाँ प्रेममें अधीर होकर कोरोंमें ऊपर-नीचे नाचने लगती हैं। श्रीप्रिया अपना सिर किंचित् नीचा करके वहीं पूर्वकी ओर मुख करके बैठ जाती हैं। प्यारे श्यामसुन्दर समझ जाते हैं कि प्रियाकी मौन सम्मति मिल गयी है। अतिशय उमङ्गके साथ वे कंघी लिये हुए उधर ही बढ़ने लगते हैं।

ENGLISH TRANSLATION

The ocean of love in Priyā's heart overflows, its waves emerging as perspiration from every pore. She thinks, "If combing My hair gives My Beloved joy, why should I hesitate? Ah, every particle of this body belongs to beloved Śyāmasundara." Her heart's feeling enters Her eyes, and Her pupils dance restlessly with love. Slightly bowing Her head, She sits there facing east. Śyāmasundara understands that He has received Her silent consent and advances with the comb in boundless delight.

ORIGINAL

रानीकी वेणीपर कंघी जोरसे झूलती जा रही है, मानो आनन्दमें थिरक-थिरककर नाच रही हो। श्यामसुन्दर श्रीप्रियाके पास आकर खड़े हो जाते हैं। तीन मञ्जरियाँ छोटे-छोटे फूलोंसे भरी हुई तीन डलियाँ लेकर श्यामसुन्दरके पास खड़ी हो जाती हैं। विशाखा राधारानीके सामने खड़ी हैं एवं ललिता रानीकी पीठके पास। ललिता बड़े स्नेहसे रानीके सिरसे अञ्चल हटाकर केशोंको साड़ीके अन्तरालसे निकालकर पैरोंपर फैला देती हैं। श्रीप्रियाके घने-घने केश कमरके पास झूलते हुए पैरोंतक पहुँच रहे हैं। केशोंको बिखेरकर ललिता मुस्कुराती हुई तिरछी चितवनसे श्यामसुन्दरको देखकर कहती हैं, "लो, सँवारो! मैं भी देखूँ, कितना जानते हो।"

ENGLISH TRANSLATION

The comb swings vigorously beside the Queen's braid as though dancing in joy. Śyāmasundara stands near Her. Three mañjarīs come beside Him, each carrying a basket filled with tiny flowers. Viśākhā stands before Rādhārānī and Lalitā behind Her. With loving care Lalitā removes the veil from the Queen's head, draws Her hair out from within the sari, and spreads it over Her legs. Śrī Priyā's dense tresses fall from Her waist to Her feet. Scattering them, Lalitā smiles sidelong at Śyāmasundara and says, "Here, arrange them. Let me see how much You know."

ORIGINAL

श्यामसुन्दर मुख नीचे किये हुए बैठ जाते हैं। दाहिने घुटनेकी ओर बायाँ हाथ रखकर केशोंको टिकाकर सँवारना प्रारम्भ करते हैं। सखियों-मञ्जरियोंमें आनन्दका अथाह समुद्र बहने लगता है। कंघीसे केशोंको सँवारकर श्यामसुन्दर गूँथना आरम्भ करते हैं। वे तीन डलियोंमेंसे लाल, पीले एवं उजले रंगके फूलोंको बारी-बारीसे निकालकर पिरोते जा रहे हैं। ऐसे सुन्दर ढङ्गसे पिरो रहे हैं कि लाल, उजले एवं पीले फूलोंसे 'कृष्ण', 'कृष्ण', 'कृष्ण' लिखा जा रहा है।

ENGLISH TRANSLATION

Śyāmasundara sits with lowered face. Supporting the tresses upon His left hand near His right knee, He begins to comb them. A fathomless ocean of joy flows among the sakhīs and mañjarīs. After smoothing the hair, He begins to braid it, taking red, yellow, and white flowers in turn from the three baskets. He weaves them so beautifully that the blossoms spell "Kṛṣṇa, Kṛṣṇa, Kṛṣṇa."

ORIGINAL

श्रीप्रिया पहलेसे ही प्रेममें डूबती जा रही थीं। अब जब विशाखाके हाथके दर्पणके प्रतिबिम्बपर दृष्टि गयी तथा गूँथे हुए केशोंमें एक स्थानपर 'कृष्ण' लिखा हुआ देख लिया, तब तो वे बिलकुल मूर्च्छित-सी होने लग गयीं। यद्यपि श्यामसुन्दर बड़ी सावधानीसे एवं चतुराईसे केशोंको श्रीप्रियाकी पीठके ठीक बीचमें रखकर गूँथ रहे थे, जिससे गूँथना समाप्त होनेके पहले मेरी प्रिया देख न सके, पर श्रीप्रियाने अपना सिर इधर-उधर हिलाकर जरासा देख ही लिया। देखना था कि प्रेम उमड़ा और प्रिया अर्द्ध-मूर्च्छित होकर श्यामसुन्दरकी ओर लुढ़क पड़ीं। श्यामसुन्दर भी परम अधीर होते जा रहे थे; पर प्रियाकी इस दशाको देखकर उन्होंने अपनेको सँभाला। कुछ क्षण गूँथना स्थगित रहता है। श्रीप्रिया पुनः सामान्य अवस्थामें आ जाती हैं तथा लज्जित होकर पहलेकी तरह बैठ जाती हैं।

ENGLISH TRANSLATION

Śrī Priyā was already sinking into love. When Her gaze falls upon the reflection in Viśākhā's mirror and She sees "Kṛṣṇa" written in the braid, She nearly faints. Śyāmasundara had skillfully kept the hair centered upon Her back so She could not see it before He finished, but by moving Her head She caught a glimpse. Love surged, and She fell half-conscious toward Him. He too was becoming intensely restless, but seeing Her state He composed Himself. The braiding pauses until Śrī Priyā returns to ordinary awareness and shyly resumes Her former seat.

ORIGINAL

प्यारे श्यामसुन्दर कुछ गूँथकर शेष वेणी पूरी कर देते हैं। समाप्त करके वे पुनः एक बार प्यारभरी दृष्टिसे प्रियाकी ओर देखते हुए उठकर खड़े होकर प्रियाके सामने आ जाते हैं। श्रीप्रिया जल्दीसे अपना सिर अञ्चलसे ढककर प्यारे श्यामसुन्दरकी ओर देखकर नीचे देखने लग जाती हैं।

ENGLISH TRANSLATION

Beloved Śyāmasundara completes the remaining braid. When finished, He casts another love-filled glance toward Priyā, rises, and comes before Her. Śrī Priyā quickly covers Her head with Her veil, looks toward Him, and then lowers Her eyes.

ORIGINAL

इसी समय रूपमञ्जरी आनन्दमें डूबकर कहती है, "लो प्यारे श्यामसुन्दर! बाकीका श‍ृङ्गार भी तुम्हीं पूर्ण करो।"

रूपमञ्जरीकी बात सुनकर श्रीप्रियाका हृदय तो पुनः आनन्दसे नाच उठता है, पर आँखोंमें प्यारभरा क्रोध लाकर कहती हैं, "री! बिना पूछे तू तो अच्छी पञ्च बन बैठी!"

रूपमञ्जरी मुँह फेरकर हँसने लग जाती है। श्यामसुन्दर कहते हैं, "हाँ, हाँ, अभी करूँ।"

ENGLISH TRANSLATION

At that moment Rūpamañjarī, immersed in joy, says, "There, beloved Śyāmasundara! You must complete the rest of Her adornment too."

Śrī Priyā's heart dances again, though She brings loving anger into Her eyes and says, "Girl, without asking Me You have appointed yourself quite the arbiter!"

Rūpamañjarī turns away laughing. Śyāmasundara says, "Yes, yes, I shall do it now."

ORIGINAL

जब श्रीश्यामसुन्दर शेष श‍ृङ्गार करने चलते हैं, तभी ललिता कहती हैं, "ना, तुम बहुत देर लगाओगे! जल्दीसे एक-दो और भले कर लो, बाकी हम सब करेंगी।"

श्यामसुन्दर मुस्कुराकर कहते हैं, "अच्छी बात है।"

बड़ी चतुराईसे श्यामसुन्दर कुछ दूरपर पड़ी हुई डलियोंमेंसे तरह-तरहके पुष्पोंकी बनी हुई तीन-चार लड़ियाँ उठा लेते हैं तथा आपसमें एक-दूसरेको उलझाकर पायजेबके आकारके दो आभूषण निर्माण करते हैं। उन आभूषणोंको जहाँसे देखा जाये, वहींसे उनमें 'कृष्ण' लिखा हुआ दीख रहा है।

ENGLISH TRANSLATION

As Śyāmasundara moves to complete the adornment, Lalitā says, "No, You will take far too long! Quickly do one or two more things; we shall do the rest."

He smiles. "Very well."

With great ingenuity He takes three or four strands made of varied flowers from baskets nearby and interweaves them into two anklet-shaped ornaments. From every angle the word "Kṛṣṇa" appears in them.

ORIGINAL

श्यामसुन्दर उन्हें बड़ी चतुराईसे श्रीप्रियाकी एड़ीके पास बाँधने लग जाते हैं। श्रीप्रिया एक बार तो चकित-सी होकर पैर समेटने लगती हैं; पर प्रियतमकी ओर देखकर और यह सोचकर कि मेरे प्रियतमको सुख मिल रहा है, इस भावनासे उस आभूषणको बँधवा लेती हैं। सखियाँ श्यामसुन्दरकी इस कारीगरीको देखकर आश्चर्यमें डूब जाती हैं। आभूषण बाँधकर श्यामसुन्दर एक मञ्जरीके हाथसे काजल-पात्र ले लेते हैं।

ENGLISH TRANSLATION

Śyāmasundara skillfully begins fastening them near Śrī Priyā's heels. Startled, She first draws Her feet back; then, looking toward Her Beloved and thinking that this gives Him pleasure, She allows Him to bind the ornaments. The sakhīs are lost in wonder at His craftsmanship. He then takes the collyrium vessel from a mañjarī.

ORIGINAL

काजल-पात्र ऐसा बना हुआ है कि उसे देखनेवालेको भ्रम हो जाता है मानो सचमुच ही यह एक नवजात मयूर-शावक हो। श्यामसुन्दर अपने दाहिने हाथकी अनामिका अँगुलीमें किंचित् काजल लगा लेते हैं तथा श्रीप्रियाके सामने बैठकर बायें हाथपर श्रीप्रियाके दाहिने कपोलको लेकर बारी-बारीसे दोनों आँखोंमें काजल लगाते हैं। श्रीप्रियाकी आँखें काजल लगाते समय बन्द-सी हो जाती हैं। श्यामसुन्दर प्रतीक्षा करते हैं। खुलनेपर धीरे-धीरे लगा देते हैं। श्रीप्रियाके सारे मुखमण्डलपर लालिमा दौड़ने लगती है। पुतलियाँ बड़ी तेजीसे ऊपर-नीचे, दाहिने-बायें घूमने लग जाती हैं।

ENGLISH TRANSLATION

The collyrium vessel is fashioned so lifelike that one might mistake it for a newborn peacock chick. Śyāmasundara places a little collyrium upon the ring finger of His right hand. Seated before Śrī Priyā, He rests Her right cheek in His left palm and applies it to each eye in turn. Her eyes nearly close whenever He touches them, so He waits for them to open and applies it little by little. A blush spreads across Her entire face, while Her pupils dart swiftly up and down and from side to side.

ORIGINAL

श्यामसुन्दर उठकर खड़े हो जाते हैं। श्रीप्रिया भी हँसती हुई, अञ्चल सँभालती हुई उठकर श्यामसुन्दरका हाथ पकड़ लेती हैं तथा खींचती हुई-सी ले जाकर पलङ्गपर बैठा देती हैं। मञ्जरीके हाथसे कंघी ले लेती हैं तथा अतिशय प्यारके साथ प्यारे श्यामसुन्दरके केश सँवारने लग जाती हैं। उन सुन्दरतम घुँघराली लटोंमें कंघी देकर बड़े सुन्दर ढङ्गसे पीछेकी ओर उन्हें ले जाती हैं तथा बायें हाथसे उन्हें धीरे-धीरे दबा-दबाकर यथास्थान स्थिर करती जा रही हैं। केशोंको सँवारकर पीछेकी ओर दाहिने हाथसे कुछ इशारा करती हैं।

ENGLISH TRANSLATION

Śyāmasundara rises. Laughing and gathering Her veil, Śrī Priyā stands, takes His hand, and almost pulls Him to the bed, where She seats Him. Taking the comb from a mañjarī, She lovingly arranges His hair, drawing the exquisite curling locks backward and gently pressing them into place with Her left hand. When finished, She gestures behind Her with the right.

ORIGINAL

विलासमञ्जरी अत्यन्त सुन्दर पुष्पोंका बना हुआ मुकुट, जिसके बीचमें एक छोटा-सा मयूर-पिच्छ लगा है, रानीके हाथमें दे देती है। प्रेममें दीवानी-सी बनी हुई रानी मुकुटकी ओर देखती हैं। मुकुटके पुष्पोंके प्रत्येक दलमें उन्हें प्यारे श्यामसुन्दरकी छवि दीखती है। वे कुछ चकित-सी होकर जोरसे बोल उठती हैं, "अरे! यह तो अजब बात है।"

रानीकी बात सुनकर श्यामसुन्दर एवं ललिता आदि सखियाँ जोरसे हँसने लगती हैं। उन्हें हँसती देखकर रानीका भाव कुछ शिथिल पड़ जाता है और वे कुछ शरमा-सी जाती हैं। ललिता अतिशय प्यारसे कहती हैं, "मुकुट बाँध दे। हाथमें लिये रहकर न जाने फिर और क्या-क्या देखने लगेगी।"

ENGLISH TRANSLATION

Vilāsamañjarī places in the Queen's hand a beautiful floral crown with a small peacock feather at its center. Maddened by love, the Queen looks at it and sees beloved Śyāmasundara's form in every petal. Astonished, She cries, "Oh! What a marvelous thing!"

Śyāmasundara, Lalitā, and the other sakhīs laugh aloud. Their laughter loosens the Queen's absorption, and She grows shy. Lalitā says lovingly, "Put the crown on Him. If You keep holding it, who knows what else You will begin to see?"

ORIGINAL

विलासमञ्जरीने आज इस चतुराईसे मुकुट बनाया था कि उसपर सर्वत्र 'राधा-राधा' लिखा हुआ दीख रहा था, पर रानीकी आँखें इस बातको लक्ष्य नहीं कर सकीं। रानीने धीरे-धीरे मुकुट बाँध दिया। फिर रानी एक कुन्द-पुष्पको उठाती हैं। केसर-कस्तूरी-चन्दन आदि घिस-घिसकर छोटी-छोटी कटोरियोंमें रखे हुए हैं; उन कटोरियोंमें कुन्द-पुष्पकी डण्डीको डुबा-डुबाकर रानी प्यारे श्यामसुन्दरके कपोलोंपर अत्यन्त सुन्दर तरह-तरहके चित्र बनाती हैं। इधर सखियाँ तरह-तरहके पुष्पोंके आभूषण बनाकर श्यामसुन्दरके अङ्गोंको सजाती जा रही हैं। श्यामसुन्दर श्रीप्रियाकी ओर एकटक देख रहे हैं। चित्र बनाकर श्रीप्रिया आनन्दमें भरकर जोरसे हँस पड़ती हैं।

ENGLISH TRANSLATION

Vilāsamañjarī had crafted the crown so cleverly that "Rādhā, Rādhā" appeared everywhere upon it, though the Queen's eyes did not notice. Slowly She fixes it upon Him. Then, taking a kunda blossom, She dips its stem into small bowls of ground saffron, musk, sandal paste, and other pigments and paints many exquisite designs upon Her beloved Śyāmasundara's cheeks. Meanwhile the sakhīs adorn His limbs with varied floral ornaments. He gazes unwaveringly at Śrī Priyā, who laughs aloud in delight when Her designs are complete.

ORIGINAL

अब ललिता श्रीप्रियाको श्यामसुन्दरके बगल बैठा देती हैं तथा ठीक उसी तरहके चित्र श्रीप्रियाके कपोलोंपर बनाती हैं एवं सखियाँ श्रीप्रियाको पुष्पोंके आभूषणोंसे सजाती हैं। श्रीप्रिया-प्रियतमको सजाकर सभी सखियाँ आनन्द एवं प्रेममें नाचने लग जाती हैं।

ENGLISH TRANSLATION

Lalitā seats Śrī Priyā beside Śyāmasundara and paints matching designs upon Her cheeks, while the sakhīs adorn Her with flower ornaments. Having decorated the Divine Couple, all the sakhīs begin to dance in love and joy.

ORIGINAL

अब सभी सखियाँ एवं मञ्जरियाँ एक-एक कंघी लेकर बड़ी शीघ्रतासे अपने-अपने केश सँवारने लगती हैं। प्रत्येक सखी एवं मञ्जरी यह अनुभव कर रही है कि श्यामसुन्दर मेरे पास आये हैं तथा यह कह रहे हैं, "अच्छी बात है, केश तू अपने हाथसे ही सँवार ले, पर आँखोंमें काजल मैं लगाऊँगा।" सखी अस्वीकार करती है, पर श्यामसुन्दर बहुत आग्रहसे कन्धेको पकड़कर प्रार्थना करते हैं। आखिर सखी प्रेममें विवश होकर अञ्जन लगानेकी सम्मति दे देती है। श्यामसुन्दर अतिशय प्यारसे अञ्जन लगाते हैं। अञ्जन लगाकर श्यामसुन्दर प्रार्थना करते हैं, "अच्छा, वेणी तो अपने हाथसे तुमने बना ही ली, पर मुझे इसमें एक फूल खोंस लेने दो।"

ENGLISH TRANSLATION

All the sakhīs and mañjarīs now take combs and swiftly arrange their own hair. Each experiences Śyāmasundara coming to her and saying, "Very well, arrange your own hair, but I shall apply collyrium to your eyes." The sakhī refuses, yet He takes her shoulder and pleads so earnestly that love overcomes her and she consents. He applies the collyrium with utmost affection, then begs, "You have braided your own hair, but at least let Me place one flower in it."

ORIGINAL

श्यामसुन्दरकी यह प्रार्थना भी सखीको हरा देती है। श्यामसुन्दर अतिशय प्यारसे सबकी वेणीमें एक-दो फूल खोंस देते हैं। यह लीला श्यामसुन्दरने प्रत्येक सखी एवं मञ्जरीके साथ की।

इस प्रकार सज-धजकर सखी-मण्डलीके सहित श्रीप्रिया-प्रियतम तैयार हो जाते हैं। श्रीश्यामसुन्दर अब श्रीप्रिया, सखियों एवं मञ्जरियोंकी ओर देख-देखकर हँस रहे हैं एवं श्रीप्रिया, सखियाँ तथा मञ्जरियाँ श्रीश्यामसुन्दरके मुखारविन्दकी शोभा देखकर विह्वल हो रही हैं।

ENGLISH TRANSLATION

This plea too conquers the sakhī. With great love Śyāmasundara places one or two flowers in each braid. He performs this līlā with every sakhī and mañjarī.

Thus fully adorned, the Divine Couple and Their circle are ready. Śrī Śyāmasundara laughs as He looks from Śrī Priyā to the sakhīs and mañjarīs, while they are overwhelmed by the beauty of His lotus face.

ORIGINAL

इसी समय निकुञ्जसे सम्बद्ध बगलवाले रत्न-महलके दक्षिणी दरवाजेसे वृन्दादेवी निकुञ्जमें प्रवेश करती हैं। यहाँकी शोभा देखकर एक बार तो बिलकुल पत्थरकी मूर्ति-सी स्थिर हो जाती हैं, फिर कुछ क्षण बाद आनन्दमें भरकर ललितासे कहती हैं, "बहिन! सब तैयार है। मैं तुम्हारी बाट देख रही थी। देर होते देखकर मैं किवाड़ खोलकर आ गयी।"

ललिता वृन्दादेवीकी बात सुनकर उनका हाथ पकड़ लेती हैं तथा निकुञ्जके उत्तर तरफके दरवाजेकी ओर चलने लगती हैं। सखी-मण्डलीके सहित श्रीप्रिया-प्रियतम भी ललिताके पीछे-पीछे चलते हैं।

ENGLISH TRANSLATION

At that moment Vṛndādevī enters the bower through the southern door of the adjoining jeweled palace. Seeing the beauty within, she first becomes motionless like a stone image. After a few moments she fills with joy and tells Lalitā, "Sister, everything is ready. I was waiting for you. When I saw the delay, I opened the door and came myself."

Lalitā takes Vṛndādevī's hand and proceeds toward the northern door of the bower. Śrī Priyā and Her Beloved follow with the circle of sakhīs.

ORIGINAL

निकुञ्जके दरवाजेसे लेकर रत्न-महलतक हरी-हरी बेलों एवं लताओंकी टहनियोंके आपसमें गुँथ जानेसे एक सुन्दर पुल अपने-आप बन गया है। पुल तीन गज लम्बा एवं एक गज चौड़ा है। पुलके फर्शपर एक पीली रेशमी चादर बिछी है। उसीपर पैर रखते हुए सखियोंके सहित प्रिया-प्रियतम रत्न-महलमें पहुँच जाते हैं। रत्न-महलकी शोभा तो सर्वथा अवर्णनीय है। इसका आकार इस ढङ्गका है:

ENGLISH TRANSLATION

From the bower door to the jeweled palace, interwoven branches of green vines and creepers have naturally formed a beautiful bridge. It is three yards long and one yard wide, with a yellow silk cloth spread across its floor. Treading upon it with the sakhīs, Priyā and Her Beloved reach the jeweled palace, whose splendor is wholly beyond description. Its arrangement is as follows:

ORIGINAL

प्रिया-प्रियतम महलके पहले कमरेको पार करके मध्यस्थित आलीशान कमरेमें जा पहुँचते हैं। कमरा अनिर्वचनीय सुन्दर ढङ्गसे सजा है। कमरेके पूर्वी हिस्सेमें सोनेकी परात, सोनेकी बटलोइयाँ, जलसे भरी झारियाँ, गिलास, पत्तोंके बने हुए दोने एवं तराशे हुए फल सजा-सजाकर रखे हुए हैं। वृन्दादेवीकी बहुत-सी दासियाँ अभी भी तरह-तरहके फल तराशनेमें लगी हैं, कुछ सजा रही हैं। कमरेके बीचमें सुन्दर मखमली आसन नीचे बिछा हुआ है। आसनके आगे सोनेकी तीन चौकियाँ एक कतारमें रखी हुई हैं। वे चौकियाँ एक बित्ताभर ऊँची, डेढ़ हाथ चौड़ी तथा डेढ़ हाथ लम्बी हैं। कमरेकी दक्षिणी दीवालके पास मखमलका गद्दा बिछा हुआ है। उसीपर सखियोंके सहित श्रीप्रिया-प्रियतम आकर खड़े हो जाते हैं।

ENGLISH TRANSLATION

The Divine Couple passes through the palace's first chamber into the magnificent central room. It is adorned with indescribable beauty. In its eastern section are arranged golden trays and cooking vessels, ewers filled with water, glasses, leaf bowls, and carved fruit. Many of Vṛndādevī's maidservants are still carving different fruits while others arrange them. A beautiful velvet seat lies in the center. Before it stand three golden tables in a row, each about a span high, one and a half cubits wide, and one and a half cubits long. Near the southern wall lies a velvet cushion, and upon it Śrī Priyā and Her Beloved come to stand with the sakhīs.

CHAPTER 8

फलभोजन लीला

The Fruit Feast Līlā

Source scan pages 84–94

ORIGINAL

Sanskrit invocation

॥ विजयेतां श्रीप्रियाप्रियतमौ ॥

ENGLISH TRANSLATION

May Śrī Priyā and Her most beloved Lord be ever victorious.

ORIGINAL

फलभोजन लीला

श्रीश्यामसुन्दर आसनपर बैठे हुए फल-भोजन कर रहे हैं। श्रीश्यामसुन्दरका मुख इस समय दक्षिणकी तरफ है एवं श्रीराधारानी ठीक उनके सामने उत्तरकी ओर मुख किये हुए बैठी हैं। श्रीप्रियाजीकी दक्षिणकी तरफ कुछ दूरपर ललिता खड़ी रहकर मञ्जरियोंके हाथसे फलोंसे भरी हुई तश्तरियाँ ले-लेकर श्रीप्रियाको पकड़ाती जा रही हैं। विशाखा श्रीप्रियाकी बाँयी तरफ खड़ी हैं। उनके हाथमें फूलोंका अत्यन्त सुन्दर बना हुआ पंखा है। फलोंकी तश्तरियोंसे भरी हुई जो परात है, उसमें फलकी तश्तरीकी ओर देखकर, जो फल प्यारे प्रियतमको खिलानेकी इच्छा होती है, वही फल श्रीप्रिया मन्द-मन्द मुसकराती हुई श्यामसुन्दरके सामने रख देती हैं।

ENGLISH TRANSLATION

The Fruit Feast Līlā

Śrī Śyāmasundara sits upon a seat enjoying a feast of fruit. He faces south, while Śrī Rādhārānī sits directly before Him facing north. A short distance to Śrī Priyā's south, Lalitā stands receiving platters filled with fruit from the mañjarīs and passing them to Her. Viśākhā stands to Priyā's left holding an exquisitely fashioned fan of flowers. A large tray is filled with small dishes of fruit. Priyā looks among them, chooses whichever fruit She wishes to feed Her beloved, and places it before Śyāmasundara with a gentle smile.

ORIGINAL

इस समय श्यामसुन्दरके हाथमें प्यालेके आकारका, पर प्यालेसे कुछ बड़ा अत्यन्त सुन्दर गिलास है, जिसमें किसी फलका पीले रंगका रस है। श्यामसुन्दर गिलासको पकड़े हुए होठोंसे कुछ दूरपर ही रखकर श्रीप्रियाकी मुख-शोभा निहार रहे हैं तथा मन्द-मन्द मुसकरा रहे हैं। श्रीप्रिया कभी तो श्यामसुन्दरके मुखकी ओर देखती हैं और कभी सामनेकी तश्तरियोंकी ओर। श्रीप्रिया बायें हाथसे समय-समयपर ललिताकी पकड़ायी हुई तश्तरियोंको पकड़ लेती हैं तथा उसमेंसे फलका जो खण्ड बड़ा ही सरस प्रतीत होता है, उसे निकालकर परातकी किसी तश्तरीमें रख देती हैं।

श्रीप्रियाको देखते हुए कुछ देर लगा देनेपर प्रायः सभी सखियाँ एवं दासियाँ श्यामसुन्दरकी ओर ताकती हुई हँसने लग जाती हैं। श्यामसुन्दर भी हँस पड़ते हैं। श्रीप्रिया कुछ चकित-सी होकर पीछे देखने लग जाती हैं कि ये सब हँस क्यों रही हैं? प्रियाको हँसनेका कोई भी कारण समझमें नहीं आता है, अतः पुनः श्यामसुन्दरकी ओर देखने लग जाती हैं। अभी भी श्यामसुन्दर उसी तरह गिलासको होठोंसे कुछ दूरपर ही रखे रहते हैं।

ENGLISH TRANSLATION

Śyāmasundara holds a beautiful glass shaped like a cup but somewhat larger, filled with the yellow juice of some fruit. Keeping it a little away from His lips, He gazes upon the beauty of Priyā's face and smiles softly. Priyā looks now at His face and now at the dishes before Her. From time to time She takes with Her left hand a dish passed by Lalitā, selects the piece that appears most succulent, and transfers it to one of the dishes in the large tray.

When Śyāmasundara remains absorbed in looking at Priyā for some time, nearly all the sakhīs and maidservants glance at Him and begin to laugh. He laughs too. Startled, Priyā looks behind Her to discover why they are laughing. Finding no reason, She turns again toward Śyāmasundara. He still holds the glass just as before, a little away from His lips.

ORIGINAL

श्रीप्रिया रूपमञ्जरीको कुछ इशारा करती हैं। रूपमञ्जरी बायें हाथमें सुवर्णका कटोरा एवं दाहिने हाथमें जलसे भरी हुई छोटी झारी लिये आ पहुँचती है। श्रीप्रियाके पास दाहिनी तरफ कटोरा रख देती है। श्रीप्रिया उसीमें हाथ धोती हैं। रूपमञ्जरी पानी देती जाती है। हाथ धोकर श्यामसुन्दरके हाथका गिलास पकड़ लेती हैं तथा उसे धीरे-धीरे प्रियतमके होठोंसे लगा देती हैं।

श्यामसुन्दर एक साथ जल्दी-जल्दी चार-पाँच घूँट फलका रस पीकर सिर ऊपर उठा लेते हैं। श्रीप्रिया अब बड़ी तेजीसे परातमेंसे संतरेका एक खण्ड उठा लेती हैं तथा बायें हाथमें उस प्यालेको थामे हुए दाहिने हाथसे वह खण्ड श्यामसुन्दरके मुँहमें रख देती हैं। श्यामसुन्दर उस खण्डको शान्तिसे मुँहमें रख लेते हैं।

ENGLISH TRANSLATION

Priyā signals to Rūpamañjarī. Rūpamañjarī approaches with a golden bowl in her left hand and a small ewer of water in her right, and sets the bowl on Priyā's right. As Rūpamañjarī pours, Priyā washes Her hands. She then takes the glass from Śyāmasundara's hand and gently brings it to Her beloved's lips.

Śyāmasundara quickly drinks four or five swallows of the fruit juice and lifts His head. At once Priyā takes a segment of orange from the large tray. Still holding the glass in Her left hand, She places the segment in His mouth with Her right, and He receives it peacefully.

ORIGINAL

अब प्रिया चित्राको पुनः इशारा करती हैं। चित्रा कुछ दूरपर बैठी हुई फलोंको तश्तरियोंमें भर रही थीं। वह उठकर कटोरेमें एक विशेष पेय लाती हैं और रानीके हाथमें पकड़ा देती हैं। यह विशेष पेय कटहलका रस निकालकर एवं अन्यान्य मसाले-मिश्री मिलाकर बनाया गया है। रानी कहती हैं, "लो, यह मेरी प्यारी चित्राकी बनायी हुई बिलकुल नये नमूनेकी चीज है। इसे कम-से-कम आधा अवश्य पी जाना।"

श्यामसुन्दर कटोरा पकड़ लेते हैं। चित्रा कुछ शरमा जाती हैं, पर राधारानी बड़ी उत्कण्ठासे प्यारेके मुखारविन्दकी ओर देखने लग जाती हैं। मनमें यह लालसा है कि प्यारे श्यामसुन्दर समूचे कटोरेका रस पी जाते तो फिर तुरंत उस कटोरेको भर देती। इसलिये रानीका स्नेहभरा हृदय उफनने लगता है। श्यामसुन्दरने अभी उस पनस-रसको पीना शुरू भी नहीं किया है कि रानी एक और दूसरा कटोरा लानेकी आज्ञा दे देती हैं। आज्ञाकी देर थी कि विलासमञ्जरी एक और कटोरा तुरंत रानीके हाथमें पकड़ा देती है।

श्रीप्रियाके इस आन्तरिक प्रेमभावको लक्ष्य करके श्यामसुन्दर प्रेममें डूबने लग जाते हैं; पर उन्हें एक विनोद सूझ पड़ता है।

ENGLISH TRANSLATION

Priyā next signals to Citrā, who has been sitting a little distance away arranging fruits in dishes. Citrā rises, brings a special drink in a bowl, and places it in Rādhā's hands. It has been prepared by extracting the juice of jackfruit and blending it with spices and crystallized sugar. Rādhā says, “Here, this is an entirely new preparation made by my dear Citrā. You must drink at least half of it.”

Śyāmasundara accepts the bowl. Citrā grows bashful, while Rādhārānī watches His lotus face with eager longing. She hopes that He will drink the whole bowl, so that She may fill it again at once, and Her affectionate heart begins to overflow. Before He has even begun drinking the jackfruit juice, She orders another bowl to be brought. The command is barely given when Vilāsamañjarī places a second bowl in Her hand.

Perceiving Priyā's inward love, Śyāmasundara begins to drown in affection, yet a playful idea comes to Him.

ORIGINAL

श्यामसुन्दर कहते हैं, “हाँ, तब पहले तू पीना शुरू कर। तू जितना-जितना पीती जायेगी, मैं भी उतना-ही-उतना पीता जाऊँगा। अच्छा हुआ, मेरी इच्छा जानकर तुमने अपने आप कटोरा मँगवा लिया।”

श्रीप्रिया अब तो विचारमें पड़ जाती हैं; पर तुरंत अपना भाव सँभालकर कहती हैं, “कटोरा तो इसलिये मँगवाया था कि कहीं मधुमङ्गल अचानक आ गया तो फिर वह तुमसे लड़ेगा कि वाह! अकेले-अकेले उड़ाते हो? उस समय मैं तुम्हें यह कहकर बचा दूँगी कि नहीं, देख! श्यामसुन्दरने एक कटोरा बहुत पहलेसे ही तुम्हारे लिये रख छोड़ा है।”

श्यामसुन्दर कहते हैं, “नहीं, मधुमङ्गल आज नहीं आयेगा। उसे मैंने दूसरे कामसे भेजा है। चित्राकी बनायी हुई चीजको मैं तुम्हारे बिना पिऊँ, यह कैसे हो सकता है?”

रानीने बहुत टाल-मटोल की; पर श्यामसुन्दरने बड़ी चतुराईसे रानीकी प्रत्येक बातको हँसीमें उड़ा दिया। रानी सिर नीचा करके सोचने लगती हैं कि क्या करूँ? वे श्यामसुन्दरको आँखोंसे कुछ इशारा करती हैं, पर श्यामसुन्दर सिर हिलाकर ‘ना’ का भाव प्रकट करते हैं। फिर रानी विनयके स्वरमें कहती हैं, “अच्छा, तुम पहले रस पी लो एवं अन्यान्य फल खा लो, फिर मैं रस पी लूँगी।”

रानीकी बात सुनकर श्यामसुन्दर एक बार तो आँखें मूँदकर कुछ क्षणतक सोचते रहते हैं, फिर कहते हैं, “अच्छा, यही सही है। भला, पलट मत जाना।”

रानी जल्दीसे कहती हैं, “ना, नहीं पलटूँगी।”

ENGLISH TRANSLATION

Śyāmasundara says, “Then you must begin drinking first. I shall drink only as much as you drink. How fortunate that, knowing my wish, you had a bowl brought for yourself.”

Priyā is caught in thought, but quickly regains Her composure. “I had the bowl brought in case Madhumaṅgala suddenly arrives. He would quarrel with You, saying, ‘Bravo! You feast all alone?’ Then I could protect You by telling him, ‘No, look! Śyāmasundara set aside this bowl for you long ago.’”

Śyāmasundara replies, “No, Madhumaṅgala will not come today. I sent him on another errand. How could I drink Citrā's preparation without you?”

Rādhā tries many evasions, but Śyāmasundara cleverly laughs every one of them away. Lowering Her head, She wonders what to do. She signals to Him with Her eyes, but He shakes His head in refusal. At last She pleads, “Very well. First drink the juice and eat the other fruits. Then I shall drink it.”

Śyāmasundara closes His eyes and reflects for a few moments. “Very well, let it be so. But do not go back on your word.”

She quickly answers, “No, I shall not.”

ORIGINAL

अब श्यामसुन्दर उस कटोरेसे रस पीते हैं। आधा पीकर परातमें रख देते हैं। अब रानी परातकी प्रत्येक तश्तरीमें हाथ डालती हैं तथा एक-एक खण्ड प्यारे श्यामसुन्दरके मुखमें देती चली जाती हैं। श्यामसुन्दर अपनी प्रियाका प्रेमसे भरा हुआ वह प्रसाद पाते हैं। आम, जामुन, सेब, लीची, अनन्नास, कदली, अमरूद, बेर, मकोय, पीलू, अँगूर, सिंघाड़ा, शहतूत आदि क्रमशः प्रिया श्यामसुन्दरके मुखमें देती जाती हैं और श्यामसुन्दर खाते जाते हैं। कुछ ऐसे विचित्र-विचित्र फल हैं, जिनसे अत्यन्त मधुर अनिर्वचनीय सुगन्धि निकल रही है। सारा कमरा उस सुगन्धिसे सुवासित हो रहा है। श्रीप्रिया एक-एक करके सब नमूनोंमेंसे थोड़ा-थोड़ा उठाती हैं और प्यारेके मुखमें देकर प्रेममें डूब जाती हैं।

श्यामसुन्दर खाते हुए स्वयं भी प्रेममें इतने विवश हैं कि उन्हें यह ज्ञान नहीं कि मैं क्या खा रहा हूँ और कितना खा रहा हूँ? श्रीप्रिया भी प्यारेके मुखमण्डलपर दृष्टि टिकाये यन्त्रकी भाँति तरह-तरहके फलका खण्ड उठाती चली जाती हैं। अवश्य ही तनिक भी भूल अबतक नहीं हुई है, अर्थात् श्रीप्रियाने बराबर नयी-नयी तश्तरीमें ही हाथ डाला है।

ENGLISH TRANSLATION

Śyāmasundara now drinks from the bowl, consumes half, and sets it in the large tray. Rādhā reaches into each dish in turn and feeds Him one piece after another. He receives this prasāda saturated with His beloved's love. In succession She places mango, jambu fruit, apple, lychee, pineapple, banana, guava, jujube, black nightshade berries, pīlū berries, grapes, water chestnut, mulberry, and other fruits into His mouth, and He continues eating. Some fruits are strange and unfamiliar, releasing an indescribably sweet fragrance that perfumes the entire room. Priyā takes a little from every variety in turn, places it in Her beloved's mouth, and sinks into love.

Śyāmasundara is Himself so overcome with love as He eats that He no longer knows what He is eating or how much. With Her gaze fixed on His face, Priyā continues like an automaton to pick up pieces of many fruits. Not the slightest mistake has yet occurred, for each time Her hand has entered a fresh dish.

ORIGINAL

पर इतनी देरतक प्यारेके मुखमण्डलपर दृष्टि टिकाये रहनेके कारण महाभावस्वरूपा श्रीप्रिया अब यह ज्ञान खो बैठती हैं कि मैं राधा हूँ। श्रीप्रियाका मन प्यारे श्यामसुन्दरमें इतना तल्लीन हो जाता है कि वे स्वयं अपनेको श्यामसुन्दर मान बैठती हैं। श्रीप्रिया सोचती हैं, “मैं श्यामसुन्दर हूँ।” इसलिये ही इस बार हाथ श्यामसुन्दरके होठोंके पास नहीं ले जाकर फलका टुकड़ा अपने होठोंके पास ले जाती हैं। श्रीप्रियाकी यह प्रेमावस्था देखकर सखियाँ एक बार तो प्रेमसे मूर्छित-सी होने लगती हैं; पर बड़ी मुश्किलसे अपनेको सँभाल लेती हैं।

इधर प्यारे श्यामसुन्दर श्रीप्रियाके मुखपर लगातार दृष्टि जमाये रखनेके कारण यह ज्ञान खो बैठते हैं कि मैं श्यामसुन्दर हूँ। वे समझने लग जाते हैं कि मैं राधा हूँ, सामने श्यामसुन्दर हैं। हाथमें फलका टुकड़ा लिये हुए मेरे हाथकी प्रतीक्षा कर रहे हैं कि प्रिया मुझे खिला दे। इसी भावसे उधर हाथ बढ़ाते हैं। बड़ी सुन्दर झाँकी है। भावावेशमें श्रीप्रिया फलका खण्ड हाथमें लेकर अपने होठोंके पास रखे हुए पत्थरकी मूर्तिकी तरह श्यामसुन्दरकी ओर ताक रही हैं और श्यामसुन्दर श्रीप्रियाकी दाहिनी कलाईके पास अपने दाहिने हाथकी अँगुली रखे हुए पत्थरकी मूर्ति बने बैठे हैं।

श्रीप्रिया-प्रियतमकी इस दशाकी ओर लक्ष्य करके अब सखियाँ कुछ चिन्तित-सी भी हो जाती हैं। ललिता एवं विशाखा आपसमें विचार करती हैं कि भावावेशको शिथिल कर देना अच्छा रहेगा, नहीं तो पता नहीं, कोई अनिष्ट घटना न हो जाये। इस विचारसे ही विशाखा मधुमती मञ्जरीको कुछ इशारा करती हैं। मधुमती मञ्जरी बड़ी फुर्तीसे वीणा उठा लेती है तथा मधुर कण्ठसे गाना आरम्भ करती है:

ENGLISH TRANSLATION

Yet after keeping Her gaze upon Her beloved's face for so long, Śrī Priyā, the very embodiment of mahābhāva, loses the awareness that She is Rādhā. Her mind becomes so absorbed in beloved Śyāmasundara that She takes Herself to be Him. Thinking, "I am Śyāmasundara," She brings the next piece of fruit not to His lips but to Her own. Seeing this state of love, the sakhīs nearly faint in affection, but with great difficulty regain control of themselves.

At the same time, because Śyāmasundara has kept His gaze continuously fixed upon Priyā's face, He too loses the awareness that He is Śyāmasundara. He believes Himself to be Rādhā and sees Śyāmasundara before Him, waiting for Priyā's hand to feed Him the piece of fruit it holds. In that mood He reaches toward Her hand. The vision is exquisite: overcome with divine emotion, Priyā remains like a stone image, holding the fruit near Her own lips and gazing at Śyāmasundara, while He sits equally still with the finger of His right hand resting near Her right wrist.

Observing Their state, the sakhīs become somewhat anxious. Lalitā and Viśākhā agree that it would be best to soften the intensity of Their ecstasy, lest some harm occur. Viśākhā therefore signals to Madhumatī Mañjarī. With great agility Madhumatī takes up the vīṇā and begins to sing in a sweet voice:

ORIGINAL Braj Bhāṣā song

रीझि रीझि रहसि रहसि हँसि हँसि उठें,

साँस भरि आँसू भरि कहत दई दई।

चौंकि चौंकि चकि चकि औनकि उचकि 'देव',

छकि छकि बकि बकि पूरन बई बई॥

दोऊको रूप गुन दोऊ बरनत फिरें,

घर न बिरात रीति नेहकी नई नई।

मोहि मोहि मोहनको मन भयो राधामय,

राधा मन मोहि मोहि मोहनमई मई॥

ENGLISH TRANSLATION

Delighted again and again, secretly smiling and laughing, They rise,

filling Their breath and eyes with tears, crying, "Ah me, ah me!"

Startled again and again, spellbound and suddenly lifted up, says Deva,

intoxicated, babbling, and wholly absorbed, They became complete in one another.

Each wanders describing the beauty and virtues of the other,

finding no rest at home, for love's ways are ever new.

Enchanted again and again, Mohana's mind became filled with Rādhā,

and Rādhā's mind, enchanted by Mohana, became wholly made of Him.

ORIGINAL

संगीत प्रारम्भ होनेपर उसकी मधुर स्वर-लहरी निकुञ्जमें गूँजने लग जाती है। मधुमती मञ्जरीका कण्ठ आज असीम रूपसे मधुर हो गया है। दो कड़ी गाते ही श्रीप्रिया-प्रियतमकी पुतलियाँ, जो बिलकुल स्थिर दीख रही थीं, वे एक-दो बार ऊपर-नीचे घूम जाती हैं तथा पलक गिरकर आँखें बंद हो जाती हैं। उसी भावावेशमें संगीतके अनुरूप भावसे श्रीप्रिया-प्रियतम अब अभिभावित होने लगते हैं।

श्रीप्रिया देख रही हैं, "मैं किसी ग्वालिनके घरपर लाड़का बायना देने गयी हूँ। ग्वालिन श्यामसुन्दरके पीताम्बरकी तरह ओढ़नीको लपेटे हुए है। उसे देखकर मैं बिलकुल श्यामसुन्दरके ध्यानमें तल्लीन होकर हँस रही हूँ, बड़बड़ा रही हूँ। कभी छाती पीटकर रोने लग जाती हूँ। बावलीकी तरह दौड़कर अपने हाथके लाड़का बर्तन वहीं पटक देती हूँ तथा उसके घरका एक मटका उठाकर ले भागती हूँ। ग्वालिन मेरी दशा देखकर मुझे दुलार रही है और पूछ रही है कि बहिन, तुझे क्या हो गया है? अरे! तू तो बिलकुल बावली-सी दीख रही है। मैं उसे जवाब दे रही हूँ कि मोहि! क्या ही रूप है! बहिन! तू बता सकेगी, श्यामसुन्दर इतने सुन्दर क्यों हैं? आह! उन्हें इतना मधुर बोलना किसने सिखाया? बता दे बहिन!

"मेरी बात सुनकर ग्वालिन मेरा हाथ पकड़कर कह रही है कि चल, मैं तुझे घर पहुँचा आऊँ। तू होशमें नहीं है। इतना कहकर वह ग्वालिन मेरा हाथ पकड़े हुए चल रही है; पर मेरे शरीरका आकार बिलकुल बदल गया है। मैं बिलकुल श्यामसुन्दरकी-सी दीख रही हूँ। साड़ीके बदले मेरे ऊपर पीताम्बर है, चूड़ेके बदले मोर-मुकुट है। मैं गोरीसे बिलकुल साँवली बन गयी हूँ।"

ENGLISH TRANSLATION

As the music begins, its sweet waves of melody fill the bower. Madhumatī Mañjarī's voice has become boundlessly sweet today. After two stanzas, the pupils of Priyā and Her beloved, which had appeared utterly motionless, move once or twice up and down. Their lids then fall and Their eyes close. Still immersed in the same ecstasy, They begin to be possessed by the moods corresponding to the song.

Priyā sees this vision: “I have gone to a cowherd woman's home to deliver a ceremonial gift of sweets. She has wrapped her veil around herself like Śyāmasundara's yellow garment. On seeing her I become completely absorbed in meditation upon Him. I laugh and mutter, and at times beat my breast and weep. Running about like a madwoman, I throw down the vessel of sweets I was carrying, seize a clay pot from her house, and flee with it. Seeing my condition, the cowherd woman caresses me and asks, ‘Sister, what has happened to you? Oh, you look completely mad.’ I reply, ‘My dear, what beauty He has! Sister, can you tell me why Śyāmasundara is so beautiful? Ah, who taught Him to speak with such sweetness? Tell me, sister!’

“Hearing me, she takes my hand and says, ‘Come, I shall bring you home. You are not in your senses.’ She leads me by the hand, but the form of my body has changed completely. I look exactly like Śyāmasundara. In place of my sari I wear His yellow cloth, and in place of my bridal ornament I wear a peacock-feather crown. My fair complexion has become utterly dark.”

ORIGINAL

इधर श्यामसुन्दर संगीतके भावसे आविष्ट होकर यह अनुभव कर रहे हैं, “गायें चरानेके लिये मैं वनमें जा रहा हूँ। गोष्ठके बाहर निकलते ही मेरी प्रिया मुझे मिल गयी हैं। प्रिया अञ्चलमें फूल बीन-बीनकर रख रही हैं। सिरसे अञ्चल खिसककर पीठपर आ गया है। नागिन-सी वेणी पीछे नाच रही है। मैंने ताली बजाकर प्रियाको इशारा किया है। इशारा करते ही प्रियाने मेरी ओर तिरछी चितवनसे देखा है। देखते ही मेरा हृदय बिंध-सा गया है। मैं जोरसे कह रहा हूँ कि आह! आह!... तुरंत मेरी प्रिया झाड़ीमें छिप जाती हैं। मेरी आँखें भर आयी हैं। मैं कलेजा थामकर वहीं बैठ गया हूँ। मधुमङ्गल, सुबल, अंश, स्तोक आदि सखा घबराये हुए-से पूछ रहे हैं कि क्यों भैया! क्या हुआ है? तुझे ऐसा हमने कभी नहीं देखा।

“मैं उनसे कह रहा हूँ कि अंश! तुमने कभी करोड़ों चन्द्रमाओंको एक साथ उदय होते देखा है? अंश उत्तर देता है कि नहीं। मैं कह रहा हूँ कि अच्छा! देख, करोड़ ही नहीं, असंख्य चन्द्र-बिम्बोंमें जो शोभा है, वह भी फीकी पड़ जाये, ऐसी शोभा मैंने अभी-अभी उस झाड़ीके पास देखी है। अंश आश्चर्यमें भरा हुआ पूछता है कि किसकी शोभा? मैं कह रहा हूँ कि ‘रा... रा... रा...’। मैं चाहता हूँ कि प्रियाका नाम उच्चारण करूँ, पर बोली वक्र-सी हो गयी है।

“इसी समय मेरी प्रियाकी मधुर कण्ठध्वनि हमें सुन पड़ती है। मेरा हृदय नाचने लगता है। मैं चाहता हूँ कि ठीकसे बोलकर सखाओंको समझाऊँ, पर कुछका कुछ बोल जाता हूँ। मैं पागलकी तरह रटने लगता हूँ कि ‘मृग मन करत सिकार! मृग मन करत सिकार!’ मेरे शरीरका आकार बदल गया है। मैं बिलकुल प्रियाके आकारका हूँ।”

ENGLISH TRANSLATION

Meanwhile, possessed by the song's mood, Śyāmasundara experiences this: “I am going to the forest to graze the cows. As soon as I leave the cowherd settlement, I meet my beloved. She is gathering flowers into the fold of Her garment. Its end has slipped from Her head onto Her back, and Her serpentlike braid dances behind Her. I clap to signal Her. The moment I do, She casts a sidelong glance toward me, and my heart is pierced. I cry aloud, ‘Ah! Ah!’ At once my beloved hides in a bush. My eyes fill with tears, and clutching my heart I sit down there. Madhumaṅgala, Subala, Aṁśa, Stoka, and the other friends anxiously ask, ‘Brother, what happened? We have never seen you like this.’

“I ask Aṁśa, ‘Have you ever seen millions of moons rise at once?’ He answers no. I say, ‘Then listen. Not merely millions, but even the beauty of countless lunar orbs would fade before the beauty I saw beside that bush just now.’ Filled with wonder, Aṁśa asks whose beauty it was. I try to say, ‘Rā... Rā... Rā...’ I wish to pronounce my beloved's name, but my speech has become twisted.

“Just then we hear my beloved's sweet voice. My heart begins to dance. I try to speak properly and explain to my friends, but one confused phrase emerges after another. Like a madman I repeat, ‘The doe hunts the hunter's heart! The doe hunts the hunter's heart!’ The form of my body has changed. I have assumed the very form of my beloved.”

ORIGINAL

इस तरह प्रिया-प्रियतम मधुमती मञ्जरीके संगीतकी धारामें बह रहे हैं। मधुमती कोकिल-कण्ठसे अन्तिम कड़ीकी बार-बार आवृत्ति कर रही है, “मोहि मोहि मोहनको मन भयो राधामय, राधा मन मोहि मोहि मोहनमई मई।” इस चरणकी आवृत्ति सुनकर दोनों ही सोचने लगते हैं कि मानो कोई मुझे जगा रहा है। श्यामसुन्दर सोचते हैं कि श्लोक कहता है, बिलकुल ठीक। प्रियाके ध्यानके कारण मैं मोहित हो गया हूँ, इसीलिये मेरी आँखें अपने शरीरको नहीं देख पा रही हैं। श्रीप्रिया भी यही सोच रही हैं कि सच है, बिलकुल सच। प्यारे श्यामसुन्दरने आँखोंको छा लिया है, इसीलिये ही भ्रमवश मुझे अपना आकार श्यामसुन्दरकी तरह दीख रहा है।

मधुमतीको विशाखा इशारा करती हैं। इशारा पाते ही तत्क्षण मधुमती संगीत बंद कर देती है। संगीत बंद होते ही निकुञ्जमें एक गम्भीर सन्नाटा छा जाता है। प्रिया-प्रियतम दोनों एक साथ ही आँखें खोल देते हैं। आँखें खोलकर अकचकाये हुए दोनों इधर-उधर देखने लग जाते हैं। अब सखियाँ हँस पड़ती हैं। प्रिया-प्रियतम दोनों अपनी आवेशपूर्ण दशाका स्मरण करके कुछ झेंप-से जाते हैं। पर श्यामसुन्दर तुरंत ही खिलखिलाकर हँस भी पड़ते हैं तथा कहते हैं, “वाह! तुमने तो मुझे खूब छकाया। फल खिलाते-खिलाते मुझपर जादू कर बैठी। ठीक बात है, इसीलिये ही शास्त्रोंमें नीची दृष्टि करके मौन रहकर भोजन करनेका विधान है।”

श्यामसुन्दरकी बात सुनकर सखियाँ हँसने लगती हैं। श्रीप्रिया भी हँसने लगती हैं।

ENGLISH TRANSLATION

Thus Priyā and Her beloved are carried upon the current of Madhumatī Mañjarī's song. In her cuckoolike voice Madhumatī repeats its final couplet again and again: "Enchanted again and again, Mohana's mind became filled with Rādhā, and Rādhā's mind, enchanted by Mohana, became wholly made of Him." Hearing this refrain, They both feel as though someone were awakening Them. Śyāmasundara thinks, "The verse is perfectly true. Meditation upon my beloved has enchanted me, and therefore my eyes cannot perceive my own body." Priyā similarly thinks, "It is true, entirely true. Beloved Śyāmasundara has covered my eyes. That alone is why in confusion my form appears like His."

Viśākhā signals to Madhumatī, who immediately stops singing. A solemn silence fills the bower. Priyā and Her beloved open Their eyes together and look around in bewilderment. The sakhīs laugh. Remembering Their ecstatic condition, the divine pair become somewhat abashed. Śyāmasundara quickly bursts into laughter, however, and says, "Bravo! You thoroughly confounded Me. While feeding Me fruit, You cast a spell upon Me. Now I understand why the scriptures prescribe eating in silence with one's gaze lowered."

The sakhīs laugh at His words, and Priyā laughs with them.

ORIGINAL

अब श्यामसुन्दर पनस-रसका वह कटोरा उठा लेते हैं। उसे श्रीप्रियाके ओठोंके पास ले जाकर कहते हैं, "देख, अब बात स्थिर हो चुकी है। मैं फल खा चुका। अब तुझे किंचित् पीना ही पड़ेगा।"

श्रीप्रिया शरमायी हुई-सी प्रियतमकी ओर ताकती हुई एक घूँट रस पी लेती हैं तथा धीरेसे कहती हैं, "मैं पीछे पी लूँगी, मान जाओ।"

श्यामसुन्दरका मुख प्रसन्नतासे भर जाता है। वे मधुर कण्ठसे बहुत धीरेसे प्रियाके मुखके पास झुककर कहते हैं, "अस्तु!" और फिर जोरसे हँसने लग जाते हैं। कटोरा परातमें रखकर उठ पड़ते हैं। श्रीप्रिया भी उठ पड़ती हैं। वहाँसे उठकर पूर्वकी ओर चार-पाँच कदम चलकर एक चौकीपर बैठ जाते हैं, जो सुन्दर ढंगसे सजायी हुई रखी है। रूपमञ्जरी झारी लेकर आ पहुँचती है। रतिमञ्जरीके हाथमें चौड़े मुँहका सुन्दर गमला है। उसमें रानी प्यारे श्यामसुन्दरके हाथ धुलाती हैं। फिर कुल्ले कराकर अपने अञ्चलसे हाथ पोंछती हैं। श्यामसुन्दर प्रेममें भरे रहकर रानी जैसे-जैसे करती जा रही हैं, वैसे-वैसे करने दे रहे हैं।

ENGLISH TRANSLATION

Śyāmasundara now lifts the bowl of jackfruit juice, brings it to Priyā's lips, and says, “See, our agreement is settled. I have finished the fruit. Now you must drink at least a little.”

Looking bashfully at Her beloved, Priyā takes one swallow and softly says, “I shall drink it later. Please accept that.”

Śyāmasundara's face fills with delight. Bending close to Her face, He says very softly in His sweet voice, “So be it!” Then He laughs aloud, returns the bowl to the tray, and rises. Priyā rises too. They walk four or five steps east and He sits upon an attractively decorated stool. Rūpamañjarī arrives with an ewer, while Ratimañjarī holds a beautiful wide-mouthed basin. Rādhā washes beloved Śyāmasundara's hands over it, has Him rinse His mouth, and wipes His hands with the end of Her garment. Filled with love, He submits to everything She does.

ORIGINAL

हाथ पोंछकर रानीमें एक गम्भीर उल्लास हिलोरें मारने लगता है। वे प्यारे श्यामसुन्दरका हाथ पकड़कर उत्तरी दिशावाले दरवाजेकी ओर चल पड़ती हैं। वहाँसे रत्न-महलके उत्तरी कमरेमें आती हैं, फिर उत्तरी निकुञ्जमें। फिर उसे भी पारकर उत्तरकी तरफ सुन्दर रविश (छोटी सड़क) पर चलने लगती हैं।

सड़कके किनारे दोनों ओर बेला-फूलके सुन्दर वृक्ष लगे हैं, जिनमें बड़े-बड़े बेलेके फूल खिल रहे हैं। बेलेकी क्यारीकी एक कतारके बाद दूसरी कतार मेंहदीकी है, जिसमें बड़ी सुन्दर मञ्जरियाँ एवं पुष्प लग रहे हैं। उसी सड़कसे चलती हुई ललिता-कुञ्जके उत्तर-पश्चिम कोनेवाले रत्न-महलमें जा पहुँचती हैं।

इस महलका भी आकार तो वैसा ही है, पर लता-गुल्मोंकी सजावट, कमरोंकी सजावट और भी मनोहर दीख पड़ रही है। श्रीप्रिया-प्रियतम बीचवाले आलीशान कमरेमें पहुँच जाते हैं। कमलके पुष्पोंका बना हुआ बड़ा ही सुन्दर पलंग यहाँ शोभा पा रहा है। श्रीप्रिया प्यारे श्यामसुन्दरको उसीपर ले जाकर बैठा देती हैं। बैठाकर उनकी ओर देखने लग जाती हैं। श्यामसुन्दर मुसकराते हुए दक्षिणकी तरफ सिर करके उस पलंगपर लेट जाते हैं। श्रीप्रिया पैर लटकाकर उसी पलंगके बीचके हिस्सेमें प्यारे श्यामसुन्दरकी ओर मुँह करके बैठ जाती हैं।

पनबट्टा लेकर विलासमञ्जरी श्रीप्रियाके सामने खड़ी है। श्रीप्रिया पनबट्टेको लेकर पलंगपर रख लेती हैं तथा उसमेंसे दो बीड़े पान ले लेती हैं। पानपर सोनेका सुन्दर वरक चढ़ा हुआ है। पान लेकर पनबट्टा श्रीप्रिया विलासमञ्जरीके हाथमें पकड़ा देती हैं तथा श्यामसुन्दरके सिरकी ओर खिसक जाती हैं। खिसककर बायाँ हाथ श्यामसुन्दरके दाहिने कंधेपर रख करके दाहिने हाथसे पान श्यामसुन्दरके मुखमें रख देती हैं। श्यामसुन्दर मुँहमें पान लेकर मुँह बंद कर लेते हैं। उल्लासमें भरी हुई श्रीप्रिया श्यामसुन्दरके मुखकी ओर देखती रहती हैं।

ENGLISH TRANSLATION

As She finishes drying His hands, a profound joy begins to surge within Rādhā. Taking beloved Śyāmasundara by the hand, She leads Him toward the northern door. They pass through the northern room of the jeweled palace and then the northern bower. Crossing that too, They proceed north along a lovely small road.

Beautiful Arabian jasmine plants line both sides, covered in large blossoms. Beyond one row of jasmine beds stands another row of henna, bearing beautiful clusters and flowers. Following this road, They reach the jeweled palace in the northwestern corner of Lalitā's bower.

The palace has the same general form as the former one, but its adornment of vines and shrubs and the decoration of its rooms appear even more enchanting. Priyā and Her beloved enter the splendid central chamber. A beautiful bed made of lotus blossoms shines there. Priyā leads Śyāmasundara to it and seats Him, gazing upon Him. Smiling, He lies down with His head toward the south. Priyā sits on the middle portion of the same bed facing Him, Her feet hanging over its edge.

Vilāsamañjarī stands before Priyā holding a betel casket. Priyā sets it upon the bed and takes out two prepared betel leaves covered in fine gold foil. She returns the casket to Vilāsamañjarī, moves nearer Śyāmasundara's head, rests Her left hand on His right shoulder, and places the betel into His mouth with Her right. He closes His mouth around it while Priyā gazes at His face, filled with delight.

ORIGINAL

ललिता खिसकती तरफसे आकर श्यामसुन्दरकी बाँयी ओर पलंगपर बैठ जाती हैं। विशाखा श्यामसुन्दरके चरणोंके पास पलंगपर बैठ जाती हैं तथा उनके चरणोंको अपनी गोदमें ले लेती हैं। चित्रा सिरके पास पंखा लिये हुए खड़ी हैं; पर गर्मी नहीं रहनेके कारण झल नहीं रही हैं। कुछ सखियाँ घुटना टेके तथा हाथसे पलंगको पकड़े रहकर बैठी हैं। कुछ मञ्जरियाँ खड़ी हैं। श्यामसुन्दर अपना पीताम्बर पैरसे लेकर ग्रीवातक तान लेते हैं; इससे श्यामसुन्दरका शरीर ढक जाता है, केवल मुखारविन्द दीखता है।

सामने उत्तरकी तरफकी दीवालपर एक अत्यन्त सुन्दर चित्र है। उसपर श्यामसुन्दरकी दृष्टि जाती है। चित्रमें यह चित्रित है कि रानी श्यामसुन्दरकी वंशी होठोंपर रखे हुए हैं। श्यामसुन्दर बगलमें बैठे हुए बजाना सिखला रहे हैं। अब श्यामसुन्दरको वंशीकी याद आती है। मर्यादा जल-विहारके समय वंशी ललिताको दे चुके थे, उसे किसी प्रकार ले लेनेकी इच्छा श्यामसुन्दरके मनमें जाग्रत होती है। इस इच्छासे श्यामसुन्दर श्रीप्रियासे कहते हैं, “तू तो भूल गयी होगी।”

श्रीप्रिया अपने प्रियतमकी रूप-सुधाके पान करनेमें इतनी तल्लीन थीं कि मानो उनके कानोंमें ये शब्द पहुँचे नहीं। प्रियाने कुछ जवाब नहीं दिया। श्यामसुन्दर धीरेसे हँसते हुए प्रियाकी ठोढ़ीको हिलाकर कहते हैं, “क्यों, बोल, याद है क्या?”

इस बार रानी मानो समाधिसे जागकर कहती हैं, “क्या?”

श्यामसुन्दर कहते हैं, “उस दिन मैंने जो तुम्हें रागिनी सिखलायी थी, वह भूल गयी कि याद है?”

रानी एक सरल बालिका-सी चटपट कहती हैं, “हाँ, हाँ, बिलकुल याद है!”

श्यामसुन्दर कहते हैं, “अच्छा, सुना भला!”

रानी कहती हैं, “लाओ, दो वंशी, अभी सुना देती हूँ।”

श्यामसुन्दर कहते हैं, “ललिताके पास है, उससे ले ले।”

ENGLISH TRANSLATION

Lalitā comes from the side and sits on the bed to Śyāmasundara's left. Viśākhā sits near His feet and takes them into her lap. Citrā stands near His head holding a fan, but does not move it because the air is not warm. Some sakhīs kneel while holding the bed, and several mañjarīs remain standing. Śyāmasundara draws His yellow garment from His feet up to His neck, covering His entire body so that only His lotus face remains visible.

His gaze falls upon an exquisite painting on the northern wall. It depicts Rādhā holding Śyāmasundara's flute to Her lips while He sits beside Her teaching Her to play. The sight reminds Him of His flute. During the decorous water play He had given it to Lalitā, and now a desire awakens in Him to recover it somehow. With this purpose He tells Priyā, "You must have forgotten."

Priyā is so absorbed in drinking the nectar of Her beloved's beauty that His words seem not to reach Her ears. She gives no answer. Smiling softly, Śyāmasundara tips Her chin and asks, "Well, tell Me, do you remember?"

Awakening as though from samādhi, Rādhā asks, "What?"

"Do you remember the melody I taught you that day, or have you forgotten it?"

Like an innocent child She quickly replies, "Yes, yes, I remember it perfectly."

"Then let Me hear it."

"Bring me the flute. I shall play it for You now."

"Lalitā has it. Take it from her."

ORIGINAL

रानी ललितासे कहती हैं, “ललिते! वंशी थोड़ी देरके लिये मुझे दे दे, मैं फिर तुझे वापस कर दूँगी।”

ललिता कुछ क्षण मुसकराती हुई सोचती हैं, फिर एक मञ्जरीको कुछ इशारा करती हैं। वह वंशी ले आती है। रानी उसे होठोंपर रखकर बजाने लगती हैं, पर फूँक भरते ही प्रेममें विवश होने लगती हैं। अतः लज्जित होकर हाथमें वंशी लेकर कहती हैं, “सबके सामने नहीं बजा सकूँगी।”

श्यामसुन्दर हँसते हुए कहते हैं, “समझ गया, तू भूल गयी है।”

रानी प्रेममें अधिकाधिक विवश होती जा रही हैं, इसलिये वंशी ललिताके हाथमें दे देती हैं। ललिता ज्यों ही वंशी पकड़ती हैं, वैसे ही श्यामसुन्दर हाथ बढ़ाकर उसे पकड़ लेते हैं एवं कहते हैं, “देख मैं, फिरसे सिखलाता हूँ।”

श्यामसुन्दर पड़े-पड़े ही उसमें एक फूँक भरते हैं। फूँक भरते ही इतनी मोहक स्वर-लहरी निकलती है कि प्रेममें बेसुध होकर ललिता सामनेकी ओर एवं राधारानी पीछेकी ओर झुक जाती हैं। श्यामसुन्दर दोनों हाथ बढ़ाकर बड़ी फुर्तीसे दोनोंको सँभाल लेते हैं तथा हँसते हुए कहते हैं, “ललिता रानी! वंशीको फिर दिनभर अपने पास किस तरह रख सकोगी?”

ललिता शरमी-सी जाती हैं, कुछ बोलती नहीं।

ENGLISH TRANSLATION

Rādhā says to Lalitā, “Lalite, lend me the flute for a little while. I shall return it to you afterward.”

Lalitā smiles and reflects for a few moments, then signals to a mañjarī, who brings the flute. Rādhā raises it to Her lips, but the instant She breathes into it She is overcome with love. Embarrassed, She lowers the flute and says, “I cannot play before everyone.”

Śyāmasundara laughs. “I understand. You have forgotten.”

Rādhā grows ever more overwhelmed with love and gives the flute to Lalitā. The moment Lalitā takes it, Śyāmasundara reaches out and grasps it. “Watch. I shall teach You again.”

Still lying down, He breathes a single note into it. Such an enchanting wave of sound emerges that Lalitā, insensible with love, falls forward while Rādhārānī falls backward. Śyāmasundara swiftly extends both arms and supports Them both. Laughing, He says, “Lalitā Rānī, how will you manage to keep this flute with you all day now?”

Lalitā grows bashful and says nothing.

ORIGINAL

इसी समय वृन्दा देवी एक अत्यन्त सुन्दर तोता एवं एक शारी पिंजरेमें लिये हुए आ पहुँचती हैं। तोता आते ही बोलने लगता है, “मेरे प्यारे श्यामसुन्दर! मेरे प्राणाधार! किंचित् विश्राम कर लो, तुम्हारी आयु बढ़ेगी।”

फिर तोता एक श्लोक पढ़ता है, जिसका भाव यह है कि भोजन करके बाँयी करवट सोनेसे कोई रोग नहीं होता, भक्ष्यका परिपाक ठीकसे होता है और आयु बढ़ती है। तोतेका श्लोक-पाठ सुनकर सभी सखियाँ हँस पड़ती हैं। तोता अपनी आँखकी पुतलियोंको कोनोंमें नचाता हुआ ऐसी गम्भीरताकी मुद्रा बना रहा है मानो उसे आयुर्वेद-शास्त्रका पूरा ज्ञान है। भक्तवत्सल श्यामसुन्दर तोतेकी अभिलाषा पूर्ण करते हुए कहते हैं, “हाँ भाई! तुम बहुत ठीक कह रहे हो, मुझे नींद भी आ रही है।”

ENGLISH TRANSLATION

Just then Vṛndā Devī arrives carrying an extraordinarily beautiful parrot and a mynah bird in a cage. The parrot immediately says, “My beloved Śyāmasundara, sustainer of my life, rest for a while. Your lifespan will increase.”

The parrot then recites a verse whose meaning is that when one lies upon the left side after eating, illness does not arise, food is properly digested, and life is lengthened. All the sakhīs laugh at this recitation. Rolling its pupils toward the corners, the parrot assumes such a grave expression that it seems to possess complete knowledge of Āyurveda. Affectionate to His devotees, Śyāmasundara fulfills the bird's wish and says, “Yes, brother, you speak perfectly well. I am feeling sleepy too.”

ORIGINAL

श्यामसुन्दर बाँयी करवट होकर आँखें बंद कर लेते हैं। तोतेकी आँखोंमें प्रसन्नता छा जाती है। आँखके कोने आनन्दाश्रुओंसे भर जाते हैं। श्रीप्रिया श्यामसुन्दरकी ओर एकटक देख रही हैं। वृन्दा ललिताको कुछ इशारा करती हैं। ललिता धीरेसे पलंगसे नीचे उतर पड़ती हैं तथा राधारानीके पास आकर हाथ पकड़ लेती हैं। रानी उठना चाहती नहीं, पर ललिता जबरदस्तीसे धीरे-धीरे उन्हें पलंगसे नीचे उतार देती हैं तथा कुछ उन्हें भी खिलानेके उद्देश्यसे कमरेके बाहर खींचती हुई-सी ले चलती हैं। रानी प्यारे श्यामसुन्दरकी ओर मुख किये हुए बहुत धीरे-धीरे बढ़ रही हैं। ललिता धीरेसे रानीके कानमें कहती हैं, “देख, कुछ खा ले! नहीं तो मैं श्यामसुन्दरसे कह दूँगी कि यह नहीं खाती। फिर वे तुम्हें पहले खिलाकर तब खाया करेंगे।”

ललिताकी बात सुनकर रानी सिर नीचा किये हुए जिधर ललिता ले चलती हैं, उधर ही धीरे-धीरे चलने लग जाती हैं। ललिता वहाँसे चलकर उत्तरी कमरे एवं निकुञ्जको पारकर सड़ककी दाहिनी ओरकी कदम्ब-वेदीके पास जा पहुँचती हैं।

ENGLISH TRANSLATION

Śyāmasundara turns onto His left side and closes His eyes. Joy fills the parrot's eyes, and their corners brim with tears of bliss. Priyā continues to gaze fixedly at Śyāmasundara. Vṛndā signals to Lalitā, who quietly descends from the bed, approaches Rādhārānī, and takes Her hand. Rādhā does not wish to rise, but Lalitā gently compels Her to leave the bed and draws Her out of the room with the intention of feeding Her too. Rādhā moves very slowly, keeping Her face turned toward beloved Śyāmasundara. Lalitā whispers in Her ear, “Look, eat something. Otherwise I shall tell Śyāmasundara that You refuse to eat. Then He will feed You first before taking His own meal.”

Hearing this, Rādhā lowers Her head and slowly follows wherever Lalitā leads. They pass through the northern room and bower and reach the kadamba platform on the right side of the road.

CHAPTER 9

शुक-सारी विवाद लीला

The Parrot and Myna Debate Līlā

Source scan pages 95–109

ORIGINAL

Sanskrit invocation and Hindi prose

॥ विजयेतां श्रीप्रियाप्रियतमौ ॥

शुक-सारी विवाद लीला

कदम्ब-वेदीपर सुन्दर आसन लगा है। उसपर गोलाकार पंक्तिमें बैठी हुई श्रीप्रिया प्यारे श्यामसुन्दरके अधरामृतसे सिक्त फलोंका प्रसाद पा रही हैं। श्रीप्रियाकी दाहिनी ओर ललिता बैठी हुई हैं एवं बायीं ओर विशाखा। फिर ललिताकी दाहिनी ओर क्रमशः गोलाकार चित्रा, इन्दुलेखा, चम्पकलता, रङ्गदेवी, तुङ्गविद्या एवं सुदेवी बैठी हुई हैं। पंक्तिके दक्षिण हिस्सेमें थोड़ी-सी जगह छोड़ी हुई है, जिसकी राहसे मञ्जरियाँ जल एवं अन्यान्य वस्तुएँ बीच-बीचमें परोसने जाती हैं। अनङ्गमञ्जरी, पालिकामञ्जरी, धन्यामञ्जरी एवं श्यामलामञ्जरी पंक्तिकी चारों दिशाओंमें खड़ी हैं। चारोंके हाथमें एक-एक थाल है, जिसमें तश्तरियाँ सजी हुई हैं। उसीमेंसे निकालकर वे बीच-बीचमें सखियोंकी थालीमें डाल दिया करती हैं।

श्रीप्रियाने प्रारम्भमें तो एक प्यालेसे चार-पाँच घूँट रस एवं किञ्चित् पनसरस पी लिया; पर अब फलका टुकड़ा हाथमें लिये हुए मुस्कुरा रही हैं तथा कभी चम्पकलता और कभी रङ्गदेवीकी ओर ताककर इशारेसे कहती हैं—देख! तू तो थाली लिये बैठी है, मैं कितना खा चुकी।

श्रीप्रियाकी आँखें तो सखी-मण्डलीकी पंक्तिमें हैं; पर मन वहाँ है, जहाँ प्यारे श्यामसुन्दर विश्राम कर रहे हैं। इसलिये दृष्टि बीच-बीचमें स्थिर-सी हो जाती है। ललिता अब धीरे-धीरे संतरे एवं अङ्गूरके कुछ खण्डोंको प्रियाके मुखमें देने लगती हैं तथा श्रीप्रिया खाती चली जा रही हैं। ललिताको जब यह संतोष हो जाता है कि मैं कुछ इसके पेटमें डाल चुकी हूँ और यदि यह अपने हाथसे बिलकुल भी नहीं खायेगी तो भी विशेष आपत्तिकी बात नहीं रही है, तब अपने मुँहमें फलके एक-दो खण्ड डालकर रानीसे कहती हैं—देख, हम सब बैठी हैं, तू कुछ खा ले।

ENGLISH TRANSLATION

May Śrī Priyā and Her Beloved be victorious!

The Parrot and Myna Debate Līlā

A beautiful seat has been arranged upon the kadamba platform. Seated there in a circular row, Śrī Priyā honors fruit-prasāda moistened with the nectar of beloved Śyāmasundara's lips. Lalitā sits on Her right and Viśākhā on Her left. Continuing around to Lalitā's right sit Citrā, Indulekhā, Campakalatā, Raṅgadevī, Tuṅgavidyā, and Sudevī. A small opening remains at the southern side of the row, through which the mañjarīs pass from time to time to serve water and other articles. Anaṅgamañjarī, Pālikāmañjarī, Dhanyāmañjarī, and Śyāmalāmañjarī stand at the four sides, each holding a tray adorned with small dishes. From these they periodically serve items onto the sakhīs' plates.

At first Śrī Priyā drinks four or five sips of juice and a little panasa nectar from a cup. Now She holds a piece of fruit and smiles, glancing first at Campakalatā and then at Raṅgadevī as though saying, "Look! You sit there with your plate, but see how much I have eaten."

Śrī Priyā's eyes rest upon the row of sakhīs, but Her mind is where beloved Śyāmasundara lies resting. Her gaze therefore becomes still from time to time. Lalitā begins placing small pieces of orange and grape into Priyā's mouth, and Śrī Priyā continues eating them. Once Lalitā is satisfied that she has put something into Her stomach, so that no serious difficulty will arise even if She eats nothing with Her own hand, Lalitā places one or two pieces of fruit in her own mouth and says, "Look, all of us are eating. You also eat something."

ORIGINAL Hindi prose

रानीका मन तो यहाँ था नहीं। हाँ, एक क्षणके हजारवें हिस्सेमें यहाँ आता था, फिर प्यारे श्यामसुन्दरके सौन्दर्य-सागरमें गोता लगाने लगता था। रानीने ललिताकी बात मानो सुनी ही नहीं। वे तो सोच रही थीं कि आह! मुझे यदि करोड़ आँखें होतीं, रोम-रोममें एक-एक आँख होती और कभी पलक नहीं गिरती तो कुछ-कुछ प्यारे श्यामसुन्दरकी रूप-सुधाका आनन्द ले पाती! क्या करूँ, किससे कहूँ? अच्छा, एक काम करूँ। प्रार्थना करूँ कि हे विधाता!...

रानीकी चिन्तन-धारा पलटी और सोचने लगी कि ओह! कृष्ण! कृष्ण!! मैं क्या सोच रही हूँ! नहीं, नहीं, कभी नहीं। विधाता! मैं भूल गयी। शपथ करके कहती हूँ कि मैं होशमें नहीं थी, इसीलिये तुमसे प्रार्थना करने जा रही थी। अब कभी ऐसा नहीं कहूँगी। हाय, हाय, फिर मेरे प्यारे श्यामसुन्दरको कितना कष्ट होगा! मेरे प्यारे श्यामसुन्दरको मेरा वह रूप देखकर कितना संताप होगा! मेरे हृदयधन मुझे हृदयसे लगाकर मेरे कपोलोंका चुम्बन कर आनन्दमें हँसने लग जाते हैं। अभी मेरे केशोंको सँवारकर, वेणी गूँथकर, पैरोंमें पायजेब बाँधकर वे कितने प्रसन्न हो रहे थे; पर मैं इतनी अधमा हूँ कि अपने सुखके लिये उनके आनन्दको नष्ट करनेकी बात सोचने लग गयी। भला, रोम-रोममें आँखें हो जानेपर तो मैं विकृत हो जाऊँगी। मेरे प्यारे श्यामसुन्दरको फिर इससे क्या सुख मिलेगा! ना, ना, कभी नहीं। बस, दो ही आँखें रखूँगी। हाँ, हाँ, मुझे दो ही आँखें चाहिये।

रानीके आन्तरिक भाव-प्रवाहकी किसी सखीको कल्पना भी नहीं है। ललिता मुस्कुराती हुई अपनी बायीं ओर सखियोंकी ओर देखती हैं और रह-रहकर कह उठती हैं—क्यों, कुछ खा ले; यों ही चुपचाप बैठी रहेगी?

रानीकी ओरसे कुछ भी जवाब नहीं मिलता, पर कभी-कभी किसी फलसे दो-तीन चावलभर तोड़कर वे धीरेसे मुखमें रख लिया करती हैं। अब ललिता चित्राको धीरेसे कहती हैं—कलकी तरह तू ही कोई उपाय कर।

ENGLISH TRANSLATION

The Queen's mind is not present there at all. It returns for a thousandth part of a moment, then dives again into the ocean of beloved Śyāmasundara's beauty. She seems not to hear Lalitā. She thinks, "Ah! If only I had millions of eyes, one eye in every pore of My body, and if their lids never closed, then perhaps I could taste a little of the nectar of beloved Śyāmasundara's beauty. What shall I do? Whom shall I ask? I know, I shall pray: O Creator…"

Her thought suddenly reverses. "Oh, Kṛṣṇa! Kṛṣṇa! What am I thinking? No, never! O Creator, I forgot Myself. I swear I was not conscious, and that is why I was about to pray to you. I shall never say such a thing. Alas, how much pain My beloved Śyāmasundara would suffer! How distressed He would be to see Me in such a form! My heart's treasure embraces Me, kisses My cheeks, and laughs in delight. Just now He was so pleased while arranging My hair, braiding it, and fastening anklets upon My feet. Yet I am so base that, for My own pleasure, I began thinking of destroying His joy. With eyes in every pore I would become deformed. What happiness could that give My beloved Śyāmasundara? No, never. I shall keep only two eyes. Yes, two eyes are all I desire."

None of the sakhīs imagines the current flowing through the Queen's inner heart. Smiling, Lalitā looks toward the sakhīs on her left and repeatedly says, "Why will You not eat something? Will You merely sit there silently?"

The Queen gives no answer, though now and then She breaks off a rice-grain-sized morsel of fruit and slowly places it in Her mouth. Lalitā quietly tells Citrā, "Find some means, as you did yesterday."

ORIGINAL Hindi prose

ललिताकी बात सुनकर चित्रा मुस्कुराती हुई उठ पड़ती हैं तथा जल्दीसे हाथ धोकर, मुँह धोकर, रूमालसे हाथ पोंछकर रानीकी पीठके पास आकर बैठ जाती हैं तथा धीरेसे उनके कानके पास मुँह ले जाकर कहती हैं—बहिन! परसोंकी व्यवस्था आज ही करनी पड़ेगी और सो भी प्यारे श्यामसुन्दर सोकर उठें न, उसके पहले-पहले। इसलिये तू जल्दीसे कुछ खा ले।

चित्राके ये शब्द कानमें प्रवेश करते ही रानीका मन दूसरे भाव-प्रवाहमें बहने लग जाता है। कल प्रिया एवं सखियोंने प्यारे श्यामसुन्दरके साथ एक लीला करनेकी बात स्थिर की थी। यह स्थिर हुआ था कि चित्रा ही रानीका स्वाँग धारण करेंगी एवं रानी चित्राका। रानी-बनी-हुई चित्रा श्यामसुन्दरसे मान करेंगी। श्यामसुन्दर वेश-भूषाका कपट पहचान पाते हैं या नहीं, यह बात रानी निकुञ्जके छिद्रसे देखेंगी। यदि पहचान लिया तो कोई बात ही नहीं, पर नहीं पहचान पाये तो देखें, रानीको मनानेकी कैसी चेष्टा श्यामसुन्दर करते हैं तथा चित्रा कहाँतक अपना स्वाँग निभा पाती हैं। रानी जब-जब मान करती हैं तो उनका मान विशेष देरतक नहीं टिकता। अतः चित्राका मान देखकर मान करना मैं भी सीखूँगी, इस विचारसे भी रानीने इस लीलाके लिये अपनी स्वीकृति दे दी है।

चित्राके शब्द कानमें जाते ही रानीकी चित्तधारा इस आयोजनकी ओर मुड़ पड़ती है। रानी जल्दीसे फलका एक खण्ड मुँहमें रखकर उठ पड़ती हैं। सखियाँ भी उठ पड़ती हैं। झारीसे हाथ स्वयं धोनेके लिये बायें हाथसे रूपमञ्जरीके हाथकी झारी रानी स्वयं पकड़ लेती हैं। रानीकी यह शीघ्रता देखकर ललिता आदि मुस्कुराने लगती हैं। रूपमञ्जरी मुस्कुराती हुई हाथपर पानी देने लग जाती है। रानी चटपट हाथ धोकर ललिता आदिके हाथ धुलाने चलती हैं, पर ललिता आदि सखियोंने हाथ धो लिये थे। रानीकी यह प्रेमभरी चेष्टा देखकर एक बार अतिशय ललकसे ललिता रानीको हृदयसे लगा लेती हैं। फिर रूमालसे हाथ-मुँह पोंछकर, जिस कमरेमें श्यामसुन्दर थे, वहींके लिये पुनः चल पड़ती हैं।

ENGLISH TRANSLATION

Hearing Lalitā, Citrā smiles and rises. She quickly washes her hands and mouth, dries them with a cloth, and sits behind the Queen. Bringing her lips near the Queen's ear, she whispers, "Sister, we must make the arrangements for the day after tomorrow today, and before beloved Śyāmasundara wakes. So please eat something quickly."

As soon as these words enter Her ears, the Queen's mind flows into another current of feeling. The previous day Priyā and the sakhīs had planned a līlā with beloved Śyāmasundara. Citrā would disguise herself as the Queen, while the Queen would assume Citrā's appearance. Disguised as the Queen, Citrā would feign offended jealousy toward Śyāmasundara. From a peephole in the grove, the true Queen would watch whether He could detect the deception. If He recognized Citrā, there would be nothing more to see. If He did not, they would observe how He tried to appease the supposed Queen and how long Citrā could maintain her role. Whenever the Queen Herself becomes offended, Her displeasure never lasts long. She had therefore also consented to the līlā in the hope that by watching Citrā She might learn how to sustain Her own māna.

The Queen's thoughts immediately turn toward this plan. She puts one piece of fruit in Her mouth and rises, and the sakhīs rise with Her. Wishing to wash Her own hands, She takes with Her left hand the ewer Rūpamañjarī is holding. Lalitā and the others smile at Her haste. Smiling herself, Rūpamañjarī begins pouring water over the Queen's hands. The Queen quickly washes and moves to wash Lalitā's and the others' hands, but they have already done so. Seeing this loving gesture, Lalitā embraces the Queen with intense eagerness. They dry their hands and mouths and set out again for the chamber where Śyāmasundara rests.

ORIGINAL Hindi prose

वहाँ पहुँचकर सखियाँ देखती हैं कि प्यारे श्यामसुन्दर गाढ़ निद्रामें हैं। रानी कुछ दूरसे ही प्रियतमके मुखारविन्दकी ओर देखने लगती हैं। पर इस आशङ्कासे कि कहीं प्यारेकी नींद टूट न जाय, दबे पाँव पीछे हटकर पलंगसे सात-आठ हाथ पश्चिम-उत्तरकी ओर स्थित अत्यन्त सुन्दर सजे हुए पाटेपर जाकर बैठ जाती हैं। पाटा चार गज चौड़ा, चार गज लम्बा और डेढ़ हाथ ऊँचा है। बीचमें तो मखमली नीली गद्दी है, पर पाटेके चारों ओर बड़े सुन्दर ढङ्गसे कमलके फूल पिरोये हुए हैं। रानी मसनदके सहारे प्यारे श्यामसुन्दरकी ओर मुख करके बैठ जाती हैं। सखियाँ भी उसी पाटेपर बैठ जाती हैं।

एक मञ्जरी श्यामसुन्दरके पलंगके पासकी पीकदानी उठा लाती है। रानी अतिशय प्यारसे स्वयं पीकदानी ले लेती हैं। उस पाटेपर पनबट्टा रखा हुआ है; उसमेंसे पानके बीड़े निकालती हैं। आठ बीड़ोंको सखोलकर उनमें प्रियतम श्यामसुन्दरके अधरामृतसे सने हुए पीकके दो-दो बूँद डालती हैं, फिर बीड़ोंको सजाकर अतिशय प्यारसे बारी-बारीसे सभी सखियोंके मुँहमें अपने हाथसे देती हैं। इसी बीचमें चित्रा ठीक दो बीड़े उसी प्रकार अधरामृत-पीक मिलाकर तैयार कर लेती हैं तथा रानीके मुँहमें रख देती हैं। रानी पनबट्टेसे एक-एक पान और निकालकर पुनः सखियोंके मुँहमें दे देती हैं। फिर उस पनबट्टेको चम्पकलताके हाथमें देकर हाथ धोती हैं तथा एक मञ्जरीसे दूसरा पनबट्टा लेकर उसके ऊपर पान रखकर प्यारे श्यामसुन्दरके लिये बीड़े तैयार करने लगती हैं। दृष्टि क्षण-क्षणमें प्यारेके मुखारविन्दकी ओर जाती है।

अब सखियोंमें अतिशय प्रेमभरी चर्चा चलने लगती है। श्यामसुन्दरको नींद बिलकुल नहीं आयी है; पर इस प्रेमभरी चर्चाको सुननेके लिये नींदका बहाना लिये हुए पड़े हैं। सखियोंमें धीरे-धीरे जो बात हो रही है, उसीकी ओर श्यामसुन्दर कान लगाये हुए हैं। पर किसीको यह कल्पना भी नहीं है कि ये जगे हुए हैं। इन्दुलेखा दोनों मञ्जरियोंको, जो प्यारे श्यामसुन्दरके पलंगके दोनों ओर खड़ी हैं, इशारेसे पूछती हैं। मञ्जरियाँ इशारा कर देती हैं कि गाढ़ी नींदमें सो रहे हैं। रानी एवं सखियाँ अब निःसङ्कोच बातें शुरू करती हैं, अवश्य ही धीमी-धीमी आवाजसे। कुछ देर उस प्रेममय आयोजनकी सलाह होती है।

ENGLISH TRANSLATION

On reaching the chamber, the sakhīs see beloved Śyāmasundara apparently sunk in deep sleep. From a little distance the Queen gazes upon Her Beloved's lotus face. Fearing that His sleep might break, She quietly steps backward and sits upon an exquisitely adorned platform seven or eight cubits northwest of the bed. It is four yards wide, four yards long, and a cubit and a half high. A blue velvet cushion fills its center, while lotus flowers are beautifully strung around all four sides. Leaning against a bolster, the Queen sits facing beloved Śyāmasundara, and the sakhīs sit upon the same platform.

A mañjarī brings the betel-spittoon from beside Śyāmasundara's bed. With great love the Queen takes it Herself. A betel casket rests upon the platform. She removes eight prepared rolls, opens them, places two drops of the betel nectar touched by Her Beloved's lips into each, closes and adorns them, then lovingly places one into each sakhī's mouth with Her own hand. Meanwhile Citrā prepares two rolls in the same way, mingling them with the nectar of His lips, and places them in the Queen's mouth. The Queen takes out one more leaf for each sakhī and feeds them again. Giving that casket to Campakalatā, She washes Her hands. She receives another casket from a mañjarī, lays out the leaves, and begins preparing rolls for beloved Śyāmasundara, Her gaze returning every moment to His lotus face.

A deeply affectionate conversation now begins among the sakhīs. Śyāmasundara is not asleep at all, but lies pretending so that He may hear their loving discussion. He listens intently to their quiet words, though no one imagines He is awake. Indulekhā signals to the two mañjarīs standing on either side of His bed. They signal back that He is sound asleep. The Queen and the sakhīs begin speaking freely, though in hushed voices, and discuss their loving plan for some time.

ORIGINAL Hindi prose

ललिता—जब वे पहुँच जायँ, तब तुम निकुञ्जको बन्द कर देना, समझी।

चित्रा—बहुत ठीक!

ललिता—उस समय मैं राधिकाके साथ मदनकुञ्जमें रहूँगी। तुम श्यामसुन्दरको बन्द करके मेरे पास चम्पकलताको सूचनाके लिये भेज देना।

चम्पकलता—ललिते! पर शुकका क्या करेगी?

विशाखा—मैं उसे मधुमङ्गलके द्वारा जालमें कल ही फाँस लूँगी। कल ही मैं मधुमङ्गलको सुन्दर-सुन्दर केले खिलाकर परसों पूरी खानेका निमन्त्रण दे दूँगी। यद्यपि शुकका लालचमें आना कठिन है, पर एक बार यह उपाय कर तो रही हूँ। न होगा तो उसे और किसी उपायसे अपने निकुञ्जमें रोके रखूँगी।

इसी समय श्यामसुन्दर करवट लेते हैं। मञ्जरी कुछ इशारा करती है। राधारानी एवं ललिताकी तीक्ष्ण दृष्टि प्यारे श्यामसुन्दरपर पड़ती है। उनकी कपट-निद्राका पोल खुल जाता है। रानी धीरेसे ललिताके कानमें कहती हैं—सब गुड़ मिट्टी हो गया।

ललिता—कोई बात नहीं, फिर दूसरा उपाय सोच लूँगी, पर कपटी-शिरोमणिने तो हद कर दी। अभी-अभी कैसे खर्राटे भर रहे थे।

रानी वहींसे उठकर श्यामसुन्दरकी पुष्प-शय्याके पास जाकर खड़ी हो जाती हैं। श्यामसुन्दरने चादरसे अपना मुँह ढक लिया था, फिर भी चादरके अन्दरसे मुखारविन्द दीख पड़ रहा है। मुद्रित नयनोंको छवि झीनी चादरको चीरती हुई रानीके हृदयको बाँध-सी रही है। अलकावलीके तो गुच्छे प्यारे श्यामसुन्दरके कपोलोंपर बिखरे हुए हैं। रानी अपने पद्म-सदृश हाथोंसे अलकावलीके गुच्छोंको यथास्थान रख देनेके लिये चादर हटाती हैं। श्यामसुन्दर हँसी रोकना चाहते हैं, पर होठोंपर उस अल्हड़पनकी हँसीकी झलक कुछ आ ही जाती है। रानी हँस पड़ती हैं। श्यामसुन्दर मानो अभी-अभी घोर निद्रासे जागे हों, ऐसी मुद्रामें अपनी आँखें खोलकर निहारने लग जाते हैं। रानी एवं सखियाँ जोरसे खिलखिलाकर हँसने लग जाती हैं।

ENGLISH TRANSLATION

Lalitā says, "When they arrive, close the grove, understood?"

Citrā replies, "Very well!"

Lalitā continues, "At that time I shall remain with Rādhikā in Madana-kuñja. After shutting Śyāmasundara inside, send Campakalatā to inform me."

Campakalatā asks, "Lalitā, but what will you do about Śuka?"

Viśākhā answers, "Tomorrow I shall use Madhumaṅgala to catch him in the snare. I shall feed Madhumaṅgala fine bananas tomorrow and invite him to eat purīs the day after. It is difficult to tempt Śuka through greed, but let me try this means once. If it fails, I shall keep him detained in my grove by some other device."

Just then Śyāmasundara turns over. A mañjarī makes a sign, and Rādhārāṇī and Lalitā cast a penetrating glance upon Him. His feigned sleep is exposed. The Queen whispers into Lalitā's ear, "The whole plan has turned to dust."

Lalitā replies, "Never mind, I shall devise another plan. But this crown jewel of deceivers has truly surpassed all bounds. Just a moment ago, how loudly He was snoring!"

The Queen rises and stands beside Śyāmasundara's flower bed. He has covered His face with the sheet, yet His lotus face is still visible through it. The beauty of His closed eyes seems to pierce the thin covering and bind Her heart. Clusters of curling locks lie scattered across His cheeks. The Queen removes the sheet so that She may set those curls in place with Her lotus-like hands. Śyāmasundara tries to suppress His laughter, but a trace of its guileless playfulness appears upon His lips. The Queen laughs. He opens His eyes and gazes about as if He had just awakened from profound sleep, and the Queen and all the sakhīs burst into ringing laughter.

ORIGINAL Hindi prose

रानी झुककर प्यारे श्यामसुन्दरके गलेमें अपनी दोनों बाँहें डाल देती हैं तथा छलकभरी दृष्टिसे प्यारेके मुखारविन्दको कुछ क्षणतक देखती रहती हैं। फिर कहती हैं—बड़ी अच्छी नींदमें तुम सो रहे थे, जग कैसे गये?

कहते-कहते रानी फिर खिलखिलाकर हँस पड़ती हैं।

प्यारे श्यामसुन्दरके वक्षःस्थलपर रानीकी वनमाला झूल रही है। प्रेमावेशके कारण अञ्चल खिसककर पीठपर आ गया है। अपनी प्रियाकी यह दशा देखकर श्यामसुन्दरके शरीरमें प्रेमके विकार उत्पन्न होने लगते हैं। प्यारे श्यामसुन्दरके मुखारविन्दपर छोटे-छोटे प्रस्वेद-कण मोतीकी तरह झलमल करने लगते हैं। रानी अतिशय प्यारसे अपने अञ्चलसे पसीना पोंछ देती हैं तथा धीरे-धीरे श्यामसुन्दरको उठाकर पलंगपर बैठा देती हैं। रानी भी पलंगपर बैठ जाती हैं तथा हँसकर कहती हैं—अच्छा, यह बताओ, तुमने हमलोगोंकी कौन-कौन-सी बातें सुनी हैं?

श्यामसुन्दर कुछ आश्चर्यकी मुद्रामें कहते हैं—कैसी बातें?

ललिता हँसकर कहती हैं—चालाकी रहने दो। तुमने झूठ ही नींदका बहाना बनाया था, अच्छी बात है। सावधान रहना, सूदके सहित बदला लूँगी!

श्यामसुन्दर हँस पड़ते हैं तथा कहते हैं—अच्छी बात है।

इसी समय वृन्दा बहुत-सी मञ्जरियोंको आगे किये हुए निकुञ्जमें प्रवेश करती हैं। रानी जब प्यारे श्यामसुन्दरका प्रसाद लेने कदम्ब-वेदीपर गयी थीं तो पीछे-पीछे वृन्दा भी गयी थीं। वहाँ रानी एवं सखियोंके प्रसाद ले लेनेपर उन्होंने मञ्जरियों एवं दासियोंको अतिशय प्रेमसे प्रसाद खिलाया, फिर सबके अन्तमें किञ्चित् प्रसाद लेकर सब काम समाप्त करके वहाँ आ पहुँची हैं। वृन्दाके आते ही निकुञ्जमें बहुत पहले जो वे पिंजरा रख गयी थीं, उसमेंके तोता एवं मैना, दोनों एक साथ ही बोल उठते हैं—देवि! आज्ञा दो तो एक बार बाहर जाकर पक्षियोंको शान्त बैठनेके लिये कह दूँ। वे बहुत कोलाहल कर रहे हैं।

ENGLISH TRANSLATION

The Queen bends down, places both arms around beloved Śyāmasundara's neck, and gazes for some moments upon His lotus face with a teasing glance. Then She asks, "You were sleeping so soundly. How did You awaken?" As She speaks, She breaks into laughter once more.

The Queen's forest garland swings over beloved Śyāmasundara's chest, while in the force of love Her veil has slipped onto Her back. Seeing His Priyā in this condition, transformations of love arise in Śyāmasundara's body. Tiny drops of perspiration glisten like pearls upon His lotus face. With immense tenderness the Queen wipes away the perspiration with Her veil, slowly raises Him, and seats Him upon the bed. Sitting beside Him, She laughs and asks, "Now tell us, which of our conversations did You hear?"

With a look of surprise Śyāmasundara asks, "What conversations?"

Lalitā laughs. "Enough of Your cleverness. You falsely pretended to sleep, very well. Be careful, I shall repay You with interest!"

Śyāmasundara laughs and says, "Very well."

At that moment Vṛndā enters the grove with many mañjarīs before her. When the Queen had gone to the kadamba platform to honor beloved Śyāmasundara's prasāda, Vṛndā had followed. After the Queen and the sakhīs had eaten, Vṛndā lovingly fed prasāda to the mañjarīs and maidservants, accepted a little herself only at the end, completed every remaining task, and now arrived. As soon as she enters, the parrot and myna in the cage she had earlier placed in the grove cry out together, "Goddess, if you permit, I shall go outside once and tell the birds to sit quietly. They are making a great commotion."

ORIGINAL Hindi prose

तोता एवं मैनाकी बात सुनकर वृन्दा कहती हैं—तू बैठ, मैं स्वयं जा रही हूँ।

वृन्दा पूर्वकी तरफसे निकुञ्जमें चली जाती हैं। जाकर बाहरकी ओर छिद्रमेंसे देखती हैं। सखियाँ एवं रानी तथा श्यामसुन्दर आश्चर्यमें भरे कभी वृन्दाकी ओर देखते हैं, तो कभी तोता एवं मैनाकी ओर। वृन्दा निकुञ्जमें जाकर चुपचाप खड़ी हैं। कुछ क्षण खड़ी रहकर मुस्कुराने लगती हैं तथा फिर दबे पाँव शीघ्रतासे जहाँ श्यामसुन्दर आदि हैं, आकर खड़ी हो जाती हैं। पहले तो जोरसे हँस पड़ती हैं, फिर हँसी सँभालकर कहती हैं—प्यारे श्यामसुन्दर! एक तमाशा देखेंगे?

श्यामसुन्दर कहते हैं—हाँ, हाँ, अवश्य देखूँगा, दिखाओ।

वृन्दा—अच्छा, देखो! बिलकुल दबे पाँव मेरे पीछे-पीछे सभी चले चलो। सावधान! तनिक भी शब्द न हो, नहीं तो फिर खेल बिगड़ जायेगा।

वृन्दाकी बात सुनकर सखियाँ, रानी एवं श्यामसुन्दर सभी आश्चर्यमें भरे हुए वृन्दाके पीछे-पीछे चल पड़ते हैं। चलकर पूर्वी निकुञ्जमें जा पहुँचते हैं। निकुञ्जमें अतिशय कोमल हरी-हरी पत्तियोंका बेंचके आकारका एक आसन है, उसीपर वृन्दादेवी प्रिया-प्रियतमको उत्तरकी ओर मुख करके बैठ जानेका इशारा करती हैं। प्रिया-प्रियतम उसी प्रकार आसनपर बैठ जाते हैं। कुछ सखियाँ आसनको पकड़े खड़ी रहती हैं, कुछ बैठ जाती हैं। निकुञ्ज सखियों एवं दासियोंसे ठसाठस भर जाता है; पर पूर्ण नीरवता छायी हुई है। वृन्दा फिर बहुत धीरेसे कहती हैं—सभी उस वृक्षकी ओर देखो।

लताओंके छिद्रमेंसे एक वृक्षकी ओर वृन्दा अँगुलीसे इशारा करती हैं। सभी उस तरफ देखने लग जाते हैं। निकुञ्जसे आठ हाथ उत्तर हटकर बड़ा ही सुन्दर वृक्ष है। वृक्ष झाऊ-वृक्षके समान है, पर झाऊकी अपेक्षा अत्यधिक हरा-भरा है। पत्तियाँ तो झाऊ-वृक्षकी-सी हैं, पर इतनी अधिक हरी-भरी एवं इतनी घनी हैं कि बस, कुछ कहते नहीं बनता। मोटी-मोटी डालें हैं, पर डालमें कहीं भी रूखापन नहीं है। डालका रंग भी बड़ा सुन्दर है। हलके पीले रंगके कपड़ेपर हरे रंगका छींटा हो, वह कपड़ा जैसा दीखता है, वैसा-सा रंग डालका है।

ENGLISH TRANSLATION

Hearing the caged birds, Vṛndā says, "Remain seated. I shall go myself."

She enters the eastern side of the grove and peers outside through an opening. The sakhīs, the Queen, and Śyāmasundara look first toward Vṛndā and then toward the parrot and myna, filled with wonder. Vṛndā stands silently for a few moments, then begins to smile. Returning quickly on tiptoe, she first bursts into laughter, composes herself, and asks, "Beloved Śyāmasundara, would You like to see a spectacle?"

"Yes, certainly," He replies. "Show Me."

Vṛndā says, "Then come, all of you, absolutely silently behind me. Take care that not the slightest sound is made, or the sport will be spoiled."

Filled with curiosity, the sakhīs, the Queen, and Śyāmasundara follow Vṛndā into the eastern grove. There stands a bench-shaped seat made from exceedingly tender green leaves. Vṛndādevī signals Priyā and Her Beloved to sit upon it facing north, and They do so. Some sakhīs stand holding the seat while others sit. The grove becomes crowded with sakhīs and maidservants, yet perfect silence prevails. Vṛndā whispers, "Everyone look at that tree."

Through an opening in the creepers she points to a tree eight cubits north of the grove. It resembles a jhāū tree, yet is much greener and more luxuriant. Its leaves have the shape of jhāū leaves, but are so lush and dense that words fail to describe them. Its thick boughs possess no roughness at all. Their color resembles pale yellow cloth speckled with green.

ORIGINAL Hindi prose

उस डालपर एवं वृक्षकी टहनियोंपर समूह-के-समूह पक्षी बैठे हैं। रंग-बिरंगके पक्षी हैं। कभी-कभी तो बहुतसे एक साथ बोल उठते हैं—ठीक! ठीक! तथा कभी बिलकुल शान्त बैठ जाते हैं। अधिकांश पक्षी इस मुद्रामें बैठे हैं मानो किसी पंचायतमें पञ्च बने हुए हों और गम्भीर विचारमें लगे हों। वृक्षकी एक मोटी डालपर, जो पश्चिमकी ओर फैली है, एक तोता पूर्वकी ओर मुख किये हुए बैठा है तथा एक सारी पश्चिमकी ओर मुख किये हुए बैठी है।

वृन्दादेवी धीरेसे सबसे कहती हैं—देखो, इन दो पक्षियोंमें झगड़ा हो रहा है। अन्यान्य पक्षी इन दोनोंकी बात बैठे-बैठे सुन रहे हैं। इनका झगड़ा कैसा विचित्र है, यही दिखानेके लिये तुमलोगोंको ले आयी हूँ।

वृन्दाकी बात सुनकर सबकी दृष्टि उस तोते एवं मैनापर जा टिकती है। सभी अतिशय उत्सुकतासे प्रतीक्षा करते हैं कि देखें, क्या झगड़ा है। इसी समय सारी बोल उठती है—अच्छी बात है; पर आजसे मैं तुमसे कभी नहीं बोलूँगी।

तोता कहता है—बोलना या न बोलना तो तुम्हारी मर्जीपर है, किन्तु तुम्हीं बताओ कि मैं तेरे लिये झूठ कैसे कह दूँ!

सारी—नहीं, नहीं, तुम झूठ मत बोलो, सत्य-धर्मका पालन करो; पर अब मुझसे तुम्हारा कोई सम्बन्ध नहीं है।

तोता—देख सारी! इस तरह नाराज होनेमें क्या लाभ है? सत्यका निर्णय तो हुआ नहीं।

सारी—भाई! मैं तो कई बार तुमसे कह चुकी कि मैं सत्य नहीं जानती, फिर बार-बार तंग करनेसे क्या लाभ है?

तोता—नहीं जी! मैं भी तुम्हें तंग करना थोड़े चाहता हूँ। हाँ, तेरे मुखसे बार-बार "श्यामसुन्दर बड़े निष्ठुर हैं, बड़े निष्ठुर हैं" सुनकर बात करने लग गया। मैं जानता होता कि तू खीझ जायेगी तो इस प्रसङ्गको छेड़ता ही नहीं।

ENGLISH TRANSLATION

Flocks of many-colored birds sit upon the bough and throughout the tree's branches. At times many call out together, "Right! Right!" At other times they sit utterly still. Most appear like elders appointed to a village council, absorbed in grave deliberation. Upon a thick branch extending westward sits a parrot facing east, while a sārī, a myna, sits facing west.

Vṛndādevī quietly tells everyone, "Look, these two birds are quarreling. The other birds sit listening to them. I brought you here to witness how extraordinary their dispute is."

Everyone fixes an eager gaze upon the parrot and myna. The sārī declares, "Very well, but from this day I shall never speak to you again."

The parrot replies, "Whether you speak to me is your choice, but tell me yourself, how can I utter a lie merely for your sake?"

"No, no," says the sārī. "Do not lie. Uphold the religion of truth. But there is no longer any bond between us."

The parrot says, "Sārī, what is gained by becoming angry like this? We have not yet determined the truth."

She replies, "Brother, I have told you many times that I do not know the truth. What is gained by tormenting me again and again?"

"I do not wish to torment you," says the parrot. "I merely began this discussion after repeatedly hearing you say that Śyāmasundara is terribly cruel. Had I known you would become vexed, I would never have raised the subject."

ORIGINAL Hindi prose

सारी—अच्छा, अब भूल हो गयी। सुनकर! एक बार नहीं हजार बार कह रही हूँ, श्यामसुन्दर बड़े रसिक हैं, बड़े रसिक हैं, बड़े करुण हैं, बड़े करुण हैं। बस, अब मुझसे मत बोलना।

यह कहकर सारी पूर्वकी ओर मुख फिराकर बैठ जाती है। तोता कुछ देर चुपचाप बैठे रहकर फिर उड़कर सारीके सामने चला आता है तथा कहता है—सारी! तू गम्भीरतासे विचार कर। सच, तेरी शपथ, मेरा कोई आग्रह थोड़े है कि मैं तेरी बात मानूँगा ही नहीं। हाँ, वह बात मेरी समझमें नहीं आती कि तू मेरे प्यारे श्यामसुन्दरको निष्ठुर क्यों समझने लग गयी है? मेरा तो यह दृढ़ विश्वास है कि एक बार कुछ क्षणके लिये भी तू दृष्टि स्थिर करके उनके नयनोंकी ओर देखती तो फिर कभी इस तरह नहीं कहती।

सारी कुछ नहीं बोलती; पर प्रिया-प्रियतम एवं सखियोंके मुखपर हँसी आ जाती है। वृन्दा फिर सावधान करती हैं कि किञ्चित् भी शब्द नहीं होने पाये, नहीं तो खेल बिगड़ जायेगा।

सारी फिर कहती है—भाई! कह चुकी, बार-बार कह चुकी। मेरी भूल थी, तुम ठीक हो। अब व्यर्थमें बातें क्यों बढ़ा रहे हो?

तोता कुछ गम्भीर-सा बनकर आँखें बन्द कर लेता है तथा कुछ क्षण बाद अपने-आप बोलने लगता है—प्राणप्यारे श्यामसुन्दर! प्राणप्यारे श्यामसुन्दर!! प्राणप्यारे श्यामसुन्दर!!!

तोतेकी यह मधुर कण्ठध्वनि सारीके मनमें प्रेमका सञ्चार करने लगती है। सारी श्यामसुन्दरके नामके माधुर्यमें खींच ली जाती है। तोतेके प्रति रोषको भूल जाती है और तोतेकी ओर देखने लग जाती है।

तोता फिर कहता है—सच, सारी, तू मेरे हृदयको देख ले। मैं कृत्रिम नहीं कहता। मेरे हृदयमें यह बात कभी भी नहीं आयी कि श्यामसुन्दर निष्ठुर हैं। हाँ, तुम्हारी रानी कभी-कभी मुझे निष्ठुर दीख पड़ती हैं। उस दिनकी बात तुम्हें याद नहीं है? यमुनाके तटपर चन्द्रमाके प्रकाशसे प्रकाशित निकुञ्जमें जामुनके वृक्षके नीचे तुम्हारी रानी बैठी थीं। अद्भुत शोभा थी।

ENGLISH TRANSLATION

The sārī answers sarcastically, “Very well, I was mistaken. Listen! Not once but a thousand times I now say that Śyāmasundara is supremely relishable, supremely relishable, greatly compassionate, greatly compassionate. Enough, do not speak to me again.”

She turns eastward. After sitting silently for a while, the parrot flies around and comes before her. “Sārī, consider this seriously. I swear by you, I am not obstinately determined to reject whatever you say. I simply cannot understand why you have come to regard my beloved Śyāmasundara as cruel. I firmly believe that if you fixed your gaze upon His eyes even for a few moments, you could never speak so again.”

The sārī remains silent, but smiles arise upon the faces of Priyā, Her Beloved, and the sakhīs. Vṛndā again warns them not to make the slightest sound, lest the sport be spoiled.

The sārī says, “Brother, I have said it already, many times. I was wrong and you are right. Why needlessly prolong the discussion?”

The parrot grows solemn, closes his eyes, and after a moment murmurs to himself, “Śyāmasundara, beloved of my life! Śyāmasundara, beloved of my life! Śyāmasundara, beloved of my life!”

The sweetness of his voice awakens love within the sārī. Drawn into the nectar of Śyāmasundara’s name, she forgets her anger and looks toward the parrot.

He continues, “Truly, Sārī, look into my heart. I do not speak falsely. Never has my heart found Śyāmasundara cruel. Your Queen, however, sometimes appears cruel to me. Do you not remember that day when your Queen sat beneath a jamun tree in a moonlit grove beside the Yamunā? Her beauty was wondrous.”

ORIGINAL Braj verse and Hindi prose

पहिले तो देखौ आय मानिनी की सोभा ठाठ,
तौ पाछे लीजिये मनाय प्यारे हो गोविंद।
कर पै सीस दियो रही हैं नयन मूँदि,
कमल बिछाय मानो सोयो जहाँ पूरन चंद॥
रिस भरी भौहें मानो भौंर बैठे अकुलात,
इंदु तरे आयो मकरंद भयो अरविंद।
'नंददास' प्रभु ऐसो प्यारी को रुसैयै नहि,
जाके मुख देखे तें मिटत सबै दुख-दंद॥

तोता कहता है—उस दिन तुम्हारी रानी बैठी थीं। अद्भुत शोभा थी। सारी, देख! सच कहता हूँ, तुम्हें प्रसन्न करनेके उद्देश्यसे नहीं, रानीका सौन्दर्य तो मुझे कई बार भ्रममें डाल चुका है। अहा! क्या बताऊँ, जब मैं दूरसे उन्हें देखता था तो प्रतीत होता था, अनन्त नव-विकसित कमलोंकी शोभा उनके सामने फीकी है। मुखारविन्दकी ओर देखता था तो यह अनुभव करता कि अनन्त चन्द्रमण्डलोंकी शोभा रानीके मुखकी शोभाके एक क्षणके बराबर भी नहीं। कविके भागमें यह शक्ति नहीं कि उस शोभाका वर्णन कर सके। हाँ, कुछ नीचे उतरकर कहूँ तो सचमुच उस दिन मुझे यह प्रतीत हो रहा था कि रानी हाथपर कपोल टेके हुए क्या बैठी हैं, मानो पूर्ण चन्द्र कमलके आसनपर सो रहा है। और भौंहोंकी शोभा तो निराली ही थी। रोषके कारण कुछ ऊपरकी ओर उठ गयी थीं, कुछ विशेष रूपसे टेढ़ी हो गयी थीं। सचमुच उस मुखकी एवं भौंहोंकी शोभा देखकर ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो रानीके मुखको मकरन्दसे भरा हुआ कमल समझकर भौंरोंके झुण्ड आये हों और मुख-कमलका मकरन्द पान करनेकी प्रतीक्षामें मँडरा रहे हों। वह शोभा देखकर मेरा रोम-रोम आनन्दसे भर गया! सारी! मैं तो दंग रह गया। आँखें हटती नहीं थीं।

उसी समय ललिता प्यारे श्यामसुन्दरका हाथ पकड़े हुए वहाँ आयी। मेरे प्यारे श्यामसुन्दर चरणोंके पास बैठ गये। सारी! बहुत कहकर क्या होगा, मेरे श्यामसुन्दरने हृदयके समस्त प्यारसे प्रार्थना की, पर तुम्हारी रानीने आँखेंतक नहीं खोलीं। मेरे प्यारे श्यामसुन्दरका मुख उदास हो गया; पर रानी टस-से-मस नहीं हुईं। मेरे प्यारे श्यामसुन्दर कुछ दूर जाकर बैठ गये। सारी! सचमुच तू भी तो वहाँ थी ही। दोनोंमें कौन अधिक निष्ठुर तुम्हें दीखा, मैं यह तुम्हारे मुँहसे ही सुनना चाहता हूँ।

ENGLISH TRANSLATION

First come and behold the proud beloved's splendor,
then, dear Govinda, seek to reconcile Her.
Her head rests upon Her hand, Her eyes are closed,
as though the full moon slept upon a bed of lotuses.
Her anger-laden brows are like restless bees,
hovering below the moon where the lotus fills with nectar.
Nandadāsa says: Lord, do not leave such a beloved displeased,
for one sight of Her face dispels every sorrow and conflict.

The parrot says, "Your Queen sat there that day in wondrous beauty. Sārī, I speak truth, not merely to please you. Her beauty has bewildered me many times. From afar I felt that the splendor of limitless newly blossomed lotuses grew pale before Her. When I looked upon Her lotus face, the radiance of countless moons seemed not equal to even a moment of its beauty. As for the region of Her shoulders, language has no power to describe it. But if I may descend a little lower, that day, as She rested Her cheek upon Her hand, it seemed that the full moon slept upon a lotus seat. The remainder of Her beauty was equally incomparable. Her brows were raised in anger and exquisitely curved. Seeing that face and those brows, it seemed that swarms of bees, mistaking Her nectar-filled lotus face for a flower, hovered there awaiting its honey. Every pore of my body filled with delight. I was astonished and could not remove my eyes.

"Just then Lalitā arrived, holding beloved Śyāmasundara by the hand. My Beloved sat at the Queen's feet and pleaded with all the love in His heart, but your Queen did not even open Her eyes. Beloved Śyāmasundara's face grew despondent, yet the Queen did not stir. He went and sat some distance away. Sārī, you too were present. Tell me from your own mouth which of Them appeared more cruel."

ORIGINAL Hindi prose, Braj verse, and Sanskrit verse from Gīta-govinda 7

तोतेके मुखसे रानीके रूपका वर्णन सुनकर सारी प्रसन्न हो गयी थी तथा कुछ और सोचकर बड़ी प्रसन्नताकी मुद्रामें बोलती है—तोता! तुम्हें भीतरी बातका बिलकुल पता ही नहीं है। ऊपरकी बात देखकर ही तुमने रानीको निष्ठुर मान लिया है। देख, मैं उस दिनके उस गम्भीर मानका रहस्य रानीकी प्यारी सारीसे सब पूछ चुकी हूँ, पर तुझे बता नहीं सकूँगी। तुम उसे समझ भी नहीं सकोगे; उसे समझनेके लिये रमणी-सुलभ हृदय चाहिये। तेरा हृदय पुरुषका है, रानीके प्रेममय हृदयकी रूप-रेखा तुम्हारी कल्पनामें आ ही नहीं सकती।

सारी यह कहकर रुक जाती है। तोता शीघ्रतासे बोल उठता है—हाँ, हाँ, पूरी बात जो-जो कहना चाहती है, सब कह।

सारी कुछ क्षण चुप रहकर कहती है—मैं यही कहने जा रही थी कि तुम जिस घटनासे मेरी रानीको निष्ठुर समझ रहे हो, वह तो तुम्हारी नासमझीके कारण है। हाँ, यदि मैं तुम्हें अपने मनका घाव खोलकर दिखला दूँ तो तेरी बोली बन्द हो जायेगी, कुछ भी जवाब नहीं दे सकोगे। बिना किसी संशयके समझ जाओगे कि ये श्यामसुन्दर कितने निष्ठुर हैं।

तोता कुछ गम्भीरताकी मुद्रामें कहता है—अच्छा! सुना सही, तूने ऐसी कौन-सी निष्ठुरता मेरे प्यारे श्यामसुन्दरमें देखी है?

सारी गम्भीर होकर करुणाकी मुद्रामें कहती है—तोता, सचमुच कलसे मेरे प्राण छटपट कर रहे हैं! कल दोपहरकी बात है। सूर्य-मन्दिरमें मेरी रानी बैठी थीं, बिलकुल अकेली थीं। ललिता आदि सभी उपवनमें गयी हुई थीं। मैं एक लताकी टहनीपर बैठी हुई एकटक रानीकी ओर देख रही थी। रानीके हाथमें एक माला थी, पर यों ही अँगुलियोंपर पड़ी थी। आँखें बन्द थीं; पर अविराम अश्रुधारा बहती हुई कपोलोंको भिगो रही थी। बीच-बीचमें रानी बोल उठती थीं कि “मेरे जीवनसर्वस्व! सभी अवस्थाओंमें मैं तुम्हारी हूँ।” तोता! रानीकी बड़ी प्रेमावस्था देख-देखकर मैं गद्गद हो रही थी; पर आगे जो देखा, उसे देखकर तो दंग रह गयी। देखती हूँ कि रानी हठात् उठ खड़ी हुईं। बड़बड़ करती हुई इधर-उधर घूमने लग गयीं। पहले तो आवाज अस्पष्ट थी, पर पीछे कुछ जोरसे बोलनेके कारण मुझे ठीक-ठीक सुनने लग गया। रानी बोल रही थीं—

कोटि जीव बंधु वारौं, हाँसी सुधाकंद वारौं,
कोटि कोटि चंद वारौं राधे मुख चंद पें।

रानीके मुखसे बार-बार इसकी आवृत्ति हो रही थी। मैं चकित होकर सोचने लग गयी कि अजब बात है। अपने मुखसे आज मेरी रानी अपनी शोभाका वर्णन कर रही हैं; पर तुरन्त समझ गयी कि रानी प्यारे श्यामसुन्दरके भावसे आविष्ट होकर अपने-आपको ही श्यामसुन्दर मान रही हैं। फिर देखती हूँ कि रानी हाथोंको ठोड़ीपर रखकर कह रही हैं—ओह! ब्रजका प्रत्येक कुञ्ज छान डाला, घरका कोना-कोना देख लिया, पर प्रिया नहीं मिली! ओह! मुझे छोड़कर चली गयी। पर कहाँ गयी? हाय, हाय, उसने प्राण तो नहीं दे दिये? वह यमुनामें तो नहीं कूद पड़ी? बस, बस, अब चलता हूँ, मैं भी यमुनामें कूदकर अपना जीवन समाप्त कर दूँ। पर कहीं वह जीवित हो तो! आह! फिर तो मेरे बिना उसके प्राण निकल जायेंगे। न, नहीं, नहीं, उसने प्राण नहीं दिये हैं। कहीं छिप गयी है। आह! बरसाने तो नहीं चली गयी? बस, बस, वहीं गयी है। बिलकुल यही बात है। पर वहाँ कैसे पहुँचूँ? हाय! मेरे प्राणोंकी रानी!

> तू मुझे छोड़कर चली गयी है, मुझसे रूठ गयी है। हाँ, हाँ, तुमने उचित ही किया है, मैं इसीके योग्य हूँ। पर, प्रिये! मेरा हृदय फट रहा है। एक क्षण भी तुम्हारे बिना जीवन नहीं रहेगा। मेरी हृदयेश्वरि! ना, ना, इतना कड़ा दण्ड मैं नहीं सह सकूँगा। मुझे क्षमा करो! ओह! क्या करूँ? किससे कहूँ? हाय, कोई मेरी प्रियाके पास मेरी बात पहुँचा दो! अच्छा, एक पत्र लिख देता हूँ, इसे ही मेरी प्रियाको दे देना। पत्रोत्तर आनेतक प्राणोंको किसी प्रकार रोके रहूँगा।
>
> तोता! यह कहकर रानी बैठ गयीं। पासमें कमलके पत्तेपर फूल रखे हुए थे। रानीने फूलोंको बिखेर दिया। पत्तेके चार टुकड़े करके एक टुकड़ा ले लिया तथा उसपर नखसे यह लिखने लगीं—
>
> क्षम्यतामपरं कदापि तवेदृशं न करोमि।
> देहि सुन्दरि दर्शनं मम मन्मथेन दुनोमि॥

ENGLISH TRANSLATION

Hearing the parrot describe the Queen's beauty, the sārī is pleased. Then, reflecting on something else, she says with a delighted expression, "Parrot, you know nothing of the inner truth. You judged the Queen cruel from outward appearances alone. I have learned the full secret of Her profound māna that day from the Queen's own dear sārī, but I shall not tell you. You could not understand it. A woman's subtle heart is needed, while yours is a male heart. The contour of the Queen's love-filled heart cannot even enter your imagination."

She falls silent. The parrot quickly says, "Yes, yes, say everything you wish to say. Tell me the whole account."

After a moment she continues, "The incident from which you consider my Queen cruel only shows your lack of understanding. If I opened the wound in my own heart and showed it to you, your voice would be stopped and you could give no reply. Without doubt you would understand how cruel this Śyāmasundara is."

Growing solemn, the parrot asks, "Then let me hear. What cruelty have you seen in my beloved Śyāmasundara?"

With a grave and compassionate expression the sārī begins, "Parrot, my life has truly been writhing since yesterday. At noon yesterday my Queen sat entirely alone in the Sūrya temple. Lalitā and all the others had gone into the garden, while I sat upon the branch of a creeper and gazed unwaveringly at Her. A rosary rested loosely upon Her fingers. Her eyes were closed, yet unbroken streams of tears bathed Her cheeks. From time to time She cried, 'Sole treasure of My life! In every condition I am Yours.' Parrot, I was overcome as I witnessed that exalted state of love. Then I saw something that astonished me. The Queen suddenly rose and wandered here and there, murmuring to Herself. At first Her voice was indistinct, but when She spoke louder I heard clearly:

"'I would sacrifice millions of living kinsmen, and the smiling moon of nectar; I would sacrifice millions upon millions of moons to Rādhā's moonlike face.'

"She repeated this again and again. I wondered that the Queen was praising Her own beauty, but immediately understood: possessed by the mood of beloved Śyāmasundara, She now considered Herself to be Him. Resting Her hands beneath Her chin, She cried, 'Oh! I have searched every grove of Vraja and every corner of the house, yet I cannot find Priyā. She has left Me, but where has She gone? Alas, has She given up Her life? Has She leapt into the Yamunā? Then I too shall leap into the river and end My life. But what if She still lives? Without Me, Her life would then depart. No, She has not died. She is hiding somewhere. Has She gone to Barsānā? Yes, that must be it. But how shall I reach there? Queen of My life, You have left Me in displeasure. You have acted rightly, for this is what I deserve. Yet, My beloved, My heart is breaking. I cannot live even a moment without You. Sovereign of My heart, I cannot bear so severe a punishment. Forgive

Me! What shall I do? Whom shall I tell? If only someone would carry My message to My beloved. I shall write a letter, and let someone give it to Her. Somehow I shall preserve My life until Her reply comes.'

"Saying this, the Queen sat down. Flowers lay upon a lotus leaf nearby. She scattered them, tore the leaf into four pieces, took one, and wrote upon it with Her fingernail:

"'Forgive Me. Never again shall I behave toward You in such a way. O beautiful one, grant Me Your sight, for the god of love torments Me.'"

ORIGINAL Braj verse and Hindi prose

इसे लिखकर रानी समाधिस्थ हो गयीं। कुछ देर बाद आँखें खोलकर उस पत्तेकी ओर देखने लगीं तथा आनन्दमें भरकर बोलीं—प्राणनाथने पत्र भेजा है? अच्छा, पढ़ें, क्या लिखा है?

पत्र पढ़कर हृदयसे लगाया और पुनः बड़बड़ करने लग गयीं—आह! मेरे जीवनधन! तुमने तो कोई अपराध नहीं किया है। हाय! किसने तुमसे झूठी बात कह दी है! मैं कहाँ रूठी हूँ? आह! पता नहीं, तुमने कहाँसे यह पत्र लिखा है? हाय! न जाने तुम्हारी क्या दशा हो रही होगी? ललिते! विशाखे! रूप! अरे विमले! तुम सब कहाँ चली गयीं? अरे, दौड़ो! प्यारे श्यामसुन्दरको ढूँढ़ लाओ; व्याकुलताकी अवस्थामें उन्होंने पत्र लिखा है। आह! मेरे प्राणनाथ! तुम्हें मेरे बिना......

राधिका कान्ह को ध्यान धरें,
तब कान्ह ह्वै राधिका के गुन गावें।
त्यों अँसुवा बरसें बरसाने को,
पाती लिखें लिखि राधे को ध्यावें॥
राधे ह्वै जाय घरीक में ‘देव’,
सुप्रेम को पाती लै छाती लगावें।
आपने आपुही में उरझें,
सूरझें बिरझें समझें समुझावें॥

यह कहती हुई पत्रको पुनः छातीसे लगाकर समाधिस्थ हो गयीं। तोता! मैं तो किंकर्तव्यविमूढ़-सी हो गयी, पर तुरन्त ही श्यामसुन्दरको खबर देने दौड़ी। कुछ ही दूरपर श्यामसुन्दर मिल गये; पर जो देखा, उसे देखकर सिरसे पैरतक जल उठी। देखती हूँ, एक वृक्षके नीचे श्यामसुन्दर बैठे हैं। सामने एक अत्यन्त सुन्दर रमणी बैठी है। श्यामसुन्दर उस रमणीके कपोलोंपर चन्दनसे चित्र बना रहे हैं। तोता! मैं तो देखकर सह नहीं सकी। सोचने लगी कि अभी-अभी इनके विरहमें रानीकी वैसी दशा देखकर आयी हूँ और यहाँ इन्हें इस रूपमें देख रही हूँ! यह सोचते-सोचते मैं मूर्च्छित हो गयी। पता नहीं, कितनी देर बाद मुझे होश हुआ। होश आनेपर वहाँ श्यामसुन्दर नहीं दीख पड़े। उड़कर पुनः सूर्य-मन्दिरमें आयी। वहाँ देखती हूँ कि चहल-पहल मच रही है। मेरी रानीके साथ श्यामसुन्दर असीम प्यार प्रदर्शित कर रहे हैं। उसी समयसे मैं बर्रायीकी तरह रट रही हूँ कि श्यामसुन्दर बड़े निष्ठुर हैं, बड़े कपटी हैं।

ENGLISH TRANSLATION

“After writing this, the Queen entered samādhi. Some time later She opened Her eyes, looked at the leaf, and exclaimed in delight, ‘Has My Lord sent a letter? Let Me read what He has written.’

“She read it, pressed it to Her heart, and began murmuring again, ‘Ah, treasure of My life! You have committed no offense. Who has told You this lie? I am not displeased. From where have You written this letter? Who knows what condition You are in? Lalitā! Viśākhā! Rūpa! Vimalā! Where have you all gone? Run and find beloved Śyāmasundara. He wrote this letter in a state of anguish. Ah, Lord of My life, without Me You...’

Rādhikā meditates upon Kānha,
then, becoming Kānha, sings Rādhikā’s virtues.
Thus Her tears pour down, while toward Barsānā
She writes a letter and meditates upon Rādhā.
In a moment She becomes Rādhā again, says Deva,
and lovingly presses that letter to Her breast.
Within Herself She becomes entangled,
then untangles and loosens the knot, understanding and consoling Herself.

“Speaking thus, She pressed the letter to Her breast once more and entered samādhi. Parrot, I stood bewildered as to what I should do, but at once flew to inform Śyāmasundara. I found Him a short distance away, yet the sight made me burn from head to foot. Beneath a tree sat Śyāmasundara, and before Him sat an exceedingly beautiful woman. He was painting designs in sandal paste upon her cheeks. I could not endure it. Only moments before I had seen the Queen in that condition of separation from Him, and now I saw Him like this! As I thought upon it, I fainted. I do not know how long passed before I regained consciousness. Śyāmasundara was no longer there, so I flew back to the Sūrya temple. It was filled with bustling activity, and Śyāmasundara was showering boundless love upon my Queen. Ever since that moment I have repeated like one deranged: Śyāmasundara is terribly cruel and terribly deceitful.”

ORIGINAL Hindi prose

सारी यह कहते-कहते जोशमें आ जाती है तथा बड़े जोरसे कह उठती है—तोता! चाहे मान या मत मान, पर श्यामसुन्दर सचमुच बड़े निष्ठुर हैं, बड़े कपटी हैं, बड़े लम्पट हैं। यह हजार बार, लाख बार कह रही हूँ।

वृक्षके सभी पक्षी चकित होकर उधर ही देखने लगते हैं। श्यामसुन्दर धक्का देकर निकुञ्जके उत्तरी दरवाजेको खोल देते हैं तथा प्रियाके कन्धेपर हाथ रखे हुए बाहर निकल पड़ते हैं। सखियाँ एवं वृन्दा भी पीछे-पीछे बाहर निकल आती हैं। श्यामसुन्दर वृन्दाको उस तोता एवं सारीको बुलानेके लिये इशारा करते हैं। वृन्दा तोता एवं सारीको बुलाती हैं। दोनों आ जाते हैं। ललिता हँसती हुई कहती हैं—सारी! तू ठीक कह रही है, ये बड़े ही लम्पट हैं।

सारी शर्मा जाती है।

श्यामसुन्दर कहते हैं—सखे! आ, मैं झगड़ेका फैसला कर देता हूँ।

श्यामसुन्दर सारीको उठाकर अपने हाथपर रख लेते हैं तथा रानीके हाथपर तोतेको रख देते हैं। ऐसा करके वृन्दासे कहते हैं—वृन्दे! तोतेसे पूछ, तोता क्या देख रहा है।

वृन्दा कहती हैं—तोता! बता, तू क्या देख रहा है?

तोता अतिशय उल्लासके साथ मधुर कण्ठसे कह उठता है—अहा! रानीके रोम-रोममें, अणु-अणुमें मैं प्यारे श्यामसुन्दरको देख रहा हूँ।

वृन्दा आनन्दमें भरकर सारीसे पूछती हैं—सारी! तू क्या देख रही है?

सारी गद्गद कण्ठसे कहती है—जय हो! प्यारे श्यामसुन्दरके रोम-रोममें, अणु-अणुमें मेरी राधारानी हैं! जय हो! जय हो!!

सारीकी कण्ठ-ध्वनिमें ध्वनि मिलाकर सभी पक्षी बोल उठते हैं—जय हो! जय हो!! जय हो!! जय हो!!!

श्यामसुन्दर मेवा मँगवाकर अपने हाथसे तोता एवं सारीको खिलाते हैं। मेवा खाकर प्रिया-प्रियतमके चरणोंमें सिर नवाकर तोता एवं सारी दोनों पुनः वृक्षपर जा बैठते हैं। श्यामसुन्दर एक राशि मेवा बिखेर देते हैं। पक्षियोंका समूह उसपर टूट पड़ता है। बीचमें “जय हो! जय हो!!” की ध्वनि करते हुए भी पक्षी मेवा चुगने लगते हैं तथा प्रिया-प्रियतम दस कदम उत्तरकी ओर बढ़कर एक पनस-वृक्षकी छायामें जाकर खड़े हो जाते हैं।

ENGLISH TRANSLATION

As she speaks, the sārī grows impassioned and cries aloud, "Parrot, accept it or not, but Śyāmasundara is truly cruel, deceitful, and wanton. I shall say it a thousand times, a hundred thousand times!"

All the birds in the tree turn in astonishment. Śyāmasundara pushes open the northern door of the grove and emerges with His arm resting upon Priyā's shoulder. The sakhīs and Vṛndā follow. He signals Vṛndā to call the parrot and sārī, and they come. Lalitā laughs and says, "Sārī, you speak truly. He is exceedingly wanton."

The sārī becomes ashamed.

Śyāmasundara says, "Friend, come. I shall settle the dispute."

He lifts the sārī onto His own hand and places the parrot upon the Queen's hand. Then He tells Vṛndā, "Ask the parrot what he sees."

Vṛndā asks, "Parrot, tell us, what do you see?"

In a sweet voice brimming with delight the parrot exclaims, "Ah! In every pore and every atom of the Queen I behold beloved Śyāmasundara."

Filled with joy, Vṛndā asks the sārī, "And what do you see?"

With a voice choked by emotion she replies, "Victory! In every pore and every atom of beloved Śyāmasundara dwells my Rādhārāṇī. Victory! Victory!"

All the birds join her cry: "Victory! Victory! Victory! Victory!"

Śyāmasundara has nuts brought and feeds the parrot and sārī with His own hand. After eating, the two bow their heads at the feet of Priyā and Her Beloved and return to the tree. Śyāmasundara scatters a heap of nuts, and the flock descends upon it. Even as they peck, the birds continue calling, "Victory! Victory!" Priyā and Her Beloved walk ten paces north and stand beneath the shade of a panasa tree.

CHAPTER 10

अक्षक्रीड़ा लीला

The Dice-Play Līlā

Source scan pages 110–123

ORIGINAL

Sanskrit invocation

॥ विजयेतां श्रीप्रियाप्रियतमौ ॥

ENGLISH TRANSLATION

May Śrī Priyā and Her Beloved be ever victorious.

ORIGINAL

श्रीप्रिया-प्रियतम कटहल-वृक्षसे बने हुए अत्यन्त सुन्दर निकुञ्जमें विराजमान हैं। चार अत्यन्त सुन्दर कटहलके वृक्ष आठ-आठ गजकी दूरीसे चारों कोनोंमें स्थित हैं। उनकी मोटी-मोटी शाखाएँ आपसमें जुड़कर गुम्बदके आकारकी बन गयी हैं। कटहल-वृक्षोंको चारों ओरसे घेरकर अंगूरकी लताएँ फैली हैं, जिनमें गुच्छे-के-गुच्छे अंगूरके फल लटक रहे हैं। चारों कटहलके वृक्ष भी फलसे भरे हैं। छोटे-बड़े सब आकारके पनस-फल वृक्षोंसे लटक रहे हैं। कुछ पके हुए भी हैं तथा उनसे अत्यन्त मीठी सुगन्धि निकल-निकलकर सम्पूर्ण वातावरणको सुवासित कर रही है।

ENGLISH TRANSLATION

Śrī Priyā and Her Beloved are seated in a beautiful bower formed from jackfruit trees. Four splendid trees stand at the corners, each eight yards from the next. Their thick branches join overhead to form a dome. Grape vines encircle them, heavy with hanging clusters, while jackfruits of every size fill the trees. Some are ripe, and their intensely sweet fragrance perfumes the entire atmosphere.

ORIGINAL

चारों दिशाओंमें चार दरवाजे हैं। दरवाजोंके पास अंगूरकी बेलें फैली हुई हैं। इन बेलोंमें अंगूर लटक रहे हैं। अंगूर सहित फैली हुई बेलोंकी शोभा ऐसी है मानो झालर लग रही हो। छोटे-छोटे पक्षी बेलों एवं वृक्षोंपर इधरसे उधर, उधरसे इधर फुदक रहे हैं। ये पक्षी इतनी मीठी ध्वनिसे बोल रहे हैं कि समस्त निकुञ्ज एक अनिर्वचनीय मधुर धीमी स्वर-लहरीसे गुञ्जित हो रहा है।

ENGLISH TRANSLATION

Four doors open toward the four directions. Grape vines spread beside them, their fruit-laden strands resembling decorative garlands. Tiny birds hop among the vines and trees, calling so sweetly that an indescribably gentle melody resonates throughout the bower.

ORIGINAL

निकुञ्जके सहनके किनारे-किनारे एक विचित्र जातिके छोटे-छोटे तीन-तीन अंगुल ऊँचे नीले रंगके पौधे उगे हुए हैं तथा वे पौधे आपसमें इतने घने हैं कि केवल उनकी छोटी-छोटी पत्तियाँ ही दीख रही हैं, जड़ नहीं दीखती। ऐसा प्रतीत हो रहा है मानो तीन हाथ चौड़ी नीली मखमली कालीन निकुञ्जके किनारे-किनारे बिछ रही हो। निकुञ्जका शेष अंश ठीक उसी प्रकारके नीले रंगके किसी तेजस पत्थरसे पटा हुआ है। फर्श इतना चिकना है कि झुकते ही उसपर अपने मुखका नीला-नीला प्रतिबिम्ब दीखने लगता है।

ENGLISH TRANSLATION

Along the courtyard edges grow unusual blue plants, each about three fingers high and so dense that only their tiny leaves can be seen. They resemble a blue velvet carpet three cubits wide. The remaining floor is paved with a similarly blue, lustrous stone, polished so smoothly that anyone bending over it sees a blue-tinted reflection of their face.

ORIGINAL

निकुञ्जके बीचमें बड़े पीले रंगकी चादर बिछी हुई है। इसी चादरपर श्रीप्रिया-प्रियतम एवं सखियाँ अक्षक्रीड़ा खेलनेके लिये बैठी हुई हैं। श्रीप्रिया पूर्वकी ओर मुख किये हुए तथा श्यामसुन्दर पश्चिमकी ओर मुख किये हुए बैठे हैं। श्रीप्रियाकी दाहिनी ओर ललिता एवं बायीं ओर चित्रा बैठी हैं। श्रीश्यामसुन्दरकी बायीं ओर विशाखा घुटना टेके बैठी हैं तथा दाहिनी ओर दक्षिणकी ओर मुख किये हुए इन्दुलेखा बैठी हैं। चम्पकलता विशाखाकी बायीं ओर अपने दाहिने हाथसे विशाखाके बायें कन्धेको पकड़े हुए बैठी हैं। तुङ्गविद्या ललिता एवं श्रीप्रियाके बीचकी जगहमें कुछ पीछे हटकर बैठी हुई हैं। रङ्गदेवी श्रीप्रिया एवं चित्राके बीच कुछ पीछे हटकर बैठी हैं। सुदेवी इन्दुलेखा एवं चित्राके बीचकी जगहमें कुछ पीछे हटकर बैठी हैं। मञ्जरियाँ उन्हें चारों ओरसे घेरकर खड़ी हैं। रुकी हुई मञ्जरियोंकी दृष्टि श्रीप्रिया-प्रियतम एवं सखियोंपर लगी हुई है, जो अक्षक्रीड़ा आरम्भ करनेवाली ही हैं। निम्न चित्रसे स्पष्ट रूपसे ज्ञात हो सकता है कि श्रीप्रिया-प्रियतमके साथ अन्य सखियाँ किस-किस दिशामें कहाँ-कहाँ बैठी हैं।

ENGLISH TRANSLATION

A large yellow cloth is spread in the center. Upon it the Divine Couple and the sakhīs sit ready to play dice. Śrī Priyā faces east and Śyāmasundara west. Lalitā sits to Priyā's right and Citrā to Her left. Viśākhā kneels at Śyāmasundara's left, while Indulekhā sits at His right facing south. Campakalatā sits left of Viśākhā with a hand upon her shoulder. Tuṅgavidyā sits slightly behind between Lalitā and Priyā; Raṅgadevī sits behind between Priyā and Citrā; Sudevī sits behind between Indulekhā and Citrā. The mañjarīs stand encircling them, their eyes fixed upon the players. The accompanying illustration shows the precise seating directions.

ORIGINAL

श्रीप्रिया-प्रियतमके बीचमें एक हाथ लम्बा एवं एक हाथ चौड़ा कपड़ेका टुकड़ा रखा हुआ है, जो अत्यन्त सुन्दर जरीकी कारीगरीके कारण चमचम कर रहा है। अक्षक्रीड़ाके दाँवकी सूचना देनेके लिये यह इस प्रकारसे चिह्नित है:

१ नेत्र	२ नेत्र	३ कपोल	४ कपोल
५ अधर	६ ललाट	७ ठोढ़ी	८ ओष्ठ
९ हाथ	१० नासिका	११ हृदय	१२ हाथ
१३ मुकुट	१४ चरण	१५ चरण	१६ मुरली

ENGLISH TRANSLATION

Between the Divine Couple lies a square cloth one cubit on each side, glittering with exquisite brocade work. Its sixteen wager spaces are marked as follows:

1 eye	2 eye	3 cheek	4 cheek
5 lower lip	6 forehead	7 chin	8 upper lip
9 hand	10 nose	11 heart	12 hand
13 crown	14 foot	15 foot	16 flute

ORIGINAL

अब अक्षक्रीड़ा आरम्भ होनेके पूर्व श्रीप्रिया कहती हैं, "ना, मैं आज अपना दाँव सबसे पहले चुन लूँगी।"

श्यामसुन्दर कहते हैं, "वाह! यह कैसे होगा? नियमानुसार जिसका नाम आयेगा, वह पहले चुनेगा।"

श्यामसुन्दरकी बात सुनकर श्रीप्रियाके मुखारविन्दपर विशुद्ध मुस्कान छा जाती है तथा वे कहती हैं, "देखो, तुम प्रतिदिन कुछ-न-कुछ चालाकी अवश्य करते हो, नहीं तो प्रतिदिन पहले तुम्हारा ही दाँव कैसे आ जाता है? ना, आज वैसे नहीं। पहले मैं अपना दाँव चुन लूँगी, फिर कोई भी चुने।"

ENGLISH TRANSLATION

Before play begins Śrī Priyā says, "No, today I shall choose My wager first."

Śyāmasundara replies, "Indeed! How could that be? By rule, whoever's name is drawn first chooses first."

A pure smile spreads across Her lotus face. "You employ some trick every day. Otherwise how does Your turn always come first? No, today it shall not be so. I shall choose first, and then anyone else may choose."

ORIGINAL

रानीकी बात सुनकर श्यामसुन्दर मुस्कुराते हुए कहते हैं, "अच्छा, आज यदि पहले मेरा दाँव आये तो मैं वह दाँव तुम्हें दे दूँगा और तुम्हारा जो दाँव आयेगा, वह मैं ले लूँगा। क्यों, कहो तो मञ्जूर है?"

रानी हँसकर कहती हैं, "हाँ, यह मञ्जूर है।"

ENGLISH TRANSLATION

Śyāmasundara smiles. "Very well. If My lot comes first today, I shall give that wager to You and take whichever one falls to You. Is that acceptable?"

The Queen laughs. "Yes, that is acceptable."

ORIGINAL

रानीके यह कहते ही अत्यन्त सुन्दर परातमें गुलाबके अतिशय सुन्दर दस फूलोंको लिये हुए वृन्दा दक्षिणी ओरसे आकर खड़ी हो जाती हैं। गुलाबके फूल इस प्रकार रखे हुए हैं कि डण्डी नीचेकी ओर तथा पंखुड़ी ऊपरकी ओर है। वृन्दा परात रख देती हैं तथा पूर्व-उत्तरकी ओर मुख करके ललिता एवं चम्पकलताके बीचमें जो जगह थी, वहीं बैठ जाती हैं। अपनी आँखें हाथोंसे मूँद लेती हैं तथा कहती हैं, "तुमलोग अपनी इच्छानुसार स्थान परिवर्तन कर लो।"

अब सबसे पहले ललिता परातमें हाथ डालती हैं तथा फूलोंका स्थान इधर-उधर कर देती हैं। उसके बाद श्यामसुन्दर फूलोंका स्थान बदल देते हैं। फिर वृन्दा पूछती हैं, "क्यों, हो गया?"

श्यामसुन्दर कहते हैं, "हाँ, आँखें खोलो।"

ENGLISH TRANSLATION

Vṛndā enters from the south carrying ten beautiful roses in a splendid tray, their stems downward and petals upward. She sets it down and sits facing northeast between Lalitā and Campakalatā. Covering her eyes, she says, "Rearrange them as you wish."

First Lalitā moves the flowers, then Śyāmasundara changes their positions. Vṛndā asks, "Finished?"

"Yes, open your eyes," He answers.

ORIGINAL

वृन्दा आँखें खोलती हैं तथा अपनी एक दासीको बाहरसे बुलवाती हैं। दासी आ जाती है। वृन्दा उसे इशारा करती हैं। वह पहले एक फूल श्रीप्रियाको देती है, उसके बाद एक फूल श्यामसुन्दरको, फिर ललिता, विशाखा, चित्रा, इन्दुलेखा, चम्पकलता, रङ्गदेवी, तुङ्गविद्या एवं सुदेवीको क्रमशः एक-एक फूल दे देती है। श्यामसुन्दरको मिले फूलपर सातका अङ्क निकला और रानीके फूलपर तीनका। ललिता, विशाखा, चित्रा, इन्दुलेखा, चम्पकलता, रङ्गदेवी, तुङ्गविद्या एवं सुदेवीके फूलोंपर क्रमशः २, ३, ८, ४, ६, २, १०, १ के चिह्न थे। अतः यह निर्णय हुआ कि क्रमशः सुदेवी, रङ्गदेवी, राधारानी, इन्दुलेखा, ललिता, विशाखा, श्यामसुन्दर, चित्रा, चम्पकलता एवं तुङ्गविद्या दाँव चुनेंगे।

ENGLISH TRANSLATION

Vṛndā opens her eyes and summons a maid, who distributes one flower each to Śrī Priyā, Śyāmasundara, Lalitā, Viśākhā, Citrā, Indulekhā, Campakalatā, Raṅgadevī, Tuṅgavidyā, and Sudevī. Śyāmasundara's bears seven and the Queen's three. The others bear 2, 3, 8, 4, 6, 2, 10, and 1 respectively. Thus the choosing order becomes Sudevī, Raṅgadevī, Rādhārāṇī, Indulekhā, Lalitā, Viśākhā, Śyāmasundara, Citrā, Campakalatā, and Tuṅgavidyā.

ORIGINAL

श्यामसुन्दर कहते हैं, "हाँ, सुदेवी! तू कौन-सा चुनती है?"

सुदेवी मुस्कुराकर ललिताकी ओर देखती हैं, फिर सोचकर कहती हैं, "मैं तीन नम्बरका कोष्ठ अपना दाँव स्वीकार कर रही हूँ।" रङ्गदेवी छः नम्बरका कोष्ठ स्वीकार करती हैं। रानी कुछ सोचकर कहती हैं, "मैं नवम कोष्ठ ले रही हूँ।" इसके बाद इन्दुलेखा आठवाँ, ललिता दूसरा, विशाखा चौदहवाँ, श्यामसुन्दर बारहवाँ, चित्रा ग्यारहवाँ, चम्पकलता चौथा एवं तुङ्गविद्या पाँचवाँ कोष्ठ स्वीकार कर लेती हैं।

ENGLISH TRANSLATION

Śyāmasundara asks, "Sudevī, which do you choose?"

She smiles toward Lalitā and selects space three. Raṅgadevī selects six. After reflection the Queen chooses nine. Indulekhā then takes eight, Lalitā two, Viśākhā fourteen, Śyāmasundara twelve, Citrā eleven, Campakalatā four, and Tuṅgavidyā five.

ORIGINAL

अब वृन्दा बहुत सुन्दर नीले मखमलकी बनी हुई एक छोटी पोटली अपनी कञ्चुकीसे निकालती हैं और उसे खोलती हैं। पोटलीमें अत्यन्त सुन्दर पीले रंगकी तेजस धातुकी बनी हुई सोलह कौड़ियाँ हैं। कौड़ियाँ इतनी सुन्दर एवं चिकनी हैं कि देखते ही चकित हो जाना पड़ता है। प्रत्येक कौड़ीपर गलबाँही डाले प्रिया-प्रियतमकी अतिशय सुन्दर आकृति अङ्कित है। छवि इतनी कारीगरीसे बनायी हुई है कि बिलकुल सजीव-सी प्रतीत हो रही है। कौड़ियोंपर प्रिया-प्रियतमकी छवि देखकर सबका मन खिल उठता है।

ENGLISH TRANSLATION

Vṛndā draws a small blue velvet pouch from her bodice and opens it. Inside are sixteen smooth, beautiful yellow cowries made of radiant metal. Upon every piece is engraved a lifelike image of Priyā and Her Beloved with arms around one another. At the sight, every heart blossoms.

ORIGINAL

वृन्दादेवी खेल प्रारम्भ करनेकी आज्ञा देती हैं। वे नियम स्थिर करती हैं: (१) अपनी बारीपर खिलाड़ी सोलह कौड़ियाँ उछालकर अपने दाँवकी संख्याके बराबर कौड़ियाँ चित्त गिरानेकी चेष्टा करेगा। संख्या न आनेपर दाँव हारा जायेगा और कोष्ठमें लिखे प्रतिद्वन्द्वीके अङ्गपर विजेताका अधिकार होगा। (२) सही संख्या आनेपर खिलाड़ी जीतेगा और प्रतिद्वन्द्वीके उसी अङ्गपर उसका अधिकार होगा। (३) प्रत्येक सखीका श्यामसुन्दरके साथ पृथक दाँव होगा। (४) प्रत्येक हारनेवाली सखीके बाद श्यामसुन्दरको फेंकनेका अधिकार होगा। (५) सोलहों कौड़ियाँ चित्त गिरनेपर दाँवकी जीतके साथ कोष्ठ एकमें लिखे अङ्गपर भी अधिकार होगा तथा तत्काल फिर फेंकनेका अधिकार मिलेगा। (६) लगातार कई बार सोलह कौड़ियाँ चित्त गिरनेपर किन-किन अङ्गोंपर क्रमशः अधिकार होगा, वृन्दा उसी समय घोषित करेंगी।

ENGLISH TRANSLATION

Vṛndādevī authorizes the game and fixes its rules. On each turn the player casts all sixteen cowries and tries to land face-up the number matching the chosen space. Failure loses the wager; success wins it, giving the victor a claim upon the corresponding limb of the opponent. Each sakhī plays a separate match with Śyāmasundara, who casts after every sakhī who loses. Landing all sixteen face-up wins the wager, also grants the right associated with space one, and earns an immediate extra cast. If sixteen appears repeatedly, Vṛndā will announce the successive additional claims.

ORIGINAL

सर्वप्रथम सुदेवी कौड़ियाँ उछालती हैं। उनका दाँव तीनका था, पर दो कौड़ियाँ चित्त एवं चौदह पट गिरीं। श्यामसुन्दर खिलखिलाकर हँस पड़ते हैं। वृन्दा कहती हैं, "यह पहला दाँव था, पर सुदेवी हार गयी हैं। पहले दाँवके कारण मैं निर्णयकर्ताके विशेष अधिकारसे यह सुविधा दे रही हूँ कि यदि श्यामसुन्दर भी इस बार हार गये तो सुदेवीकी हार रद्द समझी जायेगी; पर जीत गये तो हार कायम रहेगी और कोष्ठ एकके अङ्गपर भी श्यामसुन्दरका अधिकार होगा। क्यों सुदेवी, स्वीकार है?"

सुदेवी विचारमें पड़कर ललितासे पूछती हैं, "क्या करूँ?" ललिता कहती हैं, "तू मान ले, देखा जायेगा।" सुदेवी हामी भर लेती हैं।

ENGLISH TRANSLATION

Sudevī casts first. Her wager is three, but only two land face-up. Śyāmasundara laughs aloud. Vṛndā says, "Sudevī has lost, but because this is the first wager I grant a special option. If Śyāmasundara now loses, her loss is canceled. If He wins, it stands and He also gains the right from space one. Do you accept?"

Sudevī asks Lalitā what she should do. "Accept; we shall see," Lalitā replies, and Sudevī agrees.

ORIGINAL

श्यामसुन्दर कौड़ियाँ इस चतुराईसे उछालते हैं कि सोलहों चित्त गिरती हैं। सुदेवी कुछ शरमा जाती हैं। श्यामसुन्दर कहते हैं, "वृन्दे! पहलेसे स्पष्ट घोषणा करती चली जा, नहीं तो क्या पता, ये सब पीछेसे बेईमानी करेंगी।"

वृन्दा प्रेममें भरकर कहती हैं, "श्यामसुन्दरका सुदेवीके बायें कपोलपर, बायें नेत्रपर, बायें हाथपर एवं दाहिने नेत्रपर भी अधिकार हो गया तथा नियमके अनुसार श्यामसुन्दरको फिरसे दाँव फेंकनेका अधिकार है।" श्यामसुन्दर फिर फेंकते हैं; तेरह चित्त गिरती हैं। वृन्दा कहती हैं, "इस बार श्यामसुन्दर हार गये, इसलिये उनके बायें हाथपर सुदेवीका अधिकार हो गया।"

ENGLISH TRANSLATION

Śyāmasundara casts so skillfully that all sixteen land face-up. Sudevī grows bashful. He tells Vṛndā, "Make every declaration plainly in advance, lest they cheat afterward."

Filled with love, Vṛndā announces His claim over Sudevī's left cheek, left eye, left hand, and right eye, together with another cast. His next throw yields thirteen, so He loses and Sudevī gains a claim upon His left hand.

ORIGINAL

इसके बाद रङ्गदेवी छः कौड़ियाँ चित्त गिराती हैं। वृन्दा कहती हैं, "रङ्गदेवी दाँव जीत गयीं। श्यामसुन्दरके ललाटपर रङ्गदेवीका अधिकार हो गया है। अब मेरी प्यारी रानी दाँव फेंकेंगी।"

ENGLISH TRANSLATION

Raṅgadevī then lands six face-up. Vṛndā declares her victory and claim upon Śyāmasundara's forehead. Now it is the beloved Queen's turn.

ORIGINAL

रानीकी बारी आते ही सबका मन उत्कण्ठासे भर जाता है। रानी प्यारे श्यामसुन्दरके मुखारविन्दकी ओर ताकती हुई कौड़ियाँ उछाल देती हैं। आठ कौड़ियाँ चित्त गिरीं और शेष आठमें एक कौड़ी दूसरी दो कौड़ियोंपर चढ़ी हुई आधी चित्त गिरी। ललिता बोल उठती हैं, "यह आधी कौड़ी भी पूरी समझी जायेगी, इसलिये मेरी प्यारी सखीकी जीत हुई।"

श्यामसुन्दर कहते हैं, "वाह! क्या मनमानी कहनेसे बात बन जायेगी? कौड़ियाँ आठ चित्त गिरी हैं; तुम्हारी सखी हार गयी।" सखियाँ कहती हैं, "नहीं, मेरी प्यारी राधाकी जीत हुई है।" श्यामसुन्दर रानीसे कहते हैं, "नहीं, तू हार गयी है।"

ENGLISH TRANSLATION

Everyone grows eager when the Queen's turn arrives. Looking toward Śyāmasundara's lotus face, She casts. Eight land face-up, while one of the others rests half face-up atop two pieces. Lalitā cries, "The half must count as whole. My darling friend has won!"

Śyāmasundara objects, "Will saying whatever you please make it true? Only eight landed face-up. Your friend lost." The sakhīs insist Rādhā won, while He tells Her, "No, You lost."

ORIGINAL

सब वृन्दाकी ओर देखते हैं। वृन्दा विचारकर कहती हैं, "जीत तो रानीकी हुई प्रतीत होती है, पर प्यारे श्यामसुन्दरका सन्देह मिटानेके लिये रानी उन तीन कौड़ियोंको फिरसे उछालें। यदि दो चित्त गिरीं तो उनकी जीत; यदि तीनों चित्त गिरीं तो बिना दूसरा दाँव फेंके श्यामसुन्दरके दाहिने हाथपर भी अधिकार; यदि एक चित्त गिरी तो न हार न जीत और रानी फिरसे पूरा दाँव फेंकेंगी। क्यों श्यामसुन्दर, मञ्जूर है?"

श्यामसुन्दर मुस्कुराकर कहते हैं, "ठीक है।" रानी तीनों कौड़ियाँ उछालती हैं और तीनों चित्त गिरती हैं। सखियोंमें हँसीका प्रवाह बह जाता है। वृन्दा कहती हैं, "श्यामसुन्दरके दोनों हाथोंपर रानीका अधिकार हो गया।"

ENGLISH TRANSLATION

All look to Vṛndā. She judges that the Queen appears to have won, but to remove Śyāmasundara's doubt orders the three involved cowries recast. Two face-up will confirm Her win; all three will additionally grant His right hand without another wager; one will void the result and require a full recast. Śyāmasundara agrees.

The Queen casts all three face-up. Laughter flows among the sakhīs, and Vṛndā grants Her a claim upon both of Śyāmasundara's hands.

ORIGINAL

इन्दुलेखाके दाँवमें दस कौड़ियाँ चित्त गिरती हैं। वृन्दा कहती हैं, "इन्दुलेखा हार गयी, इसलिये इन्दुलेखाके ओष्ठपर श्यामसुन्दरका अधिकार। श्यामसुन्दर, तुम दाँव फेंको।" श्यामसुन्दर बारह चित्त गिराते हैं। वृन्दा कहती हैं, "इन्दुलेखाके बायें हाथपर श्यामसुन्दरका अधिकार।"

ENGLISH TRANSLATION

Indulekhā lands ten rather than eight and loses, giving Śyāmasundara a claim upon her upper lip. His answering cast lands twelve, gaining Him a claim upon her left hand as well.

ORIGINAL

अब ललिताकी बारी आती है। श्यामसुन्दर सभी कौड़ियाँ ललिताके हाथमें दे देते हैं। ललिता कहती हैं, "तुम्हारे स्पर्शकी हुई कौड़ियाँ हैं। पता नहीं, तुमने जादू-टोना किया होगा। देवो कश्यपिनी मेरी सदा रक्षा करें।" देवताका स्मरण करके ललिता कौड़ियाँ उछाल देती हैं। सोलहों चित्त गिरती हैं। पुनः उछालती हैं, फिर सोलहों चित्त गिरती हैं। सखियोंमें हँसीका तूफान उठता है। रानी प्रेममें भरकर ललिताको खींचकर हृदयसे लगा लेती हैं। तीसरी बार ललिता चौदह चित्त गिराती हैं।

वृन्दा कहती हैं, "दो दाँव लगातार जीतनेसे श्यामसुन्दरके दोनों नेत्रों और दोनों कपोलोंपर ललिताका अधिकार। तीसरा दाँव ललिता हार गयीं, इसलिये ललिताके अधरपर श्यामसुन्दरका अधिकार।"

ललिता तुरन्त कहती हैं, "वाह वृन्दे! तुम्हें नियम भी याद नहीं। मेरे स्वयंके दाँवका कोष्ठ मेरा दाहिना नेत्र है।" वृन्दा भूल सुधारकर कहती हैं, "अधरके बदले तुम्हारे दाहिने नेत्रपर श्यामसुन्दरका अधिकार रहा।"

ENGLISH TRANSLATION

When Lalitā's turn comes, she receives the cowries from Śyāmasundara and protests, "You have touched these. Who knows what sorcery You worked upon them? May the divine mother Kaśyapinī protect me!" Remembering the goddess, she casts all sixteen face-up, then does so again. A storm of laughter rises, and the Queen draws Lalitā to Her heart. On the third cast Lalitā lands fourteen.

Vṛndā grants Lalitā claims upon both Śyāmasundara's eyes and cheeks for her two consecutive wins, then mistakenly grants Him her lower lip for the loss. Lalitā reminds her that Lalitā's own chosen space concerns her right eye. Vṛndā corrects the ruling: Śyāmasundara's claim is upon Lalitā's right eye.

ORIGINAL

श्यामसुन्दर फिर बारह कौड़ियाँ चित्त गिराते हैं। वृन्दा कहती हैं, "ललिताके बायें हाथपर श्यामसुन्दरका अधिकार।" विशाखा पन्द्रह चित्त गिराकर हारती हैं; अतः उनके बायें चरणपर श्यामसुन्दरका अधिकार होता है। श्यामसुन्दर चौदह चित्त गिराते हैं और हारते हैं; अतः उनके बायें हाथपर विशाखाका अधिकार होता है।

ENGLISH TRANSLATION

Śyāmasundara next lands twelve and gains a claim upon Lalitā's left hand. Viśākhā lands fifteen and loses, giving Him a claim upon her left foot. His answering cast lands fourteen, so Viśākhā gains a claim upon His left hand.

ORIGINAL

चित्राका दाँव आता है। ठीक ग्यारह कौड़ियाँ चित्त गिरती हैं; पर श्यामसुन्दर गिननेका बहाना करके एक कौड़ी और चित्त कर देते हैं तथा कहते हैं, "ना, बारह कौड़ियाँ चित्त गिरी हैं। यह तो दाँव हार गयी।" उसी समय वृन्दाकी एक दासी उनके कानमें कुछ कह रही थी, इसलिये वृन्दा यह चतुराई देख नहीं सकीं। प्रेमका कलह होने लगा। ललिता, चित्रा आदि कहती हैं, "वाह! तुमने एक कौड़ी और चित्त कर दी है। दाँव चित्राने जीता है।"

श्यामसुन्दर कहते हैं, "वाह! जब मैंने सबसे बेईमानी नहीं की तो चित्रासे हमारा कोई बैर है कि बेईमानी करूँगा?"

ENGLISH TRANSLATION

Citrā casts exactly eleven face-up, but while pretending to count, Śyāmasundara turns another and says, "No, twelve are face-up. She lost." A maid is whispering to Vṛndā, so she misses the trick. A loving quarrel erupts. Lalitā, Citrā, and the others accuse Him of turning the extra piece.

He protests, "I cheated none of the others. What enmity have I with Citrā that I should cheat her?"

ORIGINAL

वृन्दा लज्जित होती हैं, क्योंकि भूल उनकी थी। वे कहती हैं, "दूसरी बार दाँव फेंको।" चित्रा कहती हैं, "मैं अपना जीता हुआ दाँव छोड़कर जोखिम क्यों उठाऊँ?" श्यामसुन्दर कहते हैं, "यह अवश्य हार गयी।" वृन्दा रानीसे प्रार्थना करती हैं कि किसी प्रकार चित्राको मना लें।

रानी कहती हैं, "चित्रे, वृन्दाकी भूलसे गड़बड़ी हुई है, इसलिये फिरसे दाँव लगा। यदि जीत गयी तो प्रश्न नहीं; यदि हारी तो मैं वह दाँव ले लूँगी और श्यामसुन्दर मुझसे वसूल करेंगे। इसके बाद श्यामसुन्दरको ग्यारहवीं संख्याका दाँव लगाना होगा। यदि वे हार गये तो तुम्हारा दाँव वापस होगा; यदि जीते तो वही जोखिम फिर तू उठा ले।"

ENGLISH TRANSLATION

Ashamed of her lapse, Vṛndā orders another throw. Citrā refuses to risk a wager she already won, while Śyāmasundara insists she lost. Vṛndā appeals to the Queen.

The Queen proposes that Citrā cast again. If Citrā loses, the Queen will assume that wager and Śyāmasundara may collect from Her. He must then cast for space eleven; if He loses, Citrā's wager is restored, while if He wins Citrā must bear the risk again.

ORIGINAL

सब सहमत होते हैं। चित्रा पुनः उछालती हैं; दस कौड़ियाँ चित्त आती हैं। श्यामसुन्दर हँसते हैं। वृन्दा मुस्कुराकर कहती हैं, "क्या बताऊँ?"

श्यामसुन्दर कौड़ियाँ उठाकर कहते हैं, "अब देख, तेरा एक-एक अङ्ग जीत लेता हूँ। वृन्दे, अभीसे मेरी जीतकी साफ घोषणा कर दे।" वे लगातार छः बार सोलहों कौड़ियाँ चित्त गिराते हैं। चित्रा लजा जाती हैं। रानी हँसती हुई कौड़ियाँ उनके हाथसे छीन लेती हैं।

ENGLISH TRANSLATION

All agree. Citrā recasts and lands ten, losing. Śyāmasundara laughs, while Vṛndā smiles helplessly.

Taking the cowries, He says, "Now watch Me win every one of your limbs. Vṛndā, announce My victory clearly in advance." Six consecutive times He lands all sixteen face-up. Citrā grows shy, and the Queen laughingly snatches the cowries from His hand.

ORIGINAL

श्यामसुन्दर कहते हैं, "वाह, वाह! अभी मेरा दाँव है।" वे कौड़ियोंके लिये छीना-झपटी करते हैं। रानी उन्हें दोनों मुट्ठियोंमें कसकर पकड़ लेती हैं। श्यामसुन्दर वृन्दासे कहते हैं, "देख वृन्दे! तू चुपचाप बैठी रहेगी?" वृन्दा कहती हैं, "रानी, दाँव श्यामसुन्दरका है, कौड़ियाँ उन्हें दे दो।" ललिता कहती हैं, "तुमने ही तो सब गड़बड़ मचायी है। अब श्यामसुन्दरका पक्ष करने चली हो।"

रानी कौड़ियाँ पकड़े उठती हैं। श्यामसुन्दर भी उठकर चतुराईसे उनका अञ्चल पकड़ लेते हैं। अञ्चल सँभालनेमें रानी कौड़ियाँ छोड़ देती हैं। वे फर्शपर झर-झर गिरती हैं। श्यामसुन्दर हँसते हुए बैठकर उन्हें उठा लेते हैं, और रानी भी हँसती हुई पूर्ववत् बैठ जाती हैं।

ENGLISH TRANSLATION

Śyāmasundara protests that it is still His turn and tries to seize the pieces, but the Queen closes them tightly in both fists. He appeals to Vṛndā, who asks the Queen to return them. Lalitā accuses Vṛndā of creating the confusion and now siding with Him.

The Queen rises clutching the cowries. Śyāmasundara rises too and cleverly catches Her veil. As She moves to secure it, the cowries stream onto the floor. Laughing, He sits and gathers them, while She resumes Her place with a smile.

ORIGINAL

श्यामसुन्दर पन्द्रह कौड़ियाँ चित्त गिराते हैं। वृन्दा घोषणा करती हैं, "चित्राके दाँवको रानीने लिया था। चित्रा दाँव हारी, इसलिये रानीके हृदयपर श्यामसुन्दरका अधिकार। इसके बाद श्यामसुन्दरने लगातार छः दाँव जीते हैं, इसलिये चित्राके हृदय, दोनों नेत्र, दोनों कपोल, अधर, ललाट, ठोढ़ी, ओष्ठ, दोनों हाथ एवं नासिकापर श्यामसुन्दरका अधिकार। अन्तिम दाँव श्यामसुन्दर हार गये, इसलिये श्यामसुन्दरके हृदयपर चित्राका अधिकार।"

ENGLISH TRANSLATION

Śyāmasundara lands fifteen and loses. Vṛndā rules that because the Queen assumed Citrā's losing wager, He has a claim upon the Queen's heart. His six consecutive wins grant Him claims upon Citrā's heart, both eyes, both cheeks, lower lip, forehead, chin, upper lip, both hands, and nose. Since His final wager failed, Citrā gains a claim upon His heart.

ORIGINAL

अब चम्पकलता चार कौड़ियाँ चित्त गिराकर जीतती हैं। वृन्दा कहती हैं, "श्यामसुन्दरके दाहिने कपोलपर चम्पकलताका अधिकार।" तुङ्गविद्या बारह कौड़ियाँ चित्त गिराकर हारती हैं; अतः उनके अधरपर श्यामसुन्दरका अधिकार होता है। अन्तमें श्यामसुन्दर तेरह कौड़ियाँ चित्त गिराकर हारते हैं; अतः उनके बायें हाथपर तुङ्गविद्याका अधिकार होता है।

ENGLISH TRANSLATION

Campakalatā lands four and wins a claim upon Śyāmasundara's right cheek. Tuṅgavidyā lands twelve and loses, giving Him a claim upon her lower lip. Finally He lands thirteen and loses, giving Tuṅgavidyā a claim upon His left hand.

ORIGINAL

वृन्दाके यह कहते ही चित्रा कोष्ठवाले कपड़ेको उलट देती हैं तथा उठकर भागने लगती हैं। और सखियाँ भी चटपट उठती हैं। श्यामसुन्दर दौड़कर चित्राको पकड़ लेते हैं। चित्रा हँसने लगती है। श्यामसुन्दर चित्राको लाकर पुनः बैठा देते हैं।

इसी समय उड़ता हुआ एक तोता निकुञ्जमें प्रवेश करता है तथा दरवाजेकी एक डालीपर बैठकर आँखोंको कोरोंमें घुमाकर कहता है, "जय हो प्रिया-प्रियतमकी! आज्ञा हो तो कुछ निवेदन करूँ।"

वृन्दा कहती हैं, "हाँ, हाँ, जल्दीसे बोल।"

ENGLISH TRANSLATION

Citrā immediately flips over the marked cloth and runs. The others spring up too, but Śyāmasundara catches Citrā and laughingly brings her back to her seat.

Just then a parrot flies into the bower, perches upon a branch beside the door, turns its eyes, and says, "Victory to Priyā and Her Beloved! With permission, may I report something?"

"Yes, speak quickly," Vṛndā replies.

ORIGINAL

तोता कहता है, "मेरे प्यारे श्यामसुन्दर! मेरी प्यारी रानी! मैं वृन्दादेवीकी आज्ञासे मोहनघाटपर स्थित कदम्बके पेड़पर बैठा पहरा दे रहा था। कुछ क्षण पहले तुम्हारी राधारानीके महलसे एक सुन्दर ब्राह्मणकुमार एवं एक वृद्धा स्त्री निकली। वृद्धा कहती थी, 'ब्राह्मणकुमार! मुझे पूर्ण आशा है कि आप मेरी प्रार्थना अवश्य मान लेंगे और किसी उपायसे मेरी लालसा पूर्ण करेंगे।' कुमारने कहा, 'मैंने सारी परिस्थिति बतला दी है। पूरी चेष्टा करूँगा, पर सफलता विधाताके हाथमें है। आजका तो मैं वचन देता हूँ, उसे अवश्य भेज दूँगा। मैं भी आने और उसे राजी करनेकी चेष्टा करूँगा। आगे हरि-इच्छा।'"

ENGLISH TRANSLATION

The parrot says, "My beloved Śyāmasundara, my darling Queen, on Vṛndādevī's order I kept watch from the kadamba at Mohanaghāṭa. Moments ago a handsome young brāhmaṇa and an elderly woman left Rādhārāṇī's palace. She begged him to fulfill her longing by some means. He replied that he had explained the situation and would try fully, though success rested with fate. For today he promised to send her and to come himself if possible, attempting in the woman's presence to persuade her. Beyond that lay Hari's will."

ORIGINAL

तोता आगे कहता है, "दोनों दक्षिणकी ओर बढ़े। राजपथपर पहुँचकर ब्राह्मणकुमार पूर्वकी ओर चला गया और वृद्धाने गिरिवर-स्रोतकी ओर जानेवाली पगडंडी पकड़ी। वृन्दादेवीका आदेश था कि रानीके महलसे किसी वृद्धाको इस ओर आते देखकर उसी क्षण खबर दूँ। इसलिये पूरी शक्तिसे उड़कर सूचना दे रहा हूँ। वह वृद्धा अभीतक तीन सौ गज भी आगे नहीं बढ़ी होगी।"

ENGLISH TRANSLATION

The parrot continues, "They went south. At the royal road the young brāhmaṇa turned east, while the woman took the path toward Girivara-srota. Vṛndādevī had commanded me to report the instant I saw an elderly woman coming this way from the Queen's palace. I therefore flew here with all my strength. She cannot yet have advanced even three hundred yards."

ORIGINAL

तोतेकी बात सुनकर रानीका मुख बिलकुल उदास हो जाता है। श्यामसुन्दर भी गम्भीर बन जाते हैं; पर रानीकी दशा देखकर अपनी गम्भीरता छिपाते हुए उठ पड़ते हैं। सखियाँ भी गम्भीर हो जाती हैं। प्यारे श्यामसुन्दर रानीको अपने हृदयसे लगा लेते हैं। रानी हृदयसे लगकर गम्भीर श्वास लेने लगती हैं। वृन्दा ललितासे कहती हैं, "समय कम है, शीघ्रता करनी चाहिये।" ललिता गम्भीर मुद्रामें श्यामसुन्दरको इशारा करती हैं तथा रानीको पकड़ लेती हैं।

ENGLISH TRANSLATION

The Queen's face turns utterly sad. Śyāmasundara too grows grave, but seeing Her condition conceals His own sorrow and rises. The sakhīs become solemn. He draws the Queen to His heart, and She breathes deeply against Him. Vṛndā warns Lalitā that time is short. Lalitā signals gravely to Śyāmasundara and supports the Queen.

ORIGINAL

धीरे-धीरे प्रिया-प्रियतम निकुञ्जके पूर्वी फाटकसे निकलकर रविशपर पूर्वकी ओर चलते हैं। श्यामसुन्दर श्रीप्रियाको सँभाले हुए चल रहे हैं। प्यारे श्यामसुन्दरसे थोड़ी देरके लिये अलग होनेके विचारसे प्रियाका प्राण छटपटाने लगा है। श्यामसुन्दरके प्राण भी छटपटा रहे हैं; पर वे अपनी व्याकुलता छिपाये हैं, जिससे प्रिया उन्हें व्याकुल देखकर और व्याकुल न हो जायें। कुछ दूर पूर्व चलकर वे दक्षिण मुड़ते हैं। ललिता-कुञ्जकी दक्षिणी सीमाकी चहारदीवारीके छोटे फाटकसे निकलकर फिर पूर्व चलकर ललिता-कुञ्ज एवं विशाखा-कुञ्जके बीच उत्तर-दक्षिण जानेवाली सड़कपर पहुँचते हैं।

ENGLISH TRANSLATION

Slowly the Divine Couple leaves through the eastern gate and walks east along the lane, Śyāmasundara supporting Priyā. The thought of even brief separation makes Her life-breaths writhe, and His do likewise, though He hides His anguish lest seeing it increase Hers. They continue east, turn south, pass through a small gate in Lalitā's boundary wall, then turn east again to the north-south road between Lalitā's and Viśākhā's bowers.

ORIGINAL

श्यामसुन्दर पुनः श्रीप्रियाको हृदयसे लगा लेते हैं तथा कुछ क्षण उनके मुखारविन्दकी ओर देखते हुए गम्भीर मुद्रामें प्रियासे कुछ दूर हटकर खड़े हो जाते हैं। फिर उत्तरकी ओर चलने लगते हैं। रानी एवं सखियाँ चुपचाप खड़ी रहकर निर्निमेष नयनोंसे उधर ही देखती रहती हैं। श्यामसुन्दर बार-बार गर्दन घुमाकर रानीकी ओर प्रेमभरी दृष्टिसे देखते जा रहे हैं। करीब एक फरलाङ्ग उत्तर जाकर एक फाटकसे विशाखाके कुञ्जमें प्रवेश करके आँखोंसे ओझल हो जाते हैं। रानी कुछ क्षण एकटक उसी दिशाकी ओर देखती रहती हैं, फिर ललिताके कन्धेको पकड़कर दक्षिणकी ओर सूर्य-मन्दिरमें जानेके उद्देश्यसे चल पड़ती हैं।

ENGLISH TRANSLATION

Śyāmasundara embraces Śrī Priyā once more and gazes upon Her lotus face. Then, grave and reluctant, He steps away and walks north. The Queen and sakhīs stand silently, watching without blinking, while He repeatedly turns to look back at Her with love. About a furlong north He enters Viśākhā's bower through a gate and disappears. The Queen remains staring in that direction, then takes Lalitā's shoulder and sets out south toward the Sun temple.

CHAPTER 11

सूर्य-पूजन लीला

The Worship of the Sun

Source scan pages 124–137

ORIGINAL

Sanskrit invocation

॥ विजयेतां श्रीप्रियाप्रियतमौ ॥

ENGLISH TRANSLATION

May Śrī Priyā and Her most beloved Lord be ever victorious.

ORIGINAL

सूर्य-पूजन लीला

अतिशय रमणीय सुन्दर उद्यानमें पूर्वाभिमुख सूर्य-मन्दिर स्थित है। मन्दिर सुन्दर संगमरमर पत्थरोंका बना हुआ है। मन्दिरकी बाहरी दालानकी सीढ़ियोंपर सखी-मण्डली-सहित राधारानी विराजमान हैं। रानीका मुख पूर्व एवं दक्षिणके कोनेकी ओर है। वे दालानके एक खंभेसे पीठ टेककर एवं सीढ़ियोंपर पैर लटकाये बैठी हैं। रानीकी दाहिनी तरफ चित्रा खड़ी हैं। अन्यान्य सखियाँ रानीको घेरे-सी रहकर कुछ सीढ़ियोंपर एवं कुछ दालानमें बैठी हैं। सीढ़ियोंके बिलकुल नीचे संगमरमरके बेंचके आकारका आसन है। उसपर ललिता उत्तरकी ओर मुख किये तथा पैर लटकाये बैठी हैं।

उद्यानमें तमाल, मौलश्री, आम्र, कदम्ब आदिके हरे-हरे बड़े-बड़े वृक्ष जगह-जगह लगे हुए हैं। स्थान-स्थानपर क्यारियोंमें नाना प्रकारके अतिशय सुन्दर, सुगन्धित, रंग-बिरंगे पुष्प खिल रहे हैं, जिनपर भ्रमरोंकी टोली मँडरा रही है। उद्यान पक्षियोंके सुन्दर कलरवसे गुञ्जित हो रहा है। एक पक्षी अतिशय सुरीले कण्ठसे अविराम बोल रहा है। उसकी ओर ध्यान देनेपर ऐसा प्रतीत हो रहा है मानो पक्षी प्यारभरे हृदयसे आलाप लेकर पुकार रहा है, “गोपीनाथ! गोपीनाथ!! गोपीनाथ!!!”

मन्दिरके सामनेसे पूर्वकी ओर सीधे एक चौड़ी रविश (छोटी सड़क) उद्यानके पूर्वी फाटकतक गयी हुई है तथा उससे कुछ कम चौड़ी रविश दक्षिणी एवं उत्तरी फाटकतक भी बनी हुई है। अतिशय सुन्दर मल्लिका एवं कुन्द-पुष्पोंकी लम्बी क्यारियाँ रविशके किनारे-किनारे लगी हुई हैं। मन्दिरके सामने सूर्यमुखी पुष्पोंकी एक-एक क्यारी सड़कके दोनों किनारोंपर शोभा पा रही है। वृक्षोंकी कद तो छोटी है, पर उनमें इतने सुन्दर एवं इतने बड़े फूल लग रहे हैं कि देखनेसे प्रतीत होता है मानो फूलके छोटे-छोटे झाड़ वृक्षोंपर सजा दिये गये हों।

ENGLISH TRANSLATION

The Worship of the Sun

In a beautiful garden stands an east-facing temple of fine marble. Rādhārānī sits with Her sakhīs on the steps of its outer veranda, leaning against a pillar, Her feet hanging down and Her face turned southeast. Citrā stands to Her right. Other sakhīs sit around Her on the steps and veranda. Below, Lalitā sits facing north upon a marble bench.

Large tamāla, bakula, mango, and kadamba trees grow throughout the garden. Beds of fragrant, many-colored flowers teem with hovering bees, while birdsong fills the air. One bird calls without pause in an exceptionally melodious voice, as if crying from a loving heart, "Gopīnātha! Gopīnātha! Gopīnātha!"

A broad path runs east from the temple to the garden gate, with slightly narrower paths to the northern and southern gates. Long beds of jasmine and kunda flowers border them. Beds of sunflowers adorn both sides before the temple. Though the plants are short, their blossoms are so large and beautiful that they resemble little flowering shrubs set upon trees.

ORIGINAL

रानीके मुखारविन्दपर गम्भीरता छायी हुई है; छोटे-छोटे स्वेदकण कपोलोंपर झलमल करते हुए दीख पड़ रहे हैं। रानीके चरणोंके पास बैठी हुई विलासमञ्जरी पुष्पोंके बने हुए पंखेसे धीरे-धीरे हवा कर रही है।

उधर उद्यानके पूर्वी फाटकपर रूपमञ्जरी खड़ी है। रूपमञ्जरीके बगलमें एक और मञ्जरी खड़ी है। रूपमञ्जरी उसीके कंधेपर हाथ रखे हुए उत्तर-दक्षिणकी ओर जो पगडंडी वनमें जाती है, उसीकी ओर कभी उत्तरकी तरफ, कभी दक्षिणकी तरफ बार-बार देख रही है। वह इस प्रतीक्षामें खड़ी है कि इस रास्तेसे ऋषियोंके शिष्य आते-जाते रहते हैं। कोई मिल जाये तो उसे प्रार्थना करके ले जाऊँ, जिससे रानीकी सूर्य-पूजाका कार्य सम्पन्न हो सके। यदि कोई आश्रमकुमार नहीं मिला, फिर तो बाध्य होकर अपने-आप पूजा करनी ही पड़ेगी; पर मिल जाये तो अच्छी बात है। किसी ऋषिकुमारकी बाट देखनेमें यह भी एक उद्देश्य है कि इस प्रकार देरी हो जायेगी और दिनका अधिकांश समय वनमें बीत जायेगा, क्योंकि वनमें रानीको सान्त्वना देनेमें सखियोंको ज्यादा सुविधा रहती है।

इसी समय उत्तरकी ओरसे एक ऋषिकुमार आता हुआ दिखायी पड़ता है। रूपमञ्जरी उसी ओर देखती रहती है। निकट आनेपर वह बड़ा सुन्दर दीखता है। रंग साँवला है। काले-काले सुन्दर केश कंधोंपर पीछे लटक रहे हैं। आँखोंसे इतनी सरलता टपक रही है, मानो वह पाँच वर्षका भोला-भाला शिशु हो। तेजसे मुख दम-दम कर रहा है। उम्र पंद्रह साल प्रतीत होती है। दोनों चरण इतने सुकोमल हैं मानो गुलाबकी पंखुड़ी हों।

रूपमञ्जरी उसे देखकर एक बार तो स्तब्ध हो जाती है, फिर सँभलकर उसकी ओर देखने लगती है। ऋषिकुमार निकट आकर रुकता है एवं मधुरतम कण्ठसे पूछता है, “देवि! क्या तुम बता सकती हो कि महर्षि शाण्डिल्यके आश्रमकी ओर कौन-सी पगडंडी जायेगी?”

ENGLISH TRANSLATION

Gravity covers Rādhā's lotus face, and tiny beads of perspiration shimmer on Her cheeks. Seated near Her feet, Vilāsamañjarī gently fans Her with a flower fan.

At the eastern gate Rūpamañjarī stands with her hand upon another mañjarī's shoulder, repeatedly searching both north and south along the woodland path. Disciples of sages pass this way, and she hopes to invite one to officiate at Rādhā's sun worship. Otherwise they must perform it themselves. Waiting also delays them so that most of the day may pass in the forest, where the sakhīs can more easily console Rādhā.

A young ascetic approaches from the north. He is remarkably beautiful and dark-complexioned, with lovely black hair falling over His shoulders. Such innocence flows from His eyes that He resembles a guileless five-year-old, though He appears about fifteen. His radiant face glows, and His feet are as tender as rose petals. Rūpamañjarī is struck motionless. Coming near, He asks in the sweetest voice, “Devī, which path leads to Maharṣi Śāṇḍilya's āśrama?”

ORIGINAL

रूपमञ्जरीने ऐसा मधुर कण्ठ कभी सुना ही नहीं था। वह मन्त्रमुग्ध-सी हो गयी; बड़ी मुश्किलसे बोल सकी, “क्यों, आप कौन हैं?”

ऋषिकुमारने कहा, “देवि! मैं महर्षि शाण्डिल्यका शिष्य हूँ। गुरुदेवने मुझे प्रातःकाल पुष्प लानेके लिये वनमें भेजा था। आज्ञा थी, ‘बेटा! सुन्दर-से-सुन्दर पीले रंगके पुष्प लाना। उत्तरकी तरफ वनमें आगे बढ़नेसे तुम्हें सुन्दर पीले पुष्प मिलेंगे।’ मैं उनकी आज्ञासे चलता हुआ वनमें बहुत दूर निकल गया। पुष्प तो मिल गये, पर राह भूल गया। घूम-फिरकर यहीं चला आता हूँ। पता नहीं किस दिशामें जाऊँ; दिग्भ्रम हो रहा है। ऐसा प्रतीत होता है कि सूर्य आज पश्चिमसे पूर्वकी ओर चल रहे हैं। न तो कुछ खाया है, न जल पी सका हूँ। पुष्पोंका दोना हाथमें लिये वनमें मारा-मारा फिर रहा हूँ।”

ऋषिकुमारकी वाणीसे अमृत झर रहा है। वे शब्द रूपमञ्जरीके हृदयपर मानो अधिकार करते जा रहे हैं। उसके मनमें किसी अहेतुक अनिर्वचनीय सरसताका उदय होने लगता है। वह कहती है, “ऋषिकुमार! आप महर्षि शाण्डिल्यके शिष्य हैं, पर मैंने आपको कभी नहीं देखा। महर्षिके दर्शन तो प्रतिदिन होते हैं। उनके आठ-दस शिष्योंको भी मैं बहुत अच्छी तरह पहचानती हूँ।”

ऋषिकुमार बोले, “देवि! इसीलिये तो आज राह भूला हूँ। महर्षि मुझपर अत्यधिक स्नेह करते हैं और सारे दिन-रात मुझे अपने हृदयमें छिपाये रखना चाहते हैं। इसीलिये मुझे कभी आश्रमके बाहर जानेकी आज्ञा नहीं मिली। आश्रमके पास एक सुन्दर रमणीय उद्यान है। उसकी प्रत्येक वस्तु और अणु-अणुसे परिचित हूँ, पर बाहर कभी नहीं निकला। उन्हींसे सुना है कि वे प्रतिदिन नन्दरायजीके घर जाया करते हैं। मैंने कई बार प्रार्थना की कि गुरुदेव, एक बार मुझे भी साथ चलनेकी आज्ञा दो। पर वे कहते, ‘ना, बेटा! मेरे इस उद्यानसे तुम्हारे चले जानेपर यह बिलकुल सूना हो जायेगा। विधाताने न जाने किस पुण्यका फल दिया है कि तुम मेरे शिष्य बने हो।’

“पर कल रात गुरुदेवको कोई स्वप्न हुआ। उसके फलस्वरूप उन्होंने मुझे हृदयसे लगाकर प्रातःकाल पुष्प लानेकी आज्ञा दी। अब मैं रास्ता भूल गया हूँ और वे मेरी प्रतीक्षामें अत्यन्त व्याकुल हो रहे होंगे। शीघ्र रास्ता बता दो; मैं तुम्हारा बहुत ऋणी होऊँगा।”

ENGLISH TRANSLATION

Rūpamañjarī has never heard such a voice. Spellbound, she can barely ask who He is.

He replies, “I am Maharṣi Śāṇḍilya's disciple. At dawn Gurudeva sent me to gather the loveliest yellow flowers northward in the forest. I found them, but wandered far and lost the path. Now even the directions confuse me, as if the sun were moving from west to east. I have neither eaten nor drunk, and roam carrying this leaf bowl of flowers.”

Nectar seems to fall from His words and claim her heart. She asks why she has never seen Him despite meeting the sage and knowing his other disciples.

He says, “That is why I lost the way. Maharṣi loves me so deeply that he wishes to hide me in his heart day and night, and has never allowed me outside. I know every particle of the lovely garden beside his āśrama, but nothing beyond it. I have heard that he visits Nandarāya's home daily. When I begged to accompany him, he said the garden would become desolate without me and wondered what merit had brought him such a disciple.

“Last night he had a dream. He embraced me and ordered me to gather flowers this morning. Now he must be anguished while waiting. Show me the path quickly, and I shall be deeply indebted.”

ORIGINAL

इसी समय ललिता वहाँ आ पहुँचती हैं। रूपमञ्जरीको देर होते देखकर वे रानीके पाससे फाटककी ओर चली आयी थीं। रूपमञ्जरी बातोंमें इतनी संलग्न थी कि ललिताको नहीं देख सकी, पर ऋषिकुमारकी दृष्टि उनपर पड़ चुकी थी। बात समाप्त करके रूपमञ्जरीकी ओर पथ दिखलानेके उद्देश्यसे देखते ही ललिता सामने चली आयीं। वे घुटने टेककर ऋषिकुमारको प्रणाम करती हैं तथा कहती हैं, "ऋषिकुमार! मैं आपको प्रणाम कर रही हूँ। मैंने आपकी सारी बातें सुन ली हैं। मैं अपनी एक खास दासी आपके साथ कर दूँगी। वह आपको महर्षि शाण्डिल्यके आश्रमतक पहुँचा आयेगी; पर मैं आपको बिना कुछ खिलाये-पिलाये नहीं जाने दूँगी। आप रास्ता भूलकर आजसे बहुत भटके हैं। आपका मुख सूख गया है। किंचित् कलेवा करके जल पी लें तथा किंचित् विश्राम कर लें, फिर मैं सब व्यवस्था कर दूँगी।"

ऋषिकुमारने कहा, "देवि! आप तो असम्भव-सी बातें कर रही हैं। गुरुदेवकी आज्ञाके बिना मैं अन्न-जल ग्रहण करूँ, यह कैसे हो सकता है?"

ऋषिकुमारने सिर नीचा करके दृढ़तासे यह बात कही तो ललिता झेंप गयीं; पर उसके मुखपर इतना विचित्र आकर्षण है कि ललिताका मन बरबस उसकी ओर खिंचता जा रहा है। वे सोचती हैं, "ओह! यह ऋषिकुमार सचमुच कितना दृढ़ है। पर इसे बिना कुछ खिलाये-पिलाये जाने देनेकी बातसे मेरे प्राण छटपटा रहे हैं। अच्छा, इसे एक बार सखी राधाके पास ले चलूँ। वहाँ जैसा होगा, विचार करूँगी।"

वे कहती हैं, "अच्छी बात है, ऋषिकुमार! आपकी जैसी प्रसन्नता; पर मन्दिरके पास मेरी सखियाँ हैं। कृपया वहाँ चलें। वहीं मैं सब व्यवस्था कर दूँगी। रास्ता उधरसे ही है।"

ऋषिकुमार बोले, "पर देवि! विशेष विलम्ब नहीं हो, यह ध्यान रखना।"

ललिताने कहा, "बिलकुल नहीं, शीघ्र व्यवस्था कर दूँगी।"

ENGLISH TRANSLATION

Lalitā now arrives, having come from Rādhā to learn why Rūpamañjarī was delayed. Bowing on one knee, she offers to send a trusted maid to guide the young ascetic home, but insists that He first eat, drink, and rest after wandering so long.

He firmly replies that He cannot accept food or water without Gurudeva's command. Lalitā is abashed, yet the strange attraction of His face draws her mind. The thought of sending Him away hungry makes her life tremble. Deciding to take Him before Rādhā, she asks Him to come to the temple, which lies along His route. He agrees only if there is no long delay, and Lalitā promises haste.

ORIGINAL

ललिता आगे-आगे चलती हैं; पीछे ऋषिकुमार, रूपमञ्जरी एवं अन्य मञ्जरियाँ चल रही हैं। मन्दिरके पास पहुँचकर ऋषिकुमारके सौन्दर्यको देखकर सभी सखियाँ उठ पड़ती हैं। रानी भी उसकी ओर देखने लग जाती हैं। तभी उद्यानके दक्षिणी फाटककी ओरसे एक वृद्धा आ पहुँचती है। उसे देखकर सभी सखियाँ एवं रानी बड़े आदर और विनयसे खड़ी हो जाती हैं। वृद्धाके शरीरपर उजले रंगकी बिना पाड़की साड़ी है, गलेमें तुलसीकी माला तथा दाहिने हाथमें एक छड़ी। उसके बाल प्रायः सफेद हो गये हैं, अवश्य ही मुखाकृतिपर केवल एक-दो झुर्रियाँ दीख पड़ रही हैं।

सीढ़ीके नीचे जिस आसनपर पहले ललिता बैठी थीं, उसीपर ऋषिकुमार बैठ जाता है, मानो बिलकुल थक गया हो। वृद्धा उसके बगलमें खड़ी होती है, पर उसकी दृष्टि नीचे उत्तरकी तरफ लगी है, अतः वह नहीं देखता। वृद्धा सीढ़ियोंपर चढ़कर ललिताको बुलाती और धीरेसे पूछती है, “बेटी! यह ऋषिकुमार कौन है?” ललिता सारी बातें बता देती हैं। वृद्धा आश्चर्यसे सुनकर पूछती है, “इनका नाम क्या है?” ललिता कहती हैं, “नाम नहीं पूछ पायी हूँ।”

वृद्धा कहती है, “पूछ तो सही।” ललिता हाथ जोड़कर पूछती हैं, “ऋषिकुमार! हम लोगोंकी माँ आपका नाम जानना चाहती हैं।”

ऋषिकुमार बड़ी गम्भीरतासे कहता है, “हमें लोग ब्रह्मचारी मन्मथमोहन् कहते हैं।”

यह सुनते ही वृद्धा चटपट सीढ़ियोंसे उतरती हुई “अहो भाग्य! अहो भाग्य!” चिल्लाकर ऋषिकुमारके चरणोंके पास गिर पड़ती है और कहती है, “बेटी! ऋषिकुमारके चरणोंकी धूलि बटोर ले। पीछे सब बात बता दूँगी। ओह, धन्य हैं! ऋषिकुमार, विधाताने असीम कृपा की कि आपने अपने-आप दर्शन दे दिया।”

वृद्धा चरणोंसे लिपटनेके लिये बढ़ती है, तभी ऋषिकुमार पीछे हटकर सरलता और गम्भीरतासे कहता है, “माँ! आप क्या कर रही हैं? ब्रह्मचारीके लिये स्त्री-स्पर्श सर्वथा निषिद्ध है।”

ENGLISH TRANSLATION

Lalitā leads Him to the temple, followed by Rūpamañjarī and the mañjarīs. All rise at His beauty, even Rādhā looking toward Him. An elderly woman enters from the southern gate, and everyone stands respectfully. She wears an unbordered white sari, tulasī beads, and carries a staff. Her hair is nearly white, though only a few wrinkles mark her face.

The ascetic sits upon Lalitā's former bench as if exhausted. The woman quietly asks Lalitā who He is and then requests His name. He gravely answers, “People call me the brahmacārī Manmathamohana.”

Crying, “What fortune!” the woman rushes down and falls near His feet, telling Lalitā to gather their dust. As she moves to embrace them, He steps back and says with innocent gravity, “Mother, what are you doing? Contact with women is wholly forbidden to a brahmacārī.”

ORIGINAL

ये शब्द वृद्धाके हृदयमें जादूका-सा काम करते हैं। उसकी आँखोंसे आँसुओंकी धारा बहने लगती है। वह गद्गद कण्ठसे कहती है, “तभी तो कह रही हूँ कि आपका दर्शन बड़े भाग्यसे मिला है। थोड़ी देर पहले आपके गुरुभाई मध्वानन्दजी ब्रह्मचारीसे मिलकर आपके विषयमें सब सुन चुकी हूँ।”

ऋषिकुमार पूछता है, “माँ! मध्वानन्द तुम्हें कहाँ मिला?” वृद्धा कहती है, “आपके गुरुदेवने आपको खोज लानेके लिये उन्हें भेजा है। आज्ञा है कि जहाँ मन्मथमोहन् मिले, वहीं उसे कुछ खिला-पिला देना। वह भूखा-प्यासा होगा। तुरंत खा-पी ले, नहीं तो मैं बहुत दुःखी होऊँगा। गुरुदेवने भगवत्प्रसाद एवं जल भी भेजा है। मध्वानन्दजी थोड़ी देरमें स्वयं यहीं आ सकते हैं।”

ऋषिकुमार प्रसन्न होकर कहता है, “माँ! उनको तो हमपर अपार कृपा है ही। अब मध्वानन्दकी बाट देखनी पड़ेगी, नहीं तो वह मुझे ढूँढ़ता भटकेगा।” वृद्धा निवेदन करती है कि मध्वानन्दने उसकी बहुत-सी बातें बतायी हैं। वह सरल हँसी हँसकर कहता है, “मध्वानन्द आधा पागल है। माँ! उसकी बातपर विश्वास मत करना।”

वृद्धा अपने घरकी द्वादशवर्षीय सूर्य-पूजामें आचार्य बननेका आग्रह करती है। ऋषिकुमार असम्मति प्रकट करता है, पर बड़ी कठिनतासे आज पूजा करा देनेकी हामी भरता है। तभी एक सुन्दर बालक दक्षिणसे आकर वृद्धाको प्रणाम करता है, “माँ! आज हम लोगोंकी यमुना-पूजा आरम्भ होगी। एक मास लगातार पूजा होगी। मैं रायाणघाटसे आपके घर गया। सूचना मिली कि आप सूर्य-मन्दिरमें हैं। खेत जाना हो तो तुरंत चलें। नावसे पार उतार दूँगा; एक घड़ीमें लौटना होगा, क्योंकि तीन घड़ी दिन बाकी रहते नावका खेना बंद हो जायेगा।”

ENGLISH TRANSLATION

His words make the woman weep. She explains that His fellow disciple Madhvānanda has told her about Him. Gurudeva sent Madhvānanda to find Him with prasāda and water and the command that He eat at once. Manmathamohana agrees to wait, joking that Madhvānanda is half mad.

The woman asks Him to officiate at the twelve-year sun worship in her home. He refuses, but finally agrees to perform today's worship. A boy then arrives from Rāyāṇa-ghāṭa. Their monthlong Yamunā worship begins today, and if she must visit the fields they must leave before the ferry closes.

ORIGINAL

illustration plate

केलि कुञ्ज

विजयतां श्रीप्रियाप्रियतमौ

ENGLISH TRANSLATION

The Bower of Divine Play.

May Śrī Priyā and Her most beloved Lord be victorious.

ORIGINAL

वृद्धा विचारमें पड़ जाती है। उसका मुख उदास देखकर ऋषिकुमार कहता है, “माँ! तुम्हारा मन चिन्तित हो गया है। अच्छा, कल एक दिन और आ जाऊँगा।” वृद्धा प्रसन्न होकर चरणोंमें नमस्कार करती है, “आपने बड़ी कृपा की, पर कल आनेका वचन न भूलेंगे। मैं आवश्यक कामसे जा रही हूँ। आजकी पूजा सम्पन्न करावें।”

वह एक किनारे ललिताको समझाती है कि सेवामें त्रुटि न हो, पूजा जैसे-जैसे कराये वैसे करना तथा पंद्रह मुहरोंकी दक्षिणा देना। फिर कहती है, “कल आनेके आश्वासनसे ही आपको छोड़कर खेतपर जा रही हूँ। आप नहीं आयेंगे तो अपार दुःख होगा।” ऋषिकुमार हँसकर कहता है, “कलके लिये वचन हो चुका, निश्चिन्त रहें।” वृद्धा और बालक दक्षिणकी ओर चले जाते हैं।

ऋषिकुमार पूजा कराने चलता है। रानी बड़े प्रेमसे उसे देखती हैं। रह-रहकर उसके स्थानपर प्रियतम श्यामसुन्दर खड़े दीखते हैं। वे काँपकर सोचती हैं कि यह विरहावस्थाका भ्रम है। रानी उसके पैर धोने लगती हैं, पर वह पीछे हटकर कहता है, “देवि! मैं स्त्रियोंका स्पर्श नहीं करता।” ललिता कहती हैं, “क्षमा करना। मेरी सखीको उन्मादका रोग है; अधिकांश समय होशमें नहीं रहती।” ऋषिकुमार मुसकराता है, रूपमञ्जरीकी झारी उठाकर अपने हाथ-पैर धोता और शीघ्रतासे मन्दिरमें चला जाता है। एक मञ्जरी रानीके पैर धोती है और रानी भी भीतर जाती हैं।

ENGLISH TRANSLATION

Seeing her worry, He promises to return tomorrow. She asks Lalitā to serve Him exactly as directed and give fifteen gold coins as dakṣiṇā, then departs with the boy.

Rādhā watches Him lovingly and repeatedly sees Śyāmasundara in His place, though She dismisses it as separation's delusion. When She tries to wash His feet, He withdraws because He does not touch women. Lalitā apologizes for her friend's divine madness. Smiling, He washes His own hands and feet and enters the temple; Rādhā follows.

ORIGINAL

सूर्य-मन्दिरके भीतर सुन्दर कोठरी-सी है, जिसमें दो गज ऊँची वेदीपर भगवान् सूर्यकी अतिशय सुन्दर प्रतिमा घोड़ेके रथपर बैठायी हुई है। रथ, घोड़े एवं प्रतिमा सुनहले रंगकी तेजस्वी धातुके बने हैं। प्रतिमाका मुख पूर्वकी ओर है। वेदीके पश्चिम, उत्तर और दक्षिण दो-दो हाथ तथा पूर्व चार हाथका स्थान संगमरमरके घेरेसे घेरा है। पूर्वकी ओर द्वार है। घेरा तीन हाथ ऊँचा है। उसीके भीतर ऋषिकुमार और बाहर दक्षिणाभिमुख रानी खड़ी हैं। बाहर विविध पूजा-सामग्री भरी है।

पूजा आरम्भ होती है। रानी जल, अक्षत, सुपारी एवं पीला पुष्प ऋषिकुमारके हाथमें डाल देती हैं। वह मुसकराता हुआ ऊटपटांग ढंगसे संकल्प-पाठ करता और अन्तमें विनोदसे उच्चारण करता है:

श्रीराधायाः दासस्य कृष्णस्य सकलकामना-सिद्ध्यर्थं श्रीसूर्यदेवस्य पूजनमहं करिष्यामि।

(श्रीराधाके दास कृष्णकी सभी कामनाओंकी पूर्तिके लिये मैं सूर्य-पूजन करूँगा।)

सभी आश्चर्यसे उसे देखने लगती हैं। रानी ललिताके कानमें कहती हैं, “मेरा सिर घूम रहा है। पता नहीं यह कौन है? कहीं वे ही हों तो...” ललिताको भी संदेह है, पर सरल मुख कृत्रिम मानना असम्भव जान पड़ता है। वह कहती हैं, “ऐसी मुखाकृति कृत्रिम हो, यह असम्भव-सा दीखता है।” चित्रा कहती हैं, “मैं ठीक कहती हूँ, ये श्यामसुन्दर हैं!”

ENGLISH TRANSLATION

Inside, a six-foot altar bears a radiant golden image of Sūrya upon a horse-drawn chariot. A three-foot marble enclosure surrounds it. The ascetic stands inside and Rādhā outside amid the offerings.

She gives Him water, rice, betel nut, and a yellow flower. Smiling, He recites a deliberately peculiar saṅkalpa: “I shall worship Śrī Sūryadeva for the fulfillment of every desire of Kṛṣṇa, the servant of Śrī Rādhā.” Everyone stares. Rādhā wonders whether He is Śyāmasundara. Lalitā doubts that so innocent a face could be artificial, but Citrā insists it is He.

ORIGINAL

ऋषिकुमार कहता है, “देवि! विलम्ब हो रहा है, शीघ्र अन्य सामग्री दो।” वह मन्त्र पढ़-पढ़कर पूजा करवाता है। चित्रा ललिताको उत्तरी हिस्सेमें ले जाकर कहती हैं, “ये निश्चय ही श्यामसुन्दर हैं।” ललिता पूछती हैं कि मुखाकृति और बोली कैसे बदल सकती है। चित्रा कहती हैं, “ये इतनी चतुराईसे वेष एवं मुखाकृति बदल सकते हैं कि कोई पहचान नहीं सकता। मैं इन्हें ऐसे विचित्र ढंगसे बोलते सुन चुकी हूँ कि कोई समझ नहीं सकता।”

“पहचान कैसे हो?”

“पुष्पाञ्जलिके समय पुष्पके बदले जल उठाकर सूर्यपर फेंकनेके बहाने ऋषिकुमारपर फेंकें। रंग होगा तो उतर जायेगा।” ललिता “बहुत ठीक” कहकर घेरेके पास आती हैं।

ऋषिकुमार प्रत्येक पदार्थके अर्पणसे पहले ऊटपटांग-सा पद पढ़कर कहता है, “पाद्यं समर्पयामि, सूर्याय नमः। अर्घ्यं समर्पयामि, सूर्याय नमः।” उसके पाठसे श्रीप्रियाका हृदय उद्वेलित होकर वे भावाविष्ट होने लगती हैं।

पूजा समाप्तप्राय: है। विशाखा बड़ी परात भीतर रखती हैं। उसमें पीले रंगके अतिशय सुन्दर फल हैं, जो संतरेके-से, पर कुछ बड़े हैं। ऋषिकुमार परात उठाकर गाता है:

तालफलादपि गुरुमतिसरसम्। (गोविन्द)

फिर कहता है, “ऋतुफलं समर्पयामि, सूर्याय नमः।”

ENGLISH TRANSLATION

The ascetic calls for the remaining articles. Citrā tells Lalitā that Śyāmasundara can alter His face and voice beyond recognition, and they plan to throw water at Him during the flower offering.

His formulas include, “I offer water for washing the feet. Obeisance to Sūrya. I offer the arghya. Obeisance to Sūrya.” Priyā becomes deeply moved. Near the end Viśākhā brings large yellow fruits resembling oversized oranges. He sings Govinda's line, “Weightier and more luscious even than a palmyra fruit,” then offers the seasonal fruit to Sūrya.

ORIGINAL

रानी तीक्ष्ण दृष्टिसे ऋषिकुमारको देखकर खिलखिलाकर हँस पड़ती हैं। उन्हें निश्चय हो गया कि प्राणनाथ श्यामसुन्दर ही ऋषिकुमार बनकर आये हैं। प्रेममें अधीर होकर वे धम्मसे बैठकर आँखें बंद कर लेती हैं। ऋषिकुमारके मुखसे सरलता एवं गम्भीरता चली जाती है; वह भी जोरसे हँस पड़ता है। चित्रा झारीसे एक गिलास पानी उसके मुखपर झोंक देती हैं। वह उत्तरीय वस्त्रसे मुख पोंछता है और श्यामसुन्दरका अनिन्द्य मुख स्पष्ट दीखने लगता है।

इन्दुलेखा वहीं मूर्छित हो जाती हैं। विशाखा आदि हँसते-हँसते लोट-पोट हो जाती हैं। रानी उठकर प्यारे श्यामसुन्दरको घेरेसे बाहर खींच लेती हैं। सर्वत्र आनन्द एवं प्रेम छा जाता है। सखी-मण्डली उन्हें मन्दिरके पीछे सुन्दर कुण्डपर ले जाती है। रानी वृक्षकी छायामें बैठाकर अँगोछेसे उनका शरीर पोंछती हैं। सखियाँ पुनः श्यामसुन्दरका शृङ्गार करती हैं और निर्मल प्रेमसे भरा विशुद्ध विनोद चलता रहता है।

ENGLISH TRANSLATION

Rādhā looks sharply and bursts into laughter, certain Her beloved has come disguised. He too laughs. Citrā flings water over His face, and when He wipes it, Śyāmasundara's incomparable face appears.

Indulekhā faints and the others roll with laughter. Rādhā draws Him outside. At the pond behind the temple She dries Him beneath a tree, and the sakhīs adorn Him again amid pure loving play.

ORIGINAL

इसी समय एक सारिका वृक्षके ऊपर बोलती है, “सूर्यदेव! तुमने प्रतिज्ञा कर ली है कि मैं जो कहूँगी, उससे ठीक उलटा करोगे। प्रातःकाल हृदयसे कह रही थी कि तुम देरसे उदय हो तो शीघ्र उदय हो गये। अब कह रही हूँ, थोड़ा ठहरो, मन्थर गतिसे चलो, तो पश्चिम गगनकी ओर शीघ्र भागे जा रहे हो। क्या कहूँ?”

सबकी दृष्टि सूर्यकी ओर जाती है और होश होता है कि दिन अधिक ढल चुका है। रानीका मुख गम्भीर हो जाता है। श्यामसुन्दर उन्हें हृदयसे लगाकर कहते हैं, “मैं शीघ्र ही गायोंको लेकर आ रहा हूँ।” आवेशसे उनका गला भर आता है। रानीको बाँयी तरफ सँभाले वे उत्तरके छोटे फाटकपर पहुँचते हैं। पुनः हृदयसे लगाकर फाटकसे बाहर धीरे-धीरे पूर्वकी ओर राजपथपर चलते हैं।

रानी बाहर खड़ी निर्निमेष देखती हैं। श्यामसुन्दर इन्दुलेखाके कुञ्जकी पूर्वी सीमाके पास गिरिवर-स्रोतका पुल पार करके उत्तरकी तरफ चले जाते हैं। जब वे नहीं दीखते, रानी कटे वृक्षकी तरह गिरती हैं; पर ललिता सँभाल लेती हैं। कुछ देर बाद ललिता उन्हें उठाती हैं। रानी उनके कंधेको पकड़कर धीरे-धीरे घर जानेके लिये पश्चिमकी ओर राजपथपर चलती हैं।

ENGLISH TRANSLATION

A mynah calls, “Sūryadeva, you do the opposite of whatever I ask. At dawn I wished you to rise late, and you rose quickly. Now I beg you to linger, yet you race toward the west. What can I say?”

Everyone realizes how far the day has declined. Śyāmasundara embraces Rādhā and promises to return soon with the cows, His throat filling with emotion. He embraces Her once more at the northern gate and departs eastward.

Rādhā watches as He crosses the Girivara stream near Indulekhā's bower and disappears northward. She falls like a felled tree, but Lalitā catches Her. Later, holding Lalitā's shoulder, She slowly takes the western road home.

CHAPTER 12

आवनी लीला

The Evening Homecoming Līlā

Source scan pages 138–142

ORIGINAL — Sanskrit invocation

॥ विजयेतां श्रीप्रियाप्रियतमौ ॥

ENGLISH TRANSLATION

May Śrī Priyā and Her Beloved be ever victorious.

ORIGINAL — plan of the setting

उत्तर: उद्यान; श्री नन्द महल; श्री राधाजीका महल; वन।

दक्षिण: वन।

गोशाला = गो
मन्दिर = म

ENGLISH TRANSLATION

North: gardens, the palace of Śrī Nanda, the palace of Śrī Rādhājī, and the forest.

South: the forest.

Cow pen = go
Temple = ma

ORIGINAL

सन्ध्या होने जा रही है। नन्दबाबाके महलके आगे अब धूप बिलकुल नहीं रह गयी है; क्योंकि महलका मुख पूर्वकी ओर है। महलके ठीक सामने बहुत सुन्दर संगमरमरकी एक चौड़ी सड़क पूर्वकी ओर जाती है। सड़कके दोनों किनारोंपर अन्यान्य गोपोंके भव्य महल एवं प्रत्येक महलसे सटा हुआ एक-एक अत्यन्त रमणीय उद्यान शोभा पा रहा है।

नन्द-महलके पूर्वकी ओर एक फर्लाङ्ग (१/१६ कोस) की दूरीपर श्रीराधारानीका महल है। सड़कके दोनों किनारोंपर छोटे-छोटे अशोकके वृक्ष लगे हैं। वृक्ष दस-दस हाथोंकी दूरीपर लगे हैं। उनके हरे-हरे सुन्दर पत्ते सन्ध्याकालीन वायुके झोंकोंसे हिल रहे हैं। आज सन्ध्या वायु कुछ तेज गतिसे प्रवाहित हो रही है। नीले गगनमें एकाध छोटे-छोटे बादलके टुकड़े तैरते हुए दीख पड़ रहे हैं।

ENGLISH TRANSLATION

Evening is drawing near. No sunlight remains before Nanda Bābā's palace, for the palace faces east. Directly before it, a broad and beautiful marble road runs eastward. On both sides stand the magnificent palaces of other cowherds, each joined to an enchanting garden.

One furlong, one-sixteenth of a kosa, east of Nanda's palace stands Śrī Rādhārānī's palace. Small aśoka trees line both sides of the road at intervals of ten cubits. Their fresh green leaves sway in the evening gusts. The wind is blowing rather strongly today, and a few small patches of cloud drift across the blue sky.

ORIGINAL

अत्र सन्ध्याके समय श्यामसुन्दरके वनसे लौटनेका समय हो गया है। सड़कके दोनों किनारोंपर वृक्षोंके पास गोपियोंकी भीड़ लगी हुई है। महलोंकी अटारियोंपर, खिड़कियोंपर, जहाँ भी किसीकी दृष्टि जाती है, वहाँ केवल गोपियोंके दर्शन होते हैं। श्रीगोपीजनोंके श्रीअङ्गपर नीली, पीली, हरी एवं लाल आदि रंगोंकी अत्यन्त सुन्दर साड़ियाँ शोभा पा रही हैं। सबके मुखारविन्दसे अनुराग टपक रहा है। सभी बड़ी उत्सुकतासे पूर्वकी ओर दृष्टि लगाये हुए हैं।

ENGLISH TRANSLATION

It is now the hour when Śyāmasundara returns from the forest. Crowds of gopīs gather beside the trees lining both sides of the road. On palace terraces and at windows, wherever the eye turns, only gopīs can be seen. Lovely saris of blue, yellow, green, red, and many other colors adorn their sacred forms. Affection overflows from every lotus face, and all gaze eastward in eager expectation.

ORIGINAL

श्रीराधारानी श्रीश्यामसुन्दरकी प्रतीक्षामें अपने महलकी सबसे ऊँची अटारीपर बैठी हुई हैं। बेंतके आकारका चार-पाँच हाथ लम्बा मखमली गद्देदार आसन है, उसीपर पैर लटकाकर पूर्वकी ओर मुख किये हुए श्रीप्रियाजी बैठी हैं। प्रियाजीका दाहिना हाथ श्रीललिताके बायें कन्धेपर है। ललिता उनकी दाहिनी तरफ उसी आसनपर बैठी हैं। आसनके पीछे कुछ सखियाँ आसनपर हाथ टेके खड़ी हैं। रूपमञ्जरी नीले रंगके रूमालसे श्रीप्रियाजीके पैरोंके तलवोंको उनके चरणोंमें बैठी हुई सहला रही है।

ENGLISH TRANSLATION

Awaiting Śrī Śyāmasundara, Śrī Rādhārānī sits upon the highest terrace of Her palace. The velvet-cushioned seat, shaped like a cane bench, is four or five cubits long. Priyājī sits upon it facing east with Her feet hanging down, Her right hand resting upon Śrī Lalitā's left shoulder. Lalitā sits beside Her on the right. Several sakhīs stand behind the seat, leaning their hands upon it. Seated at Her feet, Rūpamañjarī gently rubs Priyājī's soles with a blue cloth.

ORIGINAL

श्रीप्रियाजीके सामने ही छतपर बैठी हुई रत्नमञ्जरी सोनेके पानबट्टेपर पान रखकर बीड़े तैयार कर रही है। अनङ्गमञ्जरी नीले रेशमी वस्त्रका बना हुआ पंखा हाथमें लिये हुए श्रीप्रियाजीकी बायीं ओर कुछ दूरपर खड़ी है। वह पंखा झल नहीं रही है, क्योंकि गर्मी नहीं है तथा वायु आज स्वाभाविक ही कुछ तेज चल रही है।

लक्ष्ममञ्जरीके उत्तरकी तरफ दो गजकी ओर मुँह किये मधुमतीमञ्जरी प्रियाजीके इशारेसे गा रही है। वीणा अत्यन्त मधुर स्वरमें बज रही है। मधुमती गाती है:

ENGLISH TRANSLATION

Before Priyājī, Ratnamañjarī sits upon the terrace placing betel leaves on a golden tray and preparing folded quids. A little way to Priyājī's left stands Anaṅgamañjarī, holding a fan of blue silk. She does not fan Her, for the air is cool and the natural wind is already blowing briskly.

Facing north about two yards from Lakṣmamañjarī, Madhumatīmañjarī begins to sing at Priyājī's signal. Her vīṇā sounds exceedingly sweet. Madhumatī sings:

ORIGINAL Braj Bhāṣā song

आव ब्रज भूषन मन भावते नेक वन ते बेगे आव हो।
जसुमति सुत करुना भरे नेक हियमें सुख उपजाव हो॥
डोलन बरहापीड़की मति युग कुंडल झलकाव हो।
नाचत तानन तोरके नेक अलक बदन अरुझाव हो॥
देखत इत उत भाव सों नेक चपल नयन चमकाव हो।
छटन रेख मुख चंदको सीतलता हियो सिराव हो॥
चलन जुगल मृदु गतिकी नेक चंदन बाय बढ़ाव हो।
अधर सुधा रस सों सबे मुरलीके रंध्र पुराव हो॥

गावत गुन गोपीनके नेक श्रवनन सबद सुनाव हो।
सुंदर ग्रीवाकी ढोलनी पलकनकी परन भुलाव हो॥
कंठसिरी दरसायके नेक तनकी दसा बिसराव हो।
गजमुकुता बिच लाल हो सो उरपर हार धराव हो॥
पौहोंची दोउ कर सोभनी नेक फुँदना स्याम लटकाव हो।
बाजूबंद भुजमें बने मेरे मनके माँझ गड़ाव हो॥
कटि पीतांबर काछनी नेक नीके ढंग रचाव हो।
क्षुद्र घंटिका बाजनी ता ऊपर सरस धराव हो॥
चरन सों न्यारी भाँतिकी नेक नूपुर सबद सुनाव हो।
नख भूषनकी ज्योति सो सकलनकी ज्योति लजाव हो॥
आगे गोधन हाँकके नेक पाछे खेल कराव हो।
बेंत सु फूलन ग्रंथिके नेक काँधे धरे दिखाव हो॥
गोप बालकन मंडली माँहि नायक नेक जनाव हो।
नाचन मिस ब्रज भूमिमें नेक चरन धूरि उपटाव हो॥
धावत बायें हाथ ले नेक लीला कमल फिराव हो।
वनमाला कंठि जूथकी नेक करतल फिराय उछाव हो॥
ब्रज जुवतिनके वृंदमें ऐसि अपनी अंग परसाव हो।
आलिंगन बहु भाँति दे जुवतिनके पूरे भाव हो॥
जौनसि विरह व्याकुल सखी सो अपने अंग लगाव हो।
तुम बिन सूनी साँझको अपनो ब्रज फेर बसाव हो॥
घोष द्वार चलि आयके जस संग बारात उतराव हो।
दे सुख सिगरे घोषको नेक दिनको बिरह बढ़ाव हो॥
इहि बिधि ब्रज जुवती कहें सुनि नंद महर घर आव हो।
रसिकन यह वर दीजिये नित श्रीवल्लभ पद पाव हो॥

ENGLISH TRANSLATION

Come, ornament of Vraja, delight of the heart. Please hasten home from the forest.
O compassionate son of Yaśodā, come awaken happiness within my heart.
Let Your peacock plume sway, and let Your pair of earrings flash.
As You dance and turn with the melody, let stray curls fall across Your face.

Cast Your twin eyes here and there with feeling and make them sparkle.
Let the moon of Your face pour cooling peace into the heart.
With the tender movement of Your two feet, increase the sandal-scented breeze.
Fill every opening of the flute with the nectar of Your lips.

Sing the virtues of the gopīs and let their sound enter our ears.
Let the graceful swaying of Your lovely neck make us forget even to blink.
Reveal the beauty of Your throat and make us forget the condition of our bodies.
Place upon Your breast the necklace with its ruby amid elephant pearls.

Let ornaments beautify both wrists, and hang dark tassels from them.
Wear armlets upon Your arms and drive their image deep into my heart.
Arrange the sash of Your yellow garment beautifully about Your waist.
Set the sweetly ringing row of tiny bells above it.

Let the anklets upon Your feet sound in their own wondrous fashion.
Let the radiance of Your jeweled nails put every other light to shame.
Drive the herds before You and playfully follow behind them.
Show the flower-knotted herding staff resting upon Your shoulder.

Appear as the unrivaled leader amid the circle of cowherd boys.
On the pretext of dancing, raise the dust of Vraja beneath Your feet.
As You run, whirl a play-lotus in Your left hand.
Make the clusters of Your forest garland leap and turn around Your neck.

Move among the young women of Vraja and bestow the touch of Your limbs.
Embrace them in many ways and fulfill all their longings.
Draw to Your breast every sakhī tormented by separation.
Restore Your Vraja, desolate without You, at the coming of dusk.

Come to the gate of the settlement and arrive with splendor, as though leading a wedding procession.
Give joy to all the settlement and end the separation of this day.
Hearing the young women of Vraja call in this way, come home to Nanda's house.
Grant this boon to the rasikas: may they forever attain the feet of Śrī Vallabha.

ORIGINAL

गीत समाप्त होते ही दूरपर पूर्वकी तरफ अत्यन्त मधुर स्वरमें मुरली सुनायी पड़ने लगती है। श्रीप्रियाजी आसनसे उठकर खड़ी होकर बड़ी व्याकुलताभरी दृष्टिसे उधर ही देखने लग जाती हैं। पहले कुछ गायें दीखती हैं, फिर रानीके महलसे तीन फर्लाङ्ग दूर पूर्वकी तरफ चारों ओर गायोंसे घिरे हुए श्यामसुन्दर आते हुए दीख पड़ते हैं। संगमें ग्वाल-सखाओंकी मण्डली है। उनमें कोई झिमझिमियाँ बजा रहा है, कोई सँजरी बजा रहा है तथा कोई ताली देते हुए नाचता हुआ आ रहा है।

ENGLISH TRANSLATION

As the song ends, the exceedingly sweet sound of a flute is heard far away in the east. Priyājī rises from Her seat and gazes there with intense yearning. First a few cows come into view. Then, three furlongs east of the Queen's palace, Śyāmasundara appears surrounded on every side by cows. A company of cowherd friends accompanies Him. One plays tiny jingling cymbals, another plays a larger pair of cymbals, and another comes dancing and clapping his hands.

ORIGINAL

स्वयं श्यामसुन्दर अत्यन्त मधुर स्वरमें मुरली बजा रहे हैं। गायें पूँछ उठा-उठाकर कूद रही हैं। श्यामसुन्दर बायें हाथसे मुरली बजाते रहते हैं तथा दाहिने हाथसे उन गायोंको बीच-बीचमें छू-छूकर शान्त करते हैं। मन्द-मन्द मुस्कुराते हुए पश्चिमकी तरफ सड़कपर बढ़ते हुए चले जा रहे हैं। जैसे-जैसे आगे बढ़ते हैं, वैसे-वैसे ही गोपियोंकी टोली पीछे होती जा रही है, अर्थात् जिस गोपीके सामनेसे आगे बढ़े कि वही पीछे चलने लगती है।

ENGLISH TRANSLATION

Śyāmasundara Himself plays the flute in an exquisitely sweet tone. The cows leap with uplifted tails. He plays with His left hand and, from time to time, reaches out with His right to touch and calm them. Smiling gently, He advances west along the road. As He passes each gopī, she falls in behind Him, and thus the procession of gopīs grows ever larger.

ORIGINAL

दोनों किनारोंसे गोपियोंमें इतनी भीड़ इकट्ठी हो जाती है कि चलनेका रास्ता बिलकुल बन्द हो जाता है। अब कभी श्रीकृष्ण पीछे ताकते हैं तो कभी आगे; और मुस्कुरा देते हैं। पीछेसे गोपीजनोंका इतने जोरसे धक्का आता है कि सब गायें आगे ठेल दी जाती हैं तथा श्रीकृष्णके चारों ओर गोपियाँ-ही-गोपियाँ हो जाती हैं। श्रीकृष्णका पीताम्बर हवामें फहराने लगता है। एक गोपी उस पीताम्बरको पकड़ लेती है। अब श्रीकृष्णके सखा लोग भी भीड़से इतने दब गये कि वे भी श्रीकृष्णसे चार-पाँच हाथ अलग हो गये।

ENGLISH TRANSLATION

Gopīs pour in from both sides until the road is completely blocked. Śrī Kṛṣṇa looks behind and then ahead, smiling. The pressure from the gopīs at the rear pushes all the cows forward, leaving Him surrounded entirely by gopīs. His yellow garment flutters in the wind, and one of them seizes it. Even His cowherd friends are pressed four or five cubits away from Him.

ORIGINAL

श्रीकृष्ण अब राधारानीके महलके सामने पहुँच जाते हैं। वे अपने दोनों हाथोंसे भीड़को हटानेकी चेष्टा करते हैं तथा मुस्कुराकर आगेकी गोपियोंसे कह रहे हैं:

“बावरियो! नेक रास्ता दे।”

एक गोपी हँसकर कहती है, “श्यामसुन्दर! आज रास्ता बन्द है।”

श्रीकृष्ण धीरेसे कहते हैं, “फिर देख, गाली तो नहीं देगी? रास्ता तो मैं निकाल लूँगा।”

ENGLISH TRANSLATION

Śrī Kṛṣṇa reaches the front of Rādhārāṇī's palace. Trying to part the crowd with both hands, He smiles at the gopīs before Him. "Wild girls, give Me a little path."

One gopī laughs. "Śyāmasundara, the road is closed today."

He answers softly, "Then see that you do not abuse Me afterward. I shall make a path for Myself."

ORIGINAL

गोपी मुस्कुराकर पीताम्बर खींच लेनेकी चेष्टा करती है और श्रीकृष्ण उसे पकड़े हुए हैं। राधारानी इसी बीचमें अटारीसे नीचे उतर आयी हैं तथा एक अशोकसे सटकर दूरपर खड़ी हैं। श्रीकृष्णकी दृष्टि उनपर पड़ी है। श्रीकृष्ण मानो भौंहोंके इशारेसे उनसे सलाह पूछते हैं, “क्या करूँ? बुरी तरह फँस गया हूँ। रास्ता बन्द है।”

राधारानी कुछ इशारा करती हैं मानो कह रही हैं, “प्राणनाथ! सभी गोपियाँ चाहती हैं तुम्हारे पीताम्बरको छीनकर ले जायँ। ले दो, तुम्हारा क्या बिगड़ेगा?”

श्यामसुन्दर उसी क्षण जितनी गोपियाँ हैं, उतने बन जाते हैं।

ENGLISH TRANSLATION

Smiling, the gopī tries to pull away His yellow garment while Śrī Kṛṣṇa holds fast to it. Meanwhile Rādhārānī has descended from the terrace and stands at a distance beside an aśoka tree. His gaze falls upon Her. With a movement of His brows He seems to ask, "What shall I do? I am thoroughly trapped. The road is blocked."

Rādhārānī gestures as though replying, "Beloved of My life, all the gopīs wish to snatch away Your yellow garment. Let them take it. What harm will it do You?"

At once Śyāmasundara becomes as many forms as there are gopīs.

ORIGINAL

प्रत्येक गोपीके सामने एक श्रीकृष्ण हैं। गोपी-श्रीकृष्ण, गोपी-श्रीकृष्णका क्रम बन जाता है। प्रत्येक गोपीके हाथमें श्रीकृष्णके पीताम्बरका एक छोर है तथा श्रीकृष्ण उससे पीताम्बर छुड़ानेकी चेष्टा कर रहे हैं।

ENGLISH TRANSLATION

One Śrī Kṛṣṇa now stands before every gopī, forming an alternating line of gopī and Kṛṣṇa. Each gopī holds one end of His yellow garment, and each Kṛṣṇa tries to free it from her grasp.

ORIGINAL

दूरपर मैया यशोदा दौड़ती हुई आ रही हैं। बिलकुल भीड़में आ जानेके कारण श्रीकृष्ण घिर गये थे। मैया सह न सकीं; वे सोचने लगीं कि मेरे लल्लाको ये गोपियाँ चोट न लगा दें, इसीलिये भीड़को चीरती हुई पश्चिमकी तरफसे दौड़ी हुई आ रही हैं।

श्रीकृष्ण धीरेसे कहते हैं, “री, छोड़, मैया आ रही है।”

मैया यशोदा बड़े जोरसे डाँटती हुई आ रही हैं, “री गँवारिनों! मेरे लल्लाकी तुम सब पीस डालोगी क्या?”

ENGLISH TRANSLATION

Mother Yaśodā comes running from afar. Kṛṣṇa has been swallowed by the crowd, and she cannot bear it. Fearing that the gopīs may hurt her darling boy, she races in from the west, forcing her way through them.

Śrī Kṛṣṇa whispers, "Girl, release Me. Mother is coming."

Yaśodā approaches, scolding loudly, "You rustic girls! Are you all going to crush my darling?"

ORIGINAL

श्रीकृष्णके सब सखा भी मैया यशोदाको अपनी ओर आती हुई देखकर और भी साहससे भीड़को धक्का देने लगते हैं। मैयाके आनेसे उन्हें बहुत बल मिल गया। श्रीकृष्ण पीताम्बर छुड़ा लेते हैं। गोपियाँ मैयाको आती देखकर कुछ सहम जाती हैं। मैया आ पहुँचती हैं और श्रीकृष्ण उनके चरणोंमें गिरकर प्रणाम करते हैं। मैया बड़े जोरसे सबसे कह रही हैं, "री, हट जा। नेक हवा तो आने दे।"

ENGLISH TRANSLATION

Seeing Mother Yaśodā approach, Kṛṣṇa's friends take courage and push more forcefully against the crowd. Her arrival gives them fresh strength. Śrī Kṛṣṇa frees His yellow garment, and the gopīs shrink back. When Yaśodā reaches Him, He falls at her feet in reverence. She calls loudly to them all, "Move aside, girls. At least let Him have some air."

ORIGINAL

गोपियाँ आँखें घुमा-घुमाकर मानो श्रीकृष्णसे कह रही हैं, "अच्छा श्यामसुन्दर! आज तो मैयाने बचा लिया, फिर कभी बात!"

धीरे-धीरे भीड़ हटने लगती है। श्यामसुन्दरके पाँच-सात हाथ चारों ओरका स्थान छोड़कर गोपियाँ घेरे हुए खड़ी रह जाती हैं। मैया गोदमें बैठाकर अञ्चलसे हवा करती हैं। इतनेमें नन्दरानीकी दासियाँ झारी-पंखा लेकर भीड़को चीरकर वहाँ आ जाती हैं। दाऊजी भी भीड़में अलग हो गये थे, वे भी भीड़ चीरकर आ खड़े होते हैं। श्यामसुन्दरके सखा भी आ जाते हैं, पर वे सब बहुत चिढ़े हुए गोपियोंकी ओर नाक फुला-फुलाकर तथा आँखें तरेरकर देख रहे हैं।

ENGLISH TRANSLATION

The gopīs roll their eyes as though telling Śrī Kṛṣṇa, "Very well, Śyāmasundara. Mother saved You today, but there will be another time!"

The crowd gradually recedes, though the gopīs remain encircling Him at a distance of five or seven cubits. Yaśodā seats Him in her lap and fans Him with the end of her garment. Nandarānī's maidservants arrive with sprinklers and fans, cutting through the crowd. Dāūjī, who had also been separated in the crush, forces his way through and joins them. Śyāmasundara's friends return as well, but they are greatly annoyed. They glare at the gopīs with flared nostrils and angry eyes.

CHAPTER 13

गोदोहन लीला

The Cow-Milking Līlā

Source scan pages 143–149

ORIGINAL Sanskrit invocation and Hindi prose

॥ विजयेतां श्रीप्रियाप्रियतमौ ॥

गोदोहन लीला

श्रीप्रिया अपने महलकी सबसे ऊँची अटारीपर पश्चिमकी ओर खड़ी हैं। अटारीके घेरेपर वे अपने दोनों हाथ टेके हुए हैं। श्रीप्रियाकी दाहिनी ओर एक मञ्जरी खड़ी है। श्रीप्रिया नन्द-गोशालाकी ओर देख रही हैं। श्यामसुन्दर मस्तानी चालसे चलते हुए गोशालामें गाय दुहनेके लिये आ रहे हैं। उनके आगे-पीछे सखा दोहनी (दूध दुहनेका पात्र) लिये हुए चल रहे हैं।

प्यारे श्यामसुन्दरके दाहिने हाथमें वंशी है। बायाँ हाथ कभी सुबलके कन्धेपर रखकर चलते हैं, कभी कन्धेसे नीचे उतार लेते हैं। कभी-कभी बायें हाथमें दुपट्टा लेकर मुँह पोंछने लगते हैं। दृष्टि बार-बार श्रीप्रियाकी ओर चली आती है। गोशालाके बीचमें गायोंको घास एवं दाना खिलानेके लिये एक गज ऊँची, एक गज चौड़ी एवं दो सौ गज लम्बी ग्यारह वेदियाँ पूर्व एवं पश्चिम दिशामें बनी हुई हैं। वेदियाँ किसी अतिशय चमकते हुए तेजस धातुकी बनी हैं। लगभग एक-एक गजके अन्तरपर वेदीमें फँसाकर अतिशय सुन्दर बर्तन रखे हुए हैं। दोनों ओर गायें खड़ी होकर घास एवं दाना खा रही हैं।

बहुतसे गोप एवं नन्दरानीकी दासियाँ सेवामें लगी हैं। स्वयं नन्दराय भी गोशालामें पधारे हुए हैं। श्यामसुन्दरके पधारे रहनेके कारण तो सभीके हृदयमें आनन्दकी बाढ़ आ गयी है। बछड़े कुछ तो गायोंका स्तन-पान कर रहे हैं, कुछ मुँहमें फेन भरकर इधर-उधर उछल रहे हैं। कुछ गायें भी कभी-कभी घास एवं दाना खाना छोड़कर पूँछ उठाकर उछलने लगती हैं। गोप उन्हें सँभालने लगते हैं। गायें जब जोरसे उछलने लगती हैं तथा गोपोंके सँभाले नहीं सँभलतीं तो गोप कहता है—आह! देख, प्यारे श्यामसुन्दर आ रहे हैं। यदि तू घास एवं दाना नहीं खायेगी तो वे दुःखी होंगे। हमें खिलानेके लिये कह गये हैं।

तब गाय शान्त हो जाती है तथा शान्तिसे घासके बर्तनमें मुँह डालकर घास खाने लगती है। श्यामसुन्दर अब गायोंकी कतारके पास जा पहुँचते हैं। एक गोप गायको दाना खिला रहा है। श्यामसुन्दर उसके पास जाकर खड़े हो जाते हैं तथा कहते हैं—ताऊ! आज मैं दूध दुहूँगा।

ENGLISH TRANSLATION

May Śrī Priyā and Her Beloved be victorious!

The Cow-Milking Līlā

Śrī Priyā stands facing west upon the highest terrace of Her palace, both hands resting upon its parapet. A mañjarī stands at Her right. Śrī Priyā gazes toward Nanda's cowshed. With an intoxicating gait Śyāmasundara approaches to milk the cows, while His companions walk before and behind Him carrying milk pails.

Beloved Śyāmasundara holds His flute in His right hand. At times His left arm rests upon Subala's shoulder; at others He lowers it. Now and then He lifts His scarf with His left hand to wipe His face. His gaze repeatedly returns to Śrī Priyā. Through the center of the cowshed run eleven feeding platforms from east to west. Each is a yard high, a yard wide, and two hundred yards long, fashioned from a brilliantly gleaming metal. At intervals of about a yard, beautiful vessels are set into the platforms. Cows stand on both sides eating grass and grain.

Many cowherds and maidservants of Queen Nanda are engaged in service, and Nandarāya himself is present. Because Śyāmasundara is there, a flood of joy rises in every heart. Some calves drink from their mothers' udders, while others frolic here and there with foam upon their mouths. Some cows abandon their fodder, raise their tails, and begin leaping. The cowherds try to restrain them. When a cow leaps so vigorously that they cannot manage her, a cowherd says, "Look, beloved Śyāmasundara is coming. If you do not eat your grass and grain, He will be grieved. He told us to feed you."

At once the cow grows calm, places her mouth peacefully into the fodder vessel, and begins eating. Śyāmasundara reaches the row of cows. A cowherd is feeding one of them. Standing beside him, Śyāmasundara says, "Uncle, today I shall milk the cow."

ORIGINAL Hindi prose and book footnote

श्यामसुन्दरकी अमृत-वाणी गोपके सारे शरीरमें प्रेमका सञ्चार कर देती है। वह प्रेममें विह्वल होकर श्यामसुन्दरसे जा चिपटता है तथा कुछ देर बिलकुल प्राणहीन-सा होकर हृदयसे लगाये स्थिर खड़ा रह जाता है। फिर कुछ क्षण बाद सँभलकर कहता है—ना बेटा! तू देखता रह! मैं तेरे सामने दुह देता हूँ।

श्यामसुन्दर प्यारसे मचल जाते हैं और कहते हैं—ना, ना, ताऊ! आज मेरी प्रार्थना मान लो।

गोपकी आँखें भर आती हैं। गला प्रेमसे रुँधने लगता है। श्यामसुन्दर उसका हाथ पकड़ लेते हैं। वह गोप गद्गद कण्ठसे कहता है—आह! तेरे कोमल हाथ...... दुख जायेंगे...... मेरे लाल!

श्यामसुन्दर कहते हैं—ना ताऊ! आज देख लो, बिलकुल नहीं दुखेंगे।

कुछ देर सोचकर गोप सम्मति दे देता है। श्यामसुन्दर वंशीको अपनी फेंटमें खोंस लेते हैं तथा सुबलके हाथसे दोहनी लेकर गाय दुहने बैठते हैं। श्यामसुन्दर ज्यों ही थनके पास बैठते हैं, बस, उसी क्षण बछड़ा थन पीना छोड़कर श्यामसुन्दरके शरीरको सूँघने लग जाता है। गाय भी वैसे ही दाना-घास छोड़कर प्यारे श्यामसुन्दरके कन्धेके पास अपना मुँह ले जाकर शरीर सूँघने लगती है। गायके थनसे दूध झरने लगता है। श्यामसुन्दर बर्तन ले जाकर अँगुलियोंसे दूध दुहने लगते हैं। अँगुलियाँ तो भारी थनको स्पर्श-मात्र कर रही हैं, दूध अपने-आप झर रहा है। इतनी तेजीसे झर रहा है कि तुरन्त ही बर्तनमें दूध जमा होकर घर-घर शब्द होने लगता है। कुछ देरमें ही वह बर्तन भर जाता है।

श्यामसुन्दर हँसते हुए उठ पड़ते हैं। वे उस गोपके हाथमें बर्तन पकड़ाकर गायके शरीरपर थपकी देने लगते हैं तथा कहते हैं—मेरी प्यारी श्यामली! मेरे प्यारसे पागल होकर तू चाहती है, मैं और दुहूँ। पर मेरा मोहना* भूख रह जायेगा! सो, ना, अब नहीं, अब फिर प्रातःकाल।

- गायके उस बछड़ेका नाम श्यामसुन्दरने ‘मोहना’ रख छोड़ा है।

ENGLISH TRANSLATION

Śyāmasundara's nectarean voice sends love coursing through the cowherd's entire body. Overwhelmed, he embraces Śyāmasundara and stands motionless for some time, holding Him to his heart as if bereft of life. When he recovers, he says, "No, son, You watch. I shall milk her before You."

Śyāmasundara becomes lovingly insistent. "No, no, uncle. Please grant My request today."

The cowherd's eyes fill and his throat chokes with love. Śyāmasundara takes his hand, and the cowherd says in a faltering voice, "Ah, Your tender hands will begin to ache, my darling boy!"

"No, uncle," Śyāmasundara replies. "Just watch today. They will not ache at all."

After reflecting for a while, the cowherd agrees. Śyāmasundara tucks the flute into His waistband, takes the milk pail from Subala, and sits beside the cow. The instant He approaches her udder, the calf stops drinking and begins sniffing Śyāmasundara's body. The mother too abandons her grain and grass, brings her muzzle near His shoulder, and inhales His fragrance. Milk swells within her udder. Śyāmasundara places the vessel beneath it and begins to milk with His fingers. His fingers merely touch the heavy teats, and the milk streams by itself. It flows so rapidly that milk immediately gathers in the vessel with a resonant rumbling sound. In a short while the pail is full.

Śyāmasundara rises laughing, gives the vessel to the cowherd, and pats the cow's body. "My darling Śyāmalī! Maddened by love for Me, you wish Me to milk you more. But My Mohanā will remain hungry. So no, not now. I shall milk you again in the morning."

- Śyāmasundara has named this cow's calf "Mohanā."

ORIGINAL Hindi prose

इसके बाद श्यामसुन्दर बछड़ेका मुँह पकड़कर थनके पास करते हैं; पर बछड़ा प्यारमें डूबकर थनसे मुँह हटा लेता है एवं श्यामसुन्दरके हाथपर अपनी गर्दन धीरे-धीरे घिसने लग जाता है। श्यामसुन्दर उसे मधुर कण्ठसे पुचकारते हैं—ना, मेरा मोहना! थोड़ा पी ले।

मधुमङ्गल—देख कानू! तू जबतक यहाँ रहेगा, तबतक न तो तेरा मोहना दूध पियेगा, न तेरी श्यामली घास खायेगी।

फिर मधुमङ्गल श्यामसुन्दरको पूँछकी तरफ खींच ले चलता है। श्यामली हुँकार करने लगती है। श्यामसुन्दर फिर धीरेसे लौट आते हैं तथा कहते हैं—मेरी प्यारी श्यामली! तू खा ले, मैं तबतक श्वेतालिकाको दूध दुहूँ।

श्यामली यह सुनकर घास खाने लगती है। श्यामसुन्दर आगे बढ़ते हैं। इस प्रकार प्रत्येक दुही जानेवाली गाय यह अनुभव करती है कि श्यामसुन्दर मेरे पास आये हैं। किसीने यह अनुभव किया है कि प्यारे श्यामसुन्दरने अपने हाथोंसे मेरा दूध दुहा। किसीने यह अनुभव किया है कि दुहा तो किसी गोपने है, पर श्यामसुन्दर उतनी देरतक मुझे थपकी लगाते रहे हैं। किसीने यह अनुभव किया है कि प्यारे श्यामसुन्दरने अपने हाथसे हमें दाना खिलाया है। किसीने यह अनुभव किया है कि प्यारे श्यामसुन्दरने मेरे गलेमें माला पहनायी है। किसीने यह अनुभव किया है कि प्यारे श्यामसुन्दरने अपने वस्त्रोंसे मेरे सींगमें घी लगाया है। सारांश यह है कि प्रत्येक गाय एवं बछड़ेने किसी-न-किसी रूपसे श्यामसुन्दरके स्पर्श-सुखका अनुभव किया है एवं वे आनन्दमें डूब गये हैं।

अब श्यामसुन्दर गोशालाकी पूर्वी चारदीवारीके पास आ पहुँचते हैं। वहाँ एक अत्यन्त सुन्दर शिला पड़ी है। शिला भूमिसे दो गज ऊँची है। उसपर चढ़नेके लिये सीढ़ियाँ बनी हैं। श्यामसुन्दर उसीपर चढ़कर ऊपर जा पहुँचते हैं तथा पैर लटकाकर दक्षिणकी ओर मुँह करके बैठ जाते हैं। यहाँसे श्रीप्रियाको श्यामसुन्दर एवं श्यामसुन्दरको श्रीप्रिया स्पष्ट दिखलायी पड़ रही हैं। सुबल, मधुमङ्गल, श्रीदाम आदि सखा भी शिलाके ऊपर प्यारे श्यामसुन्दरकी ओर मुख करके कोई बैठे हुए हैं, कोई खड़े हैं। प्यारे श्यामसुन्दर अब फेंटसे वंशी निकालते हैं तथा उसमें सुर भरना प्रारम्भ करते हैं। मधुरतम स्वर-लहरी समस्त गोशालाको निनादित करने लगती है।

ENGLISH TRANSLATION

Śyāmasundara then takes the calf's muzzle and brings it to the udder. Immersed in love, however, the calf turns away and gently rubs his neck against Śyāmasundara's hand. Śyāmasundara coaxes him in a sweet voice, "No, My Mohanā, drink a little."

Madhumaṅgala says, "Look, Kānū! As long as You remain here, neither Your Mohanā will drink milk nor Your Śyāmalī eat grass."

Madhumaṅgala draws Śyāmasundara away toward the cow's tail. Śyāmalī begins to low. Śyāmasundara quietly returns and says, "My darling Śyāmalī, eat your grass. Meanwhile I shall milk Śvetālikā."

Hearing this, Śyāmalī begins to eat and Śyāmasundara moves onward. In this way every cow being milked feels that He has come personally to her. One experiences that beloved Śyāmasundara milked her with His own hands. Another feels that although a cowherd milked her, Śyāmasundara patted her all the while. One feels that He fed her grain with His own hand; another that He placed a garland around her neck; another that He anointed her horns with ghee using His own cloth. In short, every cow and calf tastes in some form the bliss of Śyāmasundara's touch, and all become immersed in joy.

Śyāmasundara reaches the eastern boundary wall of the cowshed, beside which rests a beautiful stone platform rising two yards above the ground, with steps leading upward. He climbs it and sits facing south with His legs dangling. From here Śrī Priyā can clearly see Śyāmasundara, and He can clearly see Her. Subala, Madhumaṅgala, Śrīdāma, and the other companions also gather upon the platform, some sitting and others standing, all facing their beloved friend. Śyāmasundara draws the flute from His waistband and begins filling it with melody. Waves of supremely sweet sound resound throughout the cowshed.

ORIGINAL

Sanskrit verse from Gīta-govinda and Hindi prose

स्वर-लहरी श्रीप्रियाके कानोंमें भी जा पहुँचती है, पर वहाँ तो और भी विलक्षण रूपमें पहुँची। श्रीप्रिया स्पष्ट यह अनुभव कर रही हैं कि मेरे प्रियतम प्राणनाथ अपने हृदयके समस्त प्यारको लेकर मधुरतम कण्ठसे यह गा रहे हैं—

त्वमसि मम भूषणं त्वमसि मम जीवनं त्वमसि मम भवजलधिरत्नम्।
भवतु भवतीह मयि सततमनुरोधिनी तत्र मम हृदयमतियत्नम्॥

(गीतगोविन्द—१०/२०)

(प्रिये! तू मेरे जीवनकी शोभा है। नहीं, नहीं, प्रिये! तू ही मेरा जीवन भी है। देख, प्राणोंके अणु-अणुके रूपमें तू मेरे अन्दर छायी हुई है। शरीरके अणु-अणुमें आभूषण बनकर लिपटी हुई है। आह! मेरे-जैसे दीन व्यक्तिके लिये तू अनमोल रत्न है। मैं भव-सागरमें तेरे-जैसे अनमोल रत्नकी लालसासे ही टिका हुआ हूँ। मेरे हृदयकी रानी! मैं झूठ कह रहा हूँ या सच, यह तू स्वयं जानती है। मेरे हृदयका कोना-कोना इस चेष्टासे पूर्ण है कि तेरे कोमल हृदयका समस्त प्यार निरन्तर मेरी ओर बहता रहकर मुझे कृतार्थ करता रहे, मैं निहाल होता रहूँ।)

प्यारे श्यामसुन्दरकी इस स्वर-लहरीका प्रभाव श्रीप्रियाके ऊपर इतना गम्भीर पड़ता है कि श्रीप्रियाके लिये खड़ी रहना असम्भव हो जाता है। श्रीप्रियाके पैर लड़खड़ाने लगते हैं। समस्त अङ्गमें कम्पन होने लग जाता है। मञ्जरी अपनी भुजाओंसे श्रीप्रियाको पकड़ लेती है तथा वहाँसे उत्तरकी ओर स्थित बेंचपर धीरे-धीरे ले जाकर बैठा देती है। श्रीप्रिया कुछ क्षण स्थिर बैठी रहती हैं। हृदयमें भावोंकी तरंग-ही-तरंग उठ रही हैं। श्रीप्रिया कुछ गम्भीर मुद्रामें उठ खड़ी होती हैं। वे पुनः घेरेके पास खड़ी हो जाती हैं। फिर कुछ दक्षिणकी तरफ बढ़ती हैं। कुछ दूर चलकर खड़ी हो जाती हैं। एक विशाल कदम्ब-वृक्ष नीचे लग रहा है। वृक्ष घेरेसे भी पन्द्रह-बीस हाथ ऊपर उठा हुआ है। उसकी कई डालियाँ घेरेको छू रही हैं। श्रीप्रिया उसी कदम्बकी एक टहनीको पकड़कर उसमेंसे एक पत्ता तोड़ लेती हैं तथा एक पत्ता और तोड़कर ऐसी चेष्टा करती हैं मानो चाहती हैं कि दोनों पत्तोंको जोड़ दूँ। पर जोड़नेका कुछ भी साधन उपलब्ध नहीं होनेपर दूसरे पत्तेको अपनी कञ्चुकीमें रख लेती हैं। श्रीप्रियाकी आँखें भरी हुई हैं। दृष्टि निरन्तर श्यामसुन्दरकी ओर लगी हुई है।

ENGLISH TRANSLATION

The stream of melody reaches Śrī Priyā's ears, but there it assumes an even more extraordinary form. She distinctly feels that Her beloved Lord of life has gathered all the love of His heart and is singing in the sweetest voice:

"You are My adornment, You are My very life, You are the jewel in the ocean of My worldly existence. May You remain ever lovingly responsive to Me, for therein lies My heart's most earnest endeavor."

(Gīta-govinda 10.20)

"Beloved, You are the beauty of My life. No, My beloved, You are My very life. You pervade Me as every atom of My life-breath and cling to every atom of My body as its ornament. Ah, for a destitute person like Me, You are a priceless jewel. I remain afloat in the ocean of existence only because I long for such a priceless jewel as You. Queen of My heart, You Yourself know whether I speak truth or falsehood. Every chamber of My heart strives only that all the love of Your tender heart may flow ceaselessly toward Me, forever fulfilling and blessing Me."

The effect of Śyāmasundara's melody upon Śrī Priyā is so profound that She can no longer remain standing. Her feet falter and every limb begins to tremble. The mañjarī catches Her in her arms and slowly leads Her to a bench to the north. Śrī Priyā sits motionless for several moments while wave after wave of emotion rises within Her heart. Then, wearing a grave expression, She stands and returns to the parapet. Moving a little southward, She stops beside a vast kadamba tree growing below. It rises fifteen or twenty cubits above the parapet, and several of its branches touch the terrace. Śrī Priyā grasps a twig and plucks one leaf, then another, as though wishing to join the two. Finding no means to fasten them, She places the second leaf within Her bodice. Her eyes brim with tears and remain fixed upon Śyāmasundara.

ORIGINAL Sanskrit verse from Śrīmad-Bhāgavatam 10.31.17 and Hindi prose

अभी भी श्यामसुन्दरकी वंशीसे श्रीप्रियाको यह स्पष्ट सुन पड़ रहा है—“त्वमसि मम भूषणं त्वमसि मम जीवनम्......।”

अब प्रिया ठीक इसी स्वरमें स्वर मिलाकर गुनगुनाने लगती हैं; पर स्वर अस्पष्ट है। कुछ क्षण गुनगुन करती हुई रहकर इस मञ्जरीको पनबट्टा लानेके लिये कहती हैं। मञ्जरी पनबट्टा लाती है। श्रीप्रिया संकेतमें ही मञ्जरीसे कुछ देनेके लिये कहती हैं। मञ्जरी संकेत समझ जाती है। वह पनबट्टा खोलकर सरौतेसे एक लवङ्गको अत्यन्त शीघ्रतासे पतली सींककी तरह काटकर श्रीप्रियाके हाथमें पकड़ा देती है। श्रीप्रिया इसी लवङ्गसे कदम्बके पत्तेपर गुनगुनाती हुई लिखने लगती हैं—

रहसि संविदं हृच्छयोदयं प्रहसिताननं प्रेमवीक्षणम्।
बृहदुरः श्रियो वीक्ष्य धाम ते मुहुरतिस्पृहा मुह्यते मनः॥

(श्रीमद्भागवत—१०/३१/१७)

पत्तेपर यह लिखकर प्यारे श्यामसुन्दरकी ओर देखती हुई कहने लगती हैं—प्राणाधार! सब स्मरण है। आह! वह दृश्य भी कभी भूल सकती हूँ?

फिर श्रीप्रिया कुछ सोचने लगती हैं। फिर कुछ देर बाद कहती हैं—पवन! जिस तरह तू मेरे प्राणनाथका अङ्ग-सौरभ अपने हृदयमें छिपाकर ले आया है, उसी तरह मेरे इस पत्रको भी हृदयमें छिपाकर प्राणनाथके पास पहुँचा दे।

यह निवेदन करनेके बाद श्रीप्रिया उस पत्तेको आकाशमें उछाल देती हैं। उछालकर अपनी आँखें कुछ क्षणके लिये मूँद लेती हैं। पत्ता वायुमें कुछ क्षण मँडराकर अटारीके नीचे गिर जाता है, पर रानी उसे देख नहीं पातीं। प्रेममें डूबी हुई रानी समझने लगती हैं कि पवन मेरा पत्र ले गया है। इस बातसे रानीका अणु-अणु प्रसन्नतासे भर जाता है।

कुछ ही क्षण बाद रानीकी प्रेमभरी आँखें अधीर हो उठती हैं। रानी देखना चाहती हैं कि मेरे प्राणनाथ मेरा वह पत्र पढ़ लें। रानी देर होते देखकर उस मञ्जरीसे कहती हैं—अच्छा, तू देख! श्यामसुन्दरके पास वह पत्र पहुँच गया है या नहीं। मेरी आँखें ठीकसे नहीं देख रही हैं। वह पत्र अवश्य पहुँच गया होगा!

ENGLISH TRANSLATION

Even now Śrī Priyā hears clearly within Śyāmasundara's flute, "You are My adornment; You are My very life..."

Priyā begins humming in precisely the same melody, though Her voice is indistinct. After humming for a few moments, She asks the mañjarī to bring the betel casket. When it arrives, Śrī Priyā gestures for something. Understanding Her sign, the mañjarī opens the casket and swiftly cuts a clove with the nut-cutter into a slender stylus, then places it in Her hand. Humming, Śrī Priyā writes upon the kadamba leaf:

"The intimate conversations that awaken love within the heart, Your smiling face and loving glances, Your broad chest, the abode of Śrī: beholding them, My mind is repeatedly bewildered by overwhelming longing."

(Śrīmad-Bhāgavatam 10.31.17)

Having written this, She looks toward beloved Śyāmasundara and says, "Support of My life, I remember everything. Ah, could I ever forget that vision?"

Śrī Priyā reflects for a while, then says, "O wind, just as you have brought the fragrance of my Lord's limbs concealed within your heart, conceal this letter there as well and carry it to Him."

After this prayer She tosses the leaf into the sky and closes Her eyes for a few moments. The leaf hovers in the air and falls below the terrace, but the Queen does not see it. Immersed in love, She believes that the wind has carried Her letter away, and every atom of Her being fills with joy.

Only moments later Her love-filled eyes become restless. She longs to see Her Lord read the letter. When some time passes, She tells the mañjarī, "Look and see whether the letter has reached Śyāmasundara. My eyes cannot see clearly. Surely it must have reached Him!"

ORIGINAL Hindi prose

रानीकी बात सुनकर मञ्जरी कुछ विचारमें पड़ जाती है कि क्या उत्तर दूँ। इसी समय मधुमङ्गल श्यामसुन्दरके कन्धेको हिलाकर एवं हाथमें कुछ लेकर उन्हें दिखलाने लगता है। इसे देखकर रानी समझती हैं कि मेरा वह पत्तेवाला पत्र ही मधुमङ्गलने श्यामसुन्दरको दिया है। अतः रानी स्वयं कह उठती हैं—वह देख, पत्र पढ़ रहे हैं।

इतना कहते ही रानी मूर्च्छित हो जाती हैं। मञ्जरी उन्हें सँभाल लेती है। श्यामसुन्दर प्रियाका वदन छिप जानेके कारण वंशी बजाना बन्द करके उठकर खड़े हो जाते हैं और उधर ही देखने लगते हैं। कुछ क्षणमें ही श्रीप्रियाको अपने-आप चेतना आ जाती है। श्रीप्रिया पुनः घेरेपर शरीरका भार देकर प्यारे श्यामसुन्दरकी ओर देखने लग जाती हैं।

इसी समय नन्दरायजी तीव्र गतिसे चलते हुए वहाँ आ जाते हैं, जहाँ श्यामसुन्दर खड़े हैं। अपने पिताको आये हुए देखकर श्यामसुन्दर कुछ झेंपते हुए-से फुर्तीसे शिलासे नीचे उतर पड़ते हैं। नन्दरायजी बड़ी शीघ्रतासे श्यामसुन्दरको चिपटा लेते हैं। कुछ क्षण बाद कहते हैं—बेटा! तेरी माँ बावली हो रही है कि कनुआ कहाँ चला गया? तू शीघ्र चल!

पिताकी बात सुनकर श्यामसुन्दर शीघ्रतासे चल पड़ते हैं। कुछ ही दूर पश्चिमकी ओर बढ़े थे कि मैया आती हुई दीखती हैं। दोनोंकी दृष्टि मिल जाती है। श्यामसुन्दरको देखकर मैयाको किञ्चित् संतोष हो जाता है। वे गायोंकी भीड़में इधर-उधर अपने लल्लाको ढूँढ़ती हुई फिर रही थीं, पर श्यामसुन्दर गोशालाके सबसे पूर्वी किनारेपर आ गये थे, अतः मैयाको मिलते नहीं थे। इसीलिये मैया व्याकुल हो गयी थीं। श्यामसुन्दर अब मैया यशोदाके पास जा पहुँचते हैं। मैया हृदयसे लगाकर सिर सूँघने लगती हैं। फिर हाथ पकड़े हुए महलकी ओर बढ़ने लगती हैं।

श्यामसुन्दर कहते हैं—मैया! थोड़ी देर और रहने दे। गायोंको यथास्थान पहुँचा दूँ।

मैया कहती हैं—ना, मेरे लाला! अब अँधेरा हो गया है। अब घर चल चलो।

माँका प्रेमभरा आग्रह श्यामसुन्दर टाल नहीं सके। मैया महलकी ओर चलने लगती हैं। अन्यान्य गोप गायोंको विश्रामस्थलकी ओर हाँके ले चलते हैं।

ENGLISH TRANSLATION

Hearing the Queen, the mañjarī wonders what reply she should give. At that moment Madhumaṅgala shakes Śyāmasundara's shoulder and shows Him something in his hand. The Queen assumes that Madhumaṅgala has given Him Her letter upon the leaf and cries, "Look, He is reading the letter."

The instant She says this, the Queen faints. The mañjarī catches Her. When Priyā's face disappears from view, Śyāmasundara stops playing His flute, rises, and looks toward the terrace. Within moments Śrī Priyā regains consciousness on Her own. Leaning Her weight upon the parapet, She gazes once more at beloved Śyāmasundara.

Just then Nandarāya swiftly approaches the place where Śyāmasundara stands. Seeing His father, Śyāmasundara appears slightly embarrassed and quickly descends from the stone platform. Nandarāya immediately embraces Him. After a moment he says, "Son, Your mother is becoming distraught, asking where her Kanuā has gone. Come quickly!"

Hearing His father, Śyāmasundara starts at once. He has moved only a short distance westward when He sees Mother Yaśodā approaching. Their eyes meet, and the sight of Him brings her some relief. She had been searching among the crowd of cows for her darling, but Śyāmasundara had reached the far eastern edge of the cowshed and she could not find Him. This had made her frantic. Śyāmasundara comes to Mother Yaśodā. She presses Him to her heart, inhales the fragrance of His head, takes His hand, and begins walking toward the palace.

Śyāmasundara says, "Mother, let Me remain a little longer. I shall see that the cows reach their proper resting places."

Mother replies, "No, my darling. It has grown dark. Come home now."

Śyāmasundara cannot resist His mother's loving insistence, so she leads Him toward the palace while the other cowherds drive the cows to their resting place.

ORIGINAL Hindi prose and Braj songs, the first attributed to Mīrābāī

गायें एवं बछड़े बार-बार श्यामसुन्दरकी ओर देखते हैं। श्यामसुन्दर चलते हुए अपने महलके बरामदेमें जा पहुँचते हैं। रानी एकटक देखती रहती हैं। कुछ क्षण बरामदेमें खड़े रहकर श्यामसुन्दर भी रानीके महलकी ओर देखते रहते हैं। फिर मैया आग्रह करती हुई श्यामसुन्दरको भीतर लेकर चली जाती हैं। रानीको जब श्यामसुन्दरका दिखायी देना बन्द हो जाता है तो वे आँखें मूँद लेती हैं। कुछ देर खड़ी रहकर वहीं छतपर बैठ जाती हैं। सामने मञ्जरी बैठी है। उसके बायें कन्धेपर हाथ रखकर वे कुछ क्षण उसके मुखकी ओर देखती हैं। मञ्जरी कहती है—मेरी रानी! अब नीचे चली चलो।

रानी कुछ नहीं बोलतीं; पर कुछ क्षण बाद करुणाभरी मुद्रामें धीरे-धीरे यह गाने लगती हैं—

मोहनी मूरत साँवरि सूरति नैना बने विसाल।
अधर सुधारस मुरली राजत उर बैजंती माल॥
बसो मोरे नैनन में नंदलाल॥

एक-दो बार इतनी-सी कड़ीकी आवृत्ति करके रानी चुप हो जाती हैं। कुछ क्षण बाद उस मञ्जरीको अपने हृदयसे लगाकर रोने लग जाती हैं। मञ्जरी कुछ समझ नहीं पाती कि रानीको कैसे शान्त करूँ। ललिता आदि मैया यशोदाके घर बहुतसे पकवान आदि लेकर गयी हुई हैं। प्यारे श्यामसुन्दरके लिये रानीने बहुत-सी भोजन-सामग्री बनायी थी, वह लेकर गयी हुई हैं। नीचे एक-दो मञ्जरी और हैं, पर रानीके पास इस समय एक यही मञ्जरी है।

कुछ देरतक आँसू बहानेके बाद रानी फिर चुप हो जाती हैं तथा कहती हैं—तू जो वह पद उस दिन मधुर कण्ठसे गा रही थी, आज भी गा।

मञ्जरी गाने लग जाती है—

ऐसी पिय कान न दीजे हो।
चली री सखी मिलि राखिये नैनन रस पीजै हो।
श्याम सलोने सुंदरो मुख देखत जीजै हो॥
जोइ जोइ भेष सो हरि मिले सोइ सोइ कीजै हो।
मीरा के प्रभु गिरिधर नागर बड़भागन रीजै हो॥

ENGLISH TRANSLATION

The cows and calves repeatedly look back toward Śyāmasundara. He reaches the veranda of His palace, while the Queen watches without blinking. Standing there for several moments, Śyāmasundara also gazes toward Her palace. Then Mother Yaśodā insistently leads Him inside. When He disappears from the Queen's sight, She closes Her eyes. After standing for a while, She sits upon the terrace. The mañjarī sits before Her. Resting a hand upon the mañjarī's left shoulder, the Queen looks at her face for several moments. The mañjarī says, "My Queen, please come downstairs now."

The Queen gives no reply. After a moment She begins singing softly with a sorrowful expression:

Enchanting is His form, dark and lovely His countenance, and vast His eyes.
The nectar-filled flute adorns His lips, and a vaijayantī garland rests upon His breast.
O Nandalāla, dwell within my eyes.

After repeating this brief refrain once or twice, the Queen falls silent. A few moments later She embraces the mañjarī and begins to weep. The mañjarī cannot understand how to console Her. Lalitā and the others have gone to Mother Yaśodā's house carrying many delicacies. The Queen had prepared abundant food for beloved Śyāmasundara, and they have taken it there. One or two other mañjarīs remain downstairs, but only this mañjarī is now with the Queen.

After shedding tears for some time, the Queen grows quiet and says, "Sing today that song which you sang so sweetly the other day."

The mañjarī begins:

Beloved, pay no heed to anything else.
Come, companion, let us meet and preserve Him within our eyes, drinking their nectar.
Let us live by beholding the lovely face of dark and graceful Śyāma.
Whatever guise will bring us Hari, let us assume that very guise.
Mīrā's Lord is Giridhara, the urbane lover, who is won by the greatly fortunate.

CHAPTER 14

प्रेमाप्लावन लीला

The Flood of Love Līlā

Source scan pages 150–160

ORIGINAL

Sanskrit invocation

॥ विजयेतां श्रीप्रियाप्रियतमौ ॥

ENGLISH TRANSLATION

May Śrī Priyā and Her most beloved Lord be ever victorious.

ORIGINAL

प्रेमाप्लावन लीला

श्रीयमुनासे निकले हुए स्रोतके उद्गमपर नीले रंगका पुल शोभा पा रहा है। उसी पुलके घेरेपर दक्षिणकी ओर मुख करके झुकी हुई श्रीप्रिया खड़ी हैं। प्यारे श्यामसुन्दरके आनेकी प्रतीक्षामें वे उसी पुलपर बैठी थीं, पर हृदयका प्यार उद्वेलित होनेसे बैठी नहीं रह सकीं। घेरेपर शरीरका भार देकर खड़ी हो गयीं तथा उसी पगडंडीकी ओर देखने लगीं जिससे श्यामसुन्दरके आनेकी सम्भावना है।

रात्रि प्रहरभर व्यतीत हो चुकी है। आज कृष्णपक्षकी प्रतिपदा है, फिर भी चन्द्रदेव काफी ऊपर उठ चुके हैं। चन्द्रबिम्ब स्रोतके जलमें प्रतिबिम्बित तथा धाराके वेगसे हिल रहा है। रानीको उसमें भी प्यारे श्यामसुन्दर दीख रहे हैं। वही चिर-परिचित हँसता हुआ मुखारविन्द स्रोतके निर्मल जलमें नाच रहा है।

पासमें बाँयी ओर विशाखा खड़ी हैं। रानी उनका दाहिना हाथ पकड़कर एक-एक अँगुलीका स्पर्श करतीं और हँसकर पूछती हैं, “विशाखे! तू जानती है, श्यामसुन्दरको नाचना किसने सिखाया?”

विशाखा उत्तर देती हैं, “तुम्हारी आँखोंने।”

रानी हाथ झकझोरती हैं, “मैं सच्ची बात पूछ रही हूँ और तू विनोद कर रही है।”

विशाखा रानीका कंधा पकड़कर मुसकराती हैं, “विनोद नहीं, मैंने बिलकुल सच्ची बात कही है।”

ENGLISH TRANSLATION

The Flood of Love Līlā

A blue bridge adorns the source flowing from the Yamunā. Leaning southward over its rail, Priyā watches the path by which Śyāmasundara may come. She had been sitting, but the surge of love forced Her to rise.

One watch of the night has passed. Though it is the first night of the dark fortnight, the moon is high and its reflection trembles in the current. Rādhā sees only Śyāmasundara's familiar smiling face dancing in the clear water.

She takes Viśākhā's hand and asks who taught Him to dance. “Your eyes,” Viśākhā replies. Rādhā protests that she is joking, but Viśākhā insists it is entirely true.

ORIGINAL

रानी कुछ देरतक आकाशके चन्द्र और जलके प्रतिबिम्बको देखती हैं; दोनों जगह श्यामसुन्दरका मुख दीखता है। वे पूछती हैं, “किसने नाचना सिखाया, मैं बताऊँ?” विशाखा कहती हैं, “बता।” रानी जलकी ओर संकेत करती हैं। इस बार उन्हें स्रोतका जल एवं चन्द्रबिम्ब सर्वथा नहीं दीखता। स्पष्ट प्रतीत होता है कि धाराके ऊपर अपने अङ्गोंको हिलाते हुए श्यामसुन्दर खड़े हैं। रानी झटपट बोल उठती हैं, “अरे! वे तो आ गये!”

विशाखा खिलखिलाकर हँसती हैं। रानी लजा जाती हैं और समझती हैं कि भ्रम होनेके कारण वह हँस रही है। यमुनाकी धारा झर-झर स्रोतसे बह रही है। रानी फेनिल धाराकी ओर देखती हैं; दृष्टि फेनपर है, पर मन भावोंकी तरंगोंमें डूबकर किसी सुदूर नीरव निकुञ्जमें प्रियतमके साथ विनोद अनुभव कर रहा है। विशाखा उनकी ठोढ़ी हिलाकर कहती हैं, “क्यों, बोलती नहीं? चुप क्यों हो गयी?”

रानी भाव-राज्यसे उतरकर भाव छिपानेके लिये हँसती हैं, फिर कहती हैं, “चल, पुलके नीचे चलें।” विशाखाका हाथ पकड़े पश्चिम जातीं, दक्षिण मुड़कर सीढ़ियोंसे स्रोतके पास पहुँचतीं और जलको छूती सीढ़ीके ऊपर बैठ जाती हैं। विशाखा दाहिनी ओर हाथ पकड़े झुकी खड़ी रहती हैं।

ENGLISH TRANSLATION

Rādhā sees His face in both moons and points to the water. The water and reflection vanish from Her sight, replaced by Śyāmasundara dancing upon the current. “He has come!” She cries. Viśākhā laughs, and Rādhā blushes at Her delusion.

As the stream murmurs, Her gaze rests on its foam while Her mind plays with Her beloved in a distant silent bower. Viśākhā recalls Her, and Rādhā conceals Her mood with laughter. Taking Viśākhā's hand, She descends beneath the bridge and sits just above the water.

ORIGINAL

चन्द्रमाकी शुभ्र किरणें जल, फेन, सीढ़ियों एवं रानीके मुखारविन्दपर पड़ रही हैं। पुलके नीचेसे आनेके कारण धारा मँडराकर कभी-कभी मेघाकार धारण करती है। फेनके बुलबुले नाचते हुए सीढ़ियोंसे टकराकर विलीन हो जाते हैं। रानी हाथपर बुलबुलोंको उठा लेती हैं; आते ही वे विलीन हो जाते हैं। बात यह है कि उन बुलबुलोंमें भी रानीको प्यारे श्यामसुन्दरकी छवि दीखती है। उनका प्यारभरा हृदय भोली बालिकाके हृदय जैसा बन जाता है, इसलिये बार-बार हाथ बढ़ाती हैं।

विशाखा हँसती हैं, “क्या कर रही है?” रानी उन्हें झटका देकर पास बैठाती और आशासे कहती हैं, “अच्छा, तू उठा तो सही। सम्भवतः तेरे हाथपर बुलबुले आ जायें।” विशाखा पूछती हैं, “मैं जो कहूँगी, सो क्या देगी?” रानी झट कहती हैं, “तू जो कहेगी, वही दूँगी।”

विशाखा दोनों हाथोंकी अञ्जलिमें फेनका जल उठाती हैं। कुछ क्षण बुलबुले बने रहते हैं। रानी उनमें श्यामसुन्दरको स्पष्ट देखकर आनन्दमें निमग्न हो जाती हैं। विशाखा तुरंत जल गिराकर कहती हैं, “देख, मैंने बुलबुले उठा लिये न!” रानी प्रेममें भरकर उन्हें हृदयसे लगा लेती हैं। फिर उनके आँचलसे दाहिना हाथ पोंछती हुई दो सीढ़ी ऊपर चढ़कर बैठ जाती हैं। विशाखा पास बैठती हैं। कुछ मञ्जरियाँ एवं तुङ्गविद्या, इन्दुलेखा, चम्पकलता उतरकर रानीको घेरकर बैठ जाती हैं।

ENGLISH TRANSLATION

Moonlight falls on water, foam, steps, and Rādhā's face. Bubbles dance against the steps and vanish. Seeing Śyāmasundara in them, She reaches again and again like an innocent child.

At Her request Viśākhā cups foamy water in both palms. For a moment the bubbles remain and Rādhā beholds Him clearly. Viśākhā spills them with a laugh, and Rādhā embraces her. They move two steps higher as Tuṅgavidyā, Indulekhā, Campakalatā, and the mañjarīs gather around.

ORIGINAL

चित्राको देखकर रानी कहती हैं, “अच्छा, तू आ गयी। अब एक कथा सुना।” चित्रा कहती हैं, “सायंकाल हम लोगोंके पीछेसे तू जो सुन रही थी, उसे ही पूरा होने दे।” रानी उल्लासमें कहती हैं, “हाँ, हाँ, उसे सुना! तूने ठीक याद दिलाया।”

चित्रा एक मञ्जरीको पुकारती हैं, जो ऊपर पुष्पमाला बना रही थी। वह डलिया हाथमें लिये पूछती है, “क्यों चित्रारानी! मुझे पुकारा है?” उसकी बोली सुनकर राधारानी प्यारसे कहती हैं, “हाँ री, इधर आ।” मञ्जरी सामने आती है। रानी हाथ पकड़कर नीचेकी सीढ़ीपर बैठाती, दोनों हाथ उसके गलेमें डालती, मुख देखती और होठ चूम लेती हैं। मञ्जरीकी आँखोंसे प्रेमके आँसू बहते हैं। रानी आँचलसे पोंछती हैं। कुछ क्षण भावभरी नीरवता होती है। रानी उत्कण्ठासे कहती हैं, “हाँ, अब आगे सुना!”

मञ्जरी बायाँ हाथ श्रीप्रियाकी दाहिनी जंघापर रखकर कहती है, “रानी! फिर मैं साहस करके उद्यानमें प्रवेश कर गयी। दक्षिण बढ़नेपर मल्लिका पुष्पोंकी सुन्दर क्यारियाँ देखीं। टहनियाँ पुष्पोंसे लदी थीं। बायें हाथसे आँचलकी झोली बनाकर दाहिनेसे पुष्प तोड़ने लगी। मेरा मन अनिर्वचनीय प्रसन्नतासे उत्तरोत्तर मस्त हो रहा था। हृदयमें गुदगुदी थी। भावोंको सँभालनेमें असमर्थ होकर मधुर कण्ठसे गाने लगी:

ENGLISH TRANSLATION

Rādhā asks Citrā for a story. Citrā calls the mañjarī whose account had been interrupted at dusk. Rādhā seats her close, embraces and kisses her, wipes away her tears, and eagerly asks her to continue.

The mañjarī says she boldly entered the garden and found jasmine beds laden with blossoms. Gathering them into her veil, her heart grew inexplicably joyful and she began to sing:

ORIGINAL

song attributed to Mīrā

चालाँ वाही देस, प्रीतम पावाँ, चालाँ वाही देस।

कहो कुसुमल साड़ी रंगावाँ, कहो तो भगवाँ भेस॥

कहो तो मोतियन माँग भरावाँ, कहो छिटकावाँ केस। —मीरा

ENGLISH TRANSLATION

I shall go to that land and find my beloved. I shall go to that land.

Tell me, shall I dye my sari safflower-red, or shall I wear the ochre garb?

Tell me, shall I fill my parting with pearls, or let my hair fall loose? Mīrā.

ORIGINAL

मञ्जरी कहती है, “मैं अन्तिम चरण बार-बार गाती और पुष्प तोड़ती रही। तभी पश्चिम-दक्षिणकी ओर दस-बारह हाथ दूर एक वन्य वृक्षके नीचे प्यारे श्यामसुन्दर खड़े प्यारभरी दृष्टिसे मुझे देखते दीखे। अकेलेमें उनके दर्शनका यह प्रथम अवसर था, अतः मैं लज्जित हो गयी।

“वे बोले, ‘री! तू तो बहुत सुन्दर गाती है।’ मैं और लज्जित हुई। उन्होंने पूछा, ‘इस समय यहाँ पुष्प क्यों तोड़ रही है?’ मैंने धीरेसे कहा, ‘रानीने ही पर्याप्त पुष्प लानेको कहा है।’ रानी, तुम्हारा नाम सुनते ही उनकी आँखोंमें आँसू भर आये। पीताम्बरसे मुख पोंछनेके बहाने आँसू छिपाकर बोले, ‘इधर आ, एक बात सुन।’

“उनके स्वरमें ऐसी मधुरता और निर्मल प्रेम था कि सुध-बुध खोने लगी। स्मरण था कि उन्होंने बुलाया है, पर पैर भूमिसे चिपके थे। फिर पुकारा, ‘क्यों, नहीं आयेगी?’ मैं सँभल न सकी, वहीं बैठकर मूर्छित हो गयी। चेतना आयी तो वे पास मुसकरा रहे थे और मेरा आँचल पुष्पोंसे भरा था। मैंने पूछा, ‘इतने पुष्प कहाँसे आये?’

“वे हँसे, ‘बावली! आयी थी पुष्प तोड़ने और सो गयी। खाली हाथ जाती तो तेरी रानी मुझे उपालम्भ देती कि मेरे कारण तुझे खाली हाथ लौटना पड़ा। इसलिये पुष्प तोड़कर तेरे आँचलमें रख दिये। तेरा कार्य कर दिया।’ मैं फिर प्रेममें विभोर हुई। कुछ देर बाद इच्छा न होनेपर भी बोली, ‘तो मैं अब जाती हूँ।’

“वे बोले, ‘मैंने तेरा काम किया, फिर इतनी शीघ्र कृतघ्न बन गयी?’ मैं हँसकर पूछी, ‘बदलेमें क्या चाहते हो?’ उन्होंने कहा, ‘तू भी मेरा एक काम कर दे, पर कोई जानने न पावे।’ मैंने पहले काम बतानेको कहा। वे पूछते रहे कि किसीसे बतायेगी तो नहीं; मैंने कहा, ‘यह पहले कैसे कह दूँ?’ गम्भीर होकर बोले, ‘सचमुच काम लेना है, विनोद मत समझ।’ मैंने भी कहा कि विनोद नहीं समझ रही।”

ENGLISH TRANSLATION

She saw Śyāmasundara beneath a tree nearby, gazing lovingly at her. It was her first solitary meeting with Him. He praised her singing and asked why she gathered flowers. At Rādhā's name His eyes filled, though He hid the tears and called her near.

The purity of His voice overwhelmed her and she fainted. Awakening, she found Him smiling beside her and her veil filled with flowers. He explained that He had gathered them lest Rādhā blame Him for sending her back empty-handed. When she tried to leave, He playfully demanded a service in return, one she must keep secret.

ORIGINAL

“श्यामसुन्दर अतिशय प्रेमसे बोले, ‘संध्या समय गोष्ठमें जहाँ बैठकर मैं वंशी बजाऊँगा, उसके ठीक सामने दक्षिणकी तरफ यमुना-तटपर एक घड़ी रात बीतनेपर तू आ जाना। वहाँ सुबल खड़ा मिलेगा। वह तुझे जो दे, अपनी रानीको ले जाकर दे देना। समझी?’ मैंने कहा, ‘अच्छी बात है।’

“उन्होंने कहा, ‘उसके पहले तुमसे एक वस्तु लेनी है।’ मैंने पूछा कैसी। वे बोले, ‘तू देगी तो?’ मैंने सोचकर हाँ कहा। उन्होंने पूछा, ‘तेरे पास एक अँगूठी है न?’ मैंने कहा बहुत-सी हैं। वे हँसे, ‘मैं उसकी बात कह रहा हूँ, जिसके नगमें तेरी रानीका चित्र अङ्कित है। वह मुझे दे दे।’ मैंने कहा, ‘दे दूँगी; पर क्या करोगे?’

“यह सुनते ही उनकी आँखें भर आयीं और गला रुँध गया। कुछ क्षण बाद बोले, ‘जितनी देर तेरी रानी पास रहती है, संसार ही नहीं अपने-आपतकको भूला रहता हूँ; पर उनके जाते ही मन विक्षिप्त हो जाता है। आँखोंसे चारों ओर प्रिया-ही-प्रिया दीखती हैं। आवेशमें उन्हें हृदयसे लगाने बढ़ता हूँ, पर छवि उतनी ही दूर हट जाती है। बहुत देर बाद समझता हूँ कि यह भ्रम है। प्रिया होतीं तो मुझे व्याकुल नहीं देख सकतीं। निराश बैठता हूँ, पर प्राण और छटपटाते हैं। आज रूपने तेरी अँगूठीकी चर्चा की। यदि वह दे दे तो उसे हृदयसे लगाकर विरह-व्यथा कम करता रहूँगा।’”

मञ्जरीकी उस अँगूठीमें राधारानीका सूक्ष्म चित्र इस ढंगसे जड़ा हुआ है कि उसे आँखके पास ले जाकर देखनेसे साक्षात् रानी सामने खड़ी दीखती हैं; पर वह अनजानको नहीं दीख सकता। जो देखनेकी कला जानता हो, उसे ही दीखेगा।

ENGLISH TRANSLATION

Śyāmasundara asks her to come to the Yamunā bank one watch after nightfall, opposite the place where He will play His flute in the cowherd settlement. Subala will give her something to deliver to Rādhā.

First He requests her ring whose jewel contains Rādhā's portrait. Choked with tears, He explains that while Rādhā is present He forgets even Himself, but after She leaves He sees Her everywhere and reaches for a vision that recedes. Rūpa's mention of the ring made Him hope to hold it to His heart and soothe His separation.

The book notes that the ring's tiny portrait appears like Rādhā Herself when viewed close to the eye, but only to one who knows the art of seeing it.

ORIGINAL

मञ्जरी कहती है, “उनकी बात सुनकर मैं स्वयं प्रेमसे रोने लगी। अँगूठी उतारकर उनकी अँगुलीमें पहनाने चली। सारा शरीर काँप रहा था। धैर्य धारण करके पहना दी और अलग खड़ी हो गयी। वे गद्गद कण्ठसे बोले, ‘तुमने आज मुझे मोह ले लिया।’

“यह सुनकर हृदय और कातर हुआ। मैं सोचने लगी कि रानीके अणु-अणुपर और उनसे सम्बद्ध समस्त वस्तुओंपर उनका अनादिसिद्ध अधिकार है। अँगूठी ही नहीं, मेरा अणु-अणु उनका है। अपनी वस्तु लेनेमें उन्हें संकोच क्यों हुआ? सोचते-सोचते इतनी अधीर हुई कि बैठ गयी। आँखोंसे आँसू बह रहे थे। वे बैठकर अपने पीताम्बरसे मेरे आँसू पोंछने लगे।

“कुछ देर बाद मुझे धैर्य हुआ। वे मुसकराकर बोले, ‘तुझे बहुत विलम्ब हो गया है। तेरी रानी बाट देख रही होगी। शीघ्र पुष्प दे दे।’ मुझे चेत हुआ और खड़ी हो गयी। उन्होंने कहा, ‘मेरे पीछे चली चल। यमुना-तटपर पहुँचा दूँगा, नहीं तो फिर रास्ता भूल जावेगी।’ वे आगे और मैं पीछे चल पड़ी। यमुना-तटपर वे प्यारसे देखते रहे। मैं संकोचसे कभी उन्हें देखती, कभी दृष्टि नीची करती। वे हँसे, ‘बावली! देर हो गयी, शीघ्र चली जा।’ फिर झाड़ीके पीछे सघन वनमें चले गये।”

ENGLISH TRANSLATION

Weeping, the mañjarī places the ring upon His finger. He says she has enchanted Him. She reflects that He eternally owns every particle connected with Rādhā, including her very being, and wonders why He hesitated to take His own property. Overcome, she sits and He wipes her tears with His yellow cloth.

Later He reminds her that Rādhā awaits the flowers and leads her to the Yamunā lest she lose the path. After lovingly urging the “mad girl” to hurry, He disappears into the forest.

ORIGINAL

“मैं आनन्दसे पुष्प लिये लौटी। महलके पास रूपदेवी मेरी ओर दौड़ीं और बोलीं, ‘री! आज बहुत सुन्दर शृङ्गार किया है। मैं भ्रममें पड़ गयी और पहचान नहीं सकी। लगा रानी आ रही हैं।’ वे मुझपर प्यारकी वर्षा करने लगीं, हृदयसे लगाया और सिरपर हाथ फेरा। आँचल खिसक गया तो बोलीं, ‘महा भाव! तू हम सबसे अधिक चतुर हो गयी। इतनी सुन्दर वेणी मैं भी नहीं बना सकती।’

“मैं सोचने लगी, मैं तो स्नान करके कपड़े पहन, केश भीगे छोड़कर दौड़ पड़ी थी। फिर वेणी किसने बनायी, पुष्प खोंसे और अङ्गोंका शृङ्गार किया? स्मरण हुआ कि जब मूर्छित थी तब प्यारेने आँचलमें फूल भरे थे। निश्चय ही उसी समय केश सँवारे, वेणी बनायी और सजाया। यह सोचकर प्रेममें डूब गयी और रूपदेवीको सब सुनाया। उनकी आँखोंसे आँसू बह निकले। उन्होंने मुझे हृदयसे लगाया, बार-बार होठ चूमे और कहा, ‘चल, रानीके पास ले चलूँ। सायंकाल सब सुना देना।’

“रूपदेवीके साथ तुम्हारे पास आयी। मुझे देखते ही तुम्हें प्यारे श्यामसुन्दरकी अङ्ग-गन्ध मिली और तुम मूर्छित...”

ENGLISH TRANSLATION

Returning with the flowers, she meets Rūpadevī, who initially mistakes her for Rādhā because of her exquisite braid and adornment. The mañjarī realizes that while she was unconscious Śyāmasundara must have arranged her hair, placed the flowers, and decorated her. On hearing the story, Rūpa embraces and kisses her and brings her to Rādhā. The fragrance of Śyāmasundara's limbs upon her had made Rādhā faint.

ORIGINAL

मञ्जरी यह कह ही रही थी कि रानीने दोनों हाथ बढ़ाकर उसे हृदयके पास खींच लिया। प्रेमके कारण उनकी दशा विचित्र हो गयी। मानो उसे हृदयके भीतर घुसा लेना चाहती हों, ऐसे कसकर चिपटा लिया। मञ्जरी प्रेममें इतनी संलीन हुई कि बोल न सकी। सभी सखियाँ एवं मञ्जरियाँ सुनते-सुनते श्यामसुन्दरके ध्यानमें इतनी तल्लीन हो गयीं कि अधिकांश बाह्य ज्ञान खो बैठीं।

इसी समय ललिता एवं अन्य मञ्जरियोंके साथ प्यारे श्यामसुन्दर घाटपर आ पहुँचते हैं; पर इतनी नीरवता है मानो सखी-मण्डली समाधिमें हो। किसीको पता नहीं चला। श्यामसुन्दर दबे पाँव घाटसे नीचे उतरकर चित्राके बगलमें बैठते और दोनों हाथोंसे रानीकी आँखें पीछेसे मूँद लेते हैं। प्रियतमका कर-स्पर्श पाकर रानी चौंकती हैं, फिर सोचती हैं किसने आँखें मूँदीं? प्राणनाथ तो नहीं; वे अभीतक सम्भवतः नहीं आये होंगे। हँसकर कहती हैं, “हाँ, हाँ, पहचान गयी। ललिता? ना, ना, चित्रा?”

रानी हाथ ऊपर उठाकर कलाईके पास ले जाती हैं। हाथ श्यामसुन्दरके वक्षसे छूते ही अकचकाकर कहती हैं, “अरे!” बल लगाकर हाथोंको आँखोंसे हटाती हैं और श्यामसुन्दरको देखती हैं।

ENGLISH TRANSLATION

Rādhā pulls the narrator tightly to Her heart as though drawing her inside. Everyone becomes absorbed in meditation and loses outer awareness.

Śyāmasundara arrives silently with Lalitā and the mañjarīs, sits beside Citrā, and covers Rādhā's eyes from behind. She guesses Lalitā and Citrā, believing Her beloved has not yet come. When Her raised hands touch His chest, She cries out and pulls His hands away.

ORIGINAL

रानी हँसती हुई शीघ्र खड़ी हो जाती हैं। सभी सखियाँ एवं मञ्जरियाँ भी खड़ी होती हैं। श्यामसुन्दर रानीको हृदयसे लगा लेते हैं। गलबाँही डाले हुए प्रिया-प्रियतम सीढ़ियोंसे घाटके ऊपर आते हैं। वृन्दादेवी सबको ऊपरकी अतिशय सुन्दर सजी वेदीपर ले जाती हैं। प्रिया-प्रियतम पैर नीचे लटकाकर बैठते हैं। वृन्दा एवं दासियाँ सेवामें लगती हैं। मधुमती मञ्जरी वीणाके तार छेड़ती हुई अतिशय सुरीले कण्ठसे गाती हैं:

ENGLISH TRANSLATION

Laughing, Rādhā rises and Śyāmasundara embraces Her. With arms around one another, They ascend to a beautifully decorated platform. Vṛndā and her servants begin Their service, while Madhumatī Mañjarī plucks the vīṇā and sings:

ORIGINAL

Braj Bhāṣā song

नन्द-कुल-चन्द वृषभानु-कुल-कौमुदी, उदित वृन्दा-विपिन विमल अकासे।

निकट बैठित सखि-वृन्दकर-चारिका, लोचन चकोर तिन रूप-रस-प्यासे॥

रसिक-जन-अनुराग-उदधि तजि मरजाद, भाव अगनित कुमुदिनी-गन-विकासे।

कहि गदाधर सकल विश्व मसुरनि बिना, भानु भव-ताप अज्ञान न बिनासे॥

ENGLISH TRANSLATION

The moon of Nanda's line and the moonlight of Vṛṣabhānu's line have risen in the stainless sky of Vṛndāvana's groves.

The surrounding sakhīs move near Them, their cakora-like eyes thirsting for the nectar of Their beauty.

The ocean of the rasikas' love abandons all bounds, while countless night-lotuses of feeling open.

Gadādhara says: Without these radiant Ones, the world's darkness remains, and the sun cannot destroy the heat of becoming or the night of ignorance.

CHAPTER 15

निश्चानुरञ्जन लीला

The Līlā of Guileless Affection

Source scan pages 161–174

ORIGINAL

Sanskrit invocation

॥ विजयेतां श्रीप्रियाप्रियतमौ ॥

ENGLISH TRANSLATION

May Śrī Priyā and Her most beloved Lord be ever victorious.

ORIGINAL

निश्चानुरञ्जन लीला

श्रीयमुना-पृष्ठपर प्रिया-प्रियतम घूम रहे हैं। सखियोंकी टोली आगे-पीछे तथा दाहिने-बायें घेरे चल रही है। श्यामसुन्दरने बायें हाथसे प्रियाजीकी कमरके दाहिने ओरके अञ्चलका एक कोर पकड़ रखा है तथा प्रिया उनके बायें कंधेको दाहिने हाथसे पकड़े, बायें हाथमें कमलका पुष्प डंडीके सहारे घुमाती जा रही हैं। श्यामसुन्दरके दाहिने हाथमें लेनेको बनी हुई सुनहरी झोली है। ध्यानसे सने दोनों एक-दूसरेकी ओर बीच-बीचमें झुकते, वनकी शोभा निहारते, पुष्प चुनते हुए मुख्यतः पूर्वकी ओर बढ़ रहे हैं।

चन्द्रदेवकी शुभ्र चाँदनीसे वन जगमगा रहा है। प्रियाजी एवं सखियाँ अस्तई रंगकी रेशमी साड़ियाँ पहने हैं। श्यामसुन्दर धोती तथा कंधेपर गाढ़े पीले रंगकी जरीदार चादर पहने हैं। उनके अङ्गसे नीलिमा-मिश्रित एवं श्रीप्रियाके अङ्गसे पीत-पुटित शुभ्र ज्योति निकल रही है। शीतल, मन्द, सुगन्धित पवन चल रहा है। चम्पा, स्थल-कमल एवं विभिन्न पुष्पोंके वृक्ष हिलकर प्रिया-प्रियतमको बुला रहे हैं, “आओ, मेरे जीवन-सर्वस्व! तुम्हारे लिये ही पुष्पोंकी डाली सजा रखी है। अपने प्यारभरे हाथोंसे उपहार ग्रहण करो।”

दोनों प्रत्येक पुष्प-वृक्षसे पाँच-सात पुष्प चुनकर, सूँघकर गुणमञ्जरीकी डलियामें रखते हैं। कभी श्यामसुन्दर प्रियाजीको और कभी वे श्यामसुन्दरको खींचती हैं। वे शाखा झुकाकर उनके मुखके पास ले जाती हैं; वे ठोढ़ी छूकर एक-दो पुष्प उनके सिरपर रखते हैं। वे वही पुष्प उनके कंधेपर रख मुसकराती हैं। इस प्रकार वृक्ष-लताओंको छूकर उनका आनन्द बढ़ाते पूर्व जाते हैं।

ENGLISH TRANSLATION

The Līlā of Guileless Affection

Priyā and Her beloved wander beside the Yamunā surrounded by sakhīs. Śyāmasundara holds one corner of Her veil at the waist; She holds His left shoulder and twirls a lotus. Bathed in moonlight, They move east gathering flowers. Their blue and golden-white radiance mingles with fragrant breezes.

The flowering trees seem to beg Them to accept their offerings. From each They gather, smell, and place several blossoms in Guṇamañjarī's basket. They playfully pull one another forward, touch the vines, and exchange flowers with smiles.

ORIGINAL

मयूरोंकी टोली पंख फैलाकर नृत्य कर रही है। उनके पास पहुँचते ही वे "को-ओं" बोलते हुए प्रिया-प्रियतमकी प्रदक्षिणा करते हैं। श्यामसुन्दर कहते हैं, "मयूरों! मेरी तरह रास-नृत्य करके दिखाओ।" एक मयूरी-मयूरका जोड़ा मध्यमें और दल मण्डलाकार खड़ा होता है। मयूरी प्रियाजी तथा मयूर श्यामसुन्दरको सिर नवाते हैं। मयूर संकेत करता है। श्यामसुन्दर हँसते हैं, "हाँ-हाँ, मैं मुरली बजाता हूँ, तुम नृत्य आरम्भ करो।"

मुरलीकी तानपर दल मध्यके जोड़ेके चारों ओर घूमता है; मध्यका जोड़ा चोंच मिलाकर थिरकता है। श्रीप्रिया खिलखिलातीं, गुणमञ्जरीकी डलियासे दोनों अञ्जलियोंमें पुष्प भरकर इस प्रकार बिखेरती हैं कि प्रत्येक पक्षीपर पुष्प गिरे। मयूर कलरव करते हैं और सारा वन हँसीसे गूँजता है। श्रीप्रिया श्यामसुन्दरकी पीली चादर झटकती हुई चरणोंके पास बैठकर लोट-पोट होती हैं। वे भी बैठ जाते हैं, पर मुरली बजाते रहते हैं। रानी उनका कंधा पकड़कर मुरली होठोंसे हटा देती हैं। मुरली रुकते ही नृत्य रुक जाता है।

हँसी शान्त होनेपर श्यामसुन्दर कहते हैं, "प्रिये! मयूरोंको नृत्यका पुरस्कार दो।" गुणमञ्जरी और वृन्दाकी दासियाँ सोनेकी परातोंमें पीली, सोने-चाँदीके वरकवाली मिठाइयाँ लाती हैं। रानी मिठाई श्यामसुन्दरके हाथमें देती हैं। सखियाँ देखती हैं कि वे प्रत्येक मयूरके पास एक साथ खड़े होकर प्रेमसे खिलाते, सिर सहलाते, सोनेके कटोरेसे जल पिलाते और पीताम्बरसे चोंच पोंछते हैं।

ENGLISH TRANSLATION

Peacocks circle the pair. At Śyāmasundara's request they form a rāsa circle around one dancing couple while He plays the flute. Rādhā showers them with flowers and collapses laughing at His feet, finally pulling the flute from His lips.

As their reward, Guṇamañjarī brings gold trays of yellow sweets covered in foil. Śyāmasundara appears beside every bird at once, feeding and caressing each, giving water, and wiping their beaks with His yellow cloth.

ORIGINAL

पुनः पूर्व बढ़ते समय ऊँचे वृक्ष डालियाँ हिलाकर पुष्प-वर्षा करते हैं। श्रीप्रिया अञ्चल तथा श्यामसुन्दर पीताम्बर फैलाते हैं और पुष्प दो मञ्जरियोंकी डलियोंमें उड़ेलते हैं। वे अत्यन्त विशाल गोलाकार संगमरमरकी वेदीपर पहुँचते हैं, जिसका व्यास करीब सौ गज और ऊँचाई एक हाथ है। चारों ओर केलेके वृक्षोंके पत्तोंसे मेहराब बने हैं। कमल-पुष्पोंसे पिरोये बेंच-जैसे आसन तथा नीली जरीदार कालीन सजी है। दक्षिण भागमें पुष्पोंका सिंहासन है। पश्चिम, पूर्व और दक्षिणमें लताओंके निकुञ्ज और उत्तरमें चालीस गज दूर यमुना है।

वृन्दादेवी सिंहासन पोंछकर प्रिया-प्रियतमको बैठाती हैं। दासियाँ पश्चिमी निकुञ्जसे अनेक वाद्य ले आती हैं। वृन्दा पान देना चाहती हैं; कृष्ण पहले प्रियाजीको देनेका आग्रह करते हैं। वे स्वीकार नहीं करतीं तो कृष्ण बीड़ा लेकर उनके होठोंसे लगाते हैं। वे दाँतोंसे पकड़ती हैं, पर वे झटककर स्वयं खा लेते हैं, “अच्छा, मैं ही पहले खाता हूँ, तुम्हारी जीत सही।” रानी हाथ बढ़ाती रह जातीं और तिरछी चितवनसे कहती हैं, “धूर्त!”

श्यामसुन्दर कहते हैं, “अब ऐसा नहीं करूँगा।” दूसरा बीड़ा देते समय प्रियाजी उनका हाथ पकड़कर सावधानीसे लेती हैं। फिर वे स्वयं प्रत्येक सखीको एक ही समय पान खिलाते हैं। प्रत्येक कहती है कि अभी वाद्यका सुर ठीक कर रही हूँ। वे उत्तर देते हैं, “हाथसे थोड़े ही खाओगी। सुर ठीक करती रहो, मैं मुँहमें रख देता हूँ।” सखी पूछती है, “धूर्तता तो नहीं करोगे?” वे कहते हैं, “सर्वथा नहीं,” पान खिलाकर कपोल छूते हैं, “चूना अधिक हो तो उगल देना।”

ENGLISH TRANSLATION

Trees rain blossoms as They reach an immense marble platform adorned with banana arches, lotus seats, a blue brocade carpet, and a flower throne. Vṛndā seats Them and brings instruments and betel.

Kṛṣṇa teasingly touches a leaf to Rādhā's lips, snatches it back, and eats it Himself. Calling Him a rogue, She carefully accepts the next. He then manifests beside every sakhī at once and feeds each while she tunes her instrument, promising no trickery.

ORIGINAL

राधारानीने पान खिलाते समय रखी गयी मुरली उठाकर हृदयसे लगा ली थी और समाधिस्थ-सी बैठी थीं। श्यामसुन्दर लौटकर उनकी मुख-शोभा निहारते हैं। ललिता हँसती हैं तो वे रानीकी ठोढ़ी छूकर कहते हैं, “प्रिये! आज मुरलीका सौभाग्य है कि तूने हृदयसे लगाकर इसकी व्यथा दूर की। यह कहती थी कि जब मैं इसमें ‘राधा-राधा’की तान छेड़ता हूँ, राधारानी मुझे न पाकर रोती हैं और मुरलीसे पूछती हैं: ‘तू स्त्री होकर वियोगकी आग जानती है, फिर मुझे क्यों छलती है? हर दिशामें तू बजती प्रतीत होती है और मैं निर्णय नहीं कर पाती कि प्रियतम कहाँ हैं।’

“मुरली कहती है: ‘मैं छलती नहीं, तुम्हारा हृदय छलता है। उसीमें श्यामसुन्दर निरन्तर बसे हैं और उनका संग करते-करते वह उन्हींकी तरह तुम्हें ठगने लगा है। अभी जाँच लो। मैं हृदयसे लगी हूँ, श्यामसुन्दर बगलमें हैं, पर हृदय सुझा रहा है कि दूर कदम्बकी छायामें वे मुरलीमें तुम्हारा नाम गाकर बुला रहे हैं।’ मैंने मुरलीसे वचन दिया था कि उसे तुम्हारे हृदयतक पहुँचाऊँगा। अब उससे पूछकर संदेह मिटा लेना।”

चेत होनेपर रानी परिस्थिति समझकर संकुचित होती हैं। बात बदलनेके लिये मुरली श्यामसुन्दरके होठोंपर रखती हैं, “आज विशाखाने सुन्दर गीत सुनाया था। विशाखाकी वीणाके सुरमें मुरली बजा दो; जान-बूझकर सुर न बिगाड़ना।”

श्यामसुन्दर कहते हैं, “विशाखे! गा, पर मुरली बजानेका ठीक पारिश्रमिक तुम्हारी सखीसे मिलना चाहिये।” विशाखा कहती हैं कि अनाप-शनाप माँगके लिये वह उत्तरदायी नहीं। ललिता कहती हैं, “सज्जन कलाकार मोल-तोल नहीं करते; पहले मेरी सखीको प्रसन्न करो।” वे कहते हैं, “बस ललिते, यह वचन याद रखना।”

ENGLISH TRANSLATION

While He fed the sakhīs, Rādhā pressed His flute to Her heart and lost outer awareness. He explains that the flute grieves because its “Rādhā” melody makes Her search every direction and weep. The flute wishes to reveal that it is Her own heart, eternally holding Śyāmasundara, that conjures His distant call.

Embarrassed upon awakening, Rādhā asks Him to accompany Viśākhā's song. He agrees only after Lalitā promises suitable compensation.

ORIGINAL

Braj Bhāṣā song

सखि हौं श्याम रंग रेंगी।

देखि बिकाइ गई वा मूरति, सूरति माँहि पगी॥

संग हुती अपनों सपनों सो, सोइ रही रस खोई।

जागेहु आगे दृष्टि परे सखि, नेकू न न्यारो होई॥

एक जु मेरी अँखियनिमें निस-बासर रह्यो करि भौन।

गाइ चरावन जात सुन्यो सखि, सो यह कन्हैया कौन॥

कासों कहीं कौन पतियावे, कौन करे बकवाद।

कैसे के कहि जात गदाधर, गूँगे कौ गुड़ स्वाद॥

ENGLISH TRANSLATION

Friend, I am dyed in Śyāma's color.

Seeing that form, I sold myself and became steeped in His remembrance.

I was with Him as in a dream, asleep and lost in rasa.

Awake, I see Him before me, never separate even slightly.

The One who dwells day and night within my eyes,

who then is this Kanhaiyā said to go grazing cows?

Whom could I tell, and who would believe without dispute?

Gadādhara says it cannot be told, like the taste of sugar to one without speech.

ORIGINAL

गीत समाप्त होते ही मण्डली प्रेममें बेसुध हो जाती है। श्यामसुन्दर तिरछी चितवनसे श्रीप्रियाको देखकर मुसकराते हैं। वे कुछ क्षण हक्की-बक्की बैठीं, फिर उनका कंधा हिलाकर हँस पड़ती हैं। श्यामसुन्दर विशाखासे कहते हैं कि सखीसे पूछो मुरली ठीक बजी और सुख मिला या नहीं; सुख मिला तो पारिश्रमिक पुरस्कारके साथ मिले।

ललिता कहती हैं, “न्याय यह है कि पुरस्कार मुरलीको और पारिश्रमिक तुम्हें मिले। मुरली हमारी जातिकी है और तुम्हारे सामने हमसे पुरस्कार लेनेमें संकोच होगा, इसलिये हमें दे दो। मैं पुरस्कार देकर लौटा दूँगी। पारिश्रमिककी बात विशाखासे करो।”

श्यामसुन्दर हँसते हैं, “अच्छी पंच बनी! यह मुरली मुझसे इतना प्रेम करती है कि संकेतसे ही अपने होठ मेरे होठोंपर रखकर मेरे कहे अनुसार चलती है। तुम्हारी सखीको मनानेमें बहुत अनुनय करना पड़ता है। इसे संकोच नहीं होगा।”

ललिता कहती हैं, “जितनी देर तुमने इसे होठोंपर रखकर विशाखाके संगीतमें सुर भरा, उतनी देर मेरी सखी राधा इसे अपने होठोंपर रखकर तुम्हारे गानेके समय सुर भरेंगी।” श्यामसुन्दर प्रसन्न होकर कहते हैं, “बहुत उदार पुरस्कार! अब पारिश्रमिक पाकर निहाल हो जाऊँगा; पारिश्रमिक पुरस्कारसे बहुत अधिक होता है।”

ENGLISH TRANSLATION

After the song, Lalitā rules that the flute's reward will be for Rādhā to hold it to Her lips and accompany Śyāmasundara for as long as He accompanied Viśākhā. He delights in this generous award and anticipates an even greater fee.

ORIGINAL

Braj Bhāṣā song

श्यामसुन्दर फुर्तीसे श्रीप्रियाके होठोंपर वंशी रखते हैं। वे फूँक भरतीं और बायें हाथसे पकड़ती हैं; दाहिना हाथ उनके कंधेपर रहता है। श्यामसुन्दर तिरछे बैठकर अन्य छिद्रोंको दबाते-उठाते सुर ठीक करते हैं। वाद्य बजते हैं और वे गाते हैं:

प्यारी तेरे नैननि को ब्यौहार।

रूप तुरंग चढ़े मदमाते, मृग मन करत सिकार॥

भौंह कमान रही चढ़ि दिन प्रति, चितवनि बान सुचार।

सहज अरुन क्षिति ऊपर हमारे, सूनी खून खुमार॥

कज्जल रेख जनी अति तीखी, निरखि हरत सत मार।

अलबेली अति प्रान विहंगम, परे प्रेम के जार॥

ENGLISH TRANSLATION

Śyāmasundara places the flute at Priyā's lips. She blows while He fingers the holes and sings:

Beloved, behold the dealings of Your eyes.

Mounted intoxicated upon the steed of beauty, they hunt the deer of my mind.

Your bowlike brows remain drawn, Your glances perfect arrows.

Their natural redness wounds me, drunk on the blood they draw.

The sharp line of collyrium kills at a glance.

My wayward bird of life is caught in love's net.

ORIGINAL

वन रसमय हो उठता है; वृक्षोंसे रस चूने लगता है। संगीत बंद होनेपर भी अन्तिम चरण दिशाओंमें गूँजता है। श्रीप्रिया धीरेसे खड़ी होकर चित्राको कानमें कुछ कहती हैं। चित्रा कहती हैं, “अब मेरी सखी गाना चाहती है, पर वचन दो कि संगीत समाप्त होनेतक स्थिर बैठकर सुनोगे।” श्यामसुन्दर वचन देते हैं। श्रीप्रिया विशाखाके हाथसे वीणा लेकर गाती हैं:

जब रूप के रंग रँगी सजनी, तब चौंकि पलटि सुदावहि को।

झुकि कञ्ज गनोज ते भाति-सी, लपकी चकरीन उठावहि को॥

कब मादक माधुरी पान पी, पकि प्रेमके ओट दुरावहि को।

सुनि गदाधर गुप्तकी आँखनिसों, डरिहैं कछु सुरति बतावहि को॥

श्यामसुन्दर मन्द मुसकराते एकटक देखते हैं। श्रीप्रिया बीच-बीचमें दृष्टि उठातीं, उन्हें देखते पाकर लजाकर आँखें नीची करती हैं। सखियाँ कहती हैं, “बंद मत करना, एक और!”

ENGLISH TRANSLATION

Though the music stops, its final line echoes through the forest. Rādhā takes the vīṇā after Śyāmasundara promises to remain seated and sings of a friend dyed in beauty's hue, startled into turning, drinking intoxicating sweetness, hiding behind love, and fearing that secret eyes may reveal remembrance.

ORIGINAL

second Braj Bhāṣā song

अक्ष कोर अकोर बनाय भट, ससि अञ्जन रो सरमावहि को।

सर बोलन गाढ़ क्यों न पसे, हँसि दै कर जोरि मनावहि को।।

सुर कान ते मोहि पुरी री, द्युति ब्यूरो रन बीथि महा को।

सुनि गदाधर गुप्तकी आँखनिसों, डरिहैं कछु सुरति बतावहि को।।

अन्तिम चरण गाते-गाते श्रीप्रियाका कण्ठ भरता, शरीर पसीनेसे भरता और आँखें बंद होती हैं। वे मूर्छित होकर गिरतीं, पर श्यामसुन्दर सँभालकर अपनी गोदमें सिर रख देते और ललाट सहलाते हैं। सखियाँ भी आत्मज्ञान-शून्य-सी हो गयी हैं।

ENGLISH TRANSLATION

At the sakhīs' request She sings again of wide eyes shaming moon and collyrium, thick speech, folded hands, and the secret gaze that may betray remembrance. Her voice chokes, perspiration covers Her, and She faints. Śyāmasundara catches Her, rests Her head in His lap, and strokes Her brow as the sakhīs lose outer awareness.

ORIGINAL

कुछ देर बाद श्रीप्रिया आँखें खोलकर श्यामसुन्दरकी गोदसे उठतीं, मुसकराकर उनका कान और ठोढ़ी हिलाती हैं, “तुमने वचन भंग किया! संगीतके बीच उठे क्यों?”

वे कहते हैं, “जबतक संगीत था, स्थिर सुनता रहा। तुमने संगीत बिगाड़ा, तेरी वाणी लड़खड़ाने लगी, तो वशमें क्यों रहता?” सब हँसते हैं। दासियाँ पीले पान-पत्तोंके बीड़े सोनेकी परातमें लाती हैं। श्रीप्रिया अपने हाथसे दो बीड़े उन्हें देती हैं। वे उन्हें खिलाना चाहते हैं, पर वे कहती हैं, “मुझे प्यास लगी है।” वे कहते हैं, “मुझे भी थी, पर तुमने पहले पान खिला दिया; तुम्हारे हाथका पान कैसे छोड़ता?”

रूपमञ्जरी सोनेके लम्बे गिलासमें शीतल सुवासित जल देती है। श्यामसुन्दर पान पीकदानमें डालकर कुल्ला करते और आधा जल पीते हैं, फिर गिलास राधारानीके होठोंसे लगाते हैं। वे लजाते पाँच-छः घूँट पीती हैं। चित्रा दोनोंके मुख सुन्दर रूमालसे पोंछती हैं। रानी उन्हें एक बीड़ा और देती हैं; वे जानबूझकर दो बड़े बीड़े एक साथ रानीके मुखमें रखते हैं। दाहिना कपोल उभरता है। वे देखकर मुसकराते हैं, और रानी लजाकर पान पतला कर लेती हैं। फिर श्यामसुन्दर सब सखियोंको एक क्षणमें पान खिला देते हैं।

ENGLISH TRANSLATION

Reviving, Rādhā accuses Him of breaking His promise. He replies that Her faltering voice had already broken the music. Amid laughter They share betel and scented water. He teasingly puts two large leaves into Her mouth at once, making Her cheek bulge, then feeds every sakhī simultaneously.

ORIGINAL

राधारानी उठती हैं। वृन्दाकी दासी यमुनाके प्रवाहसे कमल तोड़कर देती है। वे कहती हैं, “री! एक और तोड़ ला।” श्यामसुन्दर बोलते हैं, “प्रिये! चलो, आज नावपर चढ़कर कमलके फूल तोड़ें।” कई सखियाँ एक साथ कहती हैं, “हाँ, हाँ, चलो।”

विशाखा उत्तरकी ओर चलती हैं। श्यामसुन्दर कहते हैं, “विशाखा रानी! मेरा पारिश्रमिक शेष है। यमुनाके कमल-वनसे पार होनेतक मिल जाना चाहिये। दायित्व तुमपर है।” विशाखा राधाके कानमें कुछ कहती हैं। रानी मुसकराकर कहती हैं, “बहुत ठीक।” विशाखा कहती हैं, “मिल जायेगा, मेरी सखीकी आज्ञा हो गयी है।”

प्रिया-प्रियतम मन्द-मधुर गतिसे उत्तरकी ओर चलते हुए कमल-वन-विहारके लिये यमुना-तटपर खड़े हो जाते हैं।

ENGLISH TRANSLATION

When a maid brings a lotus from the Yamunā, Śyāmasundara proposes gathering more by boat. As all set out northward, He reminds Viśākhā that His fee must be paid before they cross the lotus forest. Viśākhā whispers to Rādhā, receives Her smiling consent, and promises it. The divine pair reach the riverbank for Their lotus-grove excursion.

CHAPTER 16

रासनृत्य लीला

The Rāsa Dance Līlā

Source scan pages 175–193

ORIGINAL

Sanskrit invocation

॥ विजयेतां श्रीप्रियाप्रियतमौ ॥

ENGLISH TRANSLATION

May Śrī Priyā and Her Beloved be ever victorious.

ORIGINAL

श्रीश्यामसुन्दर एवं राधारानी नौका-विहारके पश्चात् नावसे उतरकर पुलिनपर खड़े हैं। चन्द्रमाकी शुभ्र चाँदनीमें पुलिनकी बालुका अतिशय चमचम कर रही है। श्रीयमुनाके जलको स्पर्श करता हुआ शीतल पवन मन्द-मन्द प्रवाहित हो रहा है। पवन श्रीवृन्दावनके पुष्पोंकी सुगन्धिसे सुगन्धित तो था ही, इसपर श्रीप्रिया-प्रियतमके अङ्गोंकी सुगन्धिसे युक्त होकर यह अनन्तगुना सुगन्धित हो गया है।

ENGLISH TRANSLATION

After Their boat excursion, Śrī Śyāmasundara and Rādhārānī step ashore upon the sandy bank. Its sand glitters in the moon's pure white radiance. A cool breeze, having touched the Yamunā, flows gently. Already fragrant with the flowers of Vṛndāvana, it becomes infinitely sweeter after mingling with the fragrance of the Divine Couple's limbs.

ORIGINAL

श्रीश्यामसुन्दरने अपने दुपट्टेको कमरमें कस लिया है, इससे कमरके ऊपरका भाग पूर्णतः खुला हुआ है। हाथमें वंशी है। बड़ी मतवाली चालसे वे उत्तर एवं पश्चिमके कोनेकी ओर चलने लग जाते हैं। श्रीश्यामसुन्दरके बायें हाथमें पीले रंगका रुमाल है, जिसके नीचेकी ओरपर एक गाँठ लगी है। वे कुछ दूर बढ़कर फिर ठहर जाते हैं तथा पीछेकी ओर मुँह करके रुक जाते हैं। इस समय श्यामसुन्दरका मुख पूर्व एवं दक्षिणके कोनेकी ओर है। वे मन्द-मन्द मुस्कुरा रहे हैं।

ENGLISH TRANSLATION

Śyāmasundara fastens His scarf tightly around His waist, leaving His upper body bare. Flute in hand, He walks toward the northwest with an intoxicated gait. A yellow handkerchief hangs from His left hand, knotted at one lower corner. After walking a short way He stops, turns southeast, and smiles softly.

ORIGINAL

श्रीश्यामसुन्दरसे पाँच-छः हाथ हटकर उनके पूर्वी ओर श्रीराधारानी खड़ी हैं। श्रीराधारानीका मुख ठीक उत्तर एवं पश्चिमके कोनेकी ओर है। रानी एक बार तो श्यामसुन्दरके मुखकी ओर देखती हैं, फिर पीछे मुड़कर कुछ दूरपर पूर्वकी ओर खड़ी हुई विशाखाको देखती हैं तथा संकेतसे उसे अपने पास बुलाती हैं। विशाखा पासमें आ जाती हैं। रानी विशाखाके कानमें कुछ कहती हैं। विशाखा वहाँसे दाहिनी ओर कुछ हट जाती हैं तथा नीचे झुककर पुलिनपरसे थोड़ी बालुका उठा लेती हैं। बालुकाको एक रुमालमें रखकर बाँधकर उसमें ठीकसे गाँठ लगा देती हैं। गाँठ लगाकर बायें हाथसे गुणमञ्जरीके दाहिने हाथमें दे देती हैं।

ENGLISH TRANSLATION

Rādhārānī stands five or six cubits east of Him, facing northwest. She first looks upon His face, then turns and summons Viśākhā, who stands some distance eastward. Rādhā whispers in her ear. Viśākhā steps to the right, gathers a little sand from the bank, knots it securely in a handkerchief, and places the bundle in Guṇamañjarī's right hand.

ORIGINAL

श्रीकृष्ण विशाखाकी इस चेष्टाको देख लेते हैं तथा वहाँसे दक्षिणकी ओर चलकर उस स्थानपर पहुँचते हैं, जहाँ यमुनाका प्रवाह पुलिनको काटता हुआ बह रहा है। जलके पास पहुँचकर श्यामसुन्दर घुटनेतक पानीमें प्रवेश कर जाते हैं तथा अपनी पीठ राधारानीकी ओर करके पश्चिमकी ओर मुख करके खड़े हो जाते हैं। फिर वे झुककर पानीमें हाथ डालते हैं और एसी मुद्रा बनाते हैं मानो पानीसे आँख धो रहे हों। इसी बीचमें पानीके भीतरसे थोड़ी गीली बालुका बहुत शीघ्रतासे निकालकर अपने रुमालमें, जो कमरमें आगेकी ओर लटक रहा था, बाँध लेते हैं।

ENGLISH TRANSLATION

Kṛṣṇa notices Viśākhā's action. He walks south to where the Yamunā's current cuts into the bank, wades knee-deep into the water, and stands facing west with His back to Rādhārāṇī. Bending down as though washing His eyes, He swiftly scoops wet sand from beneath the water and knots it in the handkerchief hanging at the front of His waist.

ORIGINAL

राधारानी कुछ तेज गतिसे चलती हुई ठीक उसी समय उनके पीछे आकर खड़ी हो जाती हैं। रानी श्यामसुन्दरके कन्धेको पीछेसे पकड़कर खिलखिलाकर हँसती हुई हिला देती हैं। श्यामसुन्दर पीछे मुड़कर राधारानीकी ओर मुख करके खड़े हो जाते हैं। रानी झुककर अपनी अञ्जलिमें थोड़ा यमुना-जल भर लेती हैं तथा एक श्लोक पढ़ती हुई श्यामसुन्दरके मुखपर धीरेसे कुछ छींटे दे देती हैं। रानीने जो श्लोक पढ़ा है, उसका भावार्थ यह है कि आजके रास-यज्ञकी निर्विघ्न सम्पन्नताके लिये मैं वृन्दावनके देवताका अभिषेक कर रही हूँ।

श्रीश्यामसुन्दर रानीके हाथसे छींटे खाते ही उसी प्रकार थोड़ा जल लेकर रानीके मुखपर छींटे देते हुए यह कहते हैं, “नहीं, वनदेवीका अभिषेक पहले होना चाहिये।”

ENGLISH TRANSLATION

Rādhārāṇī hurries up behind Him, catches His shoulder, and shakes Him with delighted laughter. He turns toward Her. She gathers Yamunā water in Her joined palms, recites a verse, and gently sprinkles His face. The verse means, "For the unobstructed completion of today's sacrifice of the rāsa, I bathe the deity of Vṛndāvana."

Śyāmasundara immediately sprinkles Her face in the same way. "No, the goddess of the forest must be bathed first."

ORIGINAL

राधारानी रूमालसे मुँह पोंछने लग जाती हैं। मुँह पोंछकर फिर दाहिने हाथसे श्रीकृष्णका दाहिना हाथ पकड़ लेती हैं तथा झटका देती हुई पानीसे बाहर निकल आती हैं। अब श्रीश्यामसुन्दर एवं राधारानी, दोनों ठीक पूर्वकी ओर मुख किये हुए खड़े हैं। श्रीश्यामसुन्दर मुरलीको अपनी फेंटमें खोंस लेते हैं तथा कमलके पत्तेकी एक छोटी-सी पुड़िया अपनी कमरसे निकालते हैं। पुड़ियाको खोलकर, उसमें जो हरे रंगकी चूर्णवत् कोई वस्तु है, उसे अपनी अँगुलियोंमें लगा लेते हैं। फिर वे राधारानीको संकेतसे कहते हैं कि चुप रहना, कुछ बोलना नहीं।

ENGLISH TRANSLATION

Rādhārānī wipes Her face, seizes His right hand, and draws Him from the water. Both now stand facing east. Śyāmasundara tucks His flute into His sash, takes a little lotus-leaf packet from His waist, and opens it. He coats His fingers with the green powder inside and signals Rādhārānī to remain silent.

ORIGINAL

इसके बाद वे आगे बढ़ जाते हैं एवं गुणमञ्जरीके पास जाकर खड़े हो जाते हैं। श्यामसुन्दरको अपनी ओर आते देखकर गुणमञ्जरी समझ गयी कि ये बालुकाकी पोटली मुझसे छीनने आ रहे हैं, अतः वह उनके आनेके पहले ही पोटलीको रूपमञ्जरीके हाथमें देकर दोनों हाथोंको कमरपर रखकर खड़ी हो जाती है तथा श्यामसुन्दरके पास आनेपर पूछती है, “क्यों, क्या बात है?”

श्रीश्यामसुन्दर समझ जाते हैं कि इसने पोटली तो कहीं आगे बढ़ा दी है, इसलिये तुरन्त एसी मुद्रा बना लेते हैं मानो वे सचमुच दूसरे कामसे उसके पास आये हों। श्यामसुन्दर कहते हैं, “री! एक काम कर। दौड़कर वहाँसे थोड़ा घिसा हुआ चन्दन ले आ।”

ENGLISH TRANSLATION

He approaches Guṇamañjarī. Realizing that He means to seize the sand bundle, she passes it to Rūpamañjarī before He arrives, plants both hands upon her hips, and asks, "Well, what is it?"

Seeing that the bundle has already been passed on, He pretends to have come on another errand. "Girl, do something for Me. Run and bring a little ground sandalwood from there."

ORIGINAL

वहाँसे लगभग पचास गज उत्तर-पश्चिमकी ओर हटकर विस्तृत रासवेदी सजी हुई है। श्यामसुन्दर अँगुलीसे संकेत करते हुए वहींसे चन्दन लानेके लिये कह रहे हैं। गुणमञ्जरी हँसती हुई चन्दन लानेके लिये चली जाती है। श्यामसुन्दर श्रीप्रियासे प्रेमभरी दृष्टिसे पूछते हैं, “प्रिये! बता दे, बालुकाकी पोटली किसके पास है?”

राधारानी संकेत कर देती हैं, “ठीक पीछे देखो!”

ENGLISH TRANSLATION

The great rāsa platform stands about fifty yards northwest. Pointing toward it, He sends Guṇamañjarī for sandalwood, and she goes laughing. He then gazes lovingly at Priyā. "Beloved, tell Me who has the bundle of sand."

Rādhārānī signals, "Look directly behind You!"

ORIGINAL

श्रीश्यामसुन्दरके कुछ दूर पीछे चित्रा खड़ी हैं। चित्राका मुख पश्चिमकी ओर है। वायुके हिलोरेसे चित्राके सिरका आँचल सरककर कन्धेपर आ गया है। वह किसी ध्यानमें इतनी तल्लीन हैं कि उनको यह पता ही नहीं है कि पीछे क्या हो रहा है। श्रीकृष्ण पीछेसे आकर चित्राकी वेणीको पकड़कर हिलाते हुए पूछते हैं, “चित्रारानी! वह पोटली कहाँ है?”

ENGLISH TRANSLATION

Citrā stands some distance behind Him, facing west. A gust has slipped her veil down to her shoulder, yet she is so absorbed that she notices nothing behind her. Kṛṣṇa comes up, catches and shakes her braid. "Queen Citrā, where is that bundle?"

ORIGINAL

पोटली वास्तवमें चित्राके पास नहीं थी। चित्राके पास ही इन्दुलेखा खड़ी थीं, उन्हींके पास पोटली थी एवं राधारानीने उन्हींके लिये संकेत भी किया था। पर इन्दुलेखाने यह देख लिया कि राधाने मेरी ही ओर संकेत कर दिया है, अतः शीघ्रतासे वे उत्तरकी ओर हट गयी थीं। श्रीकृष्णने चित्राको ही अपने ठीक पीछे पाया था, इसीलिये उसकी वेणीको हिलाकर पूछ रहे थे। वेणी हिलानेपर चित्राको चेत होता है। वे प्रेमभरी आँखोंसे, पर कुछ चिढ़ी हुई-सी मुद्रामें देखती हुई कहती हैं, “कैसी पोटली?”

ENGLISH TRANSLATION

The bundle is not with Citrā but with Indulekhā, who had stood beside her. Rādhārāṇī's signal had indeed indicated Indulekhā, but she saw it and quickly withdrew northward. Finding only Citrā directly behind Him, Kṛṣṇa tugged her braid. Startled from her reverie, she looks at Him with loving yet slightly annoyed eyes. "What bundle?"

ORIGINAL

श्यामसुन्दर समझ जाते हैं कि पोटली इसके पास नहीं है, पर तुरन्त प्रश्न करते हैं, “क्यों, कल मैंने तुम्हें बालुकाकी कुछ पोटलियाँ बनानेके लिये कहा था न?”

श्रीश्यामसुन्दर सचमुच ही कल चित्राको बालुकाकी कुछ पोटलियाँ बनानेके लिये कह चुके थे। इन पोटलियोंसे वह होड़ होनेवाली थी कि नौका-विहारके समय जलमें कौन कितनी दूर पोटलीको फेंक सकती है। अतः चित्रा मुस्कुराकर कहती हैं, “हाँ! बन चुकी हैं। वहाँ वेदीके पास हैं।”

ENGLISH TRANSLATION

Kṛṣṇa realizes that she does not have it, but asks at once, "Did I not ask you yesterday to make several bundles of sand?"

He truly had asked her. They were intended for a contest during the boat excursion to see who could throw one farthest across the water. Citrā smiles. "Yes, they are ready. They are beside the platform."

ORIGINAL

श्रीश्यामसुन्दर अब रासवेदीकी ओर बढ़ने लग जाते हैं। श्रीराधारानी उनके पीछे-पीछे चल रही हैं। श्यामसुन्दर रह-रहकर श्रीप्रियाकी ओर देखने लगते हैं, फिर ठहर जाते हैं तथा श्रीप्रियाके दाहिने कन्धेपर हाथ रखकर चलने लगते हैं। सखियाँ एवं मञ्जरियाँ भी उनके इधर-उधर एवं कुछ मञ्जरियाँ-सखियाँ पीछे-पीछे चल रही हैं। चलते-चलते श्यामसुन्दर रासवेदीके पास पहुँच जाते हैं।

ENGLISH TRANSLATION

Śyāmasundara sets out toward the rāsa platform with Rādhārānī following. Again and again He looks back at Priyā, then stops, places His hand upon Her right shoulder, and walks beside Her. Sakhīs and mañjarīs move around and behind Them until They reach the platform.

ORIGINAL

श्यामसुन्दर वेदीके ऊपर दाहिना पैर एवं नीचे बायाँ पैर रखे रहकर राधारानीसे संकेतमें कुछ पूछते हैं। रानी विशाखाकी ओर अँगुलीसे संकेत कर देती हैं। श्यामसुन्दर विशाखासे कहते हैं, “विशाखे! आज तुम्हें दाहिनी ओर रहना होगा।”

श्रीविशाखा अत्यन्त प्यारभरी तिरछी चितवनसे श्यामसुन्दरकी ओर देखती हैं तथा अपने सुन्दर नयनोंको कोनोंमें घुमाती हुई मुस्कराकर कहती हैं, “अच्छी बात है!”

ENGLISH TRANSLATION

With His right foot upon the platform and His left below, He silently asks Rādhārānī a question. She points to Viśākhā. "Viśākhā, today you must remain on My right."

Viśākhā casts Him a loving sidelong glance, rolls her beautiful eyes toward their corners, and smiles. "Very well!"

ORIGINAL

श्यामसुन्दर श्रीप्रियाके कन्धेपर हाथ रखे हुए श्रीप्रियाको खींचते हुएसे वेदीपर चढ़ आते हैं। सब सखियाँ एवं मञ्जरियाँ भी चढ़ जाती हैं। आज वेदीकी सजावट तो निराली ही है। चारों ओरसे चन्दनकी एक हाथ चौड़ी पाटीको जोड़-जोड़कर गोलाकार विस्तृत वेदी बनायी गयी है। वेदीका व्यास लगभग एक सौ गज है। बीचके भागमें बालुका भरकर उस गोलाकार स्थलको चन्दनकी पाटी जितना ऊँचा बना दिया गया है। फिर उसपर पीले रंगकी अत्यन्त सुन्दर कालीन बिछा दी गयी है।

ENGLISH TRANSLATION

Śyāmasundara draws Priyā up by the shoulder, and all the sakhīs and mañjarīs ascend behind Them. The platform's decoration is extraordinary. A circular sandalwood border one cubit wide encloses a space nearly one hundred yards across. Sand fills the center to the height of the border, and a lovely yellow carpet covers it.

ORIGINAL

वेदीके चारों ओर किनारे-किनारे दो-दो हाथके अन्तरपर सोनेके गमले रखे हुए हैं, जिनमें दो-दो हाथ ऊँचे हरी लतासे लिपटे हुए पुष्पोंके हरे-हरे वृक्ष हैं। उनमें कुन्दकी तरह पीले रंगके पुष्प खिले हुए हैं। किसी-किसी वृक्षमें तो इतने अधिक पुष्प खिले हुए हैं कि एसा प्रतीत हो रहा है मानो पुष्पमय पौधा हो। उन पुष्पोंसे विलक्षण जातिकी सुगन्धि निकल-निकलकर समस्त पुलिनको अतिशय सुवासित कर रही है। गमलोंकी एक कतारके बाद दो हाथ स्थान छोड़कर फिर एक और कतार सोनेके गमलोंकी है, जिनमें एक-एक हाथ ऊँचे बहुत ही सघन एवं महीन पत्तियोंके कोई वृक्ष-विशेष लगे हुए हैं। उनमें भी गुलाबके छोटे-छोटे पुष्प खिले हुए हैं तथा उन वृक्षोंकी पत्तियों एवं पुष्पोंसे भी अतिशय मधुर-मधुर सुगन्धि निकल रही है।

ENGLISH TRANSLATION

Golden pots stand at two-cubit intervals around its edge. In each grows a two-cubit flowering tree wrapped in green vines and covered with yellow blossoms resembling kunda. Some bear so many flowers that they appear made entirely of bloom, and their unusual fragrance perfumes the whole bank. Beyond the first row, separated by two cubits, is another row of golden pots holding dense, fine-leaved shrubs one cubit high. Tiny rose-like blossoms cover them, and both leaves and flowers release an exquisitely sweet scent.

ORIGINAL

वेदीके किनारे-किनारे तीन-तीन हाथके अन्तरपर खम्भे हैं। ये खम्भे वेदीसे सटे हुए हैं तथा लगभग सोलह-सोलह हाथ ऊँचे हैं। खम्भे चन्दनके बने हुए हैं, पर उनमें चारों ओरसे खिले हुए उजले कमलके पुष्पोंको इस प्रकार पिरो दिया गया है मानो कमलके पुष्पोंका ही खम्भा बना हुआ है। उन खम्भोंको भी ऊपरसे एक-दूसरेसे चन्दनकी पतली छड़ियोंसे जोड़ दिया गया है तथा उनमें भी उजले कमल इसी प्रकार पिरोये हुए हैं।

ENGLISH TRANSLATION

Sixteen-cubit sandalwood pillars stand every three cubits along the edge, so thickly threaded with open white lotuses that each seems itself a pillar of lotus flowers. Slender sandalwood rods connect their tops and are likewise woven with white lotuses.

ORIGINAL

उन छड़ियोंके सहारे प्रत्येक तीन हाथके अन्तरपर एक-एक गमला लटक रहा है। वह भी कमलके पुष्पोंसे एसा पिरो दिया गया है कि उसके चारों ओर केवल खिले हुए कमल ही दीख पड़ रहे हैं, मानो कमलका ही गमला हो। उन गमलोंमें भी छोटे-छोटे पुष्पोंके पौधे लगे हुए हैं तथा उनमें भी पुष्प खिले हुए हैं। एक खम्भेसे दूसरे खम्भेको ऊपर-ही-ऊपर जोड़ते हुए कमलके पुष्पोंका ही अत्यन्त सुन्दर मेहराब है। उन मेहराबोंमें एवं खम्भोंमें स्थान-स्थानपर अत्यन्त विलक्षण मणियाँ पिरोयी हुई हैं, जिनके भिन्न-भिन्न प्रकारके प्रकाशसे वेदीकी चमक आज अत्यन्त विलक्षण बन गयी है।

ENGLISH TRANSLATION

At each three-cubit interval, a hanging pot is so completely woven with lotus blossoms that it appears to be made of lotuses. Small flowering plants grow within. Beautiful lotus arches span the pillars overhead, and extraordinary jewels threaded through pillars and arches fill the platform with many-colored light.

ORIGINAL

वेदीसे नीचे उतरकर पुलिनकी बालुकापर छः-छः हाथके अन्तरपर कुछ बड़े आकारके गमलोंमें लगभग पाँच हाथ ऊँचे-ऊँचे रजनीगन्धा पुष्पके वृक्ष लगे हुए हैं। उनमें पुष्पोंके गुच्छे लटक रहे हैं। वेदीसे लगभग चालीस हाथ दक्षिणकी ओर एवं बीस हाथ उत्तरकी ओर, दोनों ओरसे श्रीयमुनाकी धारा प्रवाहित हो रही है। इन दोनों धाराओंके पास जानेके लिये वेदीसे सटाकर तीन हाथ चौड़ा पथ बनाया गया है। पथ भी वेदीके समान ही सुन्दर बना हुआ है। पथके दोनों किनारोंके गमलोंमें उसी प्रकार रजनीगन्धाके वृक्ष लगे हुए हैं।

ENGLISH TRANSLATION

Beyond the platform, large pots stand six cubits apart upon the sand, each holding a five-cubit tuberose tree hung with clusters of bloom. Streams of the Yamunā flow forty cubits south and twenty cubits north. Beautiful three-cubit paths lead from the platform to both streams, lined with pots of the same tuberose trees.

ORIGINAL

वेदीके पश्चिमी किनारेपर ठीक बीचमें स्थलसे आठ हाथ ऊँचाईपर पुष्पोंका एक सिंहासन बना हुआ है। सिंहासनके पास जानेकी जो सीढ़ियाँ बनी हैं, उन सीढ़ियोंसहित सिंहासनको चारों ओरसे उजले कमलोंसे पिरो दिया गया है। उनके चारों ओरके एक-एक हाथ स्थानको कमलके पत्तोंसे एवं और भी कई प्रकारकी हरी-हरी पत्तियोंसे सजा दिया गया है। उस आसन एवं सीढ़ियोंके चारों ओर नीले रंगके रेशमी वस्त्र लटका दिये गये हैं। उनपर मणियोंकी एवं चन्द्रमाकी शुभ्र किरणोंके पड़नेसे ऐसा प्रतीत हो रहा है कि यमुनाके प्रवाहमें कमलका वन हो और उसपर स्वाभाविक ही अत्यन्त सुन्दर ढंगसे कमलका एक सिंहासन बन गया हो। यमुना-पुलिनपर बहते हुए शीतल-मन्द-सुगन्ध वायुका झोंका रह-रहकर उन लटके हुए रेशमी वस्त्रोंको किञ्चित् हिला देता है। उस समय ऐसा प्रतीत होता है मानो सचमुच यमुनाका जल वायुके कारण हिल रहा हो।

ENGLISH TRANSLATION

At the middle of the western edge rises a flower throne eight cubits above the ground. White lotuses cover throne and steps, while lotus leaves and other green foliage adorn the surrounding cubit-wide border. Blue silk hangs around the seat and steps. Gemlight and white moonbeams upon the silk create the illusion of a lotus grove in the Yamunā's current, with a natural lotus throne rising from it. Each cool fragrant gust stirs the silk like moving water.

ORIGINAL

वेदीका बीचका स्थान रास-नृत्यके लिये खाली है। श्रीश्यामसुन्दर श्रीप्रियाके साथ पूर्वकी ओरसे चढ़कर सिंहासनकी ओर बढ़ने लग जाते हैं। श्रीवृन्दा तुरन्त ही आगे बढ़ जाती हैं तथा श्यामसुन्दरके पहुँचनेके पहले ही वेदीके पास पहुँच जाती हैं। श्रीश्यामसुन्दरके आनेपर वृन्दा राधारानीका हाथ पकड़ लेती हैं तथा विशाखा श्यामसुन्दरके दाहिने हाथकी कलाई पकड़ लेती हैं एवं उनकी दाहिनी ओर खड़ी हो जाती हैं। रानी श्यामसुन्दरकी बायीं ओर हैं। उनका दाहिना हाथ श्यामसुन्दरके बायें कन्धेपर है।

ENGLISH TRANSLATION

The platform's center is left open for the rāsa dance. The Divine Couple enters from the east and approaches the throne. Vṛndā hurries ahead, takes Rādhārānī's hand, while Viśākhā catches Śyāmasundara's right wrist and stands at His right. Rādhā remains at His left with Her right hand upon His left shoulder.

ORIGINAL

वृन्दा प्रिया-प्रियतमको साथ लेकर सिंहासनपर चढ़ना चाहती हैं कि इसी समय श्यामसुन्दर कुछ संकेत करते हैं। वृन्दा रुक जाती हैं तथा ललिताको पुकारती हैं। ललिता रानीसे कुछ दूरपर खड़ी रहकर कुछ मञ्जरियोंको यह बता रही थीं कि कौन किस वाद्य-यन्त्रको आज बजायेगी और कौन कहाँपर खड़ी होगी। उन्हें पुकारकर वृन्दादेवी कहती हैं, “ललितारानी! श्यामसुन्दर तुम्हें बुला रहे हैं।”

ललिता धीरे-धीरे चलती हुई श्यामसुन्दरके पास आ जाती हैं तथा मुस्कुराती हुई कहती हैं, “क्यों, बोलो!”

श्यामसुन्दर कहते हैं, “अपना रूमाल दे।”

ललिता कुछ कपट-क्रोध करके कहती हैं, “अभीसे छेड़खानी आरम्भ कर दी? राधाका रूमाल ले लो, मैं नहीं देती।”

ENGLISH TRANSLATION

As Vṛndā prepares to lead Them up, Śyāmasundara signals for Lalitā. She has been assigning instruments and positions to the mañjarīs. Vṛndā calls, "Queen Lalitā, Śyāmasundara wants you."

Lalitā strolls over smiling. "Well, what is it?"

"Give Me your handkerchief."

Feigning anger, she replies, "Has Your teasing begun already? Take Rādhā's. I shall not give You mine."

ORIGINAL

श्यामसुन्दर मुस्कुराते हुए अपनी कलाई विशाखाके हाथसे छुड़ाकर बड़ी फुर्तीसे ललिताकी कमरमें लटकते हुए रूमालको छीन लेते हैं तथा उसमें पोंछ देते हैं वह हरे रंगकी चूर्णवत् कोई वस्तु, जो उन्होंने अपनी अँगुलियोंमें कुछ देर पहले लगायी थी। फिर विशाखाकी कलाई पकड़कर वृन्दा एवं श्रीप्रियाके साथ श्यामसुन्दर सीढ़ियोंपर चढ़ते हुए ऊपर सिंहासनपर जा पहुँचते हैं। वहाँ श्रीप्रिया-प्रियतम पूर्वकी ओर मुख करके बैठ जाते हैं।

ENGLISH TRANSLATION

Smiling, He frees His wrist from Viśākhā, snatches the handkerchief hanging from Lalitā's waist, and wipes away the green powder He had applied to His fingers. He then catches Viśākhā's wrist and ascends the steps with Vṛndā and Priyā. The Divine Couple sits upon the throne facing east.

ORIGINAL

विशाखा कलाई छुड़ाकर रानीके पास जाकर कानमें बहुत धीरेसे कुछ कहती हैं; पर श्यामसुन्दर उसे सुन लेते हैं और कहते हैं, “नहीं, आज तो विशाखारानी ही हमारे दाहिनी ओर रहेंगी। अब मैं किसीका कोई प्रस्ताव नहीं सुनूँगा।”

ENGLISH TRANSLATION

Viśākhā slips free and whispers something into the Queen's ear, but He hears. "No. Today Queen Viśākhā shall remain on Our right. I shall entertain no proposal from anyone now."

ORIGINAL

वेदीके पश्चिमी ओर रेशमी वस्त्रसे निर्मित अत्यन्त सुसज्जित एक कुञ्ज है। अब वृन्दादेवीकी दासियाँ उस कुञ्जके अन्दरसे सेवाके विभिन्न प्रकारके सामान लाकर सीढ़ियोंके नीचे रख देती हैं। शीतल जलकी झारियाँ, पानीसे भरी परात, कुल्ला करनेके लिये सुन्दर आकारवाले सोनेके गमले, गुलाबपाश, पिचकारी, छोटी-छोटी सन्गमरमरकी प्यालियोंमें खस, गुलाब, मेंहदी, मोतिया आदिके अत्यन्त सुगन्धित इत्र और फिर इन प्यालियोंसे भरी परात, इस प्रकार सेवाके विभिन्न सामानोंसे सिंहासनके नीचेका कुछ दूरतकका स्थल भर जाता है। विचित्र-विचित्र वाद्य-यन्त्रोंको ला-लाकर वृन्दाकी दासियोंने सिंहासनके पास सजा-सजाकर रख दिया है।

ENGLISH TRANSLATION

West of the platform stands a richly appointed silk pavilion. Vṛndā's maidservants bring out implements of service and arrange them below the steps: sprinklers of cool water, a basin of water, beautiful golden vessels for rinsing, rose-water sprinklers, syringes, small marble cups filled with fragrant essences of vetiver, rose, henna, and jasmine, and a basin holding those cups. They also arrange many unusual musical instruments beside the throne.

ORIGINAL

ललिता, विशाखा, वृन्दा एवं अन्यान्य मञ्जरियाँ मिलकर सेवा प्रारम्भ करती हैं। श्रीप्रिया-प्रियतम पहले शीतल जलका पान करते हैं, फिर पानका बीड़ा मुखमें लेते हैं। कोई सखी सीढ़ियोंपर बैठी हुई है, कोई खड़ी है तथा प्रिया-प्रियतमके मुखारविन्दकी शोभा निहार रही है। यद्यपि देखनेमें सीढ़ी बहुत बड़ी नहीं है, पर आश्चर्यकी बात वह है कि सभी सखियाँ-मञ्जरियाँ एवं वृन्दाकी बहुत-सी दासियाँ यह अनुभव कर रही हैं कि मैं सीढ़ीके पास या सीढ़ीपर खड़ी या बैठी हूँ।

ENGLISH TRANSLATION

Lalitā, Viśākhā, Vṛndā, and the mañjarīs begin their service. The Divine Couple first drinks cool water and then accepts betel. Some sakhīs sit on the steps, others stand and gaze upon Their lotus faces. Though the staircase does not appear very large, every sakhī, mañjarī, and maidservant experiences herself as sitting or standing upon or beside it.

ORIGINAL

स्वयं जल पीकर एवं पान खाकर श्यामसुन्दर उठते हैं तथा एक साथ ही सब सखियोंको अपने हाथोंसे सुमधुर जल पिलाते हैं तथा मुँहमें पान खिलाते हैं। इसके पश्चात् श्यामसुन्दर रानीको कुछ संकेत करते हैं। रानी अत्यन्त प्यारभरे स्वरमें कहती हैं, “वृन्दे! मेरे प्यारे श्यामसुन्दर आज अपने हाथोंसे तुम्हारी दासियोंको पान खिलाना चाहते हैं। अतः सब दासियोंसे मेरी ओरसे अनुरोध कर दो कि मेरी प्रार्थना मानकर सभी श्यामसुन्दरके हाथसे पान खा लें। कोई तनिक भी संकोच नहीं करे।”

ENGLISH TRANSLATION

After drinking and taking betel, Śyāmasundara rises and, all at once, personally offers sweet water and betel to every sakhī. Then He signals the Queen. In a loving voice She says, "Vṛndā, My beloved Śyāmasundara wishes to feed betel to your maidservants with His own hands. Request them on My behalf to accept His gift without the least hesitation."

ORIGINAL

रानीकी बात सुनकर वृन्दा मुस्कुरा देती हैं तथा कहती हैं, “अच्छी बात है!”

वृन्दादेवी फिर दासियोंके प्रति कहती हैं, “बहिनो! रानीकी आज्ञा है, इसलिये संकोच छोड़कर हमलोगोंको श्यामसुन्दरके हाथसे पान खा ही लेना है।”

वृन्दाके एसा कहते ही श्यामसुन्दर एक साथ ही वृन्दाकी दासियोंको तथा मञ्जरियोंको पान खिलाकर अपनी प्रेमभरी दृष्टिसे तथा अपने मधुर कर-स्पर्शसे सभीको आनन्द एवं प्रेममें विभोर बना डालते हैं।

ENGLISH TRANSLATION

Vṛndā smiles. "Very well." Then she tells the maidservants, "Sisters, this is the Queen's command. Put aside your hesitation and accept betel from Śyāmasundara's hand."

At once He feeds betel simultaneously to all the mañjarīs and Vṛndā's servants. His loving gaze and sweet touch overwhelm each one with love and bliss.

ORIGINAL

वेदीके मेहराबोंपर, खम्भों एवं पुष्प-वृक्षोंकी टहनियोंपर बैठकर भिन्न-भिन्न जातिके सुन्दर पक्षी कलरव कर रहे हैं। पुष्पोंपर गुन-गुन करते हुए भौंरे मँडरा रहे हैं। पुलिनकी बालुकापर मयूरी एवं मयूरोंका वृन्द आनन्दमें डूबा हुआ विचरण कर रहा है। श्रीयमुनाकी धारापर जलजातीय पक्षियों एवं हंसोंका समूह तैरता हुआ अपनी मधुर बोलीसे वन एवं पुलिनको निनादित कर रहा है।

ENGLISH TRANSLATION

Beautiful birds of many species call from the arches, pillars, and flowering branches. Bees hum above the blossoms. Peacocks and peahens wander joyfully upon the sand, while waterbirds and swans swim upon the Yamunā, filling forest and bank with their sweet voices.

ORIGINAL

इन सबकी ओरसे प्रतिनिधिके रूपमें वृन्दा कहती हैं, “प्यारे श्यामसुन्दर! अपने वनके समस्त चर-अचर प्राणियोंकी ओरसे मैं प्रार्थना कर रही हूँ कि अपनी प्रिया एवं सखियोंके साथ रास करके हमलोगोंके नयनोंको शीतल करो। प्यारे! असंख्य वर्षोंसे मैं तुम्हारा रास देख रही हूँ। प्रत्येक रात्रिको ही तुम रास रचाकर हमारे नयनोंको शीतल करते हो; पर प्यारे श्यामसुन्दर! तुम्हारा यह रास नित्य नूतन हो रहा है। मेरी प्रिय सहेलियोंने अत्यन्त उत्साहके साथ वेदी सजायी है। इस वेदीको अपने चरण-स्पर्शका दान करके मेरी सखियों एवं दासियोंकी सेवा स्वीकार कर लो।”

ENGLISH TRANSLATION

As representative of them all, Vṛndā speaks. "Beloved Śyāmasundara, on behalf of every moving and unmoving being in Your forest, I pray that You perform the rāsa with Your Priyā and the sakhīs and cool our eyes. For numberless years I have watched Your rāsa. Each night You delight our eyes, yet Your dance is ever new. My dear companions have adorned this platform with immense enthusiasm. Grant it the touch of Your feet and accept the service of my sakhīs and maidservants."

ORIGINAL

श्रीश्यामसुन्दर अत्यन्त प्यारभरी दृष्टिसे वृन्दा एवं वृन्दाकी दासियोंको देखते हैं। उनकी दृष्टि पड़ते ही सब प्रेम एवं आनन्दमें बेसुध होने लगती हैं। श्रीश्यामसुन्दर सिंहासनकी सबसे नीचेवाली सीढ़ीपर खड़े हैं। श्रीप्रिया निर्निमेष नयनोंसे श्यामसुन्दरके सुन्दर मुखारविन्दकी शोभा निहार रही हैं।

ENGLISH TRANSLATION

Śyāmasundara gazes lovingly upon Vṛndā and her servants. His glance leaves them insensible with love and bliss. He stands upon the lowest step of the throne while Priyā beholds His beautiful lotus face without blinking.

ORIGINAL

श्रीश्यामसुन्दर श्रीप्रियासे रास-मण्डलमें पधारनेके लिये अनुरोध करते हैं। श्रीप्रिया मुस्कुराती हुई सिंहासनसे नीचे उतर पड़ती हैं तथा श्यामसुन्दरका कन्धा पकड़कर खड़ी हो जाती हैं। उन्हें साथ लेकर अत्यन्त मदभरी चालसे चलते हुए श्यामसुन्दर वेदीके बीचमें आकर खड़े हो जाते हैं।

ENGLISH TRANSLATION

Śyāmasundara invites Priyā into the rāsa circle. Smiling, She descends, catches His shoulder, and stands beside Him. With an intoxicated gait He leads Her to the center of the platform.

ORIGINAL

श्रीप्रिया बायीं ओर खड़ी होती हैं, विशाखा दाहिनी ओर तथा ललिता श्रीराधाकी बायीं ओर खड़ी होती हैं; चित्रा विशाखाकी दाहिनी ओर। इस प्रकार श्यामसुन्दरको लेकर पाँच तो बीचमें दक्षिणकी ओर मुख करके खड़े हो जाते हैं तथा शेष सखियों एवं मञ्जरियोंकी मण्डली इन पाँचोंको घेरकर गोलाकार खड़ी हो जाती है। उनके इस प्रकार खड़ी हो जानेपर अर्धचन्द्राकारमें मञ्जरियोंका एक-एक दल चारों दिशाओंके ठीक बीच-बीचमें सुन्दर-सुन्दर वाद्य-यन्त्रोंको लेकर खड़ा हो जाता है। वेदीका शेष अंश वृन्दाकी दासियोंसे ठसाठस भर जाता है।

ENGLISH TRANSLATION

Priyā stands to His left, Viśākhā to His right, Lalitā to Rādhā's left, and Citrā to Viśākhā's right. These five face south in the center. All other sakhīs and mañjarīs form a circle around them. At the midpoint of each direction, a crescent-shaped company of mañjarīs stands with beautiful instruments. Vṛndā's maidservants densely fill the rest of the platform.

ORIGINAL

सभी सखियों, दासियों एवं मञ्जरियोंके बदनपर चम्पई रंगकी साड़ियाँ अत्यन्त सुन्दर लग रही हैं। सबके शीशपर एक-से-एक बढ़कर सुन्दर-सुन्दर चन्द्रिका शोभा पा रही हैं तथा उनपरकी मणियोंके लाल, नीले, पीले, उजले, हरे, नारंगी एवं बैंगनी रंगके प्रकाशसे एवं चन्द्रमाकी अत्यन्त शुभ्र चाँदनीसे, इन सबसे वहाँकी चमक-दमक एवं शोभा सर्वथा अवर्णनीय हो गयी है। श्रीप्रिया, श्रीश्यामसुन्दर, सखियों, मञ्जरियों और दासियोंके अङ्गोंसे ज्योति एवं सुगन्धिके फैलनेसे समस्त पुलिन ही प्रकाश तथा सुवाससे कुछ इतना अधिक परिपूरित हो उठा है कि उसका वर्णन सर्वथा असम्भव है।

ENGLISH TRANSLATION

Champak-colored saris beautifully clothe every sakhī, maidservant, and mañjarī. Their jeweled crescent ornaments cast red, blue, yellow, white, green, orange, and violet rays into the pure moonlight. Light and fragrance stream from the limbs of Priyā, Śyāmasundara, and all Their companions until the whole bank is filled with indescribable brilliance and perfume.

ORIGINAL

श्रीश्यामसुन्दरके दाहिने हाथमें मुरली है। बायें हाथसे वे श्रीप्रियाके दाहिने कन्धेको पकड़े हुए हैं। सर्वत्र आनन्द एवं अनुरागकी धारा बह रही है। इसी समय सबसे प्रथम श्रीश्यामसुन्दर मुरलीमें सुर भरते हैं। उनके सुर भरते ही वाद्य-यन्त्र बजानेवाली मञ्जरियोंके चारों दल भी एक साथ ही श्यामसुन्दरके सुरमें सुर मिलाकर वाद्य बजाना प्रारम्भ करते हैं। मुरली एवं वाद्य-यन्त्रोंकी मधुरिमासे पुलिन रसमय बन जाता है। श्यामसुन्दर सुर भरकर रुक जाते हैं। उनके रुकते ही सब वाद्य-यन्त्र भी तत्क्षण रुक जाते हैं। वे दो-तीन क्षणके लिये रुकते हैं।

ENGLISH TRANSLATION

The flute rests in Śyāmasundara's right hand, while His left holds Priyā's right shoulder. Bliss and affection flow everywhere. He sounds the first phrase. All four companies of musicians join His pitch, and flute and instruments fill the bank with rasa. When He pauses, every instrument falls silent for two or three moments.

ORIGINAL

उस रुकनेके क्षणमें सखियाँ, मञ्जरियाँ एवं दासियाँ, सभी मिलकर एक साथ ही अपने एक पैरको ऐसी चतुराई एवं विलक्षण रीतिसे किञ्चित् हिला देती हैं, जिससे घुँघरू एक साथ एक स्वरमें बज उठते हैं तथा उनका अनिर्वचनीय मधुरिम स्वर समस्त पुलिनपर बिखर जाता है। यह ध्वनि सर्वत्र गूँजने लग जाती है। ऐसा प्रतीत होता है मानो यमुनाके प्रवाहके अन्तरालमें, बालुका-कणोंके हृदयमें, पुष्प-वृक्षोंके अन्तरतममें, सर्वत्र घुँघरू बज रहे हों। घुँघरूकी ध्वनि बन्द होते ही दूसरे क्षण फिर वही मुरलीका मधुरतम स्वर और वाद्य-यन्त्रोंका सुन्दरतम स्वर गूँजने लगता है। इस प्रकार घुँघरू एवं मुरली तथा वाद्य-यन्त्रोंकी ध्वनि क्रमशः गूँजती है। प्रत्येक बार स्वरका तार पहलेकी अपेक्षा दीर्घ होता जा रहा है, अर्थात् उत्तरोत्तर अधिक समयके लिये स्वरकी गति चालू रखी जाती है।

ENGLISH TRANSLATION

In each pause every sakhī, mañjarī, and maidservant moves one foot with marvelous precision, and all their anklets strike a single note. The unutterably sweet resonance spreads across the bank as though anklets sounded within the Yamunā's current, the heart of every grain of sand, and the innermost life of every flowering tree. As soon as they cease, flute and instruments begin again. These sounds alternate, each instrumental phrase sustained longer than the one before.

ORIGINAL

श्रीप्रिया अपने बायें हाथको अब ऊँचा उठा लेती हैं तथा स्वरका निर्देश करती हुई उसे अत्यन्त सुन्दर रीतिसे धीरे-धीरे ऊपर-नीचे एवं बायें-दाहिने घुमा रही हैं। श्रीश्यामसुन्दर अब अपना बायाँ हाथ श्रीप्रियाकी दाहिनी बाँहके भीतर ले जाकर श्रीप्रियाके दाहिने हाथकी अँगुलियोंको अपने बायें हाथकी अँगुलियोंसे पकड़ लेते हैं। श्रीप्रियाके बायें हाथका अँगुली-संचालन ही सबको स्वरकी सूचना देता जा रहा है। ऐसा प्रतीत हो रहा है मानो उन अँगुलियोंसे कोई छिपी हुई शक्ति निकलकर श्यामसुन्दरकी मुरली एवं अन्यान्य वाद्य-यन्त्रोंको श्रीप्रियाकी इच्छानुसार नचा रही हो। श्यामसुन्दरके मुखारविन्दपर मन्द-मन्द मुस्कान है। सखियों एवं दासियोंकी आँखें प्रेममें झूम रही हैं। श्रीप्रिया अपनी सुन्दर आँखोंकी पुतलियोंको कोनोंमें इस प्रकार नचा रही हैं कि देखते-देखते दर्शक-मण्डली बेसुध-सी होती जा रही है।

ENGLISH TRANSLATION

Priyā raises Her left hand and gracefully moves it up, down, left, and right to direct the music. Śyāmasundara passes His left arm inside Her right arm and interlaces His fingers with Hers. The movement of Her free fingers communicates every musical cue, as though a hidden power issuing from them made His flute and all the instruments dance according to Her will. He smiles softly. The eyes of sakhīs and servants sway in love, while Priyā's darting pupils gradually rob the spectators of awareness.

ORIGINAL

Braj Bhāṣā song, Rāga Kāphī

राग काफी

बन्यो मोर मुकुट नटवर रूप श्याम सुन्दर कमल नैन।
बाँको भौंह ललित भाज घुँघरवारो अलकैं॥
चौत बसन मोती माल लिये पदिक कंठ लाल।
हँसनि लोकनि गावनि मधुर अधर कुंडल झलकैं॥
कर पद भूषन अद्भुत कोटि मदन मोहन रूप।
अद्भुत वदन चंद देख गोपी भूली पलकैं॥
कहें भगवान् हित रस राय प्रभु ठाढ़े रास मंडल मधि।
राधा सौं बाँह जोरी किये हिये प्रेम लटकैं॥

ENGLISH TRANSLATION

Rāga Kāphī

His peacock crown is set; dark and lovely, lotus-eyed, He bears the form of the supreme dancer.
Curving brows, graceful arms, and curling locks enhance His beauty.
Bright garments and a pearl necklace adorn Him, with a red jewel at His throat.
His smile, glance, song, sweet lips, and flashing earrings enchant all.

His hands and feet are wondrously adorned; His form enchants millions of Cupids.
Seeing the wondrous moon of His face, the gopīs forget to blink.
Bhagavān Hita Rasarāya says: the Lord stands in the center of the rāsa circle,
His arm joined with Rādhā's, while love swings within Their hearts.

ORIGINAL

गीत समाप्त होनेपर दो-तीन क्षण सर्वत्र नीरवता छा जाती है। पर तुरन्त ही श्रीप्रिया अपने घुँघरुओंको बजा देती हैं। उनके एसा करते ही घुँघरू एवं वाद्य-यन्त्र एक साथ बज उठते हैं। इस बार विश्वमोहन नृत्य प्रारम्भ होता है। स्वरके साथ वह मण्डल, जो श्रीप्रिया-प्रियतम एवं ललिता-विशाखा-चित्राको घेरकर गोलाकार खड़ी थी, अपने पैरोंको उठाती-गिराती हुई घूमने लगती है तथा श्रीप्रिया-प्रियतम एवं ललिता-विशाखा-चित्रा अपने स्थानपर ही उसी प्रकार अपने पैरोंको नचाती हुई घूमने लगती हैं। नृत्य-मण्डलीकी गति पूर्वसे पश्चिमकी ओर है।

ENGLISH TRANSLATION

After the song, silence reigns for several moments. Priyā strikes Her anklets, and all anklets and instruments sound together. The world-enchanting dance begins. The outer circle rises and lowers its feet while turning from east toward west. Priyā, Her Beloved, Lalitā, Viśākhā, and Citrā turn in place with the same steps.

ORIGINAL

इसी समय श्यामसुन्दर, जितनी सखियाँ हैं, उतने रूपोंमें प्रकट होकर प्रत्येकके बीचमें खड़े हो जाते हैं तथा सबका हाथ पकड़कर नृत्य करते हैं। अब सखी-श्यामसुन्दर, सखी-श्यामसुन्दर, सखी-श्यामसुन्दर, सखी-श्यामसुन्दरकी जोड़ी हाथोंसे हाथ मिलाये हुए नृत्य कर रही है। श्रीप्रिया एवं सखियाँ एक साथ ही स्वरके क्षणिक लय एवं सामयिक परिवर्तनके अवसरपर "तत-थेई थेई, तत-थेई थेई" आदि शब्दोंको इतने मधुरतम स्वरमें उच्चारण करती हैं कि वेदीकी समस्त दर्शक-मण्डली आनन्दमें विभोर होकर भावके वेगको सम्भाल नहीं पाती और तद्भावाविष्ट होकर "थेई थेई" उच्च स्वरसे बोल उठती है। अब नृत्यकी गति तीव्र हो जाती है।

ENGLISH TRANSLATION

Śyāmasundara manifests as many forms as there are sakhīs and stands between each pair, joining hands and dancing. The circle now alternates sakhī and Śyāmasundara. At each rhythmic change Priyā and the sakhīs sing "tat-theī theī, tat-theī theī" so sweetly that the spectators, overcome with ecstasy, cry "theī theī" aloud. The dance quickens.

ORIGINAL

Braj Bhāṣā song

देखो देखो री नागर नट निरतत कालिंदी तट।
गोपिनके मध्य राजे मुकुट लटक (री)॥
काछिनी किंकिनि कटि पीतांबरकी चटक।
कुंडल किरन रवि रथकी अटक (री)॥
तत थेई तत थेई सबद सकल घट।
उरप तिरप गति पगकी पटक (री)॥
रासमें श्रीराधे राधे मुरलीमें एक रट।
नंददास गावे ठहाँ निकट निकट (री)॥

ENGLISH TRANSLATION

Look, look, girls! The urbane Dancer dances upon Kālindī's bank.
He shines among the gopīs, His crown swaying.
His waist bells ring, His yellow garment flashes,
And the rays of His earrings arrest the sun's own chariot.

Tat theī, tat theī resounds through every heart.
His feet strike in straight and crossing steps.
Throughout the rāsa the cry is "Śrī Rādhā, Rādhā," while the flute repeats its single refrain.
Nandadāsa sings, standing very near.

ORIGINAL

नृत्यकी गति और भी तीव्रतर होती है तथा वाद्य-यन्त्रोंका दल इसी पदको नृत्यके स्वरमें स्वर मिलाकर गाता है। इस बार सखियाँ और श्यामसुन्दर परस्परका हाथ छोड़कर अपने-अपने दोनों हाथोंसे भाव बताना प्रारम्भ करते हैं। समस्त सखियोंके समस्त अङ्ग नृत्यके चढ़ाव-उतारके साथ विचित्र-विचित्र महिमाका प्रकाश करते हुए सबको लास्यमें डाल रहे हैं। नृत्यके समय अङ्गोंकी झुकाने, मोड़ने आदिके ढंगको देखनेपर ऐसा प्रतीत हो रहा है मानो इन सखियोंके अङ्गोंमें अस्थि-संस्थान है ही नहीं और इनके अङ्ग सर्वथा सुन्दरतम सुकोमल माँससे निर्मित हैं, जो इच्छानुसार सब ओर सभी स्थानोंसे मुड़ जा सकते हैं। नृत्य करते-करते सखियोंका अञ्चल सिरसे सरक जाता है। श्यामसुन्दर बड़ी सावधानीसे उनके अञ्चलको बीच-बीचमें ठीक कर देते हैं।

ENGLISH TRANSLATION

The dance grows faster as the musicians continue the song. The sakhīs and Śyāmasundara release hands and express the lyrics with both arms. Every limb reveals astonishing grace with each rise and fall. Their bodies bend and turn as though they contained no bones, but only supremely soft beauty capable of moving in every direction. As their veils slip from their heads, Śyāmasundara carefully restores them.

ORIGINAL five dance formations

अब नृत्यके आवेशमें श्रीप्रिया एवं ललिता आदि भी बेसुध होने लगती हैं। बीचमें भी एक मण्डल बन गया है, जिसमें ललिता-श्यामसुन्दर, प्रिया-श्यामसुन्दर, विशाखा-श्यामसुन्दर, ये छः हैं।

1. मध्यस्थित श्रीप्रिया एवं ललितादिकी मण्डली ज्यों-की-त्यों नृत्य करती हुई अपने स्थानपर ही घूम रही है, पर बाहरवाली मण्डली नृत्यके आवेशमें बहुत ही सुन्दर दूसरा आकार धारण कर लेती है।
2. बाहरी मण्डली छः दलोंवाले पुष्पका आकार धारण करती है, जिसके मध्यमें प्रिया-श्यामकी मण्डली है।
3. कुछ देर बाद मण्डली तीसरा आकार धारण करती है, जिसमें राधा-श्याम, विशाखा-श्याम एवं ललिता-श्यामके तीन पृथक् गोल मण्डल हैं।
4. कुछ देर बाद चौथा आकार धारण कर लेती है, जिसमें आठ बाहरी मण्डल एक आठ-पंखुड़ीवाले पुष्पके समान केन्द्रको घेरते हैं।
5. कुछ देर बाद यह पाँचवाँ आकार धारण करती है: केन्द्रमें राधा-श्याम, जिसके चारों ओर पंखुड़ियोंके समान सखियोंकी आठ मण्डलियाँ हैं।

ENGLISH TRANSLATION

Ecstasy overwhelms Priyā, Lalitā, and the others. A central ring forms from the six figures Lalitā-Śyāmasundara, Priyā-Śyāmasundara, and Viśākhā-Śyāmasundara.

1. The central circle continues to turn in place while the outer ring takes a new form.
2. The outer dancers form a six-petaled flower around the central Priyā-Śyāma circle.
3. They divide into three round formations centered upon Rādhā-Śyāma, Viśākhā-Śyāma, and Lalitā-Śyāma.
4. Eight outer circles surround the center like the petals of an eight-petaled flower.
5. Rādhā-Śyāma remain in the center, encircled by eight petal-like companies of sakhīs.

ORIGINAL

उपर्युक्त पाँचों आकारोंमें यह बात निश्चित रूपसे है कि प्रत्येक सखीके पास श्यामसुन्दर हैं। इन पाँच प्रकारके ढंगसे बहुत देरतक मधुरतम नृत्य एवं संगीतका सरस प्रवाह बहता रहा। अब रात्रिका समय अढाई प्रहरसे कुछ अधिक व्यतीत हो जाता है, पर किसीको भी इसकी सुधि नहीं है।

ENGLISH TRANSLATION

In every one of these five formations, Śyāmasundara stands beside each sakhī. The sweet current of dance and music flows for a long time through all five patterns. More than two and a half watches of the night have passed, yet no one is aware of time.

ORIGINAL

श्रीप्रिया एवं सखियोंकी वेणियाँ खुल गयी हैं। उनमेंसे फूल झर-झरकर गिर रहे हैं। मुखारविन्दपर स्वेद-बिन्दु मोतीकी तरह झलमल-झलमल कर रहे हैं। श्रीप्रिया आनन्दमें मूर्च्छित होकर गिरने लगती हैं। इसी समय श्यामसुन्दर मुरली होठोंसे अलग करके प्रियाको हृदयसे लगा लेते हैं। मुरली बन्द होते ही और वाद्य-यन्त्र भी बन्द हो जाते हैं। प्रत्येक सखीको श्यामसुन्दर अपने हृदयसे लगाकर अपने पीताम्बरसे उसका मुँह पोंछने लगते हैं।

ENGLISH TRANSLATION

Priyā's braid and those of the sakhīs come undone, shedding flowers. Pearls of perspiration glisten upon their lotus faces. Priyā begins to fall unconscious from bliss. Śyāmasundara removes the flute from His lips and catches Her to His heart. All instruments cease. In each manifested form He embraces a sakhī and wipes her face with His yellow garment.

ORIGINAL

श्रीप्रिया आनन्दमें कुछ देरतक मूर्च्छित रहती हैं। कई सखियाँ भी मूर्च्छित हैं। कोई-कोई अर्ध-बाह्यज्ञानकी दशामें हैं। सभीको श्यामसुन्दर हृदयसे लगाये-लगाये अपने पीताम्बरसे पंखा झल रहे हैं। धीरे-धीरे सखियाँ पूर्णतः प्रकृतिस्थ हो जाती हैं। प्रकृतिस्थ होते ही श्यामसुन्दर अपने और सब रूपोंको छिपा लेते हैं तथा एक श्यामसुन्दर बचे रहते हैं, जो राधारानीको गोदमें लिये बैठ जाते हैं। थोड़ी देर बाद रानी भी प्रकृतिस्थ हो जाती हैं। रानी हँसती हुई उठ बैठती हैं तथा अपना अञ्चल सम्भालने लगती हैं।

ENGLISH TRANSLATION

Priyā remains unconscious in bliss, as do several sakhīs; others retain only partial outward awareness. Holding each against His heart, Śyāmasundara fans them with His yellow garment. As they gradually recover, He withdraws His many manifestations until only one form remains, seated with Rādhārāṇī in His lap. Soon She too revives, sits up laughing, and arranges Her veil.

ORIGINAL

वृन्दा आनन्दमें इतराती-उतराती हुई श्रीप्रियाका हाथ पकड़ लेती हैं तथा प्यारवश हाथोंसे प्रियाके हाथोंको दबाने लग जाती हैं। वृन्दाकी दासियाँ गुलाबपाशसे सुन्दर-शीतल जल श्रीप्रिया, श्यामसुन्दर एवं सखियोंपर धीरे-धीरे छींटती हैं। यमुना-पुलिनका शीतल-मन्द समीर अद्यपि प्रवाहित हो रहा है, फिर भी वृन्दाकी दासियाँ कमलके फूलोंसे पिरोये हुए सुन्दर-सुन्दर बड़े-बड़े पंखोंको लेकर धीरे-धीरे झलने लग जाती हैं। वृन्दा श्यामसुन्दरके वस्त्रोंमें अत्यन्त सुगन्धित इत्र लगाती हैं। उन्हें इत्र लगाती देखकर रानी भी थोड़ा इत्र लेकर श्यामसुन्दरके कन्धेपरके दुपट्टेमें लगा देती हैं।

ENGLISH TRANSLATION

Vṛndā, overflowing with delight, takes Priyā's hands and lovingly presses them. Her servants gently sprinkle cool rose water over the Divine Couple and the sakhīs, then fan Them with great fans woven from lotus flowers, though the mild river breeze still blows. Vṛndā perfumes Śyāmasundara's garments, and the Queen applies essence to the scarf upon His shoulder.

ORIGINAL

वृन्दाकी सभी दासियाँ फिर ऐसा अनुभव करती हैं कि मुझे प्यारे श्यामसुन्दरके वस्त्रमें इत्र लगानेके लिये अवसर मिला है और वे श्यामसुन्दरके अङ्गोंका स्पर्श पाकर आनन्दमें बेसुध-सी हो जाती हैं। फिर श्यामसुन्दर एवं सभी सखियाँ मिलकर रानीके वस्त्रोंमें इत्र लगाती हैं। इसके बाद श्यामसुन्दर सभी सखियोंके वस्त्रोंमें एक साथ ही इत्र लगाते हैं।

ENGLISH TRANSLATION

Every one of Vṛndā's maidservants experiences that she herself is given the opportunity to perfume His garment, and the touch of His limbs makes each swoon with delight. Then Śyāmasundara and all the sakhīs perfume the Queen's garments, after which He simultaneously applies fragrance to every sakhī.

ORIGINAL

सर्वत्र आनन्द-ही-आनन्द छाया हुआ है। इस समय श्रीप्रिया-प्रियतमका मुख पूर्वकी ओर है। श्रीवृन्दाकी दासियोंकी टोली झारीमें जल एवं कुल्ला करनेके लिये चौड़े मुँहका गमला लिये हुए आ खड़ी होती है। दूसरी टोली सोनेकी परातोंमें सजा-सजाकर सोनेकी तश्तरियोंमें दूधकी मलाई एवं वरकके संयोगसे बनी हुई विभिन्न आकार एवं स्वादकी मिठाइयाँ लिये हुए खड़ी है। श्रीश्यामसुन्दर एवं श्रीप्रिया कुल्ला करते हैं। दासियोंकी टोली बड़ी शीघ्रतासे सबको कुल्ला करा देती है। कुल्ला कर लेनेके पश्चात् तश्तरी-भरी परातको श्यामसुन्दरके आगे रख देती हैं।

ENGLISH TRANSLATION

Bliss reigns everywhere. The Divine Couple faces east. One company brings water sprinklers and broad-mouthed rinsing vessels; another brings golden trays holding sweets of many shapes and flavors made from clotted cream and silver leaf. The maidservants quickly help everyone rinse, then place the tray of sweets before Śyāmasundara.

ORIGINAL

रानी तश्तरीसे मिठाई निकालकर अत्यन्त प्यारपूर्वक श्यामसुन्दरके मुखमें देती जाती हैं। श्यामसुन्दर श्रीप्रियाके मुखारविन्दकी शोभा निहारते हुए मिठाई खा रहे हैं। कुछ मिठाई खाकर कहते हैं, “न, अब तू जबतक नहीं खायेगी, तबतक मैं और नहीं खाऊँगा!”

श्रीप्रिया कहती हैं, “मैं पीछे खा लूँगी।”

श्यामसुन्दर कहते हैं, “तब न सही, मैं भी अब और नहीं खाऊँगा।”

ENGLISH TRANSLATION

The Queen lovingly feeds sweets into His mouth while He gazes upon Her lotus face. After eating several, He says, "No, I shall eat no more until You eat."

"I shall eat afterward."

"Then let it be. I too shall eat no more."

ORIGINAL

श्रीप्रिया प्रेममें भर जाती हैं तथा कहती हैं, “अच्छा, मैं खा लूँगी; पर मैं जितनी मिठाई खाऊँ तुम्हें फिर उससे चौगुनी खानी पड़ेगी।”

श्यामसुन्दर अत्यन्त प्यारसे कहते हैं, “चौगुनी ही सही, इसपर भी यदि मैं अपने हाथसे खिलाऊँ और तू ठीकसे खा ले तो तुमसे आठ गुना अधिक खा लेनेका वचन दे रहा हूँ।”

श्रीप्रिया सकुचा जाती हैं। सभी सखियाँ भी आनन्दमें विभोर हो जाती हैं। श्रीप्रिया चुप बैठी रहती हैं। श्यामसुन्दर मुस्कुराकर पूछते हैं, “क्यों प्रिये! मेरी बातको स्वीकार करती हो या नहीं?”

रानी बहुत सकुचाये स्वरमें धीरेसे कहती हैं, “अच्छा, खिला दो।”

ENGLISH TRANSLATION

Filled with love, Priyā says, "Very well, I shall eat, but then You must eat four times as much as I do."

He answers tenderly, "Four times is acceptable. If I may feed You with My own hand and You eat properly, I promise to eat eight times more than You."

Priyā grows shy while all the sakhīs are delighted. He smiles. "Beloved, do You accept My proposal?"

In a deeply bashful voice the Queen whispers, "Very well, feed Me."

ORIGINAL

श्यामसुन्दर अत्यन्त प्यारसे श्रीप्रियाके हाथको पकड़ लेते हैं तथा फिर दाहिने हाथसे श्रीप्रियाके मुखमें मिठाईका एक छोटा-सा खण्ड रख देते हैं। श्रीप्रिया मिठाईको मुखमें लेकर प्रेममें इतनी अधीर होने लगती हैं कि सँभलकर बैठे रहना कठिन हो जाता है। रूपमञ्जरी तुरन्त पीछेसे आकर उन्हें सँभाल लेती है। श्रीप्रिया उसीके सहारेसे बैठकर मिठाई खाती हैं। स्वयं श्यामसुन्दर ही अब प्रेममें इतने अधिक विभोर हो जाते हैं कि मिठाईका खण्ड हाथमें लेकर चुपचाप बैठे रह जाते हैं। न प्रियाको यह ज्ञान है कि मैं मिठाई खा रही हूँ, न श्यामसुन्दरको यह ज्ञान ही है कि मैं मिठाई खिला रहा हूँ। दोनों निर्निमेष नयनोंसे एक-दूसरेके मुखारविन्दको देखते हुए चित्रकी भाँति बैठे हैं।

ENGLISH TRANSLATION

Śyāmasundara lovingly takes Priyā's hand and places a small piece of sweet in Her mouth. Love makes Her so unsteady that Rūpamañjarī immediately supports Her from behind. Then He too becomes absorbed in love, sitting motionless with another morsel in His hand. Neither knows that She is eating or He is feeding. They sit like a painted image, gazing without blinking into one another's lotus faces.

ORIGINAL

सखियाँ भी इनकी दशा देखकर प्रेममें पगली होती जा रही हैं। फिर ललिता कुछ सँभलकर रानीके मुँहमें मिठाई देती हैं। रानी यन्त्रकी भाँति मिठाईको धीरे-धीरे कण्ठसे नीचे उतार लेती हैं। श्यामसुन्दर भी यन्त्रकी भाँति मिठाई उठा-उठाकर ललिताके हाथोंमें देते चले जाते हैं। श्रीप्रिया-प्रियतम, दोनोंकी ही अवस्था विचित्र हो गयी है।

ललिता कुछ मिठाई खिलाकर शीतल-सुवासित जलके गिलासको श्रीप्रियाके होठोंसे लगा देती हैं। श्रीप्रिया जलके कुछ घूँट पी लेती हैं। ललिता रानीके होठोंको जलसे पोंछकर चाहती हैं कि रूमालसे पोंछ दूँ, पर श्यामसुन्दर अपना पीत दुपट्टा ललिताके हाथमें दे देते हैं। ललिता मुस्कुराती हुई उसी दुपट्टेसे रानीका मुँह पोंछ देती हैं।

ENGLISH TRANSLATION

The sakhīs grow mad with love at the sight. Lalitā composes herself and feeds the Queen, who swallows mechanically, while Śyāmasundara mechanically places more pieces in Lalitā's hands. After several morsels Lalitā gives Priyā cool scented water. When she reaches for a handkerchief to dry the Queen's lips, Śyāmasundara offers His yellow scarf, and Lalitā smilingly uses it.

ORIGINAL

अब रानीको चेत हो आता है। श्यामसुन्दरकी भी भाव-समाधि टूट जाती है। दोनों ही एक-दूसरेको देखकर हँस पड़ते हैं। श्यामसुन्दर फिर सखियोंको उसी प्रकार एक साथ मिठाई खिलाते हैं। फिर आपसमें एक-दूसरेको पान भी उसी प्रकार खिलाते हैं।

ENGLISH TRANSLATION

The Queen returns to awareness, and Śyāmasundara's absorption also breaks. They look at one another and laugh. He then simultaneously feeds sweets to all the sakhīs, and they offer betel to one another in the same way.

ORIGINAL

अब रात्रि लगभग तीन प्रहर पूरे होनेको आ गयी है। श्रीश्यामसुन्दरकी आँखोंमें प्रेमरससा आलस्य-सा झलकने लगता है। श्रीप्रिया मुस्कुराती हुई उठ पड़ती हैं। मण्डलीके सहित श्यामसुन्दर विश्राम-कुञ्जकी ओर चलने लगते हैं। श्रीयमुनाके उत्तरी तटपर विश्राम-कुञ्जकी पंक्तियाँ लगी हुई हैं। आज जिस कुञ्जमें विश्राम करना है, उसी ओर वृन्दा आगे-आगे चल रही हैं। उनके पीछे प्रिया-प्रियतम एवं उनके पीछे सखियाँ चल रही हैं।

ENGLISH TRANSLATION

Nearly three watches of the night have passed. Love-suffused weariness appears in Śyāmasundara's eyes. Priyā rises smiling, and the company sets out for the rest bowers upon the Yamunā's northern bank. Vṛndā leads, the Divine Couple follows, and the sakhīs come behind.

ORIGINAL

बालुकामय पुलिन एवं तटके बीचमें यमुनाकी एक धारा बहती है। उसपर नावका अत्यन्त सुन्दर पुल है। उसीपर चढ़कर श्रीप्रिया-प्रियतम किनारेपर पहुँचते हैं। मार्गमें चलते हुए आपसमें अत्यन्त प्रेममय विनोद होता जा रहा है। श्रीप्रिया-प्रियतम एवं सखियाँ कुछ सघन वन-वीथियोंको पार करती हैं तथा मणियोंके प्रकाशमें चमचम करते हुए सुन्दर पथसे चलकर रत्नमय निकुञ्ज-भवनमें आ पहुँचती हैं।

ENGLISH TRANSLATION

A stream of the Yamunā runs between the sandy bank and the shore. They cross it upon a lovely bridge of boats, exchanging affectionate jokes as They go. Passing through dense forest avenues and along a beautiful jewel-lit path, They reach the jeweled bower-house.

ORIGINAL

निकुञ्ज-भवनकी शोभा अनुपम ही है। इसमें प्रत्येक सखी, दासी एवं मञ्जरीके विश्रामके लिये अलग-अलग स्थान बने हुए हैं। निकुञ्ज-भवनके मध्यमें अत्यन्त सुसज्जित कमरा है, जिसमें सेवाकी सब सामग्रियाँ हैं। अत्यन्त सुन्दर मखमली शय्या बिछी है। उसके पास ही कमलोंकी एक और पुष्प-शय्या है। समस्त कमरेमें अपूर्व शान्ति-आनन्द-उल्लास भरा हुआ है। रानी जाकर श्यामसुन्दरको मखमली शय्यापर बैठा देती हैं। श्यामसुन्दर मुस्कुराने लग जाते हैं। कुछ देर आपसमें निर्मल विशुद्ध प्रेममय विनोद होता रहता है।

ENGLISH TRANSLATION

The bower-house is incomparable. Separate resting places are prepared for every sakhī, maidservant, and mañjarī. Its central chamber holds all implements of service, a beautiful velvet bed, and beside it a second bed of lotuses. Unprecedented peace, joy, and delight fill the room. The Queen seats Śyāmasundara upon the velvet bed, and for some time Their pure loving play continues.

ORIGINAL

फिर ललिता उठकर खड़ी हो जाती हैं। अत्यन्त प्यारसे कहती हैं, “मुझे नींद आ रही है, मैं सोने जा रही हूँ।”

श्यामसुन्दर चाहते हैं कि ललिताको पकड़कर बैठा लें, पर वे फुर्तीसे बाहर निकल आती हैं तथा समीपस्थ कमरेपर शीघ्रतासे जाकर द्वार बन्द कर लेती हैं। इसी प्रकार और-और सखियाँ भी कोई किसी मिससे, कोई किसी मिससे बाहर आ जाती हैं। सबसे पीछे रूपमञ्जरी निकलती हैं। बाहर जाकर वह द्वारको बन्द कर देती हैं।

ENGLISH TRANSLATION

At last Lalitā rises. "I am sleepy. I am going to rest." Śyāmasundara tries to catch and detain her, but she darts outside, enters a nearby room, and closes its door. One by one the other sakhīs depart on various pretexts. Rūpamañjarī leaves last and closes the Couple's door from outside.

ORIGINAL

द्वारके पास ही दो पंक्तियोंमें, छः इस ओर एवं छः उस ओर, अत्यन्त सुन्दर मखमली गद्दोंकी शय्याएँ लगी हुई हैं। रूपमञ्जरीके द्वारा द्वार बन्द कर दिये जाते ही बारह मञ्जरियाँ शय्याओंपर लेट जाती हैं। उनकी चार-चारकी एक टोली बारी-बारीसे प्रत्येक घण्टेमें जागती रहती है कि जिससे कहीं कुञ्ज-सेवाकी आवश्यकता होनेपर प्रिया-प्रियतमको कष्ट न हो जाय।

ENGLISH TRANSLATION

Two rows of velvet beds lie beside the door, six on each side. Twelve mañjarīs recline upon them. In groups of four they keep watch by turns, one group awake during each hour, so that the Divine Couple need never be troubled if service is required.

ORIGINAL

वृन्दा प्रत्येक सखीके द्वारके पास जाती हैं तथा छिद्रसे देखकर मुस्कुराती हुई आगे बढ़ती हैं। प्रत्येक जगह जा-जाकर जब वृन्दा स्वयं देख लेती हैं कि सब विश्रामके स्थानमें ठीक-ठीक पहुँच गयी हैं, तब अपनी दासियोंके साथ उसी महलके समीपस्थ महलमें जाकर विश्राम करती हैं।

ENGLISH TRANSLATION

Vṛndā visits each sakhī's door, peeks through its opening, and moves on smiling. Only after personally confirming that everyone has reached her proper resting place does she retire with her maidservants to the neighboring palace.

ORIGINAL

शीतल-मन्द-सुगन्धित पवन प्रवाहित हो रहा है। यमुनाका प्रवाह बड़ी शान्तिकी अवस्थामें है। सर्वत्र एक अनिर्वचनीय शान्ति फैली हुई है। अवश्य ही कान लगाकर सुननेसे ऐसा प्रतीत हो रहा है कि वन एवं यमुना-पुलिनका अणु-अणु धीरे-धीरे जप रहा है:

“राधेश्याम राधेश्याम राधेश्याम राधेश्याम।”

ENGLISH TRANSLATION

A cool, gentle, fragrant wind flows. The Yamunā moves in profound stillness, and indescribable peace spreads everywhere. Listening closely, one can hear every atom of the forest and the Yamunā's bank softly chanting:

"Rādheśyāma, Rādheśyāma, Rādheśyāma, Rādheśyāma."

CHAPTER 17

श्रृङ्गार लीला

The Adornment Līlā

Source scan pages 194–198

ORIGINAL

Sanskrit invocation

॥ विजयेतां श्रीप्रियाप्रियतमौ ॥

ENGLISH TRANSLATION

May Śrī Priyā and Her most beloved Lord be ever victorious.

ORIGINAL

श्रृङ्गार लीला

श्रीप्रिया-प्रियतम श्रीविशाखाके कुञ्जमें कदम्बकी छायामें विराजमान हैं। कदम्बके चारों ओर फूल खिले हैं और भौंरे गुञ्जार कर रहे हैं। वृक्षके नीचेका आलवाल भूमिसे डेढ़ हाथ ऊँचा है। उसके चारों ओर आठ-आठ हाथतक संगमरमर लगा है, फिर बेला-पुष्प और मल्लिकाकी गोलाकार क्यारियाँ तथा हरी दूब है। स्थान-स्थानपर स्थल-कमल एवं सुगन्धित फूलोंकी छोटी झाड़ियाँ हैं।

प्रिया-प्रियतम दक्षिणाभिमुख, पीठ गट्टेके सहारे टिकाये बैठे हैं। श्यामसुन्दरकी बाँयी ओर प्रियाजी हैं। आगे बाँसकी डलियामें बेला और चमेलीके फूल हैं। डलिया केलेके हरे-पीले पत्तोंसे जड़ी और जल-बूँदोंसे चमक रही है। दोनों एक ही धागेके विपरीत छोर पकड़कर फूल पिरोते हुए गजरा बना रहे हैं। कुछ सखियाँ पासकी क्यारियोंसे फूल तोड़कर अञ्चलमें भरतीं और डलियामें उड़ेलती हैं।

शीतल, मन्द, सुगन्धित पवनके रहते भी विमलामञ्जरी खसका पंखा धीरे-धीरे झल रही है। प्रिया-प्रियतमके मुखपर मधुर मुसकान आती है, पर दोनों ऐसा भाव करते हैं मानो एकान्त मनसे फूल पिरो रहे हों। वे कनखियोंसे एक-दूसरेको देखते हैं; आँखें मिलते ही प्रिया लजाकर पुकारती हैं, “ललिते! जल्दी और फूल ला, डलियाके फूल समाप्त हो चले हैं।” श्यामसुन्दर भी कहते हैं, “हाँ-हाँ, अब फूल बहुत कम हैं, शीघ्र ला।”

ENGLISH TRANSLATION

The Adornment Līlā

Priyā and Her beloved sit beneath a kadamba in Viśākhā's bower. Marble, circular beds of jasmine, green grass, land-lotuses, and fragrant shrubs surround the raised tree basin.

Facing south, They hold opposite ends of one thread and weave jasmine blossoms into a garland. Sakhīs gather more flowers while Vimalāmañjarī fans Them. Both pretend complete concentration, yet steal sidelong glances. Whenever Their eyes meet, Rādhā bashfully calls for more flowers, and Śyāmasundara playfully agrees that the basket is nearly empty.

ORIGINAL

दोनों गजरेके छोर बार-बार मिलाकर देखते हैं कि गाँठ देने जितना पिरोया गया या नहीं। अँगुलियाँ छू जानेसे प्रेम उफनता, शरीर काँपते और मुखारविन्द स्वेदकणोंसे भर जाते हैं। गजरा तैयार होनेपर श्रीप्रिया गाँठ देती हैं। श्यामसुन्दर डलियासे फूल छाँटकर पीताम्बरके एक किनारेपर रखते और गजरेके लटकनेवाले गुच्छेका निर्माण करते हैं। कदम्बके पुष्पोंकी मीठी सुगन्ध आ रही है। उनकी वनमालाकी सुगन्धसे भौंरे आते हैं, पर प्रिया रुमालसे उड़ा देती हैं।

श्यामसुन्दर फूल पिरोते हैं और प्रिया चुनकर हाथमें देती हैं। गजरा बनते ही वे प्रियाको पहनाने उठते हैं, पर प्रिया पकड़कर कहती हैं, “नहीं, इसे मैं तुम्हें पहनाऊँगी।”

वे कहते हैं, “नहीं, इसे मैं तुम्हें पहनाऊँगा। प्रतिदिन मेरा श्रृङ्गार तू पहले करती है, आज मैं तुम्हारा करूँगा।”

सबके सामने उनसे श्रृङ्गार करानेमें लज्जा होनेसे प्रिया कहती हैं, “नहीं।”

ENGLISH TRANSLATION

Each time They bring the ends together to measure the garland, Their fingers touch, love surges, Their bodies tremble, and perspiration covers Their faces. Rādhā ties the finished strand while He fashions its hanging cluster and She passes Him selected flowers.

When He rises to place it on Her, She catches it and insists on adorning Him. He replies that She always decorates Him first, so today He will decorate Her. Before all the sakhīs, She shyly refuses.

ORIGINAL

ललिता आकर श्रीराधाके बायें कंधेको पकड़ती हैं, “देखो, मैं निर्णय करती हूँ; फिर किसीको आनाकानी नहीं करनी पड़ेगी।” राधा पहले निर्णयका रूप जानना चाहती हैं। श्यामसुन्दर बीचमें कहते हैं, “मैं तो मान लूँगा।” सब आश्चर्य करते हैं। सखियोंके दबावपर राधारानी भी मान जाती हैं।

ललिता दो बड़े बेला-पुष्प उठाकर एककी पंखुड़ीपर ‘राधा’ और दूसरेपर ‘श्याम’ लिखती हैं। दोनोंको अञ्जलिमें रखकर कहती हैं, “आँखें मूँद लो। मैं इन्हें उलटकर रख दूँगी। फिर राधा एक फूल उठाये। जिसका नाम निकले, उसीको आज गजरा पहनाने तथा शृङ्गार करनेका अधिकार होगा।”

दोनों आँखें मूँदते हैं। ललिता फूल उलटती हैं। राधारानी विचारकर संयोगवश ‘श्याम’ लिखा फूल उठाती हैं। श्रीकृष्ण दूसरा फूल उठाकर देखते ही आनन्दसे गजरा श्रीप्रियाके गलेमें डाल देते हैं। सखियाँ ताली बजाती हैं।

ENGLISH TRANSLATION

Lalitā proposes a binding decision. On two jasmine petals she writes “Rādhā” and “Śyāma,” turns them face down, and asks Rādhā to choose. The name selected will possess the right to adorn the other. Rādhā happens to choose “Śyāma.” Delighted, Kṛṣṇa places the garland around Her neck while the sakhīs clap.

ORIGINAL

अब फूलोंका शृङ्गार आरम्भ होता है। श्यामसुन्दर भाँति-भाँतिके फूलोंके गहने बनाकर श्रीप्रियाको सजाते हैं। अन्तमें अत्यन्त सुन्दर चन्द्रिका बनाते और पहलेकी रत्न-मणि-मोती-जटित चन्द्रिका उतारनेको कहते हैं। प्रियाका संकेत पाकर विशाखा अञ्चल हटाकर बन्धन खोलती और उसे उतारती हैं।

श्यामसुन्दर पुष्पोंकी चन्द्रिका बाँधते समय प्रेमावेशसे काँपते हैं। प्रिया मुसकराकर कहती हैं, “खेल मत करो, शीघ्र बाँध दो।” वे कहते हैं, “मैं क्या करूँ? तू सिर हिला रही है, इसीसे बाँध नहीं पा रहा।” प्रिया उसे हाथोंसे पकड़कर कहती हैं, “लो, मैं स्वयं बाँध लेती हूँ।”

वे चन्द्रिका उनके हाथमें देकर सामने पड़ा दर्पण मुखके आगे करते हैं, पर हाथ काँपनेसे दर्पण हिलता है। प्रिया दर्पणमें देखकर चन्द्रिका बाँधना चाहती हैं, पर अपने मुखके स्थानपर श्यामसुन्दरका मुख दीखता है। बड़ी कठिनतासे बाँधते ही मूर्छित होकर उनकी गोदमें गिर पड़ती हैं। श्यामसुन्दर गोदमें लेकर खसके पंखेसे झलते और शरीर सहलाते हैं। मधुमती मञ्जरी वीणाके तार मिलाकर गाती है:

ENGLISH TRANSLATION

Śyāmasundara fashions many floral ornaments for Priyā. Last He makes a flower crescent and asks Viśākhā to remove Her jeweled one. His hands tremble too much to fasten the new ornament, so Rādhā takes it Herself.

He holds up a mirror, but both His hand and the reflection tremble. Instead of Her own face, She sees Śyāmasundara's. The moment She secures the crescent, She faints into His lap. He fans and caresses Her while Madhumatī begins to sing.

ORIGINAL

Braj Bhāṣā song

तू है सजनी बड़भाग भरी, नन्दलाल तेरे घर जावत हैं।

निज कर गूँथि सुमनके गजरे, हरषि तोहि पहरावत हैं॥

तू अपनो शृङ्गार करति जब, दरपन तोहि दिखावत हैं।

आनन्दकन्द चन्द मुख तेरो, निरखि निरखि सुख पावत हैं॥

जाके गुन सब जगत बखानत, सो तेरो गुन गावत हैं।

नारायन बिनु दास आजकल, तेरेहि हाथ बिकावत हैं॥

ENGLISH TRANSLATION

Friend, you are filled with the greatest fortune, for Nandalāla comes to your home.

With His own hands He weaves flower garlands and joyfully places them upon you.

As you adorn yourself, He holds the mirror before you.

Gazing again and again upon your moonlike face, the root of bliss finds happiness.

He whose virtues all the world proclaims now sings of your virtues.

Nārāyaṇa says: the independent Lord has lately sold Himself into your hands.

ORIGINAL

श्रीप्रियाकी मूर्छा टूटती है और वे अपनेको श्यामसुन्दरकी गोदमें पाती हैं। लज्जासे घबराकर शीघ्र उठतीं और अञ्चल सँभालती हैं। श्यामसुन्दर तथा सखियाँ हँसते हैं। अब श्यामसुन्दरके शृङ्गारकी बारी आती है। सभी सखियाँ आनन्दमें भाँति-भाँतिके आभूषण बनाकर राधारानीके हाथोंमें देती जाती हैं। श्रीराधारानी श्यामसुन्दरको सजा रही हैं।

ENGLISH TRANSLATION

Priyā revives in Śyāmasundara's lap. Embarrassed, She quickly rises and adjusts Her veil as He and the sakhīs laugh. Now it is His turn. The joyful sakhīs fashion many ornaments and place them in Rādhā's hands as She adorns Śyāmasundara.

CHAPTER 18

आँखमिचौनी लीला

The Blindman's Buff Līlā

Source scan pages 199–212

ORIGINAL

Sanskrit invocation and Hindi prose

॥ विजयेतां श्रीप्रियाप्रियतमौ ॥

आँखमिचौनी लीला

श्रीचित्राके कुञ्जमें श्रीप्रिया-प्रियतम अत्यन्त सुन्दर पुष्पोंसे लदी हुई एक झाड़ीकी छायामें बैठे हैं। श्रीकृष्ण झाड़ीकी जड़में पीठ टेककर उत्तरकी ओर मुख किये बैठे हैं। वे दोनों पैर फैलाये हुए हैं। श्रीप्रिया उनकी बायीं ओर उसी प्रकार झाड़ीकी मूलसे अपनी पीठ टेके हुए बैठी हैं, पर उनका दाहिना हाथ श्यामसुन्दरके बायें कन्धेपर है। श्रीललिता श्रीश्यामसुन्दरकी दाहिनी ओर कुछ दूरपर खड़ी हैं। सामने विशाखा एवं चित्रा एक कपड़ेके दोनों छोरोंको पकड़कर उसमें शर्बत छान रही हैं। शर्बत छन-छनकर चौड़े मुखके स्वर्णपात्रमें गिर रहा है। उस स्वर्णपात्रसे शर्बत गिलासमें भरकर रूपमञ्जरी दूसरे-दूसरे गिलासोंमें भरती जा रही है। विमलामञ्जरी उन गिलासोंको सजा-सजाकर बहुत बड़ी सोनेकी परातमें रखती जा रही है।

श्यामसुन्दर बीच-बीचमें मुरलीको होठोंसे लगाकर उसमें एक-दो बार फूँक भर देते हैं। फूँक भरते ही उसकी स्वर-लहरी वनमें गूँजने लगती है तथा सखियों एवं राधारानीका शरीर उतनी देरतक प्रेमसे काँप उठता है। श्यामसुन्दर बीच-बीचमें श्रीप्रियाकी ओर देख भी लेते हैं। श्रीप्रिया मुस्कुराकर अपने हाथोंसे कभी-कभी श्यामसुन्दरकी आँखें मूँद देती हैं।

संकेतके पाते ही रूपमञ्जरी शर्बतका एक गिलास लाकर श्रीप्रियाके हाथोंमें पकड़ा देती है। श्रीप्रिया उसे श्यामसुन्दरके होठोंसे लगा देती हैं। श्रीश्यामसुन्दर एक घूँट शर्बत पीते हैं और फिर श्रीप्रियाके मुखारविन्दकी शोभा निहारने लगते हैं। श्रीप्रिया इस बार दाहिने हाथसे गिलासको पकड़े रहती हैं तथा बायें हाथसे श्यामसुन्दरकी आँखें मूँद देती हैं। पर श्रीप्रियाकी अँगुलियोंके छिद्रोंसे फिर भी श्यामसुन्दर श्रीप्रियाकी शोभा निहारने लगते हैं। श्रीप्रिया कुछ सकुचायी-सी होकर धीरेसे कहती हैं—तुम्हारा नटखटपना नहीं जाता। शर्बत पीनेमें इतनी देर लगाते हो!

ENGLISH TRANSLATION

May Śrī Priyā and Her Beloved be victorious!

The Blindfold Game Līlā

In Citrā's grove, Śrī Priyā and Her Beloved sit beneath the shade of a shrub laden with exquisite flowers. Śrī Kṛṣṇa rests His back against its roots, facing north with both legs extended. Śrī Priyā sits at His left in the same manner, though Her right hand rests upon Śyāmasundara's left shoulder. Lalitā stands a little distance to His right. Before Them, Viśākhā and Citrā hold the two ends of a cloth and strain sherbet through it. The filtered drink falls into a wide-mouthed golden vessel. Rūpamañjarī fills glass after glass from that vessel, while Vimalāmañjarī arranges them upon a great golden tray.

From time to time Śyāmasundara places the flute to His lips and breathes into it once or twice. Its melody resounds through the forest, and for as long as it sounds, the bodies of Rādhārāṇī and the sakhīs tremble with love. Śyāmasundara also steals repeated glances at Śrī Priyā, who smiles and occasionally covers His eyes with Her hands.

At Her signal Rūpamañjarī brings a glass of sherbet and places it in Śrī Priyā's hands. She raises it to Śyāmasundara's lips. He takes one sip and again gazes upon the beauty of Her lotus face. Holding the glass in Her right hand, Śrī Priyā covers His eyes with Her left, yet He continues looking at Her through the openings between Her fingers. Slightly abashed, She whispers, "You never abandon Your mischief. Why do You take so long to drink the sherbet?"

ORIGINAL Hindi prose

श्रीप्रियाकी बात सुनकर श्यामसुन्दर अपना मुख ऊपरकी ओर उठा देते हैं तथा हँसते हुए कहते हैं—अच्छा! हम तो नटखट हुए, ठीक; पर तुम्हारा नखरा क्या कम हो गया है?

इस बार श्रीप्रिया बायें हाथसे श्यामसुन्दरके सिरको अत्यन्त प्रेमसे हिलाकर बहुत धीरेसे कहती हैं—देखो, शीघ्र पी लो। ललिता-विशाखाको इसी समय एक कामसे मुझे बाहर भेजना है।

श्यामसुन्दर इस बार श्रीप्रियाकी ओर देखते हुए शीघ्रतापूर्वक पाँच-सात घूँट पी लेते हैं। श्रीप्रिया गिलासको लेकर रूपमञ्जरीके हाथमें दे देती हैं। रूपमञ्जरी गिलासको लेकर जैसे ही पीछे हटनेके लिये पैर बढ़ाती है, वैसे ही श्यामसुन्दर गिलासको पकड़ लेते हैं तथा कहते हैं—थोड़ा और पीऊँगा।

श्रीश्यामसुन्दर गिलास लेकर श्रीप्रियाके होठोंके पास ले जाना चाहते हैं कि इतनेमें ही ललिता वहाँ आ जाती हैं तथा कहती हैं—देखो, शर्बत पीते-पीते तुमने तो इतनी देर कर दी। कलकी बात भूल गये क्या?

श्यामसुन्दर गिलास हाथमें लिये हुए ही ऐसा भाव बनाते हैं मानो उन्हें सचमुच कोई बात स्मरण ही नहीं हो तथा आश्चर्यभरी मुद्रामें कहते हैं—कलकी कौन-सी बात?

ललिता श्यामसुन्दरके हाथसे बलसे गिलास ले लेती हैं। श्यामसुन्दर भी बिना आनाकानीके गिलास छोड़ देते हैं। गिलास लेकर ललिता कहती हैं—ऐसे साधु बन गये मानो कुछ स्मरण ही नहीं है।

ललिताकी बात सुनकर श्यामसुन्दर मुस्कुरा पड़ते हैं और कहते हैं—हाँ, अब स्मरण आया। अभी-अभी, देख, मैं अभी एक साथ ही तुम सब लोगोंको दिखला देता हूँ।

श्यामसुन्दरकी बात सुनकर ललिता कहती हैं—चतुराई रहने दो, बात पलटनेसे नहीं होगी। आज दौड़ बचकर देख लो, तुम्हें मैं कितना छकाती हूँ।

यह सुनकर श्यामसुन्दर चटपट बोल उठते हैं—हाँ, हाँ, मैं भूल गया था। क्या हानि है? देख ले। मैं हटता नहीं; पर एक बात तुम सबको माननी होगी।

ENGLISH TRANSLATION

Hearing Śrī Priyā, Śyāmasundara lifts His face and laughs. "Very well, I am mischievous, agreed. But have Your coquettish ways diminished at all?"

Śrī Priyā lovingly shakes His head with Her left hand and whispers, "Drink quickly. Lalitā and Viśākhā must send Me outside just now on an errand."

Still gazing at Her, Śyāmasundara quickly drinks five or seven sips. Śrī Priyā returns the glass to Rūpamañjarī. As the mañjarī steps backward, Śyāmasundara catches the glass and says, "I shall drink a little more."

He is about to raise it toward Śrī Priyā's lips when Lalitā arrives. "Look how long You have spent drinking sherbet. Have You forgotten what was agreed yesterday?"

Still holding the glass, Śyāmasundara assumes an expression as though He truly remembers nothing. With feigned surprise He asks, "What happened yesterday?"

Lalitā forcibly takes the glass from His hand, and He releases it without protest. "You have become such a saint," she says, "as though You remember nothing at all."

Śyāmasundara smiles. "Yes, now I remember. Just watch, I shall teach all of you at once."

Lalitā replies, "Enough cleverness. Changing the subject will not help. Try running away today and see how thoroughly I outwit You."

Śyāmasundara quickly answers, "Yes, yes, I had forgotten. What harm is there? Let us see. I shall not withdraw, but all of you must accept one condition."

ORIGINAL Hindi prose

ललिता—क्या बात?

श्यामसुन्दर—मेरी आँख मेरी प्रिया राधा मूँदेगी।

ललिता—यह तो होनेका ही नहीं है। राधाके आँख मूँदनेपर तो तुम देख ही लोगे कि मैं कहाँ छिप रही हूँ। और नहीं तो यह राधा तुम्हें व्याकुल देखकर संकेतसे ही बता देगी कि ललिता किधर गयी है।

बात यह थी कि कल श्यामसुन्दरने यह प्रतिज्ञा की थी कि आँखमिचौनीके खेलमें यदि मैं हार गया, तब तो एक दिनके लिये वंशी राधारानीके हाथ बन्धक रख दूँगा। और यदि मैं नहीं हारा तो होगा यह कि श्रीराधा या ललिता आदि सखियोंमेंसे जो-जो हारेंगी, उनमेंसे प्रत्येकको एक-एक घंटेतक मेरे हाथकी कठपुतली बनकर, मैं जो कहूँगा, वही-वही करना पड़ेगा। कल देर हो जानेके कारण यह खेल नहीं हो पाया था। इसलिये आज ललिता स्मरण दिलाती हैं तथा प्रोत्साहन दे रही हैं।

ललिता एवं श्यामसुन्दरमें झगड़ा होने लग जाता है। श्यामसुन्दर कहते हैं कि यदि मैं चोर बना तो प्रिया राधा ही मेरी आँख मूँदेगी और ललिता कहती हैं—ना, राधाको तो आँख मूँदने ही नहीं दूँगी। या तो विशाखा मूँदेगी या चित्रा।

अब वृन्दा पञ्च बनायी जाती हैं। वृन्दादेवीने यह निर्णय दिया—ऐसे नहीं। राधा, विशाखा, चित्रा, तीनोंके नाम मैं तीन फूलोंपर लिखकर उन फूलोंको ऊपर आकाशमें उछाल देती हूँ। जो फूल पट गिरेगा, अर्थात् दल भूमिकी ओर एवं डण्ठी आकाशकी ओर होकर गिरेगा, उसे मैं छोड़ दूँगी, अर्थात् वह आँख नहीं मूँद सकेगी। यदि तीनों फूल पट गिरे तो इन तीनोंके अतिरिक्त कोई चौथी ही आँख मूँदेगी।

वृन्दा इस प्रकार कहकर तीन फूलोंको समीपस्थ लतामेंसे उठा लेती हैं। एकपर ‘राधा’, दूसरेपर ‘विशाखा’ और तीसरेपर ‘चित्रा’का चिह्न बनाती हैं तथा तीनोंको एक साथ ही आकाशमें उछाल देती हैं।

तीनों फूल एक साथ ही भूमिपर गिरते हैं। जिसपर श्रीराधारानीका नाम चिह्नित था, वही फूल आकाशकी ओर दल तथा भूमिकी ओर डण्ठी करके गिरा। अतएव श्रीकृष्णके आनन्दकी सीमा नहीं रही। वे हँसकर ताली पीटने लग जाते हैं। राधारानी कुछ लजा-सी जाती हैं।

ललिताके हाथमें अभीतक श्यामसुन्दरके अधरामृत-शर्बतका गिलास उसी तरह पड़ा था। वे कुछ मुस्कुराती हुई कहती हैं—अच्छी बात है, देख लूँगी।

ऐसा कहनेके बाद वे कुछ आगे बढ़कर श्रीराधारानीका एक हाथ बायें हाथसे पकड़कर कुछ दूर पश्चिमकी ओर ले जाती हैं तथा श्यामसुन्दरकी ओर पीठ करके रानीके कानमें कुछ कहती हैं। रानी मुस्कुराती हुई सुनती हैं। कुछ ही क्षणमें बात समाप्त हो जाती है तथा ललिता उस गिलासको रानीके होठोंसे लगा देती हैं। रानी उसमेंसे चार-पाँच घूँट बहुत शीघ्रतासे पी लेती हैं। रूपमञ्जरी तुरन्त वहाँ जलकी झारी लेकर पहुँच जाती है तथा सोनेके गिलासमें पानी भरकर रानीके होठोंसे लगा देती है। मुँहमें कुल्ला भरकर रानी उसे शीघ्रतासे भूमिपर ही फेंक देती हैं तथा

ललिताके पास चली जाती हैं, जो वहाँसे कुछ दूर खड़ी होकर कुछ गम्भीरतासे सोच रही थीं। रानी ललिताकी कमरमें खोंसा हुआ रूमाल निकाल लेती हैं तथा उससे अपना मुँह पोंछकर धीरे-धीरे श्यामसुन्दरके पास आकर खड़ी हो जाती हैं।

इसी बीच श्यामसुन्दरने भी कुल्ले कर लिये थे। वे विशाखाके हाथसे दिये हुए पानको हाथमें लेकर खड़े-खड़े श्रीप्रियाकी ओर देख रहे हैं। मुखपर मन्द-मन्द मुस्कान है। श्रीप्रियाको पास आयी देखकर श्यामसुन्दर मुस्कुराकर कहते हैं–क्यों, ललितारानीसे सीख-पढ़ लिया तो?

रानी अत्यन्त प्यारभरी मुद्रामें मुस्कुराती हुई धीरेसे कहती हैं–थोड़ा सीखना और शेष है। तुम्हारी आँखें मूँदते समय वह भी सीख लूँगी।

फिर रानी श्यामसुन्दरके दाहिने हाथको, जिसमें पानका बीड़ा था, धीरेसे पकड़ लेती हैं तथा श्यामसुन्दरके होठोंसे लगा देती हैं। श्यामसुन्दर पान मुँहमें रख लेते हैं।

ENGLISH TRANSLATION

Lalitā asks, “What condition?”

Śyāmasundara replies, “My beloved Rādhā will cover My eyes.”

“That cannot happen,” says Lalitā. “If Rādhā covers Your eyes, You will still see where I hide. Even if You do not, the moment She sees You distressed, She will signal where I have gone.”

The previous day Śyāmasundara had vowed that if He lost at blindman’s buff, His flute would remain pledged in Rādhārāṇī’s hands for one day. If He did not lose, then whichever among Śrī Rādhā, Lalitā, and the other sakhīs was defeated would become a puppet in His hands for one full hour and obey whatever He said. Because it had grown late, they had not played. Lalitā now reminds and challenges Him.

An argument begins. Śyāmasundara insists that if He must seek, Priyā Rādhā alone will cover His eyes. Lalitā refuses: “I shall not allow Rādhā to do it. Either Viśākhā or Citrā will cover them.”

Vṛndā is appointed arbiter. She announces, “Not like this. I shall mark three flowers with the names Rādhā, Viśākhā, and Citrā and toss them into the sky. Any flower landing face down, with its petals toward the earth and stem toward the sky, will be eliminated, and that person cannot cover His eyes. If all three land face down, a fourth person will do it.”

Vṛndā plucks three flowers from a nearby creeper, marks one Rādhā, another Viśākhā, and the third Citrā, then tosses all three together.

They land at once. Only the flower bearing Rādhārāṇī’s name falls with its petals upward and stem toward the earth. Śrī Kṛṣṇa’s delight knows no bound. Laughing, He claps His hands, while Rādhārāṇī grows a little shy.

Lalitā still holds the glass of sherbet touched by Śyāmasundara’s lips. Smiling, she says, “Very well, we shall see.”

She takes Rādhārāṇī by one hand, leads Her a little westward, turns Her back toward Śyāmasundara, and whispers into Her ear. The Queen listens with a smile. When Lalitā finishes, she raises the glass to the Queen’s lips, and the Queen swiftly drinks four or five sips. Rūpamañjarī immediately arrives with a water ewer and offers water in a golden glass. The Queen rinses Her mouth, casts the water upon the ground, and returns to Lalitā, who stands some distance away in serious thought. Taking the cloth tucked into Lalitā’s waistband, the Queen wipes Her mouth and slowly comes to stand beside Śyāmasundara.

Meanwhile He too has rinsed His mouth. Holding a betel roll offered by Viśākhā, He stands looking toward Śrī Priyā with a gentle smile. When She approaches, He asks, “Well, have You received Your instructions from Queen Lalitā?”

The Queen smiles with immense affection and quietly replies, “A little remains to be learned. I shall learn that while covering Your eyes.” She gently takes His right hand, which holds the betel roll, raises it to His lips, and He places the betel in His mouth.

ORIGINAL Hindi prose

अब सारी मण्डली आँखमिचौनीका खेल खेलनेके लिये पूर्वकी ओर बढ़ने लगती है। लगभग बीस गज चलकर मेंहदीकी गोलाकार क्यारीसे घिरे हुए एक स्थलपर श्रीप्रिया-प्रियतम एवं सखियाँ पहुँच जाती हैं। मेहराबदार द्वारसे प्रवेश करके वे लोग घेरेके भीतर चली जाती हैं। घेरेका व्यास लगभग साठ गज है, जिसके चारों ओर पाँच-पाँच हाथ चौड़ी मेंहदीकी क्यारी है। घेरेसे निकलनेके लिये चारों दिशाओंमें चार मेहराबदार द्वार हैं, जिनपर लताएँ फैली हुई हैं तथा इनमें फूल खिल रहे हैं। घेरेके भीतर सब स्थानपर पाँच, छः, सात, आठ हाथके यथायोग्य अन्तरपर छिपनेके लिये झाड़ियाँ बनी हुई हैं। वनमें भाँति-भाँति फूल खिले हुए हैं।

घेरेके बीचमें चारों ओरसे आठ-आठ हाथका स्थान झाड़ियोंसे खाली है। उसपर हरी दूब लग रही है। दूब इतनी कोमल एवं सघन है मानो हरे रंगकी सुन्दर मखमली कालीन बिछी हुई हो। उसी स्थलपर आकर श्रीप्रिया-प्रियतम बीचमें बैठ जाते हैं। इस समय श्रीप्रिया-प्रियतमका मुख पश्चिमकी ओर है। सखियाँ भी उन्हें चारों ओरसे घेरकर कुछ तो बैठ जाती हैं, कुछ खड़ी रहकर ही श्यामसुन्दरके मुखारविन्दकी शोभा निहार रही हैं। अब यह विचार होने लगता है कि खेलमें पहले चोर कौन बने, अर्थात् किसकी आँख पहले मूँदी जाये।

इसका निर्णय करनेके लिये ललिता एक बित्ता लम्बी दूबका एक तिनका हाथमें उठा लेती हैं। उसे अपनी दोनों हथेलियोंको सटाकर इस प्रकार रख लेती हैं कि तिनकेका एक छोर तो हथेलीके भीतर छिप जाता है एवं दूसरा बाहर लटकता रहता है। लगभग दो-तिहाई तिनका बाहर निकला हुआ है और एक-तिहाई ललितारानीकी सटी हुई हथेलीके अन्दर छिपा हुआ है। ललिता कहती हैं—देखो, श्यामसुन्दर! तुम एवं मेरी सभी सखियाँ इस तिनकेको थोड़ा-थोड़ा बाहरकी ओर खींचो। जिसके हाथसे खींचे हुए यह तिनका सम्पूर्ण रूपसे बाहर निकल आयेगा, वही पहले चोर बनेगा। उसकी आँख पहले मूँदी जायेगी।

ललिताकी बात सुनकर श्रीश्यामसुन्दर आगे बढ़कर तिनकेको किञ्चित् खींचते हैं। खींचकर छोड़ देते हैं तब प्रेमसे राधारानीसे कहते हैं—थोड़ा तू खींच।

ललिता हँसकर कहती हैं—अरे! यह कैसे खींचेगी? यह तो आँख मूँदनेवाली है।

श्यामसुन्दर कुछ मुस्कुराकर कहते हैं—तू भला थोड़े छूटनेकी है।

श्यामसुन्दर और सखियोंको खींचनेके लिये संकेत करते हैं। विशाखा जाकर थोड़ा खींच लेती हैं, फिर चित्रा खींचती हैं, फिर इन्दुलेखा, चम्पकलता, तुङ्गविद्या, सुदेवी, रङ्गदेवी क्रमशः थोड़ा-थोड़ा खींचती हैं। अब तिनका अधिकांश बाहर निकल चुका है। लगभग एक-डेढ़ अङ्गुल भीतर छिपा है। फिर श्यामसुन्दर थोड़ा खींचते हैं और उसी प्रकार क्रमशः उपर्युक्त सभी सखियाँ खींचती हैं; पर तिनका अभी भी बाहर नहीं निकला है। किसीको पता तो था नहीं कि कितनी लम्बी दूबका तिनका ललिताने उठाया है। इसलिये सभी इतना कम खींचती हैं कि कठिनाईसे प्रत्येक बार तिनका एक चावलभर बाहर निकल पाता है।

अब फिर श्यामसुन्दरकी बारी आ गयी। श्यामसुन्दरने तिनकेको छुआ ही था कि तिनका बाहर निकल पड़ता है। श्रीश्यामसुन्दर हँसते हुए ललिताके दोनों कन्धोंको पकड़ लेते हैं तथा कहते हैं—तुमने छल किया है। जानबूझकर मेरे छूते ही तुमने तिनका गिरा दिया है।

ललिता कहती हैं—नहीं, तुमने खींचा है। मैं तो जैसे पहले पकड़े हुए थी, वैसे ही पकड़े रही हूँ।

श्यामसुन्दर कन्धा छोड़कर अलग हो जाते हैं तथा कहते हैं—अच्छी बात है, देख लूँगा। पहलेसे ही कहे देता हूँ, इस बार तुम्हारी ही बारी आयेगी; तू भले कहीं भी छिप जा।

ENGLISH TRANSLATION

The whole company moves eastward to play blindman's buff. After about twenty yards they reach a place encircled by a round henna bed. Priyā, Her Beloved, and the sakhīs enter through an arched gate. The enclosure is about sixty yards across and surrounded by a henna bed five cubits wide. Four arched gates open in the cardinal directions, each covered with flowering creepers. Inside, shrubs suitable for hiding stand at intervals of five, six, seven, or eight cubits. Many kinds of flowers blossom throughout the garden.

At the center lies an open square extending eight cubits on every side, carpeted in green grass so tender and dense that it resembles fine green velvet. Priyā and Her Beloved sit in the middle facing west. Some sakhīs sit around Them while others stand, gazing upon Śyāmasundara's lotus face. They now consider who should first become the seeker, whose eyes should first be covered.

To decide, Lalitā picks up a blade of dūrvā grass a span long. Pressing her palms together, she conceals one end within them while the other hangs outside. About two thirds remains visible and one third hidden. "Śyāmasundara," she says, "You and all my companions must each draw this blade outward a little. Whoever pulls it entirely free will become the first seeker and have their eyes covered."

Śyāmasundara steps forward and draws the blade slightly, then lovingly tells Rādhārāṇī, "You pull a little."

Lalitā laughs. "How can She pull? She is the one who will cover Your eyes."

Śyāmasundara smiles. "And do you imagine you will escape?"

At His sign Viśākhā draws the blade a little, followed by Citrā, Indulekhā, Campakalatā, Tuṅgavidyā, Sudevī, and Raṅgadevī. Most of it has emerged, with only an inch or so concealed. Śyāmasundara draws again, then each sakhī in the same order, yet the blade still does not come free. No one knows its length, so each pulls so cautiously that it moves scarcely the breadth of a grain of rice at every turn.

Śyāmasundara's turn comes again. The instant He touches the grass, it slips out. Laughing, He takes Lalitā by both shoulders. "You cheated. You deliberately dropped it the moment I touched it."

"No," Lalitā replies. "You pulled it. I held it just as before."

Śyāmasundara releases her and says, "Very well, we shall see. I warn you now: your turn will come next, no matter where you hide."

ORIGINAL
Hindi prose

अब खेल प्रारम्भ होता है। वृन्दादेवी निर्णय करनेवाली बनती हैं तथा ध्रुवस्थान श्रीरूपमञ्जरी बनती हैं। श्रीश्यामसुन्दर पूर्वकी ओर मुख करके बैठ जाते हैं। श्रीप्रिया मन्द-मन्द मुस्कराती हुई आगे बढ़कर श्रीश्यामसुन्दरकी दोनों आँखोंको पीछेसे अपने दोनों हाथोंको बहुत धीरेसे बड़ी कोमलताके साथ मूँद लेती हैं। आँख मूँदते ही श्रीप्रियाके अङ्गोंमें प्रेमके विकार पैदा होने लगते हैं। शरीरसे हठात् इतना पसीना निकलने लग जाता है कि नीली साड़ी मानो भीग-सी जाती है तथा हाथ भी काँपने लगते हैं।

ललिता मुस्कुराकर कहती हैं—तब तो खेल हो चुका! श्यामसुन्दर! तुम हो बड़े चतुर! तुम्हारी इच्छा थी न, इसीलिये तुमने राधाको चुन लिया। अब बताओ, इसके द्वारा तो तुम्हारी आँखें मूँदी और न मूँदी जानी, दोनों एक समान ही हैं?

श्रीललिताकी बात सुनकर रानी कुछ लजा-सी जाती हैं। फिर वे कुछ धैर्य धारण करती हैं और कुछ लजायी मुद्रामें ललितासे डाँटती हुई कहती हैं—अच्छा-अच्छा, चल, हट! तू भला हमसे अच्छा मूँद पाती क्या?

इसके बाद श्रीप्रिया अपना रूमाल हाथमें लेकर अपना मुँह पोंछने लगती हैं। फिर तुरन्त ही उस रूमालकी चार तह बनाकर श्यामसुन्दरकी आँखोंपर उस रूमालको रख देती हैं तथा इस बार बड़े साहसके साथ धीरेसे रूमालको अपने दोनों हाथोंसे दबा देती हैं। श्रीप्रियाके वैसा करते ही श्यामसुन्दर अपने दोनों हाथ आँखोंके पास ले जाते हैं। उसी समय वृन्दा सामने आ जाती हैं तथा कहती हैं—नहीं श्यामसुन्दर! यह तो अनुचित है। तुम ऐसा नहीं कर सकते। ऐसा करके तुम राधारानीके हाथोंको ढीला बना लोगे और फिर देख लोगे कि कौन कहाँ छिपती है।

श्यामसुन्दर हँसकर कहते हैं—अच्छी बात है, ऐसा नहीं करूँगा।

अब श्यामसुन्दर पालथी मारे हुए भूमिपर दोनों हाथोंको टेककर बैठे रहते हैं। श्रीवृन्दा देख लेती हैं कि आँखें ठीकसे मूँदी हुई हैं, तब वे ‘एक-दो’ बोलती हैं। श्रीवृन्दा साथ ही यह भी कहती हैं—आजके खेलमें कोई भी मेंहदीके घेरेके बाहर जाकर नहीं छिपेगी। वह नियम जो सखी तोड़ेगी, उसका हाथ बाँधकर मैं श्यामसुन्दरको सौंप दूँगी। श्यामसुन्दर फिर जो दण्ड देना चाहेंगे, देंगे। मैं फिर उसमें कुछ भी रोक-टोक नहीं करूँगी।

वृन्दाके ‘एक-दो’ बोलते ही सखियाँ इधर-उधर दौड़-दौड़कर झाड़ियोंमें जा छिपती हैं। कोई पूर्व, कोई पश्चिम, कोई उत्तर, कोई दक्षिणकी ओर चली जाती हैं। जब सखियाँ ठीकसे छिप जाती हैं, तब वृन्दादेवी उच्च स्वरसे बोलती हैं—तीन!

वृन्दादेवीके ऐसा बोलते ही श्रीराधा श्यामसुन्दरकी आँखोंपरसे रूमाल हटा देती हैं। श्यामसुन्दर हँसते हुए उठकर खड़े हो जाते हैं तथा जहाँपर वे बैठे थे, उसी स्थानपर रूपमञ्जरी, जो कि ‘ध्रुवस्थान’ बनी है, आकर बैठ जाती है। श्रीराधा रूपमञ्जरीके पीछे खड़ी होकर श्रीश्यामसुन्दरके मुखकी शोभा निहारती हैं।

श्यामसुन्दर एक बार चारों ओर दृष्टि डालकर संकेतमें श्रीप्रियासे पूछते हैं कि ललिता किधर गयी है। श्रीप्रिया एक बार तो मुस्कुरा देती हैं, फिर वृन्दाकी ओर देखने लगती हैं कि वृन्दा किधर देख रही हैं। श्रीवृन्दा इन दोनोंकी ओर देख रही थीं, इसलिये श्रीप्रिया विचारमें पड़ जाती हैं कि यदि कुछ भी संकेत किया तो वृन्दा ललितासे कह देंगी और ललिता फिर हमसे लड़ेंगी। श्रीप्रिया ऐसा सोचकर शीश नीचा कर लेती हैं।

श्यामसुन्दर फिर भी कुछ दूरपर खड़े रहकर बाट देखते हैं कि मेरी प्राणेश्वरी राधा कुछ-न-कुछ संकेत करेगी ही। अतः श्रीप्रिया एक उपाय करती हैं। वे रूपमञ्जरीकी दाहिनी ओर बैठ जाती हैं तथा पीठ उसके सहारे टेक देती हैं। श्रीवृन्दा जबतक श्रीराधाके सामने आती हैं, उसके आनेके पहले ही श्रीप्रिया अपने दोनों हाथोंसे अपने हृदयको दबाकर मुस्कुराती हुई कनखियोंसे पश्चिमकी ओरका संकेत कर देती हैं। तबतक श्रीवृन्दा सामने आकर राधाके मुखकी ओर देखने लग जाती हैं।

श्यामसुन्दर मुस्कुरा देते हैं, जिससे श्रीप्रिया समझ जाती हैं कि श्यामसुन्दर समझ गये हैं। श्यामसुन्दर भी श्रीप्रियाको बचानेके उद्देश्यसे ऐसा भाव बनाते हैं मानो सोच रहे हों कि किधर चलें। पहले कुछ दूर दक्षिणकी ओर बढ़ते हैं, फिर दो झाड़ी पार करके पुनः वहीं वापस लौट आते हैं। इस बार उत्तरकी ओर बढ़ते हैं। कुछ दूर बढ़ते चले जाते हैं। इसी समय तुङ्गविद्या दक्षिणी ओरसे दौड़ती हुई आकर ध्रुवस्थानको छू लेती हैं, छूकर हँसने लगती हैं।

श्यामसुन्दर फिर पीछे लौट आते हैं। खेलके नियमके अनुसार जो चोर बनता है, उसे ध्रुवस्थानसे पाँच हाथ हटकर खड़ा रहना पड़ता है, जिससे छिपी हुई सखियाँ आ-आकर ध्रुवस्थानको छू सकें। अतः श्यामसुन्दर ध्रुवस्थानसे पहले पाँच हाथ दक्षिण खड़े रहे, फिर उत्तरकी ओरसे लौटकर पाँच हाथकी दूरीपर दक्षिणकी ओर मुख किये खड़े हैं।

ENGLISH TRANSLATION

The game begins. Vṛndādevī serves as arbiter and Rūpamañjarī becomes the fixed home base. Śyāmasundara sits facing east. Smiling gently, Śrī Priyā comes forward and, from behind, covers both His eyes with Her hands in the utmost tenderness. The instant She touches Him, transformations of love arise in Her limbs. Perspiration suddenly pours from Her body until Her blue sari appears drenched, and Her hands begin to tremble.

Lalitā smiles. "Then the game is already over! Śyāmasundara, You are very clever. This is precisely why You wished to choose Rādhā. Tell us, is there any difference between having Your eyes covered by Her and not having them covered at all?"

The Queen grows shy, then gathers some composure and scolds Lalitā with bashful affection. "Enough, go away! Do you imagine you could cover them better than I?"

Śrī Priyā wipes Her face with Her handkerchief, folds it four times, places it across Śyāmasundara's eyes, and courageously presses it down with both hands. He raises His hands toward His eyes, but Vṛndā immediately steps before Him. "No, Śyāmasundara, that is unfair. You may not do that. You will loosen Rādhārāṇī's hands and then see where everyone hides."

Śyāmasundara laughs. "Very well, I shall not."

He remains seated cross-legged with both hands upon the ground. Once Vṛndā verifies that His eyes are properly covered, she calls, "One, two!" She also declares, "No one may hide outside the henna enclosure today. Any sakhī who breaks this rule will have her hands bound and be delivered to Śyāmasundara. Whatever punishment He gives her, I shall not interfere."

At "one, two," the sakhīs scatter among the shrubs, some east, some west, some north, and some south. When all are hidden, Vṛndā calls loudly, "Three!"

Śrī Rādhā removes the cloth from Śyāmasundara's eyes. He rises laughing, while Rūpamañjarī seats herself where He had been, becoming the home base. Śrī Rādhā stands behind her and gazes upon Śyāmasundara's lotus face.

Śyāmasundara looks in all directions and silently asks Śrī Priyā where Lalitā has gone. She smiles, then checks where Vṛndā is looking. Because Vṛndā is watching Them, Priyā thinks, "If I signal anything, Vṛndā will tell Lalitā and Lalitā will quarrel with Me." She lowers Her head.

Śyāmasundara waits some distance away, confident that His sovereign beloved will somehow signal Him. Śrī Priyā devises a way. She sits to Rūpamañjarī's right and leans against her back. Before Vṛndā can step in front of Her, Priyā presses both hands to Her heart, smiles, and glances sidelong toward the west. Vṛndā then comes before Her and watches Her face.

Śyāmasundara smiles, showing that He has understood. To protect Śrī Priyā from blame, He pretends to deliberate. First He walks some distance south, passes two shrubs, and returns. Then He heads north. At that moment Tuṅgavidyā runs in from the south, touches home base,

and laughs.

Śyāmasundara returns. By the rules, the seeker must stand five cubits from home base so that those in hiding have a chance to run in and touch it. He first stands five cubits south of it, then, returning from the north, stands at the same distance facing south.

ORIGINAL Hindi prose

इधर ललिता पहले तो पश्चिमकी ओर गयीं। फिर लगभग दस-पन्द्रह गज जाकर झाड़ियोंमें छिपती हुई उत्तर दिशाकी ओर आकर छिप गयी थीं। श्यामसुन्दर खड़े-खड़े सोच ही रहे थे, तभी पश्चिमसे विशाखा आती हैं। श्यामसुन्दर चाहते तो विशाखाको पकड़कर छू सकते थे, क्योंकि विशाखा बहुत कम दूरीपर ही थीं; पर श्यामसुन्दरने तो पहलेसे ही घोषणा कर दी है कि उन्हें ललिताको चोर बनाना है, इसलिये वे इसी घातमें हैं कि वह ध्रुवस्थानको छूने न पाये।

श्यामसुन्दर विचार रहे हैं कि विशाखा एवं तुङ्गविद्या तो आ गयी हैं। अब छः सखियाँ और बची हैं, जिनमें चित्रा तो सदा उत्तरकी ओर जाया करती है, इसलिये आज भी वह उधर ही गयी होगी। प्रियाने कहा भी है कि ललिता पश्चिमकी ओर गयी है तो मैं पश्चिमकी ओर ही चलूँ।

श्यामसुन्दर पश्चिमकी ओर बढ़ते हैं तथा ललिता झाड़ियोंके छिद्रसे उन्हें पश्चिमकी ओर बढ़ते देखकर ध्रुवस्थानकी ओर चलने लगती हैं। श्रीप्रियाकी दृष्टि श्यामसुन्दरकी ओर ही लगी है। वृन्दा इस बार श्रीराधाके मुखके सामनेसे हटकर पश्चिमकी ओर आ जाती हैं। उनके सामनेसे चले जानेपर श्रीप्रिया उठकर खड़ी हो जाती हैं तथा पश्चिमकी दिशामें श्यामसुन्दरकी ओर ही देखने लग जाती हैं।

श्यामसुन्दर एक झाड़ीके छिद्रसे चित्राको उत्तरकी ओर छिपी देख लेते हैं तथा कहते हैं—चित्रारानी! तुम्हें डर नहीं है। तुम स्वच्छन्द होकर जा सकती हो। मुझे तो ललिताको चोर बनाना है।

इस बातको सुनकर जो सखियाँ छिपी हुई थीं, वे कुछ साहसके साथ एक-एक करके आने लग जाती हैं। पूर्वकी ओरसे रङ्गदेवी, पश्चिमकी ओरसे सुदेवी, उत्तर एवं पश्चिमके कोनेसे चम्पकलता, दक्षिण एवं पूर्वके कोनेसे इन्दुलेखा आ-आकर ध्रुवस्थानको छू लेती हैं। अब केवल चित्रा एवं ललिता बच जाती हैं, जिसमें चित्राको तो श्यामसुन्दरने देख लिया है; पर ललिता किस दिशामें हैं, वह अभीतक किसीको मालूम नहीं।

श्यामसुन्दर कुछ देरतक सोचते हैं। फिर कुछ सोचकर पूर्व एवं उत्तरके कोनेवाली झाड़ियोंको पार करते हुए आगे बढ़ने लगते हैं। श्रीश्यामसुन्दर पाँच-सात झाड़ियोंको पार करके आँखोंसे ओझल हो गये। उनके छिपते ही श्रीप्रियाके मुखपर अतिशय व्याकुलताके चिह्न दीखने लग जाते हैं। वे घबरायी-सी होकर पूछती हैं—विशाखे! श्यामसुन्दर कहाँ गये, किधर चले गये? ओह, ललिता भी बहुत हठीली है! जा, तुरन्त इसे बुला ला!

अत्यधिक अधीर होकर राधारानी चिल्लाती हुई 'ललिता! ललिता!' पुकारने लग जाती हैं तथा अतिशय व्याकुलतासे इधर-उधर दौड़ने लग जाती हैं।

रानीकी पुकार सुनते ही ललिता दौड़ती हुई उत्तरकी ओरसे आती हैं। रानीकी दशा उस समय बड़ी विचित्र हो गयी है। आँखोंसे झर-झर करते हुए आँसुओंका प्रवाह बह रहा है। सिरसे अञ्चल खिसक गया है। वेणीके बाल खुलकर बिखर गये हैं। वे पगली-सी होकर ललितासे आकर चिपट जाती हैं और बहुत जिज्ञासाभरे स्वरमें पूछने लगती हैं—ललिते! तुम्हें ढूँढ़ते हुए श्यामसुन्दर किधर चले गये? देख, देख, बहिन! वे सचमुच यहाँसे चले गये हैं। यदि वे होते तो अबतक आ जाते। ओह! तुम्हें आये कितनी देर हो गयी, पर वे तो नहीं आये।

रानी यह कहते-कहते मूर्च्छित होकर गिर पड़ती हैं। ललिता सर्वथा घबरा-सी जाती हैं। उनकी आँखोंसे भी छल-छल करते हुए आँसू गिरने लग जाते हैं। वे इस समय किंकर्तव्यविमूढ़-सी हो गयी हैं। विशाखा एवं रूपमञ्जरी दोनों रानीके सिरपर गुलाबपाशसे शीतल जल छिड़क रही हैं। चित्रा पंखा झलने लग जाती हैं।

रानीकी मूर्च्छा नहीं टूटती। सखियोंमें घबराहट फैल जाती है। सबका अन्तर करुणासे भर जाता है। विशाखा बार-बार नासिकाके पास हाथ ले जाती हैं और देखती हैं कि श्वास बन्द तो नहीं हो रहा है। श्वास बहुत ही धीरे-धीरे चल रहा था। बहुत-सी सखियाँ-मञ्जरियाँ इधर-उधर घेरेमें दौड़कर उच्च स्वरमें पुकार रही हैं—प्यारे श्यामसुन्दर! शीघ्र आओ! अरे, खेलको फेंक खायेंगे। देखो, रानीकी दशा कैसी हो गयी है!

ENGLISH TRANSLATION

Lalitā first went west, then after ten or fifteen yards moved secretly through the shrubs and hid to the north. As Śyāmasundara stands deliberating, Viśākhā approaches from the west. He could easily catch and touch her, for she is very near, but He has already announced that He intends to make Lalitā the next seeker. He is intent only upon preventing her from touching home base.

He thinks, "Viśākhā and Tuṅgavidyā have returned. Six remain. Citrā always goes north, so she has probably gone there today as well. Priyā told Me that Lalitā went west, so I shall go west."

Śyāmasundara moves westward. Seeing Him through an opening in the shrubs, Lalitā starts toward home base. Śrī Priyā's gaze remains fixed upon Him. Vṛndā moves away from directly before Rādhā's face and goes west. Once Vṛndā has passed, Śrī Priyā rises and stands looking westward at Śyāmasundara.

Through a gap in a shrub He sees Citrā hidden to the north and says, "Queen Citrā, you need not fear. Go freely. I intend to make Lalitā the seeker."

Hearing this, the hidden sakhīs grow bold and return one by one. Raṅgadevī approaches from the east, Sudevī from the west, Campakalatā from the northwestern corner, and Indulekhā from the southeastern corner. Each touches home base. Only Citrā and Lalitā remain. Śyāmasundara has seen Citrā, but no one yet knows where Lalitā is.

After reflecting, Śyāmasundara advances beyond the shrubs in the northeastern corner. He passes five or seven bushes and disappears from view. The instant He vanishes, signs of unbearable anguish appear upon Śrī Priyā's face. Alarmed, She asks, "Viśākhā, where has Śyāmasundara gone? Which way did He go? Oh, Lalitā is so obstinate! Go and call her at once!"

Growing frantic, Rādhārāṇī cries, "Lalitā! Lalitā!" and runs here and there in desperate agitation.

Hearing Her call, Lalitā rushes in from the north. The Queen's condition has become extraordinary. Tears stream from Her eyes, Her veil has slipped from Her head, and Her braid has loosened and scattered. Like one maddened, She clings to Lalitā and anxiously asks, "Lalitā, where did Śyāmasundara go while searching for you? Look, sister, He has truly left this place. If He were here, He would have returned by now. You came so long ago, but He has not returned."

While speaking, the Queen faints and falls. Lalitā becomes utterly terrified and tears pour from her eyes. She stands bewildered, unable to decide what to do. Viśākhā and Rūpamañjarī sprinkle cool water over the Queen's head from a rose-water sprinkler, while Citrā begins to fan Her.

The Queen does not revive. Panic spreads among the sakhīs and every heart fills with grief. Viśākhā repeatedly places her hand near the Queen's nostrils to ensure that Her breathing has not stopped. Her breath moves only very faintly. Many sakhīs and mañjarīs run about the

enclosure crying loudly, “Beloved Śyāmasundara, come quickly! We shall abandon the game. See what has happened to the Queen!”

ORIGINAL Hindi prose

पर श्यामसुन्दरकी ओरसे कोई उत्तर नहीं मिलता। एक क्षणमें ही सखियाँ-मञ्जरियाँ उस घेरेकी झाड़ी-झाड़ीको छान डालती हैं; पर कहीं भी श्यामसुन्दरका पता नहीं चलता। सभी निराश होकर लौट आती हैं। ललिताके मुखपर अवसन्नता छायी हुई है। वे चित्रकी भाँति मूर्तिवत् खड़ी हैं। जब दासियाँ निराश होकर लौट जाती हैं तो अब ललिताका धैर्य दूर हो जाता है। रानीकी दशा देखकर वे विलाप करती हुई पुकारकर कहती हैं—प्यारे श्यामसुन्दर! एक बार नहीं, हजार बार मैं चोर बनूँगी। तुम आ जाओ! अब देर मत करो!

ललिताके इस प्रकार कहते ही मतवाली चालसे चलते हुए श्यामसुन्दर पूर्वकी ओरसे आते हुए दिखायी देते हैं। सखियोंकी हँसी तो पड़ जाती है, पर ललिता इतनी व्याकुल थीं कि उनकी आँखें आँसुओंसे भरी हुई थीं। उनके सामने अन्धकार-सा छाया हुआ था। वे मूर्च्छित होकर गिरनेवाली ही थीं कि श्यामसुन्दर आकर उनको पकड़ लेते हैं। हृदयसे लगाकर रूमालसे ललिताके आँसू पोंछते हुए बड़े प्रेमसे कहते हैं—यह देख! मैं आ गया; घबराती क्यों है?

श्रीश्यामसुन्दरका कोमल स्पर्श पाकर ललिता शान्त हो जाती हैं, पर अनुराग, कोप एवं आनन्दके भावोंका आवेग अतिशय बढ़ा रहनेके कारण वे बहुत ही गम्भीर रहती हैं, कुछ भी बोलती नहीं। सखियोंमें आनन्द छा जाता है, पर राधारानी अभी भी मूर्च्छित ही पड़ी हैं।

गोदमें मूर्च्छाकी अवस्थामें रानी यह अनुभव कर रही हैं कि श्यामसुन्दरको ढूँढ़ते-ढूँढ़ते मैं बहुत दूर वनमें चली आयी हूँ। कहीं भी श्यामसुन्दरका पता नहीं चल रहा है। हाँ, उनकी नूपुर-ध्वनिका रुनझुन-रुनझुन स्वर रह-रह करके सुनायी पड़ रहा है। इससे श्रीप्रियाको यह अनुमान हो रहा है कि मैं पीछे-पीछे दौड़ती आयी हूँ और वे छिपते हुए आगे बढ़ रहे हैं। श्रीप्रिया इसी भावावेशमें कभी-कभी उठकर बैठ जाती हैं तथा कभी-कभी भागनेकी चेष्टा करने लगती हैं। श्यामसुन्दर मधुर-मधुर मन्द-मन्द मुस्कुराते हुए अपनी प्राणेश्वरीकी भ्रम-लीला देख रहे हैं। उनके आ जानेके कारण सखियोंमें कोई चिन्ता नहीं रह गयी है। सभी निश्चिन्त हो गयी हैं; क्योंकि सखियोंके मनमें श्यामसुन्दरकी उपस्थितिसे श्रीप्रियाके प्रति किसी प्रकारकी अनिष्ट-आशङ्का बहुत ही कम आती है।

सखियाँ बहुत ही घबरा गयी थीं। उनका मन सन्देहसे आकुल हो गया था। आजकी विरह-दशा कुछ ऐसी भीषण हो गयी थी एवं श्रीप्रियाके ऊपर इसका इतना गहरा प्रभाव पड़ा था कि सभी सखियाँ श्रीप्रियाके जीवनसे निराश-सी होने लग गयी थीं। अब श्यामसुन्दरके आ जानेपर तथा उन्हें हँसते हुए देखकर उन सबको ढाढ़स हो गया है। श्रीप्रियाकी भी अचेतनता अब कम हो गयी थी एवं वे भावावेशकी दशामें आ गयी थीं। इसलिये सखियाँ भी श्रीप्रियाकी प्रेमलीला देखने लग जाती हैं।

श्यामसुन्दर रह-रहकर अपना पैर नचा देते हैं, जिससे नूपुर रुनझुन-रुनझुन शब्द करने लगते हैं और श्रीप्रिया उठकर भागनेकी चेष्टा करती हैं। इसी भावावेशमें श्रीप्रिया ऐसा अनुभव करने लग जाती हैं कि मैं कलसी लेकर यमुनाका जल भरने आयी हूँ। दूरपर खड़े होकर श्यामसुन्दर तिरछी चितवनसे मेरी ओर निहार रहे हैं। उनकी ओर दृष्टि जाते ही मेरी कलसी सिरसे गिर जाती है। मैं घबराकर अपनी साड़ी सँभालती हुई भाग रही हूँ। भागते-भागते अपने घर आ गयी हूँ। सखियोंकी गोदमें अचेत होकर गिर पड़ी हूँ। सखियाँ मुझसे बार-बार पूछ रही हैं—क्यों बहिन, क्या हो गया है?

> राधारानी उसके उत्तरस्वरूप भावावेशमें ही इस बार स्पष्ट बोल उठती हैं—कैसे जाऊँ री बीर! घट भरिवे नीर।
>
> श्रीप्रियाके मुखसे इन शब्दोंको सुनकर ललिता, विशाखा एवं अन्य सखियाँ समझ जाती हैं कि रानी किस भावावेशमें हैं। आज थोड़ी देर पहले ही, जब कि श्यामसुन्दरकी प्रतीक्षामें रानी बैठी थीं, तो सखियोंके बहुत आग्रह करनेपर मन बहलानेके लिये वीणापर उन्होंने एक पद गाया था। गीतमें उन्होंने अपने जीवनकी आरम्भिक लगनकी कुछ बात अपनी सखियोंको सुनायी थी। अतः अभी मूर्च्छित होकर वे सचमुच उस भावसे आविष्ट हो गयीं। विशाखा खड़ी होकर श्यामसुन्दरके कानमें उनके आनेके पहले जो पद आदि गाये गये थे, उसकी बात बता देती हैं।

ENGLISH TRANSLATION

No answer comes from Śyāmasundara. In a moment the sakhīs and mañjarīs search every shrub in the enclosure, but find no trace of Him. They return disheartened. Desolation covers Lalitā's face, and she stands motionless like a painted figure. When the maidservants return without Him, her composure finally breaks. Seeing the Queen's condition, she laments aloud, "Beloved Śyāmasundara! Not once but a thousand times I shall become the seeker. Please come back. Do not delay!"

The moment she speaks, Śyāmasundara appears from the east, walking with an intoxicating gait. The sakhīs begin to laugh, but Lalitā is so distressed that tears fill her eyes and darkness veils her sight. She is about to collapse when Śyāmasundara catches her. Drawing her to His heart and wiping her tears with a cloth, He lovingly says, "Look, I have returned. Why are you frightened?"

His tender touch calms Lalitā. Yet the combined surge of affection, anger, and joy remains so intense that she stands grave and silent. Delight spreads among the sakhīs, though Rādhārāṇī still lies unconscious.

While fainted in a sakhī's lap, the Queen experiences that She has wandered deep into the forest searching for Śyāmasundara. She can find Him nowhere, yet from time to time hears the tinkling of His anklets. She imagines that She runs behind Him while He hides and advances ahead. In this absorption She sometimes sits up and sometimes tries to run. Smiling softly and sweetly, Śyāmasundara watches the bewildered līlā of His sovereign beloved. With His return, the sakhīs are no longer afraid, for when He is present they rarely fear any calamity for Śrī Priyā.

They had been deeply alarmed, their minds tormented by doubt. Her separation had become so terrible and affected Her so profoundly that they had begun to despair for Her life. Now Śyāmasundara has returned and is smiling, so they regain courage. Śrī Priyā's unconsciousness also lessens and becomes a state of devotional absorption. The sakhīs therefore begin watching Her līlā of love.

From time to time Śyāmasundara moves His foot, making His anklets ring, and Śrī Priyā tries to rise and run. In Her absorption She now feels that She has come with a water pot to draw water from the Yamunā. Śyāmasundara stands at a distance casting sidelong glances toward Her. The instant She sees Him, the pot falls from Her head. Alarmed, She gathers Her sari and runs. Reaching home, She collapses unconscious into the sakhīs' laps, while they ask repeatedly, "Sister, what has happened?"

Rādhārāṇī clearly answers from within that state, "How can I go, dear companion, to fill my water pot?"

Hearing these words, Lalitā, Viśākhā, and the others understand Her mood. Earlier that day, while the Queen waited for Śyāmasundara, the sakhīs had repeatedly urged Her to distract Herself by singing a song upon the vīṇā. In it She had told them of the first awakening of love in Her life. Now, while unconscious, She has truly entered that very mood. Standing beside Śyāmasundara, Viśākhā tells Him about the song they had sung before He arrived.

ORIGINAL Braj song in Rāga Deśa and Hindi prose

श्यामसुन्दर अत्यन्त प्रसन्नतासे कहते हैं—तू उस पदको फिरसे गा। मैं साथ-साथ वंशी बजाता रहूँगा।

विशाखा तुरन्त ही वीणा मँगवा लेती हैं। इधर प्रिया बार-बार मुखसे रट रही हैं—कैसे जाऊँ री बीर! घट भरिवे नीर। वीणाका सुर शीघ्रतासे ठीक करके विशाखा अत्यन्त मधुर स्वरमें गाने लगती हैं। आज श्यामसुन्दर इतनी चतुराईसे वंशी बजा रहे हैं मानो कोई दूसरी सखी विशाखाके सुरमें सुर मिलाकर गा रही हो। विशाखा गा रही हैं—

राग देश

कैसे जाऊँ री बीर! घट भरिवे नीर।
ठाढ़ो जमुना तीर साँवरो अहीर मारे दृगन तीर हरे सुधि सरीर॥
नित यही चित में चिन्ता समाय ब्रजराज सों कैसे बचेगी लाज,
जिया काँपें आज नहिं धरत धीर।
बाको रूप है कै कोउ जादू यन्त्र कैधों नारायन वशीकरन मन्त्र,
कैधों तन्त्र के पल ही में करे फकीर॥

गीत सुनते-सुनते श्रीप्रिया सर्वथा बावली-सी होकर उठकर बैठ जाती हैं तथा श्यामसुन्दर, जो पासमें बैठकर वंशीमें तान भर रहे हैं, उनके गलेमें बाँहें डालकर सिसक-सिसककर रोने लग जाती हैं। श्रीप्रिया ऐसा अनुभव कर रही हैं कि कोई नागरी ग्वालिन कहींसे आयी है और वही मुझे यह संगीत सुना रही है। श्रीप्रिया कुछ देरतक रोती रहकर फिर उसी भावावेशमें श्यामसुन्दरसे पूछती हैं—बहिन! बता, तू कौन है? कहाँसे आयी है? आह! मेरे प्यारे श्यामसुन्दरकी चितवनसे घायल होकर तू भी मेरे समान ही तड़प रही है। अच्छा, बहिन! तू मेरे पास ही रह। मुझे छोड़कर मत जाना। हम दोनों एक-दूसरीके सामने हृदय खोलकर रोयेंगी, रो-रोकर जी हलका करेंगी।

श्यामसुन्दर श्रीप्रियाको सँभाले रहकर मुस्कुराते हुए यह प्रेम-लीला देख रहे हैं। देख-देखकर वे आनन्दसे उत्तरोत्तर विभोर होते जा रहे हैं। वे अपने प्यारभरे हाथसे श्रीप्रियाकी बिखरी हुई लटोंको ठीक करते जा रहे हैं। श्रीप्रिया बार-बार उसी भावावेशमें पूछ रही हैं—बोल, मुझे छोड़कर तू नहीं जायेगी न?

श्यामसुन्दर प्रियाकी इस व्याकुलताको देखकर बड़ी चतुराईसे धीमे स्वरमें कहते हैं—नहीं जाऊँगी, तू निश्चिन्त रह।

यद्यपि श्यामसुन्दरने उत्तर बहुत धीमे स्वरमें दिया, पर अपने प्रियतम प्राणेश्वरकी चिर-परिचित यह कण्ठ-ध्वनि श्रीप्रियाके हृदयको भुला नहीं सकी। श्रीप्रिया चौंककर आँखें खोल देती हैं। भावावेश शिथिल होने लगता है। वे कुछ देरतक निर्निमेष नयनोंसे प्यारे श्यामसुन्दरके मुखारविन्दपर दृष्टि टिकाये हुए देखती रहती हैं। धीरे-धीरे पूर्ण बाह्य ज्ञान हो जाता है। श्रीप्रिया यह अनुभव करती हैं कि मैं सखियोंके सामने पूर्णतः अस्त-व्यस्त अवस्थामें श्यामसुन्दरके गलेमें बाँह डाले बैठी हूँ। रानी बड़ी शीघ्रतासे उठ पड़ती हैं तथा अत्यधिक संकुचित होकर अञ्चल ठीक करने लगती हैं। श्यामसुन्दर खिलखिलाकर हँसने लगते हैं। सखियाँ-मञ्जरियाँ भी खुलकर हँसने लगती हैं। ललिता, जो अबतक बहुत गम्भीर बनी हुई थीं, वे भी खिलखिलाकर हँस पड़ती हैं।

अब श्रीप्रियाको बहुत संकुचित देखकर बात बदलनेके उद्देश्यसे श्यामसुन्दर कहते हैं—प्रिये! देख, अब ललिता हार गयी है। अबकी बार तो इसकी आँख मूँदी ही जायेगी। इतना ही नहीं, एक हजार बार और इसने आँख मूँदी जानेकी अयाचित स्वीकृति दी है। इसके अतिरिक्त खेलके नियमके अनुसार एक घंटेतक इसे मेरे हाथकी कठपुतली बनकर, मैं जैसे नचाऊँगा, वैसे नाचना पड़ेगा। क्यों, वृन्दे! तू पञ्च बनी है। मैं यदि कुछ अनुचित कह रहा हूँ तो बता देना।

श्यामसुन्दरकी बात सुनकर ललिता प्रेमभरी चितवनसे श्यामसुन्दरकी ओर देखती हुई कहती हैं—मैंने तो तुम्हें भरपूर छकाया, पर क्या करूँ, मैं तो अपनी इस बावली सखी राधाके कारण विवश हो जाती हूँ।

श्यामसुन्दर हँसते हुए कहते हैं—इसमें क्या आपत्ति है, फिरसे खेल करके मनकी उमङ्ग पूरी कर ले।

रानी बीचमें ही बोल उठती हैं—ना, ना, अब भर पायी। अब मैं आँखमिचौनीका खेल तो नहीं ही होने दूँगी!

श्रीश्यामसुन्दर, ललिता एवं अन्यान्य सखियाँ खुलकर हँस पड़ती हैं। श्रीश्यामसुन्दर श्रीप्रियाको हृदयसे लगा लेते हैं। विश्राम करनेके लिये चित्राके कुञ्जकी ओर श्रीप्रिया-प्रियतम गलबाँही दिये चल पड़ते हैं।

ENGLISH TRANSLATION

Śyāmasundara says with great delight, "Sing that song again. I shall accompany you upon the flute."

Viśākhā immediately has a vīṇā brought. Priyā meanwhile repeats, "How can I go, dear companion, to fill my water pot?" Viśākhā quickly tunes the instrument and begins singing in an exquisitely sweet voice. Śyāmasundara plays with such skill that His flute seems like a second sakhī joining Viśākhā's melody:

Rāga Deśa

How can I go, dear companion, to fill my water pot?
The dark cowherd stands upon the Yamunā's bank, shooting arrows from His eyes and stealing all awareness from my body.
This single worry forever fills my heart: how shall I preserve my honor before the Prince of Vraja?
My heart trembles today and cannot remain composed.
Is His beauty some magical device, Nārāyaṇa's spell of enchantment,
or a tantric charm that makes one a mendicant in a single moment?

As She listens, Śrī Priyā becomes utterly maddened. She sits up and throws Her arms around the neck of Śyāmasundara, who is seated nearby filling the flute with melody, and begins sobbing. She believes that an urbane cowherd girl has come from somewhere and is singing to Her. After weeping for a while, She asks Śyāmasundara from within that mood, "Sister, tell me, who are you? Where have you come from? Ah, wounded by My beloved Śyāmasundara's glance, you too suffer just as I do. Stay with Me, sister. Do not leave Me. We shall open our hearts and weep before one another, lightening our hearts through tears."

Holding Śrī Priyā steady, Śyāmasundara smiles and watches this līlā of love, becoming ever more overwhelmed with bliss. With His loving hand He arranges Her scattered locks. Still absorbed, Śrī Priyā repeatedly asks, "Tell Me, you will not leave Me, will you?"

Seeing Her distress, Śyāmasundara cleverly answers in a soft, feminine voice, "I shall not go. Be at peace."

Though He speaks very quietly, the eternally familiar voice of Her beloved Lord of life cannot deceive Śrī Priyā's heart. She starts and opens Her eyes. Her absorption begins to subside. For a while She gazes without blinking at beloved Śyāmasundara's lotus face. Gradually full external awareness returns, and She realizes that before all the sakhīs She sits utterly disheveled with Her arms around His neck. The Queen rises at once and, deeply embarrassed, adjusts Her veil. Śyāmasundara bursts into laughter. The sakhīs and mañjarīs laugh openly, and even Lalitā, who had remained grave until now, breaks into laughter.

Seeing Śrī Priyā so embarrassed, Śyāmasundara changes the subject. “Beloved, look, Lalitā has lost. Her eyes must now be covered. Moreover, she has freely agreed to have them covered a thousand more times. Under the rules she must also become a puppet in My hands for one hour and dance exactly as I direct. Vṛndā, you are arbiter. Tell Me if anything I say is unfair.”

Lalitā looks at Him with loving eyes. “I thoroughly outwitted You, but what can I do? I become helpless because of this maddened friend Rādhā.”

Śyāmasundara laughs. “What difficulty is there? Play again and fulfill your heart’s desire.”

The Queen immediately interrupts, “No, no, I have had enough. I shall not allow any more blindfold games!”

Śyāmasundara, Lalitā, and all the sakhīs laugh freely. Śyāmasundara draws Śrī Priyā to His heart, and Priyā and Her Beloved walk arm in arm toward Citrā’s grove to rest.

CHAPTER 19

तत्सुखिया लीला

The Līlā of Joy in the Beloved's Happiness

Source scan pages 213–228

ORIGINAL

Sanskrit invocation

॥ विजयेतां श्रीप्रियाप्रियतमौ ॥

ENGLISH TRANSLATION

May Śrī Priyā and Her most beloved Lord be ever victorious.

ORIGINAL

तत्सुखिया लीला

यमुना-पुलिनके उपवनमें श्यामसुन्दरकी प्रतीक्षामें श्रीप्रिया बैठी हैं। रात तीन घड़ीसे अधिक बीत चुकी है। उपवन यमुनाजीके मोड़पर है; एक छोटी शाखा उसे घेरकर पुनः यमुनामें मिलती है और उसके दोनों छोरों तथा बीचमें सुन्दर पुल हैं, जिनसे व्रजसुन्दरियाँ संकेत-स्थलपर आती हैं। शाखाके उद्गमपर सौ-सौ गजकी सजी वेदी है, नीली कालीन तथा खंभोंपर पीली रेशमी चाँदनी है। जरीसे राधा-कृष्णकी लीलाओंके चित्र और मणियोंका प्रकाश ऐसा लगता है मानो पीले आकाशमें लीलाएँ चल रही हों।

पूर्वोत्तर किनारेके वटवृक्षके नीचे नीले मखमलके आसनपर रानी दक्षिणाभिमुख बैठी हैं। कृष्णपक्षकी तृतीयाका चन्द्र उदित है। बाँयी ओर विशाखा और आगे ललिता उस पथको देख रही हैं जिससे श्यामसुन्दर आते हैं। चम्पई साड़ी पहने रानी बार-बार उठती-बैठती पूछती हैं, “ललिते! प्रभात होनेमें कितनी देर है?”

ललिता कहती हैं, “अभी तीन घड़ी ही बीती है।” रानी कहती हैं कि चन्द्र अस्त होने जा रहा है। ललिता गले लगाकर स्वेद पोंछती हैं और समझाती हैं कि विरहसे दिग्भ्रम हुआ है; चन्द्र अभी उदित हुआ है। रूप श्यामसुन्दरको लेकर आती ही होगी।

ENGLISH TRANSLATION

The Līlā of Living for the Beloved's Joy

Rādhā waits for Śyāmasundara in a jeweled pavilion beside a branch of the Yamunā. Though only three watches have passed, separation makes Her believe dawn is near. Lalitā embraces Her and explains that the moon has only just risen and that Rūpa will soon bring Him.

ORIGINAL

रानी ललिताकी गोदमें सिर रखती हैं। वृन्दा कानमें कुछ कहती हैं तो ललिता क्रोधसे विमलामञ्जरीको आज्ञा देती हैं कि रति और धन्यासे कहो, श्यामसुन्दर आवें तो आने न दें। रानी उठकर करुण स्वरमें रोकती हैं। ललिता कहती हैं, “आज उन्हें दिखा दूँगी कि ललिता क्या है।”

राधा कहती हैं, “ऐसा मत कर, इससे मुझे बहुत दुःख होगा।” ललिताका क्रोध शान्त होता है, पर वह कहती हैं कि राधा ही सब खेल बिगाड़ देती हैं; श्यामसुन्दर शैव्याके कुञ्जके चक्कर लगा रहे हैं।

राधा आँसू रोककर कहती हैं, “मेरे प्रियतम मेरे दास नहीं, मैं उनकी दासी हूँ। रसके समुद्र, सुखके सागर, मेरे जीवन-सर्वस्वका अपनी दासी राधापर पूर्ण अधिकार है। हृदयसे लगायें अथवा चरणोंसे ठुकरा दें, दोनों अवस्थाओंमें यह दासी उन्हींकी है।”

फिर कहती हैं, “यदि उन्हें बहिन चन्द्रावलीके कुञ्जमें सुख मिलता है तो विधाता उनके हृदयमें मेरी स्मृति ढक दें, जिससे मेरे स्मरणसे उनके सुखमें विघ्न न हो।”

ENGLISH TRANSLATION

Learning that He has gone near Śaivyā's bower, Lalitā angrily orders the guards to bar Him. Rādhā stops her and reveals Her heart: Śyāmasundara is not Her servant; She is eternally His, whether embraced or rejected. If He finds joy with Candrāvalī, She prays that even Her memory be hidden from Him so it cannot disturb that joy.

ORIGINAL

विशाखा पूछती हैं, “यदि वे तुम्हारे पास आना बंद कर दें, तुम्हारे सामने चन्द्रावलीके गलेमें बाँह डालकर उसके कुञ्जमें चले जायें तो धैर्य रख सकोगी?” राधा कहती हैं, “सर्वथा दुःख नहीं होगा; आनन्दातिरेकसे मूर्छित हो सकती हूँ। मैं जिसे देखती हूँ, सोचती हूँ कि इसे सजाकर श्यामसुन्दरके चरणोंमें बैठाऊँ तो उन्हें कितना सुख मिलेगा। चन्द्रावलीको देखकर भी यही भाव आता है।

“पर यह होगा नहीं। मैं उनके हृदयको जानती हूँ। प्रेमका असीम सागर उफनता है; उसमें डूबकर देखती हूँ तो अणु-अणुमें मैं ही बैठी हूँ।” भावाविष्ट होकर वे कहती हैं, “मेरे जीवन-सर्वस्व! चन्द्रावलीके साथ इसी उपवनके पुष्प निहारो। तुम्हें उसके साथ देखकर उससे भी अनन्तगुना सुख मिलेगा जितना तुम्हारे आलिङ्गनसे मिलता है।”

वे कहती हैं कि श्यामसुन्दरकी प्रत्येक नवीन शोभा देखकर आँखें वहीं चिपक जाती हैं। यदि उन्हें दुःख पहुँचाकर सुख मिले तो वे अनन्तकाल उन्हें दुःख देते रहें, क्योंकि उनका सुख ही राधाका सुख है।

ENGLISH TRANSLATION

Viśākhā tests Her: could She endure seeing Him embrace Candrāvalī and leave with her? Rādhā says She might faint, but only from excess joy. Every beautiful sakhī makes Her wish to adorn and offer her for His happiness. Yet She knows His heart is an ocean whose every particle contains Rādhā alone. Even if causing Her pain gave Him joy, She would gladly receive it forever.

ORIGINAL

रानी तीन दिन पहलेका रहस्य सुनाती हैं। सूर्यमन्दिरमें श्यामसुन्दर सूखे मुखसे आये और बोले कि वनमें एक सुन्दर किशोरी मिली जिसने उन्हें फटकारा, “मैं राधा नहीं कि तेरे जालमें फँस जाऊँ।” राधाको क्रोध इस बातपर आया कि उसने उनके कोमल हृदयको ठेस पहुँचायी। वे उसे प्रसन्न करके उनके पास लाने चलीं।

वृक्षके पास बैठी सुन्दरीने पहले भय और अविश्वास दिखाया। राधाने कहा कि श्यामसुन्दर उससे प्रेम करते हैं। उसने पूछा कि क्या राधाको ईर्ष्या न होगी। राधाने उसके हाथ पकड़कर शपथ दी, “तुझे पाकर वे प्रसन्न हों तो इससे बढ़कर सुख नहीं। मेरी अपनी कोई कुञ्ज नहीं; आठों सखियोंकी कुञ्ज तुम्हारी है। मैं तुम्हारी दासी होकर जैसा कहोगी वैसा करूँगी।” अन्ततः वह साथ चली।

ENGLISH TRANSLATION

Rādhā recounts a secret test from three days earlier. Śyāmasundara described a beautiful cowherd girl who rebuffed Him. Rādhā's only anger was that the girl had hurt His tender heart. She found her, swore that no jealousy could arise, offered every bower and Her own service, and persuaded her to meet Him.

> ORIGINAL
>
> राधा उसे श्यामसुन्दरके पास लाकर कहती हैं, “मेरी बड़ी बहिन आयी है, इसे कोई कष्ट न हो।” वह मूर्छित होकर गिरती है। राधा जलके छींटे देती हैं तो रंग उतरता है और वह चित्रा निकलती है। चित्रा कहती हैं, “आज मैंने तेरा हृदय देखा और जाना कि श्यामसुन्दरके प्रति प्रेम क्या है।”
>
> श्यामसुन्दर राधाको लगाकर कहते हैं, “मेरे हृदयकी रानी! मैं तुम्हारा बिना मोलका दास हूँ। तुम्हारे त्यागके समान मेरे पास कुछ नहीं जिससे प्रेमका ऋण चुकाऊँ।” चित्राने उनकी आज्ञा और राधाकी सौगन्धसे वेश बनाया था। राधा समझ गयीं कि यह प्रियतमकी लीला थी और वे उन्हें कितना प्रेम करते हैं।

ENGLISH TRANSLATION

The girl faints. Water washes away her coloring and reveals Citrā, disguised by Śyāmasundara to test Rādhā's heart. Citrā says she has now understood true love. Śyāmasundara embraces Rādhā and declares Himself Her unpurchased servant, unable to repay Her sacrifice.

> ORIGINAL
>
> पुनः भावाविष्ट राधा कल्पना करती हैं कि शैव्या चन्द्रावलीका पत्र देने आयी है। वे कहती हैं, “मैं चन्द्रावलीकी दासी हूँ,” और उसके कुञ्जकी ओर दौड़ती हैं। पकड़ी जानेपर भी पुकारती हैं, “चन्द्रावलीसे कह कि राधा तुम्हारी दासी आयी है। झाड़ूँगी, नहलाऊँगी, फूलोंके गहने बनाकर श्यामसुन्दरके पास बैठाऊँगी और पंखा झलूँगी। मैं उनके योग्य नहीं; मेरे प्रेमसे उनका विवेक खोया है। आज उन्हें सच्चा सुख मिलेगा।”
>
> तभी घाटपर छिपे श्यामसुन्दर आकर उन्हें हृदयसे लगा लेते हैं। वे कहते हैं, “आज पहले ही आकर तुम्हारे मुखसे हृदयकी बात सुनने छिपा था। तुम्हारा हृदय सर्वथा श्याममय है। दासी तुम नहीं, मैं तुम्हारा बिना मोलका दास हूँ। तुम्हारे प्रेमका एक कण भीखमें दोगी?” श्रीप्रिया उनके मुखको हाथसे दबा देती हैं कि आगे न बोलें।

ENGLISH TRANSLATION

In another vision Rādhā runs to serve Candrāvalī, promising to bathe, adorn, and seat her beside Śyāmasundara while She fans Them. Śyāmasundara, who has been hidden nearby listening, emerges and embraces Her. He calls Himself Her unpurchased servant and begs for one particle of Her love. She covers His mouth to stop Him speaking further.

ORIGINAL

Braj Bhāṣā song

वृन्दा प्रिया-प्रियतमको सिंहासनपर बैठाती हैं। ललिता उजला शर्बत देती हैं। श्रीप्रिया पहले एक घूँट पीती हैं, फिर श्यामसुन्दर। मधुमतीमञ्जरी वीणा लेकर गाती है:

बसौ मेरे नैननमें दोऊ चन्द।

गौर बरन वृषभानु-नन्दिनी, श्याम बरन नन्द-नन्द॥

गोचक रहे लुभाय रूपमें, निरखत आनन्दकन्द।

है श्रीभट्ट प्रेम-रस इन्धन, क्यों हटे हिय फन्द॥

ENGLISH TRANSLATION

Vṛndā seats Them upon a throne, and They share white sherbet. Madhumatī sings:

May both moons dwell within my eyes,

the fair daughter of Vṛṣabhānu and the dark son of Nanda.

Hidden within enchanting beauty, the root of bliss gazes on.

Śrī Bhaṭṭa says love's rasa feeds the flame, so how could the heart's bond loosen?

CHAPTER 20

मान लीला

The Līlā of Loving Sulk

Source scan pages 229–238

ORIGINAL

Braj Bhāṣā

राधा प्यारी बात सुनो एक मेरी।

मैं आयो चाहत हौं तुम पै बीच लिये उन घेरी॥

जतन अनेक बिनति करि हार्यो कैसे जात न फेरी।

परबस पर्यो दास परमानंद काढ़ि सुनावौं टेरी॥

ENGLISH TRANSLATION

Beloved Rādhā, listen to this one plea of mine. I was coming, longing to reach you, when they surrounded me on the way. I tried every device and made petition after petition, but they would not let me turn away. Overpowered and helpless, says servant Paramānanda, I call out and tell you what befell me.

ORIGINAL

श्रीप्रिया इन्दुलेखाके कुञ्जमें बैठी हैं। गोलाकार संगमरमरकी सुन्दर वेदी है। वेदीका व्यास आठ गज है। वह पृथ्वीसे एक हाथ ऊँची है। वेदीके चारों ओर हरी-हरी दूब उग रही है। दूबको अत्यन्त सुन्दर ढंगसे काट-छाँटकर उसपर चित्रकारी बनायी गयी है। वेदीके ऊपर नीले मखमलका मोटा गद्दा बिछा हुआ है। वेदीके बीचमें नीले मखमलसे जड़ा हुआ सिंहासन है। सिंहासनसे कुछ दूर पश्चिमकी ओर एक छोटा मसनद है, उसीके सहारे श्रीप्रिया पूर्व एवं दक्षिणके कोनेकी ओर मुख किये हुए बैठी हैं। श्रीप्रियाके पीछे ललिता खड़ी हैं। ललिता मन्द-मन्द मुस्कुरा रही हैं तथा दाहिने हाथकी तर्जनी अँगुलीको अपने मुँहके पास ले जाकर दूरपर खड़े हुए श्यामसुन्दरको संकेतसे बोलनेके लिये मना कर रही हैं।

श्रीश्यामसुन्दर वेदीसे लगभग बारह गज पश्चिमकी ओर हटकर सुगन्धित पुष्पके वृक्षकी एक डालीको बायें हाथसे पकड़े हुए हैं। श्यामसुन्दरके दाहिने हाथमें वंशी है। कुञ्जके द्वारके पास आते ही वे विलासमञ्जरीसे यह ज्ञात कर चुके हैं कि आज प्रिया मान करके बैठी हुई हैं। इसीलिये श्यामसुन्दर धीरे-धीरे आकर वेदीसे दूर खड़े होकर ललिताको संकेतसे पूछ रहे हैं, “क्यों, आज क्या ढंग है?”

ललिता पहले तो आँखें तरेरकर कुछ धमकाती हैं, पर श्यामसुन्दरको मुस्कुराते देखकर बरबस मुस्कुरा पड़ती हैं, फिर भी कुछ नहीं बोलनेका संकेत कर रही हैं। श्यामसुन्दर आये हैं, इस बातसे सभी सखियोंमें आनन्दका प्रवाह बह रहा है, पर साथ ही श्रीप्रियाकी गम्भीर मुख-मुद्राको देखकर सभी अपने आनन्दको सँभालकर बहुत शान्तिपूर्वक अपनी-अपनी सेवाका कार्य कर रही हैं। श्रीप्रिया बहुत ही गम्भीर बनी बैठी हैं तथा किसीसे कुछ भी नहीं बोल रही हैं। उनके आगे नबी पड़ा है। वेदीके पूर्व एवं दक्षिणकी ओर अत्यन्त सुन्दर बड़े-बड़े अशोकके दो वृक्ष लगे हुए हैं; उनपर तोता एवं मैनाओंके समूह-के-समूह बैठे हुए हैं। इनके अतिरिक्त विभिन्न जातिके पक्षी कुञ्जके वृक्षोंकी डालियोंपर बैठे हुए कलरव कर रहे हैं।

ENGLISH TRANSLATION

Śrī Priyā is seated in Indulekhā's grove. There is a beautiful circular marble platform, eight yards across and one cubit above the ground. Fresh green grass grows all around it, clipped into exquisite decorative designs. A thick cushion of blue velvet covers the platform, and at its center stands a throne upholstered in the same blue velvet. A little west of the throne is a small bolster. Leaning against it, Śrī Priyā sits facing the southeastern corner. Lalitā stands behind her, smiling softly. Raising the index finger of her right hand to her lips, she signals to Śyāmasundara, who is standing at a distance, that he must not speak.

Śrī Śyāmasundara stands about twelve yards west of the platform, holding a branch of a fragrant flowering tree in his left hand and his flute in his right. On reaching the grove entrance he has already learned from Vilāsamañjarī that Priyā is seated there in loving displeasure. He therefore approaches slowly, stops some distance from the platform, and asks Lalitā by gesture, "What manner of mood is this today?"

At first Lalitā glares and gives him a little scolding look. Yet when she sees Śyāmasundara smile, she cannot keep from smiling herself, though she continues to signal that he must say nothing. All the sakhīs are flooded with joy because Śyāmasundara has come, but seeing Śrī Priyā's solemn expression, they restrain their delight and quietly continue their respective services. Śrī Priyā remains profoundly grave and speaks to no one. Nabī lies before her. Two magnificent aśoka trees rise to the east and south of the platform, crowded with flocks of parrots and mynahs. Birds of many other kinds perch on the branches throughout the grove and fill it with their calls.

ORIGINAL

इस प्रकार श्यामसुन्दरको आये हुए जब कुछ देर हो जाती है, तब अशोक वृक्षपर बैठा हुआ तोता बोल उठता है, “देवि इन्दुलेखे! अहा देखो, प्यारे श्यामसुन्दर तुम्हारे कुञ्जमें पधारे हैं। अहा! उनकी कैसी विलक्षण शोभा है! अलकावलीकी दो बिखरी हुई लटें कपोलोंपर आ गयी हैं। ऐसा प्रतीत हो रहा है मानो भौंरोंके समूह दो दिशाओंसे उड़ते हुए आकर, फिर एक पंक्तिमें बैठकर श्यामसुन्दरके मुख-कमलका मकरन्द-पान कर रहे हों। अहा! कितनी सुन्दर आँखें हैं! क्या उपमा दूँ, कुछ समझमें नहीं आता। अरे! ये वस्तुतः सर्वथा अनुपम हैं। अहा! देखो, अधरपर कैसी मन्द मुस्कान है! प्यारे श्यामसुन्दर! बलिहार है तुम्हारे इस रूपको!”

तोता कुछ देर ठहरकर फिर कहता है, “देवि इन्दुलेखे! आज क्या बात है? तुम खड़ी हो? सुनो, मेरे प्यारे श्यामसुन्दरको खड़े-खड़े कितनी देर हो गयी? उनके पैर दुख रहे होंगे। आसन बिछाओ, अपने कोमल हृदयका आसन बनाकर प्यारे श्यामसुन्दरको उसपर बैठाओ।”

तोता यह बोल ही रहा था तथा आगे बोलनेका तार अभी टूटा नहीं था कि सारी बीचमें ही बोल उठती है, “तोते! तू भी श्यामसुन्दरकी भाँति वस्तुतः रससे अनभिज्ञ है, इसीलिये तू इतना पक-बक कर रहा है। अरे! तू जिन श्यामसुन्दरके स्वागत करनेके लिये इतना व्याकुल हो रहा है, उन्हींका गुण मैं तुम्हें सुनाती हूँ; फिर पता लग जायेगा कि वे कैसे हैं। सुन, तू जानता है मेरी प्यारी राधारानीके हृदयकी बात? नहीं जानता। यदि जानता होता तो फिर आज इस प्रकार नहीं बोलता।

“सुन, सचमुच ये श्यामसुन्दर हैं तो बड़े सुन्दर, पर इनका हृदय बड़ा कठोर है; रस इसमें नहीं है। यदि रस होता तो ये मेरी प्यारी राधारानीको छोड़कर भला कभी किसी दूसरेके कुञ्जमें जाते? तोता! एक बार मेरी राधारानीके मुखकी ओर देख और देखकर बता कि क्या इतना सौन्दर्य तुमने और कहीं देखा है? तुमने कहीं भी नहीं देखा होगा। और राधारानीके हृदयकी बात मैं तुम्हें बताऊँ? देख, बताती हूँ, उनके सारे हृदयमें ऊपर-नीचे, बाहर-भीतर एकमात्र श्यामसुन्दर भरे हैं; तनिक भी कहीं कोई स्थान नहीं बच गया है कि उसमें कोई दूसरी वस्तु प्रवेश कर सके। ऐसा हृदय एवं ऐसा सौन्दर्य! अब श्रीराधारानीके इस दिव्य स्वरूपपर विचार कर तथा फिर विचार कर श्यामसुन्दरकी करतूतपर! फिर कहना कि वे श्यामसुन्दरकी कैसे सेवा करें।”

ENGLISH TRANSLATION

After Śyāmasundara has stood there for some time, a parrot perched in an aśoka tree begins to speak: "O Lady Indulekhā, ah, look! Beloved Śyāmasundara has entered your grove. How extraordinary is his splendor! Two loose curls from the row of his locks have fallen upon his cheeks. They look like swarms of bees that have flown in from opposite directions, settled in a single line, and begun to drink the nectar of Śyāmasundara's lotus face. Ah, what beautiful eyes! I cannot think of any comparison. Truly, they are incomparable. And look at that gentle smile upon his lips. Beloved Śyāmasundara, I surrender myself to the beauty of this form!"

After a brief pause the parrot continues: "O Lady Indulekhā, what has happened today? Why do you remain standing? My beloved Śyāmasundara has been on his feet for so long that they must be aching. Spread a seat for him. Make your tender heart itself his seat and place beloved Śyāmasundara upon it."

The parrot has not yet broken the thread of his speech when the female mynah interrupts: "Parrot! Like Śyāmasundara himself, you are truly ignorant of rasa. That is why you chatter so much. You are frantic to welcome this Śyāmasundara, but let me tell you about his virtues, and then you will know what sort of person he is. Tell me, do you understand the heart of my beloved Rādhārānī? You do not. Had you understood it, you would not speak this way today.

"Listen. Śyāmasundara is indeed very beautiful, but his heart is exceedingly hard and devoid of rasa. If it possessed rasa, could he ever leave my beloved Rādhārānī and enter another's grove? Parrot, look once at Rādhārānī's face and tell me whether you have seen such beauty anywhere else. Surely you have not. Shall I tell you about her heart as well? From top to bottom, within and without, her whole heart is filled with Śyāmasundara alone. Not the smallest space remains through which another thing might enter. Such a heart, and such beauty! Now contemplate this divine form of Śrī Rādhārānī, and then contemplate Śyāmasundara's conduct. Only then tell us how she should serve him."

ORIGINAL

सारीकी बात सुनकर श्यामसुन्दर समझ जाते हैं कि राधारानीके रूठनेका कारण क्या है। फिर श्यामसुन्दर सारीके उत्तरमें तोतेको कुछ भी न कहनेके लिये संकेत करते हैं। इसके बाद वेदीके पास आ जाते हैं एवं वेदीपर चढ़कर राधारानीके पास आकर बैठ जाते हैं। उनके बैठ जानेपर ललिता कुछ कड़े स्वरमें कहती हैं, “क्यों! अब वहाँसे मन ऊब जानेपर यहाँ मनोरञ्जन करने आये हो? ठीक यही बात है न?”

श्यामसुन्दर, “तू विश्वास तो करेगी नहीं, बताकर क्या होगा?”

श्यामसुन्दर यह कह करके फिर जिस मसनदके सहारे श्रीप्रिया बैठी हैं, उसपर अपना दाहिना हाथ रख देते हैं तथा अत्यन्त प्यारभरे स्वरमें कहते हैं, “प्रिये! मेरी एक बात सुनो!”

श्रीराधारानी अपना सिर नीचा कर लेती हैं, कुछ बोलती नहीं। श्यामसुन्दर अत्यन्त प्यारसे श्रीप्रियाका दाहिना हाथ, जो मसनदपर पड़ा है, उसे अपने हाथमें लेकर कहते हैं, “प्यारी! सच कहता हूँ, मैं आ रहा था यहीं, पर बीचमें ही ये सब मिल गयीं। सारीने तुम्हें ठीक ही समाचार दिया है कि मैं उनके कुञ्जमें गया था; पर किस परिस्थितिमें गया था, सारीने इस बातको नहीं देखा। देखो! बात यह हुई कि मैं फूल तोड़ रहा था, उसी समय उन सबसे मुझे आ घेरा। मैंने मधुमङ्गलको संकेतसे कहा कि तू मुझसे झगड़ा कर और हम दोनों झगड़ते हुए वहाँसे भाग निकलें। मधुमङ्गलने वही किया, पर मेरी चतुराईने मुझे और फँसा दिया।

“मधुमङ्गलने झगड़ते हुए मेरी फेंट खींच ली। मैं फूलोंके दोनेको बायें हाथसे पकड़े हुए था। मधुमङ्गल कहता था कि यह दोना फेंक दो, इसे इन ग्वालिनोंने छू दिया, अब इसकी माला मैं तुम्हें पहनने नहीं दूँगा। मैं यह भाव दिखला रहा था कि मैं दोना नहीं फेंकूँगा। मधुमङ्गल एक हाथसे दोनेकी ओर लपका और दूसरेसे मेरी फेंट पकड़ ली। मैं दोनोंको सँभालने लगा, पर फेंट ढीली हो जानेके कारण उसी समय मेरी वंशी, जो उसमें खोंसी हुई थी, गिर पड़ी। उसे शैव्याने चटपट उठा लिया। अब तो मैं फँस गया। यदि मैं बिना वंशीके तेरे पास आता तो तू पूछती कि वंशी क्या हो गयी? तब मैं जो भी उत्तर देता, उसे सुनकर तेरा संदेह और भी बढ़ता। इसीलिये मैंने वंशी ले लेनी चाही। उन सबसे मैंने बहुत प्रार्थना की कि मेरी वंशी मुझे वापस दे दो, पर उन्होंने एक भी नहीं सुनी। वे बार-बार यही कहती थीं कि वंशी लेना हो तो चलो, एक बार मेरे कुञ्जमें चलकर थोड़ा शर्बत पी लो, फिर दे दूँगी। जब उन्होंने किसी प्रकार भी वंशी लौटाना स्वीकार नहीं किया तो हारकर मैं उनके कुञ्जमें गया था। उसी समय सारी उड़ती हुई वहाँ आयी। मैं तो इस परिस्थितिमें पूर्णतः फँस गया था। सारीको बोलकर अपनी बात समझा भी नहीं सकता था। अतः सारीने जो कुछ भी कहा है, वह सच ही कहा है; पर प्रिये! मेरा इसमें अपराध नहीं है। तू ही बता, मैं भला इसके अतिरिक्त कर ही क्या सकता था?”

ENGLISH TRANSLATION

From the mynah's words, Śyāmasundara understands why Rādhārānī is displeased. He signals to the parrot not to answer her, then approaches the platform, climbs upon it, and sits beside Rādhārānī. Lalitā addresses him rather sharply: "So! Now that you have grown tired of amusing yourself over there, you have come here for diversion. Is that not precisely it?"

Śyāmasundara replies, "You will not believe me anyway, so what use is there in explaining?" He places his right hand upon the bolster against which Śrī Priyā is leaning and says with immense tenderness, "Priye, listen to one thing I have to say."

Śrī Rādhārānī lowers her head and says nothing. With great affection, Śyāmasundara takes her right hand, which rests upon the bolster, into his own. "Beloved, I swear I was coming here, but they all met me on the way. The mynah told you the truth when she said that I went into their grove, yet she did not see the circumstances in which I went. I was gathering flowers when all of them suddenly surrounded me. I signaled to Madhumaṅgala to begin quarreling with me so that, while we pretended to fight, the two of us might escape. Madhumaṅgala did just that, but my clever plan only trapped me more firmly.

"While arguing, Madhumaṅgala pulled at my waistband. I was holding the leaf bowl of flowers in my left hand. He kept saying, 'Throw away this bowl. These milkmaids have touched it, so I shall not let you wear a garland made from these flowers.' I pretended that I refused to throw it away. Madhumaṅgala lunged for the bowl with one hand and seized my waistband with the other. As I struggled to secure both, my waistband loosened and my flute, which had been tucked into it, fell to the ground. Śaibyā snatched it up at once. Then I was truly trapped. If I had returned to you without my flute, you would have asked what had happened to it, and any answer I gave would only have deepened your suspicion. I therefore had to recover it. I repeatedly begged them to return my flute, but they would not listen. They kept saying, 'If you want it, come into my grove and drink a little sherbet. Then I shall return it.' When they refused by every means to give it back, I yielded and entered their grove. At that very moment the mynah flew there. I was utterly caught in this predicament and could not even speak to explain myself to her. Thus everything she told you was true, but, Priye, I was not at fault. Tell me yourself, what else could I possibly have done?"

ORIGINAL

श्रीप्रिया श्यामसुन्दरकी बात सुनकर सोचने लगती हैं, “मेरे प्रियतम श्यामसुन्दर कितने सरल हैं! अहा! इनका हृदय कितना कोमल है! ओह! ये मुझे कितना प्यार करते हैं! मेरे अन्दर न कोई गुण है, न तनिक रूप भी; फिर भी मेरे प्राणनाथ मुझे इतना प्यार करते हैं! हाय! मैं रूठकर बैठी हूँ, इससे इनके कोमल हृदयमें कितना दुःख होता होगा? ओह! मैं कितने कठोर हृदयकी हूँ!”

ऐसा सोचते-सोचते श्रीप्रिया प्रेममें अधीर होने लगती हैं। बार-बार इच्छा हो रही है कि श्यामसुन्दरको गलेसे लगा दूँ, पर लज्जा आ घेरती है। इसी समय इन्दुलेखा शर्बतका एक गिलास ले आती हैं तथा श्यामसुन्दरके पास जो छोटी-सी मणिजटित तिपाई है, उसपर रख देती हैं।

श्रीप्रिया कनखियोंसे गिलासको देखती हैं। देखते ही श्यामसुन्दरके शैव्याके कुञ्जमें शर्बत पीनेकी बात याद आती है। राधारानी सोचती हैं, “मेरे प्रियतमको शैव्याने शर्बत पिलाया है। उसने शर्बत पिलाया और मेरे सरल हृदय प्यारे श्यामसुन्दरने वह पी भी लिया, पर गँवारी शैव्याने यह नहीं सोचा कि शर्बत पीकर श्यामसुन्दरको यदि कहीं सर्दी लग गयी तो कितना अनर्थ हो जायेगा? क्या पता, शर्बत किस धातुसे जमाया गया था और कैसा बनाया गया था। शैव्याको शर्बत बनाना थोड़े ही आता होगा! पता नहीं, उसने कौन-सी वस्तु अधिक डाल दी होगी और किसी वस्तुका डालना आवश्यक होनेपर भी डालना भूल गयी हो। वह इन बातोंपर ध्यान थोड़े ही रख सकी होगी। उसे तो मेरे प्रियतमके अधरामृतका सुख लूटना था, भले ही श्यामसुन्दर अस्वस्थ हो जायँ। और मेरे प्राणनाथ इतने सरल हैं कि जिस-तिसके हाथकी दी हुई वस्तु स्वीकार कर लेते हैं। इसलिये आज रूठे रहकर थोड़ी कड़ाई करनी ही पड़ेगी, जिससे ये भविष्यमें कभी किसीकी दी हुई वस्तु यों ही, बिना सोचे-समझे ही स्वीकार न करें!”

ऐसा निश्चय करके श्रीप्रिया उसी तरह सिर नीचा किये हुए बैठी रहती हैं, कुछ भी नहीं बोलतीं। श्यामसुन्दर उठकर वेदीके नीचे चले आते हैं तथा ललितासे हाथ जोड़कर मूक प्रार्थना करते हैं कि तू मेरी सहायता कर। ललिता श्यामसुन्दरका हाथ पकड़कर उत्तर एवं पश्चिमके कोनेकी ओर कुछ दूर ले जाती हैं तथा वहाँ धीरेसे कहती हैं, “तुम्हें एक उपाय बतलाती हूँ। किसी प्रकार रूपमञ्जरीको प्रसन्न कर लो। कलकी बात है, रूपमञ्जरीने सायंकाल मेरी प्यारी राधाको तुम्हारे रूपके वर्णनका पद गाकर सुनाया था। राधाने अतिशय प्रसन्न होकर रूपमञ्जरीको इच्छापूर्तिका एक वचन दिया है। वह उधार है। इसलिये यदि वह प्रसन्न हो जायेगी तो तुम्हारे लिये मान तोड़नेकी प्रार्थना कर सकती है।”

ENGLISH TRANSLATION

Hearing Śyāmasundara's explanation, Śrī Priyā reflects, "How guileless is my beloved Śyāmasundara! How tender is his heart! Oh, how deeply he loves me. I possess neither virtue nor even a trace of beauty, yet my Lord of life loves me so much. Alas, I sit here sulking, and how much pain this must cause his tender heart. Oh, how hardhearted I am!"

As she thinks this, love makes her increasingly restless. Again and again she longs to embrace Śyāmasundara, but modesty surrounds and restrains her. Just then Indulekhā brings a glass of sherbet and places it upon the little jewel-studded stand beside Śyāmasundara.

Śrī Priyā glances sidelong at the glass and immediately remembers that Śyāmasundara drank sherbet in Śaibyā's grove. Rādhārānī thinks, "Śaibyā gave sherbet to my beloved, and my simplehearted Śyāmasundara drank it. But that rustic Śaibyā never considered what a calamity it would be if the drink gave him a chill. Who knows in what kind of vessel it was cooled, or how it was prepared? It is not as though Śaibyā knows how to make sherbet. Perhaps she added too much of one ingredient and forgot another that was essential. She could hardly have attended to such matters. Her only concern was to enjoy the nectar of my beloved's lips, even if Śyāmasundara fell ill. And my Lord of life is so innocent that he accepts whatever anyone places in his hand. I must therefore remain displeased and be a little stern today, so that in the future he will never again accept something from just anyone without first considering it carefully."

Having resolved this, Śrī Priyā remains seated with her head lowered and says nothing. Śyāmasundara descends from the platform and silently pleads with folded hands for Lalitā's help. Taking his hand, Lalitā leads him a little way toward the northwestern corner and whispers, "I shall tell you a way. Somehow win over Rūpamañjarī. Only yesterday evening she sang my beloved Rādhā a song describing your beauty. Rādhā was so delighted that she granted Rūpamañjarī one promise to fulfill any wish. That promise remains outstanding. If Rūpamañjarī is pleased with you, she can use it to ask that Rādhā relinquish her māna."

ORIGINAL

यहाँकी लीला यद्यपि सर्वथा सच्चिदानन्दमयी है, इसमें जड़ताका लेश भी नहीं है, फिर भी लीलाकी सिद्धिके लिये भाँति-भाँतिकी चेष्टाएँ सखियों एवं दासियोंके द्वारा होती हैं। लीलामें समय-समयपर श्रीराधा एवं श्रीकृष्ण, दोनों ही प्रसन्न होकर सखियोंको, दासियोंको यह वचन देते हैं कि तुम्हारी एक बात, तुम जो भी कहोगी, मान ली जायेगी। प्रत्येक दासी एवं सखीके पास प्रायः ऐसे वचन थातीके रूपमें रहते हैं और सखियाँ एवं दासियाँ उस उधार वचनको इस प्रकार लीलाको और भी मधुर बनानेके लिये ही काममें लिया करती हैं। उदाहरणके लिये, जब कभी मान नहीं टूटता तो श्यामसुन्दर किसी सखीसे अनुनय करते हैं; फिर वह राधारानीसे उनके दिये हुए वचनकी स्मृति दिलाकर माँग लेती है कि, "रानी! मेरी यह इच्छा है कि आज श्यामसुन्दरके गलेमें आप अपनी दोनों बाँहें डाल दें और मैं इस छविका दर्शन करूँ।" राधारानी अपने वचनकी पूर्तिके लिये उस सखीके सामने ऐसा ही करती हैं। ऐसा करते ही वे प्रेममें अधीर हो जाती हैं और मान टूट जाता है। इसी प्रकार तोता एवं मैना आदि पक्षियोंके पास भी इच्छापूर्तिके वचन उधार रहते हैं। सभी विलक्षण ढंगसे अपनी-अपनी इच्छापूर्ति करके लीलाका आनन्द लेते हैं।

ENGLISH TRANSLATION

Although the līlā here is entirely composed of being, consciousness, and bliss and contains not the least trace of material insentience, the sakhīs and maidservants nevertheless perform many different actions so that the līlā may be brought to fulfillment. From time to time, Śrī Rādhā and Śrī Kṛṣṇa become pleased and promise a sakhī or maidservant, "One request of yours, whatever you may ask, shall be granted." Nearly every sakhī and maidservant keeps such promises as a treasure on deposit, and they spend these outstanding pledges only to make the līlā still sweeter. For example, when Rādhā's māna will not subside, Śyāmasundara entreats a certain sakhī. Reminding Rādhārānī of the promise once granted her, that sakhī asks, "Rānī, my wish today is that you place both arms around Śyāmasundara's neck while I behold the beauty of that sight." To honor her word, Rādhārānī does so before the sakhī. At once she is overwhelmed by love and her māna dissolves. Parrots, mynahs, and other birds likewise hold outstanding promises of wish fulfillment. Each employs its promise in a wondrous manner, and all savor the delight of the līlā.

ORIGINAL

श्यामसुन्दर यह सुनकर प्रसन्न हो जाते हैं तथा वहीं घासपर बैठकर रूपमञ्जरीको पुकारते हुए कहते हैं, “रूपे! मुझे प्यास लगी है, एक गिलास ठण्डा पानी पिला।”

रूपमञ्जरी मुस्कुराती हुई हाथमें शीतल जलका एक गिलास लेकर धीरे-धीरे आती है। उसके निकट आनेपर श्यामसुन्दर खड़े हो जाते हैं तथा उसके कन्धोंको पकड़कर कहते हैं, “देख, तू मेरी सहायता कर दे। तेरे पास राधाका एक वर उधार है, यह मुझे ज्ञात हो गया है। तू मेरी प्यारी राधाको मना दे।”

रूपमञ्जरी धीरेसे कहती है, “मेरे पास तो एक ही थाती है; उसे दे देनेपर मैं रिक्त हो जाऊँगी। यदि इससे भी अधिक कोई आवश्यक अवसर आयेगा तो मुझे फिर किसी दूसरेसे प्रार्थना करनी पड़ेगी। हाँ, एक उपाय बतलाती हूँ। पहली बात तो यह है कि अब तुम हर किसीके हाथका शर्बत नहीं पीओगे, तुम्हें यह प्रतिज्ञा करनी पड़ेगी। और यदि कहीं पीना पड़े तो रानी जो उपाय तुम्हें बतलायेंगी, उसे पालन करके फिर पीना होगा। बोलो, स्वीकार है?”

श्यामसुन्दर, “हाँ, स्वीकार है।”

रूपमञ्जरीने प्रसन्न होकर कहा, “ठीक है, अब एक काम करो। आज दिनभरके लिये फिर मेरी रानी नहीं रूठ सकेगी। वह जो सारी बैठी है, उसके पास भी इच्छापूर्तिका एक वचन उधार है। उसे कुछ देकर प्रसन्न कर लो। सारी वृन्दाके कहनेसे तुम्हारा काम कर देगी।”

ENGLISH TRANSLATION

Śyāmasundara is delighted to hear this. Sitting down upon the grass, he calls to Rūpamañjarī: "Rūpe, I am thirsty. Bring me a glass of cold water."

Smiling, Rūpamañjarī slowly approaches with a glass of cool water. When she comes near, Śyāmasundara rises, takes her by the shoulders, and says, "Look, you must help me. I have learned that you hold one boon from Rādhā in reserve. Please pacify my beloved Rādhā."

Rūpamañjarī answers softly, "I have only that single treasure. Once I give it away, I shall have nothing left. If an even more urgent occasion arises, I shall have to beg someone else for help. Still, I shall suggest a way. First, you must promise that from now on you will not drink sherbet from just anyone's hand. And if circumstances ever require you to drink it, you must first follow whatever safeguard Rānī prescribes. Do you accept?"

Śyāmasundara replies, "Yes, I accept."

Pleased, Rūpamañjarī says, "Very well. Now do one thing. For the rest of today my Rānī will not be able to remain displeased again. See that mynah sitting there? She too holds an outstanding promise that Rādhā will fulfill one wish. Give her something and win her favor. At Vṛndā's word, the mynah will accomplish your purpose."

ORIGINAL

श्रीकृष्ण वृन्दाको संकेत करके उस सारीको बुला देनेके लिये कहते हैं। वृन्दादेवी उसी वेदीपर, जिसपर राधारानी बैठी हैं, पैर लटकाकर बैठी हुई श्यामसुन्दरके मुखारविन्दकी शोभा निहार रही हैं। वृन्दा संकेतसे ही सारीको श्यामसुन्दरके पास जानेकी आज्ञा देती हैं। सारी उड़ती हुई आती है तथा श्यामसुन्दरके चरणोंके पास सिर झुकाकर पंख फुलाकर बैठ जाती है। श्यामसुन्दर सारीको हाथोंपर उठाकर कहते हैं, "प्यारी सारिके! तुम्हारे पास राधाका एक वचन उधार है। तू मनचाही वस्तु उसके बदले मुझसे माँगकर उस वचनके द्वारा प्यारी राधाका मान छुड़वा दे।"

सारी प्रसन्न होकर यह वर माँगती है, "मेरे प्यारे श्यामसुन्दर! मैं यही वर माँगती हूँ कि जब कभी भी मुझे श्रीप्रियाकी आज्ञा आपका समाचार लानेके लिये मिले तथा मैं उड़कर जाऊँ और आपके पास पहुँचूँ, तो एक बारके लिये आप मुझे अपने पास बुला लें।"*

ENGLISH TRANSLATION

Śrī Kṛṣṇa gestures to Vṛndā to call the mynah. Vṛndādevī sits on the edge of the same platform as Rādhārānī, her feet hanging over the side, gazing upon the beauty of Śyāmasundara's lotus face. With a sign she instructs the mynah to go to him. The bird flies over, bows her head at Śyāmasundara's feet, fluffs her feathers, and settles there. Raising her in his hands, Śyāmasundara says, "Beloved śārikā, you hold one outstanding promise from Rādhā. Ask me whatever you desire in exchange, and then use her promise to free my beloved Rādhā from her māna."

Delighted, the mynah asks this boon: "My beloved Śyāmasundara, whenever Śrī Priyā sends me to bring news of you, and I fly to wherever you are and reach you, please call me to your side, if only for a moment."*

ORIGINAL

व्रजप्रेमकी यही विशेषता है कि इसमें अपने सुखकी तनिक भी वासना नहीं रहती। वहाँ प्रत्येककी चेष्टा इसीलिये होती है कि किसी प्रकार श्रीराधा एवं श्रीकृष्णकी परम मधुर लीलामें उन्हें अधिक-से-अधिक सुख पहुँचा सकूँ। श्रीराधारानीका मान-प्रसङ्ग वस्तुतः क्या है, इसे तो वे ही जानती हैं; पर लीलाके अनुमानसे सन्तोंका कहना है कि मानमें भी अपने सुखकी गन्ध नहीं रहती। स्थूलरूपसे कहनेपर यह कहा जा सकता है कि श्रीराधारानीका मान तीन कारणोंसे ही होता है:

(१) श्यामसुन्दरके मनमें यह इच्छा होती है कि मेरी प्यारी राधा मुझसे रूठे, मेरी ताड़ना-भर्त्सना करे और मैं उसे मनाऊँ। इसीलिये श्यामसुन्दरके प्रति श्रीराधारानी मान करती हैं। अर्थात् श्यामसुन्दर चाहते हैं, इसीलिये श्रीराधारानी मान करती हैं।

(२) श्यामसुन्दर जब कोई ऐसी चेष्टा करते हैं कि जिससे उनको कष्ट पहुँचनेकी सम्भावना होती है तो प्रियाजी मान कर बैठती हैं कि जिससे मेरे प्यारे श्यामसुन्दर ऐसा न करें। यह मान भी इसीलिये होता है कि मेरे प्यारेको कोई कष्ट न हो जाये।

(३) श्यामसुन्दर जब कोई ऐसी चेष्टा करते हैं कि जिसके फलस्वरूप राधारानीके मनमें उन्हें बहुत अधिक सुखके बदले अल्पसुख मिलनेकी सम्भावना होने लगती है तो प्रियाजी मान कर बैठती हैं। इसमें भी यही हेतु है कि मेरे प्यारे श्यामसुन्दर ऐसा न करें, क्योंकि ऐसा न करनेसे उन्हें अधिक सुख मिलेगा।

इसी प्रकार व्रजके प्राणी बाह्य दृष्टिमें अनुकूल या प्रतिकूल कैसी भी चेष्टा क्यों न करें, सबके मूलमें यही भाव रहता है कि मैं श्यामसुन्दरको अधिक-से-अधिक सुख पहुँचा सकूँ।

ENGLISH TRANSLATION

The distinguishing feature of Vraja-prema is that it contains not the slightest desire for personal enjoyment. Everyone there acts solely from the wish to give Śrī Rādhā and Śrī Kṛṣṇa the greatest possible joy within their supremely sweet līlā. Only Śrī Rādhārānī herself truly knows the nature of her māna. Yet, judging from the līlā, the saints say that even within māna there is no scent of self-interest. Broadly stated, Śrī Rādhārānī's māna arises for only three reasons:

(1) Śyāmasundara desires that his beloved Rādhā become displeased with him, rebuke and chastise him, and allow him to pacify her. Rādhārānī therefore manifests māna toward Śyāmasundara because he desires it.

(2) When Śyāmasundara does something that might bring him harm, Priyājī assumes māna so that her beloved Śyāmasundara will not do it. This māna arises only to protect her beloved from suffering.

(3) When Śyāmasundara acts in a way that seems likely to give him only a little happiness in place of much greater happiness, Priyājī assumes māna. Here too the sole reason is that her beloved Śyāmasundara should refrain, because by refraining he will receive greater joy.

Thus, whether the residents of Vraja appear outwardly to act favorably or unfavorably, at the root of every action lies the same intention: "May I give Śyāmasundara the greatest possible happiness."

ORIGINAL — Braj Bhāṣā

श्यामसुन्दर सारीकी प्रार्थना स्वीकार कर लेते हैं। वह प्रसन्न होकर उड़ती है। उड़कर राधारानीके पास जाती है। राधारानीके पास जाकर सिर झुकाकर एक पदका पाठ करती है:

जयति नव नागरी कृष्ण सुख सागरी सकल गुन आगरी दीनन भोरी।

जयति हरि भामिनी कृष्ण घन दामिनी गति गज गामिनी मति किसोरी॥

जयति सौभाग्य मनि कृष्ण अनुराग मनि सकल तिय मुकुट मनि सुभग लीजै।

दीजिये दान यह प्यारी की स्वामिनी कृष्ण सौं बहुरि अति मान कीजै॥

ENGLISH TRANSLATION

Śyāmasundara accepts the mynah's request. Delighted, she flies to Rādhārānī, bows her head, and recites a song:

Victory to the ever-fresh lover, the ocean of Kṛṣṇa's happiness, the treasury of every virtue, tenderhearted toward the lowly. Victory to Hari's beloved, lightning beside the dark cloud of Kṛṣṇa, moving with the gait of an elephant, eternally youthful in heart. Victory to the jewel of good fortune, the jewel of love for Kṛṣṇa, the crown jewel of all women. O gracious mistress of this my beloved, grant me this gift, and afterward you may again assume the deepest māna toward Kṛṣṇa.

ORIGINAL

यहाँ सारीने जो वर माँगा है, उसमें भी एक रहस्य है। सारीका उद्देश्य यह है कि श्यामसुन्दरकी अधिक-से-अधिक सेवा कर सकूँ। सारी उड़-उड़ करके श्यामसुन्दरका संदेश लाने-जाया करती है; पर जब श्यामसुन्दर किसी दूसरे कुञ्जमें, श्रीचन्द्रावली या उनकी सखियोंके निजी कुञ्जमें, रहते हैं तो द्वारपर पहरा रहनेके कारण वह निकुञ्जके अन्दर प्रवेश नहीं कर पाती है। बाहर तो डालियोंपर बैठकर सब कुछ सुन लेती है, पर जब श्रीचन्द्रावली या उनकी सखियाँ श्यामसुन्दरको लेकर सघन निकुञ्जमें चली जाती हैं, तब अन्दर प्रवेश सम्भव नहीं हो पाता। इसीलिये श्यामसुन्दरसे वह यह प्रार्थना कर रही है कि मैं जब उड़कर जाऊँ तो वे मुझे बुला लें, क्योंकि उनके बुला लेनेपर मुझे फिर कोई रोकेगा नहीं और मैं सब बातें ठीकसे सुन-समझकर राधारानीके पास उड़ करके आ जाऊँगी। सारीके मनमें श्यामसुन्दरके पास बैठकर सुख लेनेकी इच्छा नहीं है। उसके मनमें यही इच्छा है कि श्यामसुन्दरके विरहमें व्याकुल श्रीराधाके पास श्यामसुन्दरका अधिक-से-अधिक वर्णन सुनाकर उन्हें आनन्द पहुँचा सकूँ।

यह राधासेवा अटूट सिद्धान्त है कि जहाँ तनिक भी अपने सुखकी अभिलाषा है, वहाँ तो काम है। व्रजसुन्दरियोंमें अपने सुखकी इच्छा सर्वथा होती ही नहीं। इच्छा न होनेपर भी उन्हें अपार असीम सुख मिलता है। श्यामसुन्दरको सुख मिल रहा है, यही एकमात्र उनके सुखमें हेतु होता है। श्यामसुन्दरको हँसते हुए देखकर, उनका प्रसन्न वदन देखकर श्रीगोपीजनोंमें प्रसन्नताकी बाढ़ आ जाती है। श्रीगोपीजनोंको प्रसन्न देखकर श्यामसुन्दर और अधिक प्रसन्न होते हैं। फिर श्यामसुन्दरको और अधिक प्रसन्न देखकर व्रजसुन्दरियाँ और भी प्रसन्न होती हैं। प्रसन्न व्रजसुन्दरियोंको देखकर फिर श्यामसुन्दर और प्रसन्न होते हैं। इस प्रकार परस्पर प्रसन्नता एवं आनन्दके समुद्रमें डूबते हुए श्रीप्रिया-प्रियतमकी यह सच्चिदानन्दमयी लीला निरन्तर चलती रहती है और अनन्त कालतक चलती रहेगी।

ENGLISH TRANSLATION

There is also a secret in the boon asked by the mynah. Her sole purpose is to render Śyāmasundara the greatest possible service. She repeatedly flies out to carry messages to and from him. But when Śyāmasundara is in another grove, in the private bower of Śrī Candrāvalī or her companions, guards at the entrance prevent her from going inside. From the outer branches she can hear everything, but when Śrī Candrāvalī and her sakhīs take Śyāmasundara into the dense inner bower, entry becomes impossible. She therefore asks Śyāmasundara to call her whenever she flies to him. Once he summons her, no one can stop her, and she can hear and understand everything properly before flying back to Rādhārānī. The mynah has no wish to sit beside Śyāmasundara for her own enjoyment. She desires only to bring joy to Śrī Rādhā in the anguish of separation by telling her as much as possible about Śyāmasundara.

This is the inviolable principle of service to Rādhā: wherever there is even the slightest desire for one's own pleasure, there is lust. The beauties of Vraja have no desire whatever for personal happiness. Yet even without seeking it, they receive limitless joy. Their only cause of happiness is that Śyāmasundara is happy. Seeing him laugh and beholding his delighted face, the gopīs are flooded with joy. Seeing the gopīs delighted, Śyāmasundara becomes still more delighted. Seeing him yet more delighted, the beauties of Vraja become still happier; seeing them happy, Śyāmasundara's happiness again increases. Thus, immersed together in an ocean of ever-expanding delight, the līlā of Śrī Priyā and her Beloved, composed entirely of being, consciousness, and bliss, flows ceaselessly and shall continue for all eternity.

ORIGINAL Hindi devotional refrain

सारीके पद-पाठ करनेसे श्रीराधाके गम्भीर मुखारविन्दपर मुस्कुराहट दौड़ जाती है; पर वे सोचने लगती हैं कि सारीकी इच्छा तो पूरी करनी ही होगी और शर्बत नहीं पीनेका संकल्प करवाना अभी अपूर्ण ही रह गया। रूपमञ्जरी समझ जाती है तथा उसी समय कहती है, "सब ठीक कर लिया है। अब श्यामसुन्दर किसीके हाथका शर्बत यों ही नहीं पीयेंगे। उन्होंने मेरे सामने प्रतिज्ञा कर ली है।"

इस बातको सुनकर राधारानी प्रसन्न हो जाती हैं तथा मान छोड़ देनेके लिये प्रस्तुत हो जाती हैं; पर लज्जा आ घेरती है। अतः श्यामसुन्दरके पास जानेकी इच्छा होनेपर भी खड़ी रह जाती हैं। श्यामसुन्दर समझ जाते हैं कि काम बन गया। वे वहाँसे चलकर वेदीपर चढ़ जाते हैं तथा अपने गलेसे एक माला निकालकर श्रीराधाके गलेमें पहनाकर कहते हैं, "प्रियतमे! आज मैंने इस मालाको तुम्हारे लिये ही बनाया था। बनाकर मैं देखने लगा कि यह कैसी बनी है। फिर सोचने लगा कि तुम्हारा हृदय जो अत्यन्त कोमल है और ये पुष्प बहुत अधिक कठोर हैं, इनके लिये तो मेरा कठोर हृदय ही उपयुक्त स्थान है। अतः मैंने इसे पहन लिया था। पर तुम्हारे पास आते ही इनपर तुम्हारी छाया पड़ गयी और ये कोमल हो गये। इतने अधिक कोमल हो गये हैं कि मेरे कठोर हृदयपर टिक नहीं रहे हैं। इसीलिये अब तुम्हारे हृदयपर मैं इन्हें झुला दे रहा हूँ।"

राधारानी विहँसती हुई कहती हैं, "बस, बस, कविजी महाराज!" वाक्य पूरा होनेके पूर्व ही राधारानी अपने दाहिने हाथकी अँगुलियोंसे श्रीकृष्णका मुँह बन्द कर देती हैं। श्रीकृष्ण श्रीराधारानीको हृदयसे लगा लेते हैं। सखियाँ उन दोनोंपर पुष्प बरसाने लगती हैं तथा वृक्षोंपर बैठे हुए पक्षी अत्यन्त मधुर स्वरमें गाने लगते हैं:

जय राधे जय राधे राधे जय राधे जय श्रीराधे।

जय कृष्ण जय कृष्ण कृष्ण जय कृष्ण जय श्रीकृष्ण॥

ENGLISH TRANSLATION

As the mynah recites her song, a smile races across Śrī Rādhā's solemn lotus face. Yet she reflects that she must grant the mynah's wish, while the promise about not drinking sherbet remains incomplete. Rūpamañjarī understands at once and says, "Everything has been settled. Śyāmasundara will no longer thoughtlessly drink sherbet from anyone's hand. He has made that promise before me."

Hearing this, Rādhārānī is pleased and ready to relinquish her māna, but modesty overtakes her. Though she longs to go to Śyāmasundara, she remains where she stands. Śyāmasundara understands that his purpose has been achieved. He climbs onto the platform, removes a garland from his neck, places it around Śrī Rādhā's neck, and says, "Priyatame, today I made this garland for you alone. After making it, I examined how it had turned out. Then I thought: your heart is exceedingly tender, while these flowers are very hard. Surely my own hard heart is the proper place for them. So I wore the garland myself. But the instant I came near you, your shadow fell upon the flowers and they became soft. They have grown so tender that they will no longer remain upon my hard heart. Therefore I now let them swing upon your heart."

Laughing, Rādhārānī says, "Enough, enough, O master poet!" Before he can complete his sentence, she closes Śrī Kṛṣṇa's mouth with the fingers of her right hand. Śrī Kṛṣṇa draws Śrī Rādhārānī to his heart. The sakhīs shower flowers upon them, and the birds perched in the trees sing in supremely sweet voices:

Victory to Rādhā, victory to Rādhā! Rādhe, victory to Rādhā, victory to Śrī Rādhā!

Victory to Kṛṣṇa, victory to Kṛṣṇa! Kṛṣṇa, victory to Kṛṣṇa, victory to Śrī Kṛṣṇa!

CHAPTER 21

मिलनोत्कण्ठा लीला

The Līlā of Longing for Union

Source scan pages 239–251

ORIGINAL

Sanskrit invocation and Hindi prose

॥ विजयेतां श्रीप्रियाप्रियतमौ ॥

मिलनोत्कण्ठा लीला

श्रीप्रिया चम्पकलताके कुञ्जमें एक फब्बारेके पास बैठी हैं। फब्बारेका जल लगभग दस गज चारों ओरसे बने हुए कुण्डमें झर-झरकर गिर रहा है। कुण्डके चारों ओर उजले रंगके चमकीले एवं कहीं-कहींपर सुनहले रंगके पत्थरोंकी सुन्दर पच्ची है। कुण्डमें उतरनेके लिये चारों दिशाओंमें छोटी-छोटी सीढ़ियाँ बनी हुई हैं। कुण्डके जलपर कमलके हरे-हरे बड़े-बड़े पत्ते फैले हुए हैं तथा उनपर कमलके पुष्प खिले हुए हैं। नीले, लाल एवं उजले, तीन रंगके कमलके पुष्प वायुके झोंकोंसे हिल रहे हैं। फब्बारा लगभग तीन-चार गज ऊँचा है। उसपर पत्थरका हंस बना हुआ है। हंसने अपनी चोंचमें डण्ठीसहित कमलका पुष्प ले रखा है। उसी पुष्पके छिद्रसे फब्बारेका जल मोतीकी भाँति झरता हुआ कुण्डमें गिर रहा है। कुण्डके चारों ओर सुगन्धित पुष्पोंसे लदी हुई एक-एक झाड़ीको बड़े सुन्दर ढंगसे काट-छाँटकर उसपर 'राधा-श्याम', 'राधा-श्याम'का मेहराब बना दिया गया है। मेहराबके दोनों ओर छोटी-छोटी संगमरमरकी बेंचें हैं। झाड़ीके पीछे एक-एक आमका पेड़ है, जिसपर बैठी हुई कोयल कू-कू कर रही है।

फब्बारेके कुण्डके दक्षिणकी ओर जो पच्ची है, उसीपर श्रीप्रिया उत्तरकी ओर मुँह किये बैठी हैं। इनके दोनों पैर कुण्डकी पहली सीढ़ीके ऊपर टिके हुए हैं तथा दोनों हाथोंसे अपने कपोलोंको पकड़े हुए वे नीची दृष्टि किये बैठी हैं। उनके पीछे विमलामञ्जरी खड़ी है तथा मधुमतीमञ्जरी हाथमें वीणा लिये उनकी बायीं ओर बैठी है। वीणा बजानेकी मुद्रामें बैठी हुई वह श्रीप्रियाकी आज्ञाकी बाट देख रही है। श्रीप्रिया कुछ सोचती हुई इतनी तल्लीन हो गयी हैं कि अभी थोड़ी देर पहले मधुमतीको वीणा लानेके लिये कहा था, पर मधुमतीके वीणा ले आनेपर भूल गयीं कि यहाँ क्या हो रहा है, मैं कहाँ हूँ। कभी-कभी दृष्टि उठाकर हिलते कमलोंको देख लेती हैं, किंतु फिर भी उनकी दृष्टि मधुमतीकी ओर नहीं जाती।

ENGLISH TRANSLATION

May Śrī Priyā and Her Beloved be victorious!

The Līlā of Longing for Union

Śrī Priyā sits beside a fountain in Campakalatā's grove. Its water falls with a ceaseless murmur into a pool some ten yards across. Around the pool is a lovely pavement of gleaming pale stone, touched here and there with golden hues. Small steps descend into the water from all four directions. Broad green lotus leaves spread across the surface, and blue, red, and white lotuses sway in the breeze. The fountain rises three or four yards high and bears a stone swan holding a long-stemmed lotus in its beak. Through an opening in that flower the water streams like pearls into the pool. Fragrant flowering shrubs around the pool have been carefully clipped into arches spelling "Rādhā-Śyāma" again and again. Small marble benches stand on either side of each arch. Behind every shrub grows a mango tree where a cuckoo calls, "Kū, kū."

Śrī Priyā sits upon the pavement at the southern side of the pool, facing north. Both feet rest upon the first step. She holds Her cheeks in Her hands and keeps Her gaze lowered. Vimalāmañjarī stands behind Her, while Madhumatīmañjarī sits at Her left with a vīṇā in hand, poised to play and awaiting Her command. Only a little while ago Śrī Priyā asked Madhumatī to fetch the instrument, but She has become so absorbed in thought that, when Madhumatī returns, She forgets what is happening and even where She is. Now and then She raises Her eyes to the swaying lotuses, yet Her gaze never reaches Madhumatī.

ORIGINAL Hindi prose and Braj song

मधुमतीमञ्जरी पीछे खड़ी हुई विमलामञ्जरीको आँखोंसे कुछ संकेत करती है। विमलामञ्जरी अपनी कञ्चुकीसे श्यामसुन्दरका अत्यन्त सुन्दर चित्र निकालकर श्रीप्रियाके दाहिनी ओर आकर बैठ जाती है। श्रीप्रिया विमलामञ्जरीके बैठ जानेपर कुछ सिरकी हुई दृष्टिसे उस ओर देखने लगती हैं। उधर देखते ही दृष्टि चित्रपर चली जाती है। श्रीप्रिया चटपट उस चित्रको विमलामञ्जरीके हाथसे ले लेती हैं तथा देखने लगती हैं। देखते ही आँखोंमें आँसू भर आते हैं। प्रिया आँसू रोकनेकी चेष्टा करती हैं, पर आँसू रुकते नहीं।

चित्रको हाथमें लिये हुए श्रीप्रिया चाहती हैं कि उसे देखें, पर उनकी आँखें आँसुओंसे पूर्णतः भर जाती हैं और वे चित्रको देख नहीं पातीं। चित्र देखनेके लिये वे बार-बार अञ्चलसे आँसू पोंछती हैं, पोंछकर फिर चित्रकी ओर देखती हैं, पर देखते ही पुनः आँखें आँसुओंसे भर जाती हैं। इस प्रकार पाँच-छः बार चेष्टा करनेपर भी श्रीप्रिया उस चित्रको देख नहीं पा रही हैं। अतः व्याकुल होकर चित्रको तो हृदयसे लगा लेती हैं तथा सिर ऊँचा करके रोने लग जाती हैं। कुछ क्षण इसी भाँति बीत जाते हैं। मधुमती वीणाको रख देती है तथा अपने अञ्चलसे प्रियाके आँसुओंको पोंछने लग जाती है। कुछ देर रोते रहनेके बाद फिर प्रियाको कुछ धैर्य होता है एवं वे लड़खड़ाते स्वरमें कहती हैं, “मधुमती! कुछ गा...!”

मधुमती वीणाको कन्धेके सहारे रखकर गाने लगती है:

मेरे नयना रिश्वतवार भये री।

एकहि बार बिलोकिनि श्याम को तजि घर बार फकीर भये री।

अब देखे बिन आँसू झरत जुग समान पल बीत गये री।

‘नारायन’ ये हू गति चन्द फल पाये जसु बीज दये री।।

गाते-गाते स्वयं मधुमतीकी आँखोंसे भी आँसू बहने लगते हैं। श्रीप्रिया तो इस बार सिसक-सिसककर रोने लग जाती हैं। मधुमती धैर्य धारण करके वीणाको तुरन्त वहीं रख देती है तथा श्रीप्रियाके गलेमें दाहिना हाथ डालकर बायें हाथमें अपना अञ्चल लेकर प्रियाके आँसुओंको पोंछने लग जाती है।

ENGLISH TRANSLATION

Madhumatīmañjarī signals with her eyes to Vimalāmañjarī behind the Queen. Vimalā takes from her bodice an exquisitely beautiful portrait of Śyāmasundara and sits at Śrī Priyā's right. When Priyā glances obliquely toward her, Her eyes fall upon the portrait. She swiftly takes it from Vimalā's hand and tries to look at it, but tears immediately fill Her eyes. She struggles to restrain them, yet they will not stop.

Holding the portrait, Śrī Priyā longs to behold it, but Her eyes are so flooded that She cannot see. Again and again She wipes them with the edge of Her veil and looks back, only for tears to fill them anew. After five or six fruitless attempts, She presses the portrait to Her heart in anguish, raises Her head, and weeps. Several moments pass in this way. Madhumatī lays down the vīṇā and wipes Priyā's tears with her veil. After weeping for some time, Priyā regains a little composure and says in a faltering voice, "Madhumatī, sing something..."

Madhumatī rests the vīṇā against her shoulder and sings:

My eyes have taken a bribe and turned against me.

Beholding Śyāma but once, they abandoned home and household and became mendicants.

Now, without seeing Him, they shed tears, and every moment passes like an age.

Nārāyana says: such indeed is the fruit they received from the seed they had sown.

As she sings, tears begin to flow from Madhumatī's own eyes. Śrī Priyā now sobs uncontrollably. Gathering courage, Madhumatī immediately sets aside the vīṇā, places her right arm around Priyā's neck, and with her left hand uses her veil to wipe away Her tears.

ORIGINAL Hindi prose

कुछ देर बाद श्रीप्रियाको कुछ धैर्य होता है। वे कुछ गम्भीर-सी होकर वहाँसे उठकर पीछेकी झाड़ीके पास जाती हैं और उत्तरकी ओर मुँह करके बैठ जाती हैं। झाड़ीके मेहराबके दोनों ओर बैठनेके लिये छोटे-छोटे संगमरमरके पत्थरोंकी जो बेंचें बनी हुई हैं, श्रीप्रिया उसीके सहारे पीठ टेककर बैठी हैं।

इसी समय कुञ्जके पूर्वी द्वारसे रूपमञ्जरी आती है। उसके मुखपर अत्यधिक प्रसन्नता छायी हुई है। वह राधारानीके पास बैठकर बड़े प्रसन्न स्वरमें कहती है, “मेरी रानी! आज मधुमङ्गलने बड़ा काम किया, नहीं तो मैया आज श्यामसुन्दरको वनमें जानेसे पूर्णतः रोक ही चुकी थीं। तुम्हारा अनुमान ठीक निकला। आज नागपञ्चमीकी पूजा है। पहले पूजा करानेके लिये और फिर श्यामसुन्दरके द्वारा ब्राह्मणभोजन करानेके लिये मैयाने उन्हें रोक लिया। पर मधुमङ्गल वहीं श्यामसुन्दरसे लड़ पड़ा और उसने इतनी धूम मचा दी कि भोजन करना भी अस्वीकार कर दिया। उसके न खानेसे श्यामसुन्दर भी भला कैसे खाते? उन्होंने भी भोजन अस्वीकार कर दिया। मधुमङ्गल कहता था कि कल इसने वचन दिया है कि आजके हारे हुए दाँव आज अवश्य चुका दूँगा। अब यह आनाकानी करता है कि मैया आज वन जानेके लिये मना करती है। श्यामसुन्दरके न खानेके कारण मैयाने हार मानकर आज्ञा दे दी कि अच्छा, डेढ़ पहर दिन चढ़ते-चढ़ते मैं पूजा समाप्त कर दूँगी, फिर तू वनमें चला जाना। अतः मेरी रानी! अब वे आयेंगे तो अवश्य, पर सम्भवतः कुछ विलम्ब हो जाये।”

रूपमञ्जरीकी बात सुनकर रानीके हृदयमें आशा एवं प्रसन्नता भर जाती है। वे रूपमञ्जरीको हृदयसे लगाकर प्यार करती हुई इस शुभ समाचारके लिये कृतज्ञता-सी प्रकट करती हैं। इसी समय राधारानीकी सारी उड़ती हुई वहाँ आती है और उनके सामने बैठ जाती है। राधारानी उत्कण्ठाभरी दृष्टिसे देखते हुए सारीको अपने बायें हाथपर रख लेती हैं तथा दाहिने हाथसे उसके सिरको सहलाती हुई पूछती हैं, “सारिके! मेरे प्यारे श्यामसुन्दरका समाचार तू अवश्य लायी होगी। बोल, उनके आनेमें कितना विलम्ब है?”

केलि कुञ्ज

॥ विजयेतां श्रीप्रियाप्रियतमौ ॥

“रानी! वे ग्वालोंके साथ नन्द-भवनके द्वारसे बाहर निकल आये हैं। यही सूचना देने आयी हूँ।”

इस सूचनासे रानीकी प्रसन्नताकी सीमा नहीं रहती। वे सारीको हृदयसे लगा लेती हैं। सारी भी प्रेममें डूबने लग जाती है और सबके मनमें आनन्द छा जाता है। सबको सन्देह था कि पता नहीं श्यामसुन्दर आज आयेंगे या नहीं, पर सारीकी बातसे सबकी चिन्ता मिट गयी। रानी उसे हाथमें बैठाये प्यार करती हैं और साथ ही उत्कण्ठाभरी दृष्टिसे श्यामसुन्दरके मार्गकी ओर बार-बार देखती जाती हैं। फिर भी वे कुछ व्याकुल हो जाती हैं। सारी हाथसे उड़कर भूमिपर बैठ जाती है। रानी उठकर खड़ी होती हैं, फिर थोड़ी देर बाद उसी बेंचपर पूर्वकी ओर मुख करके, पीठ हत्थेसे लगाये और पैर बेंचपर फैलाये बैठ जाती हैं। धीरेसे कहती हैं, “सारिके! इधर आ!” सारी उड़कर उनके चरणोंके पास बेंचके हत्थेपर बैठ जाती है।

रानी पूछती हैं, “सारी! क्या तेरे-जैसे मुझे भी पंख हो सकते हैं?”

“रानी! पंख लेकर क्या करोगी?”

> “मैं भी तेरी तरह उड़-उड़कर प्रियतम श्यामसुन्दरको देखती फिरती। जिस कुञ्जमें वे रहते, वहीं उड़कर चली जाती।”
>
> सारी चुप रहती है। राधारानी फिर पूछती हैं, “अच्छा सारिके! बता तो सही, श्यामसुन्दर मुझे क्यों प्यार करते हैं?”
>
> कुछ देर रानीके मुखकी ओर देखकर सारी कहती है, “रानी! कभी श्यामसुन्दरसे पूछकर बताऊँगी।”
>
> “पर देखना, वे कहीं तुम्हें ठग न लें।”
>
> “मेरी प्यारी रानी! वे मुझे नहीं ठगेंगे। मुझे भी वे बहुत प्यार करते हैं।”

ENGLISH TRANSLATION

After a while Śrī Priyā grows calmer. With a grave expression She rises, goes to the shrub behind Her, and sits facing north, leaning against one of the small marble benches beside its arch.

Rūpamañjarī enters through the eastern gate, her face radiant with joy. Sitting beside Rādhārāṇī, she says brightly, "My Queen, Madhumaṅgala has accomplished something great today. Otherwise Mother had completely prevented Śyāmasundara from going to the forest. Your surmise was correct: today is the worship for Nāgapañcamī. Mother detained Him first for the worship and then to feed the brāhmaṇas through Him. But Madhumaṅgala quarrelled with Śyāmasundara and made such an uproar that he refused to eat. How could Śyāmasundara eat when he would not? He too refused. Madhumaṅgala insisted, 'Yesterday He promised to repay today the wagers He lost, but now He evades payment by saying Mother will not let Him go to the forest.' Since Śyāmasundara would not eat, Mother yielded and said, 'Very well. I shall finish the worship by one and a half prahar after sunrise, and then you may go to the forest.' Thus He will certainly come, my Queen, though He may be somewhat delayed."

Hope and joy fill the Queen's heart. She embraces Rūpamañjarī and caresses her in gratitude for the auspicious news. Just then Rādhārāṇī's myna flies in and alights before Her. The Queen places Sārī upon Her left hand, strokes her head with Her right, and asks eagerly, "Sārikā, surely you bring news of my beloved Śyāmasundara. Tell Me, how long before He comes?"

Keli-kuñja

May Śrī Priyā and Her Beloved be victorious!

"My Queen, He has already emerged from the gate of Nanda-bhavana with the cowherd boys. I came to give You this news."

The Queen's joy knows no bounds. She clasps Sārī to Her heart, and the bird too sinks into love. Happiness fills everyone. They had feared Śyāmasundara might not come today, but Sārī's words dispel all anxiety. Keeping the bird upon Her hand, the Queen caresses her and repeatedly gazes down the path in longing. Yet restlessness overtakes Her. Sārī flies to the ground. The Queen rises, stands a while, and then sits facing east upon the same bench, leaning against its arm and stretching Her feet along the seat. Softly She calls, "Sārikā, come here." The bird flies to the arm of the bench near Her feet.

"Sārī, could I too have wings like yours?"

"What would You do with wings, my Queen?"

"I would fly about like you, seeking my beloved Śyāmasundara. Whichever grove He entered, I would fly straight there."

Sārī is silent. Rādhārāṇī asks again, "Tell Me truly, Sārikā, why does Śyāmasundara love Me?"

After looking at the Queen's face for a moment, Sārī replies, "One day I shall ask Śyāmasundara and tell You."

"Take care that He does not deceive you."

"My dearest Queen, He will not deceive me. He loves me very much as well."

ORIGINAL Hindi prose and book note

राधारानी प्रसन्न होकर पूछती हैं, “अच्छा, तुझे क्यों प्यार करते हैं, यह बता!”

सारी कहती है, “रानी! एक दिन मैं उड़कर गयी। वहाँ जाते ही श्यामसुन्दरने मुझे हाथपर उठा लिया। हाथपर लेते ही उनकी आँखोंसे आँसू झरने लगे, कण्ठ रुँध गया। फिर कुछ देर बाद धैर्य धारण करके बोले, ‘सारिके! तुम्हें देखते ही मेरे प्राण व्याकुल हो जाते हैं। तू मेरी प्राणेश्वरी राधाकी सारी है। आह! मेरी प्रियाने अपने हाथोंसे स्पर्श करके तुम्हें मेरे पास भेजा होगा। सारी, आ, मेरे हृदयमें बैठ जा। सच, सारी! जिस क्षण मैं तुम्हें हाथपर लेता हूँ, उसी क्षण मुझे चारों ओर मेरी प्यारी राधा-ही-राधा दीखने लगती है। इसीलिये तू मुझे प्राणके समान प्यारी लगती है।’”

रानीके मुखपर गम्भीरता छा जाती है। कुछ देर चुप रहकर कहती हैं, “सारी! एक बात पूछती हूँ, तू ठीक-ठीक बतायेगी न?”

“हाँ रानी! अवश्य बताऊँगी।”

“अच्छा बता, क्या कोई ऐसी औषधि तू जानती है जिसके खानेसे मैं मर जाऊँ?”

सारी कुछ देर चुप रहकर सोचती है। इसी समय ललिता दबे पाँव मुस्कराती हुई दक्षिणकी ओरसे आ जाती हैं। रानी इतनी तल्लीन हैं कि उन्हें पता नहीं लगता। ललिता उनकी बात सुनकर सारीको संकेत करती हैं। सारी पूछती है, “रानी! मरकर क्या करोगी?”

“देख, सदा-सदाके लिये श्यामसुन्दरके चरणोंमें चिपट जाऊँगी। मेरी देह ही मुझे श्यामसुन्दरसे अलग रख रही है।”

“पर रानी! फिर श्यामसुन्दरकी क्या दशा होगी, यह भी तुमने कभी सोचा है?”

राधारानी घबरा जाती हैं। “ओह! मैं सचमुच भूल गयी। नहीं सारी, मैं नहीं मरूँगी। मेरे मरते ही प्यारे श्यामसुन्दर जीवित नहीं रहेंगे। मैं तो बावली हो गयी थी। ठीक समयपर तूने सावधान कर दिया। अब मैं कभी नहीं मरूँगी।”

आँखें बन्द करके कुछ सोचनेके बाद वे कहती हैं, “सारी! तू जानती है, श्यामसुन्दर आजकल कहाँ चले जाते हैं?” फिर आँखें खोलकर कहती हैं, “हाँ, बता! महीनों हो गये, वे इधर इन कुञ्जोंमें आये ही नहीं। पता नहीं कहाँ चले जाते हैं?” उनका मुख लाल होने लगता है और वे भावाविष्ट हो जाती हैं। उन्हें प्रतीत होता है कि मैं प्रतिदिन इन कुञ्जोंमें आती हूँ, पर श्यामसुन्दर यहाँ नहीं आते। उसी भावमें कहती हैं, “तू उड़ सकती है, उड़कर देखती क्यों नहीं कि वे कहाँ चले जाते हैं? कहीं मार्ग तो नहीं भूल जाते? वे बड़े सरल हैं, उन्हें कोई भी भुलावा दे सकता है।”

रानीकी आँखोंसे आँसू बहने लगते हैं। पीछे खड़ी ललिता सामने आकर उनके सिरके पास घुटने टेककर बैठ जाती हैं। रानीकी दृष्टि उनपर नहीं जाती। वे भाव-समाधिमें अधिकाधिक डूब रही हैं। कुछ देर बाद एकाएक कह उठती हैं, “सारी! जा, ललिताको बुला ला!”

ललिता वहीं बेंचकी कोरपर बैठकर कहती हैं, “क्यों बहिन! मैं तो तेरे पास ही हूँ।”

“अच्छा हुआ तू आ गयी। तुझे एक बात सुनाती हूँ। धैर्यसे सुनना, घबराना मत।”

"नहीं बहिन, मैं शान्तिसे सुनूँगी, घबराऊँगी नहीं। तू सुना।"

"देख, मुझे एक रोग हो गया है। अबतक तुम लोगोंसे छिपाती रही, पर आज मेरे जीवनका अन्तिम क्षण उपस्थित है, इसलिये सब बात खोलकर कह देना चाहती हूँ। सुनकर अशान्त तो नहीं हो जावेगी?"

ललिताकी आँखोंमें प्रेमके आँसू भर आते हैं। "नहीं, मैं अशान्त नहीं होऊँगी। तू अपना अन्तर खोलकर बता।"

"देख, तुझे याद होगा, आजसे हजारों-हजार वर्ष पहले मैंने श्यामसुन्दरको केवल एक बार देखा था। उसके बाद फिर उन्हें कभी नहीं देखा। हाँ बहिन, बस एक बार; पर उसी क्षणसे उनकी वह छवि अपने हृदयमें छिपाये बैठी हूँ। तुम सबसे भी छिपाती रही।"*

प्रेमकी ऊँची अवस्थामें जब प्यारेका एक क्षणके लिये भी वियोग होता है, तब वह एक क्षण ही युगके समान प्रतीत होने लगता है। श्रीश्यामसुन्दर जब वनको चले जाते थे तो श्रीगोपीजनोंको उनका विरह इतना दुःखदायी हो जाता था कि एक त्रुटि भी उनके लिये युगके समान प्रतीत होने लगती थी। यह वर्णन श्रीमद्भागवतमें आया है। इसी प्रकार राधारानीके हृदयमें जो भाव-तरंगें उठती हैं, वे सर्वथा असीम और अतुलनीय हैं। जब कभी श्रीप्रियाको श्यामसुन्दरके विरहकी अनुभूति एक क्षणके लिये भी होती है, उस समय उन्हें ऐसा प्रतीत होता है मानो युग बीत गये हैं और तबसे मैंने श्यामसुन्दरको नहीं देखा है। यद्यपि प्रतिदिन श्रीप्रियासे श्यामसुन्दरका मिलन होता है, पर प्रिया भावाविष्ट होकर समझने लगती हैं कि मेरा यह मिलन भावनासे प्रतीत होने लगा था। ध्यान करते-करते मैं सुध-बुध भूल जाती हूँ और कुछ-का-कुछ सोचने लगती हूँ। वस्तुतः श्यामसुन्दर तो हजारों-हजार वर्षसे मेरे पास आये ही नहीं हैं। उसी प्रकार आज भी श्रीप्रियाको भ्रम हो रहा है कि श्यामसुन्दरसे मिले बहुत दिन हो गये। प्रेमकी इस अवस्थाको कोई वाणीसे नहीं बता सकता। विरले सच्चे संत ही उसे अनुभव करके कृतार्थ होते हैं।

ENGLISH TRANSLATION

Pleased, Rādhārāṇī asks, "Then tell Me why He loves you."

Sārī replies, "One day I flew to Him. As soon as I arrived, Śyāmasundara lifted me onto His hand. Tears streamed from His eyes and His throat choked. After some time He mastered Himself and said, 'Sārikā, the sight of you makes My very life restless. You are the myna of Rādhā, sovereign of My life. Ah, My beloved must have touched you with Her own hands before sending you to Me. Come, Sārī, sit within My heart. Truly, the moment I take you upon My hand, I see My beloved Rādhā everywhere around Me. Therefore you are as dear to Me as life itself.'"

Gravity comes over the Queen's face. "Sārī, if I ask one thing, will you answer exactly?"

"Yes, my Queen, certainly."

"Do you know any medicine which, if I took it, would make Me die?"

Sārī falls silent and thinks. Just then Lalitā enters softly from the south, smiling. The Queen is too absorbed to notice her. Hearing the question, Lalitā signals to Sārī, who asks, "What would You do after dying, my Queen?"

"I would cling forever to Śyāmasundara's feet. This body alone keeps Me apart from Him."

"But have You considered what would become of Śyāmasundara then?"

Rādhārāṇī is alarmed. "Oh, I truly forgot! No, Sārī, I shall not die. My beloved Śyāmasundara would not live after My death. I had quite lost My senses. You warned Me at the proper moment. I shall never die."

She closes Her eyes and reflects, then asks, "Sārī, do you know where Śyāmasundara goes nowadays?" Opening Her eyes, She continues, "Yes, tell Me. Months have passed, and He has not visited these groves even once. Who knows where He goes?" Her face reddens as She enters an ecstasy in which She feels that She comes daily but Śyāmasundara never does. "You can fly. Why do you not seek where He has gone? Perhaps He has lost the way. He is so guileless that anyone could mislead Him."

Tears pour from the Queen's eyes. Lalitā, who had been standing behind Her, comes forward and kneels beside Her head. The Queen does not see her, for She sinks ever deeper into devotional absorption. Suddenly She cries, "Sārī, go and bring Lalitā!"

Sitting upon the edge of the bench, Lalitā says, "Why, sister? I am right here beside you."

"It is good that you have come. I must tell you something. Listen calmly and do not be alarmed."

"I shall listen peacefully, sister, and I shall not be alarmed. Tell me."

"A disease has afflicted Me. Until now I concealed it from all of you, but the final moment of My life has arrived, so I wish to reveal everything. You will not become distressed when you hear?"

Tears of love fill Lalitā's eyes. "No, I shall not be distressed. Open Your heart and tell me."

"You may remember that many thousands of years ago I saw Śyāmasundara just once. Since then I have never seen Him again. Yes, sister, only once. From that very moment I have hidden His image in My heart, concealing it even from all of you."*

In the exalted state of love, even a single moment's separation from the beloved seems like an age. When Śrī Śyāmasundara went to the forest, separation became so painful for the gopīs that even a truṭi seemed an age. This is described in the Śrīmad Bhāgavata. The waves of emotion arising in Rādhārāṇī's heart are altogether boundless and incomparable. Whenever Śrī Priyā experiences separation from Śyāmasundara for even a moment, She feels that ages have elapsed and that She has not seen Him since. Although Śyāmasundara meets Śrī Priyā every day, in ecstasy She comes to think that those meetings were merely experienced in contemplation, that She lost all awareness in meditation and imagined what had not occurred. In truth, She feels, Śyāmasundara has not come to Her for thousands upon thousands of years. Thus today too Śrī Priyā imagines that many days have passed since She met Him. No voice can express this state of love. Only rare and genuine saints attain blessedness by experiencing it.

ORIGINAL Hindi prose

"दिन-रात उन्हें हृदयमें बैठाये रखकर भावनासे उनकी रूप-सुधाका पान करती रही हूँ। बहिन! पर साथ ही जलती भी रही हूँ। वह विचित्र दशा है। रूप-सुधाके समुद्रमें रहकर भी मैं जलती रही हूँ। कभी यह भ्रम हो जाता था कि प्यारे श्यामसुन्दर आये हैं और मुझे अत्यन्त प्यार कर रहे हैं। इसी आनन्दमें रात समाप्त हो जाती। फिर सोचती कि यह तो भ्रम था। उनकी रूप-सुधामें डूबने लगती हूँ और दूसरे ही क्षण हृदय विरहाग्निसे दग्ध होने लगता है। इस प्रकार हँसती हुई, जलती हुई मैंने इतने दिन बिताये हैं। पर अब तो हृदय प्रायः नष्ट हो गया है। थोड़ी देरमें मेरे प्राण बाहर निकल जायेंगे। बस, एक बार अपनी रूप-सुधाका पान कराकर फिर वे नहीं आये। पता नहीं कहाँ चले गये। प्रतीक्षामें इतने दिन बीत गये, अब आज अन्तिम दिन है।"

रानी रुक जाती हैं। ललिता एकटक श्रीप्रियाके मुखारविन्दकी ओर देखती रहती हैं। रानी फिर कहती हैं, "अब तुझे हृदयको कठोर बनाना पड़ेगा। बहिन! तू मुझे अतिशय प्यार करती है। मेरे विरहमें पता नहीं तेरे प्राण रहेंगे या नहीं, पर कुछ क्षणके लिये धीरज रखना। मेरे प्राण निकलनेवाले हैं। तू मेरे प्यारे श्यामसुन्दरके चित्रको मेरे हृदयपर रख दे। जब प्राण निकल जायें तब उस चित्रको मेरे अञ्चलसे कसकर बाँध देना तथा चित्रके साथ ही मेरे प्यारे श्यामसुन्दरके कुण्डमें मेरी समाधि दे देना। धीरजसे अपनी प्यारी सखीकी यह अन्तिम सेवा करना।"

रानीकी दशा देखकर ललिता सोचती हैं कि किस उपायसे उन्हें सान्त्वना मिले। कुछ क्षण बाद वे राधारानीके कानमें कहती हैं, "बहिन! प्यारे श्यामसुन्दर आ गये हैं। वह देखो, विशाखाके कुञ्जकी पगडंडीपर खड़े हैं।"

ENGLISH TRANSLATION

"Day and night I kept Him enthroned within My heart and drank the nectar of His beauty in contemplation. Yet, sister, I burned all the while. What a strange condition! Even while immersed in an ocean of the nectar of His beauty, I continued to burn. Sometimes I imagined that beloved Śyāmasundara had come and was lavishing love upon Me. The night would end in that bliss, and then I would realize it had only been an illusion. I sink into the nectar of His beauty, and in the next moment My heart burns in the fire of separation. Thus I have passed so many days, laughing and burning. Now My heart is almost destroyed, and My life will leave in a little while. He gave Me a single draught of His beauty and never returned. I do not know where He went. So many days have passed in waiting, and today is the final day."

The Queen falls silent. Lalitā keeps gazing upon Śrī Priyā's lotus face. The Queen continues, "Now you must harden your heart. Sister, you love Me dearly. I do not know whether your life will endure separation from Me, but keep courage for a few moments. My life is about to depart. Place the portrait of My beloved Śyāmasundara upon My heart. When I die, bind it there tightly with the edge of My veil, then give Me samādhi together with the portrait in My beloved Śyāmasundara's pond. With fortitude, perform this final service for your beloved friend."

Seeing the Queen's condition, Lalitā wonders how she can console Her. After a moment she whispers into Rādhārāṇī's ear, "Sister, beloved Śyāmasundara has come. Look, He is standing upon the path to Viśākhā's grove."

ORIGINAL Hindi prose

वे शब्द कानोंमें पड़ते ही रानी चटपट उठकर बैठ जाती हैं और कुछ लजायी-सी होकर उधर देखने लगती हैं। ठीक सामने विशाखाके कुञ्जकी पगडंडीपर उसी समय अनङ्गमञ्जरी नीली साड़ी पहने और पीली ओढ़नी कन्धेपर रखे आती है। नीली साड़ी और पीली ओढ़नी देखकर श्रीप्रिया समझती हैं कि सचमुच श्यामसुन्दर आ रहे हैं, अतः उन्हें धैर्य हो जाता है। वे धीमे स्वरमें कहती हैं, "देख, प्यारे श्यामसुन्दर आ रहे हैं। मैं छिप जाती हूँ। तू कह देना कि राधा आज नहीं आ सकेगी। आज देखूँगी कि वे मुझे ढूँढ़ने कहाँ जाते हैं!"

यह कहकर वे खड़ी होकर दक्षिणकी ओर दौड़ती हैं। ललिता देखती हैं कि सखी भावावेशमें दौड़ रही है और कहीं गिर न पड़े, अतः सँभालनेके लिये पीछे दौड़ती हैं। इसी समय श्यामसुन्दर चम्पकलताके कुञ्जके दक्षिणी द्वारसे आकर कुछ दूर खड़े रानीका भागना देखने लगते हैं। रानीकी दृष्टि उनपर नहीं पड़ती। वे चारों ओर मेंहदीकी क्यारीसे घिरे हुए गुलाबकी लताओंके निकुञ्जमें चली जाती हैं और वहाँ खड़ी होकर उत्तरकी ओर देखने लगती हैं।

ललिताकी दृष्टि श्यामसुन्दरपर पड़ती है। वे प्रेमपूर्ण संकेतसे उन्हें बता देती हैं, "आज रानी बहुत अधिक भावाविष्ट हो गयी थीं। किसी प्रकार हमने उन्हें कुछ शान्त किया है। अब अपनी प्राणप्यारीको तुम सँभालो।" श्यामसुन्दर मुस्कराते हुए दबे पाँव मेंहदीकी क्यारीके दक्षिणकी ओर खड़े होकर लताके छिद्रोंसे अपनी प्यारी राधाको देखते हैं। राधारानी कुछ देर उत्तरकी ओर देखकर दक्षिण, पश्चिम और फिर पूर्वकी ओर देखती हैं तथा धम्मसे भूमिपर बैठ जाती हैं।

ENGLISH TRANSLATION

The instant those words reach Her ears, the Queen sits upright and looks that way in shy excitement. At that very moment Anaṅgamañjarī appears upon the path to Viśākhā's grove, wearing a blue sari with a yellow veil over her shoulder. Seeing those colors, Śrī Priyā believes that Śyāmasundara truly is approaching, and steadiness returns to Her. Softly She says, "Look, My beloved Śyāmasundara is coming. I shall hide. Tell Him that Rādhā could not come today. Now I shall see where He searches for Me!"

She rises and runs south. Seeing that her friend is running while overcome with ecstasy and may fall, Lalitā follows to protect Her. At that same moment Śyāmasundara enters through the southern gate of Campakalatā's grove and stands at a distance, watching the Queen flee. She does not see Him. She enters a bower of rose creepers encircled by henna beds and stands looking north.

Lalitā sees Śyāmasundara and signals lovingly, "The Queen was deeply overwhelmed today. Somehow we calmed Her a little. Now You must care for Your beloved." Smiling, Śyāmasundara comes silently to the southern side of the henna bed and peers through openings in the creepers at His beloved Rādhā. After gazing north for a while, Rādhārāṇī looks south, then west, then east, and drops heavily to the ground.

ORIGINAL

Hindi prose

इतनेमें ललिता निकुञ्जके भीतर आती हैं और कहती हैं, “बहिन! अब श्यामसुन्दर नहीं फिरेंगे। बड़ा अच्छा हुआ। प्रतिदिन देर करने लगे थे। आज पता लगेगा कि प्रतीक्षा करते समय कितना दुःख होता है।”

रानी उदास होकर कहती हैं, “ललिते! यदि प्यारे श्यामसुन्दर मुझे ढूँढ़ते फिरें और मैं न मिलूँ तो उन्हें कष्ट तो नहीं होगा?” एक-दो क्षण बाद तुरन्त कह उठती हैं, “नहीं बहिन, मैं नहीं छिपूँगी। उनके कोमल हृदयको दुःख देकर मैं आनन्द प्राप्त करना चाहती हूँ? नहीं! मैं वहीं फब्बारेके पास जाऊँगी।”

छिपे हुए श्यामसुन्दर उनकी बात सुनकर प्रेम और आनन्दमें विभोर होते जाते हैं। राधारानी चटपट उठकर भागना चाहती हैं, पर ललिता पकड़कर रोक लेती हैं। रानी कहती हैं, “तू मुझे नहीं जाने देती तो एक काम कर। तू वहाँ चली जा। वे फब्बारेके पास खड़े अत्यन्त व्याकुलतासे मुझे ढूँढ़ रहे होंगे। हाय, निराश हो गये होंगे! उनका मुख म्लान हो गया होगा। मैं यह नहीं सहूँगी। उन्हें कह दे कि राधा उस निकुञ्जमें बैठी उनकी बाट देख रही है।”

ललिता बाहर श्यामसुन्दरके पास जाकर धीरे-धीरे सब बात संक्षेपमें कह देती हैं। इधर राधारानी प्रतीक्षा करती हैं कि ललिताके साथ श्यामसुन्दर अभी आते होंगे। कभी उठकर बाहर झाँकती हैं, कभी बैठकर उत्सुकताभरी दृष्टिसे देखती हैं। फिर फूलोंकी शय्यापर लेटकर आँखें बन्द किये धीरे-धीरे कुछ गुनगुनाने लगती हैं। श्यामसुन्दर और ललिता मेंहदी-लताके छिद्रोंसे श्रीप्रियाकी प्रेम-लीला देख रहे हैं। पद स्पष्ट सुनायी नहीं पड़ता, बीच-बीचमें केवल एक-दो शब्द सुनायी देते हैं।

ENGLISH TRANSLATION

Lalitā enters the bower and says, “Sister, Śyāmasundara will not turn back now. It is well done. He has begun arriving late every day, so today He will learn the pain of waiting.”

The Queen grows sad. “Lalite, if My beloved Śyāmasundara searches for Me and cannot find Me, will He not suffer?” A moment later She cries, “No, sister, I shall not hide. Would I seek happiness by hurting His tender heart? Never! I shall return to the fountain.”

Hidden nearby, Śyāmasundara hears Her words and becomes ever more immersed in love and joy. Rādhārāṇī springs up to run, but Lalitā catches and restrains Her. The Queen says, “If you will not let Me go, then do one thing. Go there yourself. He must be standing by the fountain, searching for Me in terrible anguish. Alas, He must be disappointed, and His face must have withered. I cannot bear it. Tell Him that Rādhā sits in this bower awaiting Him.”

Lalitā goes outside to Śyāmasundara and softly tells Him everything in brief. Meanwhile Rādhārāṇī waits for Śyāmasundara to return with her. Now She rises to peer outside, now She sits and gazes eagerly. At last She lies upon a bed of flowers, closes Her eyes, and quietly hums. Śyāmasundara and Lalitā watch Śrī Priyā’s līlā of love through the openings in the henna creepers. Her song cannot be heard clearly; only a word or two reaches them from time to time.

ORIGINAL Hindi prose

कुछ देर गुनगुनानेके बाद श्रीप्रिया उठ बैठती हैं, दोनों हथेलियोंपर मुख रखकर सोचती हैं और कहती हैं, “प्यारे श्यामसुन्दर! हृदयका कोना-कोना तुम्हारा है। हाँ, मेरे जीवनसर्वस्व! इस हृदयको प्रतिदिन तुम्हारे लिये ही सजा-सजाकर रखती हूँ। देखो, आज भी तुम्हारे लिये इसे सजाकर तुम्हारी प्रतीक्षामें बैठी हूँ, पर पता नहीं तुम क्यों नहीं आ रहे हो?”

विकलताके कारण वे उठकर बावली-सी निकुञ्जके बाहर निकलती हैं और फिर भावाविष्ट हो जाती हैं। द्वारपर पत्तोंका बना खेलका झूला देखकर उन्हें प्रतीत होता है कि मैं झूलेपर झूल रही हूँ और प्यारे श्यामसुन्दर बहुत वेगसे झोंटा दे रहे हैं, जिससे मेरी साड़ी पवनमें उड़ रही है। इस बार इतनी तेजीसे झोंटा लगाया कि साड़ीका अञ्चल गिरकर गुलाबके काँटेमें उलझ गया। रानी अनुभव करती हैं कि मैं रूठकर झूलेको बलपूर्वक रोककर उतर पड़ी हूँ। प्यारे श्यामसुन्दर भी पीछे उतरकर कह रहे हैं, “नहीं, अब ठीकसे धीरे-धीरे झोंटा दूँगा। प्रिये, फिर चढ़ो, झूलें।”

इसी भावावेशमें दृष्टि-विहीन-सी श्रीप्रिया मेंहदीकी क्यारीकी परिक्रमा करने लगती हैं। “नहीं, अब नहीं झूलूँगी, अब नहीं झूलूँगी,” कहती हुई वे वहाँ पहुँचती हैं जहाँ श्यामसुन्दर खड़े हैं और उनसे टकरा जाती हैं। उनके स्पर्शसे श्रीप्रिया समझती हैं कि वे आग्रहपूर्वक झूलेपर ले जाना चाहते हैं। बाहरसे कपट-क्रोध करती हुई वे वास्तवमें उनका हाथ पकड़ लेती हैं और कहती हैं, “देखो, मैं यों नहीं झूलूँगी। लाओ, तुम्हारा पीताम्बर! इसे कसकर अपने ऊपर बाँध लूँगी, फिर कोई बात नहीं।”

श्यामसुन्दर उनके भावावेशको जान लेते हैं। हँसकर अपना पीताम्बर श्रीप्रियापर ओढ़ाते हुए कहते हैं, “प्रिये! तू जो कहेगी, वही करूँगा!”

परिचित वचन कानोंमें पड़ते ही श्रीप्रियाको चेत होता है। वे देखती हैं कि प्यारे श्यामसुन्दर उन्हें पीताम्बर ओढ़ा रहे हैं। सारी बातें स्मरण आते ही वे सकुचा जाती हैं। श्यामसुन्दर उन्हें हृदयसे लगा लेते हैं। ललिता खिलखिलाकर हँस पड़ती हैं। सखियाँ और दासियाँ दौड़ती हुई वहाँ आ जाती हैं तथा उनकी सेवाके कार्यमें लग जाती हैं।

ENGLISH TRANSLATION

After humming for some time, Śrī Priyā sits up, rests Her face upon both palms, and reflects. "Beloved Śyāmasundara, every corner of My heart is Yours. O treasure of My life, each day I adorn this heart for You alone. Today too I have decorated it for You and sit waiting, yet I do not know why You have not come."

Restlessness drives Her to rise and wander from the bower like one bereft of reason. Outside, She sees a play-swing woven of leaves and again enters ecstasy. She feels that She is swinging while beloved Śyāmasundara pushes so swiftly that Her sari flies in the wind. This time His push is so forceful that the end of Her sari falls and catches upon a rose thorn. The Queen imagines that She has taken offence, forcibly stopped the swing, and stepped down. Her beloved has followed, saying, "No, now I shall push gently and properly. Beloved, climb back on and let Us swing."

Blind to the outer world in this absorption, Śrī Priyā circles the henna bed, repeating, "No, I shall not swing now. I shall not swing." She reaches the place where Śyāmasundara stands and collides with Him. At His touch She imagines that He is insistently leading Her back to the swing. Feigning anger outwardly while actually grasping His hand, She says, "Look, I shall not swing like this. Give Me Your pītāmbara. I shall bind it tightly around Myself, and then there will be no difficulty."

Śyāmasundara understands Her state. Laughing, He drapes His pītāmbara over Śrī Priyā and says, "Beloved, I shall do whatever You say."

The familiar voice reaches Her ears, and Śrī Priyā returns to outward awareness. She sees Her beloved Śyāmasundara wrapping Her in His pītāmbara. As everything comes back to Her, She grows shy. Śyāmasundara embraces Her to His heart. Lalitā bursts into laughter. The sakhīs and maidservants run to Them and begin their service.

CHAPTER 22

प्रतीक्षा लीला

The Līlā of Awaiting

Source scan pages 252–258

ORIGINAL

श्रीप्रिया करहरी चम्पाकी छायामें बेंचके आकारके अत्यन्त सुन्दर सिंहासनपर बैठी हैं। कुञ्जकी हरी-हरी दूबपर नीले मखमलकी मोटी चादर बिछी हुई है, उसीपर वह सिंहासन है। सिंहासन बना हुआ है काठका, पर उसमें सब ओरसे नीले मखमलकी गद्दी लगी हुई है। श्रीप्रियाके चरणोंके पास रूपमञ्जरी बैठी है तथा नीले रूमालसे धीरे-धीरे श्रीप्रियाके चरणोंके तलवे सहला रही है। श्रीप्रियाकी साड़ी नीली है। चूड़ामणि सिरपर है। ललाटमें सिन्दूरकी एक गोल बिन्दी अत्यन्त सुहावनी लग रही है। ठोड़ीपर छोटा-सा एक काला तिल है। उनके दाहिने हाथमें डण्ठीसहित कमल है, जिसे वे घुमा रही हैं। वे श्यामसुन्दरकी प्रतीक्षामें बार-बार राधाकुण्डके उत्तर एवं पूर्वकी ओर दृष्टि डालती हैं।

करहरी चम्पाकी पूर्वकी ओर दस गजकी दूरीपर एक बड़ा ही सुन्दर आमका पेड़ है, जिसमें मञ्जरियाँ लगी हुई हैं। उसीपर कोयल बैठी हुई कुहू-कुहूकी रट लगा रही है। श्रीप्रिया कभी-कभी उस कोयलकी ओर देख लेती हैं।

चम्पाके पूर्व एवं उत्तरके कोनेपर अत्यन्त सुन्दर हरे बाँसकी झाड़ी लगी हुई है। उसमें चार-पाँच बहुत ऊँचे-ऊँचे बाँस हैं। उनमें मञ्जरी लगी हुई है। उसके सबसे ऊपरके भागपर कुछ तोते बैठे हैं।

ENGLISH TRANSLATION

Śrī Priyā sits in the shade of the karaharī campā upon an exquisite throne shaped like a bench. A thick sheet of blue velvet has been spread over the grove's fresh green grass, and the throne rests upon it. Though made of wood, the throne is cushioned on every side with blue velvet. Rūpamañjarī sits at Śrī Priyā's feet and gently massages their soles with a blue handkerchief. Śrī Priyā wears a blue sari and a crest jewel upon her head. A round dot of vermilion shines beautifully upon her forehead, and a tiny black beauty mark adorns her chin. In her right hand she slowly turns a lotus with its stalk. Waiting for Śyāmasundara, she repeatedly casts her gaze toward the north and east of Rādhā-kuṇḍa.

Ten yards east of the karaharī campā stands a magnificent mango tree laden with blossoms. A cuckoo perched upon it repeats its call, "kuhū, kuhū." From time to time Śrī Priyā looks toward the bird.

At the northeastern corner beyond the campā grows a lovely green bamboo thicket. Four or five bamboos rise especially high, crowned with flowering sprays. Several parrots sit upon the uppermost branches.

ORIGINAL

एक तोता बोल रहा है, “राधे! राधे!! धीरज धरो! श्यामसुन्दर अब आ ही रहे होंगे। मैं अभी वहींसे उड़कर आया हूँ। माधवी कुञ्जके पास श्यामसुन्दर खड़े थे। उनके मुखपर अलकावली बिखरी हुई थी। कमरमें वंशी खोंसी हुई थी। लाल अधर बिम्बाफलके समान शोभा पा रहे थे। वे सुबलके कन्धेपर बायाँ हाथ रखे हुए थे तथा दाहिने हाथसे पुष्प तोड़ रहे थे। कभी-कभी तिरछी चितवनसे इधर-उधर देख भी लेते थे। पैरोंके नूपुर रुनझुन-रुनझुन शब्द कर रहे थे। मधुमङ्गल मुँह बनाता हुआ आता था और श्रीश्यामसुन्दर हँसकर कभी-कभी उसे हल्की चपत लगा देते थे। श्यामसुन्दरने पीताम्बरका ही झोला बना लिया था और उसीमें पुष्प तोड़कर रखते जाते थे। उनकी आँखोंमें अञ्जन लगा हुआ था। कपोलोंपर कुछ पसीनेकी बूँदें थीं। मन्द-मन्द मुस्कुराते हुए उन्होंने सुबलके कानमें कुछ कहा था। मैं उसी समय उड़कर और भी निकट जा पहुँचा। मैंने केवल तुम्हारा नाम सुना, जिससे समझ गया कि तुम्हारी ही कुछ बात कह रहे थे। श्रीकृष्णप्राणवल्लभे राधे! बस, अब आते ही होंगे।”

तोता अत्यन्त सुन्दर मधुर स्वरमें बार-बार इस बातको दुहरा रहा है कि बस, बस, अब आते ही होंगे। उसी समय वृन्दादेवी निकुञ्जके पश्चिमकी ओरसे आती हैं। उनके हाथमें सोनेका पिंजरा है, जिसमें एक सुन्दर सारी बैठी है। वृन्दाके आते ही श्रीराधारानी कहती हैं, “वृन्दे! उस तोतेको बुलाओ।”

वृन्दादेवी तोतेको आनेके लिये संकेत करती हैं। तोता तुरन्त उड़कर आता है तथा जिस पिंजरेमें सारी बैठी है, उसीपर आकर बैठ जाता है। वृन्दा श्रीराधासे कहती हैं, “अब बात करो!”

ENGLISH TRANSLATION

One parrot is saying, "Rādhe! Rādhe! Be patient. Śyāmasundara must surely be coming now. I have just flown from that very place. He was standing near the mādhavī grove, loose curls scattered across his face and his flute tucked into his waistband. His red lips shone like bimba fruit. His left hand rested upon Subala's shoulder while his right plucked flowers. From time to time he cast sidelong glances here and there. His anklets rang runajhuna, runajhuna. Madhumaṅgala approached pulling faces, and laughing Śyāmasundara would occasionally give him a light slap. Śyāmasundara had fashioned his yellow garment into a pouch and kept placing the gathered flowers within it. His eyes were lined with collyrium, and a few drops of perspiration stood upon his cheeks. Smiling gently, he whispered something into Subala's ear. At once I flew nearer. I heard only your name and thus understood that they were speaking of you. O Rādhe, beloved of Śrī Kṛṣṇa's life, he must surely be arriving now."

In an exceedingly sweet voice the parrot repeats again and again, "Surely, surely, he is coming now." At that moment Vṛndādevī enters from the west of the bower. She carries a golden cage in which a beautiful mynah is seated. The moment Vṛndā arrives, Śrī Rādhārāṇī says, "Vṛnde, call that parrot."

Vṛndādevī gestures for the parrot to come. He immediately flies down and perches upon the cage containing the mynah. Vṛndā tells Śrī Rādhā, "Now speak with him."

ORIGINAL

श्रीराधा तोतेको बुलाती हैं। तोता उड़कर श्रीराधारानीके बायें हाथकी हथेलीपर आकर बैठ जाता है। राधारानी अपने दाहिने हाथके कमलको सिंहासनपर रख देती हैं तथा उसी हाथसे तोतेके सिर एवं पीठको सहलाती हुई कहती हैं, “तोता! तूने मेरे प्यारे श्यामसुन्दरकी बातें सुनायी हैं, तुम्हें क्या दूँ?”

तोता अपने पंख फुलाता है तथा श्रीराधारानीके कर-स्पर्शको पाकर प्रेममें डूब जाता है। कभी आँख बन्द करता है, कभी खोलता है। इसी समय वृन्दादेवी, जो श्रीराधाके पश्चिमकी ओर खड़ी थीं, घूमकर श्रीराधाके दाहिनी ओर आ जाती हैं तथा कहती हैं, “तोता! एक बार फिर उड़कर जा और देख कि श्यामसुन्दरके आनेमें इतना विलम्ब क्यों हो रहा है?”

तोता यह सुनते ही फुर्रसे उड़कर आकाशमें पहले तो पूर्वकी ओर जाता है, फिर उत्तरकी ओर उड़ता हुआ राधाकुण्डको पार करके, तदुपरान्त विशाखा-कुञ्जको भी पार करके दृष्टिसे ओझल हो जाता है। जबतक तोता दिखलायी देता है, तबतक राधारानी उधर ही देखती रहती हैं। जब तोतेका दीखना बन्द हो जाता है, तब उसी सिंहासनका सहारा लेकर, उसपर पीठका भार देकर वे बायें हाथसे अपने कपोलोंको पकड़कर बैठ जाती हैं। दृष्टि फिर भी उसी ओर लगी हुई है कि जिस ओरसे श्यामसुन्दरके आनेकी सम्भावना है। ललिता, जो श्रीराधाके पीछे खड़ी रहकर कुछ सोच रही थीं, वे उत्तरकी ओर जाती हैं तथा चहारदीवारीके पास पहुँचकर, उसके ऊपर हाथ रखकर उत्तरकी ओर देखने लगती हैं। रूपमञ्जरी, जो रूमालसे तलवेको सहला रही थी, एकटक रानीके मुखकी ओर देख रही है।

ENGLISH TRANSLATION

Śrī Rādhā calls the parrot. He flies onto the palm of her left hand. Setting the lotus from her right hand upon the throne, Rādhārānī strokes the parrot's head and back with that same hand and asks, "Parrot, you have told me news of my beloved Śyāmasundara. What shall I give you?"

The parrot fluffs his feathers and, receiving the touch of Śrī Rādhārānī's hand, sinks into love. Now he closes his eyes, now opens them. Vṛndādevī, who had been standing west of Śrī Rādhā, circles around to her right and says, "Parrot, fly there once more and see why Śyāmasundara is taking so long to arrive."

At these words the parrot darts into the sky, first flying east and then turning north. He crosses Rādhā-kuṇḍa, passes beyond Viśākhā's grove, and disappears from sight. For as long as the parrot remains visible, Rādhārānī keeps looking after him. When she can no longer see him, she leans her back against the throne, rests her cheek upon her left hand, and sits with her gaze still fixed upon the direction from which Śyāmasundara may come. Lalitā, who had been standing behind Śrī Rādhā lost in thought, walks north to the surrounding wall, places her hand upon it, and looks in that direction. Rūpamañjarī, still caressing Rānī's sole with the handkerchief, gazes intently at her face.

ORIGINAL

अब वृन्दा पिंजरेका द्वार खोल देती हैं। उसमेंसे सारी निकलकर राधारानीके बायें पैरके पास आकर मखमली चादरपर खड़ी हो जाती है एवं श्रीराधारानीके पैरका अपनी चोंचसे स्पर्श करती है। श्रीराधारानी श्रीकृष्णके ध्यानमें इतनी तल्लीन हैं कि उन्हें यह तक पता नहीं चलता कि सारी मेरे पैरोंको छू रही है। पर विशाखाने थोड़ा झुककर सारीको अपनी हथेलीपर रख लिया तथा दाहिने हाथसे उसके सिरपर हाथ रखकर उससे बोलीं, “सारी! तू बड़ी चतुर है। यदि किसी प्रकार श्यामसुन्दरका समाचार ला सकेगी तो मैं तेरा बड़ा उपकार मानूँगी। तू जब जाती है तो काम बनाकर ही आती है। इसीलिये आज भी मैं तुझसे प्रार्थना करती हूँ कि ठीक-ठीक समाचार ला दे कि आज श्यामसुन्दरको देरी क्यों हो रही है?”

सारी तत्क्षण बोल उठती है, “अभी-अभी समाचार लाती हूँ। बस, एक घड़ीमें सारा भेद लेकर लौट आऊँगी।”

सारी भी उड़कर उधर ही चली जाती है, जिधर तोता उड़कर गया था। विशाखा पंखा लेकर राधारानीको बयार करने लगती हैं; पर श्रीराधारानी रोक देती हैं तथा कहती हैं, “रहने दो, अच्छा नहीं लग रहा है।”

श्रीराधा उस सिंहासनपरसे उठकर नीचे मखमली चादरपर लेट जाती हैं। विमलामञ्जरी गुलाबपाशमें केवड़ेका अत्यन्त सुगन्धित जल लाती है तथा श्रीराधारानीका सिर अपनी गोदमें लेकर बैठ जाती है। श्रीराधारानी चित्त लेटी हुई हैं। उनका पैर पूर्वकी ओर है और सिर पश्चिमकी ओर विमलामञ्जरीकी गोदमें। विमलामञ्जरी दाहिने हाथमें गुलाबपाशको लेकर उसके अत्यन्त महीन छिद्रोंसे सुगन्धित जल श्रीराधाके मुख एवं शरीरपर धीरे-धीरे छींटती है तथा अपने बायें हाथसे ललाटपर बिखरे हुए केशोंको ठीक कर रही है।

ENGLISH TRANSLATION

Vṛndā now opens the cage. The mynah emerges, comes to Rādhārānī's left foot, stands upon the velvet sheet, and touches her foot with her beak. Śrī Rādhārānī is so absorbed in meditation upon Śrī Kṛṣṇa that she does not even notice the bird touching her feet. Viśākhā bends down, lifts the mynah onto her palm, and strokes her head with her right hand. "Śārikā, you are very clever. If you can somehow bring news of Śyāmasundara, I shall consider myself deeply indebted to you. Whenever you go, you always accomplish the task. Therefore I pray to you today as well: bring accurate news of why Śyāmasundara is so late."

The mynah answers at once, "I shall bring news immediately. Within one ghaṭī I shall return with the whole secret."

She flies away in the same direction as the parrot. Viśākhā begins to fan Rādhārānī, but Śrī Rādhārānī stops her, saying, "Leave it. Nothing feels pleasing."

Śrī Rādhā rises from the throne and lies down upon the velvet sheet below. Vimalāmañjarī brings intensely fragrant kewra water in a rose sprinkler and sits with Śrī Rādhārānī's head in her lap. Rādhārānī lies on her back, her feet toward the east and her head resting westward in Vimalāmañjarī's lap. Holding the sprinkler in her right hand, Vimalāmañjarī softly mists Śrī Rādhā's face and body with fragrant water through its exceedingly fine perforations, while with her left hand she arranges the locks scattered across Rādhā's forehead.

ORIGINAL

कुछ देर बाद राधारानी उठ बैठती हैं तथा चहारदीवारीके पास खड़ी हुई ललितासे उत्सुकतापूर्वक पूछती हैं, “ललिते! तोता आया क्या?”

ललिता कहती हैं, “नहीं।”

श्रीराधारानी उठकर चहारदीवारीके पास जाती हैं तथा ललिताकी दाहिनी ओर खड़ी हो जाती हैं। कुछ देर खड़ी रहकर मुस्कुरा पड़ती हैं तथा कुछ लज्जामिश्रित मुद्रामें पूर्व एवं उत्तरके कोनेकी ओर हाथसे संकेत करते हुए कहती हैं, “ललिते! वह देखो! श्यामसुन्दर आ रहे हैं।”

ललिता, “कहाँ आ रहे हैं?”

श्रीराधा कुछ झुँझलाये हुए स्वरमें कहती हैं, “अन्धी हो गयी हो क्या? क्या देखती नहीं, वे वहाँ खड़े हैं!”

अब ललिता समझ जाती हैं कि श्रीराधाको भ्रम हो रहा है। प्रेमके आवेशमें राधाकी दृष्टि स्पष्ट नहीं देख रही है। ललिता मुस्कुराकर चुप रह जाती हैं। श्रीराधा फिर वहाँसे हटकर, जहाँ पहले लेटी हुई थीं, वहीं जाकर लेट जाती हैं। फिर कुछ उतावलेपनकी मुद्रामें उठकर वहीं ललिताके पास आ जाती हैं तथा कहती हैं, “ललिते! मेरा सिर घूम रहा है। मुझे भ्रम हो गया था, वहाँ श्यामसुन्दर नहीं थे।”

फिर थोड़ी देर खड़ी रहकर श्रीप्रिया प्रसन्न स्वरमें कहती हैं, “वह देखो, वे आ रहे हैं।”

ललिता इस बार भी मुस्कुराकर चुप रह जाती हैं। राधा कुछ चिढ़ी-सी होकर वहीं चहारदीवारीके सहारे पीठ टेककर खड़ी हो जाती हैं। कुछ देर बाद फिर उधर ही देखने लगती हैं। श्रीराधाका मुख-मण्डल कुछ लाल होता जा रहा है। शरीर भी कुछ काँप-सा रहा है।

ENGLISH TRANSLATION

After some time Rādhārānī sits up and eagerly asks Lalitā, who is standing beside the surrounding wall, "Lalite, has the parrot returned?"

"No," Lalitā replies.

Śrī Rādhārānī rises, goes to the wall, and stands at Lalitā's right. After waiting there for a while, she smiles and, with a somewhat bashful expression, gestures toward the northeastern corner. "Lalite, look there! Śyāmasundara is coming."

"Where is he coming?" Lalitā asks.

Śrī Rādhā answers with some irritation, "Have you gone blind? Can you not see him standing there?"

Lalitā now understands that Śrī Rādhā is seeing an illusion. Overwhelmed by love, Rādhā's vision can no longer distinguish clearly. Lalitā smiles and remains silent. Śrī Rādhā returns to the place where she had been lying and lies down again. Then, in sudden impatience, she rises, returns to Lalitā, and says, "Lalite, my head is spinning. I was mistaken. Śyāmasundara was not there."

After standing a little longer, Śrī Priyā cries joyfully, "Look there, he is coming!" Again Lalitā merely smiles and says nothing. Somewhat annoyed, Rādhā leans her back against the wall. After a while she again looks in that direction. Śrī Rādhā's face is growing flushed, and her body has begun to tremble.

ORIGINAL Braj Bhāṣā

ललिता रूपमञ्जरीको कुछ संकेत करती हैं। रूपमञ्जरी श्रीराधाके हाथोंको पकड़कर वहाँ सिंहासनके पास ले जाती है। राधा जाते ही धड़ामसे वहाँ गिर पड़ती हैं, पर लवङ्गमञ्जरी उन्हें सँभाल लेती है। वह अपनी गोदमें सिर रखकर पासमें ही रखे हुए गुलाबपाशसे केवड़ेका सुगन्धित जल लेकर राधाके मुखपर छींटा देने लगती है। विशाखा मधुमतीमञ्जरीको कुछ संकेत करती हैं। मधुमती वीणाके तारको एक-दो बार ऐंठकर तुरन्त ही ठीक कर लेती है तथा अत्यन्त मधुर स्वरमें गाने लगती है:

मो मन गिरिधर छवि पै अटकी।

ललित त्रिभंगी चाल पै चलि कै चिबुक चारु ग्रीव उठकी॥

सजल स्याम घन बरन लीन है फिर कहूँ अनत न भटकी।

कृष्णदास किये प्रान निछावर यह तन जग सिर पटकी॥

ENGLISH TRANSLATION

Lalitā makes a sign to Rūpamañjarī. Taking Śrī Rādhā by the hands, Rūpamañjarī leads her toward the throne. The moment she reaches it, Rādhā collapses heavily, but Lavaṅgamañjarī catches her. Placing Rādhā's head in her lap, she takes the nearby rose sprinkler filled with fragrant kewra water and begins sprinkling Rādhā's face. Viśākhā signals to Madhumatīmañjarī. Madhumatī quickly twists a string of her vīṇā once or twice to tune it, then sings in an exceedingly sweet voice:

My heart is fastened upon Giridhara's beauty. As he walks in graceful threefold bending, his lovely chin and neck are raised. Absorbed in the rain-laden dark cloud of his complexion, my heart can no longer wander anywhere else. Kṛṣṇadāsa has offered up his very life, casting this body down before all the world.

ORIGINAL

गीत सुनते ही श्रीराधाका सारा शरीर काँपने लग गया। वे पहले तो लेटी हुई कुछ घबड़ाने लगीं, फिर उठ बैठीं और उठकर इधर-उधर देखने लगीं। फिर बहुत शीघ्रतासे उठकर वहाँ गयीं, जहाँ ललिता खड़ी थीं। ललिताके पाससे फिर दौड़कर सिंहासनके पास जा गयीं। सिंहासनपर पैर फैलाकर बैठ गयीं तथा मुस्कुराने लगीं। फिर उठकर खड़ी हो गयीं तथा जिस प्रकार श्रीकृष्ण ग्रीवा टेढ़ी करके बोलते हैं, उसी प्रकार श्रीराधाको कुछ सिरकी टेढ़ी करके बोलती हैं, “री ललिते! सुन।”

ललिता अब एकटक श्रीराधाकी ओर ही देख रही हैं। ललिता जब नहीं आयी, तब श्रीराधारानी स्वयं उठकर उसके पास जाकर खड़ी हो गयीं तथा अत्यन्त विनयके स्वरमें बोलीं, “ललिते! बता दे, राधा कहाँ छिपी है? अभी तो यहीं थी, कहाँ चली गयी?”

राधा इस प्रकार ललिताके पैरोंपर गिरकर प्रार्थना कर रही थीं कि उसी समय श्यामसुन्दर आ पहुँचते हैं तथा राधारानीकी प्रेम-दशाको मुग्ध होकर खड़े-खड़े देखने लग जाते हैं। सारी एवं तोता भी चहारदीवारीके ऊपर जा बैठते हैं। श्रीराधा अत्यन्त व्याकुल-सी होकर बार-बार ललितासे कहती हैं, “ललिते! मेरी प्यारी ललिते!! क्या नहीं बतायेगी कि राधा कहाँ छिपी है?”

ENGLISH TRANSLATION

The instant she hears the song, Śrī Rādhā's whole body begins to tremble. At first she grows agitated while still lying down. Then she sits up and looks all around. Suddenly she rises and hurries to where Lalitā stands, then runs back from Lalitā to the throne. She sits upon it with her legs extended and begins to smile. Rising again, she tilts her neck and head as Śrī Kṛṣṇa does when he speaks and says, "O Lalite, listen."

Lalitā now gazes intently at Śrī Rādhā. When Lalitā does not come, Rādhārānī herself goes to her and pleads with utmost humility, "Lalite, tell me where Rādhā is hiding. She was here only a moment ago. Where has she gone?"

Rādhā falls at Lalitā's feet and continues begging. At that very moment Śyāmasundara arrives. Enchanted, he stands watching Rādhārānī's state of divine love. The mynah and parrot also perch upon the surrounding wall. Utterly distraught, Śrī Rādhā says again and again, "Lalite, my beloved Lalite! Will you not tell me where Rādhā is hiding?"

ORIGINAL

ललिता एवं सखियाँ तो चकित होकर श्रीराधारानीकी यह प्रेम-दशा देख रही हैं। श्रीराधाके मुखकी ओर देखती हैं तथा आँखोंके संकेतद्वारा श्रीकृष्ण, जो राधाके दक्षिणके कोनेपर दूर खड़े हैं, कहती हैं, “देखो, यहाँ कैसी लीला हो रही है?”

श्रीराधा फिर वहाँसे उठकर इधर-उधर घूमने लग जाती हैं। श्रीराधाका मुँह जब श्रीकृष्णकी ओर होता है तो श्रीकृष्ण पासकी एक वृक्षकी ओटमें हो जाते हैं तथा राधा सर्वथा पगली-सी होकर कभी पूर्व एवं कभी दक्षिणकी ओर मुँह करके देखती रहती हैं। श्रीकृष्ण संकेतसे ललिताको बुलाते हैं। ललिता श्रीकृष्णके पास जाती हैं। श्रीकृष्ण उसके कानमें कुछ कहते हैं। ललिता राधाके पास आती हैं तथा उन्हें पकड़कर कहती हैं, “देखो, तुम्हें राधाके मिलनेका उपाय बता देती हूँ। तुम वंशीमें तान भरो, फिर राधा तो पगली होकर दौड़ी आयेगी।”

राधारानी बड़ी प्रसन्नतासे अपनी कमरपर हाथ रखकर ऐसी मुद्रा बनाती हैं कि मानो वंशी खोज रही हों। ठीक इसी समय श्रीकृष्ण पीछेसे आकर श्रीराधाके होठोंपर अपनी वंशी रख देते हैं। श्रीराधा उसमें सुर भरने लगती हैं; पर श्यामसुन्दरका स्पर्श जैसे-जैसे होता जाता है, वैसे-वैसे वे कुछ मूर्च्छित-सी होती जाती हैं। श्यामसुन्दर मुस्कुराते हुए श्रीराधाको धीरेसे बैठा देते हैं। राधा यन्त्रकी तरह बैठ जाती हैं, पर अधिक देरतक बैठे रहना सम्भव नहीं। मूर्च्छित होकर वे श्रीकृष्णकी गोदमें गिर पड़ती हैं।

ENGLISH TRANSLATION

Lalitā and the sakhīs behold Śrī Rādhārānī's condition of love in astonishment. Looking toward Śrī Rādhā's face, they signal with their eyes to Śrī Kṛṣṇa, who is standing at a distance near the southern corner, "See what a wondrous līlā is unfolding here."

Śrī Rādhā rises and begins wandering to and fro. Whenever her face turns toward Śrī Kṛṣṇa, he hides behind a nearby tree. Rādhā, appearing utterly maddened, keeps looking first east and then south. Śrī Kṛṣṇa gestures for Lalitā to come. She goes to him, and he whispers something in her ear. Returning to Rādhā and taking hold of her, Lalitā says, "Look, I shall tell you how to find Rādhā. Sound a melody upon the flute, and Rādhā will lose all restraint and come running to you."

Overjoyed, Rādhārānī places a hand at her waist and acts as though searching for a flute. At that instant Śrī Kṛṣṇa comes from behind and places his own flute against Śrī Rādhā's lips. She begins to breathe melody into it, but as Śyāmasundara's touch deepens, she gradually loses consciousness. Smiling, Śyāmasundara gently seats her. Rādhā sits like a mechanical doll, but cannot remain upright for long. Fainting, she falls into Śrī Kṛṣṇa's lap.

ORIGINAL Braj Bhāṣā

श्रीकृष्ण गुलाबपाश लेकर अपने दाहिने हाथसे श्रीराधाके मुखपर छींटा देने लगते हैं। जब श्रीराधाकी मूर्च्छा नहीं टूटती, तब श्रीकृष्ण बायें हाथसे वंशी बजाते हैं तथा उसी स्वरमें मधुमती गाती है:

स्याम दृगन को चोट बुरी री।

ज्यों ज्यों लेहु नाम तू काको मो बावरे हैं नैन पुरी री॥

ना जानो अब सुध बुध मेरी कौन बिपिन में जाय दुरो री।

नारायन नहिं करत सजनी जाको ऐसी प्रीति छुरी री॥

ENGLISH TRANSLATION

Śrī Kṛṣṇa takes the rose sprinkler and mists Śrī Rādhā's face with his right hand. When she does not awaken, he plays the flute with his left hand while Madhumatī sings to the same melody:

The wound dealt by Śyāma's eyes is terrible, dear friend. Whenever you utter someone's name, my eyes grow utterly mad and overflow. I no longer know where my awareness and senses have gone, or into which forest they have fled. Nārāyaṇa says, O friend, no one should love when love is such a piercing knife.

ORIGINAL

गीत सुनते ही श्रीराधाको चेत होने लगता है। वे आँखें खोल देती हैं तथा देखती हैं कि उनका सिर श्यामसुन्दरकी गोदमें है एवं श्यामसुन्दर मन्द-मन्द मुस्कुरा रहे हैं। श्रीराधा सकुचायी-सी होकर सखियोंकी ओर देखती हैं। अब उन्हें ज्ञान होता है कि मैं तो चहारदीवारीके पास खड़ी थी, फिर यहाँ कैसे आ गयी? यही सोचती हुई घबरायी-सी होकर वे उठ बैठती हैं। सखियाँ खिलखिलाकर हँस पड़ती हैं। श्यामसुन्दर हँसते हुए कहते हैं, “क्यों, श्रीराधारानी मिली कि नहीं?”

अब राधारानी समझ जाती हैं कि ये बाह्यज्ञानशून्य होकर कुछ-का-कुछ बकती रही हैं, इसलिये और भी सकुचा-सी जाती हैं; पर साथ ही आनन्दके कारण मुखपर मुस्कुराहट आ जाती है। श्यामसुन्दर उन्हें हाथ पकड़कर उठाते हैं तथा राधारानी उठकर श्यामसुन्दरके कन्धोंको पकड़कर मन्द-मन्द गतिसे चलती हुई सिंहासनके पास पहुँच जाती हैं। श्रीकृष्ण एवं राधारानी, दोनों सिंहासनपर उत्तरकी ओर मुँह करके बैठ जाते हैं। दो सखियाँ पंखा झलने लगती हैं तथा कुछ सखियाँ शर्बत तैयार करने लग जाती हैं।

ENGLISH TRANSLATION

The song begins to restore Śrī Rādhā's awareness. Opening her eyes, she sees that her head rests in Śyāmasundara's lap and that he is smiling softly. Bashful, she looks toward the sakhīs. Then she remembers, "I was standing beside the surrounding wall. How did I come here?" Alarmed by this thought, she sits up, and the sakhīs burst into laughter. Laughing, Śyāmasundara asks, "Well, did you find Śrī Rādhārānī or not?"

Rādhārānī now understands that, bereft of external awareness, she had been babbling all sorts of things. She grows still more embarrassed, yet joy brings a smile to her face. Taking her hand, Śyāmasundara helps her rise. Rādhārānī holds his shoulders and walks slowly with him to the throne. Śrī Kṛṣṇa and Rādhārānī sit together upon it facing north. Two sakhīs begin to fan them, while several others prepare sherbet.

CHAPTER 23

विनोद लीला

The Playful Amusement Līlā

Source scan pages 259–271

ORIGINAL

Sanskrit invocation

॥ विजयेतां श्रीप्रियाप्रियतमौ ॥

ENGLISH TRANSLATION

May Śrī Priyā and Her Beloved be ever victorious.

ORIGINAL

निकुञ्जमें सुन्दर-सुन्दर फूलोंकी क्यारियाँ लगी हुई हैं। श्रीकृष्ण एवं श्रीराधा दोनों हाथोंमें फूल तोड़कर डलियामें रखते जा रहे हैं। वे उजले-उजले बड़े-बड़े बेलेके फूलोंको तोड़ते हैं तथा डलियामें सजा-सजाकर रख देते हैं। भौंरोंका समूह गुन-गुन करता हुआ इस फूलसे उस फूलपर उड़ रहा है। श्रीकृष्णके कपोलपर एक भौंरा बैठना चाहता है। श्रीकृष्ण उसे उड़ाना चाहते हैं, श्रीप्रिया मन्द-मन्द मुस्कुराती हुई सहायता करती हैं, दोनों हँसते हैं।

ENGLISH TRANSLATION

Beautiful flower beds fill the bower. Śrī Kṛṣṇa and Śrī Rādhā pluck blossoms with both hands and place them in a basket, arranging the large white jasmine flowers with care. A swarm of bees hums from blossom to blossom. One bee tries to settle upon Śrī Kṛṣṇa's cheek. As He attempts to drive it away, Śrī Priyā smilingly helps Him, and They both laugh.

ORIGINAL

इसी समय श्यामसुन्दरका प्यारा सखा मधुमंगल वहाँ आ जाता है। मधुमंगल बार-बार मुँह फुलाकर फुन-फुन करता हुआ सखियोंके बीचमें आकर खड़ा हो जाता है। ललिता धीरेसे पीछेसे आकर उसका कन्धा हिलाकर पूछती हैं, “क्यों बाबाजी! आज पेट भरा है कि खाली है?”

मधुमंगल, “डाइन कहींकी! कल तूने मुझे लीची खिला दी थीं। अभीतक मेरा पेट दुख रहा है!”

ENGLISH TRANSLATION

Just then Śyāmasundara's dear friend Madhumaṅgala arrives. Puffing out his cheeks and snorting repeatedly, he comes to stand among the sakhīs. Lalitā quietly approaches from behind, shakes his shoulder, and asks, "Well, holy sir, is your belly full today or empty?"

"You witch! Yesterday you fed me lychees, and my stomach still hurts!"

ORIGINAL

श्रीकृष्ण एवं राधा खिलखिलाकर हँस पड़ते हैं। श्रीकृष्णकी ओर देखकर मधुमंगल कहता है, “अरे! तुम्हें तो हँसी आती है और मैं रातभर सो नहीं सका।”

श्रीकृष्ण, “मैया! मैं तो इसलिये हँस दिया कि तू सीधे यह क्यों नहीं कह देता कि हे ललिते, मुझ पपीता ला दे। बेचारीको झूठमूठ ‘डाइन’ कह दिया।”

मधुमंगल, “नहीं जी! मैं इसके हाथकी अब कोई भी वस्तु नहीं खा सकता।”

ENGLISH TRANSLATION

Śrī Kṛṣṇa and Rādhā burst into laughter. Madhumaṅgala looks at Kṛṣṇa. "You find it funny, but I could not sleep all night."

"My dear fellow, I laughed only because you could simply have said, ‘Lalitā, bring me a papaya.’ Instead you falsely called the poor girl a witch."

"No, indeed! I can no longer eat anything from her hand."

ORIGINAL

इसी समय विशाखा आती हैं तथा कहती हैं, “मैया मधुमंगल! तू मेरा एक काम कर दे तो फिर मैं तुम्हें पेटभर आम खिलाऊँगी। मेरे निकुञ्जमें इतने बढ़िया-बढ़िया आम पके हैं कि तेरे मुँहमें देखते ही पानी आ जायेगा।”

श्रीकृष्ण, “अरे मैया! धोखेमें मत आना। यह विशाखा बड़ी चतुर है। पहले काम करा लेगी, फिर आम नहीं देगी।”

मधुमंगल, “हूँ, मैं तेरी तरह भोला थोड़े ही हूँ! आम पहले खाऊँगा, तब फिर कामकी बात!”

विशाखा, “नहीं, नहीं, पहले आम दूँगी। तू खा ले, फिर काम करना।”

ENGLISH TRANSLATION

Viśākhā arrives. "Dear Madhumaṅgala, do one task for me and I shall feed you mangoes until you are full. Such excellent mangoes have ripened in my bower that your mouth will water at the mere sight of them."

Śrī Kṛṣṇa warns him, "My friend, do not be deceived. Viśākhā is very clever. She will first have the work done, then withhold the mangoes."

"Huh! I am not as innocent as you. I shall eat the mangoes first, and only then discuss the task."

"No, no. I shall give you the mangoes first. Eat them, and then do the work."

ORIGINAL

श्रीकृष्ण, “मधुमंगल! देख, यह तुझे वास्तवमें यहाँसे हटाना चाहती है। तू लोभमें कहीं आ गया तो फिर मैं अकेला रह जाऊँगा और ये सब मुझे तंग करेंगी।”

मधुमंगल, “विशाखे! देख, मैं-तू एक ही गुरुके चेले हैं। तू मेरे कान्हूँसे मुझे यदि हटाना चाहेगी तो सावधान रहना। पाँच दिनतक लगातार तुम्हें ऐसा पाठ पढ़ाऊँगा कि जीवनभर याद रखेगी।”

ENGLISH TRANSLATION

Śrī Kṛṣṇa says, "Madhumaṅgala, she actually wants to lure you away from here. If greed overcomes you, I shall be left alone and all of them will torment Me."

"Viśākhā, remember that Kanhū and I are disciples of the same guru. If you try to separate me from him, beware. For five days without pause I shall teach you such a lesson that you will remember it all your life."

ORIGINAL

पासमें पड़े हुए कुछ जामुन मधुमंगलके हाथमें रखकर श्रीराधा कहती हैं, “पहले तू इन्हें खा ले! फिर सचमुच एक काम तुमसे कराना है। तू कर देगा तो मैं तुम्हारे पिताके लिये दो सुन्दर हीरे दूँगी।”

मधुमंगलसे श्रीकृष्ण आँखोंसे कुछ संकेत करके कहते हैं। मधुमंगल भी आँखोंसे ही उत्तर देता है। ललिता इसी बीच एक हलकी-सी चपत मधुमंगलको लगा देती हैं तथा कहती हैं, “खरी बात करनेसे बच्चू! छूटोगे नहीं। या तो सीधे मनसे हमलोग जो कहें, वह कर दो, नहीं तो मैं इस कुञ्जसे अभी-अभी बाहर निकाल दूँगी।”

ENGLISH TRANSLATION

Placing a few nearby jambul fruits in Madhumaṅgala's hand, Śrī Rādhā says, "First eat these. We truly do have a task for you. If you perform it, I shall give two beautiful diamonds for your father."

Śrī Kṛṣṇa signals something to Madhumaṅgala with His eyes, and Madhumaṅgala replies in the same way. Meanwhile Lalitā gives Madhumaṅgala a light slap. "Speaking plainly will not get you off, young man. Either do whatever we ask with a willing heart, or I shall throw you out of this bower this very moment."

ORIGINAL

चपत लगनेपर मधुमंगल दोनों हाथोंसे अपना गाल पकड़ लेता है तथा विचित्र स्वरमें कहता है, “बाप रे! ललिता तो सड़ाकाड़ी दुर्गा हो गयी है। अरे! मेरी बलि लेगी क्या? नहीं, नहीं, ऐसा मत करना। मैं अपने बापका एक ही बेटा हूँ।”

ENGLISH TRANSLATION

At the slap Madhumaṅgala clutches his cheek with both hands and cries in a strange voice, "Good heavens! Lalitā has become the fierce goddess Durgā. Are you going to sacrifice me? No, no, do not do that. I am my father's only son."

ORIGINAL

सभी मधुमंगलकी बात सुनकर हँसने लगते हैं तथा विशाखा ललितापर कुछ गरम होकर कहती हैं, “ललिते! सचमुच तू व्यर्थमें मधुमंगलको तंग कर रही है। देख! यह बेचारा कितना भला है! उस दिन यह नहीं होता तो तू ही बता, हमलोगोंको श्रीकृष्णसे हारकर न-जाने इनकी क्या-क्या चाटुकारिता करनी पड़ती।”

विशाखा यह कहकर मधुमंगलका मुँह अपने रूमालसे पोंछती हैं। मधुमंगल श्रीकृष्णकी ओर देखकर संकेतसे कुछ कहना चाहता है, पर ललिता इस प्रकार बीचमें आकर खड़ी हो जाती हैं कि श्रीकृष्ण आड़में पड़ जाते हैं।

ENGLISH TRANSLATION

Everyone laughs. Growing somewhat heated with Lalitā, Viśākhā says, "Lalitā, you truly are tormenting Madhumaṅgala for no reason. See how good the poor fellow is. Had he not been there that day, tell me how much flattery we might have had to lavish upon Śrī Kṛṣṇa after losing to Him."

Viśākhā wipes Madhumaṅgala's face with her handkerchief. Madhumaṅgala tries to signal something to Śrī Kṛṣṇa, but Lalitā steps between them so that Kṛṣṇa is hidden from view.

ORIGINAL

मधुमंगल, “अजी देवीजी! आपने चपत भी लगा दी और अब फिर नयी छेड़खानी कर रही हैं तो फिर देवी-देवाका युद्ध होगा, भला! आप मेरी बात समझ रही हैं न!”

ललिता मुस्कुराती हैं। मधुमंगल चाहता है कि किसी प्रकार यह सामनेसे हट जावे तो श्रीकृष्णको अपने मनकी बात संकेतसे ही समझा दूँ; पर मधुमंगल जिधर मुँह फेरता है, ललिता जान-बूझकर उसी ओर बढ़ जाती हैं और श्रीकृष्ण उसकी आड़में हो जाते हैं।

ENGLISH TRANSLATION

Madhumaṅgala says, "O goddess! You have already slapped me, and now you are teasing me afresh. There will be a war between goddess and god, you know. You understand what I mean, do you not?"

Lalitā smiles. Madhumaṅgala wants her to move aside so that he can convey his thoughts to Śrī Kṛṣṇa by signs, but whichever way he turns his face, Lalitā deliberately shifts the same way and blocks his view of Kṛṣṇa.

ORIGINAL

मधुमंगल नयी चतुराई करता है। वह अपना कुरता फाड़ लेता है तथा कहता है, “बाप रे! ललिता हमें फाड़कर खा जायेगी! कान्हूँ! देखो, सँभालो!”

श्रीकृष्ण हँसते हुए ललिताके पीछे आकर खड़े हो जाते हैं तथा ललिताके कन्धेपर हाथ रखकर कुछ ऐसी मुख-मुद्रा बनाते हैं मानो मधुमंगलसे कह रहे हों कि अभी थोड़ी देर चुप रह, हल्ला मत कर, नहीं तो खेल बिगड़ जायेगा।

ENGLISH TRANSLATION

Madhumaṅgala devises a new trick. Tearing his own kurta, he cries, "Good heavens! Lalitā is going to tear us apart and devour us! Kanhū, look, save me!"

Laughing, Śrī Kṛṣṇa comes to stand behind Lalitā and places His hand upon her shoulder. His expression seems to tell Madhumaṅgala, "Be quiet for a little while. Do not make a commotion, or the game will be spoiled."

ORIGINAL

मधुमंगल संकेतको समझ जाता है तथा ललिताके आगे हाथ जोड़कर गालोंको फुलाकर एक श्लोक पढ़ता है। श्लोकका भाव यह है कि हे देवि! आप चण्डी हो, मेरी बलि मत लेना, नहीं तो मेरे बाप मेरे लिये बहुत रोयेंगे और चिढ़कर फिर तुम्हारी पूजा बन्द कर देंगे। मधुमंगल इस श्लोकके द्वारा श्रीकृष्णको अपने मनकी बात संकेतमें समझा देता है तथा श्रीकृष्ण भी समझकर हँसने लगते हैं।

ENGLISH TRANSLATION

Madhumaṅgala understands the sign. With joined palms and puffed cheeks he recites a verse before Lalitā. Its meaning is: "O goddess, You are Caṇḍī. Do not take me as Your sacrifice, or my father will weep bitterly for me and, becoming angry, will cease to worship You." Through this verse Madhumaṅgala also conveys his hidden thought to Śrī Kṛṣṇa, who understands and begins to laugh.

ORIGINAL

इतनेमें ही विशाखाकी एक मञ्जरी परातमें बहुत बड़े-बड़े अत्यन्त मधुर आम भरकर लाती है। मधुमंगलकी दृष्टि आमोंपर चली जाती है। वह कोख बजा-बजाकर नाचता एवं कहता है, “अरे! क्या ही मीठे आम हैं! विशाखे! यदि तुमने ऐसे मीठे आम मुझे आज खिलाये तो सच मान कि मैं तुम्हें हृदयसे आशीर्वाद दूँगा।”

ENGLISH TRANSLATION

Just then one of Viśākhā's mañjarīs brings a large basin filled with enormous, exceedingly sweet mangoes. Madhumaṅgala's eyes fall upon them. Slapping his sides, he dances and cries, "Ah, what sweet mangoes! Viśākhā, if you feed me mangoes this sweet today, believe me, I shall bless you from my heart."

ORIGINAL

“देख! मैं ब्राह्मणका लड़का हूँ, मेरा आशीर्वाद कभी झूठा नहीं होता। मेरे आशीर्वादसे तेरे मुँहमें निरन्तर आमकी सुगन्धि आने लगेगी। फिर आम खानेपर तेरा जी नहीं चलेगा।”

मधुमंगलके बोलनेके ढंगसे तथा बीच-बीचमें मुँह बनानेके कारण सभी हँस पड़ते हैं। राधारानी भी इस बार खुलकर हँसने लगती हैं तथा अत्यन्त मधुर स्वरमें कहती हैं, “आ! मैं तुझे आम खिलाती हूँ।”

ENGLISH TRANSLATION

"Remember, I am a brāhmaṇa's son, and my blessing is never false. By my blessing your mouth will always carry the fragrance of mangoes. Then you will no longer crave to eat them."

His manner of speaking and the faces he makes between sentences cause everyone to laugh. This time Rādhārānī laughs openly and says in an exceedingly sweet voice, "Come, I shall feed you mangoes."

ORIGINAL

वे मधुमंगलके पास आकर खड़ी हो जाती हैं। हाथ पकड़कर श्रीकृष्णको झकझोरता हुआ मधुमंगल बैठ जाता है। श्रीकृष्ण भी उसके साथ ही बैठ जाते हैं। चित्रा एक सुन्दर छुरी लाती हैं तथा आमोंको शीतल जलसे धोकर एवं छीलकर उनकी फाँक (टुकड़े) सोनेकी तश्तरीमें रखती जाती हैं। दो तश्तरियाँ भर जानेपर मधुमंगल कहता है, “तुमलोगोंका परोसना तो शायद कलियुगके बीत जानेके बाद समाप्त होगा।”

ENGLISH TRANSLATION

She comes and stands beside Madhumaṅgala. Taking Śrī Kṛṣṇa by the hand and shaking Him, Madhumaṅgala sits down, and Kṛṣṇa sits with him. Citrā brings a beautiful knife, washes the mangoes in cool water, peels them, and places their slices upon golden plates. When two plates have been filled, Madhumaṅgala says, "Perhaps you will finish serving only after the age of Kali has passed away."

ORIGINAL

फिर मधुमंगल श्रीकृष्णसे कहता है, “कान्हूँ! ऐसा लगता है कि आम सचमुच बहुत मीठे हैं!”

श्रीराधा मन्द-मन्द मुस्कुराती हुई और मधुर चालसे चलती हुई दोनों तश्तरियोंको लाकर पहले मधुमंगलके सामने एवं फिर श्रीकृष्णके सामने एक-एक तश्तरी रख देती हैं। घनी दूबके कारण वहाँकी भूमि इतनी कोमल एवं हरी-हरी हो रही है मानो हरे मखमलका गद्दा बिछा हुआ हो। उसी दूबपर श्यामसुन्दर एवं मधुमंगल बैठे हुए आमका भोग लगाते हैं।

ENGLISH TRANSLATION

Madhumaṅgala tells Śrī Kṛṣṇa, "Kanhū, it seems that these mangoes truly are very sweet!"

Smiling softly and walking with a graceful gait, Śrī Rādhā brings the two plates and sets one first before Madhumaṅgala, then the other before Śrī Kṛṣṇa. Thick dūrvā grass makes the ground so soft and green that it resembles a cushion of green velvet. Seated upon it, Śyāmasundara and Madhumaṅgala begin to enjoy the mangoes.

ORIGINAL

श्यामसुन्दरका एक हाथ भूमिपर है, पैर फैले हुए हैं तथा वे दाहिने हाथसे आम खा रहे हैं। इन्दुलेखा दो गिलासोंमें शीतल एवं मधुर जल भरकर लाती हैं तथा उनको तश्तरियोंके पास रख देती हैं। मधुमंगल कभी तो पालथी मारकर बैठता है और कभी श्यामसुन्दरके समान ही पैर फैलाकर एक हाथ भूमिपर रखकर आम खाता है।

ENGLISH TRANSLATION

Śyāmasundara rests one hand upon the ground, stretches out His legs, and eats mango with His right hand. Indulekhā brings two glasses of cool, sweet water and places them beside the plates. Madhumaṅgala sometimes sits cross-legged and at other times imitates Śyāmasundara, stretching out his legs and eating with one hand upon the ground.

ORIGINAL

श्यामसुन्दर शान्त मुद्रासे ही आम खाते हैं। उनकी दृष्टि श्रीप्रियाके मुखकी ओर ही प्रायः लगी है। इसी बीचमें मधुमंगलने दो बार कहा, “क्यों कान्हूँ! आम मीठा है न?”

श्रीकृष्णकी दृष्टि श्रीराधाकी शोभा निहारती हुई उसीमें इतनी तल्लीन-सी हो गयी थी कि उन्होंने मधुमंगलकी बात सुनी ही नहीं।

ENGLISH TRANSLATION

Śyāmasundara eats with tranquil composure, His gaze almost constantly fixed upon Śrī Priyā's face. Twice Madhumaṅgala asks, "Kanhū, the mango is sweet, is it not?"

Śrī Kṛṣṇa is so absorbed in beholding Śrī Rādhā's beauty that He does not hear him at all.

ORIGINAL

इसी बीच मधुमंगल अपनी तश्तरीको उठाकर श्यामसुन्दरके सामने रख देता है तथा उनकी तश्तरी लेकर कहता है, “कान्हूँ! मेरी बात सुनो। देखो, अब तुम खाओगे तो पाप लगेगा; क्योंकि तुम ब्राह्मण तो हो नहीं। मैं खा सकता हूँ, पर तुम्हें अब तबतक नहीं खाना चाहिये, जबतक ये सब कुछ प्रसाद न पा लें।”

ENGLISH TRANSLATION

Meanwhile Madhumaṅgala sets his own plate before Śyāmasundara and takes His. "Kanhū, listen to me. If you eat now, you will incur sin, for you are no brāhmaṇa. I may eat, but you ought not to eat again until all these girls have received some remnants."

ORIGINAL

इसके बाद श्यामसुन्दरकी जो तश्तरी उसने उठायी थी, उसमेंसे आमकी एक फाँक लेकर मधुमंगल ललितासे कहता है, “देवीजी! पहले आप भोग लगायें, तब आपकी ये दासियाँ भोग लगायेंगी!”

अब मधुमंगल ठीक ऐसे ढंगसे आमकी उस फाँकको फेंकता है कि वह टुकड़ा ललिताके ठीक होठोंपर जाकर लगता है।

ENGLISH TRANSLATION

Taking a mango slice from Śyāmasundara's plate, Madhumaṅgala tells Lalitā, "O goddess, first you must accept the offering, and then these maidservants of yours may do so."

He tosses the slice so skillfully that it lands directly upon Lalitā's lips.

ORIGINAL

अब श्रीकृष्णको कुछ चेत हुआ तो देखते हैं कि मेरी तश्तरीमें तो आम है ही नहीं, उन्होंने तो दो-एक टुकड़े ही खाये थे। उन्होंने सोचा कि मधुमंगल खा गया होगा और फिर बोले, “मधुमंगल! मैं तो भूखा ही रह गया और तुम तो मेरा भाग भी चट कर गये!”

मधुमंगल उठता है तथा आमका वही टुकड़ा, जो ललिताके होठोंसे लग करके भूमिपर गिर पड़ा था, लाकर श्रीकृष्णको देता है, “लो! भूखे हो तो देवीका प्रसाद पाओ!”

ENGLISH TRANSLATION

Returning somewhat to awareness, Śrī Kṛṣṇa sees that no mango remains upon His plate. He had eaten only a piece or two. Assuming Madhumaṅgala has eaten it, He says, "Madhumaṅgala, I have remained hungry, while you have devoured even My share!"

Madhumaṅgala rises, retrieves the slice that fell to the ground after touching Lalitā's lips, and brings it to Him. "Here! If You are hungry, accept the goddess's remnants."

ORIGINAL

श्रीकृष्ण बड़े ही प्रेमसे आमके उस टुकड़ेको खा जाते हैं तथा ललिता कुछ आँखें तरेरकर मधुमंगलपर खीझती हुई कहती हैं, “मधुमंगल! तू बड़ा पाजी हो गया है।”

मधुमंगल मानो डर गया हो, ऐसी मुद्रा बनाकर आँखें फाड़कर कहता है, “देवीजी! मुझसे भूल हो गयी, बहुत बड़ी भूल हो गयी। आपकी बड़ी बहिनको भोग लगाये बिना आपको भोग लगा दिया। क्षमा! क्षमा!! त्राहि देवि! त्राहि....”

ENGLISH TRANSLATION

Śrī Kṛṣṇa eats the slice with great affection. Glaring and feigning annoyance, Lalitā says, "Madhumaṅgala, you have become a great rogue."

Madhumaṅgala widens his eyes as though terrified. "O goddess, I have erred, terribly erred. I made the offering to you without first offering it to your elder sister. Forgive me! Forgive me! Protect me, O goddess! Protect me!"

ORIGINAL

इतना कहकर मधुमंगल तुरंत एक टुकड़ा ऐसी कुशलतासे फेंकता है कि वह राधारानीके होठोंपर जा लगता है तथा होठोंसे लगकर भूमिपर गिर जाता है। गिरते ही राधारानी बड़ी प्रसन्न होती हैं कि मधुमंगलने मुझे श्रीकृष्णका प्रसाद दिया है। वह उसे उठानेके लिये नीचे झुकती हैं, पर उसके उठानेके पहले ही मधुमंगल दौड़कर उसे उठा लेता है तथा लाकर श्रीकृष्णके मुखमें दे देता है एवं कहता है, “यह लो! देवीजीकी बड़ी बहिनका प्रसाद है! अब तुम अमर हो गये। तुम्हें भूख कभी नहीं लगेगी। खा लो!”

ENGLISH TRANSLATION

At once Madhumaṅgala tosses another slice so deftly that it touches Rādhārāṇī's lips and falls to the ground. She is delighted that he has given Her Śrī Kṛṣṇa's remnants and bends to retrieve it, but Madhumaṅgala runs forward, snatches it up first, and places it in Śrī Kṛṣṇa's mouth. "Here are the remnants of the goddess's elder sister. Now You have become immortal. You will never feel hunger again. Eat!"

ORIGINAL

यह देखकर ललिता दौड़कर आती हैं तथा मधुमंगलका हाथ पकड़कर उससे बलपूर्वक तश्तरी छीन लेती हैं। मधुमंगल कहता है, “ठीक है। आज देवी बड़ी प्रसन्न हैं। अपने हाथसे ही अपनी बहिनको खिलायेंगी।”

श्रीकृष्ण मुस्कुराते हुए होठोंसे गिलास लगाकर धीरे-धीरे घूँट भरकर जल पीते हैं; पर उनकी दृष्टि श्रीराधाके मुख-चन्द्रकी ओर ही लगी है। श्रीराधा पासमें ही खड़ी हैं। उनकी आँखोंमें प्रेमके आँसू भर आते हैं; पर मुस्कुराकर वे उन्हें रूमालसे शीघ्रतापूर्वक पोंछ लेती हैं कि कोई देख न ले।

ENGLISH TRANSLATION

Seeing this, Lalitā runs over, catches Madhumaṅgala's hand, and forcibly takes the plate from him. "Very well," he says. "The goddess is greatly pleased today. She will feed her sister with her own hand."

Smiling, Śrī Kṛṣṇa raises the glass to His lips and slowly drinks, yet His gaze remains upon the moon of Śrī Rādhā's face. Standing close by, Her eyes fill with tears of love, but She smiles and quickly wipes them away with a handkerchief lest anyone notice.

ORIGINAL

रूपमञ्जरी हाथमें सोनेकी झारी लेकर पासमें ही खड़ी है। वह श्रीकृष्णके हाथ धुलाती है। अनंगमञ्जरी पीले रंगके रेशमी रूमालसे श्रीकृष्णके हाथ पोंछ देती है। मधुमंगल दूबमें अपना हाथ रगड़ने लगता है। श्रीकृष्ण हँसकर रूपमञ्जरीको संकेत करते हैं, “तू भूल गयी। पहले इसका हाथ धुला देना चाहिये था।”

रूपमञ्जरी हँसती हुई कहती है, “बाबाजी! हाथ धो लें।”

ENGLISH TRANSLATION

Rūpamañjarī stands nearby with a golden water vessel and washes Śrī Kṛṣṇa's hands. Anaṅgamañjarī dries them with a yellow silk handkerchief. Madhumaṅgala begins rubbing his hands upon the dūrvā grass. Laughing, Śrī Kṛṣṇa signals to Rūpamañjarī, "You forgot. You should have washed his hands first."

Rūpamañjarī laughs. "Holy sir, please wash your hands."

ORIGINAL

मधुमंगल हाथ धो लेता है। फिर जिस रूमालसे श्रीकृष्ण हाथ पोंछ रहे थे, उसीको तुरंत छीन लेता है तथा अपने हाथ पोंछने लगता है। पासमें ही श्रीप्रिया खड़ी थीं। उनका रूमाल उसी समय संयोगसे प्रेमके आवेशमें गिर पड़ता है। उन्हें पता नहीं; पर मधुमंगलकी दृष्टि तो अत्यन्त तीक्ष्ण है। उसने झटसे उसे उठाया तथा हँसता हुआ श्रीकृष्णके हाथमें देकर कहता है, “यह लो, देवीकी बड़ी बहिनने तुमपर प्रसन्न होकर रूमालका यह प्रसाद मेरे हाथों भेजा है!”

ENGLISH TRANSLATION

Madhumaṅgala washes, then immediately snatches the handkerchief with which Śrī Kṛṣṇa was drying His hands and uses it himself. Śrī Priyā stands close by. In Her absorption of love Her own handkerchief happens to fall without Her noticing, but Madhumaṅgala's gaze is exceedingly sharp. He swiftly picks it up, laughingly gives it to Śrī Kṛṣṇa, and says, "Here, the goddess's elder sister is pleased with You and has sent this blessed handkerchief through my hands."

ORIGINAL

श्रीकृष्ण रूमालको लेकर सिरसे लगा लेते हैं। अब प्रियाकी दृष्टि उधर जाती है। उन्हें यह ज्ञान नहीं था कि क्या हुआ; पर जब देखा कि मेरा रूमाल तो श्रीकृष्णके हाथोंमें है तो कुछ लज्जित-सी हो गयीं और मधुमंगलकी ओर हँसती हुई देखने लगीं। श्रीकृष्णकी कटिमें उनका रूमाल खोंसा हुआ था। मधुमंगल उसे वहाँसे निकाल लेता है। उसे हाथमें लेकर एवं मस्तकसे लगाकर वह श्रीराधारानीके पास जाता है एवं कहता है, “राधे! यह लो, आज तुमपर वन-देवता बड़े प्रसन्न हैं। उन्होंने यह प्रसाद भेजा है।”

ENGLISH TRANSLATION

Śrī Kṛṣṇa takes the handkerchief and touches it to His head. Priyā then looks over. Unaware of what occurred, She sees Her handkerchief in His hands, grows a little shy, and looks laughingly toward Madhumaṅgala. Her own handkerchief had been tucked into Śrī Kṛṣṇa's waist. Madhumaṅgala removes it, touches it to his head, and carries it to Śrī Rādhārāṇī. "Rādhā, here. The forest deity is greatly pleased with You today and has sent this blessed gift."

ORIGINAL

राधा कुछ लजायी-सी होकर रूमाल हाथमें ले लेती हैं। श्रीकृष्ण उठते हैं। वहाँसे कुछ दूर दक्षिणकी ओर चलते हैं। इसी बीचमें ललिता राधाके मुखमें प्रसाद दे देती हैं। श्रीराधारानी शीघ्रतासे आम खा जाती हैं। रूपमञ्जरी गिलासके जलका प्रसाद होठोंसे लगा देती है। राधारानी दो घूँट भर लेती हैं। विशाखा अपने रूमालसे मुँह पोंछ देती हैं। यह काम उतनी देरमें ही हो जाता है कि जितनी देरमें श्रीकृष्ण मतवाली चालसे चलते हुए कदम्बकी जड़के पास पहुँचते हैं।

ENGLISH TRANSLATION

Rādhā accepts the handkerchief with shy embarrassment. Śrī Kṛṣṇa rises and walks a short distance southward. Meanwhile Lalitā places the remnants in Rādhā's mouth, and She quickly eats the mango. Rūpamañjarī offers Her the blessed water from the glass. She takes two sips, and Viśākhā dries Her mouth. All this occurs in the time it takes Śrī Kṛṣṇa to reach the foot of a kadamba tree with His intoxicated gait.

ORIGINAL

श्रीकृष्ण कदम्बके पास जाकर उत्तरकी ओर मुँह करके दूबपर बैठ जाते हैं। श्रीराधा भी वहीं जाती हैं। गुणमञ्जरी पनबट्टा हाथमें लिये हुए पीछे-पीछे जाती है। इधर सभी सखियाँ भी शीघ्रतासे प्रसाद लेती हैं तथा हाथ धोकर एक-एक करके कदम्बके पास पहुँच जाती हैं। श्रीराधा सबसे पहले पहुँचती हैं तथा पनबट्टा खोलकर पान निकालती हैं एवं सबसे पहले मधुमंगलको देती हैं।

मधुमंगल, “क्यों न हो! देवीकी बड़ी बहिन कभी भूल नहीं सकती।”

ENGLISH TRANSLATION

Śrī Kṛṣṇa sits upon the dūrvā grass at the kadamba tree, facing north, and Śrī Rādhā joins Him. Guṇamañjarī follows with the betel casket. The other sakhīs quickly accept the remnants, wash their hands, and reach the kadamba one by one. Rādhā arrives first, opens the casket, takes out betel, and offers the first roll to Madhumaṅgala.

"Of course! The goddess's elder sister could never forget."

ORIGINAL

श्रीकृष्ण मुस्कुराते हैं। रानी मुस्कुराती हुई पान मधुमंगलके होठोंसे लगा देती हैं। मधुमंगल खा लेता है। राधा दूसरा बीड़ा पनबट्टेसे लेती हैं तथा अत्यन्त प्रेमसे श्रीकृष्णके होठोंसे लगाती हैं। श्रीकृष्ण बड़े ही प्रेमसे पानको धीरे-धीरे मुँहमें ले लेते हैं।

ENGLISH TRANSLATION

Śrī Kṛṣṇa smiles. The Queen smilingly raises the betel to Madhumaṅgala's lips, and he accepts it. Rādhā takes a second roll from the casket and lovingly offers it to Śrī Kṛṣṇa, who slowly draws it into His mouth with deep affection.

ORIGINAL

अब मधुमंगल सोचता है कि किसी प्रकार यह पान श्रीकृष्ण उगल दें तो उठाकर इन सबको दे दूँ! उसे युक्ति सूझ जाती है। वह पीकदानी उठाकर सामने रख देता है तथा अत्यधिक विचलित स्वरमें कहता है, “कान्हूँ! कान्हूँ मैया! थूक दे, तुरंत पानको थूक दे; देर मत कर; अरे! देर क्यों कर रहा है?”

श्रीकृष्ण हँसकर पूछते हैं, “क्यों, क्या बात है?”

ENGLISH TRANSLATION

Madhumaṅgala now thinks, "If somehow Śrī Kṛṣṇa spits out this betel, I shall retrieve it and distribute it among them all." An idea comes to him. He holds the spittoon before Kṛṣṇa and cries in a greatly agitated voice, "Kanhū! Dear Kanhū! Spit it out. Spit out the betel at once. Do not delay. Why are You waiting?"

Śrī Kṛṣṇa laughs. "Why? What is wrong?"

ORIGINAL

मधुमंगल, “अरे भैया! यह ललिता तो मुझे सचमुच न-जाने मार डालेगी क्या? देखो, इसने पानमें चूना अधिक दे दिया है! मेरा मुँह कट गया है, तुम्हारा भी कट जायेगा। पानको थूक दो, अभी थूक दो!”

ENGLISH TRANSLATION

"My brother, who knows whether this Lalitā truly means to kill me? Look, she has put too much lime in the betel. It has burned my mouth, and it will burn Yours as well. Spit it out. Spit it out now!"

ORIGINAL

मधुमंगल पीकदानी उठाकर श्रीकृष्णके मुखके पास ले जाता है, पर श्रीकृष्ण हाथसे पीकदानीको थोड़ा हटाकर मुस्कुराते हुए कहते हैं, “मधुमंगल! मेरा मुँह तो नहीं कटा, मैं क्यों थूकूँ?”

मधुमंगल श्रीकृष्णका मुँह पकड़ लेता है तथा कुछ खीझकर कहता है, “सुनता नहीं? मुँह कट जायेगा तो रोयेगा। अरे! थूक दे।”

ENGLISH TRANSLATION

Madhumaṅgala raises the spittoon to Śrī Kṛṣṇa's mouth, but Kṛṣṇa pushes it slightly aside and smiles. "Madhumaṅgala, My mouth has not been burned. Why should I spit?"

Madhumaṅgala catches hold of His face and answers in feigned irritation, "Do You not listen? You will cry when Your mouth is burned. Come, spit it out."

ORIGINAL

श्रीकृष्ण मुस्कुराते हुए पीकदानीमें पान थूक देते हैं। मधुमंगल पीकदानी उठाकर ललिताको पकड़ा देता है, “लो देवीजी! विश्वास नहीं हो तो चखकर देख लो। फिर देखना, मुँह कैसा बन जाता है। इतना चूना देकर जैसे मेरा मुँह काट डाला, वैसे ही तनिक तुम खाओ, तब जानें कि सचमुच तुमने जान-बूझकर चूना अधिक नहीं डाला था।”

ENGLISH TRANSLATION

Smiling, Śrī Kṛṣṇa spits the betel into the spittoon. Madhumaṅgala hands it to Lalitā. "Here, O goddess. If you do not believe me, taste it and see what happens to your mouth. You put in so much lime that it burned mine. Taste a little yourself, and then we shall know that you truly did not add too much deliberately."

ORIGINAL

ललिता बड़ी प्रसन्नतासे पीकदानीको उठा लेती हैं तथा पासमें खड़ी गुणमञ्जरीको पकड़ा देती हैं। गुणमञ्जरी उसे कुछ दूरपर ले जाकर घासपर रखती है। उसी समय वहाँ अनंगमञ्जरी एक दूसरा पनबट्टा ले आती है। वह उसमेंसे पान निकालकर और पनबट्टेके ढकनेपर रखकर पान लगाने लगती है। प्रत्येक बीड़ेमें श्रीश्यामसुन्दरके मुखारविन्दसे निकले हुए उस अमृतमय पीककी एक बूँद डालती है। गुणमञ्जरी बीड़े सजाती चली जाती है।

ENGLISH TRANSLATION

Lalitā takes the spittoon with great delight and hands it to Guṇamañjarī, who sets it upon the grass a little distance away. Anaṅgamañjarī brings another betel casket, takes out the ingredients, and begins preparing rolls upon its lid. Into each she places one drop of the nectar-like betel juice from Śrī Śyāmasundara's lotus mouth, while Guṇamañjarī decorates the rolls as they are made.

ORIGINAL

कुछ बीड़े तैयार हो जानेपर अनंगमञ्जरी दो बीड़े उठाकर ललिताके हाथमें दे आती है। इधर यह काम हो रहा था, उधर मधुमंगल वहाँ जो पनबट्टा पड़ा था, उसे उठाकर राधारानीके सामने रख देता है तथा कहता है, "राधे! एक बढ़िया-सा पानका बीड़ा लगाकर पहले तू मुझे दे दे, फिर एक श्यामसुन्दरको दे दे। तुम्हें पान लगाना बहुत बढ़िया आता है! मैं तुम्हारे हाथका पान जिस दिन खाता हूँ, उस दिन मेरा मुँह कभी नहीं कटता तथा सारे दिन मुँहसे सुगन्धि आती रहती है। ले, तुरंत लगा दे।"

ENGLISH TRANSLATION

When several rolls are ready, Anaṅgamañjarī takes two and gives them to Lalitā. While this is happening, Madhumaṅgala picks up the casket lying there, sets it before Rādhārāṇī, and says, "Rādhā, prepare a fine betel roll and give it first to me, then another to Śyāmasundara. You prepare betel wonderfully. On any day I eat betel from your hand, my mouth is never burned and remains fragrant all day. Come, make it at once."

ORIGINAL

राधारानी मन्द-मन्द मुस्कुराती हुई पनबट्टेके ढकनेपर दो बीड़े लगाती हैं। बीड़े लगाकर उनपर सोनेके वरक चढ़ाती हैं। एक बीड़ा मधुमंगलके हाथमें देती हैं और दूसरा बीड़ा अतिशय प्यारभरी आँखोंसे श्यामसुन्दरकी ओर देखती हुई उनके होठोंसे लगा देती हैं। श्यामसुन्दर पान खाते जाते हैं तथा श्रीराधाके मुखकी शोभा देखते रहते हैं। श्रीराधा अपनी दृष्टि नीची किये बैठी हैं।

ENGLISH TRANSLATION

Smiling gently, Rādhārāṇī prepares two rolls upon the casket's lid and covers them with gold leaf. She places one in Madhumaṅgala's hand and, gazing at Śyāmasundara with eyes overflowing with love, raises the other to His lips. As He eats, Śyāmasundara continues beholding the beauty of Śrī Rādhā's face, while She sits with lowered eyes.

ORIGINAL

इसी समय पश्चिमकी ओरसे मधुमती वीणा लिये हुए आती है और राधारानीकी बायीं ओर बैठकर श्यामसुन्दरसे कहती है, “श्यामसुन्दर! आज तुम वंशी बजाओ और मैं वीणापर एक गीत गाती हूँ। सचमुच तुम गीत सुनकर बड़े प्रसन्न होओगे।”

ENGLISH TRANSLATION

Just then Madhumatī approaches from the west carrying a vīṇā. Sitting to Rādhārāṇī's left, she says, "Śyāmasundara, play Your flute today while I sing a song to the vīṇā. Truly, You will be greatly pleased when You hear it."

ORIGINAL

मधुमती वीणाको घासपर पूर्व-पश्चिमकी दिशामें रख देती है। वह बायें हाथसे वीणाकी खूँटियोंको ऐंठती जाती है तथा दाहिने हाथसे तारोंको झन-झन करती हुई स्वर ठीक करने लगती है। इतनेमें ही मधुमंगल उछल करके श्रीकृष्णकी बायीं ओर बैठ जाता है। श्रीकृष्ण उसके सहारे पीठ देकर एवं पैर पूर्वकी ओर फैलाकर बैठ जाते हैं तथा मधुमतीकी वीणाकी झनकारके साथ वंशीमें सुर भरते हुए सुर मिलाते हैं।

ENGLISH TRANSLATION

Madhumatī lays the vīṇā east to west upon the grass. With her left hand she tightens its pegs, while with her right she plucks the strings and tunes them. Madhumaṅgala leaps up and seats himself to Śrī Kṛṣṇa's left. Leaning His back against him and stretching His legs eastward, Kṛṣṇa sounds notes upon the flute to match the resonance of Madhumatī's vīṇā.

ORIGINAL

मधुमंगल कहता है, “बाप रे बाप! अरे कान्हूँ!! आज तुमने आम बहुत अधिक खाये हैं। आज तो तुम बहुत भारी हो गये हो।”

यह सुनकर श्रीकृष्ण एक बार कनखियोंसे मधुमंगलको देखते हैं तथा धीरेसे कहते हैं, “अच्छा! तू इधर आकर बैठ जा।”

ENGLISH TRANSLATION

Madhumaṅgala exclaims, "Good heavens! Kanhū, You ate far too many mangoes today. You have become very heavy!"

Śrī Kṛṣṇa glances sideways at him and quietly says, "Very well. Come and sit over here."

ORIGINAL

मधुमंगल उठकर मधुमतीके सामने आकर बैठ जाता है। श्रीकृष्ण घासपर चित्त लेट जाते हैं। मधुमती जब-जब झन-झन करके तारोंके सुरको ठीक करती है, तभी-तभी श्यामसुन्दर उतनी देरके लिये उसी सुरमें सुर मिलाते हुए वंशीमें फूँक भर देते हैं। श्रीराधा अपने स्थानसे उठती हैं तथा श्रीकृष्णके सिरके पास आकर उत्तरकी ओर मुँह करके बैठ जाती हैं।

ENGLISH TRANSLATION

Madhumaṅgala rises and sits opposite Madhumatī. Śrī Kṛṣṇa lies on His back upon the grass. Whenever Madhumatī plucks the strings to tune them, Śyāmasundara briefly blows the same note into His flute. Śrī Rādhā rises from Her place and sits near His head, facing north.

ORIGINAL

इसी समय ललिता श्रीकृष्णके मुखको तनिक अपने अञ्चलकी ओटमें करके धीरेसे पानके प्रसादवाले वे दो बीड़े मुखमें दे देती हैं; पर श्यामसुन्दर तो देख लेते हैं और मुस्कुरा देते हैं। राधारानी भी मुँहमें पान लेकर मन्द-मन्द मुस्कुराने लगती हैं।

ENGLISH TRANSLATION

At this moment Lalitā shields Śrī Kṛṣṇa's face slightly with the edge of her veil and quietly places the two rolls containing His betel remnants into Rādhārāṇī's mouth. Śyāmasundara notices and smiles, and Rādhārāṇī too smiles softly as She accepts them.

ORIGINAL

मधुमतीकी वीणाके तार प्रायः ठीक हो चले हैं; पर श्यामसुन्दर कुछ ऐसी मुद्रा बनाते हैं मानो सिरके नीचे कुछ ऊँचा सहारा रहे तो उन्हें वंशी बजानेमें सुविधा हो। राधारानी पासमें ही बैठी हैं। वे श्यामसुन्दरको इस प्रकार करते देखकर ललिताको बड़ा मसनद लानेका संकेत करती हैं। इसी समय मधुमती वीणाको उठाकर कन्धेपर रख लेती है। अब देर नहीं थी। श्रीकृष्णको सिर नीचा किये हुए बजानेमें कुछ असुविधा हो रही थी, इसीलिये उन्होंने अब विशेष देरी न देखकर वे कुछ पश्चिमकी ओर लेटे-लेटे ही सरक गये तथा श्रीराधारानीकी गोदमें अपना सिर रखकर बोले, “बस, मसनदकी कोई आवश्यकता नहीं है, मधुमती! आरम्भ करो।”

ENGLISH TRANSLATION

The vīṇā is nearly in tune. Śyāmasundara makes a gesture as though some raised support beneath His head would help Him play the flute. Rādhārāṇī, seated nearby, signals Lalitā to bring a large bolster. Madhumatī lifts the vīṇā onto her shoulder. Since the music is about to begin and playing with His head lowered is uncomfortable, Śrī Kṛṣṇa does not wait. Still reclining, He shifts a little westward, rests His head in Śrī Rādhārāṇī's lap, and says, "There is no need for a bolster now. Madhumatī, begin."

ORIGINAL

श्रीराधारानी बायें हाथसे श्यामसुन्दरके सिरको आवश्यकतानुसार ऊँचा करके अपनी गोदमें रख लेती हैं, जिससे श्यामसुन्दरको वंशी बजानेमें पूर्ण सुविधा हो जाती है तथा वे दाहिने हाथकी अँगुलियोंसे श्यामसुन्दरके ललाटको सहलाने लगती हैं। ललाटपर बिखरे हुए बालोंको ठीक कर देती हैं। अब एक साथ ही तालसे वीणा एवं वंशी बजने लगती है तथा मधुमती अत्यन्त मधुर स्वरमें गाने लगती है:

ENGLISH TRANSLATION

With Her left hand Śrī Rādhārāṇī raises Śyāmasundara's head to the needed height upon Her lap, enabling Him to play with perfect ease. With the fingers of Her right hand She caresses His forehead and arranges the scattered locks upon it. Vīṇā and flute now sound together in rhythm, and Madhumatī begins to sing in an exceedingly sweet voice.

ORIGINAL

Braj Bhāṣā song

बलि बलि बलि बलि कुँवरि राधिके नंद सुवन जासों रति मानी।

द्वै अति चतुर वै चतुर सिरोमनि प्रीति करी कैसे रहत है छानी॥

वै जो धरत तन कनक पीत पट सो तो सब तेरी गति ठानी।

तैं पुनि श्याम सहज सोभा वह लंबर मिस अपने उर आनी॥

पुलकि रोम अवहीं है आयो निरखि देह निज रूप सयानी।

सूर सुजान सखी के बूझे प्रेम प्रगट भयो वै हरषानी॥

ENGLISH TRANSLATION

Again and again I offer myself to Princess Rādhikā, with whom Nanda's Son has placed His love.

Both are supremely clever, and He is the crown of the clever. Once such love has arisen, how could it remain concealed?

He wears a golden-yellow cloth upon His body, revealing that His whole intention rests upon You.

And You, taking His natural dark beauty into Your heart, wear a dark-blue garment as its likeness.

The hairs of Your body have just risen in delight. Wise maiden, behold the condition of Your own form.

Sūra says: when the discerning sakhī understood, their love became manifest, and she rejoiced.

ORIGINAL printed explanation

(पदका भाव यह है, “कुँवरि राधिके! तुम्हारे ऊपर हम सब बलिहारी जाती हैं। जो श्रीकृष्ण सारे जगतमें, समस्त विश्व-ब्रह्माण्डमें आनन्दका संचार करते हैं, जिनसे सबको आनन्द मिलता है; जिनके एक कणके आनन्दसे समस्त ब्रह्माण्डमें आनन्दका विस्तार होता है, उन्हीं श्रीकृष्णको तुमसे आनन्द मिलता है। यह कितने आश्चर्यकी बात है, सबको आनन्द देनेवाला भी आनन्द पानेके लिये तुम्हारे पास आया है और उसे तुमसे आनन्द मिलता है। बलिहार हैं हम सब तुमपर!

राधे! तू जैसे अतिशय चतुर है, वैसे ही वे भी चतुर-शिरोमणि हैं। चतुरसे चतुरकी प्रीति हुई है; पर प्रेम ऐसी वस्तु है कि यह छिप सकती ही नहीं। राधे! धन्य है तुम्हारे दोनोंके प्रेमको। श्यामसुन्दर तुम्हें इतना प्यार करते हैं कि उन्होंने कनकवर्णीय पीताम्बर ही धारण कर लिया निरन्तर तुम्हारे कनक-कान्तियुक्त गौर मुखारविन्दकी स्मृति होते रहनेके लिये। तू भी तो नीली साड़ी इसीलिये पहनती है कि श्यामसुन्दरका श्याम-सौन्दर्य तुम्हारे हृदयमें निरन्तर बसा ही रहे।

राधे! देख, अभी इसी समय तुम्हारे प्रत्येक अङ्गसे प्रेमके चिह्न प्रकट हो रहे हैं। तुम्हारा शरीर पुलकित हो गया है। तू ही देख ले कि तुम्हारी देहकी कैसी दशा हो रही है? तुम्हारा रंग-रूप कैसा हो गया है? सूरदास कहते हैं कि सखियोंके इस प्रकार कहते ही राधारानीके अङ्गोंमें प्रेमके विकार प्रकट हो गये तथा सारी सखियाँ आनन्दमें डूब गयीं।”)

ENGLISH TRANSLATION

(The song means: "Princess Rādhikā, we all offer ourselves to You. Śrī Kṛṣṇa diffuses bliss throughout the whole world and the entire universe. All receive bliss from Him, and a single particle of His bliss expands throughout creation. Yet that very Śrī Kṛṣṇa receives bliss from You. How wondrous this is. He who gives bliss to all has come to You in order to taste bliss, and from You He receives it. We all offer ourselves to You.

"Rādhā, as You are exceedingly clever, so He too is the crown of the clever. The cleverest has loved the cleverest, yet love is a thing that cannot remain hidden. Blessed is the love between You both. Śyāmasundara loves You so deeply that He has donned a golden-yellow garment so that He may always remember Your fair lotus face, radiant with golden beauty. You likewise wear a blue sari so that Śyāmasundara's dark beauty may remain forever established within Your heart.

"Rādhā, look. At this very moment signs of love are appearing upon every limb. Your body has thrilled with horripilation. See for Yourself the state of Your body and how Your color and form have changed. Sūradāsa says that as the sakhīs spoke in this way, transformations of love became manifest upon Rādhārāṇī's limbs, and all the sakhīs drowned in bliss.")

ORIGINAL

मधुमतीके गाते-गाते वहाँ सभी प्रेममें इतने डूब गये, चारों ओर निस्तब्धता छा गयी। गीत समाप्त होनेपर श्यामसुन्दरने अपनी आँखें मूँद लीं, वंशी वक्षःस्थलपर गिर गयी तथा राधारानीकी भी आँखें बन्द हो गयीं। प्रेमके कारण सभीका ऐसा हाल हो रहा था। बड़ी कठिनाईसे रूपमञ्जरीने अपनेको थोड़ा सँभाला तथा जो मसनद थोड़ी देर पहले श्रीकृष्णके लिये लाया गया था; उसे उठाकर उसने श्रीराधाकी पीठके पास रख दिया। श्रीराधा आँखें बन्द किये हुए उस मसनदका सहारा लेकर बैठी रहीं। सर्वत्र प्रेम एवं आनन्द छाया हुआ है।

ENGLISH TRANSLATION

As Madhumatī sings, everyone becomes so deeply immersed in love that stillness spreads everywhere. When the song ends, Śyāmasundara closes His eyes and the flute falls upon His chest. Rādhārāṇī's eyes close as well, and love overwhelms them all. With great difficulty Rūpamañjarī composes herself. She picks up the bolster that had been brought earlier for Śrī Kṛṣṇa and places it behind Śrī Rādhā, who remains seated with closed eyes, supported by it. Love and bliss pervade everything.

ORIGINAL

कुछ देर बाद श्रीकृष्ण उठकर बैठ जाते हैं। श्रीराधारानी उठकर खड़ी हो जाती हैं तथा ललितासे कुछ संकेत करती हैं। ललिता मधुमंगलसे कहती हैं, “मधुमंगल! अब तो तूने आम खा लिये, अब मेरा काम कर दे।”

मधुमंगल, “हाँ, हाँ! अब एक नहीं, भले दो-तीन काम और करा लो।”

ENGLISH TRANSLATION

After some time Śrī Kṛṣṇa sits up. Śrī Rādhārānī rises and signals something to Lalitā, who tells Madhumaṅgala, "Madhumaṅgala, now that you have eaten the mangoes, perform my task."

"Yes, yes. Not merely one. You may have me do another two or three tasks if you like."

ORIGINAL

ललिता पासमें ही एक अशोकके पेड़के नीचे मधुमंगलको ले जाती हैं तथा धीरे-धीरे कुछ समझाती हैं। मधुमंगल ‘बहुत ठीक’, ‘अच्छा’, ‘हाँ’, ‘तब’ इस प्रकार कहकर सिर हिलाता जाता है। श्रीकृष्ण दूरसे बैठे-बैठे यह देखते हुए मन्द-मन्द मुस्कुरा रहे हैं। राधारानी भी मन्द-मन्द मुस्कुरा रही हैं।

ENGLISH TRANSLATION

Lalitā takes Madhumaṅgala beneath a nearby aśoka tree and quietly explains something to him. Nodding, he answers, "Very well," "Good," "Yes," and "Then?" Seated at a distance, Śrī Kṛṣṇa watches with a gentle smile, while Rādhārānī smiles softly as well.

ORIGINAL

बात समाप्त होनेपर मधुमंगल उठता है तथा श्रीकृष्णसे कुछ आँखोंके संकेतमें कहता है। श्रीकृष्ण भी कुछ आँखोंके संकेतसे ही उत्तर देते हैं। इसके बाद मधुमंगल चल पड़ता है यह कहते हुए, “अब सेव्याके कुञ्जमें अमरूद खाने जाता हूँ।”

चलते-चलते मधुमंगल श्रीराधासे कहता है, “देख! तूने मुझे दो हीरे देनेकी बात कही है न! कल काम हो जानेपर हीरे तुमको देना पड़ेगा।”

ENGLISH TRANSLATION

When their conversation ends, Madhumaṅgala rises and communicates something to Śrī Kṛṣṇa with his eyes. Kṛṣṇa answers in the same way. Madhumaṅgala sets out, saying, "Now I am going to Sevyā's bower to eat guavas."

As he goes, he tells Śrī Rādhā, "Remember, You promised me two diamonds. When the task is completed tomorrow, You will have to give them to me."

ORIGINAL

श्रीराधा मन्द-मन्द मुस्कुराती हुई कहती हैं, "हाँ, हाँ अवश्य दूँगी।"

मधुमंगल अपने कन्धेपर एक छोटी-सी लकड़ी, जिसे उसने वहाँपर आते ही रख दी थी, उठा लेता है तथा वहाँसे सीधे पूर्वकी ओर चलकर राधाकुण्डको दाहिने रखते हुए कुण्डकी सीमा पारकर फिर पूर्वकी ओर बढ़ा जाता है।

ENGLISH TRANSLATION

Śrī Rādhā smiles gently. "Yes, yes. I shall certainly give them."

Madhumaṅgala picks up onto his shoulder a short staff that he had set down upon arriving. He walks straight east, keeps Rādhākuṇḍa to his right, passes beyond the boundary of the lake, and continues eastward.

ORIGINAL

श्रीकृष्ण, श्रीराधा एवं सखियाँ नौकापर राधाकुण्डमें विहार करनेके लिये कुण्डके सुन्दर तटकी ओर बढ़ते हैं। श्रीराधाका दाहिना हाथ श्रीकृष्णके कन्धेपर है तथा बायें हाथमें उन्होंने डण्टीसहित कमलका फूल ले रखा है। श्रीकृष्ण बायें हाथमें वंशी पकड़े हुए हैं तथा दाहिने हाथसे निकुञ्जकी लताओंको दिखा-दिखाकर उसकी शोभा निहारनेके लिये राधारानीको संकेत करते जा रहे हैं। कभी सीधे पूर्वकी ओर, कभी दक्षिणकी ओर, कभी उत्तरकी ओर मुड़ते हुए निकुञ्जकी शोभा देखते हुए आगे बढ़ रहे हैं। इस प्रकार घूमते हुए निकुञ्जके द्वारपर आ पहुँचते हैं।

ENGLISH TRANSLATION

Śrī Kṛṣṇa, Śrī Rādhā, and the sakhīs proceed toward the lovely bank of Rādhākuṇḍa for an excursion upon the lake by boat. Śrī Rādhā rests Her right hand upon Śrī Kṛṣṇa's shoulder and holds a lotus with its stalk in Her left. Kṛṣṇa carries His flute in His left hand and with His right points out the bower's vines, inviting Rādhārāṇī to behold their beauty. Turning now eastward, now southward, and now northward as They admire the bower, They finally reach its gate.

ORIGINAL

निकुञ्जकी चहारदीवारी संगमरमरकी बनी है। उसपर अत्यन्त सुन्दर-सुन्दर लताएँ फैली हुई हैं। लताओंमें पुष्प लगे हैं। प्रवेशद्वार भी लता एवं पुष्पोंसे सजा हुआ है। मेहराबके ऊपर झुण्ड-के-झुण्ड तोता, मैना पक्षी बैठे हुए हैं। जैसे ही श्रीकृष्ण एवं श्रीराधा द्वारपर पहुँचते हैं, वैसे ही मैनाओंका झुण्ड अत्यन्त मधुर स्वरमें गाने लगता है:

"जय राधे जय राधे राधे जय राधे जय श्रीराधे।"

फिर तोतोंका झुण्ड कहता है:

"जय कृष्ण जय कृष्ण कृष्ण जय कृष्ण जय श्रीकृष्ण॥"

ENGLISH TRANSLATION

The bower is enclosed by walls of marble, over which exceedingly beautiful flowering vines spread. The entrance too is adorned with vines and blossoms. Flocks of parrots and mynah birds perch above its arch. As soon as Śrī Kṛṣṇa and Śrī Rādhā reach the gate, the flock of mynahs begins to sing in a most melodious voice:

"Victory to Rādhā, victory to Rādhā, Rādhā! Victory to Rādhā, victory to Śrī Rādhā."

Then the flock of parrots replies:

"Victory to Kṛṣṇa, victory to Kṛṣṇa, Kṛṣṇa! Victory to Kṛṣṇa, victory to Śrī Kṛṣṇa."

ORIGINAL

श्रीराधा विभिन्न प्रकारके मेवे लानेके लिये संकेत करती हैं। तुरंत ही लवंगमञ्जरी बहुत-सा मेवा लाती है। श्रीकृष्ण एवं श्रीराधा तोता-मैनाओंको बुला-बुलाकर उन्हें अपने हाथपर बैठाकर मेवा खिलाते हैं। द्वारसे बाहर निकलते ही मयूर एवं मयूरियोंका झुण्ड आता है। वह पंख फुला-फुलाकर तथा मनोरम शब्द करता हुआ श्रीराधा एवं श्रीकृष्णकी परिक्रमा करता है। विमलामञ्जरीके हाथमें मिठाईकी जो बहुत बड़ी परात है, उसमेंसे मिठाई ले-लेकर मयूर एवं मयूरियोंकी चोंचोंमें देते हैं। इस प्रकार मयूरोंको खिलाते हुए आगे बढ़ते जाते हैं।

ENGLISH TRANSLATION

Śrī Rādhā signals for various nuts and dried fruits, and Lavaṅgamañjarī immediately brings a great quantity. Śrī Kṛṣṇa and Śrī Rādhā call the parrots and mynahs, seat them upon Their hands, and feed them. As They leave the gate, a flock of peacocks and peahens arrives. Spreading their feathers and uttering lovely calls, the birds circle Śrī Rādhā and Śrī Kṛṣṇa. From the enormous basin of sweets carried by Vimalāmañjarī, the Divine Couple takes morsels and places them in the birds' beaks, continuing onward as They feed them.

ORIGINAL

इतनेमें ही उत्तरकी ओरसे जो पगडण्डी राधाकुण्डपर आती है, उसी राहसे चौकड़ी भरते हुए हरिण एवं हरिणियोंका एक झुण्ड आता है तथा श्रीकृष्णके अङ्गोंको छू-छूकर कभी कुण्डकी ओर चौकड़ी भरता है, कभी निकुञ्जकी ओर। उन हरिणोंको श्रीप्रिया-प्रियतम अपने हाथोंसे सहलाते हैं। गुणमञ्जरी एक डलियामें दूबकी बनी हुई छोटी-छोटी ढेरी लाती है। उसे हरिणोंके मुखमें देते हुए वे राधाकुण्डके तटपर पहुँच जाते हैं।

ENGLISH TRANSLATION

Just then a herd of deer and does bounds along the path approaching Rādhākuṇḍa from the north. Brushing repeatedly against Śrī Kṛṣṇa's limbs, they leap now toward the lake and now toward the bower. Śrī Priyā and Her Beloved caress them with Their own hands. Guṇamañjarī brings a basket containing small heaps of dūrvā grass, and while feeding these to the deer, the Divine Couple reaches the bank of Rādhākuṇḍa.

CHAPTER 24

वंशी-गोपन लीला

The Līlā of Hiding the Flute

Source scan pages 272–285

ORIGINAL

श्रीसुदेवीके कुञ्जमें अमरूदके वृक्षकी छायामें श्रीप्रिया बैठी हैं। चारों ओर अमरूदके वृक्षोंका ही वन है। प्रत्येक वृक्षपर बड़े-बड़े सुन्दर-सुन्दर अमरूदके फल लगे हुए हैं। श्रीप्रिया एक शाखासे पीठ टेके तथा पैर फैलाये पूर्वकी ओर मुख किये बैठी हैं। कोई भी बिछौना नहीं है। वे हरी-हरी दूबपर ही बैठी हैं। श्रीप्रियासे कुछ दूर उत्तरकी ओर अमरूदकी डाली पकड़े ललिता खड़ी हुई कुछ सोच रही हैं। श्रीप्रियाकी दाहिनी ओर सुन्दर-सुन्दर बड़े-बड़े अमरूदके फल सुन्दर परातमें रखे हुए हैं। उसी परातको घेरकर कुछ मञ्जरियाँ बैठी हुई हैं। वे सुन्दर चमकती हुई छुरीसे अमरूदको खण्ड-खण्ड करके तश्तरियोंमें सजाती जा रही हैं।

जहाँ प्रिया बैठी हैं, उससे लगभग सात-आठ हाथ पूर्वकी ओर हटकर निर्मल जलकी नाली बह रही है। नाली डेढ़ हाथ चौड़ी है तथा संगमरमरके पत्थरसे उसके दोनों तट जड़े हुए हैं। उसी नालीके पास विशाखा बैठी हुई हैं। वे बार-बार निर्मल जलको चुल्लूमें भरती हैं और फिर उसे पानीमें गिरा देती हैं।

रानी पुकार उठती हैं, “विशाखे! क्या कर रही है? इधर आ।”

रानीकी पुकार सुनते ही विशाखा उठकर उनके पास आ जाती हैं तथा अत्यन्त प्यारभरी वाणीसे कहती हैं, “क्यों, बोल!”

रानीने विशाखाको पुकार तो लिया, पर पुकारनेके बाद फिर किसी चिन्तनमें इतनी तल्लीन हो गयीं कि उन्हें तनिक भी पता नहीं कि विशाखा मेरे पास आयी है। रानीकी आँखें खुली हुई हैं, पर वे भाव-समाधिमें निमग्न हैं। विशाखा अतिशय प्यारसे रानीकी ठोड़ीको स्पर्श करती हुई धीरेसे कहती हैं, “बावरी बहिन! प्यारे श्यामसुन्दरकी वंशी फिर तो तेरे लिये छिपाकर रखना बड़ा कठिन है। श्यामसुन्दर आते ही होंगे। तू इस प्रकार पत्थरकी मूर्ति बनी बैठी रही, तब तो वे आते ही वंशी ढूँढ़ निकालेंगे।”

ENGLISH TRANSLATION

Śrī Priyā sits beneath a guava tree in Śrī Sudevī's grove. A forest of guava trees surrounds her, every tree laden with large and beautiful fruit. Leaning her back against a branch, she sits upon the fresh green grass without any covering, her legs extended and her face turned east. A short distance north of her, Lalitā stands holding a guava branch, absorbed in thought. To Śrī Priyā's right, great ripe guavas are heaped in a handsome platter. Several mañjarīs sit around it, cutting the fruit into pieces with gleaming knives and arranging them upon small plates.

Seven or eight cubits east of Priyā flows a channel of clear water, a cubit and a half wide, with both banks lined in marble. Viśākhā sits beside it, repeatedly scooping the pure water into her joined palms and letting it fall back into the stream.

Rānī calls, "Viśākhe, what are you doing? Come here."

At once Viśākhā rises, comes to her, and asks in a voice filled with affection, "What is it? Tell me."

Yet after calling Viśākhā, Rānī becomes so absorbed in contemplation that she does not realize her friend has arrived. Her eyes remain open, but she is immersed in bhāva-samādhi. Tenderly touching Rānī's chin, Viśākhā whispers, "Mad sister, it will be very difficult for you to keep beloved Śyāmasundara's flute hidden. He must be arriving now. If you remain seated like a stone image, he will find it the moment he comes."

ORIGINAL

Braj Bhāṣā

विशाखाकी बात सुनकर रानी घबरायी-सी होकर अपनी कञ्चुकीमें हाथ डालकर देखती हैं। वहाँ वंशीको ठीक स्थानपर पाकर अतिशय उमंगसे पुनः उसे दोनों हाथोंसे दबा लेती हैं। रानी अपने हृदयको इतना कसकर दबाती हैं कि मानो वे वंशीको भीतर हृदयमें ही घुसा देना चाहती हों। विशाखा रानीकी यह चेष्टा देखकर खिलखिलाकर हँस पड़ती हैं। रानी कुछ चकित-सी दृष्टिसे संकेतके द्वारा ललितासे कुछ कहती हैं। ललिता संकेतमें ही उत्तर दे देती हैं। रानी विशाखासे कहती हैं, "री! यह पद सुना।"

रानीकी आज्ञा सुनकर विशाखा मधुमतीको संकेत करती हैं। मधुमती झाड़ीके पास रखी हुई वीणा उठा लाती है तथा विशाखाके हाथमें पकड़ा देती है। विशाखा उसे कन्धेके सहारे टिकाकर उसमें स्वर मिलाकर अत्यन्त मधुर कण्ठसे गाती हैं:

बाँसुरी तू काहे गुमान भरी।

सोने की नाहीं रूपे की नाहीं नाहीं रतन जरी॥

जाति पाँति सब कोऊ जाने मधुवन की लकड़ी॥

कहा री ऐसी जब हरि मुख लगी बजत बिरह भरी।

सूर स्याम प्रभु अब का करिये अधरन लागत परी॥

ENGLISH TRANSLATION

Startled by Viśākhā's warning, Rānī slips a hand inside her bodice. Finding the flute safely in place, she joyfully presses it against herself with both hands. She clasps her heart so tightly that she seems intent upon pushing the flute into its very depths. Viśākhā bursts into laughter at the sight. With a somewhat astonished glance, Rānī communicates something to Lalitā by signs, and Lalitā answers in the same way. Then Rānī says to Viśākhā, "Friend, sing this song."

At Rānī's command, Viśākhā signals to Madhumatī, who brings the vīṇā lying near the thicket and places it in her hands. Resting it against her shoulder, Viśākhā tunes it and sings in an exceedingly sweet voice:

O flute, why are you filled with pride? You are neither made of gold nor silver, nor studded with gems. Everyone knows your caste and lineage: you are merely a stick from Madh vana. Tell me, how did you become so exalted that, touching Hari's mouth, you play melodies laden with longing? Sūra says: what can Lord Śyāma do now, when you have come to rest upon his lips?

ORIGINAL

रानी आँखें मूँदे रहकर पद सुनती हैं। पद समाप्त होनेपर कञ्चुकीसे वंशी निकालकर देखती हैं। देखते ही आँख भर जाती हैं। फिर भर्राये स्वरमें कहती हैं, “वंशिके! प्यारे श्यामसुन्दरके अधरोंका रस तू पी चुकी है। आह! उस अनुपम अधर-रससे मतवाली होकर अपने साथ ही तू मुझे भी नचाती रही है; पर बहिन! इस समय तू चुप क्यों है? एक बार मेरी प्रार्थना मानकर मेरे कहनेसे ‘श्याम-श्याम’की तान भरकर इस वनको गुँजा दे। तेरे प्रियतम प्राणेश्वरके पास इस तानके पहुँचते ही वे तेरे निकट निश्चय-निश्चय आ जायेंगे।”

रानी उत्कण्ठाभरी दृष्टिसे देखती हैं कि वंशी बजती है या नहीं, पर वंशी बजती नहीं। रानी कुछ रुदनभरे स्वरमें कहती हैं, “समझ गयी, प्यारे श्यामसुन्दरसे बिछुड़कर तू नितान्त मूर्च्छित-सी हो रही है। ठीक है, बहिन! प्रेम इसे ही कहते हैं। मैं अभागिनी तो अभी भी हँस-खेल रही हूँ। हाय! मेरा हृदय कितना नीरस है, कितना कठोर है!”

आत्म-विह्वल हो जानेसे रानी मुखको अञ्चलसे ढककर सिसक-सिसककर रोने लगती हैं। रानीको पुनः रोती देखकर सखियाँ चिन्तित होने लग जाती हैं।

ENGLISH TRANSLATION

Rānī listens with closed eyes. When the song ends, she draws the flute from her bodice and gazes at it. At once her eyes fill with tears. In a choked voice she says, "Vaṃśike, you have drunk the nectar of beloved Śyāmasundara's lips. Intoxicated by that incomparable nectar, you have made me dance along with you. But sister, why are you silent now? Grant my prayer just once. At my request, fill yourself with a melody crying 'Śyāma, Śyāma' and make this forest resound. The instant that melody reaches your beloved Lord of life, he will surely come to you."

With longing eyes, Rānī waits to see whether the flute will sound, but it remains silent. Her voice heavy with tears, she says, "I understand. Separated from beloved Śyāmasundara, you have fallen utterly unconscious. Yes, sister, this alone is love. I, unfortunate as I am, still laugh and play. Alas, how dry and hard my heart must be."

Overwhelmed by her own emotion, Rānī covers her face with her veil and begins to sob. Seeing her weep again, the sakhīs grow anxious.

ORIGINAL

बात यह है कि अभी थोड़ी देर पहले श्यामसुन्दरकी प्रतीक्षामें रानीको सारिकाके द्वारा यह समाचार मिला कि श्यामसुन्दर तो आज सम्भवतः वन नहीं आयेंगे; क्योंकि आज मैया ब्राह्मणोंको श्यामसुन्दरके हाथसे बहुत-सी गायें दान करानेके उद्योगमें लगी हुई हैं। मधुमङ्गल खूब झगड़ रहा है, पर मैया अभी सुन नहीं रही हैं। इस समाचारको सुनते ही रानी मूर्च्छित हो गिर पड़ी थीं। सखियोंने बहुत उपचार किये, परन्तु चेतना नहीं आयी। फिर दौड़कर रूपमञ्जरी श्यामसुन्दरके पास आयी तथा उनसे बोली, "ललिताने कहलवाया है कि किसी उपायसे शीघ्र आ जाओ या कोई दूसरा उपाय रचो। नहीं तो मेरी प्यारी सखी राधाके जीवनकी आशा समाप्त होती चली जा रही है।"

श्यामसुन्दर बड़ी दुविधामें पड़ गये। मैया मध्याह्नके पहले-पहले छोड़ना नहीं चाहतीं। अतः श्यामसुन्दरने धीरेसे वंशी लाकर रूपके हाथमें दे दी और बोले, "इसे मेरी प्रियाके होठोंपर लगा देना। उसे चेतना आ जायेगी तथा चेत हो आनेपर कहना कि मैं आ ही रहा हूँ।"

रूपमञ्जरी वंशी ले आयी तथा वही किया गया। श्रीप्रियाको चेत हो आया तथा श्यामसुन्दरके आनेका समाचार सुनकर वे प्रसन्न हो गयीं।

ENGLISH TRANSLATION

A short while earlier, as Rānī waited for Śyāmasundara, a mynah brought word that he would probably not come to the forest that day. Mother Yaśodā was occupied with having him donate many cows to brāhmaṇas. Madhumaṅgala was arguing furiously, but Mother would not listen. The moment Rānī heard this news, she fainted. The sakhīs tried many remedies, but consciousness did not return. Rūpamañjarī then ran to Śyāmasundara and said, "Lalitā asks that you come quickly by some means, or devise another remedy. Otherwise hope for the life of my beloved friend Rādhā is fading away."

Śyāmasundara was caught in a dilemma, for Mother Yaśodā would not release him before midday. Quietly he brought his flute and placed it in Rūpamañjarī's hand. "Touch this to my beloved's lips. She will regain consciousness. When she awakens, tell her that I am coming."

Rūpamañjarī brought the flute and did as he instructed. Śrī Priyā awakened and became happy upon hearing that Śyāmasundara was on his way.

ORIGINAL

रानीके प्रसन्न होते ही सखियोंमें यह विचार होने लगा कि इस वंशीको ही छिपाकर रख लिया जाये। श्यामसुन्दर इसे बड़ा ही प्यार करते हैं। वे इसे वापस लेना चाहेंगे ही, अतः उस अवस्थामें उनसे कुछ वचन भरवा लिया जाये। उनसे कहा जाये कि तुम इसे विभिन्न प्रकारसे बजाना जानते हो। कभी तो जिसका नाम लेते हो, वह सुनती है, दूसरी सुनती ही नहीं। कभी तुम्हारे होठोंपर लगी रहकर यह वनमें ऐसी गूँजती है मानो तुम प्रत्येक वृक्ष, प्रत्येक लता, प्रत्येक पत्तेके भीतर बैठकर इसे बजा रहे हो। कभी ऐसा प्रतीत होता है कि हम प्रत्येकके हृदयमें बैठकर तुम भीतरसे ही हमारा नाम पुकार रहे हो। कभी ऐसा सुर भरते हो कि इधर उस ध्वनिके कानमें पड़ते ही हम सब तो पत्थरकी मूर्ति बन जाती हैं और उधर उस ध्वनिसे पत्थरकी शिलाएँ भी पिघल जाती हैं, पिघलकर उनके अन्तरालसे वंशी-ध्वनि गूँजने लगती है। कहाँतक कहें, अबतक हम सब इस वंशीकी तानके असंख्य रूप देखती रही हैं।

“इसलिये अधिक नहीं, केवल एक तान हम सबको सिखा दो। बस, केवल इतना सिखला दो, हम सबमेंसे किसी एकको ही सही, पर यह सिखा दो कि उसके द्वारा फूँक भरते ही तुम जहाँ कहीं भी रहो, वहीं मोहित होकर, आकर्षित होकर मेरी रानीके पास पहुँच जाओ। तब तुम्हें वंशी वापस मिलेगी; नहीं तो यह हम सबके पास ही रहेगी। और कुछ भी न सही, रानीके होठपर बैठकर यह ‘श्याम-श्याम’ ही बोलने लग जाये। इतनेसे ही हम सब सन्तोष कर लेंगी। कम-से-कम इतना तो तुम जान लोगे कि मेरी प्रिया मेरा नाम लेकर मुझे पुकार रही है।”

ENGLISH TRANSLATION

As soon as Rānī recovered her happiness, the sakhīs began discussing whether they should keep the flute hidden. Śyāmasundara loved it dearly and would certainly want it back. They could therefore make him grant them a promise in exchange. They would tell him: "You know how to play this flute in countless ways. At times only the person whose name you sound hears it, while no one else hears a thing. At times, resting upon your lips, it resounds through the forest as though you were sitting inside every tree, every vine, and every leaf and playing from there. At times it seems that you have entered the heart of each one of us and are calling our names from within. Sometimes you sound a note which, entering our ears, turns us all into statues of stone, while that same note melts stone slabs until flute song echoes from their very depths. How can we describe it all? We have witnessed innumerable forms of this flute's melody.

"We ask for very little. Teach us only one melody. Teach even one among us to blow a note by which, wherever you may be, you will become enchanted, drawn irresistibly, and come before our Rānī. Then you shall receive the flute back. Otherwise it will remain with us. Or at least let it rest upon Rānī's lips and cry only 'Śyāma, Śyāma.' That alone will satisfy us, for then you will at least know that my Priyā is calling you by name."

ORIGINAL

सखियोंके बीचमें यह परामर्श चल ही रहा था कि रानीने इसका विरोध किया। रानी बोलीं, “मैं यह नहीं सह सकती कि मेरे प्यारे श्यामसुन्दरको उनकी इच्छाके बिना ही मेरे पास मोहित होकर आना पड़े!”

सखियोंने बहुत समझाया, पर उन्होंने एक नहीं सुनी। फिर यह निश्चित हुआ कि एक विनोद ही आज किया जाये। श्यामसुन्दर आयें तो उनके सामने ऐसा दृश्य हम सब उपस्थित करें मानो यहाँ कुछ हुआ ही नहीं हो। रूपमञ्जरी छिप जाये। हम सब कह देंगी कि ललिताने किसी कामसे उसे बाहर भेजा है। वह तो अभीतक लौटी ही नहीं है। फिर हमलोग देखें, प्यारे श्यामसुन्दर वंशीको ढूँढ़ निकालनेके लिये क्या उपाय रचते हैं। इस बातको रानीने स्वीकार कर लिया तथा उसे अपनी कञ्चुकीमें छिपाकर बैठी रहीं।

ललिताने कहा, “तेरे द्वारा छिपाये रखना है तो कठिन, पर कोई बात नहीं। पहले तू ही छिपाकर रख। मैं सँभाल दूँगी।”

इस निश्चयके साथ ही सभी बैठी थीं, पर श्यामसुन्दरको देर होते देखकर रानी वंशीको निकालकर भावाविष्ट होकर उससे बातें करने लगीं। भावावेशमें रानी अभ्यासवश वंशीको होठोंतक तो ले जाती हैं, पर इसे होठोंके ऊपर रखनेके पहले ही नीचे उतारकर देखती हैं तथा सोचती हैं कि आज यह मूर्च्छित हो गयी है। आज मेरे फूँकनेपर भी यह ‘श्याम-श्याम’ नहीं बोल रही है। वंशीके सम्बन्धमें यह भावना रानीके निर्मल प्रेमको अतिशय उद्दीप्त कर देती है। अपने भीतर प्रेमकी कमीका अनुभव करके रानी रोने लग जाती हैं। उन्हें सिसक-सिसककर रोते देखकर सखियाँ चिन्तित होने लग जाती हैं कि वंशी-हरणका खेल बने या बिगड़े, पर यदि कहीं मेरी प्यारी सखी पुनः मूर्च्छित हुई तो फिर कैसे चेत कराया जायेगा!

ENGLISH TRANSLATION

While the sakhīs were still discussing this plan, Rānī opposed it. "I cannot bear that my beloved Śyāmasundara should be enchanted and compelled to come to me against his will."

The sakhīs reasoned with her at length, but she would not listen. They finally decided merely to play a joke. When Śyāmasundara arrived, they would act as though nothing had happened. Rūpamañjarī would hide, and all of them would say that Lalitā had sent her away on an errand and that she had not yet returned. Then they would see what device beloved Śyāmasundara used to find the flute. Rānī accepted this proposal and sat with the flute hidden in her bodice.

Lalitā said, "It will be difficult if you are the one hiding it, but never mind. Keep it first, and I shall manage matters."

They were all seated with this resolve. Yet when Śyāmasundara delayed, Rānī drew out the flute and, overcome with emotion, began speaking to it. By long habit she lifted it toward her lips, but before placing it there she lowered it and gazed at it, thinking that it had fainted today, for even when she breathed into it, it would not cry "Śyāma, Śyāma." This thought about the flute intensely inflamed Rānī's stainless love. Feeling a deficiency of love within herself, she began to weep. Seeing her sob, the sakhīs became worried. Whether their game of stealing the flute succeeded or failed no longer mattered, but if their beloved friend fainted again, how would they revive her?

ORIGINAL

इसलिये ललिता एक चतुराई करती हैं। रानीके गलेमें बाँह डालकर आँसू पोंछती हैं तथा वंशी, जो गोदमें पड़ी थी, अपने हाथमें लेकर फिर रानीकी कञ्चुकीमें रख देती हैं। ललिता सोचती हैं कि यह निश्चय ही जान जाये, इसलिये तुरन्त ही रानीसे कहती हैं, “श्यामसुन्दर आनेवाले ही हैं। वे तुम्हारे अश्रु देखते ही निश्चय जान जायेंगे कि मेरी प्रिया रो रही है, फिर वे भी रोने लग जायेंगे। वे अत्यन्त दुःखी हो जायेंगे।”

ललिताकी बात सुनकर रानी चौंक-सी जाती हैं तथा कहती हैं, “अच्छा, मेरे प्यारे श्यामसुन्दर दुःखी हो जायेंगे? ओह! तब मैं नहीं रोऊँगी, तनिक भी नहीं रोऊँगी। देख, मैं कहाँ रोती हूँ? मैं तो हँस रही हूँ। मैं तो हँसती हूँ।”

ललिता, “अच्छा, तो बता देगी?”

रानी, “नहीं बताऊँगी।”

ललिता, “फिर यदि श्यामसुन्दर व्याकुल होकर पूछेंगे, तब?”

रानी, “नहीं बताऊँगी।”

ललिता हँस पड़ती हैं। रानी कहती हैं, “तू बता, हँस क्यों रही है?”

ललिता कहती हैं, “तब तू मुझे वंशी दे दे।”

रानी, “ना! मैं तुम्हें नहीं दूँगी।”

ललिता, “अरे! देगी भी नहीं और श्यामसुन्दरको बता भी देगी। वाह, तुम अच्छा खेल करने चली हो!”

रानी कुछ गम्भीर होकर कहती हैं, “ललिते, देख! मैं बताती नहीं, पर जब कभी भी श्यामसुन्दर प्यारभरी दृष्टिसे कुछ भी पूछते हैं तो बरबस आँखें संकेत कर देनेके लिये घूम जाती हैं। कई बार तुम लोगोंकी बात मानकर निश्चय किया कि प्यारे श्यामसुन्दरसे छिपा लूँगी; पर छिपा पाती ही नहीं। उन्हें देखते ही सब कुछ भूल जाती हूँ।”

ललिता, “अच्छा, एक काम कर। जब वे आयें, तब तू उन्हें देखना मत। देखनेसे ही गड़बड़ी होती है।”

रानी, “आह! तू बड़ी भोली है। अरे, वे आयें और मेरी आँखें उन्हें देखें नहीं, यह कैसे हो सकता है?”

ललिता, “अच्छा, देख भी लेना, पर वंशीकी बात फिर छिपा लेना।”

रानी, “अच्छा, आज पूरी चेष्टा करूँगी।”

ENGLISH TRANSLATION

Lalitā therefore tries a clever remedy. Putting an arm around Rānī's neck, she wipes away her tears, takes the flute from Rānī's lap, and returns it to her bodice. To impress the danger upon her, Lalitā immediately says, "Śyāmasundara is about to come. The moment he sees your tears, he will know that his Priyā has been weeping. Then he too will begin to cry and will become terribly distressed."

Rānī starts and says, "My beloved Śyāmasundara will be distressed? Oh, then I shall not cry, not even a little. Look, am I crying? I am laughing. See, I am laughing."

"So you will not tell him?" Lalitā asks.

"I shall not."

"And if Śyāmasundara becomes anxious and asks you?"

"I still shall not tell."

Lalitā laughs. Rānī asks, "Tell me, why are you laughing?"

"Then give me the flute," Lalitā replies.

"No, I shall not give it to you."

"You will neither give it to me nor keep its secret from Śyāmasundara. What a fine game you intend to play!"

Growing serious, Rānī says, "Lalite, listen. I do not tell him, but whenever Śyāmasundara asks anything with that loving gaze, my eyes turn of their own accord and signal the answer. Many times I have followed your advice and resolved to hide something from beloved Śyāmasundara, but I never can. The instant I see him, I forget everything."

"Then do one thing. When he comes, do not look at him. Looking at him causes all the trouble."

"Ah, how innocent you are. How could he arrive and my eyes not look upon him?"

"Very well, look at him, but keep the matter of the flute concealed."

"Yes. Today I shall make every effort."

ORIGINAL

रानी यह कह ही रही थीं कि श्यामसुन्दर वहाँ आ पहुँचे। वे तेज गतिसे चलते हुए आते हैं और निर्मल जलकी नालीपर आकर खड़े हो जाते हैं। श्रीप्रिया अनिमेष नयनोंसे उन्हें देखने लग जाती हैं। श्यामसुन्दरको आते देखकर रूपमञ्जरी पासकी ही एक झाड़ीकी आड़में जाकर छिप जाती है। उनके आनेपर वहाँ सबमें आनन्द छा जाता है। विशाखा दौड़कर श्यामसुन्दरका हाथ पकड़ लेती हैं तथा कहती हैं, “देखो! मेरी सखी राधा पासेमें दाँव रखकर तुम्हें हार चुकी है, अतः आज तुम्हारे ऊपर मेरा अधिकार है। अभी दो घंटेसे हमलोग खेल रही थीं। आज बड़ा सुन्दर खेल हुआ!”

श्यामसुन्दर कुछ चकित होकर विचारमें पड़ जाते हैं तथा धीरेसे पूछते हैं, “रूपमञ्जरी कहाँ गयी है?”

विशाखा, “पूजाकी कुछ सामग्री घरपर रह गयी थी, ललिताने उसको लानेके लिये बहुत देर पहले उसे भेजा है।”

श्यामसुन्दर कुछ आश्चर्यमें पड़ जाते हैं तथा कहते हैं, “क्यों, हमारी वंशी लेकर वह यहाँ नहीं आयी?”

विशाखा, “तुम्हारी वंशी लेकर वह क्यों आती? आज तो तुमने नहीं लायी है?”

श्यामसुन्दरकी बात सुनकर ललिता हँसती हुई कहती हैं, “ऐसा लगता है कि आज तुम्हारी वंशी तुम्हारे हाथसे जानी रही है। रूपमञ्जरी राहमें मिली होगी, अतः तुम्हें सन्देह हुआ है कि उसने वंशी कहीं छिपायी है। क्यों, यही बात है न?”

ENGLISH TRANSLATION

Rānī has scarcely finished speaking when Śyāmasundara arrives. Walking swiftly, he stops at the channel of clear water. Śrī Priyā gazes at him without blinking. Seeing him come, Rūpamañjarī hides behind a nearby thicket. Joy spreads through the grove. Viśākhā runs to Śyāmasundara, seizes his hand, and says, "Look, my friend Rādhā wagered you in a game of dice and lost. Therefore I hold authority over you today. We have been playing for two hours, and it was a splendid game."

Somewhat startled, Śyāmasundara reflects and quietly asks, "Where has Rūpamañjarī gone?"

Viśākhā replies, "Some articles for worship were left at home. Lalitā sent her long ago to fetch them."

Śyāmasundara, still surprised, asks, "Did she not come here carrying my flute?"

"Why would she bring your flute? Did you not bring it today?"

Laughing at his question, Lalitā says, "It seems your flute has gone missing from your own hand today. You must have met Rūpamañjarī on the path and now suspect that she hid it somewhere. Is that not so?"

ORIGINAL

श्यामसुन्दर कुछ देर सोचकर समझ जाते हैं कि इन सबने मिलकर कोई चतुराई की है। अतः सावधानीपूर्वक श्रीप्रियासे कुछ संकेत-ही-संकेतमें पूछ लूँ कि वस्तुतः बात क्या है, वंशी लेकर यहाँ रूपमञ्जरी आयी या नहीं। प्रियासे इतनी बात तो पूछ ही लूँ, फिर तो सरलतासे वंशीको खोज निकालूँगा। ऐसा सोचकर श्यामसुन्दर श्रीप्रियाकी ओर देखने लग जाते हैं। दृष्टि मिलते ही श्रीप्रियामें प्रेमका आवेश बढ़ने लग जाता है। श्यामसुन्दर कुछ पासमें जाकर खड़े हो जाते हैं।

"प्रिये! तू जानती है, मुझे वंशी कितनी प्यारी है। यदि वह तुम्हारी दृष्टिमें हो, तब तो चिन्ताकी कोई बात नहीं। वंशी आज कह भी रही थी कि, 'प्यारे श्यामसुन्दर! रानीकी सखियाँ मुझे तुमसे अलग करना चाहती हैं। मेरे सौभाग्यसे उन्हें ईर्ष्या होने लग गयी है। अतः रानीके चरणमें मुझे पहुँचा दो। मैं रानीसे विनती करूँगी कि आपकी सखियाँ मुझसे व्यर्थ ही अप्रसन्न हैं। मैं किसीका कुछ बिगाड़ती नहीं। श्यामसुन्दर मुझे बोलनेके लिये कहते हैं तो मैं बोलती हूँ। वे नहीं कहते तो मैं चुप रहती हूँ। तुम्हीं बताओ कि मैं अपने धर्मको कैसे बिगाड़ दूँ? अपने स्वामी श्यामसुन्दरकी आज्ञा न माननेसे तो मैं कुलटा बन जाऊँगी। मेरी रानी! तुमसे बढ़कर मुझे धर्मका मर्म कौन बतायेगा? इसलिये तुम्हारे पास आयी हूँ। तुम्हीं निर्णय कर दो। यदि मेरा अपराध हो तो मुझे अपनी सखियोंको सौंप दो। सखियोंका अपराध हो तो उन्हें मेरे हाथ सौंप दो। मैं उन्हें ले जाकर अपने स्वामी प्यारे श्यामसुन्दरके हाथमें दे दूँगी। फिर वे जो आज्ञा करेंगे, वैसा ही व्यवहार इनके साथ करूँगी।'

ENGLISH TRANSLATION

After thinking for a moment, Śyāmasundara understands that they have devised some joint trick. He decides to ask Śrī Priyā very carefully by signs whether Rūpamañjarī truly came with the flute. If Priyā confirms even that much, he can find it easily. He therefore looks toward her. The instant their eyes meet, the tide of love rises within Śrī Priyā. Śyāmasundara comes somewhat nearer and says:

"Priye, you know how dear the flute is to me. If it is anywhere within your sight, I have no cause for concern. Only today the flute said to me, 'Beloved Śyāmasundara, Rānī's sakhīs wish to separate me from you. They have grown jealous of my good fortune. Take me, therefore, to Rānī's feet. I shall plead with her that her sakhīs are angry with me for no reason. I harm no one. When Śyāmasundara asks me to speak, I speak; when he does not, I remain silent. Tell me yourself, how can I violate my duty? If I refuse my master Śyāmasundara's command, I would become unfaithful. My Rānī, who better than you can teach me the heart of dharma? That is why I have come to you. Judge the matter yourself. If I am at fault, hand me over to your sakhīs. If they are at fault, hand them over to me. I shall carry them to my master, beloved Śyāmasundara, and deal with them exactly as he commands.'"

ORIGINAL

“श्रीप्राणेश्वरी! वंशीकी बात सुनकर मैं सोचने लगा कि यदि तुम्हारी सखियाँ इसे मुझसे अलग कर देंगी तो यह बड़ी दुःखी होगी। यह तो पतिव्रता है, दिन-रात एकनिष्ठ मनसे मेरी सेवा करती है। यह तो अलग होकर भी मेरी ही रहेगी; पर मैं चाहता हूँ कि इसे दुःख न हो। यह कई बार मुझसे कह चुकी है कि, ‘प्यारे! रानीकी सखियाँ मुझे उनकी इच्छानुसार बजनेके लिये कहती हैं; पर मैं तो तुम्हारी इच्छाके बिना बज नहीं सकती और उनका चित्त भी दुखाना नहीं चाहती। इसलिये कभी-कभी मनमें आता है कि मेरे स्थानपर तुम भी वैसी बहिनको रखो। फिर रानीकी सखियोंको भी ईर्ष्या नहीं होगी। वे फिर स्वयं सारा रहस्य भी समझ जायेंगी।’ प्रियतम! आज वह वंशी इसलिये मचल गयी थी कि रूठकर चले जानेकी भी धमकी दे चुकी थी। इसलिये मैं सोचता हूँ कि वह यदि कहीं रूठकर गयी हो, पर मुझसे अलग होकर तेरे पास आयी हो तो सुखी होगी; नहीं तो बहुत रोती होगी। अतः तूने उसे कहीं देखा हो तो बता देना।”

श्यामसुन्दरकी बात सुनकर सखियाँ तो उच्च स्वरसे हँसती हैं, पर रानी कुछ गम्भीर होकर कहती हैं, “प्यारे! वंशी तुम्हारे हृदयमें ही कहीं जा छिपी होगी।”

ENGLISH TRANSLATION

Śyāmasundara continues, "O sovereign of my life, hearing the flute's complaint, I thought that if your sakhīs separated her from me, she would be deeply unhappy. She is perfectly faithful and serves me day and night with single-minded devotion. Even apart from me she would remain mine, but I do not wish her to suffer. Many times she has told me, 'Beloved, Rānī's sakhīs ask me to play according to their wishes. Yet I cannot sound without your will, nor do I wish to hurt their hearts. Sometimes I think you should appoint another sister like me in my place. Then Rānī's sakhīs would cease to be jealous and would themselves understand the entire secret.' Priyatame, today the flute was so agitated that she even threatened to leave in displeasure. I think that if she has gone away in anger but has come to you after parting from me, she will be happy. Otherwise she must be weeping bitterly. If you have seen her anywhere, please tell me."

The sakhīs laugh aloud at Śyāmasundara's speech. Rānī, however, grows solemn and says, "Beloved, the flute must have gone and hidden somewhere inside your own heart."

ORIGINAL

श्यामसुन्दर सोनेकी, बाँसकी बनी हुई मुरली, वंशी आदि रखते हैं। जिस समय उनके हाथमें सोनेकी वंशी रहती है, उस समय सखियोंके अङ्गोंके आभूषण प्रफुल्लित हो जाते हैं कि हमारी जातिका इतना भाग्योदय हुआ है कि हममेंसे एक प्यारे श्यामसुन्दरसे लग रही है। इस आनन्दमें स्वयं सभी सोनेके आभूषण उन्मत्त होकर मुरलीकी ध्वनिमें ध्वनि मिलाकर बजने लग जाते हैं तथा सखियाँ ऐसा अनुभव करती हैं कि मेरे बहुत रोकनेपर भी ये आभूषण विवश होकर श्यामसुन्दरकी मुरलीकी ओर जा मिले हैं। स्थिति यहाँतक हो जाती है कि आभूषणोंकी ध्वनि उनके हृदयमें जाकर और अनन्तगुनी होकर, ठीक श्यामसुन्दरके स्वरमें ही हृदयके स्वरको भी बाँध देती है। वे बावली-सी होकर उसी प्रकार बड़-बड़ करने लग जाती हैं।

ENGLISH TRANSLATION

Śyāmasundara keeps flutes made of gold and bamboo, known as muralī, vaṃśī, and by other names. When he holds a golden flute, the gold ornaments upon the sakhīs' bodies rejoice: "Our whole kind has attained such fortune, for one among us is touching beloved Śyāmasundara." Maddened by delight, every golden ornament begins to ring in harmony with the flute. The sakhīs feel that despite all their attempts to restrain them, the ornaments have helplessly flown toward Śyāmasundara's music. The sound of those ornaments enters their hearts, multiplies without limit, and in Śyāmasundara's own tone binds even the heart's inner voice. The sakhīs become as though mad and begin to murmur in the very same manner.

ORIGINAL

रानीकी बात सुनकर ललिता कुछ चिढ़-सी जाती हैं। पर इसे छिपाकर कहती हैं, “अच्छा श्यामसुन्दर! तुम एक काम करो। मैं अभी-अभी तुम्हारी रूठी हुई वंशीको खोज लाऊँगी तथा मना भी दूँगी। पर तुम आज विशाखाको अपने हाथसे फूलोंका तोता बनाकर दे दो; फिर हम सब मिलकर तुम्हें कल एक बहुत बढ़िया खेल दिखायेंगी।”

ललिता यह कहकर रानीके सामने चली जाती हैं तथा श्यामसुन्दरको आड़में करके रानीसे कुछ संकेत करती हैं। रानी घूमकर पश्चिम एवं उत्तरके कोनेकी ओर देखने लग जाती हैं। विशाखा चतुराईसे श्यामसुन्दरको राधाकुण्डकी ओर फिरा देती हैं। इसी बीच ललिता वंशीको श्रीराधाकी कञ्चुकीसे निकालकर बड़ी कुशलतासे अपनी कञ्चुकीमें रख लेती हैं। इतनेमें श्यामसुन्दर उधर ही देखने लग जाते हैं। ललिताने वंशी बड़ी शीघ्रतासे छिपा ली और छिपाकर बोलीं, “देखो! यह मेरी सखी आधी बावली है। अभी-अभी कुछ कहती है, फिर कुछ कहने लग जायेगी। मैं तो उससे बहुत दुःखी हो गयी हूँ। तुम एक काम और भी करो। अपने हाथसे अपना एक चित्र बनाकर इसे दे दो। तुम्हारे पीछे उसी चित्रके सहारे मैं इसे सान्त्वना देती रहूँगी।”

श्यामसुन्दर मुस्कुराते हैं, पर मन-ही-मन वंशीको शीघ्र खोज निकालनेकी चेष्टामें लगे हैं। श्रीप्रियाकी बात सुनकर यह तो वे जान ही गये कि वंशी मेरी प्यारीके पास ही है; पर अब उसे ललिताने ले लिया था। श्रीप्रियाने भी संकेतसे यह बात बता दी कि ललिताने उसे ले लिया है। अतः ललिताको भरपूर छकानेकी युक्ति सोचते हुए श्यामसुन्दर खड़े हैं।

ENGLISH TRANSLATION

Rānī's reply irritates Lalitā slightly, though she conceals it. "Very well, Śyāmasundara, do one thing. I shall immediately find your offended flute and pacify her. But today you must fashion a parrot of flowers for Viśākhā with your own hands. Then tomorrow all of us together shall show you a splendid game."

Speaking thus, Lalitā moves in front of Rānī, screens her from Śyāmasundara, and signals to her. Rānī turns to look toward the northwestern corner, while Viśākhā cleverly turns Śyāmasundara toward Rādhā-kuṇḍa. In that instant Lalitā removes the flute from Śrī Rādhā's bodice and deftly slips it into her own. Śyāmasundara turns back just as she hides it. Lalitā then says, "Look, this friend of mine is half mad. One moment she says one thing, and the next something else. I am quite distressed by her. Do one more favor. Draw a portrait of yourself with your own hand and give it to her, so that in your absence I may console her with that picture."

Śyāmasundara smiles, though inwardly he is intent upon finding the flute quickly. From Śrī Priyā's words he already knows it was with his beloved, but now Lalitā has taken it. Śrī Priyā also signals that Lalitā has it. Śyāmasundara therefore stands devising a way to outwit Lalitā completely.

ORIGINAL

युक्ति सूझ जाती है। वे तुरन्त अपनी आँखें बन्द करके कहते हैं, “देखो, मेरा सिर घूम रहा है। मैं थोड़ा लेट जाना चाहता हूँ। घबराना नहीं, साधारण-सी पीड़ा है।”

श्यामसुन्दर वहीं लेट जाते हैं। श्रीप्रिया बहुत घबरायी-सी होकर उनके पास जा पहुँचती हैं। श्रीप्रियाको श्यामसुन्दर संकेत कर देते हैं कि घबराना मत, मुझे कोई पीड़ा नहीं है, ललिताको छकाना है। फिर भी रानी कुछ घबरायी-सी रहती हैं। श्यामसुन्दर श्रीप्रियाके हाथको पकड़कर दबाकर संकेतमें कह देते हैं कि मैं पूर्णतः स्वस्थ हूँ, तब प्रियाको धैर्य बँधता है।

श्यामसुन्दर धीरेसे उठकर बैठ जाते हैं तथा कहते हैं, “कुछ दिन पहले मेरी प्रियाने एक दिन निकुञ्जमें मेरी वंशी ली थी। भाद्रपदकी पूर्णिमाके दिनकी बात है। पुष्पोंकी शय्यापर हम दोनों बैठे थे। समस्त निकुञ्ज पुष्पोंसे सजा हुआ था। तब मैं प्रियासे बोला कि अच्छी बात है, वंशी आजसे तेरी होकर रहेगी; पर देखना भला, मेरे अधर-रसका पान करके ही यह जीती रहती है, इसलिये तू अपना अधर-रस इसे नियमसे पिला देना, नहीं तो भूखी रहेगी। हाँ, यदि तू कभी भूल जायेगी तो उसकी दशा देखकर तू स्वयं रोयेगी और तुझे रोती देखकर मैं भी रोने लग जाऊँगा।”

ENGLISH TRANSLATION

An idea comes to him. Closing his eyes, he says, "My head is spinning. I should lie down for a little while. Do not be alarmed; it is only a slight pain."

Śyāmasundara lies down where he stands. Deeply frightened, Śrī Priyā rushes to him. By a sign he reassures her that he is not in pain and only wishes to outwit Lalitā. Still anxious, Rānī remains beside him. Śyāmasundara takes her hand, presses it, and signals again that he is perfectly well. Only then does Priyā regain her composure.

Slowly sitting up, Śyāmasundara says, "Some days ago, in a secluded bower, my Priyā took my flute. It was the full-moon night of Bhādrapada. We sat together upon a bed of flowers, and the entire bower was adorned with blossoms. I told Priyā, 'Very well, from today the flute shall remain yours. But remember, she lives only by drinking the nectar of my lips. You must therefore feed her your own lip nectar regularly, or she will go hungry. If you ever forget, you will weep when you see her condition, and seeing you weep, I too shall begin to cry.'"

ORIGINAL

श्रीप्रिया बड़ी उत्कण्ठासे सुन रही हैं। उस दिनवाली निकुञ्ज-लीलाकी बात उन्हें प्रेममें अधिकाधिक अधीर बनाती जा रही है। श्यामसुन्दर फिर कहते हैं, “हाँ, तब इसके बाद क्या हुआ, सो तुम्हें सुनाता हूँ। मेरी प्रियाकी आँखोंसे प्रेम झर रहा था। मैं एकटक प्रियाकी आँखोंसे आँख मिलाये देख रहा था। उस समय प्रिया मुझसे बोली, ‘प्राणेश्वर! वंशी तो मैं अभी-अभी दे दूँगी, पर मेरी एक बात सुनो। कई दिनोंसे मैं तुमसे कहना चाह रही थी; तुम्हें देखकर वह बात भूल जाया करती थी। आज वह बात याद आ गयी है। देखो, प्रत्येक संध्यामें ललिता मेरा शृङ्गार करती है। शृङ्गार करके आनन्दमग्न हो जाती है। उसे आनन्द-बावली देखकर मैं सोचती हूँ कि मुझमें सुन्दरता तो है ही नहीं; पर जब इस बावलीने सजाया है तो मैं देख तो लूँ कि तुम्हारी सेवाके लिये तुम्हारी दासीको इसने कैसा सजाया है। वह दर्पण मेरे सामने ले आती है; पर प्राणेश्वर! पता नहीं क्यों, मुझे अपना मुख नहीं दिखलायी देकर तुम्हारा मुख दीखने लग जाता है। बहुत सोचते-सोचते आज यह निर्णय कर पायी हूँ कि तुम मुझे अतिशय प्यार करते हो; तुम्हारे हृदयका प्यार मुझे चारों ओरसे घेरे रहता है; इसीलिये मुझे अपना प्रतिबिम्ब नहीं दीखकर तुम्हारा दीखता है। मेरे जीवनसर्वस्व! आज भी ऐसा ही हुआ था। उस समय मनमें आया कि अहा! यह प्रतिबिम्ब कितना सुन्दर है।’

“फिर यदि किसी दिन श्यामसुन्दर अपने हाथोंसे ठीक अपने ही समान अपनी वेष-भूषामें मुझे सजा दें तो वह प्रतिबिम्ब कितना सुन्दर होगा। इसलिये प्यारे! आज अपने हाथसे तुम मुझे अपनी दुपट्टा ओढ़ा दो, मेरे केशोंको ठीक अपने-जैसे बनाकर मयूरपिच्छका मुकुट मेरे सिरपर बाँध दो और वंशी मेरे होठोंपर रख दो। फिर मैं देखूँगी कि दर्पणमें कैसी छवि प्रतिबिम्बित होती है।”

ENGLISH TRANSLATION

Śrī Priyā listens with intense longing. The memory of that day's secluded līlā makes her ever more restless in love. Śyāmasundara continues, "I shall tell you what happened next. Love streamed from my Priyā's eyes, and I gazed fixedly into them. She said, 'Lord of my life, I shall return the flute at once, but listen to one request. For many days I have wanted to tell you this, yet whenever I see you, I forget it. Today I remembered. Every evening Lalitā adorns me and becomes immersed in joy. Seeing her mad with delight, I think: there is no beauty in me, but since this mad girl has dressed me, let me see how she has adorned your maidservant for your service. She brings a mirror before me, but, Prāṇeśvara, I do not know why I see your face instead of my own. After long reflection, I have understood today that you love me exceedingly. The love of your heart surrounds me on every side, and therefore I behold your reflection instead of mine. O treasure of my life, the same thing happened today. I thought, ah, how beautiful this reflection is.

"'If one day Śyāmasundara were to dress me with his own hands in garments and ornaments exactly like his, how beautiful that reflection would be. Therefore, beloved, drape your own scarf over me today. Arrange my hair like yours, bind a peacock-feather crown upon my head, and place the flute upon my lips. Then I shall see what image appears in the mirror.'"

ORIGINAL

श्यामसुन्दर ललितासे ये बातें कहते जा रहे थे एवं प्रिया सर्वथा उसी भावसे आविष्ट होती जा रही थीं। श्यामसुन्दरने श्रीप्रियाकी दशाको देखकर एक बार मुस्कुरा दिया और फिर बोले, "ललिते! मैंने प्रियाको ठीक उसी भाँति सजा दिया।"

श्यामसुन्दरके मुखसे यह बात निकलते ही श्रीप्रिया अतिशय भावाविष्ट होकर मूर्च्छित हो जाती हैं। श्यामसुन्दर अतिशय प्रेमसे गोदमें लिटा लेते हैं। कुछ देर ठहरकर श्रीप्रिया उसी भावावेशमें बोल उठती हैं, "हाँ, वंशी मेरे होठोंपर रख दो!"

श्यामसुन्दर बड़ी चतुराईसे कहते हैं, "प्रिये! वंशी तो तुमने ही छिपाकर रखी है। निकालकर दे, मैं तेरे होठोंपर रख दूँ।"

श्रीप्रिया श्यामसुन्दरकी बात सुनकर कञ्चुकीके भीतर हाथ ले जाती हैं। फिर भावावेशमें ही बोलती हैं, "अरे! क्या हो गयी? कहाँ चली गयी? आह! मैंने तो उसे यहीं छिपाकर रख रखा था। कौन उठा ले गयी?"

श्रीप्रिया अतिशय व्याकुल होकर रोने लग जाती हैं तथा रोकर कहती हैं, "हाय, हाय! मेरे प्यारे श्यामसुन्दरकी वंशी मेरे हृदयके पाससे कौन ले गयी? ना, कोई हो, ठिठोली मत करो, वंशी ला दो। मैं एक बार होठोंपर रखकर अपना प्रतिबिम्ब देखना चाहती हूँ।"

श्रीप्रियाकी दशा देखकर ललिता गम्भीर हो जाती हैं। श्यामसुन्दर मुस्कुराकर बहुत धीरेसे, जिससे श्रीप्रिया नहीं सुन पायें, कहते हैं, "ललितारानी! अब अपना खेल सँभालो। शीघ्र वंशी लाओ, नहीं तो दशा देख लो। आगे क्या होगा, स्वयं सोच सकती हो!"

ENGLISH TRANSLATION

As Śyāmasundara narrates this to Lalitā, Priyā becomes wholly absorbed in the remembered mood. Seeing her condition, Śyāmasundara smiles once and then says, "Lalite, I dressed Priyā exactly as she asked."

The instant these words leave his mouth, Śrī Priyā is overwhelmed by bhāva and faints. With immense love, Śyāmasundara lays her in his lap. After a little while, still absorbed in that mood, she murmurs, "Yes, place the flute upon my lips."

Very cleverly Śyāmasundara replies, "Priye, you are the one who hid the flute. Take it out and give it to me, and I shall place it upon your lips."

Hearing this, Śrī Priyā reaches inside her bodice. Still overcome, she cries, "Oh! What has happened to it? Where has it gone? Alas, I hid it right here. Who carried it away?"

Deeply distressed, Śrī Priyā begins to weep. "Alas, who took my beloved Śyāmasundara's flute from beside my heart? Whoever you are, do not tease me. Bring it back. I wish to place it upon my lips once and behold my reflection."

Seeing Śrī Priyā's state, Lalitā grows solemn. Smiling, Śyāmasundara whispers so softly that Priyā cannot hear, "Lalitārāṇī, now bring your game under control. Bring the flute quickly. You can see her condition and imagine for yourself what will happen next."

ORIGINAL

ललिता घबरायी-सी होकर वंशी अपनी कञ्चुकीसे निकालकर श्यामसुन्दरके हाथमें दे देती हैं। फिर किञ्चित् हँसकर कहती हैं, “हाँ श्यामसुन्दर! तुम सचमुच बड़े धूर्त हो। अच्छा, फिर कभी बात!”

श्यामसुन्दर वंशी लेकर श्रीप्रियाके होठोंपर रख देते हैं। वंशी होठोंपर रखते ही प्रिया प्रसन्न हो जाती हैं तथा भावावेशमें ऐसा अनुभव करने लगती हैं कि मैं दर्पणमें प्रतिबिम्बकी शोभा निहार रही हूँ। रानी कुछ देरतक इसी मुद्रामें बैठी रहती हैं, फिर मूर्च्छित होकर श्यामसुन्दरकी गोदमें गिर पड़ती हैं। श्यामसुन्दर श्रीप्रियाको गोदमें लिटाये हुए उनके मुखकी शोभा निहारने लग जाते हैं।

कुछ देर बाद श्रीप्रियाको चेत हो जाता है। श्रीप्रिया उठ बैठती हैं तथा कुछ लजा जाती हैं। इधर श्यामसुन्दर अपने हाथमें वंशी लेकर खिलखिलाकर हँस पड़ते हैं। फिर कुछ देर बाद हँसते हुए कहते हैं, “प्रिये! आज तो मेरा बहुत काम बन गया। अब देख, वंशीसे मैं सब रहस्य जान लेता हूँ।”

इसके बाद श्यामसुन्दर वंशीको सिरसे लगाते हैं, फिर उसे चूमकर कहते हैं, “वंशिके! तेरा अहोभाग्य है। ललितारानीके हृदयके पास रहकर आयी है; पर अब कुछ हमें भी तो बता कि ललितारानीके हृदयमें तुमने क्या देखा-सुना।”

वंशीसे निवेदन करके श्यामसुन्दर उसे कानोंके पास ले जाते हैं। फिर हँसकर राधारानीसे कहते हैं, “प्रिये! तू सुनेगी, वंशीने मुझे क्या समाचार सुनाया है?”

रानी उत्कण्ठाभरे स्वरमें कहती हैं, “सुनाओ!”

सभी सखियाँ भी अत्यन्त उत्कण्ठित हो जाती हैं; पर ललिता कुछ काँप रही हैं। श्यामसुन्दर कहते हैं, “वंशिके! तुमने जो मुझसे कहा है, वही सुन्दर स्वरमें गाकर सबको सुना दो।”

ENGLISH TRANSLATION

Alarmed, Lalitā draws the flute from her bodice and places it in Śyāmasundara's hand. Laughing slightly, she says, "Yes, Śyāmasundara, you truly are a great rogue. Very well, we shall settle this another time."

Śyāmasundara places the flute upon Śrī Priyā's lips. The instant it touches them, Priyā becomes happy and, immersed in bhāva, feels that she is gazing upon her reflection in the mirror. Rānī remains in this posture for some time, then faints and falls into Śyāmasundara's lap. Holding her there, he gazes upon the beauty of her face.

After a while Śrī Priyā regains consciousness. Sitting up, she becomes somewhat shy. Śyāmasundara holds the flute and bursts into laughter. After laughing for a time, he says, "Priye, I have gained a great advantage today. Just see, now I shall learn every secret from the flute."

He touches the flute to his head, kisses it, and says, "Vaṃśike, how blessed you are. You have returned after resting beside Lalitārānī's heart. Tell me what you saw and heard there."

After making this request, he raises it to his ear, then turns laughing to Rādhārānī. "Priye, would you like to hear the news the flute has given me?"

"Tell us," Rānī answers eagerly.

All the sakhīs become intensely curious, though Lalitā is trembling slightly. Śyāmasundara says, "Vaṃśike, sing aloud in your lovely voice exactly what you told me."

ORIGINAL Braj Bhāṣā

श्यामसुन्दर वंशीमें सुर भरने लगते हैं। वंशीसे अत्यन्त मधुर स्वरमें गान होने लग जाता है। सभी सखियाँ यही अनुभव कर रही हैं कि वंशीके छिद्रोंसे ये शब्द निकल रहे हैं, “प्यारे श्यामसुन्दर! ललिताके हृदयके अन्तस्तलमें जो पद गूँज रहा था और जिसे मैं सुनकर आयी हूं, वही सुना रही हूँ”:

स्याम रूप मैं तेज अधर रस जलहिं मिलाऊँ।

मुरली अकास मिलाय प्रान में प्राननि लाऊँ।।

पृथ्वी क्षय मित्त्य दासु मैं प्रियतम ध्याऊँ।।

ENGLISH TRANSLATION

Śyāmasundara breathes melody into the flute, and an exceedingly sweet song emerges. Every sakhī feels that these words issue directly from its openings: "Beloved Śyāmasundara, I shall sing the verse that resounded in the innermost depth of Lalitā's heart, the verse I heard there":

I shall merge my body's fire into the radiance of Śyāma's form, and its water into the nectar of his lips. I shall merge its space into the hollow of the flute and its vital air into his life breath. Dissolving the element of earth, this servant shall meditate upon her Beloved.

> ORIGINAL
>
> *(पदका भाव यह है: मेरा शरीर पाँच तत्त्वोंका बना हुआ है, पृथ्वी, अप्, तेज, वायु और आकाश। इनके संयोगसे ही यह शरीर बना है। पर प्यारे श्यामसुन्दर तो इस शरीरके कारण बहुत दूर पड़ जाते हैं, इसलिये मैं उनकी शोभाको ठीक-ठीक निहार नहीं पाती। हाँ सखी! सबन्ध वही बात है। यह शरीर बड़ा व्यवधान बन गया है। पर एक बात कर लूँ तो काम बन जाये। इस शरीरके पाँचों तत्त्वोंको अलग-अलग कर दूँ। अलग-अलग करके तेजतत्त्वको श्यामसुन्दरके रूपके तेजमें मिला दूँ; श्यामसुन्दरके अधरोंमें जो रस है, उसमें जलतत्त्वको मिला दूँ; मुरलीके भीतरके खोखले अंशके आकाशमें आकाशतत्त्वको मिला दूँ; श्यामसुन्दरके प्राणवायुमें शरीरके वायुतत्त्वको घुला-मिला दूँ। शेष रहा पृथ्वीतत्त्व। यदि भाग्यसे संध्याके समय श्यामसुन्दरका कभी दर्शन हो जाये तो उनके मुखारविन्दपर गोधूलि-कणका दर्शन पाऊँगी ही, उन्हीं रजकणोंमें अपने शरीरके पृथ्वीतत्त्वको मिटा दूँ। फिर प्यारे श्यामसुन्दरको ठीकसे देख पाऊँगी, तभी उनका ध्यान ठीकसे हो सकेगा। तभी वे मेरे हृदयमें सदाके लिये आ बसेंगे।)*

ENGLISH TRANSLATION

(The sense of the verse is this: My body is composed of five elements, earth, water, fire, air, and space. Their conjunction alone forms this body. Yet because of this body, beloved Śyāmasundara seems far away, and I cannot behold his beauty perfectly. Yes, sakhī, this is the heart of the matter: the body has become a great obstruction. One act would resolve it. I shall separate its five elements. I shall merge fire into the splendor of Śyāmasundara's form; water into the nectar of his lips; space into the hollow space within his flute; and air into Śyāmasundara's vital breath. Earth alone will remain. If fortune grants me a vision of Śyāmasundara at dusk, I shall surely see particles of cow-dust upon his lotus face. Into those particles I shall dissolve the earth element of my body. Then I shall behold beloved Śyāmasundara perfectly and meditate upon him without obstruction. Then he will come to dwell forever in my heart.)

ORIGINAL

वंशीकी सुरीली तानने सबको प्रेममें बेसुध बना दिया। ललिता तो बावली-सी होकर दौड़ पड़ती हैं तथा श्यामसुन्दरके गलेसे चिपटकर मूर्च्छित हो जाती हैं। बड़ी निराली झाँकी है। सखियाँ चारों ओर प्रेममें झूम रही हैं। राधारानी श्यामसुन्दरका बायाँ कन्धा दोनों हाथोंसे पकड़कर पत्थरकी मूर्ति-सी सटी हुई बैठी हैं। ललिता गलेमें बाँह डाले मूर्च्छित पड़ी हैं। श्यामसुन्दर स्वयं मन्द-मन्द मुस्कुराते हुए प्रेममें झूम रहे हैं। कुछ क्षणके बाद ललिताको चेत हो जाता है; पर फिर भी आँखें बन्द हैं। श्यामसुन्दर प्यारसे ललिताके मुखको सहलाने लगते हैं। पूरा चेत हो जानेपर ललिता लजायी हुई वहींपर कुछ हटकर बैठ जाती हैं। सर्वत्र प्रेम, शान्ति एवं नीरवता छायी हुई है।

नीरवताको भङ्ग करते हुए श्यामसुन्दर हँसकर कहते हैं, “ललितारानी! मेरी वंशीका चमत्कार देख लो। अहा! मेरी वंशी कितनी सेवा करती है? मुझसे अलग होकर भी इसने मेरी सेवाका कैसा सुन्दर उपाय किया है? तुम-जैसी हठीली-गर्ववालीको भी बरबस मालाकी तरह मेरे गलेमें ला पड़ा। मेरी प्यारी वंशिके! तेरी जय हो!”

श्यामसुन्दर फिर रुककर कहते हैं, “क्यों, ललितारानी! मेरी वंशी छिपानेका दण्ड अभी तुमसे लेना शेष है।”

ENGLISH TRANSLATION

The flute's melodious song makes everyone insensible with love. Lalitā, as if mad, runs to Śyāmasundara, throws her arms around his neck, and faints. It is an extraordinary vision. The sakhīs sway in love on every side. Rādhārānī sits pressed against Śyāmasundara like a stone image, clasping his left shoulder with both hands. Lalitā lies unconscious with her arms around his neck. Śyāmasundara himself sways in love, smiling gently. After a few moments Lalitā regains awareness, though her eyes remain closed. Lovingly Śyāmasundara strokes her face. When she is fully conscious, she withdraws a little and sits nearby in bashfulness. Love, peace, and silence cover everything.

Breaking the silence, Śyāmasundara laughs and says, "Lalitārānī, behold the wonder of my flute. Ah, how devotedly she serves me. Even while separated from me, what a lovely means of service she devised. She forcibly brought even a proud and obstinate woman like you to hang around my neck like a garland. Victory to my beloved flute!"

After a pause he adds, "Lalitārānī, I have yet to exact the penalty for hiding my flute."

ORIGINAL

रूपमञ्जरी बहुत पहले रानीके होठोंपर वंशी रखते ही वहाँ आकर खड़ी हो गयी थी। श्यामसुन्दर उसकी ओर तथा सुदेवीकी ओर देखकर कहते हैं, “रूप! तुमने भले घर निमन्त्रण दिया है। याद रखना, अपनी यूथेश्वरी ललितारानीके साथ मिलकर चोरीमें सहायता देनेका दण्ड तुम्हें भी भोगना पड़ेगा। सुदेवि! तुम्हारी जानकारीमें तुम्हारे कुञ्जमें यह अन्याय हुआ है कि मेरी प्यारी वंशीको मुझसे अलग कर दिया गया और वह भी पूरा षड्यन्त्र रचकर! अतः तुम्हें भी संध्या होनेके पहले-पहले इसका दण्ड भोगना पड़ेगा। सावधान रहना, पहलेसे ही सूचना दे रहा हूँ।”

श्यामसुन्दरकी अतिशय प्यारभरी बात सुनकर सखियाँ प्रेममें विभोर हो जाती हैं; पर कुछ सँभलकर सुदेवी कहती हैं, “जो होगा, देख लूँगी; पर तुम्हीं बताओ, यह क्या कम है कि खोयी हुई वंशी मेरे ही कुञ्जमें तुम्हारे पास पुनः आ गयी है? इसलिये चलो, संगीत-महोत्सवमें इसे ले चलो। वहाँ कुछ इसके चमत्कारका प्रदर्शन करो।”

श्यामसुन्दर सुदेवीकी बात सुनकर प्रसन्न हो जाते हैं तथा श्रीप्रिया एवं ललिता, दोनोंको अपने बायें-दायें लिये-लिये पाइल कुञ्जकी ओर संगीत-महोत्सवमें सम्मिलित होनेके लिये चल पड़ते हैं।

ENGLISH TRANSLATION

Rūpamañjarī had returned and taken her place as soon as the flute was set upon Rānī's lips. Looking toward her and Sudevī, Śyāmasundara says, "Rūpa, you have invited me into a fine household indeed. Remember, you too must suffer punishment for joining your group mistress Lalitārānī and helping with this theft. Sudevi, with your knowledge this injustice occurred in your own grove: my beloved flute was separated from me through a fully contrived conspiracy. You too must therefore receive your punishment before evening. Stay alert, for I am warning you in advance."

The sakhīs become overwhelmed by the immense affection in Śyāmasundara's words. Regaining her composure, Sudevī says, "Whatever happens, I shall face it. But tell me, is it a small thing that your lost flute returned to you here in my own grove? Come, then. Take her to the music festival and display some of her wonders there."

Pleased by Sudevī's words, Śyāmasundara sets out toward the pāila grove to join the music festival, with Śrī Priyā on one side and Lalitā on the other.

CHAPTER 25

पाद-संवाहन लीला

The Līlā of Massaging the Feet

Source scan pages 286–290

ORIGINAL Sanskrit invocation, Braj verse, and Hindi prose

॥ विजयेतां श्रीप्रियाप्रियतमौ ॥

पाद-संवाहन लीला

राजेन्द्र निकुञ्ज धाम ठकुरानी।

कुसुम सेज पर पौढ़ी प्यारी राग सुनत मृदु बानी॥

बैठें ललिता चरण पलोटत लाल दृष्टि ललचानी।

पाय परत सजनी के मोहन हित सों हा हा खानी॥

भई कृपाल लाल पर ललिता दे अवसर मुसुकानी।

आये मोहन चरण पलोटौं जैसे कुँवरि न जानी॥

आज्ञा दई सखी को प्यारी मुख ऊपर पट तानी।

बीन बजाय गाय कछु तामन ज्यौं उपजै सुख सानी॥

गावत सखी रसिक मन मोहन तब जानी महारानी।

उठ बैठी व्यास की स्वामिनी श्रीवृन्दावन रानी॥

श्रीइन्दुलेखाके कुञ्जमें श्रीराधारानी श्रीकृष्णकी प्रतीक्षामें हैं। निकुञ्ज केलेके पत्तोंका बना हुआ है। स्वाभाविक ही वहाँ केलेके वृक्ष सटे-सटे लगे हुए हैं। वे केलेके वृक्ष ही खम्भेका काम कर रहे हैं। उनके कोमल-कोमल पत्ते इस प्रकार पिरो दिये गये हैं मानो केलेके पत्तोंका मन्दिर बनाया गया हो। केलेके पत्ते दीवारका काम कर रहे हैं तथा कोमल पत्तोंका अत्यन्त सुन्दर ढंगसे बीचमें गुम्बज बना हुआ है। उसके उत्तर-दक्षिणमें दो द्वार हैं, जो गुलाबके फूलोंसे सजाये हुए हैं। पूर्व-पश्चिमकी ओर एक-एक खिड़की है, उसे भी गुलाबके फूलोंसे सजा दिया गया है।

भीतरसे निकुञ्जका व्यास दस गज है। बीचमें एक पलंग बिछा हुआ है। पलंगकी रचना बड़ी कलापूर्ण है। चन्दनके पाये तथा चन्दनकी पाटीसे पलंगके आकारका निर्माण करके उन्हें पतले और सुपुष्ट रेशमी धागोंसे एक-एक अँगुलका छिद्र रखकर बुन दिया गया है। छिद्रोंमें तुरन्तके खिले हुए कमलके फूलोंको इस प्रकार पिरो दिया गया है मानो सुन्दर खिले हुए कमलोंका बिछौना बिछा हुआ हो। पलंगके पाये एवं पाटियोंको भी कमलके फूलोंसे सजा दिया गया है। ऐसा लगता है मानो कमलके फूलोंका ही पलंग हो। पलंगका सिर दक्षिणकी ओर है। सिरकी ओर कमलके फूलोंका ही एक तकिया है। उसी फूलोंकी शय्यापर राधारानी बायीं करवट लेटी हुई हैं। उनका सिर दक्षिणकी ओर है तथा चरण उत्तरकी ओर।

राधारानीके चरणोंके पास ललिता अपने चरण पलंगसे नीचे लटकाये बैठी हैं। ललिताकी गोदमें ही राधारानीके चरण हैं। वे चरणोंको धीरे-धीरे दबा रही हैं। ललिताका मुख ठीक पश्चिमकी ओर है। दो हाथ पश्चिमकी ओर हटकर पलंगके सिरहाने कमलके फूलोंका ही गद्दा बिछा हुआ है, जिसपर कुछ सखियाँ बैठी हैं। उसी गद्देपर मधुमतीमञ्जरी अपने कन्धेपर वीणाको टेके हुए बजानेकी मुद्रामें बैठी हुई है।

निकुञ्जके पश्चिम एवं उत्तरकी ओर दीवारके सहारे एक छोटी चौकी है, जिसपर दो सोनेकी परातें रखी हुई हैं। एक परातमें पके हुए केले हैं तथा दूसरी परातमें केलेके पत्तेपर मोटी-मोटी फूलोंकी मालाएँ रखी हुई हैं। उसी चौकीपर जलसे भरी हुई सोनेकी बड़ी झारी एवं सोनेके अत्यन्त सुन्दर कुछ गिलास भी हैं। निकुञ्ज केलेकी भीनी-भीनी गन्धसे सुवासित हो रहा है। राधारानीके सिरके पास, पर पीठकी ओर विशाखा बैठी हुई हैं और उत्तरकी ओर मुख किये पंखा झल रही हैं। वह सुन्दर पंखा खसका बना हुआ है और उसमें कमलकी पंखुड़ियोंको सुन्दर ढंगसे पिरो दिया गया है।

राधारानी कभी आँखें खोलती हैं, कभी बन्द कर लेती हैं। जब खोलती हैं तो एक बार उत्तरकी ओर देख लेती हैं कि श्रीकृष्ण आ रहे हैं या नहीं। अब ललिता मधुमतीमञ्जरीको संकेत करती हैं। मधुमतीमञ्जरी अत्यन्त मधुर स्वरमें वीणाको बजाती हुई गाने लगती है:

कोई दिलवर को हमार बुलाय दे रे।

लोचन कंज कुटिल भृकुटि कर कारस कथा सुनाय दे रे॥

जाके रंग रंग्यो सब तन मन ताकी झलक दिखाय दे रे।

'नर्तनकिसोरी' मेरो वाको चित को साँट मिलाय दे रे॥

ENGLISH TRANSLATION

May Śrī Priyā and Her Beloved be victorious!

The Foot-Massage Līlā

In the sovereign bower, the Queen of that abode rests upon a flower bed, listening to a melody sung in a tender voice. Lalitā sits massaging Her feet, while the Beloved gazes with yearning eyes. He falls at the sakhī's feet and pleads again and again for His cherished desire. Lalitā takes pity upon the Beloved and, smiling, grants Him an opportunity. Mohana comes and massages Her feet while the Princess appears not to know. The Beloved instructs the sakhī, then draws a cloth over Her face. The sakhī plays the vīṇā and sings, delight arising through a graceful melody. As she sings, the Queen at last recognizes the Enchanter of the connoisseur's heart. The sovereign of Vyāsa, the Queen of Śrī Vṛndāvana, rises and sits upright.

Śrī Rādhārāṇī waits for Śrī Kṛṣṇa in Indulekhā's grove. The bower is fashioned from banana leaves. Banana trees naturally grow close together there, their trunks serving as pillars. Their tender leaves have been interwoven so that the place resembles a temple made entirely of banana foliage. The leaves form its walls, while others have been beautifully shaped into a dome at the center. Two doors to the north and south are adorned with roses, as are the windows to the east and west.

The interior is ten yards across. At its center stands a most artfully fashioned bed. Sandalwood legs and rails form its frame, which is woven with fine yet sturdy silk threads, leaving openings about a finger's breadth apart. Freshly opened lotuses have been threaded into the openings so that the bed appears spread with a coverlet of blossoming lotuses. Its legs and rails too are adorned with lotuses, and it seems to be a bed made wholly of those flowers. Its head lies toward the south, where a lotus pillow rests. Rādhārāṇī reclines on Her left side upon this flower bed, Her head toward the south and Her feet toward the north.

Lalitā sits at Rādhārāṇī's feet with her own legs hanging from the bed. The Queen's feet rest in her lap as she massages them gently. Lalitā faces due west. Two cubits farther west, near the head of the bed, lies a cushion of lotuses upon which several sakhīs sit. Madhumatīmañjarī is seated there in readiness to play, her vīṇā resting against her shoulder.

Against the western and northern walls of the bower stands a small platform bearing two golden trays. One holds ripe bananas; the other holds thick flower garlands laid upon banana leaves. A large golden ewer filled with water and several exquisite golden cups also rest there. The bower is fragrant with the delicate scent of banana plants. Viśākhā sits behind Rādhārāṇī near Her head, faces north, and fans Her. The lovely fan is made of fragrant khus grass with lotus petals artfully woven into it.

Rādhārāṇī now opens Her eyes, now closes them. Whenever She opens them, She glances north to see whether Śrī Kṛṣṇa is coming. Lalitā signals to Madhumatīmañjarī, who begins to play her vīṇā and sing in a supremely sweet voice:

Will someone call my beloved here?

Tell me the captivating tale of His lotus eyes and arching brows.

He has dyed my body and mind in His color; show me one glimpse of Him.

Nartanakisori says: unite my heart in exchange with His.

ORIGINAL Hindi prose

गीत सुनते-सुनते श्रीराधा कुछ व्याकुल-सी हो जाती हैं तथा पलंगपर उठकर बैठ जाती हैं। उनके चरण ललिताकी गोदमें ही रहते हैं। उत्तरकी ओर कुछ देरतक देखकर फिर लेट जाती हैं। विशाखा पंखा चित्राके हाथमें दे देती हैं। चित्रा सिरकी ओर पलंगके पास खड़ी होकर पंखा झलती हैं। विशाखा अपना बायाँ हाथ राधारानीके ललाटपर रखकर और दाहिने हाथमें सुन्दर रूमाल लेकर मोती-जैसे छोटे-छोटे श्रम-बिन्दुओंको पोंछती हैं, जो राधारानीके मुखपर प्रेमके आवेशके कारण निकल आये थे। बहुत धीरेसे कहती हैं, “बस, अब आते ही होंगे।”

श्रीराधा अपने बायें हाथसे विशाखाके दाहिने हाथकी हथेली पकड़ लेती हैं एवं गलेमें जूहीके फूलोंका जो गजरा था, उसमेंसे एक फूल निकालकर उसीसे विशाखाकी हथेलीपर ‘कृष्ण-कृष्ण’ लिखती हैं। फिर उसे अपने ललाटपर रखकर दोनों हाथोंसे दबाकर आँखें मूँद लेती हैं। हाथको दबाये हुए ही बायीं ओर करवट ले लेती हैं।

इसी समय निकुञ्जकी पूर्वी खिड़कीके पास श्यामसुन्दर चुपकेसे आकर खड़े हो जाते हैं। विशाखाकी दृष्टि श्रीकृष्णपर पड़ जाती है, पर श्रीकृष्ण अपने दोनों हाथ जोड़कर, फिर दाहिने हाथकी तर्जनी अँगुलीसे अपना मुँह ढककर विशाखाको संकेत करते हैं कि चुप रहना, कुछ बोलना मत। विशाखा मुस्कुराती हैं, कुछ बोलती नहीं, पर ललिताको धीरेसे संकेत कर देती हैं। ललिता पीछेकी ओर मुँह करके खिड़कीकी ओर देखती हैं तथा श्रीकृष्णको देख लेती हैं। श्रीकृष्ण ललिताको भी कुछ न बोलनेका संकेत करते हैं।

खिड़कीके पाससे ही श्रीकृष्ण हाथोंसे ललिताके चरणोंमें पड़कर प्रार्थना करनेका भाव दिखाते हैं तथा संकेतमें कहते हैं, “चुपकेसे तुम हट जाओ। मैं तुम्हारे स्थानपर बैठकर राधाके चरणोंको दबाने लग जाऊँ। तुमसे यही भिक्षा माँग रहा हूँ।”

ललिता पहले मुस्कुराती हुई दो-तीन बार सिर हिलाकर अस्वीकार करती हैं, पर श्रीकृष्णके बार-बार अत्यन्त प्रेमभरी प्रार्थना करनेपर संकेत करती हैं, “अच्छी बात है, धीरज धरो, वहीं खड़े रहो।”

इसी समय राधारानी आँखें बन्द किये हुए ही मधुमतीमञ्जरीसे कहती हैं, “मधुमती! श्यामसुन्दरकी शोभाका वर्णन कर।”

ENGLISH TRANSLATION

As Śrī Rādhā listens to the song, She grows restless and sits up on the bed, though Her feet remain in Lalitā's lap. She gazes north for some time and then reclines again. Viśākhā gives the fan to Citrā, who stands near the Queen's head and continues fanning. Viśākhā places her left hand upon Rādhārāṇī's brow and uses a beautiful handkerchief in her right to wipe away the tiny, pearl-like beads of perspiration that the force of love has drawn upon Her face. She whispers, "He must be coming now."

With Her left hand Śrī Rādhā takes Viśākhā's right palm. From the garland of jasmine blossoms around Her neck, She plucks one flower and uses it to write "Kṛṣṇa, Kṛṣṇa" upon Viśākhā's palm. Then She places that palm upon Her forehead, presses it there with both hands, and closes Her eyes. Still holding it close, She turns onto Her left side.

At that moment Śyāmasundara quietly appears at the eastern window of the bower. Viśākhā sees Him, but Śrī Kṛṣṇa joins His palms, places the forefinger of His right hand across His mouth, and signals her to remain silent. Viśākhā smiles and says nothing, though she discreetly alerts Lalitā. Turning her face back toward the window, Lalitā sees Śrī Kṛṣṇa. He signals her too not to speak.

Still at the window, Śrī Kṛṣṇa gestures as though falling at Lalitā's feet in supplication. Silently He pleads, "Slip away without a sound. Let Me sit in your place and massage Rādhā's feet. This is the alms I beg of you."

At first Lalitā smiles and refuses two or three times with a shake of her head. Yet when Śrī Kṛṣṇa repeatedly entreats her with the greatest love, she signals, "Very well. Be patient and remain there."

At that moment, without opening Her eyes, Rādhārāṇī tells Madhumatīmañjarī, "Madhumatī, describe the beauty of Śyāmasundara."

ORIGINAL Hindi prose and Braj song

राधारानी एक नीले रूमालसे अपना मुँह ढक लेती हैं और उनकी आज्ञा होते ही मधुमती वीणाके तारोंको छेड़ती हुई गाने लगती है:

मोहन मुखारविंद पर मनमथ कोटिक वारौं री माई।

जहँ जहँ जात दृष्टि परत है तहँ तहँ रहत लुभाई॥

एक निमिषमें इक छवि इक रसना मो पै बरनि न जाई।

गोविंद प्रभु की बानिक ऊपर बलि बलि रसिक चूड़ामनि राई॥

संगीत प्रारम्भ होते ही राधारानी समाधिस्थ-सी हो जाती हैं। ललिता राधारानीके चरणोंको पलंगपर धीरेसे रख देती हैं। फिर उठकर खिड़कीके पास आती हैं तथा श्रीकृष्णसे धीरेसे कहती हैं, "जाओ, चरण दबाओ, पर सावधान रहना। राधारानी जानने नहीं पावें कि मेरे स्थानपर तुम आ गये हो।"

श्रीकृष्ण बड़े प्रेमसे ललिताका दाहिना हाथ पकड़कर कृतज्ञता प्रकट करते हैं। फिर धीरे-धीरे उत्तरी द्वारसे जाकर राधारानीके चरणोंके पास बैठ जाते हैं तथा धीरेसे उनके चरणोंको अपनी गोदमें रखकर दबाने लगते हैं। इधर मधुमतीमञ्जरी अत्यन्त सुन्दर स्वरमें श्रीकृष्णके मुखारविन्दको देखती हुई गा रही है। कुछ देरतक वह बार-बार इस पदको दुहराती रहती है तथा श्रीकृष्ण अत्यन्त प्रेमसे श्रीराधारानीके चरण दबाते रहते हैं।

ENGLISH TRANSLATION

Rādhārāṇī covers Her face with a blue handkerchief. At Her command Madhumatī plucks the strings of her vīṇā and begins to sing:

O mother, I would sacrifice millions of Cupids before Mohana's lotus face.

Wherever my gaze may fall, His beauty remains there, enchanting me.

Not even one tongue could describe a single instant of that beauty.

Govinda Prabhu says: again and again Rāī, the crown jewel of connoisseurs, gives Herself to the Beloved's graceful speech.

As soon as the music begins, Rādhārāṇī becomes as though absorbed in samādhi. Lalitā gently places Her feet upon the bed, rises, and goes to the window. Softly she tells Śrī Kṛṣṇa, "Go and massage Her feet, but take care. Rādhārāṇī must not discover that You have taken my place."

With great affection Śrī Kṛṣṇa takes Lalitā's right hand and expresses His gratitude. He then quietly enters through the northern door, sits near Rādhārāṇī's feet, lifts them gently into His lap, and begins to massage them. Madhumatīmañjarī continues singing in an exquisitely beautiful voice while gazing upon Śrī Kṛṣṇa's lotus face. She repeats the verse for some time, while Śrī Kṛṣṇa keeps massaging Śrī Rādhārāṇī's feet with intense love.

ORIGINAL

Hindi prose and Braj refrain

जब पद समाप्त होने लगता है तो श्रीकृष्ण उसी स्वरमें आरम्भ करते हैं, "राधा मुखारविंद पर काम सत कोटिक वारौं री माई।" श्रीकृष्ण गाते हैं तो राधारानी चौंककर आँखें खोल देती हैं। देखती हैं कि मेरे पैर श्रीकृष्णकी गोदमें हैं। यह देखते ही वे घबरायी-सी होकर चरणोंको समेटती हुई उठकर पलंगपर बैठ जाती हैं तथा श्रीकृष्णका कन्धा पकड़कर हँसने लगती हैं। श्रीकृष्ण भी खिलखिलाकर हँसते हुए उसी फूलोंकी शय्यापर लेट जाते हैं। सखियोंमें आनन्दकी बाढ़ आ जाती है।

श्रीराधारानी पलंगसे नीचे उतर पड़ती हैं। वे उत्तर एवं पूर्वकी ओर अपना मुँह करके, पलंगपर हाथोंको टेककर, श्रीकृष्णके मुखके पास सरककर और दाहिने हाथसे उनकी चोटी पकड़कर कुछ सकुचाये स्वरमें मुस्कुराकर कहती हैं, "कितने वेतनके लालचमें यह सेवा हुई है?"

श्रीकृष्ण मुस्कुराते हुए उठकर बैठ जाते हैं तथा श्रीप्रियाके अञ्चलसे अपने मुखका पसीना पोंछते हुए कहते हैं, "वेतनकी बात ललिता जानती है, उससे पूछ लेना।"

श्रीकृष्ण यह कहकर दक्षिणकी ओर सिर रखकर भली प्रकारसे पलंगपर लेट जाते हैं। राधारानी उसी पलंगपर श्रीकृष्णके समीप अपने चरण लटकाकर बैठ जाती हैं। श्रीकृष्णके बायें हाथको अपने बायें हाथसे पकड़ लेती हैं तथा चित्राके हाथसे फूलोंसे बने हुए पंखेको अपने दाहिने हाथमें लेकर श्रीकृष्णके मुखपर झलने लगती हैं। सखियाँ सेवा-कार्यमें लग जाती हैं।

ENGLISH TRANSLATION

As the song approaches its end, Śrī Kṛṣṇa takes up the same melody: "O mother, I would sacrifice hundreds of millions of Cupids before Rādhā's lotus face." The sound of His singing startles Rādhārāṇī into opening Her eyes. She sees Her feet resting in Śrī Kṛṣṇa's lap. Flustered, She draws them back, sits upright upon the bed, grasps His shoulder, and begins to laugh. Śrī Kṛṣṇa too bursts into laughter and reclines upon the flower bed. A flood of joy rises among the sakhīs.

Śrī Rādhārāṇī steps down from the bed. Facing north and east, She braces Her hands upon it, draws close to Śrī Kṛṣṇa's face, and catches His topknot in Her right hand. Smiling with a trace of shyness, She asks, "For the promise of how much payment did You perform this service?"

Śrī Kṛṣṇa smiles and sits up. Wiping the perspiration from His face with the edge of Śrī Priyā's veil, He replies, "Lalitā knows about the payment. Ask her."

Then Śrī Kṛṣṇa lies comfortably upon the bed with His head toward the south. Rādhārāṇī sits near Him on the same bed with Her feet hanging down. She takes His left hand in Her own left hand, receives the flower fan from Citrā with Her right, and begins fanning Śrī Kṛṣṇa's face. The sakhīs take up their services.

CHAPTER 26

वेणु-निनाद लीला

The Sounding of the Flute Līlā

Source scan pages 291–298

ORIGINAL

Sanskrit invocation, Braj verse, and Hindi prose

॥ विजयेतां श्रीप्रियाप्रियतमौ ॥

वेणु-निनाद लीला

रे मन करु नित नित यह ध्यान।

सुन्दर रूप गौर श्यामल छवि जो कहिं होत बखान॥

मुकुट सीस चंद्रिका बनी कनफूल सुकुण्डल कान।

कटि काछिनी सारी पग नूपुर बिछिया अनवट जान॥

कर कंकन चूरी दोउ भुज पै बाजु सोभा देत।

केसर खोर बिंदु सेंदुर को देखत मन हरि लेत॥

मुख पै अलक पीठ पै बेनी नागिनि सी लहरात।

चटकीले पट निकट मनोहर नील पीत फहरात॥

मधुर मधुर अधरन बंसी धुनि तैसी ही मुसकानि।

दोउ नैनन रस भीनी चितवनि परम दया को खान॥

ऐसो अद्भुत भेष बिलोकत चकित होत सब ज्ञान।

हरीचंद बिनु जुगुत कृपा यह लह्यो कौन पै जाय॥

श्रीप्रिया-प्रियतम श्रीरङ्गदेवीके कुञ्जमें एक फब्बारेकी सीढ़ीपर पैर लटकाये हुए विराजमान हैं। फब्बारा लगभग आठ हाथ ऊँचा है। वह अत्यन्त चमकते हुए किसी तेजस् धातुका बना है। फब्बारेके ऊपरका हंस भी इसी तेजस् धातुका बना हुआ है। उस हंसके मुँहमें डण्ठीसहित जो कमल है, उसमें डण्ठीका भाग हरे पत्थरका एवं फूल लाल पत्थरका बना है। हंसके फैले हुए पंखोंमें महीन छिद्र हैं, जिनसे जल निकल-निकलकर कुण्डमें गिर रहा है। उस हंसको देखकर ऐसा प्रतीत होता है मानो सचमुच कोई सजीव हंस डण्ठीसहित कमल मुँहमें लेकर फब्बारेपर बैठकर स्नान कर रहा हो।

फब्बारेके चारों ओर निर्मल जलका एक गोलाकार कुण्ड है। फब्बारेसे सब ओर अन्तिम छोरतककी दूरी आठ-आठ गज है। कुण्डका छोर चारों ओरसे उजले रंगके अत्यन्त चमकीले संगमरमर पत्थरका बना है। वह इतना चमकदार है कि खड़े होते ही उसपर दर्पणकी भाँति प्रतिबिम्ब पड़ने लगता है। कुण्डकी चारों दिशाओंमें जलमें उतरनेके लिये सीढ़ियाँ बनी हुई हैं। जल गिरनेके कारण केवल तीन सीढ़ियाँ जलके ऊपर हैं, शेष जलके भीतर। कुण्डके दक्षिणकी ओरकी सीढ़ियोंपर श्रीप्रिया-प्रियतम पहली सीढ़ीपर पैर लटकाये उत्तरकी ओर मुख किये विराजमान हैं।

> उस सुन्दर कुण्डका जल अत्यन्त निर्मल है और सूर्यकी रश्मियोंमें चमचमा रहा है। कुण्डके जलपर कुछ अन्तरसे कमलके चौड़े-चौड़े पत्ते फैले हैं, जिनपर लाल, उजले एवं नीले कमल खिल रहे हैं। कमलके पुष्पोंपर गुनगुनाते हुए भौंरे मँडरा रहे हैं। कुण्डके चारों ओर पीले चमकीले पत्थरकी गोलाकार पाँच हाथ चौड़ी पच्ची है। उसके चारों ओर दस हाथतक हरी दूबसे भरी भूमि है, जिसे देखकर लगता है मानो हरे रंगका मखमल बिछा हो। फिर चारों ओर गोलाकार मेंहदीकी झाड़ियाँ लगी हैं। चारों दिशाओंमें एक-एक अत्यन्त सुन्दर मेहराबदार द्वार है, जिससे होकर श्रीप्रिया-प्रियतम फब्बारेके पास आया करते हैं। प्रत्येक द्वारके दोनों किनारोंपर दो छोटे-छोटे अशोक-वृक्ष हैं और प्रत्येक दो द्वारोंके बीचमें एक अत्यन्त सुन्दर विशाल आम्र-वृक्ष है।

ENGLISH TRANSLATION

May Śrī Priyā and Her Beloved be victorious!

The Flute-Resonance Līlā

O mind, meditate on this forever: that beautiful fair and dark Pair, whose splendor none can describe. A crown rests upon His head and a moon-shaped ornament upon Hers; blossoms and lovely earrings adorn Their ears. A tucked dhotī and sari encircle Their waists, while anklets, toe rings, and anavaṭ ornaments grace Their feet. Bracelets and bangles shine upon Their hands, and armlets adorn both Their arms. The sight of His saffron tilaka and Her vermilion dot steals away the mind. Curls frame His face, while Her braid ripples down Her back like a serpent. Near one another, Their brilliant blue and yellow garments flutter. Sweet is the flute at His lips, and equally sweet Their smiles. Their two pairs of eyes cast nectar-saturated glances, treasure houses of supreme compassion. All understanding stands amazed before such wondrous attire. Harīcanda says: without causeless grace, upon whom could such a vision ever descend?

Śrī Priyā and Her Beloved sit in Raṅgadevī's grove upon the steps of a fountain, Their feet hanging down. The fountain rises about eight cubits and is made from some brilliantly shining metal. The swan upon it is fashioned from the same radiant substance. It holds a lotus by its stem in its beak; the stem is green stone and the blossom red stone. Fine openings pierce the swan's outspread wings, and water streams from them into the pool. It looks as though a living swan were truly bathing atop the fountain while holding a long-stemmed lotus in its beak.

A circular pool of limpid water surrounds the fountain, extending eight yards from it in every direction. Its rim is made of white marble so highly polished that anyone standing there is reflected as in a mirror. Steps descend into the water on all four sides. Because of the water level, only three steps remain above the surface, while the others are submerged. On the southern steps Śrī Priyā and Her Beloved sit facing north, Their feet dangling from the first step.

The water is utterly clear and sparkles in the sun. Broad lotus leaves spread at intervals across it, bearing red, white, and blue blossoms around which bees hum and hover. A circular pavement of shining yellow stone, five cubits wide, surrounds the pool. Beyond it extends ten cubits of grass so green that it resembles emerald velvet. A ring of henna shrubs encircles the grass. In each cardinal direction stands a beautiful arched gate through which Śrī Priyā and Her Beloved approach the fountain. Two small aśoka trees flank every gate, and between each pair of gates rises a magnificent mango tree.

ORIGINAL Hindi prose

आम्र-वृक्षोंपर बैठी हुई कोयल कुहू-कुहू रट रही है। चारों आम्र-वृक्ष पीले-पीले बड़े-बड़े फलोंसे लदे हैं, जिनमें कई फलोंपर बैठकर तोते छिद्र बना रहे हैं।

श्रीश्यामसुन्दरकी बायीं ओर श्रीराधा विराजमान हैं। श्रीप्रिया अपना दाहिना हाथ प्यारे श्यामसुन्दरके बायें कन्धेपर रखे हुए हैं। दोनोंकी झाँकी सर्वथा अनुपम है। श्रीप्रियाके गोरे गातपर नीले रंगकी साड़ी शोभा पा रही है। प्यारे श्यामसुन्दर पीली धोती बाँधे हुए हैं एवं उनके दोनों कन्धोंपरसे होती हुई पीली चादर सामनेकी ओर लटक रही है। चादरका दाहिने कन्धेसे लटकता एक छोर कुण्डकी सीढ़ीपर पड़ा है। प्यारे श्यामसुन्दरके सिरपर फूलोंका मुकुट शोभा पा रहा है। उसमें जूहीके फूलोंकी मात्रा अधिक है तथा बीच-बीचमें लाल और पीले रंगके छोटे-छोटे वन्य पुष्प पिरोये हैं। मुकुटके बीच अत्यन्त सुन्दर ढंगसे छोटा-सा मयूर-पिच्छ खोंसा है।

श्रीप्रियाके सिरपर फूलोंकी बनी हुई अत्यन्त सुन्दर चन्द्रिका है। उसमें जूहीकी लड़ियाँ अर्धचन्द्राकार रूपमें लटका दी गयी हैं, जो श्रीप्रियाके ललाटपर झूल रही हैं। श्रीश्यामसुन्दरके ललाटपर केसरकी खोर लगी है एवं श्रीप्रियाके ललाटपर गोल सिन्दूर-बिन्दु शोभा पा रहा है। श्यामसुन्दरके दोनों कपोलोंपर अलकावलीकी दो लटें झूल रही हैं तथा श्रीप्रियाकी चन्द्रिकाके कुछ नीचे सँवारी हुई केशराशि किंचित् दीख रही है। श्रीप्रियाकी माँगके दोनों ओर केशराशि ललाटके पास कुछ झुकाकर सँवारी गयी है। प्यारे श्यामसुन्दरकी अलकावली भी आज भ्रूभागकी ओर कुछ झुकाकर सँवारी गयी है। इस प्रकार चन्द्रिका एवं मुकुटके नीचेसे सँवारे हुए केश दीख रहे हैं।

श्रीश्यामसुन्दरके दोनों कानोंके नीचेके छिद्रमें चम्पाके फूल खोंसे हैं तथा उन्हींसे सटाकर मल्लिका-पुष्पोंसे निर्मित अत्यन्त सुन्दर मकराकृत कुण्डल सजा दिये गये हैं। श्रीप्रियाके कानमें मल्लिका-पुष्पोंका बना हुआ कर्णफूल शोभा पा रहा है। श्रीश्यामसुन्दरके अत्यन्त सुन्दर नेत्र कोरोंमें किंचित् तिरछे होकर शोभा पा रहे हैं। उन नेत्रोंसे असीम-अनन्त प्रेम, करुणा और आनन्दका अगाध प्रवाह प्रवाहित हो रहा है। श्रीप्रियाकी आँखोंसे भी ममताका झरना झर रहा है।

ENGLISH TRANSLATION

Cuckoos seated in the mango trees repeat their call, "Kuhū, kuhū." All four trees are laden with large yellow fruit, and parrots perch upon several mangoes to peck holes in them.

Śrī Rādhā sits to Śyāmasundara's left with Her right hand upon His left shoulder. The vision of the Pair is incomparable. A blue sari adorns Śrī Priyā's fair body. Her beloved Śyāmasundara wears a yellow dhotī, and a yellow shawl passes over both shoulders to hang before Him. One end falling from His right shoulder rests upon the pool steps. A floral crown adorns His head. Most of its blossoms are jasmine, interwoven here and there with small red and yellow forest flowers. A little peacock feather is exquisitely tucked at its center.

Upon Śrī Priyā's head rests a beautiful floral candrikā. Strands of jasmine hang from it in crescent shapes and sway upon Her brow. Śyāmasundara's forehead bears a saffron tilaka, while a round vermilion dot adorns Śrī Priyā's. Two locks curl over His cheeks. Just below Her candrikā, a little of Her carefully arranged hair can be seen. The hair on either side of Her central part has been dressed to curve gently toward Her forehead, and today Śyāmasundara's curls have likewise been arranged to bend toward His brows. Their coiffed hair is thus visible beneath Her candrikā and His crown.

Campaka blossoms are tucked into piercings below both Śyāmasundara's ears, beside which lovely makara-shaped earrings of jasmine flowers have been arranged. Floral ear ornaments of jasmine adorn Śrī Priyā. Śyāmasundara's supremely beautiful eyes curve slightly at the corners. From them streams an unfathomable current of boundless love, compassion, and joy. A fountain of tender affection pours from Śrī Priyā's eyes as well.

ORIGINAL Hindi prose

यद्यपि श्रीप्रियाकी दृष्टि फब्बारेके कुण्डमें तैरती हुई हंसिनीकी ओर है, पर वे क्षण-क्षणमें प्यारे श्यामसुन्दरके मुखारविन्दकी ओर देख लेती हैं। प्रायः प्रियतम श्यामसुन्दरसे दृष्टि मिल जाती है और प्रियाके मुखारविन्दपर बार-बार लज्जाकी छाया उभर आती है। उस लज्जाको छिपानेके लिये वे मुखारविन्दको हिलाकर पश्चिमकी ओर एक क्षणके लिये घुमा लेती हैं, पर दूसरे ही क्षण श्रीश्यामसुन्दरकी शोभा निहारनेकी ललक अनन्तगुनी बढ़ जाती है और श्रीप्रिया बरबस उस ओर मुड़ पड़ती हैं।

श्रीश्यामसुन्दरके हलके नीले रंगके तथा श्रीप्रियाके दप-दप करते हुए सुवर्ण रंगके कपोलोंपर ऐसी मधुर अरुणिमा दीख पड़ती है मानो किसी अनिर्वचनीय सुन्दर जातिके पराग-पुष्प कपोलोंके अन्तरालमें अभी-अभी विकसित हुए हों एवं उन्हींकी अरुणिमा वहाँ चमचमा रही हो। श्रीश्यामसुन्दरके ताम्बूलरञ्जित अधरोंपर वंशी सुशोभित है एवं श्रीप्रियाके मुखारविन्दपर मन्द-मन्द मुस्कान। श्रीप्रिया मानो मुस्कुरा-मुस्कुराकर वंशीसे संकेत कर रही हैं, “वंशिके! प्यारे प्रियतम श्यामसुन्दरके होठोंपर बैठी हुई तू मुझे बहुत नचा चुकी है। अब सुन, प्यारे श्यामसुन्दरके सहित तू बन्दी बना ली गयी है। एक बार मेरे हृदयके अन्तरालमें देख। अभी चारों ओरके कपाट बन्द हैं। तू अभी मेरी इच्छासे ही बाहर आयी है। इच्छा करते ही मैं द्वार बन्द कर लूँगी और फिर तुझे मेरे हृदयमें ही आ जाना पड़ेगा।”

श्रीश्यामसुन्दरकी ग्रीवाकी दोनों ओर तथा पीठपर अलकावलीके गुच्छे लटक रहे हैं। श्रीप्रियाकी नीली साड़ीके अन्तरालमें वेणी लहरा रही है। रह-रहकर श्रीप्रियाका जड़-जङ्गम शरीर प्रेमसे तरंगित होने लगता है, जिससे सिरका अञ्चल खिसककर पीठपर आ जाता है। उस समय वेणीका ऊपरी भाग किंचित् हिलता हुआ स्पष्ट दीखने लगता है। रानीके पीछे चित्रा खड़ी हैं। वे बार-बार अञ्चलको यथास्थान ठीक करती जा रही हैं। प्यारे श्यामसुन्दरके गलेमें जूही-पुष्पोंका मोटा गजरा लटक रहा है, जिसके बीच-बीचमें हरी तुलसीकी पत्तियाँ पिरोयी हैं। श्रीप्रियाके गलेमें भी जूही-पुष्पोंका गजरा है। श्रीश्यामसुन्दरका गजरा पूर्णतः सीधा घुटनोंतक लटक रहा है, पर श्रीप्रियाका गजरा किंचित् तिरछा होकर श्यामसुन्दरकी लायक प्यास उनकी ओर मुड़ा हुआ लटक रहा है।

ENGLISH TRANSLATION

Although Śrī Priyā gazes upon a swan swimming in the fountain pool, every moment She steals a glance at Her beloved Śyāmasundara's lotus face. Often Their eyes meet, and the shadow of shyness repeatedly rises across Her face. To conceal it She turns Her face westward for an instant, yet in the next moment Her yearning to behold Śyāmasundara increases without limit and irresistibly draws Her gaze back to Him.

A tender flush glows upon Śyāmasundara's pale-blue cheeks and Śrī Priyā's radiant golden ones, as though ineffably lovely blossoms filled with pollen had just opened within them and cast their rosy color outward. The flute rests upon Śyāmasundara's betel-reddened lips, while a gentle smile plays upon Śrī Priyā's lotus face. Through that smile She seems to signal the flute, "O flute, seated upon the lips of My beloved Śyāmasundara, you have made Me dance long enough. Listen now: together with My beloved, you have been taken captive. Look once within the recesses of My heart. All its doors are presently closed. You emerged only by My will. The moment I desire, I shall close those doors again, and you will have to return within My heart."

Clusters of curls fall on both sides of Śyāmasundara's neck and across His back. Śrī Priyā's braid ripples within the folds of Her blue sari. Again and again Her whole being surges with love, causing the veil upon Her head to slip down Her back. The upper part of Her braid then becomes clearly visible, gently swaying. Citrā stands behind the Queen and repeatedly restores the veil to its proper place. A thick garland of jasmine hangs from Śyāmasundara's neck, with fresh green tulasī leaves threaded between its flowers. A jasmine garland also adorns Śrī Priyā. His hangs perfectly straight to His knees, but Hers inclines slightly toward Śyāmasundara, as though thirsting to reach Him.

ORIGINAL Hindi prose

श्रीश्यामसुन्दरकी दोनों कलाइयोंमें अत्यन्त सुगन्धित छोटे-छोटे पीले पुष्पोंके बने सुन्दर कङ्कण शोभा पा रहे हैं। श्रीप्रियाकी कलाइयोंमें आगे-पीछे फूलोंके बने दो आभूषण हैं। उन दोनोंके बीच किसी तेजस् धातुकी नीले रंगकी सुन्दर चूड़ियाँ हैं, जिनमें पुष्पोंकी लड़ियाँ इस प्रकार पिरोयी गयी हैं कि चूड़ियोंका नीला रंग बीच-बीचमें दीखता तो है, पर लगता है मानो पीले फूलोंमें नीले फूल पिरोकर ही चूड़ियाँ बनायी गयी हों। प्रिया-प्रियतमकी केहुनीके पास बाँहके भागमें फूलोंके बने अत्यन्त विचित्र आभूषण शोभा पा रहे हैं। श्यामसुन्दरकी कटिमें धोतीकी फेंट कसी हुई है तथा प्रियाकी नीली साड़ीका अञ्चल कन्धेपरसे झूलता हुआ कटिके पास लटक रहा है। श्रीप्रिया उसे कटिमें अटकानेके उद्देश्यसे बार-बार दबा देती हैं, पर वह रह-रहकर हिल जाता है और वहाँसे अञ्चलका छोर हटते ही सिरपरसे भी खिसक जाता है। चित्रा उसे फिर सँभालती हैं, पर वह फिर खिसक जाता है। ऐसा होनेपर श्यामसुन्दर वंशीको होठोंसे हटाकर निर्मल-विशुद्ध हँसी हँस देते हैं। चित्रा भी हँस देती हैं। तब श्रीप्रिया सरल बालिकाकी भाँति निर्मलतम मधुर स्वरमें कई बार पूछ बैठती हैं, “री! हँसती क्यों है?”

श्यामसुन्दरके पगका नूपुर भी चारों ओरसे पीले रंगके फूलोंसे ऐसा सजाया गया है मानो फूलोंका ही नूपुर हो। श्रीप्रियाकी बिछिया भी वैसे ही फूलोंसे सजी है। इसके अतिरिक्त एड़ी एवं पिंडलीके ऊपर गाँठके पास फूलोंकी लड़ियोंके कुछ ऐसे विचित्र आभूषण बनाये गये हैं कि उस कलात्मकताको उपमा देना सर्वथा असम्भव है।

श्रीप्रिया-प्रियतमके पीछे कुछ मञ्जरियाँ अत्यन्त सुन्दर आमोंको छीलकर उनके खण्ड एक बड़ी परातमें रख रही हैं तथा कुछ मञ्जरियाँ इन स्वर्णाभ खण्डोंको स्वर्ण-पात्रोंमें सजाती जा रही हैं। श्रीप्रिया-प्रियतमके सामने कुण्डकी सीढ़ीपर ललिता एवं विशाखा दूसरी सीढ़ीपर पैर टेके हुए बैठी हैं। उनकी दृष्टि इन दोनोंकी ओर है, इसलिये वे आधी लेटी हुई अवस्थामें बैठी हैं। रङ्गदेवी सबसे नीचेवाली सीढ़ीपर बैठी हैं तथा बायें हाथकी केहुनी ललिताकी जाँघोंपर टिकाये हुए एवं उसी हाथकी हथेलीपर अपना बायाँ कपोल रखे हुए श्रीप्रिया-प्रियतमकी शोभा निहार रही हैं।

ENGLISH TRANSLATION

Beautiful bracelets of tiny fragrant yellow flowers adorn both Śyāmasundara's wrists. Floral ornaments encircle Śrī Priyā's wrists at front and back. Between them are lovely blue bangles of some radiant metal, threaded with garlands of flowers so that the blue appears only at intervals. They seem to have been formed by weaving blue blossoms among yellow ones. Strange and exquisite floral armlets adorn the Pair near Their elbows. Śyāmasundara's dhotī is tightly tucked at His waist, while the end of Śrī Priyā's blue sari falls from Her shoulder toward Her hip. She repeatedly presses it there to secure it, but it keeps moving; as soon as its end slips from Her waist, the veil slips from Her head as well. Citrā restores it, only for it to fall again. Śyāmasundara removes the flute from His lips and laughs with pure, unclouded delight. Citrā laughs too. Like an innocent little girl, Śrī Priyā repeatedly asks in the sweetest and purest voice, "Why are you laughing?"

Even Śyāmasundara's anklets have been adorned all around with yellow flowers so that they appear made entirely of blossoms. Śrī Priyā's toe rings are decorated in the same way. In addition, floral strands form such extraordinary ornaments around Her heels and near the joints above Her ankles that no comparison could adequately convey their artistry.

Behind Śrī Priyā and Her Beloved, several mañjarīs peel beautiful mangoes and place the pieces upon a large tray, while others arrange the golden slices in golden vessels. Before the Pair, Lalitā and Viśākhā sit upon the pool steps with their feet resting on the second step. Because their gaze is fixed upon Them, they sit almost reclining. Raṅgadevī sits upon the lowest step. Resting her left elbow upon Lalitā's thighs and her left cheek upon that palm, she beholds the beauty of Śrī Priyā and Her Beloved.

ORIGINAL Hindi prose

श्यामसुन्दर रह-रहकर वंशीमें कुछ क्षणोंके लिये फूँक भर देते हैं तथा उतने क्षणके लिये एक सुरीली तान समस्त कुञ्जको निनादित कर देती है। वंशीसे स्वर निकलते ही कुण्डके जलमें बड़े-बड़े बुलबुले उठते हैं तथा स्वर बन्द होते ही बुलबुले शान्त हो जाते हैं। ऐसा कई बार देखकर श्रीप्रिया सरल बालिकाकी तरह खिलखिलाकर हँस पड़ती हैं। सखियाँ भी हँस पड़ती हैं। श्रीप्रिया बड़े मधुर स्वरमें श्रीश्यामसुन्दरके कन्धेको हिलाकर कहती हैं, “बजा दो न!”

श्यामसुन्दर मुस्कुराकर अत्यन्त प्यारभरे स्वरमें कहते हैं, “तू कहे सो बजा दूँ।”

श्रीप्रिया अत्यन्त प्यारभरी मुद्रामें अपने नयनोंकी पुतलियोंको कोरोंमें नचा देती हैं तथा प्यारे श्यामसुन्दरके बायें कन्धेपर दोनों हाथ रखकर बलपूर्वक दबा देती हैं। श्यामसुन्दर अत्यन्त प्यारभरी दृष्टिसे श्रीप्रियाकी ओर देखकर कहते हैं, “नहीं प्रिये! स्पष्ट बताये बिना मैं कैसे समझूँगा? तू बता दे, मैं अभी बजा देता हूँ।”

इस बार श्रीप्रिया उनके कन्धेको अत्यन्त प्यारसे धीरे-धीरे दबाकर उन्हें अपनी ओर झुका लेती हैं तथा कानमें कुछ कहकर शीघ्र ही अपना मुखारविन्द ललिताकी ओर करके निर्मल हँसी हँसने लगती हैं। श्यामसुन्दर कहते हैं, “ठीक है, पर प्रिये! इतनी छूट दे दे कि मैं जो गीत चाहूँ, वह गाऊँ।”

श्रीप्रिया पहले कुछ सकुचा जाती हैं, पर फिर सावधान होकर लज्जामिश्रित स्वरमें कहती हैं, “अच्छी बात है, वही सही!” श्रीश्यामसुन्दरके मुखारविन्दपर प्रसन्नताकी धारा-सी बहने लगती है।

बात यह हुई थी कि श्रीप्रिया-प्रियतमकी शोभा निहारते-निहारते रङ्गदेवी प्रेममें अधिकाधिक विभोर होती जा रही थीं। श्यामसुन्दर बार-बार वंशीमें सुर भरते थे और कुण्डके जलमें बुलबुले उठने लगते थे। रङ्गदेवीकी दृष्टि एक बार बुलबुलोंकी ओर गयी। उन्होंने सोचा, “ओह! कुञ्जका अणु-अणु प्यारे श्यामसुन्दरके अनुरागमें नाच रहा है। ये जलकण भी उनका स्पर्श चाह रहे हैं। प्यारेसे कहूँ कि झुककर अपने चरण बढ़ा दें? नहीं, प्यारे श्यामसुन्दरको नहीं उठाऊँगी। तब क्या करूँ? अच्छा, ये जलकण ही उठकर प्यारेके पास जा पहुँचें।”

रङ्गदेवी यह सोचती हुई प्रेममें अधिकाधिक विभोर हो रही थीं। सखियोंका हृदय श्रीप्रियाके हृदयसे सर्वथा जुड़ा होता है, इसलिये रङ्गदेवीकी भावना श्रीप्रियाके हृदयमें प्रतिबिम्बित हो गयी। श्रीप्रियाने प्यारे श्यामसुन्दरको संकेत कर दिया, “प्रियतम! वंशीमें ऐसा सुर भरो कि कुण्डका समस्त जल बढ़कर हम सबको सर्वथा डुबा दे।”

ENGLISH TRANSLATION

From time to time Śyāmasundara breathes into His flute for a few moments, and a melodious strain resounds throughout the grove. The instant a note emerges, great bubbles rise in the pool; as soon as the sound stops, they subside. Seeing this happen repeatedly, Śrī Priyā laughs like an innocent girl, and all the sakhīs join Her. In a sweet voice She shakes Śyāmasundara's shoulder and pleads, "Please play it!"

Śyāmasundara smiles and answers with the greatest affection, "I shall play whatever You tell Me."

With a loving gesture Śrī Priyā turns Her pupils toward the corners of Her eyes, places both hands upon His left shoulder, and presses firmly. Gazing upon Her with intense love, He says, "No, beloved. How shall I understand unless You tell Me clearly? Say it, and I shall play at once."

Śrī Priyā lovingly presses His shoulder and draws Him toward Her. She whispers something into His ear, then quickly turns toward Lalitā and laughs with limpid delight. Śyāmasundara says, "Very well, but beloved, grant Me this much freedom: let Me sing whichever song I choose."

At first Śrī Priyā grows shy. Then, composing Herself, She says in a bashful voice, "Very well, let it be so." A current of joy flows across Śyāmasundara's lotus face.

While beholding the beauty of Śrī Priyā and Her Beloved, Raṅgadevī had been sinking ever deeper into love. Whenever Śyāmasundara filled His flute with sound, bubbles rose in the pool. When Raṅgadevī noticed them, she thought, "Oh, every particle of this grove dances in love for beloved Śyāmasundara. These drops of water too desire His touch. Shall I ask Him to bend down and extend His feet to them? No, I shall not make beloved Śyāmasundara rise. Then what shall I do? Let the drops themselves rise and reach Him."

As Raṅgadevī reflected, she became increasingly overwhelmed with love. The hearts of the sakhīs are wholly united with Śrī Priyā's heart, so Raṅgadevī's feeling appeared reflected within Her. Śrī Priyā signaled to Her beloved, "Beloved, fill the flute with such a note that all the water in the pool rises and utterly submerges us."

ORIGINAL Hindi prose and Braj verse

श्रीप्रियाकी इच्छा ही श्यामसुन्दरकी इच्छा है एवं श्यामसुन्दरकी इच्छा ही श्रीप्रियाकी इच्छा है। यद्यपि श्रीप्रिया समझ जाती हैं कि प्यारे श्यामसुन्दर मेरे सम्बन्धमें ही गीत गायेंगे, पर मेरे प्रियतमको मेरा गुण गानेसे सुख मिलेगा, इसलिये अपने सामने ही अपना गुण गानेके लिये प्यारे श्यामसुन्दरको सम्मति दे देती हैं। अस्तु, श्रीप्रियाकी आज्ञा पाते ही श्यामसुन्दर फूँक भरने लगते हैं तथा अत्यन्त मधुरतम स्वरमें वंशीके छिद्रोंसे यह ध्वनि निकलने लगती है:

माखन को मन दूध सो जोजन है दधि तें अधिके उर ईठी।

जा छवि आगे छपाकर छल समेत सुधा बहुधा सब सीठी॥

नैनन नेह चुवै कवि देव बुलावति बैन बियोग कँगीठी।

ऐसी रसीली अहीरी अहै क्यौं न लगै मन मोहने मीठी॥

ध्वनिके आरम्भ होते ही कुण्डके जलमें बड़े-बड़े बुलबुले उठते हैं। फिर स्वर-लहरीके साथ कुण्डका जल बड़ी शीघ्रतासे बढ़ता तथा तरंगित होने लगता है, मानो स्वर-लहरीके साथ जल नाच रहा हो। जैसे ही वंशीसे यह ध्वनि निकली, “क्यौं न लगै मन मोहने मीठी,” बस, कुण्डका जल अकस्मात् इतना अधिक एवं इतना ऊँचा बढ़ गया कि एक क्षणके लिये मेंहदीके समस्त घेरेमें चारों ओर चार हाथ ऊँचा जल भर गया। श्रीप्रिया-प्रियतम सखियोंके साथ एक क्षणके लिये उसमें बह जाते हैं, फिर दूसरे ही क्षण जल कुण्डकी सीमामें जा पहुँचता है। श्रीप्रिया-प्रियतम एवं सखियोंके सब वस्त्र भीग जाते हैं और सभी आनन्दमें झूमने लगती हैं। कुञ्जके विविध पक्षी वह दृश्य देखकर वृक्षोंकी डालियोंपरसे ही उच्च स्वरसे बोल उठते हैं, “जय हो श्रीप्रिया-प्रियतमकी! जय हो! जय हो!”

ENGLISH TRANSLATION

Śrī Priyā's desire is Śyāmasundara's desire, and Śyāmasundara's desire is Śrī Priyā's. Although She understands that Her beloved will sing only of Her, She knows that praising Her will bring Him joy. Therefore She consents to let Him sing Her virtues before Her very face. Receiving Her command, Śyāmasundara breathes into the flute, and from its openings emerges this song in the sweetest possible tones:

Her heart is like butter, Her being like milk, and within She is sweeter still than curds.

Before Her beauty, even nectar hides away, for all its many charms and cunning are insipid.

Love drips from Her eyes. The poet Deva says that Her speech calls out, while separation burns like a brazier.

Such a relish-filled cowherd maiden is She; why should She not taste sweet to the Enchanter's heart?

As the music begins, great bubbles rise in the pool. Then, following the waves of sound, the water rapidly swells and surges as though dancing with the melody. The instant the flute sings, "Why should She not taste sweet to the Enchanter's heart?" the water suddenly rises so high that for one moment the entire enclosure within the ring of henna shrubs is filled to a depth of four cubits. Śrī Priyā, Her Beloved, and all the sakhīs are swept along in it for an instant. In the next moment the water returns within the pool's bounds. The garments of the Pair and the sakhīs are soaked, and everyone sways in bliss. Seeing the spectacle, the many birds of the grove cry loudly from the tree branches, "All victory to Śrī Priyā and Her Beloved! Victory! Victory!"

CHAPTER 27

झूलन लीला

The Swing Līlā

Source scan pages 299–301

ORIGINAL

Sanskrit invocation

॥ विजयेतां श्रीप्रियाप्रियतमौ ॥

ENGLISH TRANSLATION

May Śrī Priyā and Her Beloved be ever victorious.

ORIGINAL

Braj Bhāṣā song, Gadādhara Bhaṭṭa

झूलत नागरि नागर लाल।

मंद मंद सब सखी झुलावति गावत गीत रसाल॥

फरहराति पट पीत नील के अंचल चंचल चाल।

मनहुं परस्पर उमँगि ध्यानन छबि प्रगट भई तिहि काल॥

सिलसिलाति अति प्रिया सीस ते लटकति बेनी नाल।

जनु पिय मुकुट बरहिं भ्रम बस तहँ व्याली विकल बिहाल॥

मल्ली माल पिया की उरझी पिय तुलसी की माल।

जनु सुरसरि रवि-तनया मिलि के सोभित ललित मराल॥

स्यामल गौर परस्पर प्रति छबि सोभा बिसद बिसाल।

निरखि गदाधर कुँवरि कुँवर को मन पर्यौ रस जंजाल॥

ENGLISH TRANSLATION

The graceful Lady and Her graceful Beloved swing.

All the sakhīs gently sway Them while singing songs filled with nectar.

The ends of Their yellow and blue garments flutter with restless motion.

It is as though, overflowing into one another, the forms cherished in meditation have become manifest at that moment.

Priyā's long braid slips down from Her head and hangs freely.

Mistaking the peacock feather in Her Beloved's crown, the serpent-like braid becomes distraught and terrified.

Priyā's jasmine garland entangles with Her Beloved's garland of tulasī.

It is as though the celestial Gaṅgā has met the Sun's daughter Yamunā, adorned by a lovely line of swans.

Dark and fair, each reflects the other, creating vast and immaculate beauty.

Beholding the Princess and Prince, says Gadādhara, the mind falls into a sweet snare of rasa.

ORIGINAL

निकुञ्जकी हरी-हरी दूबको देखकर ऐसा प्रतीत होता है मानो हरे मखमलका गद्दा बिछाया हुआ है। उसीपर बहुत बड़ा अत्यन्त हरा-भरा कदम्बका पेड़ है। उसकी एक मोटी डाल उत्तरकी ओर फैली हुई है। उसीमें झूला बँधा हुआ है। झूलेको फूलोंसे इस प्रकार सजा दिया गया है कि केवल फूल-ही-फूल दिखायी पड़ रहे हैं।

ENGLISH TRANSLATION

The bower's fresh green dūrvā grass resembles a cushion of green velvet. Upon it stands an immense and luxuriant kadamba tree, with one thick branch extending northward. A swing hangs from that branch, so completely adorned with flowers that nothing but blossoms can be seen.

ORIGINAL

जिस डोरीके सहारे झूला कदम्बसे लटक रहा है, उस डोरीके चारों ओर श्वेत कमल गूँथ दिये जानेसे ऐसा प्रतीत हो रहा है मानो कमलके फूलोंकी डोरीसे झूला लटकाया हुआ है। झूला हंसके आकारका है। उसे भी कमलसे इस प्रकार सजा दिया गया है मानो कमलके फूलोंका एक हंस है और वह कमलके फूलोंकी दो डारियोंपर अपना पंख फैलाकर झूल रहा है।

ENGLISH TRANSLATION

White lotuses are woven around the cords suspending the swing from the kadamba, making it appear to hang from ropes composed entirely of lotus blossoms. The swing is shaped like a swan and covered with lotuses, as though a swan made of those flowers had spread its wings between two flowering branches and begun to sway.

ORIGINAL

उसी कमलके फूलोंवाले हंसकी पीठपर, झूलेके बीचमें, एक हाथ ऊँचा, एक हाथ चौड़ा एवं दो हाथ लम्बा उजले कमलके फूलोंका एक आसन है तथा उसमें सहारा देनेके लिये दोनों ओर हत्थे लगे हुए हैं। पीछे पीठकी ओर भी सहारा देनेके लिये करीब छः अँगुल चौड़ा एवं दो हाथ लम्बा एक डण्डा लगा है। यह भी उजले कमलके फूलोंसे भली प्रकार गुँथा हुआ है। उसे जहाँसे भी देखा जाये, केवल खिले हुए कमलके फूल ही दिखायी देते हैं।

ENGLISH TRANSLATION

Upon the back of this lotus swan, in the middle of the swing, rests a seat of white lotuses one cubit high, one cubit wide, and two cubits long, with a supporting armrest on either side. Behind it is a back support about six fingers wide and two cubits long, likewise densely woven with white lotuses. Viewed from any direction, only fully opened lotus flowers are visible.

ORIGINAL

उसीपर दक्षिणकी ओर श्रीकृष्ण एवं उत्तरकी ओर श्रीराधारानी बैठी हैं। राधारानीका दाहिना हाथ श्रीकृष्णके कन्धेपर है एवं बायाँ हाथ आसनके हत्थेपर। श्रीकृष्ण दोनों हाथोंसे वंशी बजा रहे हैं। सखियोंका एक बहुत बड़ा झुण्ड पूर्वकी ओर तथा एक पश्चिमकी ओर खड़ा है। सखियाँ आनन्दमें डूबी हुई हैं तथा अत्यन्त मधुर स्वरमें गाती हुई झूलेको धीरे-धीरे पूर्वसे पश्चिमकी ओरकी गतिसे झुला रही हैं।

ENGLISH TRANSLATION

Śrī Kṛṣṇa sits upon its southern side and Śrī Rādhārāṇī upon its northern side. Her right hand rests upon His shoulder and Her left upon the armrest. Kṛṣṇa plays the flute with both hands. A great company of sakhīs stands to the east and another to the west. Immersed in bliss and singing in exceedingly sweet voices, they gently swing the Couple east and west.

ORIGINAL

झूला झूलता हुआ जब पूर्वकी ओर आता है तो पूर्वकी ओरकी सखियाँ उसे स्पर्श करके थोड़ा पश्चिमकी ओर ठेल देती हैं तथा जब पश्चिमकी ओर आता है, तब पश्चिमकी ओरकी सखियाँ उसे स्पर्श करके पूर्वकी ओर ठेल देती हैं। पश्चिमकी ओरकी सखियोंको ऐसा प्रतीत हो रहा है कि झूलेका मुँह पश्चिमी ओर है तथा राधारानी एवं श्रीकृष्ण पश्चिमकी ओर मुँह किये हुए बैठे हैं। पूर्वकी ओरकी सखियोंको ऐसा प्रतीत हो रहा है कि श्रीराधा एवं श्रीकृष्ण पूर्वकी ओर मुँह किये बैठे हैं।

ENGLISH TRANSLATION

When the swing comes eastward, the eastern sakhīs touch it and push it gently westward. When it comes westward, the western sakhīs touch it and send it back east. Those in the west experience the swing as facing west, with Rādhārāṇī and Śrī Kṛṣṇa seated facing them. Those in the east experience Śrī Rādhā and Śrī Kṛṣṇa as facing east toward them.

ORIGINAL

झूलेकी गति तो पूर्व-पश्चिमकी है, पर उस समय जो पवन बह रहा है, उसकी गति उत्तरसे दक्षिणकी ओर होनेसे झूलेके पासकी वायुकी गति अनिरूपित हो गयी है। उसी वायुके झकोरेसे श्रीकृष्णके कन्धेपर जो पीताम्बरकी चादर है, उसका एक छोर फर-फर करता हुआ उड़ रहा है एवं श्रीप्रियाका नीला अञ्चल भी फर-फर करता हुआ उड़ रहा है। श्रीकृष्णके दोनों हाथ वंशीके छिद्रपर लगे रहनेके कारण चादर निर्बाध उड़ रही है। प्रिया बार-बार अपने अञ्चलको बायें हाथसे सँभालती हैं; पर उनके सँभालनेपर भी वह फिर उड़ जाता है।

ENGLISH TRANSLATION

The swing moves east and west, while the wind blows from north to south, making the air around it swirl in irregular currents. A gust sends one end of the yellow shawl upon Śrī Kṛṣṇa's shoulder fluttering, while Śrī Priyā's blue veil flutters with it. Since both His hands remain upon the flute's holes, His shawl flies unhindered. Priyā repeatedly steadies Her veil with Her left hand, yet it rises again each time.

ORIGINAL

जब सखियाँ झूलेको बहुत झटकेसे ठेलने लगती हैं, उस समय पीताम्बर एवं नीला अञ्चल, दोनों अत्यधिक फरफराने लगते हैं तथा उस समय ऐसा प्रतीत होता है मानो छबियाँ पीताम्बर एवं नीलाम्बर (नील अञ्चल) के रूपमें प्रकट होकर श्रीकृष्ण एवं श्रीराधाके साथ झूला झूल रही हों। श्यामसुन्दरकी घुँघराली अलकावली वायुके झकोरोंसे हिल रही है।

ENGLISH TRANSLATION

When the sakhīs begin to push the swing forcefully, the yellow shawl and blue veil stream with great vigor. They seem like embodied forms of golden and blue radiance manifesting in those garments and swinging beside Śrī Kṛṣṇa and Śrī Rādhā. Śyāmasundara's curling locks tremble in the gusts.

ORIGINAL

इसी समय वायुके वेगके कारण श्रीप्रियाके सिरसे अञ्चल खिसककर गोदपर आ जाता है। श्रीप्रिया चाहती हैं कि अञ्चलको यथास्थान कर दूँ; पर झूलेका वेग बढ़ जानेके कारण वे गिरनेके भयसे श्यामसुन्दरके बायें कन्धेको दोनों हाथोंसे पकड़ लेती हैं। झूलेकी गतिके साथ अब प्रियाजीकी वेणी भी स्पष्ट रूपसे झूलती हुई दीख रही है।

ENGLISH TRANSLATION

The force of the wind now slips Śrī Priyā's veil from Her head into Her lap. She wishes to restore it, but as the swing gathers speed She fears falling and clasps Śyāmasundara's left shoulder with both hands. Her braid can now be seen clearly swaying with the motion of the swing.

ORIGINAL

उस चञ्चल वेणीको देखकर ऐसा प्रतीत हो रहा है मानो काली नागिन श्रीप्रियाकी पीठपर वहीं पासमें श्यामसुन्दरके मोर-मुकुटको देखकर भ्रम हो रहा हो और वह उसके डरसे व्याकुल होकर श्रीप्रियाकी पीठपर रेंग रही हो। श्यामसुन्दरके मुकुटका मोर-पंख भी वायुमें फर-फर कर रहा है। श्रीप्रियाके द्वारा बायाँ कन्धा पकड़ लिये जानेसे वे बायीं ओर कुछ झुकसे गये हैं।

ENGLISH TRANSLATION

That restless braid resembles a black serpent crawling across Śrī Priyā's back, bewildered upon seeing Śyāmasundara's peacock crown close by and distraught with fear of the bird it mistakes for a great peacock. The crown's peacock feather too flutters in the wind. Because Śrī Priyā clings to His left shoulder, Śyāmasundara leans slightly toward Her.

ORIGINAL

श्रीश्यामसुन्दरके गलेमें तुलसीकी एवं श्रीप्रियाके गलेमें चमेलीके फूलोंकी माला है। इस बार वायुके झोंकेसे उड़कर ये दोनों, तुलसी एवं चमेलीके फूलोंकी, मालाएँ आपसमें उलझ गयी हैं। अब झूलेकी गति और भी तीव्र हो गयी है। इसी समय उन उलझी हुई मालाओंपर श्रीप्रियाके गलेकी मोती-माला आकर उलझ जाती है। इन तीन मालाओंके उलझ जानेसे ऐसी शोभा हो रही है मानो चमेली-फूलकी मालारूपी गङ्गाजीमें तुलसी-मालारूपी यमुनाजी आकर मिली हों तथा मोतीकी माला मानो हंसोंकी पंक्ति हो।

ENGLISH TRANSLATION

A garland of tulasī hangs around Śyāmasundara's neck and a jasmine garland around Śrī Priyā's. A gust now intertwines the two. As the swing moves still faster, Priyā's pearl necklace becomes entangled with them. The union of the three is beautiful beyond measure, as though the Yamunā in the form of the tulasī garland had met the Gaṅgā in the form of the jasmine garland, while the pearl necklace formed a row of swans upon their confluence.

ORIGINAL

इस प्रकार गोरी श्रीराधा एवं श्यामसुन्दरकी छबि हिंडोलेके झकोरेसे प्रतिक्षण नित्य नूतन होती जा रही है।

ENGLISH TRANSLATION

Thus, with every sweep of the swing, the vision of fair Śrī Rādhā and dark Śyāmasundara becomes eternally new at each moment.

CHAPTER 28

नौका-विहार लीला

The Boat Excursion Līlā

Source scan pages 302–308

ORIGINAL

Sanskrit invocation and Hindi prose

॥ विजयेतां श्रीप्रियाप्रियतमौ ॥

नौका-विहार लीला

हंसके आकारकी उजली छः नावें श्रीराधाकुण्डके चमकते हुए जलपर तैर रही हैं। नावके बीचमें नीले रंगकी रेशमी गद्दीसे जड़ा हुआ एक सिंहासन है। वह सिंहासन ऐसा है कि बैठे-ही-बैठे इच्छानुसार पूर्व-पश्चिम, उत्तर-दक्षिण किसी भी दिशाकी ओर उसका मुँह किया जा सकता है। छः नावोंपर सखियाँ चढ़ी हुई हैं। श्रीराधा एवं श्रीकृष्ण भी चढ़े हुए हैं, पर प्रत्येक नावकी सखियोंको यही अनुभव हो रहा है कि मेरी ही नावपर श्रीराधा एवं श्रीकृष्ण चढ़े हुए हैं। नाव टेढ़ी-मेढ़ी घूमती हुई पूर्वकी ओर बह रही है। दो सखियाँ उसकी डाँड़ खे रही हैं।

नावके ऊँचेवाले सिरेके पास श्रीकृष्ण दक्षिणकी ओर मुख किये खड़े हैं। उनके पास ही श्रीप्रिया हाथमें सोनेका कटोरा लिये दक्षिणकी ओर मुख किये खड़ी हैं। राधाकुण्डके पूर्व एवं दक्षिणके कोनेसे कुछ हंस बड़े सुन्दर ढंगसे कलरव करते हुए जलमें तैरती नावोंकी ओर बढ़ रहे हैं। आकाशमें मेघ छाये हुए हैं और झिमझिम करती कुछ वर्षा हो रही है। राधाकुण्डके जलपर पानीकी बूँदें गिरनेसे बुलबुले उठ रहे हैं। राधारानीके निकट रूपमञ्जरी हाथमें सोनेकी बड़ी झारी लटकाये खड़ी है। झारीमें दूध भरा है।

अब हंस नावके पास पहुँच जाते हैं। उनके आते ही श्रीकृष्ण बैठ जाते हैं और राधारानी भी बैठ जाती हैं। रूपमञ्जरी राधारानीके हाथके कटोरेमें दूध भर देती है। राधारानी उसे श्रीकृष्णके हाथमें देकर बायें हाथसे उनका कन्धा पकड़ लेती हैं और दाहिने हाथको नीचे टेककर हंसोंकी ओर देखने लगती हैं। एक हंस आनन्दमें मग्न होकर अपनी चोंच श्रीकृष्णके कटोरेमें डालकर दूध पीता है। एक बार थोड़ा पीकर सिर उठाता और मधुर कलरव करके फिर पीने लगता है। इस प्रकार वह बार-बार थोड़ा-थोड़ा पीकर सिर उठाता है। राधारानी सरल बालिकाकी तरह उसे दूध पीता देखकर बीच-बीचमें खिलखिलाकर हँस पड़ती हैं।

ENGLISH TRANSLATION

May Śrī Priyā and Her Beloved be victorious!

The Boat-Excursion Līlā

Six white boats shaped like swans glide across the shining waters of Śrī Rādhā-kuṇḍa. At the center of each is a throne upholstered in blue silk, ingeniously fashioned so that while remaining seated one can turn it toward east, west, north, or south at will. Sakhīs ride in all six boats. Śrī Rādhā and Śrī Kṛṣṇa are aboard as well, yet the sakhīs in every boat feel that the Divine Pair is riding in their boat alone. One boat winds playfully eastward while two sakhīs work its oars.

Near its raised end Śrī Kṛṣṇa stands facing south. Beside Him stands Śrī Priyā, also facing south, holding a golden bowl. From the southeastern corner of Rādhā-kuṇḍa several swans swim toward the boats, calling beautifully. Clouds fill the sky and a soft drizzle falls. Raindrops striking the surface of the kuṇḍa raise tiny bubbles. Near Rādhārāṇī, Rūpamañjarī stands with a large golden ewer full of milk.

When the swans reach the boat, Śrī Kṛṣṇa sits down and Rādhārāṇī sits beside Him. Rūpamañjarī fills the Queen's bowl with milk. Rādhārāṇī hands it to Śrī Kṛṣṇa, takes His shoulder with Her left hand, braces Her right hand below, and watches the birds. Immersed in delight, a swan dips its beak into Śrī Kṛṣṇa's bowl and drinks. It takes a little, raises its head, calls sweetly, and drinks again. Again and again it sips and lifts its head. Watching like an innocent child, Rādhārāṇī repeatedly bursts into laughter.

ORIGINAL Hindi prose

हंसोंके बारी-बारीसे दूध पीनेके बाद जब हंसिनी पीनेके लिये आती है तो श्रीकृष्ण बायें हाथसे राधारानीके दाहिने कपोलको धीरेसे स्पर्श करके कहते हैं, “अब तू पिला।”

राधारानी कटोरा हाथमें लेकर हंसिनीको संकेत करती हैं, “हंसिनी! इधर आ। मैं तुम्हें प्यारे श्यामसुन्दरके अधरामृतका पान कराती हूँ।” फिर पीछे मुड़कर विशाखाको संकेत करती हैं। विशाखा दूसरे कटोरेमें दूध भरकर राधारानीके हाथोंमें पकड़ा देती हैं। राधारानी पहला कटोरा नावपर रख देती हैं तथा दूसरे कटोरेको श्रीकृष्णके होठोंकी ओर बढ़ाकर कहती हैं, “अब थोड़ा तुम्हें पीना पड़ेगा, नहीं तो मैं झूठी हो जाऊँगी। मैंने हंसिनीको तुम्हारे अधरामृतका प्रसाद पानेके लिये निमन्त्रित किया है।”

श्रीकृष्ण कटोरा पकड़कर पीनेके लिये जैसे ही होठ बढ़ाते हैं, मधुमङ्गल घाटपर आ पहुँचता है और पुकारता है, “अरे कान्हू! ठहरना, ठहरना!” यह कहकर वह छपाकसे पानीमें कूद पड़ता है। श्रीकृष्ण एक नावकी सखियोंको उसे लानेका संकेत करते हैं, पर मधुमङ्गल तीव्र गतिसे तैरता हुआ स्वयं श्रीकृष्णकी नावपर चढ़ जाता है। हँसते हुए कहता है, “तुमने मुझे अच्छा ठगा था, पर मैं ठीक समयपर आ गया। दूधका दौर चल रहा है, पर मेरी बात सुनो, दूध पीना मत। आज षष्ठी है। माँ यशोदा षष्ठी देवीकी पूजा करेंगी और उन्होंने कहा है कि आज पूजा होनेसे पहले श्रीकृष्णको दूध नहीं पीना चाहिये।”

श्रीकृष्ण कटोरा रखकर मन्द-मन्द मुस्कुराते हुए कहते हैं, “राधे! अब तो कैसे पीऊँ?”

विशाखा एक रूमाल उठाती हैं। नावमें रखी एक बड़ी परात बूँदिया-मिठाईसे भरी है। उसमेंसे थोड़ा रूमालमें बाँधकर मधुमङ्गलके हाथमें देती हुई कहती हैं, “मधुमङ्गल! तू ब्राह्मणका लड़का है और शास्त्र पढ़े हैं। तू ही कोई उपाय बता जिससे श्रीकृष्ण दूध पी सकें। वे नहीं पीयेंगे तो हमारी सखी राधारानीकी बात झूठी हो जायेगी। राधाने हंसिनीको श्रीकृष्णके अधरामृत-प्रसादके लिये निमन्त्रित किया है।”

मधुमङ्गल आँखें बन्द करके कुछ क्षण सोचता है, फिर कहता है, “एक उपाय है। स्त्रीके शरीरमें षष्ठी देवीका निवास है। इसलिये यदि राधा पहले पी ले और उसमेंसे फिर श्रीकृष्ण पीयें तो व्रतका नियम नहीं टूटेगा, क्योंकि वह दूध प्रसाद हो जायेगा।”

ENGLISH TRANSLATION

After the swans drink in turn, a female swan approaches. Śrī Kṛṣṇa softly touches Rādhārāṇī's right cheek with His left hand and says, "Now You feed her."

Taking the bowl, Rādhārāṇī beckons, "Come here, dear swan. I shall let you drink the nectar left by My beloved Śyāmasundara's lips." She turns and signals to Viśākhā, who fills another bowl with milk and places it in Her hands. The Queen sets down the first bowl and raises the second toward Śrī Kṛṣṇa's lips. "Now You must drink a little, or I shall be proved false. I have invited this swan to receive the remnants of Your lip nectar."

Just as Śrī Kṛṣṇa takes the bowl and leans forward to drink, Madhumaṅgala arrives at the landing and calls, "Kānhū, wait! Wait!" With a splash he jumps into the water. Śrī Kṛṣṇa signals to the sakhīs in another boat to fetch him, but Madhumaṅgala swims swiftly and climbs directly aboard Śrī Kṛṣṇa's boat. Laughing, he says, "You deceived me nicely, but I arrived in time. Milk is being served, but heed my warning and do not drink. Today is Ṣaṣṭhī. Mother Yaśodā will worship the goddess Ṣaṣṭhī, and she said that Śrī Kṛṣṇa must not drink milk before the worship."

Śrī Kṛṣṇa sets down the bowl and smiles gently. "Rādhe, how can I drink now?"

Viśākhā picks up a handkerchief. A great tray of sweet boondī rests in the boat. She ties some of it in the cloth, places it in Madhumaṅgala's hand, and says, "Madhumaṅgala, you are a brāhmaṇa's son and have studied the scriptures. Tell us some means by which Śrī Kṛṣṇa may drink. If He does not, our friend Rādhārāṇī's words will prove false, for She has invited the swan to receive the remnants of His lip nectar."

Madhumaṅgala closes his eyes and thinks. "There is one way. The goddess Ṣaṣṭhī dwells in a woman's body. If Rādhā drinks first and Śrī Kṛṣṇa drinks after Her from the same milk, the rule of the vow will not be broken, for the milk will have become prasāda."

ORIGINAL Hindi prose

मधुमङ्गलकी बात सुनकर श्रीकृष्ण कहते हैं, “प्रिये! अब लो, यदि तुम्हें हंसिनीको दूध पिलानेकी इच्छा हो तो पहले तुम्हें पीना पड़ेगा। नहीं तो यदि मैं पहले पीऊँगा तो मधुमङ्गल बड़ा पाजी है, मैयासे जाकर कह देगा और मैया अप्रसन्न होंगी।”

राधारानी मुस्कुराती हुई सोचती हैं कि मैं तो अच्छी फँस गयी। इसी समय वर्षा होने लग जाती है और वर्षाका जल दूधके कटोरेमें भी गिरने लगता है। श्रीकृष्ण मुस्कुराकर कहते हैं, “अब देरी मत करो। यदि हंसिनीको दूध पिलाना हो तो स्वयं पी लो, फिर मैं भी पी लूँ। नहीं पिलाना हो तो नाव आगे बढ़ाऊँ।”

हंसिनियोंकी मण्डली उसी समय सिर उठा-उठाकर ऐसी मुद्रा बनाती है मानो राधारानीसे प्रार्थना कर रही हो, “श्रीकृष्णप्रियतमे! हमें अपने दोनोंके अधरामृतका पान कराकर ही नाव आगे बढ़ाना।”

श्रीराधा कुछ सकुचाकर अपना मुँह पश्चिमकी ओर करती हैं और कटोरेके दूधको अपने होठोंसे किंचित् छू देती हैं। छूते ही श्रीकृष्ण कटोरा ले लेते हैं, दो-तीन घूँट पीते हैं और कहते हैं, “बेचारे हंस तो यों ही रह गये। उन्हें तुम्हारा प्रसाद मिला ही नहीं। एक कटोरा और प्रसाद बना दो तो हंस भी पी लें।”

संकेत पाते ही विमलामञ्जरी एक और कटोरा भरकर राधाके होठोंसे लगा देती है। इस कटोरेसे श्रीकृष्ण भी एक-दो बूँद पी लेते हैं। अब एक कटोरेमें श्रीराधा हंसिनियोंको एवं दूसरेमें श्रीकृष्ण हंसोंको दूध पिलाते हैं। हंस और हंसिनियाँ आनन्दमें भरकर पंख फुला-फुलाकर दूध पीते हैं।

इधर मधुमङ्गल विशाखाकी दी हुई बूँदियोंको थोड़ा चखकर श्रीकृष्णसे कहता है, “अरे कान्हू भैया! ऐसी बढ़िया बूँदिया है कि क्या बताऊँ। थोड़ा तुम भी खाओ।” वह रूमालको अपनी अञ्जलिमें भरकर श्रीकृष्णके मुखके सामने रख देता है। श्रीकृष्ण दाहिने हाथमें कटोरा पकड़े हैं और बायें हाथसे हंसोंके सिरपर हाथ फेर रहे हैं। अतः कहते हैं, “तुम ही थोड़ा खिला दो।” मधुमङ्गल बायें हाथमें रूमालको झोलीके रूपमें थामता है तथा दाहिने हाथसे बूँदिया निकालकर श्रीकृष्णके मुँहमें देता है। श्रीकृष्ण धीरे-धीरे पाँच-सात दाने खाते हैं।

वर्षा कभी तेज और कभी धीमी हो रही है, जिससे श्रीकृष्णका पीताम्बर एवं श्रीराधारानी तथा सखियोंकी नीली साड़ियाँ सर्वथा भीग गयी हैं। वर्षाका जल ललाटपरसे बहकर उनके कपोलोंपर आ रहा है। हंस दूध पी लेते हैं तो मधुमङ्गल रूमालवाली बूँदियोंको परातमें डाल देता है तथा विशाखासे कहता है, “तू बड़ी धूर्त है। थोड़ी-सी बूँदिया देकर मुझे ठगने आयी है। मैं ठगानेका नहीं। अभी तेरे कुञ्जमें जाकर देखता हूँ कि आज कौन-कौनसे नये फल लगे हैं। तू चाहती है कि मैं इन बूँदियोंमें भूलकर तेरे यहाँ जाना भूल जाऊँ। क्यों, यही बात है न?”

सखियाँ हँसती हैं। मधुमङ्गल धड़ामसे पानीमें कूदकर तैरता हुआ उत्तर-पूर्व दिशामें विशाखाके कुञ्जकी ओर बढ़ जाता है तथा श्रीकृष्णकी नाव पूर्वकी ओर चलने लगती है।

ENGLISH TRANSLATION

Hearing Madhumaṅgala, Śrī Kṛṣṇa says, "Beloved, if You wish to feed the swan, You must drink first. If I drink first, that rascal Madhumaṅgala will report Me to Mother and she will be displeased."

Rādhārāṇī smiles, thinking, "I am thoroughly trapped." Rain begins to fall, and drops enter the bowl. Śrī Kṛṣṇa smiles. "Do not delay. If You wish to feed the swan, drink Yourself and then I shall drink. If not, I shall move the boat onward."

At that moment the flock of female swans repeatedly raises its heads as though pleading, "Beloved of Śrī Kṛṣṇa, do not move the boat until You have given us the nectar remaining from both Your lips."

With some embarrassment Śrī Rādhā turns Her face west and barely touches the milk with Her lips. Śrī Kṛṣṇa immediately takes the bowl, drinks two or three sips, and says, "The poor male swans have been left with nothing. They received none of Your prasāda. Make one more bowl of prasāda so that they too may drink."

At the signal Vimalāmañjarī fills another bowl and places it against Rādhā's lips. Śrī Kṛṣṇa drinks a drop or two from this bowl as well. Śrī Rādhā now feeds the female swans from one bowl while Śrī Kṛṣṇa feeds the males from the other. Filled with joy, the birds fluff their feathers as they drink.

Meanwhile Madhumaṅgala tastes the boondī Viśākhā gave him. "Kānhū-bhaiyā, this boondī is so delicious that words fail me. You should eat some too." He cups the handkerchief before Śrī Kṛṣṇa's mouth. Since Śrī Kṛṣṇa holds the bowl in His right hand and strokes the swans' heads with His left, He says, "Feed Me a little yourself." Madhumaṅgala cradles the cloth like a pouch in his left hand and uses his right to place the sweets in Śrī Kṛṣṇa's mouth. Śrī Kṛṣṇa slowly eats five or seven pieces.

The rain alternately strengthens and softens until Śrī Kṛṣṇa's pītāmbara and the blue saris of Śrī Rādhārāṇī and the sakhīs are drenched. Water runs from their foreheads down their cheeks. When the swans finish drinking, Madhumaṅgala empties the remaining boondī back onto the tray and tells Viśākhā, "You are very cunning. You thought you could trick me with a little boondī, but I shall not be deceived. I am going to your grove right now to see which new fruits have ripened today. You hoped I would become distracted by these sweets and forget to visit. Is that not so?"

The sakhīs laugh. With a great splash Madhumaṅgala leaps into the water and swims northeast toward Viśākhā's grove, while Śrī Kṛṣṇa's boat continues eastward.

ORIGINAL Hindi prose

नावका मुख पूर्वकी ओर होते ही बत्तक-पक्षियोंका एक झुण्ड 'काँ-काँ' करता हुआ बहुत शीघ्रतासे नावकी ओर बढ़ता है। श्रीकृष्ण खड़े होकर पूर्वकी ओर मुख करके उन्हें देखने लगते हैं। श्रीराधा भी उनकी दाहिनी ओर खड़ी होकर पक्षियोंको देखती हैं। नाव कुछ ही आगे बढ़ी थी कि बत्तकोंका झुण्ड वहाँ आ जाता है। श्रीकृष्ण नावका मुख उत्तरकी ओर करनेका संकेत करते हैं। दाहिनी ओरवाली सखी डाँड़ दबाकर नाव उधर घुमा देती है। श्रीकृष्ण एवं श्रीराधा बड़े प्यारसे बत्तकोंको छू-छूकर उनका स्वागत करते हैं। लवङ्गमञ्जरी बूँदियोंवाली परात पीछेसे लाकर राधा एवं श्रीकृष्णके बीच रख देती है। श्रीराधा अपनी अञ्जलियोंसे भर-भरकर श्रीकृष्णके हाथमें बूँदिया देती हैं। श्रीकृष्ण अपनी अञ्जलि आगे बढ़ाते हैं और बत्तक उसमें चोंच डालकर खाते हैं।

एक बत्तक उछलकर नावपर चढ़ जाता है। राधारानी हँसती हुई, पर कुछ डरी-सी होकर श्रीकृष्णके पीछे जाकर उनका कन्धा पकड़ लेती हैं। बत्तक बड़े प्यारकी मुद्रा बनाकर कभी सिर नीचे करता है, कभी ऊपर उठाता है और बीच-बीचमें बोलता है। श्रीकृष्ण हँसते हुए सिर दाहिनी ओर घुमाकर ऊपर उठाते हैं और राधासे कहते हैं, "मैं समझ रहा हूँ कि तू बत्तकसे डर गयी है। क्यों, ठीक कह रहा हूँ न?"

राधारानी लजाकर कहती हैं, "नहीं, डरूँगी क्यों? देखो, मैं अभी इस बत्तकको खिलाती हूँ।" वे दाहिने हाथकी अञ्जलिमें बूँदिया भरकर उसे खिलाती हैं। उसे खाते देखकर पाँच-सात बत्तक एक साथ नावपर चढ़ जाते हैं तथा उनके हाथमें चोंच डालकर बूँदिया खाना चाहते हैं। राधारानी बूँदियोंको नावपर गिरा देती हैं और तुरन्त उठकर श्रीकृष्णका कन्धा पकड़कर हँसने लगती हैं।

श्रीकृष्ण खिलखिलाकर कहते हैं, "मैंने कहा था न कि तुझे डर लगता है, पर तू अपना डर छिपानेके लिये साहस करके गयी थी। कहो, भाग क्यों आयी?" राधारानी मुस्कुराती हुई खड़ी रह जाती हैं। फिर बैठकर श्रीकृष्णके कानमें कुछ कहती हैं। श्रीकृष्ण "ठीक है" कहकर बत्तकोंको खिलाने लग जाते हैं।

ललिता पीछेसे आकर श्रीकृष्णके पीताम्बरका एक छोर खींचकर पहले निचोड़ती हैं, क्योंकि वह वर्षाके कारण पूर्णतः भीग गया है। फिर उसमें थोड़ी बूँदिया बाँध देती हैं। शेष बूँदियोंको कमलके पत्तोंके दोनोंमें भर-भरकर श्रीकृष्णके हाथमें देती जाती हैं। वहीं चार-पाँच सखियाँ नीचेसे कमलके पत्ते तोड़-तोड़कर दोने बना-बनाकर ललिताको देती हैं। श्रीकृष्ण बूँदियोंसे भरे दोनोंको पानीमें छोड़ते हैं। उन्हें छोड़ते ही बड़ी-बड़ी मछलियाँ उलट देती हैं, बूँदिया बिखरकर पानीमें गिरती हैं और मछलियाँ उन्हें खाती हैं। इस प्रकार हंसों, बत्तकों एवं मछलियोंको खिलानेके बाद श्रीकृष्ण उठकर खड़े हो जाते हैं तथा नावको फिर पूर्वकी ओर घुमानेका संकेत करते हैं।

ENGLISH TRANSLATION

As soon as the boat faces east, a flock of ducks approaches swiftly, calling loudly. Śrī Kṛṣṇa rises and faces east to watch them. Śrī Rādhā stands at His right and watches as well. The boat has moved only a little when the flock arrives. Śrī Kṛṣṇa signals that the bow should turn north, and the sakhī on the right presses her oar to swing the boat around. Śrī Kṛṣṇa and Śrī Rādhā lovingly greet the ducks, touching them one by one. Lavaṅgamañjarī brings the tray of boondī from behind and places it between the Pair. Śrī Rādhā repeatedly fills Śrī Kṛṣṇa's palms with the sweets. He holds them out, and the ducks dip in their beaks to eat.

One duck jumps into the boat. Laughing yet slightly frightened, Rādhārāṇī slips behind Śrī Kṛṣṇa and grasps His shoulder. With an affectionate air the duck lowers and raises its head, calling intermittently. Śrī Kṛṣṇa laughs, turns His head to the right, and looks up at Rādhā. "I understand. You are afraid of the duck. Am I not right?"

Rādhārāṇī answers shyly, "No, why should I be afraid? Look, I shall feed this duck now." She fills Her right palm with boondī and begins to feed it. Seeing the bird eat, five or seven ducks leap aboard together and thrust their beaks toward Her hand. The Queen drops the sweets upon the boat, springs up, catches Śrī Kṛṣṇa's shoulder, and laughs.

Śrī Kṛṣṇa laughs heartily. "Did I not tell You that You were frightened? You only ventured forward to conceal Your fear. Tell Me, why did You run away?" Rādhārāṇī remains standing with a smile. Then She sits and whispers something in Śrī Kṛṣṇa's ear. He says, "Very well," and begins feeding the ducks.

Lalitā comes from behind, pulls one end of Śrī Kṛṣṇa's pītāmbara, and wrings it out, for it has become thoroughly drenched. She ties some boondī in it, then fills little cups fashioned from lotus leaves with the remaining sweets and passes them to Śrī Kṛṣṇa. Four or five sakhīs pluck lotus leaves from below, shape them into cups, and hand them to Lalitā. Śrī Kṛṣṇa sets the filled cups upon the water. Great fish immediately overturn them, scattering the boondī into the pool, and eat the sweets. After feeding the swans, ducks, and fish, Śrī Kṛṣṇa rises and signals for the boat to turn east again.

ORIGINAL Hindi prose

अब अत्यधिक वर्षा होने लगती है। पानीकी बड़ी-बड़ी बूँदें नाव एवं राधाकुण्डके जलपर गिरती हैं। आकाशमें और भी घने मेघ छा जाते हैं और ऐसा लगता है कि अब देर तक वर्षा होगी। अतः श्रीकृष्ण, श्रीराधा एवं सखियोंमें विचार होने लगता है कि नावसे उतरकर कुञ्जमें चलें या इसी वर्षामें नाव चलानेकी होड़ लगाकर खेलें। श्रीराधा श्यामसुन्दरसे कहती हैं, “लक्षण ऐसे हैं कि वर्षा बहुत अधिक और देरतक होगी, इसलिये कुञ्जमें चले चलें।”

ललिता कहती हैं, “श्यामसुन्दर! आज खेलते तो मैं देखती कि तुम हारते हो या मैं हारती हूँ।”

श्यामसुन्दर खुलकर हँसते हैं। “ठीक! चल, चल! आज मैं तेरे फेरमें आनेका नहीं। तू चाहती है कि कलवाले दाँवको सस्ते-सस्ते चुका दे। यह होनेका नहीं।”

ललिता मुस्कुराती हैं, नावकी डाँड़पर स्वयं बैठकर खेने लगती हैं और कहती हैं, “नहीं जी, मैं ऐसी-वैसी नहीं हूँ कि तुम्हें धोखा देकर दाँव चुका दूँ। मैं तो चाहती हूँ कि कुछ देर नाव चलाकर देख लो। आज पानीमें मैं तुम्हें हराकर दिखाऊँ।”

श्रीकृष्ण पूछते हैं, “तो कलका दाँव इसमें नहीं गिना जायेगा?”

“नहीं, सर्वथा नहीं।”

“तब क्या हानि है? चल, देख!”

श्रीकृष्ण बायीं डाँड़ पकड़ लेते हैं। ललिता डाँड़ चलाना छोड़कर दूसरी नावोंकी सखियोंको संकेत करती हैं। संकेत पाते ही सब नावें घूमकर पूर्वकी ओर मुख किये एक पङ्क्तिमें खड़ी हो जाती हैं। खेल आरम्भ होनेका संकेत देने और अन्तमें हार-जीतका निर्णय करनेके लिये श्रीकृष्ण रूपमञ्जरीको चुनते हैं। खेल आरम्भ हो जाता है।

ENGLISH TRANSLATION

The rain now becomes torrential. Great drops strike the boat and the waters of Rādhā-kuṇḍa. Still denser clouds fill the sky, and it appears the downpour will continue for some time. Śrī Kṛṣṇa, Śrī Rādhā, and the sakhīs begin debating whether to leave the boats for the grove or race them through the rain. Śrī Rādhā tells Śyāmasundara, "It appears the rain will be very heavy and continue for a long time. Let Us return to the grove."

Lalitā says, "Śyāmasundara, if we played today, we would see whether You lose or I do."

Śyāmasundara laughs openly. "Very well, come on! But I shall not fall into your trap today. You want to settle yesterday's wager too cheaply. That will not happen."

Smiling, Lalitā takes her place at an oar and begins rowing. "No indeed, I am not the sort to deceive You and discharge my wager unfairly. I merely want You to try rowing for a while. Today I shall defeat You upon the water."

Śrī Kṛṣṇa asks, "Then yesterday's wager will not be counted in this?"

"No, certainly not."

"Then what harm is there? Come, let us see."

Śrī Kṛṣṇa takes the left oar. Lalitā stops rowing and signals to the sakhīs in the other boats. At once all the boats turn east and line up in a single row. Śrī Kṛṣṇa appoints Rūpamañjarī to signal the start and judge the winner at the finish. The race begins.

CHAPTER 29

दीपावली लीला

The Dīpāvalī Līlā

Source scan pages 309–318

ORIGINAL

अपने भवनकी अटारीकी सबसे ऊपरकी छतपर श्रीराधारानी आकाशदीपकी रेशमी डोरीको अपने हाथमें पकड़े हुए दक्षिणकी ओर मुख किये खड़ी हैं। आज दीपावली है, इसलिये समस्त नन्द-व्रजमें संध्याके समय विशेष चहल-पहल है। प्रत्येक छतकी अटारीपर व्रज-सुन्दरियोंकी टोली खड़ी है। राधारानी भी आकाशदीप प्रज्वलित करने जा रही हैं। वे यद्यपि डोरी पकड़े हुए दक्षिणकी ओर मुख किये खड़ी हैं, पर कुछ ही क्षणके अन्तरसे अपने पीछेकी ओर बार-बार दृष्टि डालती हुई नन्दबाबाकी गोशालाकी ओर देखने लग जाती हैं। आज अभीतक समय हो जानेपर भी श्यामसुन्दर गोशालामें गाय दुहने नहीं आये हैं, अतः रानी बड़ी उत्सुकतासे उधर ही बार-बार श्यामसुन्दरके आनेकी बाट देख रही हैं।

छतपर चारों ओर घेरा लगा हुआ है। पश्चिमी ओरके घेरेसे बढ़े हुए मणि-जटित स्तम्भपर आकाशदीप लटक रहा है। उसे नीचे उतारनेके लिये नीले रेशमकी डोरी उस दीपदानीसे जोड़कर लटका दी गयी है। रानी उसी डोरीके सहारे धीरे-धीरे उस दीपदानीको नीचे उतार रही हैं। दीपदानी एक विचित्र प्रकारके शीशेकी बनी हुई है, जिसमेंसे भीतरके दीपकका प्रकाश अनन्तगुना होकर प्रकाशित होता है। दीपदानीके ऊपर नीले रंगका पत्थर जड़ा हुआ है।

रानी सोनेके दीपमें घी भरकर उसमें कपासकी बत्ती लगाती हैं। ललिताके हाथमें धूपबत्ती-जैसी कोई बहुत मोटी सुगन्धित बत्तिका है, जो धीमी-धीमी जल रही है तथा धुएँके समान उसमेंसे पीले रंगकी अग्निशिखा प्रकट हो रही है। उस शिखासे अत्यन्त विलक्षण सुगन्धि निकल रही है, जिससे सारी छत सुवासित हो गयी है। रानी उस अग्निशिखासे घी भरे प्रदीपको जलाती हैं। प्रदीप जल जाता है। रानी उसे हाथमें लेकर उसी दीपदानीमें रख देती हैं। रूपमञ्जरीके हाथमें जलकी झारी है, उससे रानी हाथ धोती हैं। गुणमञ्जरीके हाथमें फूलोंसे भरी झारी है, उसमेंसे चार-पाँच सुन्दर गुलाबके फूल लेकर रानी उस दीपके चारों ओर रख देती हैं। रानी यह कर भी रही हैं तथा बार-बार नन्दबाबाकी गोशालाकी ओर देख भी लेती हैं। अभीतक श्यामसुन्दर गोशालामें नहीं आये हैं।

ENGLISH TRANSLATION

Upon the highest roof of her palace, Śrī Rādhārānī stands facing south with the silken cord of the sky-lamp in her hand. Today is Dīpāvalī, and at dusk all of Nanda's Vraja is alive with unusual activity. Groups of Vraja's beautiful women stand upon every rooftop terrace. Rādhārānī too is preparing to light a sky-lamp. Though she faces south holding the cord, every few moments she turns and looks back toward Nanda Bābā's cowshed. The appointed hour has passed, yet Śyāmasundara has not come to milk the cows. Rānī therefore waits eagerly, repeatedly searching that direction for his arrival.

A parapet surrounds the roof. From a jewel-studded pillar rising above its western side hangs the sky-lamp. A blue silken cord attached to its lantern casing allows it to be lowered, and Rānī slowly draws the casing down. It is made from a wondrous kind of glass that multiplies the light within without limit, and a blue stone is set upon its crown.

Rānī fills a golden lamp with ghee and sets a cotton wick within it. Lalitā holds a thick, fragrant taper like an incense stick. It burns slowly, emitting a yellow flame through a veil of smoke, and its extraordinary fragrance perfumes the entire roof. Rānī lights the ghee lamp from this flame and places the burning lamp inside the glass casing. She washes her hands from the water sprinkler held by Rūpamañjarī, then takes four or five roses from Guṇamañjarī's flower-filled vessel and arranges them around the lamp. Even while doing all this, she repeatedly glances toward Nanda Bābā's cowshed. Śyāmasundara has still not appeared.

ORIGINAL

दीप तैयार हो जानेपर रानी उस दीपककी परिक्रमा करती हैं तथा मन-ही-मन कहती हैं, “हे आकाशके अधिपति देव! मेरे मनकी दशा देखकर मेरा अपराध क्षमा कर दें। हाय! मैं दीपक भी ठीकसे नहीं जला सकी हूँ। क्या करूँ, सर्वथा असमर्थ हो गयी हूँ। मैं चाहती हूँ कि दीपकी बत्ती ठीकसे बनाकर आपको दीप-दान करती, दीप-दान करके प्रियतम श्यामसुन्दरके मनकी भीख माँगती, पर ऐसा कर नहीं पाती। दीपक हाथमें लेती हूँ, पर वहाँ उस दीपकके स्थानपर मुझे श्यामसुन्दर दीखने लग जाते हैं। कपासकी बत्ती हाथमें लेती हूँ, हाथपर रखते ही हाथोंमें श्यामसुन्दरकी छवि दीखने लग जाती है। दीपदानीपर दृष्टि डालती हूँ, पर मुझे दीपदानी नहीं दीखती, वहाँ श्यामसुन्दर दीखते हैं। डोरीको पकड़कर मैं खींचना चाहती हूँ, उस डोरीमें ही मेरे प्रियतम मुझे हँसते हुए दीखने लग जाते हैं। मैं सोचती हूँ कि ललिताको पुकारूँ और पुकारकर कहूँ कि बहिन! मेरी ओरसे तू पूजा कर दे; पर ललिताके स्थानपर श्यामसुन्दरको पुकारने लग जाती हूँ। कहना कुछ चाहती हूँ, कह कुछ जाती हूँ। इसलिये हे देव! आप रुष्ट न हों। मेरी इस विधिहीन पूजासे ही आप प्रसन्न हो जायें और एक भीख दें। देव! श्यामसुन्दरकी दासी यह राधा आपसे भीख माँगती है कि मेरे प्रियतम श्यामसुन्दर अनन्त कालतक सुखी रहें।”

प्रार्थना करते-करते रानी भावाविष्ट हो जाती हैं तथा आकाशमें एवं अपने चारों ओर, पूर्व-पश्चिम-उत्तर-दक्षिण, सर्वत्र उन्हें श्यामसुन्दर दीखने लग जाते हैं। हाथमें डोरीको पकड़े हुए पार्थिव पुत्तलिकाकी भाँति वे खड़ी रह जाती हैं। ललिता स्थिति समझ जाती हैं तथा डोरीको उनके हाथसे छुड़ाकर चित्राके हाथमें दे देती हैं। पासमें ही घेरेसे सटा हुआ जो एक मखमली आसन है, उसपर वे रानीको बैठा देती हैं।

कुछ देर बाद रानीको बाह्य ज्ञान होता है तथा वे पुनः उसी गोशालाकी ओर देखने लग जाती हैं।

ENGLISH TRANSLATION

When the lamp is ready, Rānī circumambulates it and prays inwardly: "O divine sovereign of the sky, see the condition of my mind and forgive my offense. Alas, I could not even light the lamp properly. What can I do? I have become entirely helpless. I wished to prepare its wick correctly, offer you this lamp, and then beg from you the heart of my beloved Śyāmasundara, but I cannot do so. When I take the lamp in my hand, I see Śyāmasundara in its place. When I lift the cotton wick, his image appears in my hands. I look toward the lantern casing, but instead of the casing I see Śyāmasundara. When I grasp the cord to pull it, I see my beloved smiling within the cord itself. I think of calling Lalitā and asking, 'Sister, perform the worship on my behalf,' yet instead of Lalitā I begin calling Śyāmasundara. I intend to say one thing and say another. Therefore, O Lord, please do not be angry. Be pleased even with this worship devoid of proper method and grant me one alms. O Lord, this Rādhā, Śyāmasundara's maidservant, begs that my beloved Śyāmasundara remain happy for all eternity."

As she prays, Rānī is overwhelmed by bhāva. In the sky and all around her, east, west, north, and south, she sees only Śyāmasundara. Holding the cord, she stands like an earthen doll. Lalitā understands her condition, removes the cord from her hand, gives it to Citrā, and seats Rānī upon a velvet cushion beside the parapet.

After some time Rānī regains outward awareness and immediately looks again toward the cowshed.

ORIGINAL

इसी समय कुन्दवल्ली छतपर आती है। उसे अचानक आयी देखकर रानीको आश्चर्य होता है। कुन्दवल्ली रानीके कन्धोंको पकड़कर प्यारसे उनके सिरको चूमकर कहती है, “चल, तुझे मैयाने अभी-अभी शीघ्र बुलाया है।”

रानीके मुखारविन्दपर उत्कण्ठा एवं आनन्दके चिह्न प्रकट हो जाते हैं। फिर अत्यन्त धीमे स्वरमें किञ्चित् भयमिश्रित मुद्रासे वे पूछती हैं, “आज्ञा मिल गयी है?”

कुन्दवल्ली हँसकर कहती है, “हाँ-हाँ, सब विधि-विधान पूरा करके ही आयी हूँ।”

यह सुनते ही रानीकी प्रसन्नताकी सीमा नहीं रहती। वे बड़ी शीघ्रतासे छतकी सीढ़ियोंसे उतरती हैं तथा भवनके पश्चिमी उपवनमें जा पहुँचती हैं। रानीके पीछे कुन्दवल्ली, ललिता आदि दौड़ती-सी चल रही हैं। रूपमञ्जरी एक नीले रंगकी चादर लेनेके लिये पीछे लौट पड़ती है तथा शीघ्र ही चादर लेकर दौड़ती हुई पुनः राधारानीके पास पहुँच जाती है। रानी उत्कण्ठावश इतनी शीघ्रतासे चल रही हैं कि थोड़ी देरमें ही वे उपवनके द्वारको पार करके मुख्य मार्गपर आ गयी हैं। इसी समय रूपमञ्जरी पीछेसे आकर उनपर चादर डाल देती है। चादरको लपेटती हुई रानी नन्द-भवनकी ओर शीघ्रतासे बढ़ने लगती हैं।

ENGLISH TRANSLATION

At that moment Kundavallī comes onto the roof. Rānī is surprised by her sudden arrival. Taking Rānī by the shoulders, Kundavallī lovingly kisses her head and says, "Come. Mother Yaśodā has just sent for you urgently."

Longing and delight appear upon Rānī's lotus face. In a very soft voice, with a hint of fear, she asks, "Has permission been granted?"

Laughing, Kundavallī replies, "Yes, yes. I completed every prescribed formality before coming."

Rānī's happiness knows no limit. She quickly descends the rooftop stairs and reaches the western garden of the palace, with Kundavallī, Lalitā, and the others almost running behind her. Rūpamañjarī turns back to fetch a blue shawl and soon catches up with Rādhārānī. Longing carries Rānī forward so swiftly that she passes through the garden gate and reaches the main road in moments. Rūpamañjarī drapes the shawl over her from behind, and wrapping it around herself, Rānī hastens toward Nanda Bhavana.

ORIGINAL

यद्यपि मणियोंके अत्यधिक प्रकाशसे समस्त मार्गपर दिनका-सा उजाला हो रहा है, फिर भी दीपावलीका दिन होनेके कारण सोनेके प्रदीप स्थान-स्थानपर जलाये गये हैं। नन्द-भवनके मुख्य द्वारपर गोप-गोपियोंकी भीड़-सी लग रही है। आज श्यामसुन्दर स्वयं दीपक जला-जलाकर मार्ग एवं भवनको सजा रहे हैं। श्यामसुन्दरकी विलक्षण शोभा है। उनकी अलकावली अत्यन्त सुन्दर ढंगसे सँवार दी गयी है तथा उनके केशके गुच्छे पीछे ग्रीवापर लटक रहे हैं। वे अत्यन्त सुन्दर फूलोंका बना हुआ मुकुट, जिसके आगे एक मोरपंख कलगा है, सिरपर बाँधे हुए हैं। पीली चादर दोनों कन्धोंपरसे होती हुई सामनेकी ओर लटक रही है। वे रेशमी लाल किनारीवाली पीली धोती पहने हुए हैं और उसका एक छोर कमरमें कसी हुई फेंटसे निकलकर आगे लटक रहा है।

श्यामसुन्दरकी दायीं ओर मधुमङ्गल हाथमें घीसे भरी झारी लेकर झूमता हुआ चल रहा है। सुबलने बहुत-से दीपकोंसे भरी सोनेकी परात उठा रखी है। श्रीदाम कपासकी बत्तियोंका पुलिन्दा लिये हुए श्यामसुन्दरके पीछे-पीछे चल रहा है। उधर मैया एक बार भवनके भीतर जाती हैं, दूसरे ही क्षण बाहर आकर घबरायी-सी उधर देखने लग जाती हैं, जिधर श्यामसुन्दर दीपक जलाते हुए घूम रहे हैं, और बार-बार चिल्लाकर कहती हैं, “अरे ओ मधुमङ्गल! अरे सुबल!! देखना भला, कहीं श्यामसुन्दरका हाथ न जल जाये।”

मैया कभी धनिष्ठासे कहती हैं, “धनिष्ठे! जाओ, उनसे, व्रजेश नन्दसे, कह दो कि वे गोशालासे तुरन्त आ जायें। श्यामसुन्दरके पीछे-पीछे चलकर उसे सँभालें, कहीं वह हाथ न जला ले।”

कभी श्यामसुन्दरके पास दौड़कर चली जाती हैं तथा कहती हैं, “मेरे लाल! अब नहीं। अब बहुत दीपक तुमने जला दिये हैं, अब रहने दे।”

श्यामसुन्दर बड़े प्रेमसे कहते हैं, “ना मैया! मेरा हाथ नहीं जलेगा। देख, अबतक आठ सौसे अधिक दीपक जला चुका हूँ। एक बार भी तो हाथ नहीं जला।”

ENGLISH TRANSLATION

Although the brilliance of countless jewels makes the road as bright as day, golden lamps have also been lit everywhere for Dīpāvalī. A great crowd of gopas and gopīs fills the main entrance of Nanda Bhavana. Śyāmasundara himself is lighting lamps to decorate the road and palace. His beauty is extraordinary. His curling locks have been arranged exquisitely, with clusters of hair falling behind upon his neck. A crown of lovely flowers rests upon his head, adorned in front with a peacock plume. A yellow shawl passes over both shoulders and hangs down before him. He wears a yellow silk dhotī edged in red, one end emerging from the sash at his waist and falling forward.

To Śyāmasundara's right, Madhumaṅgala walks with a swaying gait, carrying a sprinkler filled with ghee. Subala holds a golden platter crowded with lamps, while Śrīdāma follows Śyāmasundara with a bundle of cotton wicks. Mother Yaśodā repeatedly goes inside the palace, only to rush out again the next moment and anxiously search for Śyāmasundara as he moves about lighting lamps. Again and again she calls, "Madhumaṅgala! Subala! Take care that Śyāmasundara does not burn his hand."

Sometimes she tells Dhaniṣṭhā, "Go tell Vrajeśa Nanda to return from the cowshed immediately. He must follow Śyāmasundara and watch over him so the boy does not burn his hand."

At other times she runs directly to Śyāmasundara. "My darling, no more. You have lit so many lamps. Leave the rest now."

With great affection he replies, "No, Maiyā, my hand will not burn. Look, I have already lit more than eight hundred lamps, and not once have I burned it."

ORIGINAL

मैया फिर भी मधुमङ्गलको सावधान करती हुई कुछ दूर हटकर भवनके द्वारके पास आकर उधर ही देखने लग जाती हैं। जहाँ श्यामसुन्दर आँखोंसे ओझल हुए, तभी मैया चिल्लाती हुई कहने लग जाती हैं कि अब बस, अब और नहीं जलाने दूँगी एवं उनके पास दौड़ने लग जाती हैं। इसी समय राधारानी नन्द-भवनके द्वारपर आ पहुँचती हैं।

राधारानीको देखते ही मैया आनन्दमें डूबने लग जाती हैं। वे रानीके पास दौड़ जाती हैं। रानी पैरोंपर गिरकर प्रणाम करना चाहती हैं, पर मैया उसके पहले ही उन्हें हृदयसे चिपका लेती हैं। उनका सिर सूँघती हैं, चूमती हैं। फिर मैया यशोदा बड़ी उत्कण्ठाकी मुद्रामें कहती हैं, “कुन्दवल्ली! जा, बहिन रोहिणीसे कह दे, मेरी लाडिली राधा आ गयी है। बस, अब तो एक क्षणमें ही सब हो जायेगा। हाँ, हाँ, रोहिणी बहिन ऊपर रसोईघरमें हैं। जाकर कह दे।”

“राधा” सुनते ही श्यामसुन्दरके हाथसे दीपक गिर जाता है। वे उस स्थानसे दौड़ते हुए वहीं आ जाते हैं, जहाँ मैया रानीको लेकर खड़ी हैं। श्यामसुन्दर एवं रानी एक-दूसरेको देखते ही प्रेममें अधीर होने लगते हैं।

ENGLISH TRANSLATION

Maiyā continues warning Madhumaṅgala, then withdraws to the palace gate while keeping her eyes fixed upon Śyāmasundara. The instant he disappears from view, she cries that enough is enough and she will permit no more lamps, then starts running toward him. At that very moment Rādhārānī arrives at the gate of Nanda Bhavana.

The sight of her immerses Maiyā in joy. She runs to Rānī, who tries to fall at her feet, but before she can bow, Maiyā gathers her to her heart, smells her head, and kisses her. With eager urgency Mother Yaśodā says, "Kundavallī, go tell sister Rohiṇī that my darling Rādhā has come. Everything will now be ready within a moment. Yes, sister Rohiṇī is upstairs in the kitchen. Go tell her."

The instant he hears the name "Rādhā," the lamp falls from Śyāmasundara's hand. He runs to the place where Maiyā stands with Rānī. As soon as Śyāmasundara and Rānī behold one another, both become restless with love.

ORIGINAL

श्यामसुन्दरको आया देखकर मैया रानीके पाससे चलकर श्यामसुन्दरके पास आ जाती हैं तथा अञ्चलसे श्यामसुन्दरका मुख पोंछने लगती हैं। श्यामसुन्दर कहते हैं, “ना मैया! अब दीपक नहीं जलाऊँगा। तेरी बात मैंने नहीं सुनी। अभी एक दीपक हाथसे गिर गया। मैं बच गया, नहीं तो सचमुच हाथ जल जाता।”

मैया श्यामसुन्दरको हृदयसे लगाकर प्यार करने लगती हैं। फिर कहती हैं, “मधुमङ्गल भैया! इसे लेकर तुरन्त चला जा। तुम एवं सुबल श्यामसुन्दरके कपड़े बदलाकर ऊपर पूजा-गृहमें इसे शीघ्र ले आओ। देर मत करना भला! महर्षि शाण्डिल्य आने ही वाले हैं।”

मैया श्यामसुन्दरके सिरको पुनः सूँघती हैं तथा कहती हैं, “जा मेरे लाल! तुरन्त कपड़े बदल करके ऊपर आ जा।”

श्यामसुन्दर मैयाके भुजपाशसे निकलकर रानीकी ओर देखते हुए उत्तरकी ओर धीरे-धीरे बढ़ते हैं। मैया रानीका हाथ पकड़ लेती हैं एवं कहती हैं, “मेरी लाडिली बेटी! ऊपर चल, मैं तुझे सब समझा दूँ।”

रानी मैयाके साथ ऊपर पाकशालामें जा पहुँचती हैं तथा छिपी दृष्टिसे उधर देखने लगती हैं, जिधर श्यामसुन्दर गये हैं। रसोईघरमें मैया रोहिणी बैठी हुई परातमें मिष्ठान्नके लड्डू बाँध रही हैं। रानी उनके चरणोंमें जाकर प्रणाम करती हैं। क्या बनाना है और क्या-क्या बन चुका है, वह सब मैया रानीको समझाती हैं और कहती हैं कि शेष सब बातें बहिन रोहिणी बता देंगी। इतना बतलाकर मैया श्यामसुन्दरको लानेके लिये नीचे दौड़ जाती हैं।

रानी एवं रानीकी सभी सखियाँ-मञ्जरियाँ अत्यधिक तत्परतासे पाक-कार्यममें लग जाती हैं। कुछ ही देरमें आश्चर्यजनक रीतिसे सब कुछ बन जाता है।

ENGLISH TRANSLATION

Seeing Śyāmasundara arrive, Maiyā leaves Rānī, goes to him, and wipes his face with the end of her sari. He says, "No, Maiyā, I shall light no more lamps. I did not heed you. Just now one fell from my hand. I escaped, but otherwise I truly would have burned myself."

Maiyā embraces him and showers him with affection. Then she says, "Brother Madhumaṅgala, take him away at once. You and Subala change Śyāmasundara's clothes and bring him quickly to the worship hall upstairs. Do not delay. Maharṣi Śāṇḍilya is about to arrive."

Again smelling his head, she tells him, "Go, my darling. Change your clothes and come upstairs immediately."

Leaving the circle of Maiyā's arms, Śyāmasundara slowly walks north while looking toward Rānī. Maiyā takes Rānī's hand. "My darling daughter, come upstairs, and I shall explain everything."

Rānī accompanies her to the kitchen above, casting hidden glances toward the direction in which Śyāmasundara departed. Mother Rohiṇī is seated there, shaping sweetmeat laddūs in a platter. Rānī bows at her feet. Maiyā explains what remains to be prepared and what is already finished, then says sister Rohiṇī will give all further instructions. Having said this, she runs downstairs to bring Śyāmasundara.

Rānī, her sakhīs, and mañjarīs engage in the cooking with immense diligence. In a remarkably short time, everything is ready.

ORIGINAL

परातमें भर-भरकर भाँति-भाँतिकी मिठाइयाँ नन्दरानीकी दासियाँ एवं राधारानीकी मञ्जरियाँ लाकर सामनेके पूजागृहमें रखती चली जाती हैं। पूजागृहके दक्षिणकी ओरका स्थान मिठाईकी परातोंसे भर जाता है। पूजागृहके बीचमें अत्यन्त सुन्दर-सुकोमल आसन चारों ओरसे बिछाये हुए हैं। ठीक मध्यभागमें छोटी सोनेकी चौकी सजाकर रखी हुई है। चौकीपर एक हाथ ऊँचा और आधा हाथ चौड़ा मणिजटित सिंहासन रखा है, जिसपर अत्यन्त सुन्दर तेजस् धातुकी बनी हुई श्रीलक्ष्मीनारायणजीकी प्रतिमा विराज रही है। चौकीके नीचे अर्घ्य आदि पूजाके उपकरण रखे हुए हैं। कुछ दूरपर हवन-वेदी शोभा पा रही है। आचार्य महर्षि शाण्डिल्यके बैठनेके लिये पासमें ही सुन्दर गद्दी सुशोभित हो रही है। उनके शिष्योंके बैठनेके लिये भी सुन्दर-सुन्दर आसन लगे हुए हैं।

इसी समय महर्षि शाण्डिल्य अपने शिष्योंसहित पधारते हैं। उनके पधारते ही सभी विनयपूर्वक खड़े हो जाते हैं। मैया यशोदा इसी समय वहाँ आ जाती हैं। वे दूरसे ही महर्षिके चरणोंमें प्रणाम रखती हैं। महर्षि आशीर्वाद देते हैं। सुन्दर पगड़ी बाँधे नन्दबाबा भी वहीं आ पहुँचते हैं। वे महर्षिके चरणोंमें साष्टाङ्ग दण्डवत् प्रणाम करते हैं। महर्षि उन्हें आशीर्वाद देते हैं। मैया यशोदा कहती हैं, "कुन्द! जा, कृष्णको शीघ्र बुला ला। मेरा नाम लेकर बुला ला।"

मैया यह कह ही रही थीं कि श्यामसुन्दर आ जाते हैं। आगे-आगे मधुमङ्गल हैं, बीचमें श्यामसुन्दर, उनके पीछे सुबल एवं अन्यान्य सखा। मैया दौड़कर श्यामसुन्दरको हृदयसे चिपटा लेती हैं। फिर बड़े प्यारसे हाथ पकड़कर महर्षिके सामने ले आती हैं। श्यामसुन्दर महर्षि शाण्डिल्यके चरणोंमें साष्टाङ्ग दण्डवत् प्रणाम करते हैं। महर्षिकी आँखोंमें आँसू भर आते हैं। वे अतिशय शीघ्रतासे श्यामसुन्दरको उठाकर हृदयसे लगा लेते हैं। मधुमङ्गल आदि सखा भी महर्षिको प्रणाम करते हैं। महर्षि उन्हें भी उठा-उठाकर हृदयसे लगाते हैं। श्यामसुन्दर अतिशय प्यारसे महर्षिके साथ आये हुए पाँच शिष्योंसे गले मिलते हैं। वे ब्राह्मणकुमार आनन्दमें पागल-से हो जाते हैं।

ENGLISH TRANSLATION

Nandarānī's maidservants and Rādhārānī's mañjarīs carry platter after platter of many kinds of sweets into the worship hall. Soon its southern side is filled with them. Beautiful soft seats have been spread around the hall. At the very center stands a small decorated golden dais. Upon it rests a jewel-studded throne one cubit high and half a cubit wide, bearing an exquisite image of Śrī Lakṣmī-Nārāyaṇa fashioned from a radiant metal. Vessels for arghya and the other offerings are arranged below the dais. A short distance away shines the fire altar. A fine cushion has been set for the presiding teacher, Maharṣi Śāṇḍilya, with handsome seats for his disciples nearby.

At that moment Maharṣi Śāṇḍilya arrives with his disciples, and everyone respectfully rises. Mother Yaśodā enters at the same time and bows to his feet from a distance. The sage blesses her. Nanda Bābā arrives wearing a handsome turban and offers full prostration at the Maharṣi's feet. After receiving his blessing, Mother Yaśodā says, "Kunda, go quickly and call Kṛṣṇa. Summon him in my name."

She has scarcely spoken when Śyāmasundara appears, Madhumaṅgala walking before him and Subala and the other companions behind. Maiyā runs to embrace Śyāmasundara, then lovingly takes his hand and leads him before the sage. Śyāmasundara offers full prostration at Maharṣi Śāṇḍilya's feet. Tears fill the sage's eyes as he quickly raises the boy and clasps him to his heart. Madhumaṅgala and the others also bow, and the sage lifts and embraces each one. With immense affection Śyāmasundara embraces the five young disciples who accompanied the Maharṣi, and the brāhmaṇa boys become almost mad with delight.

ORIGINAL

श्यामसुन्दर एक तिरछी चितवन रसोईघरकी ओर डालते हैं। अपनी प्रियतमा राधारानीके साथ दृष्टि मिलते ही श्यामसुन्दरका सारा शरीर काँपने लगता है। वही दशा रानीकी भी रसोईघरमें होती है। श्यामसुन्दरकी यह दशा देखकर नन्दबाबा एवं मैया कुछ घबरा-से जाते हैं, परन्तु फिर श्यामसुन्दरको हँसते देखकर सभी निश्चिन्त हो जाते हैं।

स्वस्तिवाचनपूर्वक श्रीलक्ष्मीनारायणजीकी चौंसठ उपचारोंसे विधिवत् पूजा होती है। ऋत्विक मन्त्र कहता है, पर श्यामसुन्दर उनके पासमें बैठे हुए नन्दबाबाके हाथमें पूजाकी सामग्री पकड़ाते जा रहे हैं। बड़े ही सुन्दर ढंगसे पूजा होती है। रानी सखियोंके बीचमें खड़ी हुई अपने प्रियतमकी शोभा एकटक निहारती रहती हैं। पूजा समाप्त होते ही वहाँ देवर्षि नारद अत्यन्त मधुर स्वरमें वीणापर गाते हुए आते हैं:

ENGLISH TRANSLATION

Śyāmasundara casts a sidelong glance toward the kitchen. The moment his eyes meet those of his beloved Rādhārānī, his entire body trembles. Rānī undergoes the same transformation in the kitchen. Nanda Bābā and Maiyā become briefly alarmed, but when Śyāmasundara smiles again, everyone is reassured.

After the auspicious invocations, Śrī Lakṣmī-Nārāyaṇa is worshiped properly with sixty-four offerings. The officiating priest chants each mantra while Śyāmasundara, seated beside Nanda Bābā, places the required articles in his hand. The worship unfolds beautifully. Standing among her sakhīs, Rānī gazes without blinking upon her beloved's splendor. As soon as the worship concludes, Devarṣi Nārada enters, singing in an exceedingly sweet voice to the accompaniment of his vīṇā:

ORIGINAL Sanskrit

Source: Madhurāṣṭakam, attributed to Śrī Vallabhācārya

अधरं मधुरं वदनं मधुरं नयनं मधुरं हसितं मधुरम्।

हृदयं मधुरं गमनं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥१॥

वचनं मधुरं चरितं मधुरं वसनं मधुरं वलितं मधुरम्।

चलितं मधुरं भ्रमितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥२॥

वेणुर्मधुरो रेणुर्मधुरः पाणिर्मधुरः पादौ मधुरौ।

नृत्यं मधुरं सख्यं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥३॥

गीतं मधुरं पीतं मधुरं भुक्तं मधुरं सुप्तं मधुरम्।

रूपं मधुरं तिलकं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥४॥

करणं मधुरं तरणं मधुरं हरणं मधुरं स्मरणं मधुरम्।

वमितं मधुरं शमितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥५॥

गुञ्जा मधुरा माला मधुरा यमुना मधुरा वीची मधुरा।

सलिलं मधुरं कमलं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥६॥

गोपी मधुरा लीला मधुरा युक्तं मधुरं मुक्तं मधुरम्।

दृष्टं मधुरं शिष्टं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥७॥

गोपा मधुरा गावो मधुरा यष्टिर्मधुरा सृष्टिर्मधुरा।

दलितं मधुरं फलितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥८॥

ENGLISH TRANSLATION

Sweet are his lips, sweet his face, sweet his eyes, and sweet his smile. Sweet is his heart and sweet his gait. Everything about the Lord of sweetness is sweet.

Sweet are his words, sweet his deeds, sweet his garments, and sweet his graceful curve. Sweet is his movement and sweet his wandering. Everything about the Lord of sweetness is sweet.

Sweet is his flute and sweet the dust about him. Sweet are his hands and sweet his feet. Sweet is his dance and sweet his friendship. Everything about the Lord of sweetness is sweet.

Sweet is his song, sweet what he drinks, sweet what he eats, and sweet his sleep. Sweet is his form and sweet his forehead mark. Everything about the Lord of sweetness is sweet.

Sweet are his acts, sweet his deliverance, sweet his stealing, and sweet his remembrance. Sweet is what he relinquishes and sweet what he brings to rest. Everything about the Lord of sweetness is sweet.

Sweet is his necklace of guñjā berries and sweet his flower garland. Sweet is the Yamunā and sweet her waves. Sweet is her water and sweet her lotus. Everything about the Lord of sweetness is sweet.

Sweet are the gopīs and sweet his līlā. Sweet is union with him and sweet liberation through him. Sweet is his glance and sweet his gracious conduct. Everything about the Lord of sweetness is sweet.

Sweet are the cowherds and sweet the cows. Sweet is his staff and sweet his creation. Sweet is what he subdues and sweet the fruit he bestows. Everything about the Lord of sweetness is sweet.

ORIGINAL

देवर्षिको श्यामसुन्दर तथा नन्दबाबा आदि सभी साष्टाङ्ग प्रणाम करते हैं। देवर्षि श्यामसुन्दरको गले लगाते हैं, फिर महर्षि शाण्डिल्यसे प्रेमसे मिलते हैं। नन्दबाबा अतिशय सत्कारपूर्वक महर्षि शाण्डिल्यको दक्षिणा देते हैं। महर्षिके शिष्य दक्षिणा सँभालते हैं। फिर महर्षि श्यामसुन्दरकी ओर कुछ देरतक एकटक देखकर प्रस्थान करते हैं। देवर्षि नारद भी दर्शन करके प्रस्थान करते हैं।

अब नन्द-उपनन्दकी पंक्तियोंके बीचमें श्यामसुन्दर सखाओंके साथ भोजन करने बैठते हैं। राधारानीकी सखियाँ, नन्दरानीकी दासियाँ एवं स्वयं नन्दरानी परोसनेका कार्य कर रही हैं। भीतर बैठी हुई रानी भोज्य सामग्रियोंको सजा-सजाकर परातमें भर देती हैं। सखियाँ परातको बाहर ले जाकर परोसती हैं। बड़े ही आनन्द-समारोहके साथ भोजन समाप्त हो जाता है। भोजन समाप्त होनेपर नन्दबाबा श्यामसुन्दर एवं दाऊजीका हाथ पकड़े हुए राजसभामें स्वजनोंसे मिलने चले जाते हैं।

ENGLISH TRANSLATION

Śyāmasundara, Nanda Bābā, and everyone present offer full prostration to Devarṣi Nārada. The divine sage embraces Śyāmasundara and then greets Maharṣi Śāṇḍilya with love. With profound honor, Nanda Bābā presents the Maharṣi his ceremonial gifts, which the disciples receive. After gazing steadily upon Śyāmasundara for some time, the Maharṣi departs. Devarṣi Nārada also takes his leave after receiving darśana.

Śyāmasundara now sits to dine with his companions between the rows of Nanda and Upananda's families. Rādhārānī's sakhīs, Nandarānī's maidservants, and Nandarānī herself serve the meal. Seated within, Rānī arranges the foods upon platters, which the sakhīs carry out and serve. The meal concludes amid a great festival of joy. Afterward Nanda Bābā takes Śyāmasundara and Dāūjī by the hand and leads them to the royal assembly to meet their relatives.

ORIGINAL

मैया राधारानीको खिलानेके लिये परातमें बहुत-सी मिठाइयाँ स्वयं भरकर लाती हैं तथा बड़े प्यारसे रानीके मुखमें देना चाहती हैं। रानी संकोच कर रही हैं। ललिता कहती हैं, “मैया! हमलोग सेवा लेंगी। आप निश्चिन्त रहें।”

ललिताकी बात सुनकर मैया पुनः ललितासे कहती हैं, “देखना भला, तुमलोग यदि कोई भी बिना खाये जाओगी तो मैं बहुत रुष्ट होऊँगी।”

इसके बाद मैया तुरन्त ही श्यामसुन्दरको देखनेके लिये राजसभाकी ओर दौड़ पड़ती हैं। उनके चले जानेपर सखियाँ उस परातको उठा लाती हैं, जिसमें श्यामसुन्दरने भोजन किया था। उन सबने बड़ी चतुराईसे पंक्ति उठते ही उस परातको उठाकर छिपा दिया था। उसी परातकी मिठाईमें वे मैयाके दिये हुए परातकी मिठाई सजा-सजाकर रख देती हैं। रानी सखियोंसहित श्यामसुन्दरके अधरामृतका प्रसाद लेती हैं। प्रसाद लेना समाप्त करके, हाथ-मुँह धोकर और श्यामसुन्दरके पीकमिश्रित पानके बीड़ेको मुखमें कर वे सब घर वापस लौटनेवाली ही थीं कि मैया यशोदा उसी समय आ जाती हैं।

ENGLISH TRANSLATION

Maiyā personally brings a platter heaped with sweets for Rādhārānī and lovingly tries to place them in her mouth, but Rānī is shy. Lalitā says, "Maiyā, we shall take care of serving her. Please do not worry."

Maiyā warns Lalitā, "See that none among you leaves without eating, or I shall be very angry."

She then runs toward the royal hall to see Śyāmasundara. Once she is gone, the sakhīs bring out the platter from which he ate. They had cleverly removed and hidden it as soon as the dining rows rose. They arrange the sweets given by Maiyā among the remnants upon that platter. Rānī and her companions then partake of the prasāda touched by the nectar of Śyāmasundara's lips. After finishing, washing their hands and faces, and placing in their mouths the betel morsels mixed with remnants from Śyāmasundara's chewing, they are about to depart when Mother Yaśodā returns.

ORIGINAL

रानीको जानेके लिये प्रस्तुत देखकर वे धनिष्ठाको कुछ संकेत करती हैं। धनिष्ठा संकेत समझ जाती है और हीरेकी बनी हुई अत्यन्त सुन्दर अँगूठी लाकर मैयाके हाथमें पकड़ देती है। मैया उसे रानीकी अँगुलीमें पहना देती हैं एवं कहती हैं, “बेटी! मेरा यह आशीर्वाद अस्वीकार मत करना। देख, इसे मैंने कृष्णके लिये बनवायी थी, पर कुछ ढीली होनेके कारण वह निकाल-निकालकर फेंक देता था। आज प्रातःकाल तेरी अँगुलियोंमें वैसी अँगूठी देखकर मैंने सोचा कि विधाताने यह अँगूठी तेरे लिये ही बनवायी है, इसलिये मैंने पहना दी। मेरी लाडिली बेटी! माँके इस आशीर्वादको तू ग्रहण कर ले।”

रानी सिर झुका लेती हैं तथा मैयाके चरणोंमें गिरकर प्रणाम करती हैं। मैया फिर रानीको हृदयसे लगा लेती हैं। मैया यशोदाकी आँखोंमें आँसू भर आते हैं। वे रानीकी ठोड़ीको पकड़कर चूमने लग जाती हैं तथा कहती हैं, “मेरी लाडिली! तुझे देखकर प्रायः मुझे भ्रम हो जाता है कि कृष्ण कहीं सुबलको ही साड़ी पहनाकर खेल तो नहीं कर रहा है? फिर पास आनेपर तुम्हारे गोरे रंगको देखकर पहचान पाती हूँ। ओह! विधाताने तुम दोनोंके मुखको कैसा एक-सा ही बनाया है?”

नन्दरानीकी बात सुनकर राधारानी सकुचा जाती हैं। मैया रानीको पकड़े हुए मुख्य द्वारतक आती हैं।

ENGLISH TRANSLATION

Seeing Rānī ready to leave, Maiyā signals to Dhaniṣṭhā, who understands and places an exquisite diamond ring in her hand. Maiyā slips it onto Rānī's finger. "Daughter, do not refuse this blessing from me. I had this ring made for Kṛṣṇa, but because it was a little loose, he kept pulling it off and throwing it away. This morning I saw a similar ring upon your finger and thought that Providence must have had this one made for you. Therefore I have put it on you. My darling daughter, please accept your mother's blessing."

Rānī bows her head, falls at Maiyā's feet, and offers praṇāma. Maiyā again draws her to her heart. Tears fill Mother Yaśodā's eyes. Taking Rānī by the chin and kissing her, she says, "My darling, when I see you, I often become confused and wonder whether Kṛṣṇa has dressed Subala in a sari and is playing a trick. Only when you come near and I see your fair complexion do I recognize you. Oh, how alike Providence has fashioned both your faces."

Rādhārānī grows shy at Nandarānī's words. Holding her close, Maiyā accompanies Rānī to the main gate.

ORIGINAL

द्वारके पास जाकर ललिता कुछ रुक-सी जाती हैं। उसी समय मधुमङ्गल वहाँ आ पहुँचता है एवं ललितासे कहता है, “री! आज चलकर देख, मैंने राजसभामें कैसी दीपावली सजायी है। तुझे तो सौ-सौ जन्ममें भी वैसा सजाना नहीं आयेगा।”

मधुमङ्गलकी बात सुनकर सभी हँस पड़ती हैं। इसपर मधुमङ्गल कहता है, “हँसती है? अच्छा! चल, चलकर देख ले, फिर समझ जायेगी कि यह झूठ कह रहा है या सच।”

ललिता हँसकर कहती हैं, “तेरे जैसे बन्दरकी सजायी हुई दीपावली अच्छी क्यों न होगी?”

मधुमङ्गल हँसकर कहता है, “देख, तू विश्वास नहीं करती। सचमुच कान्हू और हम दोनोंने मिलकर ऐसी दीपावली सजायी है कि देखते ही बन पड़ता है।”

मधुमङ्गलकी बात सुनकर ललिता राधारानीकी ओर अँगुलीसे संकेत करती हुई कहती हैं, “इसे देर हो जायेगी, नहीं तो मैं देख आती।”

मधुमङ्गल कहता है, “जब इतनी देर हुई तो थोड़ी और सही। इसे भी साथ ले चल, यह भी देख लेगी।”

ENGLISH TRANSLATION

Near the gate Lalitā pauses. Madhumaṅgala arrives and says, "Friend, come see how I decorated the royal hall for Dīpāvalī today. Even in a hundred lifetimes you could not decorate it so well."

Everyone laughs. Madhumaṅgala protests, "You laugh? Come and look, and then you will know whether I speak truth or falsehood."

Lalitā replies laughing, "Why would a Dīpāvalī decorated by a monkey like you not be splendid?"

He laughs in turn. "You do not believe me. Truly, Kānhū and I together made such a Dīpāvalī that one can only stand and stare."

Pointing toward Rādhārānī, Lalitā says, "She will be late. Otherwise I would come to see it."

"She is already late, so a little longer will make no difference. Bring her too, and let her see it."

ORIGINAL

रानीके हृदयमें तो आन्तरिक इच्छा है कि चलकर देख जाऊँ, पर बाहरसे ऐसी मुद्रा बनाती हैं मानो बहुत देर हो गयी है, अतः घर वापस लौट चलना चाहिये। किन्तु मधुमङ्गलका आग्रह देखकर मैया कहती हैं, “बेटी! इस मधुमङ्गलको भी मैं बहुत अधिक प्यार करती हूँ। यह दिन-रात मेरे कृष्णकी सँभाल रखता है। मैं तेरा आभार मानूँगी यदि तू इसकी सजायी हुई दीपावलीको जाकर थोड़ी देर देख लेगी। इसका चित्त प्रसन्न हो जायेगा।”

मैयाके ऐसा कहते ही सखी-मण्डलीके सहित रानी राजसभाकी ओर चल पड़ती हैं। वहाँ पहुँचकर रानी एक खम्भेकी आड़से देखने लगती हैं। रानीकी दृष्टि सीधे श्यामसुन्दरपर जाकर टिक जाती है। मधुमङ्गल पासमें ही खड़ा है। वह उच्च स्वरमें बोलता है, “वहाँ देख, बाबाकी गद्दीके पासकी सजावट देख।”

मधुमङ्गलका उच्च स्वर श्यामसुन्दरके कानोंमें पड़ता है। वे इधर देखने लग जाते हैं। दृष्टि फेरते ही राधारानीसे आँखें मिल जाती हैं। पत्थरकी मूर्तिकी तरह कुछ क्षणके लिये दोनोंकी दृष्टि स्थिर हो जाती है। फिर दोनों सँभल जाते हैं एवं मुस्कुराने लगते हैं।

रानी कुछ देर इधर-उधर देखकर फिर सखियोंके साथ घरकी ओर चल पड़ती हैं। मैया चाहती हैं कि कुछ दूरतक वे पहुँचानेके लिये चलें, पर रानी हाथ जोड़कर रोक देती हैं।

मैया लौट आती हैं। रानी मार्गसे चलती हुई फिर यमुनातटके पथसे अपने घरपर चली जाती हैं तथा आकर बिछौनेपर श्रमसे हार पड़ती हैं। ललिता रानीके सिरको गोदमें लेकर पंखा झलने लगती है।

ENGLISH TRANSLATION

Inwardly Rānī longs to go and see, but outwardly she acts as though it is already very late and she ought to return home. Seeing Madhumaṅgala's insistence, Maiyā says, "Daughter, I love this Madhumaṅgala very much. Day and night he watches over my Kṛṣṇa. I shall be grateful if you go and look for a little while at the Dīpāvalī he arranged. It will make his heart happy."

At Maiyā's words, Rānī and her circle of sakhīs set out for the royal hall. Upon arriving, Rānī looks from behind a pillar, but her gaze goes directly to Śyāmasundara and remains fixed upon him. Madhumaṅgala stands nearby and calls loudly, "Look over there at the decorations beside Bābā's seat."

His loud voice reaches Śyāmasundara, who turns in that direction. His eyes meet Rādhārānī's. For a few moments their gazes remain motionless like stone images. Then both regain their composure and begin to smile.

After looking around for a short while, Rānī leaves for home with her sakhīs. Maiyā wishes to accompany her some distance, but Rānī stops her with folded hands.

Maiyā returns. Rānī follows the road and then the path beside the Yamunā to her own home. On arriving, she falls exhausted upon her bed, while Lalitā places Rānī's head in her lap and begins to fan her.

CHAPTER 30

योगिनी लीला

The Yoginī Līlā

Source scan pages 319–331

ORIGINAL

Sanskrit invocation

॥ विजयेतां श्रीप्रियाप्रियतमौ ॥

ENGLISH TRANSLATION

May Śrī Priyā and Her Beloved be ever victorious.

ORIGINAL

(स्थान है, प्रसन्नताका सरोवर। समय है, सायंकाल। संध्या होनेमें दो घंटेकी देर है। संध्याकालीन सूर्यकी किरणें सरोवरके जलपर पड़ रही हैं। सरोवरका जल झलमल-झलमल कर रहा है। मणिमय सुन्दर घाटपर गोपियाँ अपने-अपने जल भर रही हैं। कुछ जल भरकर लौट रही हैं और कुछ जल भरनेके लिये आ रही हैं।

वृषभानुनन्दिनी श्रीराधा अपने पार्श्वमें सोनेका कलसा दबाये मन्द-मन्द गतिसे आ रही हैं। श्रीललिता उनकी दायीं ओर तथा श्रीविशाखा बायीं ओर हैं। दोनों अपने-अपने पार्श्वमें सोनेका कलसा लिये हुए हैं। श्रीराधाके पीछे और भी सखियाँ कलसा लिये हुए हैं। श्रीराधा चलती हैं, फिर रुक जाती हैं, फिर चलती हैं। इस प्रकार रुकती-चलती हुई घाटपर आकर खड़ी हो जाती हैं।)

ENGLISH TRANSLATION

(The place is Prasannatā Sarovara, the Lake of Gladness. It is evening, with two hours remaining before twilight. The rays of the setting sun fall upon the lake, whose water shimmers. Gopīs fill their vessels at the beautiful jeweled ghāṭa. Some return with water while others arrive to draw it.

Vṛṣabhānu's daughter Śrī Rādhā approaches slowly, holding a golden pitcher against Her side. Śrī Lalitā walks to Her right and Śrī Viśākhā to Her left, each carrying a golden pitcher. More sakhīs follow. Rādhā walks, pauses, then walks again, until in this halting way She reaches the ghāṭa and stands there.)

ORIGINAL

(घाटसे कुछ दूर हटकर पश्चिमकी ओर कुछ भीड़ लग रही है। कुछ ग्वाल-बाल एवं सिरपर कलसे रखी हुई कुछ गोपियाँ गोलाकार खड़ी हैं। श्रीराधाकी दृष्टि उस ओर जाती है।)

राधा, कौतूहलभरे स्वरमें, “ललिते! देखकर आ, यह कैसी भीड़ है!”

(ललिता जाती हैं, कुछ देर वहाँ ठहरकर फिर दौड़कर वापस आती हैं। समूचा शरीर पसीनेसे लथपथ हो जाता है।)

ललिता, “क्या बताऊँ राधे! तू चल; अरे! क्या बताऊँ?”

राधा, “क्यों, क्या बात है?”

ललिता, राधाका हाथ पकड़कर, “तनिक चल तो सही! कलसे लौटकर भर लेंगे।”

ENGLISH TRANSLATION

(A crowd has gathered some distance west of the ghāṭa. Several cowherd boys and gopīs with pitchers upon their heads stand in a circle. Rādhā notices them.)

"Lalitā, go and see what this crowd is."

(Lalitā goes, remains there briefly, then runs back drenched in perspiration.)

"Rādhā, what can I tell You? Come. Oh, what can I possibly say?"

"Why? What has happened?"

Taking Rādhā's hand, Lalitā says, "Just come and see. We shall return and fill the pitchers afterward."

ORIGINAL

(श्रीललिता राधाका हाथ पकड़े भीड़के पास आती हैं। गोपियाँ श्रीवृषभानु राजाकी लाडिलीको देखकर सामनेसे हटकर उन्हें आगे स्थान दे देती हैं। श्रीराधा-ललिता आदि भीड़के बीचमें आ जाती हैं और देखती हैं कि घाटकी ऊपरकी सीढ़ीपर बैठी हुई एक योगिनी अत्यन्त मधुर स्वरमें तानपूरेके स्वरमें स्वर मिलाकर अचेत-सी होकर गा रही है। योगिनीकी आँखें मुँदी हुई हैं। ऐसा प्रतीत हो रहा है मानो योगिनी समाधिस्थ होने जा रही है। योगिनी साँवली है। आयु चौदह वर्षकी है, ललाटपर विभूति रमा रखी है, पर विभूतिके अन्तरालसे प्रतीत होता लावण्य, अनुपम सौन्दर्य झलक रहा है।)

ENGLISH TRANSLATION

(Lalitā leads Rādhā to the gathering. Seeing King Vṛṣabhānu's darling daughter, the gopīs step aside and give Her the foremost place. In the center of the crowd They see a yoginī seated upon the upper step of the ghāṭa, singing almost without outward consciousness in an exceedingly sweet voice aligned with her tānpūrā. Her eyes are closed as though she were entering samādhi. She is dark-complexioned and about fourteen years old. Sacred ash covers her forehead, yet incomparable beauty and grace shine through it.)

ORIGINAL

Braj Bhāṣā song

पिया तोहि नैनन ही में राखूँ।

तेरे एक रोम की छवि पर अनत बार तन राखूँ॥

(श्रीराधा काठकी पुतली-सी खड़ी रहकर पद सुनती हैं। योगिनी तानपुरेपर बार-बार दोहराती है:)

“नैनन ही में राखूँ, पिया तोहि नैनन ही में राखूँ।”

ENGLISH TRANSLATION

Beloved, I shall keep You within my very eyes.

For the beauty of a single hair upon You, I would offer this body countless times.

(Śrī Rādhā stands like a wooden image listening. Again and again the yoginī repeats to the tānpūrā:)

"Within my eyes I shall keep You, Beloved, within my very eyes."

ORIGINAL

(मानो पुनः चेतनता हो आयी हो, ऐसी मुद्रा धारण करके राधा भीड़से बाहर निकल आती हैं तथा कुछ दूरपर बाँधपर लगी हुई मेंहदीकी झाड़ियोंसे सटकर बैठ जाती हैं; पर दृष्टि योगिनीकी ओर लगी है। ललिता-विशाखा आदि भी वहीं आकर बैठ जाती हैं।)

राधा, भराये हुए स्वरमें, “ललिते! यह योगिनी होकर ऐसा भजन क्यों गाती है?”

ललिता, “कैसा भजन?”

राधा, कुछ खीझी-सी होकर, “अरे! क्या सुन नहीं रही है?”

ललिता, कुछ मुस्कुराकर, “अब समझी।”

राधा, “तो बता! क्यों गाती है? सचमुच ललिते! तू ही देख। इतना रूप, ऐसा सौन्दर्य, उसपर ऐसा भजन! योग कैसे निभेगा?”

ENGLISH TRANSLATION

(As though returning to awareness, Rādhā leaves the crowd and sits beside henna bushes upon the embankment, though Her gaze remains fixed upon the yoginī. Lalitā, Viśākhā, and the others join Her.)

In a choked voice Rādhā asks, "Lalitā, why does a yoginī sing such a hymn?"

"What kind of hymn?"

With slight irritation Rādhā says, "Can you not hear it?"

Lalitā smiles. "Now I understand."

"Then tell Me why she sings it. Look at her, Lalitā. Such beauty, such loveliness, and then such a hymn. How will she preserve her yoga?"

ORIGINAL

योगिनी, अत्यन्त मधुर स्वरमें आलाप करते हुए, “पिया तोहि नैनन ही में राखूँ।”

(श्रीराधा फिर अन्यमनस्क-सी होकर एक बार ललिताकी ओर देखती हैं।)

ललिता, कुछ हँसती हुई, “तू तो भोली है। अरे! इसे निर्गुण भजन कहते हैं। वैरागी साधु गाया करते हैं।”

योगिनी, उच्च स्वरसे गाते हुए, “मेटहु कल भंग साँवरे कू, हा... जा... जा...”

(श्रीराधाके मुखपर पसीनेके बिन्दु झलकने लगते हैं। सारा शरीर काँप जाता है। ललिता पकड़ लेती हैं।)

ENGLISH TRANSLATION

The yoginī sings in an exquisitely sweet elaboration, "Beloved, I shall keep You within my very eyes."

(Distracted again, Rādhā glances at Lalitā.)

Lalitā laughs softly. "You are so innocent. This is called a hymn to the attributeless Absolute. Renunciant sādhus sing such songs."

The yoginī raises her voice, "Destroy every break, O Dark One..."

(Drops of perspiration appear upon Rādhā's face and Her whole body trembles. Lalitā supports Her.)

ORIGINAL

ललिता, अञ्चलसे श्रीराधाके मुखको पोंछती हुई अत्यन्त प्रेमभरे स्वरमें, “बावरी सखी! इस योगिनीका साँवला तुम्हारा श्यामसुन्दर नहीं है। योगिनी ‘पिया’, ‘साँवल’ कह-कहकर, ‘पिया’, ‘साँवल’ के गीत गा-गाकर अपने अङ्गकी ज्योतिका ध्यान करती है। समझी?”

(श्रीराधा चुपचाप भजन सुनती हैं। थोड़ी देर बाद योगिनीका भजन समाप्त हो जाता है। तानपूरा धीरेसे कन्धेपर रखकर आँखें मुँदे हुए इस प्रकारसे बैठ जाती है मानो समाधिस्थ हो गयी हो।)

राधा, “ललिते! पता नहीं क्यों, योगिनी मुझे बड़ी प्यारी लग रही है। इसकी ओर मेरा मन बरबस खिंचता चला जा रहा है। तू पूछ तो सही कि यह कहाँ रहती है?”

ललिता, हँसकर, “क्यों, योगिनी बनेगी क्या?”

राधा, “ललिते! तू विनोद करती है और मेरा मन...”

ललिता, अत्यन्त प्यारसे, “रुष्ट मत होओ, अभी पता लगाती हूँ।”

ENGLISH TRANSLATION

Wiping Rādhā's face with her veil, Lalitā says lovingly, "My foolish friend, this yoginī's Dark One is not Your Śyāmasundara. When she sings of 'Beloved' and 'Dark One,' she meditates upon the light within her own limbs. Do You understand?"

(Rādhā listens silently. The hymn ends. The yoginī gently rests the tānpūrā upon her shoulder and sits with closed eyes as though absorbed in samādhi.)

"Lalitā, I do not know why, but this yoginī seems very dear to Me. My mind is being irresistibly drawn toward her. Ask where she lives."

"Why, do You intend to become a yoginī?"

"Lalitā, you jest while My heart..."

"Do not be angry. I shall ask her now."

ORIGINAL

(ललिता योगिनीके पास जाती हैं तथा हाथ टेककर योगिनीके चरणोंमें प्रणाम करती हैं। योगिनी आँखें खोलती है तथा 'अलख-अलख' कहकर गम्भीर मुद्रा बनाती है।)

ललिता, बड़ी विनयसे, "योगिनी मैया! कहाँ रहती हो?"

योगिनी, "अलख! अलख!! तू जानकर क्या करेगी?"

ललिता, "मेरी एक सखी है, उसकी तुम्हारे ऊपर बड़ी भक्ति हो गयी है, इसलिये वह जानना चाहती है।"

योगिनी, "उसको आवश्यकता होगी तो अपने-आप पूछ लेगी। हूँ!"

ललिता, "उसे लज्जा लगती है, इसलिये मुझे भेजा है।"

योगिनी, "अलख! अलख!! मैं कहाँ आ फँसी?"

(योगिनी आँखें मूँद लेती है। ललिता कुछ देरतक प्रश्न करती हैं, पर आँखें नहीं खोलनेपर श्रीराधाके पास चली जाती हैं। श्रीराधा एकटक योगिनीको देखती हैं।)

ENGLISH TRANSLATION

(Lalitā approaches, bows at the yoginī's feet, and supports herself with her hands. The yoginī opens her eyes, cries, "Alakh! Alakh!" and assumes a grave expression.)

Humbly Lalitā asks, "Mother Yoginī, where do you live?"

"Alakh! What will you do with that knowledge?"

"One of my friends has developed deep devotion to you and wishes to know."

"If she needs to know, she will ask for herself. Huh!"

"She is shy, so she sent me."

"Alakh! Where have I become trapped?"

(The yoginī closes her eyes. Lalitā questions her for a while, but when she will not reopen them Lalitā returns. Rādhā continues gazing at the yoginī.)

ORIGINAL

राधा, "अच्छा, देख! मैं पता लगाती हूँ।"

(श्रीराधा योगिनीके पास जाती हैं। अब भीड़ कम हो जानेसे श्रीराधाकी सखियाँ एवं दो-तीन अन्य गोपियाँ बच रहती हैं।)

राधा, कुछ क्रोधभरे एवं उपेक्षाभरे स्वरमें, "री योगिनी! तू कहाँसे आयी है? आँखोंमें भरा है राग और स्वाँग पहन लिया है वैराग्यका! योग निभनेका नहीं है।"

(योगिनी आँखें खोलकर देखने लगती है।)

राधा, "हूँ, आयु है थोड़ी, मन है कच्चा, और उसपर तूने पाया है यह अनुपम रूप, फिर ऐसा स्वाँग क्यों लिया?"

(योगिनी 'अलख-अलख' कहने लगती है।)

राधा, "सच कहती हूँ, तुम्हारी आँखें कहती हैं कि तुम्हारे मनमें कुछ चाह है। भोगकी चाह और वेष वैराग्यका! क्या कहना है?"

(योगिनी 'अलख-अलख' उच्च स्वरसे पुकार उठती है।)

ENGLISH TRANSLATION

"Very well, I shall find out Myself."

(Rādhā approaches the yoginī. The crowd has thinned until only Her sakhīs and two or three other gopīs remain.)

With anger and disdain in Her voice, Rādhā says, "You yoginī, where have you come from? Your eyes are filled with passion, yet you wear the costume of renunciation. Your yoga will not endure."

(The yoginī opens her eyes.)

"You are young, your mind immature, and you possess such incomparable beauty. Why assume this disguise?"

(The yoginī repeats, "Alakh! Alakh!")

"Truly, your eyes reveal a desire within your mind. Desire for enjoyment, but the dress of renunciation. How remarkable!"

(The yoginī loudly cries, "Alakh! Alakh!")

ORIGINAL

राधा, उपेक्षाके स्वरमें, “योगिनी! अभी कुछ भी बिगड़ा नहीं है। चल मेरे साथ राजभवनमें और सच बता दे कि तू क्या चाहती है।”

(योगिनी ‘अलख-अलख’ कहती हुई ठहाका मारकर हँस पड़ती है। इधर चित्रा धीरेसे राधाको पकड़कर कुछ दूर ठेल देती हैं।)

चित्रा, राधाके कानके पास मुँह ले जाकर उसे और बोलनेके लिये मना करके, फिर योगिनीसे, “योगिनी मैया! मेरी यह सखी बड़ी चञ्चल है, पर हृदयकी बड़ी सरल है। बुरा मत मानना मैया!”

योगिनी, हँसती हुई, “अलख! अलख!! हूँ, वृषभानु राजाकी लाडिली है। भला, मनमें अभिमान क्यों न रहे! राजपुत्री है, इसीलिये योगिनीकी परीक्षा लेती है, योगिनीसे विनोद करती है, योगिनीको भोगका लालच देती है। हूँ!”

ENGLISH TRANSLATION

With contempt Rādhā says, "Nothing has yet been ruined. Come with Me to the palace and tell Me truthfully what you desire."

(The yoginī cries "Alakh!" and bursts into laughter. Citrā gently takes Rādhā and pushes Her a little distance away.)

After whispering that Rādhā should say no more, Citrā tells the yoginī, "Mother, my friend is very restless, but Her heart is utterly simple. Please do not take offense."

Laughing, the yoginī answers, "Alakh! She is King Vṛṣabhānu's darling. Naturally there is pride in Her heart. She is a princess, so She tests a yoginī, jokes with a yoginī, and tempts a yoginī with worldly enjoyment. Huh!"

ORIGINAL

(श्रीराधा हँसती हुई योगिनीके पास फिर चली जाती हैं और पासमें बैठकर अत्यन्त प्रेमसे उसके एक हाथको पकड़ लेती हैं। योगिनी एक बार काँप जाती है।)

राधा, हँसकर, “योगिनी! तू रुष्ट हो गयी क्या?”

योगिनी, “अलख! अलख!! योगिनी भी कहीं रुष्ट होती है?”

राधा, साहमभरे स्वरमें, “योगिनी! सचमुच तू मुझे बड़ी प्यारी लग रही है, इसलिये विनोद कर बैठी।”

योगिनी, हँसकर, “अलख! अलख!! विनोद करनेसे तुझे सुख मिला, फिर और क्या चाहिये?”

राधा, उत्साहभरे स्वरमें, “तू मेरी एक प्रार्थना स्वीकार करेगी?”

योगिनी, “बोलो!”

राधा, आशाभरे स्वरमें, “तू मेरे साथ मेरे राजभवनमें चल।”

(योगिनी ठहाका मारकर हँस पड़ती है।)

ENGLISH TRANSLATION

(Laughing, Rādhā returns, sits beside the yoginī, and lovingly takes one of her hands. The yoginī trembles.)

"Yoginī, are you angry?"

"Alakh! Is a yoginī ever angry?"

With innocent feeling Rādhā says, "You truly seem very dear to Me, and so I jested."

"Alakh! Your joke brought you pleasure. What else do you need?"

Eagerly Rādhā asks, "Will you grant Me one request?"

"Speak."

"Come with Me to My royal residence."

(The yoginī bursts into laughter.)

ORIGINAL

राधा, “क्यों, हँसी क्यों?”

योगिनी, “अलख! अलख!! तू हँसनेकी बात करे तो मैं हँसूँ नहीं?”

राधा, “क्यों, मेरे राजभवन चलनेमें क्या कोई पाप है?”

योगिनी, अत्यधिक हँसती हुई, “अलख! अलख!! भला तू ठहरी राजपुत्री और मैं हूँ योगिनी, मेरा-तेरा क्या सम्बन्ध? हा... हा...”

राधा, उदास-सी होकर, “देख, साँझ हो चली है, तू कहीं भी तो रात बितायेगी ही?”

योगिनी, “रात तो बिताऊँगी ही, पर वनमें। राजभवनमें क्यों जाऊँ?”

(ललिता योगिनीके पास जाकर बैठ जाती है।)

ENGLISH TRANSLATION

"Why do you laugh?"

"Alakh! You say something laughable, and I should not laugh?"

"Is there some sin in coming to My palace?"

Laughing heartily, the yoginī says, "Alakh! You are a princess and I a yoginī. What relation could there be between us?"

Growing sad, Rādhā says, "Evening is approaching. You must spend the night somewhere."

"I shall spend it in the forest. Why would I go to a palace?"

(Lalitā sits beside the yoginī.)

> ORIGINAL
>
> ललिता, “योगिनी मैया! मैंने सुना है कि भगवान् भक्तोंकी चाह रखते हैं। तुम योगिनी हो, भगवान्से मिल चुकी हो, फिर तुम्हें भी तो मेरी सखीकी प्रार्थना सुननी ही चाहिये।”
>
> योगिनी, “अलख! अलख!! तुमलोग भोली हो। देखो, मैं योगिनी हूँ। मुझे आसन स्थिर करना है, मनका संयम करना है, इसीलिये वन-फल खाकर प्राण धारण करना है। मैंने संसार छोड़ दिया है और तुम कहती हो कि राजभवनमें चलो! भला, ऐसी भी प्रार्थना मानी जाती है?”
>
> राधा, “योगिनी! क्यों झूठ-मूठ बातें बनाती है? अच्छा, सच बता, क्या कभी तू राजभवनमें नहीं ठहरी है?”
>
> योगिनी, कुछ गम्भीर होकर, “ठहरी क्यों नहीं हूँ, बहुत बार ठहरी हूँ।”
>
> राधा, “तो कुछ दिन मेरे यहाँ भी ठहरनेमें तेरा क्या बिगड़ जायेगा?”

ENGLISH TRANSLATION

Lalitā says, "Mother Yoginī, I have heard that God cherishes His devotees' wishes. You are a yoginī and have met God, so surely you too should hear my friend's prayer."

"Alakh! You are innocent. I am a yoginī. I must steady my posture and control my mind, sustaining life upon forest fruits. I have renounced the world, yet you ask me to enter a palace. How could such a request be granted?"

"Why invent false excuses? Tell Me truly, have you never stayed in a palace?"

Growing serious, she says, "Of course I have, many times."

"Then what harm would come from staying with Me for a few days?"

ORIGINAL

योगिनी, “अलख! अलख!! क्या बताऊँ?”

राधा, प्रेमसे हाथको फिर पकड़कर, “हाँ-हाँ, निःसंकोच बता दे, क्यों नहीं चलना चाहती?”

योगिनी, “अलख! अलख!! कहाँ आकर फँस गयी?”

राधा, “योगिनी! मेरा हृदय तुम्हें देखकर उमड़ा आ रहा है। तुम्हें मेरी शपथ, चलनेमें जो अड़चन हो, वह बता दे, मैं दूर कर दूँगी।”

योगिनी, “अलख! अलख!!”

राधा, “तुम्हें बताना पड़ेगा, आज बिना बताये मैं तुमको छोड़नेवाली नहीं हूँ।”

योगिनी, हँसकर साँवरे-साँवरे गुनगुनाती हुई:

“भोजन भूखो हो नहीं मन न भावत और।

प्रति सुन्दर आदर गहो हम बिनमें निधि ठौर॥”

राधा, आशाभरे स्वरमें, “तो एक बार चल कहीं! अगर हो तो लौट आना।”

योगिनी, “अलख! अलख!! कहाँ आकर फँस गयी?”

राधा, “तू कह दे कि सर्वथा साधारण-सी बात है, जो हमलोग पूछेंगी। तंग नहीं करेंगी।”

ENGLISH TRANSLATION

"Alakh! What can I tell You?"

Taking her hand again, Rādhā says, "Tell Me without hesitation why you will not come."

"Alakh! Where have I become trapped?"

"My heart overflows upon seeing you. By My oath, tell Me the obstacle and I shall remove it."

"Alakh!"

"You must tell Me. I shall not release you today without an answer."

Laughing, the yoginī softly hums:

"I hunger not for food, nor does any other thing please the mind.

Welcome the supremely beautiful One, the treasure and refuge within us."

Hopefully Rādhā says, "Then come just once. If there is difficulty, you may return."

"Alakh! Where have I become trapped?"

"Only with ordinary questions. We shall not torment you."

ORIGINAL

राधा, ललिताको आँखोंके संकेतद्वारा योगिनीकी बाँह पकड़नेके लिये कहकर, “बस, अब तो नहीं छोड़ेंगी। आज रात निवासके लिये तो तुम्हें ले ही जाऊँगी।”

(ललिता योगिनीकी बाँह पकड़ लेती हैं। योगिनी ऐसी मुद्रा बनाती है मानो बहुत असमञ्जसमें पड़ गयी हो; किंतु तुरन्त बाँह छुड़ाकर कहती है:)

योगिनी, “देखो, तुमलोग समझती नहीं। इस प्रकार हमारी साधना चौपट करोगी क्या?”

राधा, “चल, चल! साधनाकी बातें बनाती हो। साधनाकी आड़में बहकाना चाहती हो। मैं तेरी सब बातें समझ रही हूँ।”

योगिनी, “देखो, वृषभानुलाडिली! आज नहीं, कल। वचन देती हूँ, कल आऊँगी।”

राधा, “मैं तो छोड़नेकी नहीं। पता नहीं, तू भाग जायेगी तो! कलका क्या भरोसा?”

ENGLISH TRANSLATION

Signaling Lalitā to catch the yoginī's arm, Rādhā says, "We shall not release you now. I shall certainly take you with Me for tonight's lodging."

(Lalitā catches her arm. The yoginī pretends to be greatly perplexed, then swiftly frees herself.)

"You do not understand. Will you ruin our spiritual practice in this way?"

"Come now. You merely speak of spiritual practice, using it as a pretext to mislead Us. I understand everything you say."

"Darling of Vṛṣabhānu, not today. Tomorrow. I promise to come tomorrow."

"I shall not let you go. Who knows whether you will flee? What assurance is there of tomorrow?"

ORIGINAL

(ललिता योगिनीके पास जाकर बैठ जाती हैं और निराशाभरे स्वरमें राधाके कानमें कुछ कहती हैं।)

ललिता, “योगिनी मैया! तुम्हारा हृदय इतना कठोर क्यों है? भगवान्को पानेके बाद भी क्या साधना करनी पड़ती है? क्यों हमलोगोंकी वञ्चना करती हो?”

योगिनी, कुछ लजायी-सी होकर, “देखो, तुमलोग अभी बच्ची हो। सच बात समझ ही नहीं सकती।”

राधा, उदास होकर, “समझती नहीं, ठीक; पर यह ठीक जानती हूँ कि इस समय तुम केवल बड़ी-बड़ी बातें बना रही हो।”

ENGLISH TRANSLATION

(Lalitā sits beside the yoginī and whispers something into Rādhā's ear in a disappointed voice.)

"Mother Yoginī, why is your heart so hard? Must one still practice after attaining God? Why do you deceive us?"

Somewhat embarrassed, the yoginī says, "You are still children and cannot understand the truth."

Sadly Rādhā answers, "Perhaps I do not understand, but I know perfectly well that at present you are only making grand excuses."

ORIGINAL

योगिनी, श्रीराधाको प्रसन्न करनेकी मुद्रामें, “वृषभानुलाडिली! देखो, खीझो मत। हम योगिनियोंको लोक-संग्रह देखना पड़ता है। थोड़ी देरके लिये मान लो, मेरा कुछ नहीं बिगड़ेगा; पर यदि मेरी देखा-देखी और भी अल्प आयुवाली योगिनियाँ राजभवनोंमें जाकर तुम्हारी-जैसी हठीलियोंकी सेवा स्वीकार करने लग जायें, तब तो अनर्थ हो जाये न? क्यों, तुम्हीं सोचो!”

(श्रीराधा कुछ नहीं बोलतीं।)

योगिनी, “क्यों, रुष्ट हो गयी क्या?”

राधा, “योगिनी! रुष्ट होनेकी बात नहीं है। तुम्हें मैंने आज पहले-पहल देखा है, पर मेरा मन बरबस तुम्हारी ओर खिंच गया है। तुम्हें घर ले चलनेकी बड़ी लालसा होती है, इसीसे कहती हूँ।”

ENGLISH TRANSLATION

Trying to please Rādhā, the yoginī says, "Darling of Vṛṣabhānu, do not be annoyed. We yoginīs must consider the welfare and example of the world. Suppose I consent briefly. Nothing would happen to me. But if, following my example, other young yoginīs began entering palaces and accepting the service of obstinate girls like You, would that not create disaster? Consider it Yourself."

(Rādhā says nothing.)

"Are You angry?"

"There is no question of anger. I saw you for the first time today, yet My mind has been irresistibly drawn toward you. I feel an intense longing to take you home, and that is why I ask."

ORIGINAL

(योगिनी ऐसी मुद्रा बनाती है मानो विचारमें पड़ गयी हो।)

ललिता, “योगिनी मैया! मेरी प्रार्थना मान लो। सच कहती हूँ, मेरी सखी-जैसी सरल हृदयकी दासीकी सेवा तुम्हें जीवनमें न मिली होगी, न मिलेगी।”

योगिनी, “अलख! अलख!! चलो। क्या करें! तुमलोगों-जैसी नासमझोंको प्रसन्न करना ही पड़ेगा।”

(श्रीराधा आनन्दमें भरकर योगिनीका कन्धा पकड़कर ले चलती हैं। मुख्य द्वारसे न जाकर अपने उद्यानके द्वारसे अपने शयनागारमें पहुँचती हैं। वहाँ अत्यन्त आदरसे योगिनीको अपने सोनेके पलंगपर बैठाती हैं। वे इस प्रकार देखने लगती हैं मानो योगिनीके रूपको पी जाना चाहती हों।)

ENGLISH TRANSLATION

(The yoginī acts as though pondering.)

Lalitā says, "Mother, accept my prayer. In all your life you have never received, nor will you ever receive, the service of a maidservant whose heart is as simple as my friend's."

"Alakh! Very well, let us go. What else can I do? One must please innocent girls like you."

(Filled with joy, Rādhā takes the yoginī by the shoulder. Rather than use the main entrance, She leads her through the garden gate into Her bedchamber and respectfully seats her upon Her golden bed. Rādhā gazes as though wishing to drink in the yoginī's beauty.)

ORIGINAL

राधा, “योगिनी! आजतक मैं जानती थी, जगतमें एक ही सुन्दर है; पर ठीक वैसी सुन्दरता तुमने कहाँसे पा ली? योगिनी! एक बात...”

(योगिनी आँखें मूँद लेती है।)

राधा, ललितासे धीरे-धीरे, “ललिते! योगिनीका अतिथि-सत्कार कैसे होता है, वह तो मैं नहीं जानती। अब क्या होगा?”

विशाखा, धीरेसे, “कोई चिन्ता नहीं। मैं जानती हूँ। उस दिन सारंग बाबा आये थे। कीर्ति मैयाने जैसे-जैसे किया था, वह सब मैंने देखा था, वैसे ही कर दूँगी। अरे! वे योगी थे, यह योगिनी है। बात तो एक ही है।”

(श्रीराधा प्रसन्न हो जाती हैं और विशाखाके कानमें कुछ कहती हैं।)

ENGLISH TRANSLATION

"Yoginī, until today I believed there was only one beautiful person in the world. From where have you acquired precisely the same beauty? Yoginī, one thing..."

(The yoginī closes her eyes.)

Rādhā quietly asks Lalitā, "I do not know how to honor a yoginī as a guest. What shall We do?"

Viśākhā whispers, "Do not worry. I know. When Sāraṅga Bābā came, I watched everything Mother Kīrti did and shall do the same. He was a yogī and this is a yoginī. It is all one matter."

(Rādhā is pleased and whispers something to Viśākhā.)

ORIGINAL

विशाखा, धीरेसे, “मैं जैसे-जैसे कहूँ, वैसे-वैसे करती चली जा।”

(विशाखा बहुत ही सुन्दर सोनेकी परात लाती हैं। ललिता अपने एक हाथमें सुन्दर वस्त्र लेकर खड़ी हो जाती हैं। चित्रा स्वर्ण-कलश लेकर जल देनेकी मुद्रामें खड़ी होती हैं।)

विशाखा, “योगिनी मैया! चरण धोनेकी आज्ञा देकर हमलोगोंको कृतार्थ करो!”

(योगिनी ‘अलख-अलख’ कहती हुई चरणोंको परातमें रख देती है।)

विशाखा, श्रीराधासे धीरे-धीरे, “तू यह कह कि आज हमलोग कृतार्थ हो गयीं।”

राधा, “योगिनी! आज हमलोग कृतार्थ हो गयीं।”

योगिनी, “अलख! अलख!!”

(चरण धोये जाते हैं। वस्त्रसे पोंछकर श्रीराधा अकस्मात् कुछ काँप-सी जाती हैं और आश्चर्यभरी दृष्टिसे चरणोंके तलवेकी ओर देखने लगती हैं। इतनेमें चित्रा सोनेके गिलासमें शर्बत लाकर श्रीराधाके हाथमें पकड़ा देती हैं।)

ENGLISH TRANSLATION

Viśākhā says softly, "Do exactly as I instruct."

(She brings a beautiful golden basin. Lalitā stands holding a fine cloth, while Citrā waits with a golden water vessel.)

"Mother Yoginī, bless us by permitting us to wash your feet."

(Crying "Alakh!" the yoginī places her feet in the basin.)

Viśākhā whispers, "Say that today we have been fulfilled."

"Yoginī, today We have been fulfilled."

"Alakh!"

(They wash and dry her feet. Rādhā suddenly trembles and stares in wonder at the soles. Citrā places a golden glass of sherbet in Her hand.)

ORIGINAL

(विशाखाके संकेतके अनुसार श्रीराधा शर्बतके गिलासको योगिनीके होठोंसे लगाना चाहती हैं।)

योगिनी, कुछ लजायी हुई-सी, “वृषभानुलाडिली! रुष्ट न होओ तो एक बात कहूँ।”

राधा, “कहो!”

योगिनी, “बड़ा संकोच होता है, पर कहे बिना काम भी नहीं चलता।”

राधा, “बता, संकोच क्या है?”

योगिनी, “तुमलोगोंने सुना होगा, जिस प्रकारका अन्न खाया जाता है, वैसी बुद्धि बनती है। यहाँतक कि भोजन परोसनेवालेके मनमें जो विचार होता है, उसके परमाणुका भी प्रभाव पड़ता है।”

राधा, “तो?”

योगिनी, बहुत ही संकोचकी मुद्रा बनाकर, “रुष्ट मत होना। तू तो किसी पुरुषका ध्यान कर रही है।”

ENGLISH TRANSLATION

(At Viśākhā's signal Rādhā raises the sherbet toward the yoginī's lips.)

Somewhat bashfully the yoginī says, "Darling of Vṛṣabhānu, if You will not be angry, may I say something?"

"Speak."

"I feel great hesitation, yet I cannot avoid saying it."

"Tell Me what causes your hesitation."

"You have heard that one's mind takes on the quality of the food one eats. Even the subtlest particle of thought in the mind of the person serving the meal exerts an influence."

"And?"

With exaggerated shyness she says, "Do not be angry. You are meditating upon a man."

ORIGINAL

(श्रीराधा गिलास योगिनीके होठोंसे हटाकर ललिताके हाथमें दे देती हैं और कुछ लजायी-सी होकर खड़ी रह जाती हैं।)

योगिनी, हँसने लगती है, “हा... अरे! हमें डर नहीं है। लाओ, लाओ, मैं तो भाग हूँ। मेरेमें तो सब भस्म हो जायेगा। मैं तो तुमसे विनोद कर बैठी। बुरा मत मानना!”

(श्रीराधा उत्साहपूर्ण होकर गिलास पुनः ललिताके हाथसे लेकर योगिनीके होठोंसे लगाती हैं।)

राधा, धीरेसे ललिताके कानमें, “ललिते! यह तो मनकी बात जानती है।”

ललिता, कुछ टोहभरी दृष्टिसे योगिनीकी ओर देखकर, “योगिनी मैया! हमलोगोंको योगकी कुछ बात सुनाओगी?”

ENGLISH TRANSLATION

(Rādhā draws the glass away, hands it to Lalitā, and stands shyly.)

The yoginī laughs. "Do not fear. Bring it. I am ash itself, and everything will be reduced to ash within me. I merely jested with You. Do not take offense."

(Encouraged, Rādhā takes the glass again and offers it to her lips.)

She whispers to Lalitā, "She knows what lies within the mind."

Looking searchingly at the yoginī, Lalitā asks, "Mother, will you tell us something of yoga?"

ORIGINAL

योगिनी, “अलख! अलख!! मैं भूल गयी, मुझसे भूल हो गयी। तुमलोगोंने समझा होगा, योगिनी मनकी बात जानती है। ओह! क्या करूँ? अलख! अलख!!”

ललिता, “मैया! हमलोग तो आपकी दासी हैं। दासियोंपर तो दया होनी ही चाहिये। दासीके सामने अपनेको छिपाना उचित नहीं।”

योगिनी, गम्भीर होकर, “छिपानेकी बात नहीं, पर तुमलोग मुझे रातभर तंग करोगी जो?”

ENGLISH TRANSLATION

"Alakh! I made a mistake. You must now think that a yoginī knows the thoughts of the mind. What shall I do? Alakh!"

"Mother, we are your maidservants. Surely you must show compassion to servants. It is not proper to conceal yourself from them."

Gravely the yoginī says, "There is nothing to conceal, but will you trouble me all night?"

ORIGINAL

ललिता, “मैया! हमलोगोंने तंग करनेके लिये थोड़े ही बुलाया है। तुम्हींने जो कुछ कहा, उसीके सम्बन्धमें कुछ पूछना चाहती हैं।”

योगिनी, “पूछो!”

(श्रीराधा ललिताके कानमें कुछ देरतक कुछ कहती हैं।)

ललिता, “मैया! तुमने अभी कहा कि मेरी सखी किसी पुरुषका ध्यान कर रही है। क्या तुम योगसे देखकर उसका रूप-रंग बता सकती हो?”

योगिनी, “अलख! अलख!! ये बातें तो बहुत साधारण हैं। ऐसी बातें तो मनचाही जितनी पूछ सकती हो। अरे, मैंने सोचा था, तुमलोग सम्भवतः...”

ललिता, उत्साहसे, “नहीं! नहीं!! हमलोग केवल बस, अपनी सखीके प्रियतमकी बात ही पूछेंगी और कुछ नहीं।”

ENGLISH TRANSLATION

"Mother, we have not invited you to trouble you. We only wish to ask about what you yourself said."

"Ask."

(Rādhā whispers at length into Lalitā's ear.)

"You said that my friend is meditating upon a man. Can you see through yoga and describe his appearance?"

"Alakh! Such matters are very ordinary. You may ask as many such questions as you desire. I had thought perhaps you would..."

"No, no. We shall ask only about our friend's beloved and nothing else."

ORIGINAL

(योगिनी थोड़ी देरतक आँखें मूँदकर बैठी रहती है। फिर हँस पड़ती है।)

ललिता, “हँसी क्यों?”

योगिनी, “तुम्हारी सखीके प्रियतमका रूप-रंग वर्णन करनेके लिये ध्यान करके देखा तो बरबस हँस पड़ी।”

ललिता, उतावलीभरे स्वरमें, “क्यों, क्या है? वह इस समय क्या कर रहा है?”

योगिनी, आँखें मूँदी रखकर, “ओह! तुम्हारी सखी इतनी भोली और वह इतना धूर्त! क्या कहना है? अच्छी जोड़ी मिली है।”

ललिता, बड़ी उत्कण्ठासे, “क्यों-क्यों, क्या बात है?”

योगिनी, हँसती हुई, आँखें मूँदी रखकर ही, “कुछ मत पूछो! बाहरसे उसके रंग-ढंगको देखकर लोग तो समझेंगे, संसारसे विरक्त है।”

ENGLISH TRANSLATION

(The yoginī closes her eyes for a while, then laughs.)

"Why do you laugh?"

"I entered meditation to behold your friend's beloved and describe his appearance, and I could not help laughing."

Impatiently Lalitā asks, "Why? What is he doing now?"

Without opening her eyes the yoginī says, "Oh! Your friend is so innocent, and he such a rogue. What a perfectly matched pair!"

"Why? What is it?"

Still laughing with closed eyes, she answers, "Do not ask. Judging from his outward ways, people would think he had renounced the world."

ORIGINAL

योगिनी, कुछ ठहरकर, “धूर्तकी ऐसी धूर्तता! मगन आधे! मन इतना रंगीला और बाहर ऐसा विराग! क्या कहना!”

(श्रीराधा-ललिता सभी चकित होकर योगिनीकी ओर देखती हैं।)

ललिता, अतिशय उत्कण्ठित होकर, “मैया! कुछ बताओ तो सही!”

योगिनी, हँसकर, “अरे! क्या बताऊँ? बाहर तो ऐसा बना है मानो जगतसे सर्वथा विरक्त है और भीतर-ही-भीतर तुम्हारी सखीका ध्यान करते हुए एक पद गुनगुना रहा है। उस रंगीले रसिककी बलिहारी। अच्छा, मेरा तानपूरा ला दें। मैं उसका वही पद सर्वथा उसीके स्वरमें गाकर तुमलोगोंको सुना देती हूँ। देख, मेरे योगका प्रभाव!”

(ललिता तानपूरा योगिनीके हाथमें पकड़ा देती हैं।)

ENGLISH TRANSLATION

After a pause the yoginī says, "What astonishing deceit in such a rogue! His heart is so colorful while his exterior displays such renunciation. Remarkable!"

(Rādhā, Lalitā, and all the others stare in wonder.)

"Mother, tell us something clearly."

Laughing, she says, "What can I tell you? Outwardly he appears utterly detached from the world, but inwardly he meditates upon your friend and hums a song. I offer myself to that colorful connoisseur of rasa. Bring my tānpūrā. Through the power of my yoga I shall sing his very song in his own voice."

(Lalitā hands her the tānpūrā.)

ORIGINAL

Braj Bhāṣā song

तुव मुख चंद चकोर मेरे नयना।

अति आरत अनुरागी लपट भूख गई गति कछु लगे ना॥

बरसत मिलिवे को निसि दिन बिछुर रहत मनु कब मिले ना।

भगवतरसिक रसिक की बातें रसिक बिना कोउ समुझि सके ना॥

ENGLISH TRANSLATION

Your face is the moon, and my eyes are its cakora birds.

Tormented and passionately clinging, they have lost all hunger and heed no other course.

Night and day they yearn to meet You. Remaining separated, the heart wonders when union will come.

Bhagavatrāsika says: none but a rasika can understand the words of a rasika.

ORIGINAL

(गाते-गाते योगिनी चेतना-शून्य होकर गिर पड़ती है। श्रीराधा घबरा जाती हैं। ललिता गुलाबपाश लेकर योगिनीके मुखपर छींटा देने लगती हैं। इसी अस्त-व्यस्ततामें योगिनीके वस्त्र हट जाते हैं तथा कटिमें छिपायी हुई मुरली दीखने लग जाती है। ललिता हँस पड़ती हैं। श्रीराधा लजाकर कुछ अलग खड़ी हो जाती हैं। इतनेमें योगिनी उठ बैठती है। ललिता जोरसे हँसने लगती हैं, पर योगिनी लजायी हुई नहीं बोलती।)

ललिता, हँसकर, “यह योगिनी बड़ी विचित्र है, जो पुरुषके रूपमें बदल जाये। ऐसी योगिनीके दर्शन बड़े भाग्यसे हुए। हा... हा...”

ENGLISH TRANSLATION

(While singing, the yoginī loses consciousness and falls. Rādhā is alarmed, and Lalitā sprinkles rose water upon her face. In the commotion the yoginī's garments shift, revealing the flute hidden at her waist. Lalitā laughs while Rādhā withdraws in embarrassment. The yoginī sits up but remains silent in shame as Lalitā laughs aloud.)

"What a wondrous yoginī, able to change into a man. Only great fortune grants the sight of such a yoginī!"

ORIGINAL

(विशाखा योगिनीकी साड़ी खींच लेती हैं। साड़ी खिंचते ही योगिनीके स्थानपर श्रीश्यामसुन्दर दीखने लग जाते हैं। मरोड़कर छिपाया हुआ मुकुट नीचे गिर पड़ता है। चित्रा उठाकर उसे अपने सिरसे लगाकर उनके सिरपर बाँध देती हैं। श्रीराधा उनके चरणोंको पकड़कर हँसती हुई बैठ जाती हैं तथा निर्निमेष दृष्टिसे देखती रह जाती हैं। इतनेमें नटिया भोजनका थाल लाती हैं। आसन बिछाया जाता है। सखियाँ श्यामसुन्दरको भोजन कराती हैं। श्रीराधा अपने हाथसे परोसती हैं। तब ललिता योगिनी बने हुए श्यामसुन्दरके तानपूरेको कन्धेपर रखकर भोजनका पद गाती हैं।)

ENGLISH TRANSLATION

(Viśākhā pulls away the yoginī's sari, and Śrī Śyāmasundara appears in her place. The crown that He had twisted up and hidden falls to the floor. Citrā picks it up, touches it to her head, and ties it upon His. Laughing, Śrī Rādhā sits holding His feet and gazes at Him without blinking. Naṭiyā brings a meal tray, a seat is spread, and the sakhīs feed Śyāmasundara while Rādhā serves Him with Her own hands. Lalitā then places the false yoginī's tānpūrā upon her shoulder and sings a meal song.)

CHAPTER 31

विशेष ज्ञातव्य

A Special Note

Source scan pages 332–333

ORIGINAL

Sanskrit invocation and Hindi prose

॥ विजयेतां श्रीप्रियाप्रियतमौ ॥

विशेष ज्ञातव्य

श्रीप्रिया-प्रियतमकी जो नित्य लीला है, वह चलती ही रहती है। उसका दर्शन कोई विरले ही संत करते हैं। यह लीला एक क्षणके लिये भी नहीं रुकती; दिव्य वृन्दावनधाममें निरन्तर चलती ही रहती है। यहाँतक कि श्रीकृष्ण जब मथुरा एवं द्वारकाकी लीला करने चले जाते हैं, तब भी यह लीला चलती ही रहती है। वृन्दावनमें श्रीकृष्णकी कैशोर-लीलामें कभी विराम नहीं होता।

बहुत देरतक कहने-सुननेके बाद श्रीगोपियोंने इसी लीलाको उद्धवको दिखलाया था और कहा था, "उद्धव! यह देखो, श्रीश्यामसुन्दर एक क्षणके लिये भी यहाँसे बाहर नहीं गये हैं।"

फिर उद्धवने देखा था कि ठीक उसी प्रकार श्यामसुन्दर प्रतिदिन गायें चराने चले जाते हैं और प्रतिदिन आते हैं तथा प्रतिदिन श्रीगोपियोंके साथ उसी प्रकार लीला चलती ही रहती है। लीलाका यह रहस्य इतना विलक्षण है कि उसमें प्रवेश होनेके बाद ही पता चल सकता है कि उसमें क्या-क्या होता है। अधिकारी-भेदसे लीला प्रकट होती है। जैसे फिल्ममें आदिसे अन्ततककी लीला सजायी होती है, वैसे ही भगवानके रूपमें अनादि कालसे जितनी लीलाएँ हुई हैं, हो रही हैं एवं अनन्त कालतक जितनी होंगी, वे सब-की-सब सजाकर रखी हुई हैं। उस रहस्यको समझानेके लिये कोई दृष्टान्त नहीं है। सच्ची बात तो यह है कि श्रीकृष्णके द्वारा समझाये बिना उसे समझना असम्भव है।

ENGLISH TRANSLATION

May Śrī Priyā and Her Beloved be victorious!

A Special Note

The eternal līlā of Śrī Priyā and Her Beloved continues without cessation. Only rare saints behold it. It does not stop even for a moment, but unfolds perpetually in divine Vṛndāvana-dhāma. Even when Śrī Kṛṣṇa departs to enact His līlās in Mathurā and Dvārakā, this eternal līlā continues. Śrī Kṛṣṇa's youthful līlā in Vṛndāvana never pauses.

After much conversation, the gopīs revealed this very līlā to Uddhava and told him, "Uddhava, look! Śrī Śyāmasundara has not left this place even for a moment."

Uddhava then saw Śyāmasundara go out to graze the cows each day, return each day, and perpetually enact the same līlā with the gopīs. This mystery of līlā is so extraordinary that only after entering it can one discover all that occurs within it. The līlā manifests according to each person's spiritual eligibility. Just as an entire drama from beginning to end may be arranged within a film, so all the Lord's līlās, those enacted from beginningless time, those unfolding now, and those yet to unfold throughout endless time, remain eternally arranged within His divine form. No analogy can adequately explain this mystery. The truth is that it cannot be understood unless Śrī Kṛṣṇa Himself grants understanding.

CHAPTER 32

मधुपर्क

Madhuparka: Fifty-five Braj Songs with Explanations

Source scan pages 334–370

ORIGINAL

मधुपर्क षोडशोपचार-पूजनका एक आवश्यक अङ्ग है। भगवदर्चनामें मधुपर्क अर्पित किया जाता है। मधु-दधि-घृतादि वस्तुओंके सम्मिश्रणसे निर्मित होनेके बाद भी मधुपर्कका माधुर्य और प्रभाव इन सभी वस्तुओंमेंसे कुछ विशिष्ट प्रकारका होता है। ऐसा ही उत्कृष्टतर माधुर्य और गहनतर प्रभाव है इस पद-संकलनका और इसी हेतुसे पदोंका यह संकलन 'मधुपर्क' नामसे अभिहित है।

ये सम्पूर्ण पद ब्रजभाषाके विभिन्न भक्त-कवियोंके हैं। ब्रजभाषाका पद-साहित्य बहुत श्रेष्ठ तथा बड़ा विशाल है। भक्त-कवियोंने अपनी रचनाओंसे इसे अत्यधिक समृद्ध बनाया है। ये पद विभिन्न कवियोंद्वारा रचित होनेके बाद भी संकलन-शैलीकी विशिष्टताके कारण इस संग्रहका माधुर्य और प्रभाव कुछ विशेष प्रकारका है।

जिन संतके द्वारा इस पुस्तकमें प्रकाशित लीलाएँ लिपिबद्ध हुई हैं, उन्हीं संतके द्वारा ब्रजभाषाके विशाल पद-साहित्यमेंसे इन पचपन पदोंको चयनित करनेका एवं उन्हें एक क्रमबद्ध शृङ्खलामें संकलित करनेका कार्य सम्पन्न हुआ है। अपने वस्तु-गुणके कारण यह संकलन सभीके लिये परम उपादेय बन गया है। पदोंका संकलन इस रीतिसे किया गया है कि इनमें श्रीराधामाधवकी अष्टयाम-लीला स्वतः अनुस्यूत हो गयी है। संतके कथनानुसार ये सिद्ध पद भावोन्मेषमें सहयोग देंगे तथा इनके आश्रयसे भाव-राज्यका प्रवेश-पथ उद्भासित हो उठेगा।

स्वजनोंके आग्रहसे श्रीराधामाधवकी रसमयी लीलाओंके साथ-साथ इन पचपन पदोंको भी प्रकाशित किया जा रहा है। अर्थ-बोधकी सुगमताके लिये पदोंके साथ उनका भावार्थ भी प्रस्तुत है। अल्पमति और अल्पगतिके कारण भावार्थमें यदि पदोंका मर्म व्यक्त नहीं हो पाया हो तो विनम्र क्षमा-याचना है। यह मधुपर्क मधुरकी साध्यता और सिद्धिमें सहायक बने, यही आन्तरिक भावना है।

ENGLISH TRANSLATION

Madhuparka is an essential offering in the sixteenfold rite of worship. It is presented in the adoration of the Lord. Although made by blending honey, yogurt, clarified butter, and other substances, its sweetness and effect are distinctive from those of any ingredient alone. This collection of songs has a similarly elevated sweetness and deeper influence, and for that reason it has been named Madhupaka.

All these songs are in Braj Bhāṣā and were composed by different devotee-poets. Braj possesses a vast and excellent song literature, greatly enriched by those poets. Although the songs have many authors, the distinctive manner in which they have been arranged gives this anthology a special sweetness and force.

The saint whose līlās were transcribed in this book also selected these fifty-five songs from the immense Braj corpus and arranged them in a deliberate sequence. Their inherent quality makes the collection supremely beneficial to all. They have been ordered so that the eightfold daily līlā of Śrī Rādhā-Mādhava runs through them naturally. According to the saint, these perfected songs will assist the awakening of devotional feeling and illuminate the path into the realm of bhāva.

At the request of close devotees, these fifty-five songs are being published together with the nectar-filled līlās of Śrī Rādhā-Mādhava. To make their meaning accessible, each song is accompanied by a bhāvārtha. If limited understanding or ability has prevented that explanation from conveying the song's heart, humble forgiveness is requested. May this Madhupaka help the devotee attain and perfect divine sweetness. This is the heartfelt aspiration.

ORIGINAL

[१]

जय राधा जय सब सुख साधा जय जय कमलनयन बस करनी।

जय श्यामा जय सब सुख धामा जय जय मनमोहन मन हरनी॥

जय गोरी जय नित्य किसोरी जय जय भागति भरी सुभामिनि।

जय नागरि जय सुजस उजागरि जय जय श्रीहरिप्रिया जय स्वामिनि॥

कमलनयन श्रीकृष्णको वशमें करनेवाली और सब सुखोंको प्रस्तुत करनेवाली श्रीराधाकी जय हो! मनमोहन श्रीकृष्णके मनको हरनेवाली एवं सब सुखोंकी अधिष्ठात्री श्रीराधाकी जय हो! गौरवर्णा, नित्यकिशोरी, परम सौभाग्यशालिनी एवं नारीरत्नरूपा श्रीराधिकाकी जय हो! श्रीहरिप्रियाजी कहते हैं कि जिनकी सुन्दर कीर्तिसे सभी दिशाएँ कीर्तिमान् हो रही हैं, उन हमारी स्वामिनी श्रीराधिका नागरीकी जय हो!

ENGLISH TRANSLATION

[1]

Victory to Rādhā, fulfiller of every joy, who brings the lotus-eyed Lord beneath Her sway. Victory to Śyāmā, abode of all delight, who steals the heart of Manamohana. Victory to the fair, eternally youthful maiden, filled with devotion and supreme good fortune. Victory to the accomplished heroine whose fame illumines every direction. Śrī Haripriyā proclaims victory to our sovereign Lady, Śrī Rādhikā.

ORIGINAL

[२]

प्रात समय नव कुंज द्वार ह्वै ललिता ललित बजाई बीना।

पौढ़े सुनत श्याम श्रीश्यामा दंपति चतुर नवीन नवीना॥

प्रति अनुराग सुहाग भरे दोउ कोक कला जो प्रवीन प्रवीना।

चतुर्भुजदास निरखि दंपति सुख तन मन धन न्योछावर कीना॥

प्रातःकाल नवकुञ्जके द्वारपर श्रीललिताजी सुन्दर वीणा बजाने लगीं। नवकिशोरी श्रीराधा एवं नवकिशोर श्रीकृष्ण बड़े चतुर हैं। ये युगल श्यामा-श्याम भीतर लेटे-लेटे ललिताजीके यन्त्र-वादनको सुन रहे हैं। दोनों श्रोता अत्यन्त प्रेम एवं सौभाग्यके आगार हैं। वे प्रेम-कलाओंमें एकसे-एक बढ़कर पण्डित हैं। स्वामी चतुर्भुजदासजीने श्रीप्रिया-प्रियतमका यह सुख देखकर अपने तन, मन और धन, तीनोंको उनपर न्योछावर कर दिया।

ENGLISH TRANSLATION

[2]

At dawn Lalitā plays her graceful vīṇā at the entrance to the fresh bower. Within, youthful Śyāmā and Śyāma recline and listen. Both are filled with ever-new love and good fortune, each supremely accomplished in the arts of passion. Beholding the bliss of the Divine Couple, Caturbhujadāsa offers Them body, mind, and wealth.

ORIGINAL

[३]

प्यारी बलि कौन अनोखी बान।

ज्यों ज्यों भोर होत है त्यों त्यों पौढ़त हौ पट तानि॥

आलस तजहु अरुनई उदई गई निसा रति मानि।

श्रीहरिप्रिया प्रान धन जीवन सकल सुखन की खानि॥

हे सखी और हे प्राणप्यारे! तुम्हारी बलैया लेती हूँ। तुम लोगोंका यह कैसा अद्भुत स्वभाव हो गया है कि जैसे-जैसे प्रातःकाल होता है, वैसे-वैसे तुम लोग चादर तानकर सोने लगते हो। अरे, आलस्यका परित्याग करो। सूर्यका अरुण प्रकाश उदयाचलपर झलकने लगा है और जिस निशामें प्रेम-मिलनका आनन्द मनाया था, वह रात्रि भी व्यतीत हो गयी है। श्रीहरिप्रियाजी कहते हैं, तुम दोनों ही मेरे समस्त सुखोंकी खान, मेरे प्राण, धन और जीवन हो।

ENGLISH TRANSLATION

[3]

Beloved Pair, what a wondrous habit is Yours! The brighter the dawn becomes, the more deeply You draw up the coverlet and sleep. Abandon Your languor. The sun's red glow has risen, and the night of loving union has passed. Śrī Haripriyā says: You are my life, my treasure, and the mine of all my happiness.

ORIGINAL

[४]

मंगल आरति हरख उतारी।

मंगल कुंज महल वृंदाबन मंगल मूरति प्रीतम प्यारी॥

मंगल गान तान धुनि छाई बीन मृदंग बज सुखकारी।

मंगल सखी समाज मनोहर मंगल धूप महक मतवारी॥

मंगलमय नित उत्सव मंगल मोद बिनोद प्रमोद झपारी।

सरसमाधुरी निस दिन मंगल जिन छवि मंगल निज उर धारी॥

वृन्दावनके मङ्गलमय कुञ्ज-भवनमें श्रीप्रिया-प्रियतमकी मङ्गलमूर्ति विराजमान है। सखियाँ हर्षित होकर उनकी मङ्गल आरती उतार रही हैं। उनके मङ्गल गीतोंकी तान और ध्वनि चारों ओर व्याप्त हो रही है और वीणा एवं मृदङ्ग आदि वाद्य आनन्ददायक स्वर बज रहे हैं। सखियोंका मनोहर समूह भी मङ्गलमय है और धूपकी मादक सुगन्धिमें भी मङ्गल ही भरा हुआ है। वहाँ होनेवाले नित्यके मङ्गलमय उत्सव भी कल्याण करनेवाले हैं। हर्ष, आनन्द तथा रसकी कोई सीमा नहीं है। श्रीसरसमाधुरीजी कहते हैं, जिन्होंने इस मङ्गलमय छविको अपने हृदयमें धारण कर लिया है, उनके लिये अहर्निश मङ्गल-ही-मङ्गल है।

ENGLISH TRANSLATION

[4]

With joy the sakhīs offer auspicious ārati. Auspicious is the palace-bower of Vṛndāvana, and auspicious the forms of the Beloved and His darling. Blessed songs and melodies fill the air; vīṇā and mṛdaṅga sound delightfully. Blessed is the lovely company of sakhīs and the intoxicating fragrance of incense. Every eternal festival there bestows welfare, overflowing with delight, play, and rapture. Sarasamādhurī says: for one who holds this sacred vision within the heart, day and night bring nothing but blessing.

ORIGINAL

[५]

कुंज द्वार ललना अरु लालन उठाड़े दै गलबाँही री।

मूँद मूँद खोलत चल चंचल पलकन की सुधि नाहीं री॥

झुकि झुकि जात परस्पर दोऊ आलस अंगन माहीं री।

मुख अंबुज मकरंद प्रकासित ज्यों ज्यों वे जमुहाहीं री॥

बिथुरे बार कपोलन ऊपर श्रम कन मुख मलकाहीं री।

सरसमाधुरी स्त्रवत सुधा रस अलि पीवत न अघाहीं री॥

कुञ्जके द्वारपर लाडिली और लाल गलबाँही दिये हुए खड़े हैं। वे अपनी चञ्चल आँखोंको बार-बार बन्द करते और फिर खोलते हैं। वे ऐसे बेसुध हैं कि अञ्चल और उपरना कहाँ जा रहा है, इसकी भी सुधि उन्हें नहीं है। दोनों एक-दूसरेके अङ्गोंपर झुक-झुक पड़ते हैं और एक दिव्य आलस्यसे उनके अङ्ग-प्रत्यङ्ग शिथिल हुए जा रहे हैं। जब-जब वे जँभाई लेते हैं, तब सुवासके फैलनेसे प्रतीत होता है मानो उनके मुखरूपी कमलका मकरन्द झर रहा हो। उनके कपोलोंपर अलकावली बिथुर रही है तथा मुखमण्डलपर पसीनेकी बूँदें चमक रही हैं। श्रीसरसमाधुरीजी कहते हैं कि उनके मुख-कमलकी इस शोभासे ऐसा अमृत-रस प्रवाहित हो रहा है जिसका पान करते हुए अलियाँ, सखियाँ एवं भ्रमरियाँ, कभी तृप्त नहीं होतीं।

ENGLISH TRANSLATION

[5]

At the bower door the maiden and Her Beloved stand with arms around one another. Their restless eyelids close and open, and in their rapture They no longer notice where veil or shawl has fallen. Heavy with divine languor, They lean upon each other. Whenever They yawn, fragrance spreads as though nectar were spilling from Their lotus mouths. Curls lie scattered upon Their cheeks and beads of perspiration shine upon Their faces. Sarasamādhurī says: the bee-like sakhīs drink this streaming nectar yet never find satisfaction.

ORIGINAL

[६]

झूमक सारी हो तन गोरे।

जगमग रह्यो जराव को टीको छबि उठत कोर॥

रतन जटित के तरल तरौना मानो ह्वै जात रवि भोरें।

दुलरी कंठ निरखि नकबेसर पिय दुग भये हैं चकोरें॥

मंद्र मंद्र पग धरत बरनि पै हँसत लसत चित चोरें।

श्यामदास प्रभु रस बस कर लीते चपल नयन की कोरें॥

श्रीराधा अपने गोरे शरीरपर छोटे-छोटे झूमकोंकी किनारीदार साड़ी धारण किये हुए हैं। उनके जगमगाते जड़ाऊ टीकेसे मानो सौन्दर्यकी लहरें उठ रही हैं। रत्नजटित चञ्चल कर्णफूलकी छवि ऐसी लगती है मानो प्रातःकालीन सूर्य प्रकट हुए हों। कण्ठका दुलड़ा हार और नाककी बेसर देखकर प्रियतम श्रीकृष्णकी आँखें चकोर-सी हो गयी हैं। वे पृथ्वीपर धीरे-धीरे पद रखते हुए मन्द गतिसे चल रही हैं। उनकी सस्मित शोभा चित्तको चुरा लेती है। प्रेमी भक्त श्यामदास कहते हैं कि श्रीराधाकिशोरीने मेरे प्रभु श्रीकृष्णचन्द्रको अपने चञ्चल नेत्रोंके कटाक्षसे प्रेमके वशमें कर लिया है।

ENGLISH TRANSLATION

[6]

Upon Her fair body Rādhā wears a sari edged with tiny swinging tassels. Her jeweled forehead ornament flashes and sends waves of beauty outward. Her gem-set earrings seem like suns rising at dawn. Seeing the necklace at Her throat and the ornament upon Her nose, Her Beloved’s eyes become fixed like cakora birds. She walks with slow, gentle steps, smiling as She steals every heart. Śyāmadāsa says: with the corner of Her restless eye, Rādhā has brought my Lord wholly beneath love’s sway.

ORIGINAL

[७]

लटकत आवत कुंज भवन ते।

झुरि झुरि परत राधिका ऊपर जागत सिथिल गवन ते॥

चौंक परत कबहूँ मार्ग बिच चलत सुगंध पवन ते।

भर उसाँस राधा बियोग भय सकुचे दिवस रवन ते॥

आलस मिस प्यारे न होत हैं नेकहूँ प्यारी तन ते।

रसिक टरौ जिन दसा श्याम की कबहूँ मेरे मन ते॥

श्रीप्रिया-प्रियतम झूमते हुए कुञ्ज-भवनसे आ रहे हैं। वे श्रीप्रियाजीके ऊपर झुक-झुक पड़ रहे हैं। मन्द गतिसे चल रहे हैं और इस चलनेसे ही जाग-जाग पड़ते हैं। सुरभित समीर प्रवाहित हो रहा है। कभी मार्गमें उसका झोंका लगता है तो वे चौंक पड़ते हैं। सूर्यके उदय होनेसे श्रीराधिकाके वियोगकी आशङ्का करते हुए उसाँस भर रहे हैं और म्लान-से हो रहे हैं। आलस्यके मिससे प्रियतम श्रीकृष्ण प्यारीजीके अङ्गसे किंचित् भी पृथक् नहीं हो रहे हैं। रसिकरायजी कामना करते हैं कि श्यामसुन्दरकी यह प्रेम-दशा मेरे मानसपटलपर सदा अङ्कित रहे, कभी अन्तर्हित न हो।

ENGLISH TRANSLATION

[7]

Swaying as He comes from the bower, Śyāma repeatedly sinks against Rādhikā. Walking slowly, He awakens only by degrees. A fragrant breeze startles Him upon the path. At sunrise He fears separation from Rādhā, sighing deeply and growing pale. Under the pretext of drowsiness He will not part from Her body even slightly. Rasikarāya prays that this condition of Śyāma's love remain forever inscribed upon his mind.

ORIGINAL

[८]

जयति श्रीराधिके सकल सुख साधिके, तरुनि मनि नित्य नव तन किसोरी।

कृष्ण तन नील घन रूप की चातकी, कृष्ण मुख हिम किरन की चकोरी॥

कृष्ण मन भृंग बिश्राम हित पद्मिनी, कृष्ण दृग मृगज बंधन सुडोरी।

कृष्ण अनुराग मकरंद की मधुकरी, कृष्ण गुन गान रस सिंधु बोरी॥

परम अद्भुत अलौकिक तेरी गति लखि, मनसि साँवरे रंग अंग गोरी।

और आचरज मैं कहूँ न देख्यो सुन्यो, चतुर चौंसठ कला तदपि भोरी॥

बिमुख पर चित्त ते चित्त जाको सदा, करत निज नाह की चित्त चोरी।

प्रकृत यह गदाधर कहत कैसे बने, अमित महिमा इते बुद्धि थोरी॥

सम्पूर्ण सुखोंको प्रस्तुत करनेवाली, युवतीगणमें रत्नरूपा एवं नित्य नवीन कैशोरसे युक्त अङ्गोंवाली श्रीराधाकी जय हो। वे श्रीकृष्णचन्द्रके श्याम कलेवररूपी मेघावलीके लिये चातकी हैं और श्रीकृष्णके मुखचन्द्रके प्रति वैसे ही आसक्त हैं जैसे चन्द्रमाके प्रति चकोरी। श्रीकृष्णके मनरूपी भ्रमरको इस राधारूपी पद्मिनीपर ही विश्राम मिलता है। वे मानो रेशमकी ऐसी सुन्दर डोरी हैं जो श्रीकृष्णके नयनरूपी मृगोंको बाँध लेती है। वे श्रीकृष्ण-अनुरागरूपी मकरन्दका मधुकरीकी भाँति पान करती हैं और श्रीकृष्णके गुणगानसे प्रवाहित रसके समुद्रमें सदा डूबी रहती हैं। उनकी परम अद्भुत और अलौकिक गति देखो: शरीरका रंग गौर है, पर भीतर मनमें श्याम रंग भरा है। इससे भी बड़ा आश्चर्य यह है कि चौंसठ कलाओंमें निपुण होते हुए भी वे नितान्त भोली हैं। जिनका चित्त कभी दूसरोंकी ओर आकृष्ट नहीं होता, वही श्रीराधिका अपने स्वामी श्रीकृष्णके चित्तका सदा हरण करती रहती हैं। उनकी महिमा अपार और मेरी बुद्धि अत्यन्त अल्प है। गदाधरजी कहते हैं कि इनके स्वरूपका वास्तविक वर्णन कैसे हो सकता है?

ENGLISH TRANSLATION

[8]

Victory to Śrī Rādhikā, accomplisher of every joy, jewel among maidens, eternally fresh in youth. She is the cātaka bird longing for the rain cloud of Kṛṣṇa's dark form and the cakora bird devoted to the moonbeams of His face. She is the lotus where the bee of His mind finds rest, the silken cord that binds the deer of His eyes, the bee drinking the nectar of His love, and one immersed in the ocean of rasa arising from praise of His qualities. Her state is wondrous: Her limbs are fair, yet Her mind is dyed dark with Śyāma. Though expert in all sixty-four arts, She remains utterly innocent. Her mind never turns from Her Lord, yet She perpetually steals His mind. Gadādhara says: Her glory is infinite and my understanding small, so how could Her true nature be described?

ORIGINAL

[९]

नवल ब्रजराज को लाल ठाढ़ो सखी, ललित संकेत बट निकट सोहे।

देख री देख अनिमेष या वेष को, मुकुट की लटक त्रिभुवन जु मोहे॥

स्वेद कन अलक कछु झुकी सी रहत पलक, प्रेम को ललक रस रास कीये।

धन्य बड़भाग वृषभान नृपनंदिनी, राधिका अंस पर बाहु दीये॥

मनि जटित भूमि पर नव लता रही झूमि, कुंज छबि पुंज बरनी न जाई।

नंद नंदन चरन परस हित जान यह, मुनिन के मनन मिल पाँत लाई॥

परम अद्भुत रूप सकल सुख भूप यह, मदन मोहन बिना कुछु न भावे।

धन्य हरिभक्त जिनकी कृपा तें सदा, कृष्ण गुन गदाधर मिश्र गावे॥

सखी! नवकिशोर नन्दनन्दन श्रीकृष्ण संकेतवटके समीप खड़े कैसे सुन्दर लग रहे हैं। अरी, इस वेशको अपलक नेत्रोंसे देखती रह। मुकुट किंचित् तिरछा झुका है और उसकी लटकसे तीनों लोक मोहित हो रहे हैं। प्रेमके प्रबल आवेगमें भरकर उन्होंने रास-विलास किया है। इसीसे शरीरपर पसीनेकी बूँदें झलक रही हैं और पलकें कुछ झुकी हैं। वृषभानुनृपकी लाडिली श्रीराधिकाके बड़े भाग हैं, जिनके कन्धेपर वे अपनी भुजा रखे हैं। मणिजटित पृथ्वीपर नवीन लताएँ झूम रही हैं। परम मनोहर कुञ्जोंकी शोभाका वर्णन नहीं हो सकता। ये लताएँ और कुञ्ज मुनिजनोंके मनोंके साकार रूप हैं, जिन्होंने श्रीकृष्णके चरण-स्पर्शको परम वरेण्य मानकर यह रूप धारण किया है। इस अद्भुत रूपका दर्शन समस्त सुखोंका शिरोभूषण है। अब मदनमोहनके बिना कुछ भी प्रिय नहीं लगता। हरिभक्त धन्य हैं, क्योंकि उन्हींकी कृपासे गदाधर मिश्र सदा भगवान् श्रीकृष्णका गुणगान करता रहता है।

ENGLISH TRANSLATION

[9]

Friend, see how beautifully the youthful son of Vraja's king stands beside the trysting banyan. Gaze without blinking upon His attire: the tilt of His crown enchants all three worlds. After love-filled rāsa play, beads of perspiration shine upon Him, curls and eyelids droop, and longing for rasa fills Him. Fortunate indeed is King Vṛṣabhānu's daughter, upon whose shoulder He rests His arm. Fresh creepers sway above jewel-studded ground, and no words can contain the beauty of the bowers. They are the embodied minds of sages who assumed such forms to receive Kṛṣṇa's footprints. This wondrous form crowns every happiness. By the grace of Hari's devotees, Gadādhara Miśra continually sings Kṛṣṇa's virtues.

ORIGINAL

[१०]

सुमिरौ नट नागर वर सुंदर गोपाल लाल।

सब दुख मिटि जैहैं वे चितत लोचन बिसाल॥

अलकन की भलकन लखि पलकन गति भूल जात, भ्रू बिलास मंद हास रदन छदन अति रसाल।

निंदत रबि कुंडल छवि गंड मुकुर झलमलात, पिच्छ गुच्छ कृतावतंस इंदु बिमल बिंदु भाल॥

अंग अंग जित अनंग माधुरी तरंग रंग, बिसमद मद गयंद होत देखत लटकीलि चाल।

हसन लसन पीत बसन चारु हार वर सिंगार, तुलसि रचित कुसुम खचित पीन उर नवीन माल॥

ब्रज नरेस बंस दीप वृंदाबन वर महीप, वृषभान मान पात्र सहज दीन जन दयाल।

रसिक भूप रूप रास गुन निधान जान राय, गदाधर प्रभु जुबती जन मुनि मन मानस मराल॥

नटवर-नागर सुन्दर श्रीगोपाललालका स्मरण करो। उनके बड़े-बड़े नेत्रोंका स्मरण करते ही सब दुःखोंका नाश हो जायेगा। अलकावलीकी शोभा, भौंहोंकी भङ्गिमा, मन्द मुस्कान और रसभरे अधरोंकी मधुरिमा देखते समय पलकोंका पड़ना बन्द हो जाता है। दर्पणके समान गण्डस्थलमें झलमल प्रतिबिम्बित कुण्डलोंकी छवि सूर्यकी प्रभाको भी तिरस्कृत कर रही है। सिरपर मोरपंखकी कलँगी और ललाटपर निर्मल चन्द्रकी भाँति तिलक-बिन्दु है। कामदेवको जीतनेवाले उनके अङ्ग-प्रत्यङ्गकी माधुरी अपनी तरङ्गोंसे दिशाओंको रञ्जित करती है। उनकी लटकीली चालसे मत्त गजराजका अभिमान चूर्ण हो जाता है। पीताम्बर धारण किये उनका मुख हँसीसे प्रदीप्त है। सुन्दर हार और उत्तम श्रृङ्गार सुशोभित हैं। भरे वक्षस्थलपर पुष्पोंसे गुँथी नवीन तुलसीमाला है। वे व्रजराजके वंश-दीप, वृन्दावनके अधिपति, श्रीवृषभानुके आदरपात्र और दीनोंपर सहज दयालु हैं। वे रसिकोंके राजा, रूपके भण्डार, गुणोंके आकर और चतुर जनोंमें अग्रगण्य हैं। गदाधरजी कहते हैं कि मेरे प्रभु श्रीकृष्णचन्द्र व्रज-युवतियों एवं मुनिजनोंके मनरूपी मानसरोवरमें राजहंसके समान नित्य विहार करते हैं।

ENGLISH TRANSLATION

[10]

Remember lovely Gopālalāla, supreme actor and accomplished lover. The thought of His vast eyes destroys every sorrow. His gleaming curls, playful brows, gentle smile, teeth, and nectar-filled lips make the eyelids forget to close. Earrings flash against mirror-like cheeks and shame the sun; a cluster of peacock feathers crowns His head, and a pure moonlike tilaka marks His brow. The sweetness of every limb conquers Kāma, while His swaying gait humbles the intoxicated elephant. He laughs in shining yellow cloth, adorned with a splendid necklace and a fresh tulasī garland interwoven with flowers upon His broad chest. He is the lamp of Vraja's royal line, sovereign of Vṛndāvana, honored by Vṛṣabhānu, compassionate to the humble, king of connoisseurs, treasury of beauty and virtue. Gadādhara says: in the mind-lakes of Vraja's maidens and the sages, my Lord wanders eternally like a royal swan.

ORIGINAL

[११]

आज इन दोउन पै बलि जैये।

रोम रोम सों छबि बरसत है निरखत नैन सिरेये॥

रूप रास मृदु हास ललित मुख उपमा देत लजये।

नारायण या गौर श्याम को हिये निकुंज बसेये॥

आज इन दोनोंपर न्योछावर हो जाना चाहिये। इनके रोम-रोमसे सुषमाकी वर्षा हो रही है, इन्हें देख-देखकर आँखोंको शीतल कर लो। मधुर मुस्कानसे सुशोभित, रूपके निधान मुखमण्डलकी उपमा किस वस्तुसे दूँ, उपमा देनेमें संकोच हो रहा है, क्योंकि वैसी कोई वस्तु ही नहीं है। नारायण स्वामीजी कहते हैं कि इस गौर-श्याम मूर्तिको हृदयरूपी निकुञ्जमें बसा लेना चाहिये।

ENGLISH TRANSLATION

[11]

Today one should surrender everything to this Pair. Beauty rains from every pore; soothe your eyes by gazing upon Them. Their graceful faces, treasuries of beauty lit by tender smiles, shame every comparison. Nārāyaṇa Svāmī says: install this fair and dark Pair within the bower of the heart.

ORIGINAL

[१२]

आज सिंगार निरखि श्यामा को नीको बन्यो श्याम मन भावत।

यह छुबि तिनहिं बिलायो चाहत कर गहि कै नख चंद दिखावत॥

मुख जोरे प्रतिबिंब बिराजत निरखि निरखि मन में मुसकावत।

चतुर्भुज प्रभु गिरिबरधारी राधा परस परस दोउ रीझि रिझवत॥

आज श्रीराधिकाके श्रृङ्गारका दर्शन तो करो। कितना सुन्दर बना है और श्रीकृष्णचन्द्रके मनके अत्यन्त अनुकूल हुआ है। श्रीकृष्णचन्द्र वह शोभा स्वयं श्रीराधाकिशोरीको भी दिखा देना चाहते हैं। इसी उद्देश्यसे उनका हाथ पकड़कर उन्हींके पद-नखचन्द्रोंकी ओर उनकी दृष्टि ले जाते हैं, जिससे मुखमण्डल उज्ज्वल नखोंमें प्रतिबिम्बित हो और किशोरी अपना रूप देख लें। उनके दर्पणमें दोनोंके सटे हुए मुखारविन्दकी शोभा प्रतिबिम्बित हो रही है, जिसे देख-देखकर दोनों मुस्करा रहे हैं। चतुर्भुजदासजी कहते हैं कि मेरे प्रभु गिरिवरधारी श्रीकृष्ण एवं राधाजी परस्पर स्पर्श करके एक-दूसरेपर मोहित हो रहे हैं।

ENGLISH TRANSLATION

[12]

Behold Śyāmā’s adornment today, so lovely and pleasing to Śyāma’s heart. Wishing to show Her that beauty, He takes Her hand and turns the moons of Her nails toward Her. Their faces appear together in that bright reflection, and They smile inwardly as They gaze. Caturbhujadāsa says: Girivaradhārī and Rādhā touch one another, each delighting and captivating the other.

ORIGINAL

[१३]

सारी सँवारी है सोनजुही अरु जूही की तार लगाई किनारी।

पंकज के दल को लहँगा अंगिया गुलअबाँस की सोभित न्यारी॥

चमेली को हार हमेल गुलाब को मौर की बेंदी दै भाल सँवारी।

आज विचित्र सँवारी कै देखिये कैसी सिंगारी है प्यारे ने प्यारी॥

देखो, प्यारे श्रीकृष्णने अद्भुत ढंगसे सजाकर प्रियाजीका आज कैसा शृङ्गार किया है। सोनजुही पुष्पोंकी साड़ी सजायी है, जिसमें जूहीकी किनारी लगी है। कमल-पुष्पदलोंसे लहँगा बनाया है और गुलअबाँसकी कञ्चुकी अपनी निराली छटा दिखा रही है। चमेलीके पुष्पोंका हार बनाया है, गुलाबका हमेल है तथा ललाटपर मौलसिरीके फूलकी बेंदी शोभा दे रही है।

ENGLISH TRANSLATION

[13]

Her sari is woven from golden jasmine and edged with white jasmine; Her skirt is lotus petals, and a bodice of gulabāṃsa blossoms shines uniquely. A jasmine necklace, a rose pendant, and a maulasirī-flower dot adorn Her brow. Behold how wondrously the Beloved has dressed His darling today.

ORIGINAL

[१४]

सोनजुही की बती पिया अरु चमेली को गुच्छ रह्यो झुकि न्यारो।

है दल फूल कदंब के कुंडल सेवती जामा जु घूम घुमारो॥

नौ तुलसी पटुका घनश्याम गुलाब हजार चमेली को न्यारो।

फूलन आज विचित्र बन्यो देखो कैसो सिंगार्यो है प्यारी ने प्यारो॥

और इधर देखो। रानी प्यारीने अद्भुत पुष्प-रचनाके द्वारा प्यारे श्रीकृष्णचन्द्रका कैसा शृङ्गार किया है। सोनजुही पुष्पोंकी पाग बनी हुई है, जिसमें चमेलीका एक गुच्छा निराली अदासे लटक रहा है। कदम्ब-पुष्पके दो गुच्छोंने कुण्डलका स्थान ले लिया और सेवतीके फूलोंका खूब घेरदार जामा है। नीलसुन्दरकी विविध रंगवाली चादरकी छवि और भी निराली है, जिसमें नाना वर्णोंके नव तुलसीदल, विभिन्न आकारके गुलाब, गेंदे और चमेलीके पुष्पोंका उपयोग किया गया है।

ENGLISH TRANSLATION

[14]

The Beloved wears a turban of golden jasmine, with a jasmine cluster bending from it in singular beauty. Kadamba blossoms form His earrings, and a wide swirling robe is made from sevantī flowers. His sash and many-colored shawl combine fresh tulasī leaves with roses, marigolds, and jasmine. Behold the extraordinary floral attire in which His darling has adorned Him today.

ORIGINAL

[१५]

आजु राधिका भोरहीं जसुमति घर आई।

महरि मुदित हँसि यों कह्यो मथि भौन दुहाई॥

आयसु लै ठाढ़ी भई कर नेति सुहाई।

रीतो माठ बिलोवई चित जहाँ कन्हाई॥

उनके मन की का कहाँ ज्यों दृष्टि लगाई।

लैया नोई वृषभ सों गैया बिसराई॥

नैननि में जसुमति लखो दुहुँ की चतुराई।

सूरदास दंपति दसा कापे कहि जाई॥

आज श्रीराधाजी प्रातःकाल ही मैया यशोदाके घर आयीं। महरीने प्रसन्न मनसे हँसकर कहा, “लाडिली, तुम्हें वृषभानुकी दुहाई, तनिक दही मथो।” मैयाकी आज्ञाको सिरपर धारण करके श्रीराधा मथानी लेकर खड़ी हो गयीं। मथानी घुमानेवाली रस्सी उनके हाथमें शोभा दे रही थी, किन्तु वे उसे रीते मटकेमें ही घुमाने लगीं। उनका मन वहाँ अटका था जहाँ श्रीकृष्ण थे। उधर श्रीकृष्णके चित्तकी दशाका क्या वर्णन करें। उन्होंने लाडिलीजिकी ओर देखा तो दूध दुहनेके लिये नोईसे बैलके पैर बाँध दिये और गायको भूल गये। श्रीयशोदाने आँखों-ही-आँखोंमें दोनोंकी परस्पर प्रीतिकी यह भोली चतुरता देख ली। सूरदासजी कहते हैं कि श्रीराधाकृष्णकी प्रेमविभोर दशाका कौन वर्णन कर सकता है?

ENGLISH TRANSLATION

[15]

At dawn Rādhikā comes to Yaśodā's home. Laughing happily, Mother says, "Darling, by Vṛṣabhānu's name, churn a little yogurt." Rādhā obediently takes the churning rope but turns it in an empty pot, for Her mind is fixed where Kanhāī stands. Kṛṣṇa looks toward Her and, forgetting the cow, binds the bull's legs for milking. Yaśodā silently observes the innocent cleverness of Their mutual love. Sūradāsa asks: who could describe the Couple's absorption?

ORIGINAL

[१६]

महरि कह्यौ री लाडिली किन मथन सिखायौ।

कहूँ मथनी कहूँ माट है चित कहाँ लगायौ॥

अपने घर यौं ही मथे करि प्रगट दिखायौ।

कै मेरे घर आई कै तैं सब बिसरायौ॥

मथन नहीं मोहि आवई तुम सौंह दिवायौ।

तिहिं कारन मैं आइ के तुव बोल रखायौ॥

नंद घरनि तब मथि दिखयौ इहिं भाँति बतायौ।

सूर निरखि मुख श्याम को तहँ ध्यान लगायौ॥

श्रीयशोदाजी कहने लगीं, "अरी लाडिली, तुझे किसने मथना सिखाया है? मथानी कहीं है, मटका कहीं और तुम्हारा चित्त कहीं अन्यत्र लगा है। आज तूने स्पष्ट दिखा दिया कि अपने घरपर कैसे मथा करती है। अथवा मेरे ही घर आकर तू सब कुछ भूल गयी है?" तब किशोरी बोलीं, "मुझे मथना आता नहीं। तुमने शपथ दिला दी, इसी कारण मटकेके पास आकर मैंने केवल तुम्हारी बात रखी है।" सूरदासजी कहते हैं कि नन्दरानीने तब दही मथकर दिखाया कि इस प्रकार बिलोया जाता है, किन्तु राधाजी श्रीकृष्णका मुख देखते हुए उधर ही ध्यान लगाये रहीं।

ENGLISH TRANSLATION

[16]

Mother asks, “Darling, who taught you to churn? The churn is in one place, the pot in another, and your mind somewhere else. Have you shown how you churn at home, or did you forget everything upon entering mine?” The Maiden replies, “I do not know how. You placed me under oath, so I came and merely obeyed your words.” Nandarānī demonstrates the proper motion, but Rādhā keeps Her attention fixed upon Śyāma’s face.

ORIGINAL

[१७]

प्रगटी प्रीति न रही छपाई।

परी दृष्टि वृषभानु सुता की दोउ अरुझके निरवारि न जाई॥

बछरा छोरि खरिक कौ दीन्हो आपु कान्ह तन सुधि बिसराई।

नोवत वृषभ निकसि गैया गई हँसत सखा का दुहत कन्हाई॥

चारों नैन भए इक ठाहर मनहों मन दुहुँ रुचि उपजाई।

सूरदास स्वामी रतिनागर नागरि देखि गई नगराई॥

श्रीराधा और श्रीकृष्णकी प्रीति प्रकट हो गयी, अब वह गुप्त नहीं रही। वृषभानुनन्दिनीकी दृष्टि पड़ते ही दोनोंका मन इस प्रकार उलझ गया कि वे अलग करनेमें असमर्थ हो रहे हैं। श्रीकृष्णने खरिकमें बँधे हुए बछड़ेको खोल दिया, किन्तु उन्हें अपने शरीरकी सुधि ही नहीं रही। दूध दुहनेके लिये बैलके पैरोंमें रस्सी बाँध रहे हैं और उधर गायें बाहर निकल गयीं। सखा हँस रहे हैं और कह रहे हैं, “कन्हैया, तू किसे दुह रहा है?” आँखें चार होते ही दोनोंके मनोंमें तीव्र आकर्षण उत्पन्न हो गया। सूरदासजी कहते हैं कि मेरे स्वामी श्रीकृष्ण प्रीति-रीतिमें बड़े चतुर हैं, परन्तु नागरी राधिकाको देखकर उनकी सारी चतुराई समाप्त हो गयी।

ENGLISH TRANSLATION

[17]

Their love has revealed itself and can no longer remain concealed. The instant Vṛṣabhānu’s daughter looks toward Kṛṣṇa, Their minds become so entangled that They cannot draw them apart. Kṛṣṇa frees the calf tied in the cattle pen, then loses all bodily awareness. He binds the bull’s legs as though to milk it while the cows wander away. His friends laugh, “Kanhaiyā, what are You milking?” When Their four eyes meet, a powerful attraction rises in both hearts. Sūradāsa says: my Lord is an expert in love, but at the sight of accomplished Rādhikā all His cleverness disappears.

ORIGINAL Braj Bhāṣā

[१८]

या घर प्यारी आवति रहियौ।

महरि हमारी बात चलावत मिलन हमारौ कहियौ॥

एक दिवस मैं गई जमुन तट तहूँ उन देखी आई।

मोकों देखि बहुत सुख पायौ मिलि अंकम लपटाई॥

यह सुनि कै चलि कुँवरि राधिका मोकों भई अबार।

सूरदास प्रभु मन हरि लीन्हों मोहन नंद कुमार॥

श्रीयशोदाजी राधिकासे कहती हैं कि प्यारी बेटी! तुम इस घरमें सदा आया करना। तुम्हारी माँ क्या कभी हमारी चर्चा चलाती हैं? उनसे हमारे प्रेम-मिलनका निवेदन कर देना। एक दिन मैं यमुना-तटपर गयी थी। वहीं उन्होंने मुझे देखा। मुझे देखकर वे बहुत आनन्दित हुईं और मुझे हृदयसे लगा लिया। यह सुनकर, "अब मुझे देर हो गयी है", यों कहती हुई किशोरी राधिका चल पड़ीं। सूरदासजी कहते हैं कि मेरे स्वामी नन्दनन्दन कृष्ण स्वयं मनमोहन हैं, उनका भी मन राधाने हर लिया।

ENGLISH TRANSLATION

[18]

Mother Yaśodā tells Rādhikā, "Beloved daughter, continue visiting this house. Does your mother ever speak of me? Tell her that I long to meet her in affection. One day I went to the bank of the Yamunā and saw her there. She was overjoyed to see me and clasped me to her heart." Hearing this, youthful Rādhikā says, "Now I have become late," and departs. Sūradāsa says: my Lord, Nandanandana Kṛṣṇa, enchants every mind, yet Rādhā has stolen even His.

ORIGINAL

Braj Bhāṣā

[१९]

हरि सौं धेनु दुहावत प्यारी।

करत मनोरथ पूरन मन वृषभानु महर की बारी॥

दूध धार मुख पर छबि लायति सो उपमा अति भारी।

मानो इंदु कलंकहि धोवत जहँ तहँ बूँद सुधा री॥

हाव भाव रस मगन भए दोउ छबि निरखत ललिता री।

गो दोहन धुनि करत सूर प्रभु तीनिहुं भुवन कहा री॥

राजा वृषभानुकी पुत्री प्यारी राधिका प्यारे श्रीकृष्णसे गाय दुहा रही हैं। वे भी उनकी इच्छा पूरी कर रहे हैं। दूध दुहते समय दुग्ध-धाराकी फुहारें उड़-उड़कर उनके मुखचन्द्रपर पड़ रही हैं। उसकी उपमा भी अत्यन्त गरिमामयी बन गयी है। ऐसा लग रहा है मानो चन्द्रमा अपने कलंकको धो रहा हो और इसीलिये सर्वत्र सुधाकी बूँदें दिखायी दे रही हैं। दोनों ही एक-दूसरेके हाव-भावके रससिन्धुमें निमग्न हो रहे हैं और ललिताजी यह शोभा देख रही हैं। सूरदासके स्वामी गाय दुहते समय जिस सुखकी सृष्टि कर रहे हैं, वह तीनों लोकोंमें भी कहाँ प्राप्य है?

ENGLISH TRANSLATION

[19]

Beloved Rādhikā, daughter of King Vṛṣabhānu, has Hari milk the cow, and he fulfills the longing of her heart. Sprays from the stream of milk fall upon her moonlike face, creating a beauty beyond comparison. It seems the moon is washing away its own blemish, scattering drops of nectar everywhere. Both become immersed in the ocean of one another's gestures and emotions, while Lalitā beholds their splendor. Sūra asks: where in all three worlds can one find the happiness his Lord creates while milking the cow?

ORIGINAL

Braj Bhāṣā

[२०]

धेनु दुहत अति ही रति बाढ़ी।

एक धार दोहनि पहुँचावत, एक धार जहँ प्यारी ठाढ़ी॥

मोहन कर तें धार चलति परि मोहनि मुख अति ही छबि गाढ़ी।

मनु जलधर जलधार दृष्टि लखि पुनि पुनि प्रेम चंद पर बाढ़ी॥

सखी संग को निरखति यह छबि भई व्याकुल मन्मथ की दाढ़ी।

सूरदास प्रभु के रस बस सब भवन काज तें भई उचाढ़ी॥

गायके दुहते समय ही प्रेम वेगसे बढ़ा। ऐसी कलासे श्रीकृष्ण गाय दुहने लगे कि एक धार तो दोहनीके बीचमें जाती थी और दूसरी धार जहाँ प्रियाजी खड़ी थीं, वहाँ पहुँचती थी। श्रीकृष्णके हाथोंसे चलकर मनमोहिनी राधिकाके मुखपर पड़ती हुई धारकी शोभा बड़ी ही सुन्दर प्रतीत होती थी, मानो वर्षाऋतुके प्रेमके कारण घनश्यामरूपी श्याम-घनसे जलधाराकी फुहारें बार-बार चन्द्रमापर पड़ रही हों। साथकी सखियाँ इस शोभाको देख-देखकर स्नेहाकुल हो उठीं। उनका हृदय प्रेमसे सन्तप्त हो उठा। सब-की-सब सूरदासजीके स्वामी श्रीकृष्णके प्रेमके वशीभूत हो गयीं और उनका मन घरके काम-काजसे उचट गया।

ENGLISH TRANSLATION

[20]

As he milked, love swelled with overwhelming force. Śrī Kṛṣṇa milked with such artistry that one stream entered the pail while another reached the place where Priyājī stood. Flowing from Mohana's hands and falling upon enchanting Rādhikā's face, the stream created an intense beauty, as though a rain cloud dark as Śyāma repeatedly showered the moon under the pressure of monsoon love. The watching sakhīs became distraught with affection, their hearts scorched by desire. All fell under the sway of love for Sūradāsa's Lord, and their minds turned away from every household task.

ORIGINAL

Braj Bhāṣā

[२१]

सिर दोहनी चली लै प्यारी।

फिरि चितवत दूरि हँसे निरखि मुख मोहन मोहनि डारी॥

व्याकुल भई गई सखियन लौं ब्रज कौं गये कन्हाई।

और ग्वाल सब कहाँ तुम्हारे हरि सौं धेनु दुहाई॥

यह सुनि के चकित भई प्यारी धरनि परी मुरझाई।

सूरदास सब सखियन उर भरि लीन्ही कुँवरि उठाई॥

श्रीकृष्णसे दूध दुहाकर श्रीकृष्ण-प्यारी राधा दोहनीको सिरपर रखकर चलीं। घूमकर वे फिर देखने लगीं। श्रीकृष्ण भी उनका मुख देखकर बिहँस दिये और इस प्रकार मनमोहनने उनपर अपनी मोहिनी डाल दी। राधा स्नेह-विह्वल हो उठीं, पर जाना तो था ही। वे अपनी सखियोंमें चली गयीं और श्रीकृष्ण व्रजकी ओर बढ़े। सखियोंने श्रीराधाकी व्याकुलता देखकर और उसका कारण भाँपकर उनसे पूछा कि तुम्हारे और सब ग्वाले कहाँ गये, जो तुमने श्रीकृष्णसे गाय दुहायी? यह सुनकर श्रीराधासे कोई उत्तर नहीं देते बना। वे चकरा गयीं और मूर्च्छित-सी होकर पृथ्वीपर गिर पड़ीं। सूरदास कहते हैं कि सब सखियोंने किशोरी राधाको उठाकर हृदयसे लगा लिया।

ENGLISH TRANSLATION

[21]

After Śrī Kṛṣṇa milked the cow, his beloved Rādhā placed the pail upon her head and departed. Turning, she looked back. Śrī Kṛṣṇa smiled upon seeing her face, and Manamohana cast his enchantment over her. Overcome with affection, Rādhā nevertheless had to go. She returned among her sakhīs while Śrī Kṛṣṇa continued toward Vraja. Perceiving her agitation and its cause, the sakhīs asked, "Where were all your other cowherd boys that you had Śrī Kṛṣṇa milk the cow?" Rādhā could find no answer. Dazed, she fainted to the ground. Sūradāsa says that all the sakhīs lifted youthful Rādhā and pressed her to their hearts.

ORIGINAL

Braj Bhāṣā

[२२]

खेलन के मिस कुँवरि राधिका नंद महर के आई हो।

सकुच सहित मधुरे करि बोली घर हैं कुँवर कन्हाई हो॥

सुनत स्याम कोकिल सम बानी निकसे अति आतुराई हो।

माता सौं कछु करत कलह है रिस डारी बिसराई हो॥

मैया री तू इनको चीन्हति बारंबार बताई हो।

जमुना तीर काल्हि मैं भूल्यो बाँह पकरि लै आई हो॥

आवत इहाँ तोहि सकुचति है मैं दै सौंह बुलाई हो।

सूर स्याम ऐसे गुन आगर नागरि बहुत रिझाई हो॥

खेलनेके मिससे किशोरी राधिका नन्दरानीके घर आयीं। बड़े संकोचसे मधुर स्वरमें पूछा कि कुँवर कन्हैया घरमें हैं क्या? कोकिलके समान उनकी मीठी वाणी सुनकर श्यामसुन्दर अत्यन्त शीघ्रतासे बाहर निकल आये। वे मातासे कुछ झगड़ रहे थे, पर अब अपने क्रोधको भुला दिया और कहने लगे कि, “माँ! तू इन्हें पहचानती है क्या? मैंने कई बार तुझे इनके विषयमें बताया है। मैं कल यमुना-किनारे राह भूल गया था तो ये बाँह पकड़कर मुझे ले आयीं। यहाँ आते हुए तेरा संकोच कर रही थीं तो मैंने शपथ देकर बुलाया है।” सूरदासजी कहते हैं कि श्यामसुन्दर ऐसे गुण-निधान हैं कि उन्होंने राधाको अत्यधिक रिझा लिया।

ENGLISH TRANSLATION

[22]

Under the pretext of play, young Rādhikā came to Nandarānī's house. Bashfully she asked in a sweet voice, "Is Prince Kanhāī at home?" Hearing her cuckoo-like speech, Śyāmasundara hurried outside. He had been quarreling with Mother, but instantly forgot his anger. "Maiyā, do you recognize her? I have told you about her many times. Yesterday I lost my way beside the Yamunā, and she took my arm and led me back. She felt shy about coming here before you, so I called her under oath." Sūradāsa says that Śyāmasundara, treasury of such virtues, thoroughly delighted Rādhā.

ORIGINAL Braj Bhāṣā

[२३]

जसुमति राधा कुँवरि सँवारति।

बहु बार सीमंत सीस के प्रेम सहित निरुवारति॥

माँग पारि बेनी जु सँवारति गूँथी सुंदर भाँति।

गोरे भाल बिंदु बंदन भनु इंदु प्रात रवि काँति॥

सारी चीर नई फरिया लै अपने हाथ बनाई।

अंचल सौं मुख पोंछि अंग सब आपुहि लै पहिराई॥

तिल चाँवरि बतासे मेवा दियो कुँवरि की गोद।

सूर स्याम राधा तनु चितवत, जसुमति मन तन मोद॥

यशोदा मैया राधाकिशोरीका श‍ृङ्गार कर रही हैं। वे शीशके बड़े-बड़े बालोंको प्रेमसे सुलझा रही हैं तथा मध्यभागमें माँग काढ़ लेनेके बाद सुन्दर ढंगसे गूँथती हुई वेणीकी रचना कर रही हैं। गोरे ललाटपर रोलीका तिलक-बिन्दु ऐसा लगता है मानो चन्द्रमापर अरुणोदयकालीन सूर्यकी शोभा आ रही हो। अपने अञ्चलसे मुख और सारे अङ्गोंको पोंछकर लहरदार ओढ़नी और अपने हाथोंसे बनाया हुआ नया लहँगा स्वयं ही धारण कराया। फिर तिल, चावल, बतासे और मेवोंसे कुँवरिकी गोद भरी। सूरदास कहते हैं कि एक बार श्यामसुन्दरकी ओर और दूसरी बार राधाकी ओर निहारती हुई यशोदाजी तन और मन दोनोंसे प्रसन्न हो रही हैं, यह देखकर कि जोड़ी अत्यन्त सुन्दर है।

ENGLISH TRANSLATION

[23]

Mother Yaśodā adorns young Rādhā. Lovingly she untangles the long hair upon her head, parts it down the center, and braids it beautifully. The vermilion point upon Rādhā's fair forehead resembles the light of the rising sun appearing upon the moon. Yaśodā wipes her face and limbs with the end of her garment, then personally dresses her in a rippling veil and a new skirt made by her own hands. She fills the princess's lap with sesame, rice, sugar drops, and dried fruits. Sūradāsa says that Yaśodā looks first at Śyāmasundara and then at Rādhā, delighted in body and mind by the surpassing beauty of the pair.

ORIGINAL

Braj Bhāṣā

[२४]

मैं हरि की मुरली बन पाई।

सुन जसुमति सँग छाँड़ि अपनों कुँवर जगाय देन हौं आई॥

सुनि प्रिय बचन बिहँसि उठि बैठे अंतरजामी कुँवर कन्हाई।

मुरली संग हुती मेरी पहुँची दे राधे वृषभान दुहाई॥

मैं निहार नीची महिं देखी चलो संग दैहौं ठौर बताई।

बाढ़ी प्रीति सदन मोहन सौं घर बैठे जसुमति बौराई॥

पायो परम जावती जी को दोऊ पढ़े एक चतुराई।

परमानंददास तिन बूझो जिन यह केलि जनम भर गाई॥

श्रीवृषभानुनन्दिनी नन्दभवनमें आयीं और बोलीं, “हे यशोदा मैया, सुनो! मुझे श्रीकृष्णकी वंशी वनमें पड़ी हुई मिली है। मैं अपनी सहेलियोंका साथ छोड़कर उसे देने आयी हूँ। अपने लालको जगा दो।” फिर तो सबकी बात जाननेवाले नन्दलाल उनकी बात सुनकर बिहँसते हुए उठ बैठे और बोले, “अरी राधे! मुरलीके साथ मेरी पहुँची भी थी। तुझे वृषभानुकी दुहाई है, उसे भी दे दे।” श्रीराधाकिशोरीने कहा, “मैंने नीचे ध्यानसे देखा नहीं। तुम साथ चलो तो वह स्थान तुम्हें दिखा दूँ, जहाँ मुरली मिली थी।” श्रीकृष्णसे उनकी प्रीति अगाध हो गयी थी, इसलिये दोनोंने घर बैठे ही यशोदाजीको झाँसा दे दिया। इसके पश्चात् श्रीकृष्णचन्द्र नन्दभवनके बाहर चले आये। प्रियतम श्रीकृष्णको पाकर किशोरीको अपने अभीष्टकी प्राप्ति हो गयी। मनचाही बात बना लेनेकी कुशलताको देखकर यही कहना पड़ता है कि दोनोंने वह अद्भुत चतुराई एक ही गुरुसे पढ़ी है। परमानन्ददासजी कहते हैं कि इसका रहस्य उनसे जाकर पूछो जिन्होंने इस लीलाको जीवनभर गाया है।

ENGLISH TRANSLATION

[24]

Vṛṣabhānu's daughter came to Nanda Bhavana and said, "Mother Yaśodā, listen. I found Hari's flute lying in the forest. I left my companions to return it. Please wake your prince." Omniscient Prince Kanhāī laughed when he heard his beloved's words and sat up. "Rādhe, my bracelet was with the flute. By Vṛṣabhānu's honor, return that too." Young Rādhā replied, "I did not look carefully at the ground. Come with me and I shall show you where I found the flute." Their love was fathomless, and together they deceived Yaśodā while still inside the house. Śrī Kṛṣṇa then came out of Nanda Bhavana. Gaining her beloved, young Rādhā attained her cherished aim. Their skill in arranging exactly what they desired makes it seem that both studied this wondrous cleverness under the same teacher. Paramānandadāsa says: ask the secret from those who have sung this līlā throughout their lives.

ORIGINAL

Braj Bhāṣā

[२५]

बनी राधा गिरधर की जोरी।

मनहुँ परस्पर कोटि मदन रति की सुंदरता चोरी॥

नूतन स्याम नंद नंदन वृषभानु सुता नव गोरी।

मनहुँ परस्पर बदन चंद को पीवत तृषित चकोरी॥

कुंभनदास प्रभु रसिक लाल बहु बिधि रसिकिनी निहोरी।

मनहिं परस्पर बढ्यो रंग अति उपजी प्रीति न थोरी॥

श्रीराधा-कृष्णकी जोड़ी सुन्दर बनी है। उनका सौन्दर्य देखकर ऐसा प्रतीत होता है मानो इन्होंने करोड़ों कामदेव और रतिकी सुन्दरता चुरा ली हो। नन्दनन्दन श्रीकृष्णके श्याम शरीरकी शोभा नित्य नूतन है और वृषभानुजा श्रीराधाके गोरे अङ्गोंकी छटा भी नित्य नयी दिखती है। वे एक-दूसरेके मुखचन्द्रको आकुल नयनोंसे परस्पर ऐसे देख रहे हैं मानो प्यासी चकोरी चन्द्र-छविको पी रही हो। कुम्भनदासजी कहते हैं, मेरे जीवन-सर्वस्व रसिक लालने रसकी एकमात्र आश्रयभूता किशोरीसे प्रेमदान पानेके लिये विविध भाँतिसे प्रार्थना की। इसके फलस्वरूप उन दोनोंके मनोंमें पारस्परिक प्रीतिका उद्भव प्रचुर रूपमें होनेसे अपार आनन्द अधिकाधिक बढ़ने लगा।

ENGLISH TRANSLATION

[25]

Beautiful is the pair of Rādhā and Giridhara, as though each had stolen the beauty of millions of Kāmas and Ratis. Dark Nandanandana is ever fresh, and the fair radiance of Vṛṣabhānu's daughter is forever new. With thirsty eyes they drink one another's moonlike face like partridges longing for moonlight. Kumbhanadāsa says that his all-in-all, the connoisseur of love, pleaded in many ways for the gift of love from the maiden who is rasa's sole abode. Thus ever-deepening mutual affection arose within their hearts, and measureless bliss continued to increase.

ORIGINAL

Braj Bhāṣā

[२६]

सघन कुंज की छाँह मनोहर सुमन सेज बैठे पिय प्यारी।

परस परस अंसनि भुज दीने नंद नंदन वृषभानु दुलारी॥

नख सिख अंग सिंगार सुहावत इहि छवि सम नाहिन उपमा री।

रस बस करत प्रेम की बतियाँ हँसि हँसि देत परस्पर तारी॥

सनमुख सकल सहचरी ठाढ़ी बिहरत श्री राधा गिरिधारी।

गोविंददास निरखि दंपति सुख तन मन धन कीनो बलिहारी॥

सघन कुञ्जकी अत्यन्त मनोहर छायामें कुसुम-शय्यापर प्यारी वृषभानुनन्दिनी श्रीराधा तथा प्रियतम नन्दनन्दन श्रीकृष्ण बैठे हैं। दोनों परस्पर स्पर्श करते हुए एक-दूसरेके कन्धोंपर भुजाएँ रखे हुए हैं। श्रीअङ्गोंमें नखसे शिखतक शृङ्गार सुशोभित हो रहा है। इस छविकी कोई उपमा नहीं है। रसके वशीभूत होकर वे प्रेमालाप कर रहे हैं और हँस-हँसकर एक-दूसरेके हाथपर ताली बजा रहे हैं। श्रीराधा-कृष्ण विहार कर रहे हैं और सामने सब सखियाँ खड़ी हैं। गोविन्ददासने इन युगल विहारिणी-विहारीका यह आनन्द-विहार देखकर अपना तन-मन-धन इन दोनोंपर न्योछावर कर दिया।

ENGLISH TRANSLATION

[26]

In the lovely shade of a dense grove, beloved Vṛṣabhānu's daughter and Nandanandana sit upon a flower bed. Touching one another, each rests an arm upon the other's shoulder. Every limb from toenail to crown is beautifully adorned, and no comparison equals the sight. Subdued by rasa, they exchange words of love, laughing and striking each other's palms in play. All the companions stand before them while Śrī Rādhā and Giridhārī sport. Beholding the blissful play of the divine couple, Govindadāsa offers them body, mind, and wealth.

ORIGINAL

Braj Bhāṣā

[२७]

बैठे हरि राधा संग कुंज भवन अपने रंग।

लै कर मुरली अधर धरे सारंग मुख गाई।

मोहन अति ही सुजान परम चतुर गुन निधान।

जान बूझि एक तान चूक के बजाई॥

प्यारी जब गह्यो बीन सकल कला गुन प्रबीन।

अति नवीन रूप सहित तान वह सुनाई।

बल्लभ गिरिधरन लाल रीझि दई अंक माल।

कहत भले भले लाल सुंदर सुखदाई॥

श्रीराधा और श्रीकृष्ण अपने आनन्दसे निमग्न कुञ्जभवनमें बैठे हैं। श्रीकृष्णने अपने हाथोंकी मुरलीको अधरोंपर रखकर और अपने श्रीमुखसे फूँक भरकर सारङ्ग रागकी एक तान छेड़ी। गोपी-मोहन श्रीकृष्ण बड़े ही सयाने एवं अत्यन्त चतुर हैं और संगीतकलामें गुणोंके भण्डार हैं; इसपर भी उन्होंने जान-बूझकर एक तान अशुद्ध रूपमें बजायी। तब प्यारीजीने वीणा लेकर उसी तानको अत्यन्त नये ढंगसे सही रूपमें बजाया। वे सभी कलाओं और गुणोंकी पण्डिता जो ठहरीं। प्यारे श्रीकृष्ण तो यही चाहते थे कि प्यारी श्रीराधा बजायें और इसीलिये मुरली बजानेमें उन्होंने जान-बूझकर चूक की थी। वल्लभजी कहते हैं कि श्रीराधाकी प्रशंसा करनेके मिससे सुखको देनेवाले गिरधारी प्यारे श्यामसुन्दरने रीझकर उनको हृदयसे लगा लिया और "सुन्दर, सुन्दर!" कह-कहकर उनकी सराहना करने लगे।

ENGLISH TRANSLATION

[27]

Hari and Rādhā sit together in their grove dwelling, immersed in their own delight. Raising the flute to his lips, Kṛṣṇa sounds a melody in rāga Sāraṅga. Though Mohana is wise, supremely clever, and a treasury of musical virtue, he deliberately plays one phrase incorrectly. His beloved, mistress of every art and excellence, takes up the vīṇā and renders that phrase correctly in a wonderfully fresh way. Beloved Śrī Kṛṣṇa had wanted Śrī Rādhā to play and therefore intentionally erred upon the flute. Vallabha says that, under the pretext of praising her, joy-giving Giridhārī becomes delighted, draws her to his heart, and repeatedly exclaims, "Beautiful, beautiful!"

ORIGINAL

Braj Bhāṣā

[२८]

इक टक रही नारि निहार।

कुंज बन श्री स्याम स्यामा बैठि करत बिहार॥

नैन सैन कटाच्छ सौं मिलि करत रंग बिलास।

मथाहिं सोभा पार पावत बचन मुख मृदु हास॥

तरुनि श्री वृषभानु तनया तरुन नंद कुमार।

सूर सो क्यों बरनि आवै रूप रस सुख सार॥

कुञ्जवनमें श्रीराधा और श्रीकृष्ण बैठे हुए विहार कर रहे हैं और गोपसुन्दरियाँ अपलक दृष्टिसे उन्हें निहार रही हैं। वे आँखोंकी तिरछी चितवनसे संकेत करते हुए परस्पर विचित्र लीला-विलास कर रहे हैं। उनके मुखकी मधुर वचनावली और मृदु हासकी शोभाका कोई पार नहीं है। श्रीराधाकी किशोर अवस्था है और श्रीकृष्ण भी किशोर हैं। सूरदास कहते हैं कि मेरे द्वारा उस रूप, रस एवं सुखकी चरम सीमाका वर्णन हो ही कैसे सकता है?

ENGLISH TRANSLATION

[28]

The women gaze without blinking as Śrī Śyāma and Śyāmā sit sporting in the grove. Meeting through signals and sidelong glances, they perform wondrous amorous play. The beauty of their gentle speech and soft smiles has no shore. Vṛṣabhānu's daughter is youthful, and Nanda's prince is young. Sūra asks: how could I ever describe the ultimate essence of such beauty, rasa, and bliss?

ORIGINAL

Braj Bhāṣā

[२९]

देखन देत न बैरिन पलकें।

निरखत बदन लाल गिरधर को बीच परत मानो बज की सलकें।।

बन तें आवत बेनु बजावत गोरज मंडित राजत अलकें।

माथे मुकुट श्रवन मनि कुंडल ललित कपोलन माँहि भलकें।।

ऐसे मुख देखन कौं रजनी कहा कियो यह पूत कमल के।

नंददास सब जड़न को यह गति मीन मरत भाएँ नहिं जल के।।

गोपी कहती हैं कि श्रीकृष्णकी शोभाको वैरिन पलकें एकटक नहीं देखने दे रही हैं। गिरिधरलालके श्रीमुखको देखते समय बीचमें वे इस प्रकार आ जाती हैं मानो वज्रकी शलाकाएँ हों। श्रीकृष्ण वनसे वंशी बजाते हुए आ रहे हैं। गायोंके पैरोंसे बढ़ी हुई धूलमें सनी उनकी अलकोंकी शोभा निराली है। उनके सिरपर मुकुट है, कानोंमें मणियोंके कुण्डल हैं और उनकी परछाईं सुन्दर कपोलोंमें प्रतिबिम्बित हो रही है। हे सखि! जलज-पुत्र ब्रह्माने ऐसे सुन्दर मुखके दर्शनमें यह क्या विघ्न उपस्थित कर दिया है! नन्ददासजी कहते हैं, सभी जड़ वस्तुओंकी यही दशा है। मछली बेचारी भी तो जलके लिये प्राण देती है, किन्तु जलको उसकी चिन्ता थोड़े ही होती है। इसीलिये बहिनो, जलजसे उत्पन्न जड़को भी हमारा ध्यान थोड़े ही है।

ENGLISH TRANSLATION

[29]

The gopī complains that enemy eyelids will not let her behold Śrī Kṛṣṇa's splendor without interruption. When she gazes upon Giridharalāla's face, they fall between like bars of thunderbolt. Śrī Kṛṣṇa returns from the forest playing his flute, his locks made uniquely beautiful by the dust raised beneath the cows' feet. A crown rests upon his head, jeweled earrings shine at his ears, and their reflections gleam upon his lovely cheeks. "Sakhī, why has lotus-born Brahmā placed such an obstacle before the vision of that beautiful face?" Nandadāsa says that insentient things are all alike. The poor fish dies for water, yet water gives no thought to it. How then could lotus-born Brahmā, himself inert, care for us?

ORIGINAL

Braj Bhāṣā

[३०]

तेरी भौंह की मरोरन तें ललित त्रिभंगी भये।

अंजन दै चितयो भए जु स्याम बाम।

तेरी मुसकान देखि दामिनी सी कौंधि जात।

दीन ह्वै जाचत प्यारी लेत राधे आधो नाम॥

ज्यों ज्यों नचायो चाही तैसे हरि नाचत बलि।

अब तो मया कीजै चलिये निकुंज धाम।

नंददास प्रभु बोलो तो बुलाय लाऊँ री।

उनको तो कलप बीते तेरी घर जाम॥

हे श्रीराधे! तुम्हारी भ्रू-भङ्गिमासे ही श्रीकृष्णका सुन्दर त्रिभङ्गी रूप बन गया है और हे सुन्दरि! जो तुमने अपनी आँखोंमें अञ्जन लगाकर श्रीकृष्णकी ओर देखा, इसीसे वे श्याम हो गये हैं। तुम्हारी मुसकानको देखकर उनके हृदय-पटलपर मानो बिजली-सी चमक जाती है। हे प्यारी! श्रीकृष्ण दीन बनकर अस्फुट रूपसे तुम्हारा "राधा-राधा" नाम ले रहे हैं और तुमसे प्रेमकी भीख माँगते हैं। श्रीकृष्णको तुम जैसे-जैसे नचाना चाहती हो, वे वैसे-वैसे ही नाचते हैं। मैं तुम्हारी बलिहारी जाती हूँ। अब तो कृपा करके निकुञ्जभवनमें पधारिये। नन्ददासजी कहते हैं कि यदि तुम आज्ञा दो तो प्रभु श्रीकृष्णको बुला लाऊँ, क्योंकि तुम्हारा एक घड़ी-प्रहरका समय उनके लिये कल्पके समान बीत रहा है।

ENGLISH TRANSLATION

[30]

Śrī Rādhe, the arching of your brows has bent Kṛṣṇa into his lovely threefold form. Beautiful one, when you lined your eyes with collyrium and looked toward him, that very glance turned him dark. At your smile, lightning seems to flash across his heart. Humbled, he indistinctly repeats "Rādhā, Rādhā" and begs you for love. However you wish Hari to dance, in that very way he dances. I surrender to you. Show mercy now and come to the secluded grove. Nandadāsa says: if you command me, I shall call Lord Kṛṣṇa, for each watch spent at your home passes like an age for him.

ORIGINAL Braj Bhāṣā

[३१]

जैसे तेरे नूपुर न बाजहीं।

प्यारी! पग होले होले धर।

जागत ब्रज कौ लोग नाहीं सुनायबे जोग।

हा हा री हठीली नेक मेरो कह्यो कर॥

लौ लौं बन बीथिन माँहि सघन कुंज की परछाँहि।

तौ लौं मुख ढाँपि चल कुँवर रसिक बर।

नंददास प्रभु प्यारी छिनहूँ न होय न्यारी।

सरद उज्यारी जामें जेहें कहें डर॥

हे प्यारी सखि! धीरे-धीरे चरण रख, जिससे तेरे नूपुर बजें नहीं। व्रजके लोग अभी जग रहे हैं, उन्हें अपने नूपुरोंका शब्द सुनाना उचित नहीं है। अरी हठीली! थोड़ी मेरी बात मान ले। मैं दाँतों तले तृण दबाकर प्रार्थना करती हूँ। सघन कुञ्जोंकी छायासे युक्त वन-वीथियाँ जबतक नहीं आ जातीं, तबतक तू मुखको ढककर रसिकशिरोमणि नन्दकिशोरके पास चल। नन्ददासजी कहते हैं, प्यारी श्रीराधे! प्रभुसे क्षणभरके लिये विलग न रह। आज शरद ऋतुकी उजियारी रात है, उस चाँदनीमें तुम्हारा गोरा शरीर इस प्रकार मिल जायेगा कि किसीको तुम्हारा पता ही नहीं चलेगा।

ENGLISH TRANSLATION

[31]

Beloved friend, set down your feet very softly so your anklets do not ring. The people of Vraja are still awake, and it is not proper that they hear them. O obstinate one, heed me a little. I beg you with grass between my teeth. Until we reach the forest paths shaded by dense bowers, cover your face and walk toward Nanda's prince, crest jewel of connoisseurs. Nandadāsa says: beloved Śrī Rādhā, do not remain apart from the Lord even for a moment. It is a bright autumn night, and your fair body will merge so completely with the moonlight that no one will discover you.

ORIGINAL Braj Bhāṣā

[३२]

चलो क्यों न देखें री खरे दोऊ कुंजन की परछाँही।

एक भुजा गहि डार कदंब की दूजी भुजा गलबाँही॥

छबि सौं छबीलो लपट लटक रहे कनक बेलि तमाल अरुझाई।

हरिदास के स्वामी स्यामा कुंज बिहारी रंगे हैं प्रेम रंग माँही॥

श्रीराधा और श्रीकृष्ण दोनों कुञ्जकी छायामें खड़े हैं। अरी, वहाँ चलकर यह शोभा क्यों न देखी जाये! वे अपनी एक भुजासे तो कदम्बकी डाल पकड़े हुए हैं और दूसरीको एक-दूसरेके गलेमें डाले हुए हैं। सुन्दरी राधाकी उनके अङ्गोंसे लिपटकर झूलनेकी छवि अत्यन्त मनोहारिणी है। ऐसा लगता है मानो सोनेकी लता तमाल वृक्षके साथ उलझी हुई है। श्रीहरिदासजीके स्वामिनी श्यामा किशोरी राधा और कुञ्जबिहारी श्रीकृष्ण दोनों प्रेमके रंगमें रँगे हुए हैं।

ENGLISH TRANSLATION

[32]

Why should we not go and see them standing together in the shade of the grove? With one arm they hold a kadamba branch and with the other embrace one another's neck. Lovely Rādhā clings and sways against his body, like a golden vine entwined around a dark tamāla tree. Haridāsa's mistress Śyāmā and Kuñjabihārī are both dyed in the color of love.

ORIGINAL

Braj Bhāṣā

[३३]

राधिका आज आनंद में डोलै।

साँवरे चंद गोबिंद के रस भरी दूसरी कोकिला मधुर स्वर बोलै॥

पहिर तन नील पट कनक हारावली हाथ लै आरसी रूप को तोलै।

कहत श्री भट्ट ब्रजनारि नागरि बनी कृष्ण के सील की ग्रंथिका खोलै॥

आज श्रीराधिका आनन्दमें मग्न होकर विचरण कर रही हैं। श्यामसुन्दर श्रीकृष्णचन्द्रके रूपमें डूबी हुई ऐसे मीठे शब्दोंका उच्चारण कर रही हैं मानो कोई कोकिला मधुर स्वरमें बोल रही हो। नीली साड़ी पहनकर तथा हृदयपर स्वर्णमाला धारणकर वे अपने हाथोंमें दर्पण लिये हुए अपने सौन्दर्यको देख-देखकर मन-ही-मन उसका मूल्याङ्कन कर रही हैं। श्रीभट्टजी कहते हैं कि चतुरा व्रजाङ्गना श्रीराधाकी शोभा क्या ही सुन्दर बन पड़ी है और वे अपनी प्रश्नावलीसे श्रीकृष्णके शीलकी गाँठको खोल रही हैं, अर्थात् उनका मन अपने वशमें नहीं रह जाता।

ENGLISH TRANSLATION

[33]

Today Rādhikā wanders absorbed in bliss. Immersed in dark moonlike Govinda, she speaks rasa-filled words in a voice sweet as a second cuckoo. Wearing blue cloth and a golden necklace, she holds a mirror and silently weighs the worth of her own beauty. Śrī Bhaṭṭa says that the clever woman of Vraja appears exquisitely lovely and, through her chain of questions, unties the knot of Kṛṣṇa's character, so that his mind no longer remains under his own control.

ORIGINAL

Braj Bhāṣā

[३४]

कदंब बन बीथिन करत बिहार।

अति रस भरे मदन मोहन पिय तोर्यो प्रिया उर हार॥

कनक भूमि बिथुरे गज मोती कुंज कुटी के द्वार।

गोबिंद प्रभु हँसत करि पोवत श्रीव्रजराज कुमार॥

कदम्ब-वनकी वीथियोंमें श्रीराधा और श्रीकृष्ण विहार कर रहे हैं। कामदेवको भी मोहित करनेवाले श्यामसुन्दरने अत्यन्त रसमें भरकर प्रियाजीके हृदयका हार तोड़ दिया। कुञ्ज-कुटीके द्वारकी स्वर्णभूमिपर गजमुक्ताके दाने बिखर गये। गोविन्ददासके स्वामी श्यामसुन्दर, व्रजराजकुमार श्रीकृष्ण, अपने हाथोंसे उस मालाको हँसते हुए पिरो रहे हैं।

ENGLISH TRANSLATION

[34]

Śrī Rādhā and Śrī Kṛṣṇa sport along the paths of the kadamba forest. Overflowing with rasa, Śyāmasundara, who enchants even Kāmadeva, breaks the necklace upon Priyājī's breast. Great pearls scatter across the golden ground at the bower door. Smiling, Govindadāsa's Lord, Prince Śrī Kṛṣṇa of Vraja, strings the necklace again with his own hands.

ORIGINAL

Braj Bhāṣā

[३५]

पासा खेलत हैं पिय प्यारी।

पहिलो दाँव पर्यो स्याम कौ पीत पिछौरी हारी॥

स्याम कहै कछु तुमहु लगावो तब नकबेसर डारी।

कल बल छल करि जीत्यौ चाहत लाल गोबरधनधारी॥

अब की बेर पिय मुरली लगावौ तो खेलौं या बारी।

भूषन सबै लगाय विट्ठल प्रभु हारे कुंज बिहारी॥

श्रीप्रिया और श्रीप्रियतम पासा खेल रहे हैं। पहला दाँव श्रीराधाजीका पड़ा और श्रीकृष्ण अपना पीताम्बर हार गये। तब श्यामसुन्दरने श्रीप्रियाजीसे भी कुछ दाँवपर रखनेको कहा और उन्होंने अपनी नाकबेसर लगा दी। गोवर्धनको धारण करनेवाले प्रियतम श्रीकृष्ण चतुराई, बल अथवा छलसे किसी भी प्रकार जीतना चाहते हैं। किशोरीजीने कहा कि, “हे प्यारे! इस बार अपनी मुरली दाँवपर लगाओ, तब खेलनेका साहस करो।” श्रीविट्ठल कहते हैं कि मेरे सर्वस्व श्रीकुञ्जविहारी एक-एक करके अपने सभी आभूषण हार गये।

ENGLISH TRANSLATION

[35]

Priyā and her Beloved play at dice. Rādhā wins the first throw, and Śrī Kṛṣṇa loses his yellow mantle. Śyāmasundara then asks Priyājī to wager something, and she stakes her nose ring. Beloved Govardhanadhārī tries to win by skill, force, or any trick available. The young maiden says, "Beloved, stake your flute this time, and then dare to play another round." Śrī Viṭṭhala says that his all-in-all, Kuñjabihārī, loses every ornament one after another.

ORIGINAL Braj Bhāṣā

[३६]

आज तेरी फबी अधिक छवि नागरी।

माँग मोतिन छटा बदन पै कच लटा,
नील पट घन घटा रूप गुन आगरी॥

नयन कज्जल अनी कबरी लज्जित फनी,
तिलक रेखा बनी अचल सौभाग री।

नासिका सुक चंचु अधर बंधूक सम,
बीजु दाड़िम दसन चिंबुक पै दाग री॥

वलय कंकन चूरि मुद्रिका अति रुचि,
बेसरि लटकि रही काम गुन आगरी।

ताटंक मनि जटित किंकिनी कटि तटित,
पोत मुक्ता दाम कुच कंचुकी लाग री॥

मूक मंजीर ध्वनि चरन नख चंद्रमा,
परम सौरभ बढ़त मृदुल अनुराग री।

कहै कृष्णदास गिरिधरन बस किये,
करत जब मधुर स्वर ललित वर राग री॥

अरी निपुणे राधिके! आज तेरी शोभा अत्यधिक भली लग रही है। माँग मोतियोंसे दमक रही है, मुखमण्डलपर अलकावली झूल रही है और तुम रूप एवं गुणकी निधान हो। तेरे शरीरपर मेघमालाके समान नीला वस्त्र शोभा पा रहा है। तेरी आँखोंमें बाणकी नोककी भाँति काजलकी पतली रेखा है। छरहरी वेणीसे नागिन भी लज्जित हो रही है और मस्तकपर लगा हुआ तिलक मानो सौभाग्यकी अचल रेखा-सा दिखायी दे रहा है। नासिका शुककी चोंचकी भाँति सुन्दर है, अधर बन्धूकके पुष्पके समान लाल हैं, दाँत अनारके दानोंकी भाँति हैं एवं चिबुकपर काला दाग है। हाथोंमें अत्यन्त सुन्दर वलय, कंकण, चूड़ियाँ और अँगूठियाँ हैं और नाकमें रतिकलाओंकी निधि-स्वरूपा बेसर लटक रही है। कानोंमें मणिजटित कर्णफूल और श्रोणीपर बजनेवाली करधनी सुशोभित है। वक्षःस्थलपर जो कंचुकी धारण किये हुए हो, उसमें पोत और मोतियोंकी मालाएँ टँकी हुई हैं। नूपुरोंकी ध्वनि इतनी मन्द है कि वे मूकसे हो लगते हैं। चरण-नख चन्द्रमाकी भाँति चमक रहे हैं और शरीरसे अत्यधिक सुगन्ध निकल रही है। इस रूपके दर्शनसे हृदयका मधुर स्नेह बढ़ने लगता है। कृष्णदासजी कहते हैं कि अत्यन्त सुन्दर एवं श्रेष्ठ राग मधुर स्वरसे जब तू गाती है तो तू गिरिधारी लालजीको वशमें कर लेती है।

ENGLISH TRANSLATION

[36]

O accomplished Rādhikā, today your beauty shines with still greater splendor. Pearls gleam along the parting of your hair, curls play upon your face, and a blue garment like a bank of clouds adorns you, the treasury of beauty and virtue. The fine line of collyrium in your eyes is sharp as an arrowhead; your slender braid puts even a serpent to shame, while the tilaka upon your brow appears as an unwavering line of good fortune. Your nose is lovely as a parrot's beak, your lips red as bandhūka blossoms, your teeth like pomegranate seeds, and a dark beauty-mark rests upon your chin. Bracelets, bangles, rings, and the pendant ornament at your nose proclaim you a treasury of love's arts. Jeweled earrings, a flashing girdle, strings of pearls upon your bodice, almost-silent anklets, and toenails bright as moons complete your adornment. A supreme fragrance arises from your body and deepens tender love in the heart. Kṛṣṇadāsa says that when you sing a noble rāga in your sweet voice, you bring Giridhārī Lāla entirely under your sway.

ORIGINAL Braj Bhāṣā

[३७]

भाग्यवान वृषभानु सुता सी को तिहुं त्रिभुवन माहीं।

जाको पति त्रिभुवन मन मोहन दिये रहत गल बाँहीं॥

हूँ अधीन संग ही संग डोलत ऊहाँ कुँवारि चलि जाहीं।

रसिक लख्यौ जो सुख वृंदावन सो त्रिभुवन में नाहीं॥

त्रिभुवनका मन मोहित करनेवाले श्रीकृष्ण जिनके पति हैं और गलबाँही डाले रहते हैं, उन श्रीवृषभानुसुताजैसी भाग्यवान इस त्रिलोकीमें दूसरी कौन है? जहाँ-जहाँ किशोरी जाती हैं, उनके अधीन हुए प्यारे भी वहाँ-वहाँ उनके साथ-साथ घूमते रहते हैं। रसिकराजजीने वृन्दावनमें जो सुख देखा, वह तीनों लोकोंमें भी अप्राप्य है।

ENGLISH TRANSLATION

[37]

Who in all the three worlds is as fortunate as Vṛṣabhānu's daughter? Her beloved is Śrī Kṛṣṇa, enchanter of the three worlds, who keeps his arm lovingly about her neck. Completely subject to her, he wanders beside the maiden wherever she goes. Rasikarāja says that the bliss he has seen in Vṛndāvana is found nowhere in all three worlds.

ORIGINAL

Braj Bhāṣā

[३८]

राधा मोहन करत बियारी।

एक कर थार सँवारे सुंदरि एक वैस एक रूप उज्यारी॥

मेवा पूरी पकवान मिठाई दंपति अति रुचिकारी।

सूरदास को जूठन दीनी अति प्रसन्न ललिता री॥

श्रीराधा-कृष्ण ब्यालू, अर्थात् रात्रिका भोजन, कर रहे हैं। एक सुन्दरी अपने हाथोंसे थाली सजानेमें लगी है। वे एक ही अवस्थाकी हैं और उनका एक-सा ही दीप्तियुक्त रूप है। श्रीप्रिया-प्रियतम दोनोंको अत्यन्त स्वादिष्ट लगनेवाली वस्तुएँ, जैसे मेवा, पूरी, पकवान और मिठाई आदि, थालमें सजी हुई हैं। ललिताजीने अत्यन्त प्रसन्न होकर सूरदासको जूठन-प्रसाद प्रदान किया।

ENGLISH TRANSLATION

[38]

Śrī Rādhā and Mohana take their evening meal. A beautiful maiden arranges the plates with her own hands. The attendants are of one age, dressed alike, and radiant with a common beauty. Dried fruits, pūrīs, delicacies, and sweets pleasing to the divine couple are set upon the platters. Greatly delighted, Lalitā gives Sūradāsa the grace of their sacred remnants.

ORIGINAL

Braj Bhāṣā

[३९]

अँचवन करत लाडिली लाल।

कंचन झारी गहत परस्पर श्रीराधा गोपाल॥

जल मुख लेतहिं हँसत हँसावत देखत सखिन के जाल।

राधा माधव केलि करत भए श्रीभट्ट परम बिहाल॥

किशोरी राधा और श्रीकृष्ण भोजनके पश्चात् आचमन कर रहे हैं। एक-दूसरेको आचमन करानेके लिये वे अपने-अपने हाथोंमें सोनेका जलपात्र लेते हैं। मुखमें जल लेते ही एक-दूसरेको स्वयं हँस-हँसकर हँसानेकी चेष्टा करते हैं। झुण्ड-की-झुण्ड सखियाँ इस मधुर लीलाको देख रही हैं। श्रीराधा-माधवको इस प्रकार क्रीड़ारत देखते-देखते श्रीभट्टजी अत्यन्त विह्वल हो गये।

ENGLISH TRANSLATION

[39]

After their meal, beloved Rādhā and Gopāla perform ācamana. Each takes a golden water vessel to help the other rinse. The moment they take water into their mouths, they laugh and try to make one another laugh, while throngs of sakhīs behold the sweet play. Seeing Rādhā and Mādhava sport in this way, Śrī Bhaṭṭa becomes utterly overwhelmed.

ORIGINAL Braj Bhāṣā

[४०]

बीरी सरस सखी रुचि दीनी।

लई प्रीति कर प्रीतम प्यारी अधरन लाली लसी नवीनी॥

मृदु मुसकात बात हँसि बोलत सुनत सहेली रस में भीनी।

सरस माधुरी सयन करन की जुगल लाल मन इच्छा कीनी॥

सखीने रसभरे पानके बीड़ेको अत्यन्त प्रेमसे निवेदित किया। श्रीप्रिया-प्रियतमने उसे प्रीतिपूर्वक हाथोंमें लेकर आरोग लिया और उनके अधरोंपर एक नयी लालिमा छा गयी। वे मन्द स्मितके साथ हँस-हँसकर बात कर रहे हैं, जिसे सुनकर सखियाँ रसमें डूब जाती हैं। सरसमाधुरीजी कहते हैं कि फिर दम्पतिके मनमें शयन करनेकी इच्छा उत्पन्न हो गयी।

ENGLISH TRANSLATION

[40]

A sakhī lovingly offers a choice, juicy roll of betel. The beloved pair receive and relish it with affection, and a fresh redness glows upon their lips. Smiling softly, they speak together with laughter, and the listening companions become steeped in rasa. Sarasamādhurī says that the desire to retire to their bed then arises in the hearts of the youthful couple.

ORIGINAL

Braj Bhāṣā

[४१]

प्यारी पियहि सिखावति बीना।

तान बंधान कल्यान मनोहर इत मन देहु अबीना॥

लेत सँभारि सँभारि सुघर वर नागरि कहत फबी ना।

विट्ठल विपुल बिनोद बिहारी को जानत भेद कबी ना॥

प्रियाजी श्रीकृष्णको वीणावादन सिखा रही हैं। वे कहती हैं कि इस कल्याण रागका स्वर-बन्ध अत्यन्त मनोहर है। हे प्रवीण श्यामसुन्दर! इस ओर अपना ध्यान केन्द्रित करो। अत्यन्त चतुर श्रीकृष्ण सँभल-सँभलकर बजा रहे हैं, किन्तु नागरी राधिकाजी कहती हैं कि ठीक जमा नहीं। श्रीविट्ठलविपुलजी कहते हैं कि श्रीकृष्णके इस विनोदके रहस्यको बड़े-बड़े ज्ञानी भी नहीं समझते।

ENGLISH TRANSLATION

[41]

Priyājī teaches her beloved to play the vīṇā. “The melodic structure of rāga Kalyāṇa is most beautiful. O accomplished Śyāmasundara, attend carefully to this.” The supremely clever Kṛṣṇa plays with studied care, yet discerning Rādhikā says, “No, it has not come out correctly.” Viṭṭhala Vipula says that even the greatest sages do not comprehend the secret of Kṛṣṇa's playful pretense.

ORIGINAL

Braj Bhāṣā

[४२]

आज गुपाल रास रस खेलत पुलिन कल्पतरु तीर री सजनी।

सरद बिमल नभ चंद बिराजत रोचक त्रिबिध समीर री सजनी॥

चंपक बकुल मालती मुकुलित मत्त मुदित पिक कीर री सजनी।

लेत सुधंग राग रागिनि को ब्रज जुबतिन की भीर री सजनी॥

मघवा मुदित निसान बजायौ ब्रत छांड्यो मुनि धीर री सजनी।

हित हरिवंश मगन मन स्यामा हरत मदन घन पीर री सजनी॥

हे सखि! आज यमुनाके पुलिनवर्ती कल्पवृक्षोंके समीप गोपाल श्रीश्यामसुन्दर रासकी रसमयी क्रीड़ामें निमग्न हैं। शरदके स्वच्छ आकाशमें चन्द्रमा सुशोभित है तथा हृदयको आह्लादित करनेवाला शीतल, मन्द एवं सुगन्धित पवन चल रहा है। चम्पा, मौलश्री और मालती आदिके पुष्प खिले हुए हैं। कोकिल एवं शुक आनन्दमें डूबे हुए मतवाले हो रहे हैं। वहाँ यूथ-के-यूथ व्रजबालाएँ शुद्ध स्वरूपमें राग-रागिनियोंका आलाप ले रही हैं। आकाशमें इन्द्रने भी आनन्दित होकर नगाड़े बजाये। इस महान् उत्सवसे आकर्षित होकर देवता और मुनियोंने भी अपने संयम-नियमादिकको बहा दिया। श्रीहितहरिवंशजी कहते हैं कि उल्लासमें भरकर श्रीराधा प्रियतम श्रीश्यामसुन्दरकी अत्यन्त प्रीतिजनित गम्भीर व्याकुलताको प्रशमित कर रही हैं।

ENGLISH TRANSLATION

[42]

Friend, today Gopāla revels in the rasa of the rāsa beside the wish-fulfilling trees upon the Yamunā's sandy bank. The autumn moon adorns a spotless sky, and a cool, gentle, fragrant breeze delights the heart. Campaka, bakula, and mālatī blossom; cuckoos and parrots grow intoxicated with joy. Companies of Vraja maidens unfold rāgas and rāginīs in pure form. Delighted Indra sounds the celestial drums, while gods and steadfast sages, drawn by the great festival, let all restraint and observance fall away. Hita Harivaṃśa says that, brimming with delight, Śyāmā soothes Śyāmasundara's profound anguish born of overwhelming love.

ORIGINAL Braj Bhāṣā

[४३]

रस मंडल रच्यो रसिक हरि राधिका,
जमुन के तीर बानीर कुंजे।

फूले जहाँ बीज नव बकुल कुल मालती,
माधुरी मृदुल अलि पुंज गुंजे॥

सुमन के गुच्छ अलि सुच्छ चल बात बल,
तरु मनो चहूँ दिसि चँवर करहीं।

करत रव सारिका सुक पिक सु नाना विहंग,
नचत केकि अधिक मनहि हरहीं॥

त्रिगुन जहाँ पवन को गवन नित ही रहत,
चलत स्यामल तटनि चल तरंगा।

उदित बिधु फूले कमल कोक कलहंस कुल,
करत कल कूजित अरु जल बिहंगा॥

हेम मंडल रचित खंचित नीबा रतने,
मनहुँ भू करन कुंडल बिराजे।

बंस बीनादि मुहंग मिरदंग बर,
सबत मिलि मधुर धुनि एक बाजे॥

नचत रस मगन वृषभानुजा गिरिधरन,
बदन छवि देखि सुधि जात रति मदन की।

मुकुट की थरहरनि पीत पट फरहरनि,
तत्त थेई थेई कराने हरति सब कदन को॥

दसनि दमकनि हँसनि लसनि अँग अंग की,
अधर बर अरुन लखि उपमा को है।

दृग जलज चलनि ढिग कुटिल अलकनि झुलति,
मनहुँ अलि कुलन की पाँति सोहै॥

लाग अरु डाट पुनि उरप उरमेइ तिरप,
एक एक गति लेत भारी।

करत मिलि गान अति तान बंधान सों,
परस्पर रीझि कहैं वार्यो बारी॥

चारु उर हार बर रतन कुंडल ललित,
होर बर बोर श्रवननि सुहाई।

नील पट पीत तन गौर स्यामल मनो,
परस्पर घन अरु दामिनि दुराई॥

सखी चहुँ दिसि बनी कनक चंपक तनी,
चंद बदनी इक एक तें झगरी।

नचत मंडल किए चित्त दुहु तन दिए,
भूलि गई सकल अप अपनी सुधि नागरी॥

नचत इहि भाँति नित रसिक सिरमौर दोऊ,
संग ललितादि लिए सुघरि सुंदरि भली।

मनसि वृंदावन बसहूँ जीवन घना,
ब्रजराज सून वृषभानुजू की लली॥

यमुनाके किनारे वेत्र-कुंजमें रसिकशिरोमणि श्रीश्यामसुन्दर एवं श्रीराधाने रास-मण्डलकी रचना की है। वहाँपर कदम्ब, मौलश्री एवं मालतीके नये-नये असंख्य पुष्प खिल रहे हैं। उनके माधुर्यसे आकर्षित होकर भौंरोंके समूह मधुर गुंजार कर रहे हैं। फूलोंके गुच्छोंको स्पर्श करता हुआ अत्यन्त निर्मल पवन चल रहा है। उसके प्रभावसे हिलते हुए हरे-भरे वृक्ष ऐसे लग रहे हैं मानो चारों ओरसे चँवर डुला रहे हैं। मैना, तोता, कोयल तथा और भी अनेक सुन्दर-सुन्दर पक्षी कलरव कर रहे हैं। नृत्य करते हुए मोर चित्तको और भी अधिक खींच लेते हैं। शीतल, मन्द एवं सुगन्धित समीरका वहाँ सदा ही संचार होता रहता है। उसकी गतिसे तरंगें चंचल हो उठती हैं और ऐसी चंचल तरंगोंसे युक्त श्यामलवर्णा यमुनाजी बहती रहती हैं। यमुनाजीमें विविध प्रकारके कमल, जैसे उत्पल, कुशेशय और इन्दीवर इत्यादि, खिले हुए हैं तथा चक्रवाक, कलहंसोंका समूह एवं अन्य जातिके जल-पक्षी भी मधुर स्वर कर रहे हैं। रासकी गोलाकार स्वर्ण-वेदी नाना रत्नोंसे जड़ी हुई है। वह ऐसी लगती है मानो पृथ्वीका कर्ण-कुण्डल हो। बाँसुरी एवं वीणादिक तार-यन्त्र, मुहचंग और अच्छे-अच्छे मृदंग, ये सभी मिलकर एक स्वरमें मधुर ध्वनि उत्पन्न कर रहे हैं। रसमें मग्न होकर राधा-माधव नाच रहे हैं। उनके मुखकी शोभा देखकर रति और काम भी बेसुध हो जाते हैं। मुकुटके थरहरानेसे, पीतपटके फरहरानेसे तथा तत्त-थेई-थेईके उच्चारणसे जो झाँकी उभरी, वह सारे क्लेशोंको हर लेती है। दाँतोंकी दमक, हँसीकी आभा, प्रत्येक अंगकी छटा एवं उत्तम अरुण अधरोंकी कोई उपमा ही नहीं है। नेत्ररूपी कमल चंचल होकर घूम रहे हैं और उनके पास टेढ़ी अलकें झूल रही हैं, जो ऐसी शोभा देती हैं मानो भौंरोंकी पाँति हो। लाग, डाट, उरप, उरमेइ और तिरप आदि नृत्यकी एक-एक गति बड़ी विलक्षण है। अत्यन्त सुन्दर तान-बन्धानके साथ दोनों मिलकर गाते हैं और एक-दूसरेपर रीझकर कहते हैं, “मैं तुमपर वारी गयी!” सुन्दर वक्षःस्थलपर श्रेष्ठ हार, कानोंमें रत्नजटित ललित कुण्डल और श्रवणोंमें सुन्दर बोर अत्यन्त सुहावने लगते हैं। नील वस्त्रसे सुशोभित गौरवर्णा राधा और पीतवस्त्रसे सुशोभित श्यामवर्ण श्रीकृष्ण ऐसे लग रहे हैं मानो मेघ और विद्युत्

परस्पर होड़ कर रहे हों। चारों ओर सखियाँ स्वर्ण-चम्पककी तनु लताओंके समान सुशोभित हैं। चन्द्रमुखी सखियाँ एक-दूसरीसे बढ़-चढ़कर सुन्दर हैं। मण्डलाकार नाचते हुए वे अपना चित्त युगलके दोनों शरीरोंमें लगा चुकी हैं और अपनी सारी सुध-बुध भूल गयी हैं। ललितादि सुन्दर एवं चतुर सखियोंको साथ लेकर रसिकोंके शिरोभूषण ये दोनों इस प्रकार नित्य ही विहार किया करते हैं। वृन्दावनदेवजी कहते हैं कि हे मेरे जीवनधन ब्रजराजलाड़िले एवं वृषभानुलाड़िली! तुम दोनों मेरे हृदय-कमलमें निवास करो।

ENGLISH TRANSLATION

[43]

On the Yamunā's bank, within a cane-bower, connoisseur Hari and Rādhikā form the circle of the rāsa. New kadamba, bakula, and mālatī blossoms open without number, and swarms of bees, drawn by their sweetness, hum softly. A pure breeze brushes the flower clusters; under its touch the green trees sway as though waving fly-whisks on every side. Mynahs, parrots, cuckoos, and many lovely birds call, while dancing peacocks captivate the heart. The ever-moving breeze is cool, gentle, and fragrant. It stirs the waves of the dark Yamunā, where lotuses of many kinds bloom and cakravākas, royal swans, and waterfowl utter melodious cries.

The circular golden dais of the rāsa, inset with many jewels, appears like an earring adorning the earth. Flutes, vīṇās and other stringed instruments, mouth-harps, and noble mṛdaṅgas join in a single sweet harmony. Lost in rasa, Vṛṣabhānu's daughter and Giridhārī dance. The beauty of their faces makes even Rati and Kāma lose awareness. The trembling crown, the fluttering yellow cloth, and the rhythmic syllables “tatta theī theī” dispel every sorrow. The flash of their teeth, the radiance of their smiles, the splendor of every limb, and their exquisite crimson lips are beyond comparison. Lotus eyes move restlessly beside curling locks that hang like rows of bees.

Each movement of the dance, lāga, ḍāṭa, urapa, uramei, and tirapa, is wondrous. They sing together in finely structured melodies and, delighted with one another, exclaim, “I am offered wholly to you!” Noble necklaces shine upon their lovely breasts, jeweled earrings and ornaments grace their ears. Fair Rādhā in blue and dark Kṛṣṇa in yellow seem like lightning and a rain cloud vying with one another. Around them stand sakhīs slender as golden campaka vines, each moon-faced maiden surpassing the next. Dancing in a circle, they have fixed their minds upon the two divine forms and forgotten all awareness of themselves. Thus the two crowns of connoisseurs dance eternally with Lalitā and the other graceful companions. Vṛndāvanadeva prays: O beloved son of Vraja's king, O cherished daughter of Vṛṣabhānu, my very life, dwell forever in the lotus of my heart.

ORIGINAL

Braj Bhāṣā

[४४]

राधिका सम नागरी नवीन को प्रवीन सखी,
रूप गुन सुहाग भाग आगरी न नारि।

बरुन नागलोक भूमि देवलोक की कुमारि,
प्यारी जू के रोम ऊपर डारो सब वारि॥

आनंद कंद नंद नंदन जाके रस रंग सों,
अंग बर सुधंग नाचति मानतु अति हारि।

ताके बल गरब भरे रसिक ब्यास से न डरे,
लोक बेद कर्म धर्म छाड़ि मुकुति चारि॥

सखि! श्रीराधिकाके समान चतुर नववयस्का एवं निपुणा कौन है? किसी भी ललनाको उनके जैसा रूप, गुण, प्रियतमका प्यार एवं सौभाग्य नहीं प्राप्त है। प्यारी राधिकाके एक रोमपर ही वरुणलोक, नागलोक, मध्यलोक तथा देवलोककी समस्त कुमारियोंको न्योछावर किया जा सकता है। आनन्दकन्द नन्दनन्दन श्रीकृष्ण प्रियतमा राधाके रस-रंगमें इतने निमग्न हैं कि अपनी प्रियाको रस प्रदान करनेके लिये उन्होंने रास-रंगका आयोजन किया। रास-मण्डलपर श्रीप्रियाजी इतना सुन्दर नृत्य कर रही हैं कि उनकी अच्छी-अच्छी निपुणताको देख-देखकर प्रियतम अत्यन्त विस्मित-विचकित हो रहे हैं। उन्हींके बलपर गर्वित रहकर व्यासजैसे रसिक किसीसे भी नहीं डरते। उन्होंने लोक एवं वेद, धर्म एवं कर्म तथा चारों प्रकारकी मुक्तियोंको तिलांजलि दे दी है।

ENGLISH TRANSLATION

[44]

Friend, what fresh young beauty is as clever and accomplished as Rādhikā? No maiden possesses beauty, virtues, a beloved's love, and good fortune like hers. All the princesses of Varuṇa's realm, Nāgaloka, the earthly world, and heaven may be offered for but one hair upon the beloved's body. Nandanandana, source of bliss, is so absorbed in her play of rasa that he arranges the rāsa to bestow delight upon her. Priyājī dances with such consummate skill that her beloved watches in astonishment. Proud of her sustaining power, a rasika such as Vyāsa fears no one. He has cast aside worldly and Vedic claims, rites and duties, and all four kinds of liberation.

ORIGINAL Braj Bhāṣā

[४५]

बेसर कौन की अति नौकी।

होड़ परी प्रीतम अरु प्यारी अपने अपने जी कौ॥

न्याव पर्यो ललिता के आगे कौन सरस कौ फीकी।

नंददास बिलग जिन मानो कछ एक सरस लती कौ॥

प्रियतम श्रीकृष्ण एवं प्यारी श्रीराधिका, दोनोंने अपने-अपने मनकी बात कहकर परस्पर यह होड़ ठानी कि किसके नाककी बेसर अधिक सुन्दर है। न्यायपूर्वक सच्ची बात कहनेका कार्य श्रीललिताजीके आगे रखा गया। वे ही निर्णय करें कि कौन सुन्दर है और कौन साधारण। नन्ददासजी कहते हैं कि ललिताजीने बड़े संकोचसे उत्तर दिया, “यदि बुरा न मानो तो मेरे समझके अनुसार लाड़िलीकी बेसर कुछ अधिक रूपहारिणी है।”

ENGLISH TRANSLATION

[45]

Whose nose ornament is the lovelier? Beloved Kṛṣṇa and cherished Rādhikā each speak their heart and enter into a contest over whose ornament holds greater beauty. The judgment is placed before Lalitā: she must say impartially which is exquisite and which seems pale beside it. Nandadāsa says that Lalitā answers with great hesitation, “If you will not take offense, to my understanding Lāḍilījī's ornament steals the heart a little more.”

ORIGINAL

Braj Bhāṣā

[४६]

तुव मुख कमल नैन अलि मेरे।

पलक न लगत पलक बिन देखे अकुलात अति फिरत न फेरे॥

पान करत मकरंद रूप रस भूलि नहीं फिर इत उत हेरे।

भगवतरसिक भए मतवारे घूमत रहत छके मद तेरे॥

हे राधारानी! तुम्हारा मुख कमलके सदृश है और मेरे नेत्र भौंरेके समान। बिना दर्शन किये एक क्षणके लिये भी मेरी पलकें लगती नहीं। मेरे नयन दर्शनके लिये अति अकुलाये रहते हैं और हटानेपर भी वहाँसे हटते नहीं। रूप-सुधारूपी मकरन्द-रसका पान करते समय वे ऐसे तल्लीन हो जाते हैं कि भूलकर भी इधर-उधर नहीं देखते। भगवतरसिकजी कहते हैं कि ये पागल-से हो गये हैं और तुम्हारे रूपका ऐसा नशा इनपर चढ़ गया है कि निरन्तर झूमते ही रहते हैं।

ENGLISH TRANSLATION

[46]

O Rādhārānī, your face is a lotus and my eyes are bees. If they do not behold you, my eyelids cannot close even for an instant. My eyes grow desperately restless for your sight, and even when drawn away they refuse to turn elsewhere. Drinking the honeyed nectar of your beauty, they become so absorbed that they never glance to either side. Bhagavatrāsika says that they have grown mad, so intoxicated by your beauty that they wander forever reeling.

ORIGINAL

Braj Bhāṣā

[४७]

तुव मुख चंद चकोर ए नैना।

अति आरत अनुरागी लंपट भूलि गई मति पलहुं लगै ना॥

अकुलात मिलिबे को निसि दिन मिले रहत मानो कबहुं मिले ना।

भगवतरसिक रसिक की बातें रसिक बिना कोउ समझि सके ना॥

हे राधारानी! तुम्हारा मुख चन्द्रमाके समान है और मेरे ये नयन चकोर-सदृश। इतने आसक्त एवं अनुरागी हैं कि बिना देखे अत्यन्त व्याकुल हो जाते हैं। इनकी सुधि-बुधि खो गयी है; पलकें एक क्षणके लिये भी नहीं पड़तीं। मिलनेके लिये ये रात-दिन व्याकुल रहते हैं और मिले रहनेपर भी इन्हें ऐसा लगता है मानो कभी मिले ही नहीं। भगवतरसिकजी कहते हैं कि रसिककी बातोंको बिना रसिकके दूसरा कोई समझ नहीं सकता।

ENGLISH TRANSLATION

[47]

O Rādhārānī, your face is the moon and these eyes are cakora birds. Passionate, afflicted, and wholly attached, they lose all reason and cannot close even for an instant. Night and day they ache to meet you; even while remaining united with you, they feel as though no meeting had ever occurred. Bhagavatrāsika says that none but a rasika can understand the speech of a rasika.

ORIGINAL

Braj Bhāṣā

[४८]

राधा प्यारी तुमहि लगत हौं मैं कैसो।

पूछन को अभिलाष रहत मन सकुच लगत मन ही मन ऐसो॥

भोरो री गिनत चतुर के भाँति अपने ही बदन बखानो सो।

वृंदावन हित रूप पै बलि जाऊँ तुम जो मिलि मेरो भाग सो ऐसो॥

हे राधा प्यारी! मैं तुम्हें कैसा लगता हूँ? मनमें यह बात पूछनेकी इच्छा रहती है, पर मन-ही-मन बहुत संकोच लगता था। मैं भोला हूँ या चतुर, हे सुन्दरि! इसका वर्णन अपने ही मुखसे करो। हितवृन्दावनदासजी कहते हैं कि श्यामसुन्दरने फिर निवेदन किया, “मैं तुम्हारे रूपपर न्योछावर हूँ। तुम जो मुझे मिली हो, यह मेरा कुछ अनोखा सौभाग्य है।”

ENGLISH TRANSLATION

[48]

“Beloved Rādhā, how do I appear to you? I have long wished to ask, yet inwardly I felt too shy. Tell me from your own lips, lovely one, whether you count me innocent or clever.” Hitavṛndāvanadāsa says that Śyāmasundara then adds, “I offer myself to your beauty. That you have come to me is my extraordinary good fortune.”

ORIGINAL Braj Bhāṣā

[४९]

प्रीतम तुम मेरे दृगन बसत हो।

कहा भोरे ह्वै कै पूछत हो के चतुराई करि जु हँसत हो॥

लीजिए परखि सरुप आपनो पुतरिन मैं प्यारे तुमहि लसत हो।

वृंदावन हित रूप बलि गई कुंज लड़ावत हिय हुलसत हो॥

राधाजी उत्तर देती हैं कि, “हे प्रियतम! तुम तो मेरी आँखोंमें बसते हो। क्या भोले बनकर वास्तवमें ऐसा प्रश्न कर रहे हो अथवा चतुराईसे विनोद कर रहे हो? तुम अपने रूपकी परीक्षा कर लो। मेरी पुतलियोंमें, प्यारे, तुम्हीं सुशोभित हो रहे हो।” हितवृन्दावनदासजी कहते हैं कि राधाजीने फिर कहा, “मैं भी तुम्हारे रूपपर न्योछावर हूँ। कुंजमें तुम जब लाड़ लड़ाते हो, तब हृदय उल्लाससे भर जाता है।”

ENGLISH TRANSLATION

[49]

Rādhā replies, “Beloved, you dwell within my eyes. Are you truly asking with innocent simplicity, or do you laugh from playful cleverness? Examine your own form, dear one, for it is you alone who shines within my pupils.” Hitavṛndāvanadāsa says that Rādhā continues, “I too am offered to your beauty. When you fondle me lovingly in the grove, my heart overflows with delight.”

ORIGINAL

Braj Bhāṣā

[५०]

आज बने सखि नंद कुमार।

बाम भाग वृषभानु नंदिनी ललितादिक गावें सिंह द्वार॥

कंचन थार लिये जु कमल कर मुक्ताफल फूलन के हार।

रोरी को सिर तिलक बिराजत करत आरती हरष अपार॥

यह जोरी अबिचल वृंदावन देत असीस सकल ब्रजनार।

कुंज महल में राजत दोऊ परमानंद दास बलिहार॥

हे सखि! आज नन्दनन्दनकी निराली ही शोभा है। बायीं ओर श्रीराधारानी विराज रही हैं और ललितादिक सखियाँ मुख्य द्वारपर खड़ी गा रही हैं। वे अपने कोमल-से हाथोंपर सोनेकी थालियोंमें मोतीके हार एवं फूलोंकी मालाएँ लिये हुए हैं। राधा-माधवके भालपर रोरीका तिलक सुशोभित हो रहा है और सखियाँ आनन्दमें भरकर आरती कर रही हैं। समस्त व्रजवालाएँ यही आशीष दे रही हैं कि वृन्दावनमें यह जोड़ी नित्य निवास करे। इस प्रकार दोनों कुंज-भवनमें विराजमान हैं; दास परमानन्द उनपर न्योछावर हैं।

ENGLISH TRANSLATION

[50]

Friend, how wondrously Nandakumāra is adorned today. Vṛṣabhānu's daughter sits at his left, while Lalitā and the other sakhīs sing at the great doorway. In their lotus hands they hold golden trays laden with pearl necklaces and garlands of flowers. A tilaka of red powder shines upon the couple's brows, and the companions perform ārati in boundless joy. All the women of Vraja bless this pair to abide eternally in Vṛndāvana. The two reign within the grove-palace, and Paramānandadāsa offers himself to them.

ORIGINAL

Braj Bhāṣā

[५१]

खंजन नैन रूप रस माते।

अतिसय चारु चपल अनियारे पल पिंजरा न समाते॥

उड़ उड़ जात निकट श्रवनन के उलटि फिरत ताटंक फंदाते।

सूरदास अंजन गुन अटके नाँतर अब उड़ जाते॥

खंजनके समान चपल श्रीराधाके नयन प्रियतमकी रूप-माधुरीका पान करके मतवाले हो रहे हैं। ये अत्यन्त सुन्दर, चंचल और नुकीले नेत्र पलक-रूपी पिंजरेमें बन्द नहीं रह पा रहे हैं। वे उमड़कर, अर्थात् लपक-लपककर, कानोंके पास जाते हैं, परन्तु आगे कर्णफूलरूपी फन्देको देखकर लौट आते हैं, बढ़ नहीं पाते। सूरदासजी कहते हैं कि मेरा तो यही अनुमान है कि ये अञ्जनरूपी डोरीसे बँधे हुए हैं, नहीं तो कानोंके ऊपरसे उड़कर प्रियतमके पास पहुँच जाते।

ENGLISH TRANSLATION

[51]

Rādhā's eyes, restless as khañjana birds, grow intoxicated from drinking her beloved's nectarous beauty. So lovely, quick, and sharply pointed are they that the cage of her eyelids cannot hold them even for a moment. Again and again they fly toward her ears, only to turn back when caught in the snare of her earrings. Sūradāsa imagines that only the cord of collyrium restrains them; otherwise they would already have flown beyond her ears and reached the beloved.

ORIGINAL

Braj Bhāṣā

[५२]

अब पौढ़न को समय भयो।

इत ढुर गई द्रुमन की छेयाँ उत ढुरि चंद गयो॥

पौढ़ि रहे दोउ सुखद सेज पर बाढ़त रंग नयो।

रसिक बिहारी बिहारिनि पौढ़े यह सुख दृगन लयो॥

अब रात्रिमें शयन करनेका समय हो गया। इधर वृक्षोंकी छाया ढल गयी है और उधर चन्द्रमा भी अस्ताचलकी ओर चले गये हैं। सुखदायिनी शय्यापर दोनों लेटे हुए हैं। प्रतिक्षण अभिनव आनन्दकी अभिवृद्धि हो रही है। कवि रसिक कहते हैं कि लीलाविहारी श्रीकृष्ण और विहारनिमग्ना राधा, दोनों ही शय्यापर पौढ़े हुए हैं। इस झाँकीके दर्शनका सुख आँखोंको प्राप्त हुआ। अहा, कैसा अनुपम सौभाग्य है!

ENGLISH TRANSLATION

[52]

The time for rest has come. On one side the shadows of the trees have declined, and on the other the moon has moved toward setting. The two recline upon a delightful bed, where ever-new joy increases at every moment. The poet Rasika says that sportive Kṛṣṇa and play-absorbed Rādhā lie together. His eyes have attained the happiness of this vision. Ah, what incomparable good fortune!

ORIGINAL

Braj Bhāṣā

[५३]

बिहारिति अलकलड़ती हो अलकलड़ सुकुमार।

अलकलड़ मोहन मंदिर में अलकलड़ोई बिहार॥

अलकलड़ी उरझनि दोउन की अलकलड़ोई प्यार।

अलकलड़ी हरिप्रिया निहारति अलकलड़ो सुखसार॥

जिस प्रकार विहारनिमग्ना श्रीराधा सबकी स्नेहास्पदा हैं, उसी प्रकार अत्यन्त कोमल अलकोंवाले श्रीकृष्ण भी सबके स्नेह-भाजन हैं। मनोहर एवं स्नेहसदन केलि-मन्दिरमें उनका विहार भी बड़ा ही स्नेह-सिक्त है। उनका परस्पर लिपटना भी स्नेहपूर्ण है और उनका प्यार तो दुलारभरा है ही। स्नेहसने श्रीहरिप्रियाजी लाड़-चावभरे उस केलि-सुख-सारको निहारते रहते हैं।

ENGLISH TRANSLATION

[53]

Just as play-absorbed Śrī Rādhā is cherished by all, so too is Śrī Kṛṣṇa, tenderly crowned with curling locks, the beloved of all. Within the enchanting temple of love, their play is steeped in affection. Their mutual embrace is affectionate, and their love brims with fond indulgence. Hari Priyā, filled with tenderness, beholds that essence of playful bliss, rich with loving attention.

ORIGINAL Braj Bhāṣā

[५४]

चाँपत चरन मोहन लाल।

पलका पौढ़ी कुँवरि राधे सुंदरी नव बाल॥

कबहुँ कर गहि नयन मिलवंत कबहुँ चुवावत भाल।

नंददास प्रभु छबि निहारत प्रीति के प्रतिपाल॥

नवयौवना एवं सौन्दर्यमण्डिता राधाकिशोरी पर्यङ्कपर पौढ़ी हुई हैं। मदनमोहन उनके पद दबा रहे हैं। उनके चरणोंको पकड़कर कभी वे उन्हें अपनी आँखोंपर रखते हैं और कभी उन्हें मस्तकपर धारण करते हैं। नन्ददासके स्वामी एवं प्रेमका निर्वाह करनेमें कुशल श्रीकृष्ण अपनी प्यारीके रूप-दर्शनका सुख लूट रहे हैं।

ENGLISH TRANSLATION

[54]

Youthful Rādhā, adorned with beauty, reclines upon the couch while Mohana gently presses her feet. Taking her feet in his hands, at times he raises them to his eyes and at times places them upon his brow. Nandadāsa's Lord, perfect in sustaining love, drinks the bliss of beholding his beloved's beauty.

ORIGINAL

Braj Bhāṣā

[५५]

धनि धनि लाडिली के चरन।

अति ही मृदुल सुगंध सीतल कमल के से बरन॥

नख चंद चारु अरुष राजत जोत जगमग करन।

करुणित नूपुर कुंज बिहरत परम कौतुक करन॥

नंद सुत मन मोद कारी सुरत सागर तरन।

दास परमानंद छिन छिन स्याम ताकी सरन॥

प्यारी श्रीराधाके चरण परम धन्य हैं। वे अत्यन्त कोमल हैं। उनमें सुन्दर सुगन्ध है। वे शीतल हैं। उनका वर्ण कमलके समान है। नखरूपी चन्द्रमाओंका सौन्दर्य अनुपम है। उनमेंसे जगमग करती हुई एक ज्योति निकल रही है। कुंजमें जिस समय वे विहार करती हैं, उनके नूपुर बज उठते हैं। ये चरण बड़े ही क्रीड़ाप्रिय हैं। वे श्रीकृष्णके मनको आनन्द देनेवाले हैं तथा उन्हें प्रेमरूपी विशाल सागरके अन्तिम छोरतक पहुँचा देनेके लिये नौकाके समान हैं। परमानन्ददासजी कहते हैं कि श्यामसुन्दर उन्हींकी शरणमें रहते हैं।

ENGLISH TRANSLATION

[55]

Blessed, blessed are beloved Rādhā's feet. Exceedingly soft, fragrant, and cool, they are lotus-hued. Their moonlike nails possess incomparable beauty and cast a sparkling radiance. When she sports within the grove, their anklets sound; these feet delight in supreme play. They gladden the heart of Nanda's son and are the boat that bears him across the vast ocean of love to its furthest shore. Paramānandadāsa says that Śyāmasundara seeks their shelter at every moment.